प्रकाशक
भारती पुस्तक केन्द्र
टावर चौक दरभंगा
फोन : 2328

परिवर्द्धित नवीन संस्करण : 1991

[illegible]

: USHA OFFSET PRINTERS
DARYA GANJ, NEW DELHI - 2.

विषय - सूची

***

प्राक्कथन

सर्वप्रथम 1968 ई. मे प्रकाशित अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'क पुनः नवीन परिवर्द्धित संस्करण प्रस्तुत करैत हमरा हार्दिक प्रसन्नता भए रहल अछि। एकर दुइ गोट परिवर्द्धित संस्करण पूर्वो प्रकाशित भेल छल, 1977 ओ 1983 मे। 1983क संस्करण 1988 ई. क उत्तरार्द्धमे समाप्त भए गेल छल एवं एकर पुनर्प्रकाशनक प्रक्रिया गत वर्षक आरम्भेसँ आरम्भ भए गेल छल। तथापि एतबा दिन एकर प्रकाशनमे लागि गेल। एहि बीच जिज्ञासु साहित्यानुरागी महानुभावलोकनि एवं उच्च-वर्गीय छात्र - समुदाय समान रूपेँ एकरा शीघ्र प्रकाशित करएबाक हेतु तगेदा पर तगेदा दैत रहलाह, तइओ विलम्ब भेला पर हुनकालोकनिक उलहन-उपराग सेहो सहय करए पड़ल। आइ जखन ई प्रकाशित भए पुनः सर्वसामान्यक हेतु सुलभ भए रहल अछि तँ हम अपूर्व संतोष ओ शान्तिक अनुभव कए रहल छी। विलम्बसँ प्रकाशन होएबाक कारणे हमरा एहि विषयक पूर्ण परिज्ञान भए गेल जे बाइस वर्ष पूर्व लिखल हमर ई इतिहास कतबा उपयोगी ओ लोकप्रिय अछि। एहि हेतु अपनाकेँ हम कृतकृत्य बुझैत छी।

एहि इतिहासक प्रतिपादन-शैलीक प्रसंग पूर्व संस्करणक प्राक्कथनसबहिमे हम विस्तारसँ उल्लेख कए आएल छी जे मैथिली साहित्यक भिन्न-भिन्न प्रभेद - विषयक विकासात्मक रुप-रेखा एकेठाम क्रमबद्ध रीतिएँ अंकित करब हमर उद्देश्य छल जकर उपयोगिता आब स्वतः सिद्ध भए गेल अछि। एहि संस्करणकेँ मुद्रणमे देबाक पूर्व 1988 ई.क अंत धरिक प्रकाशित प्रमुख-प्रमुख कृति एवं उदीयमान प्रतिभाशाली साहित्यकारलोकनिक उल्लेख कए प्रत्येक विधाक विकासक इतिवृत्ति अद्यतन कए देबाक चेष्टा कएने छी, पश्चात् बीच-बीच 1989 ई.क प्रथम चरणक किछु प्रकाशनहुक सूचना जोड़ि देल गेल अछि। हमर एहि प्रयासमे यदि कोनो उल्लेखनीय लेखक ओ हुनक रचनाक नाम छूटि गेल हो तँ से हमर भ्रांति बुझबाक थिक, अवहेलना-बुद्धि कखनहुँ नहि।

एहि बीच 1989 ओ 1990 ई. मे सेहो एखन धरि अनेक पुस्तक प्रकाशित भेल अछि एवं संख्या- मे सर्वाधिक कविताक पुस्तक। किरणजीक 'किरण कवितावली' एवं 'कतेक दिनक बाद'क उल्लेख यथास्थान कए देल गेल अछि। एहिसँ अतिरिक्त सर्वश्री जयनारायण झा 'विनीत'क 'विनीत-भारती', रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'लेखनी एकः रंग अनेक' (गजलक संग्रह), उदयचन्द्र झा विनोद'क 'एहि जनपदमे' (नव कविता), मन्त्रेश्वरझाक 'पान एलैये मखान', (लोक-गीतात्मक) एवं 'काँटक जंगल ओ पलाश' (नव कविता), सियारामझा 'सरस'क 'शोणिताएल पैरक निशान' (गजलक संग्रह), कुमार शैलेन्द्र तथा किशोर केशवक 'अन्तर्व्यथा', बाबा बैद्यनाथक 'पहरा इमान पर' (गजलक संग्रह) तथा चम्पिकादेवीक 'मिथिला गीतमाला' प्रकाशित भेल अछि। एही अवधिमे मोहन भारद्वाज 'काव्य-बन्ध'क नामसँ एकटा काव्य-संकलन सेहो प्रकाशित करबाओल अछि तथा 1990 ई. मे प्रकाशित नव कविताक एकटा विलक्षण संग्रह थिक डॉ. नबोनाथ झाक 'आजुक सन्दर्भमे'। एतए श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'क 'बुद्ध-बोध' लघु-पुस्तिकाक उल्लेख एतए विशेष रूपेँ कएल जाए सकैत अछि, कारण एहि मध्य भगवान बुद्धक चरित ओ वचनक अत्यंत संक्षिप्त चर्चा होइतहुँ ई प्रायः बुद्ध-विषयक पहिल

मुद्रित साहित्य थिक। 1989 में बाबू कृष्णनन्दन सिंहक 'सीतारामायण' सेहो प्रकाशित भेल जकर नामाहिसँ एकर विषय ओ स्वरुपक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

1989ई. मे सात गोट कथा-संग्रहक प्रकाशनक सूचना भेटैत अछि - सर्वश्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क, 'भजना भजले' ,प्रभास कुमार चौधरीक 'प्रभास-कथा', विभूति आनन्दक 'खापड़ि महक धान', चन्द्रेशक 'घिरनी', जनककिशोर लालदासक 'भालसरीक फूल', ज्योत्स्नाचन्द्रमक 'झिझिरकोना' एवं रामनरेशसिंहक 'अपन अपन साँच'। कब्बकब'क प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य-कथाकार श्री अमरनाथक 'मोम जकाँ बर्फ जकाँ' सेहो प्रकाशित भेल अछि। 1989क विभिन्न लेखकक कथा संकलन'क दृष्टिएँ 'तर्जनी' (सं.मोहन भारद्वज), अड़हुल (सं.विभूति आनन्द) एवं 'नेपाली मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प' (सं.सुरेन्द्रलाभ)क प्रकाशन भेल अछि।

एहि वर्षावधिमे नाटक ओ उपन्यासक प्रकाशन सन्तोषप्रद नहि कहल जाए सकैत अछि। डॉ. रामदेवझाक एकांकी-संग्रह 'पसिझैत पाथर'क उल्लेख एहि पुस्तकहु मध्य यथास्थान कएल जाए चुकल अछि। एहिसँ अतिरिक्त श्री रोहिणी रमणझाक 'अंतिम गहना' प्रकाशित भेल। उपन्यास एक गोट मात्र प्रकाशित भेल - श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'उगनाक दयादबाद'।

'उगनाक दयादबाद' विशेषरुपेँ उल्लेखनीय एहि हेतु जे ई सुमनजी सदृश परम आदरणीय वयोवृद्ध साहित्य - सेवी एवं कृतविद्य महाकविक कृति थिक जहिमे ओ अभिजात्यकवितासँ हटि युग-धर्मकेँ स्वीकार करैत उच्च-वर्गक सदा संग पुरनिहार निम्नवर्गीय धानुक, केओट, अमात आदि जातिक गृहश्रमिक (खबास) - समाजक नवजागरण ओ उत्थानक आदर्शवादी कथाक इतिवृत्तात्मक वर्णन कएने छथि मार्क्सवादी प्रभावसँ बहिर्भूत, शुद्ध राष्ट्रीय समन्वयात्मक दृष्टिएँ। एकर नायक थिक तुलसी जे मोहनमिश्र प्रभृतिक सहयोगसँ शिक्षा-लाभ कए, संघटनक महत्व वृद्धि, जातीय जागरण एवं रचनात्मक उत्थानक संवाहक बनैत अछि। कथा रोचक रीतिएँ अवश्य वर्णित अछि, किन्तु आधुनिक कथा वा उपन्यासक जे मुख्य तत्व थिक, कथा-संघटनक नाटकीय निष्पादन, चरित्रक सूक्ष्म मनोविश्लेषण, तकर एहिमे सर्वथा अभाव अछि।

1989 ई. मे प्रकाशित आलोचनात्मक साहित्यक दृष्टिएँ डॉ. नबोनाथ झाक 'निबंध-प्रबंध'क उल्लेख एहि पुस्तकमे यथास्थान पर कएल जाए चुकल अछि। शेष प्रकाशित कृति थिक पं. श्री गोविन्दझाक 'मैथिली नाटकःअधुनातन सन्दर्भ' एवं डॉ. भीमनाथ झाक 'क विचूड़ामणिक काव्य-साधना'। चेतना-समिति द्वारा विचार-गोष्ठीक आलेख श्री मोहन भारद्वज द्वारा सम्पादित भए 'मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखन' प्रकाशित भेल ओ प्रायः एही रुपक कृति थिक डॉ. चेतकरझा द्वारा सम्पादित 'कथा-साहित्य'। एतए नेपालीम पाक्षिक पत्रिका 'सिंहावलोकन'क मैथिली विशेषांक सेहो उल्लेखनीय थिक जाहि मध्य एकर सम्पादक कुलराज घिमिरे एवं अतिथि - सम्पादक नमोनारायण झा मिथिला - मैथिलीक प्रसंग प्रचुर शोध - सामग्री संकलित कएने छथि।

1989मे नओ गोट अनूदित पुस्तक प्रकाशित भेल जाहिमे सर्वाधिक पाँच गोट साहित्य अकादमी द्वारा। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक सब थिक 'वाणभट्ट' (अनु. रामदेवझा), केशवसुत (अनु. डॉ.अमरनाथझा), हाली (अनु. सुभाषचन्द्रयादव), लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ (अनु डॉ. लेखनाथमिश्र) एवं वासवेश्वर (अनु.डॉ. अणिमासिंह)। एहिसँ

अतिरिक्त 'मेघदूत' ओ 'कीर्तिलता'क अनुवाद कएल श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' एवं 'पुत्रीक नाम पिताक पत्र'क प्रो. रमाकान्त मिश्र। हिन्दीक पुष्कराणीजीक लघु-कथाक अनुवाद श्री अमरनाथझा प्रकाशित कएल।

उपर्युक्त प्रकाशनक अतिरिक्त 1989क अन्य प्रकाशन थिक श्री कालीकान्तझाक 'श्री दुर्गाचरित' एवं श्री जयनारायण शास्त्रीक छन्दोबद्ध 'भारत-दर्शन'। 1990 में प्रकाशित श्री नीतीश्वरसिंहक 'बाबू तुलापति सिंह' नामक पुस्तक एतए विशेष रुपेँ उल्लेखनीय थिक जाहिमे हुनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक प्रमाणिक विवरणक संग-संग हुनक कुलहुक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक योगदानक दुर्लभ सूचना प्राप्त होइत अछि। 1990ई. मध्य प.गोविन्दझाक 'तामाक पौती' (कथा - संग्रह), कुमार - शैलेन्द्र। किशोर केशवक 'अन्तर्व्यथा' (कविता - संग्रह), अनुज - पीढ़ीक कथा - संग्रह 'तर्जनी', डा.दयानन्दझाक 'विद्यापाति पदावलीमे विम्बयोजना' (शोध - प्रबन्ध), डा. नन्दकिशोर मिश्रक 'मैथिली लोक - गीतमे नारी चित्रणक स्वरूप' (शोध - प्रबन्ध) आदिक प्रकाशनक सेहो सूचना भेटल अछि।

एहि बेर एहि इतिहासक मुद्रण भिन्न यांत्रिक विधिएँ भेल अछि। सम्पूर्ण पुस्तककेँ पहिने टंकित कए, पुंनः प्रत्येक पृष्ठकेँ नवीन यान्त्रिक विधिसँ 'मेक अप' कराए तथा तकर प्लेट बनबाए ऑफ-सेट प्रणालीसँ एकर मुद्रण कएल गेल अछि। अतः मुद्रण सन्तोषप्रद होएत, से हम आशा करैत छी। किन्तु अंतिम 'मेक अप' पृष्ठसभ सम्मुख आएल तँ ओहिमे अनेक अशुद्धि रहि गेल छल। उदाहरणार्थ किरणजीक कविक रुपमे जतए चर्चा कएने छी ततए हुनक 'कतेक दिनक बाद'क स्थान पर 'एना कते दिन' टंकित भए गेल छल। एहिना अनेक स्थान पर अशुद्धि, शब्दहुक रुप भ्रष्ट। हम ओहि सब अशुद्धिकेँ शुद्ध कए छपबाक स्पष्ट निर्देशपूर्वक सबटा 'मैटर'केँ मुद्रणक हेतु पठाए रहल छी। यदि हमर निर्देशक अक्षरशः पालन भेल तँ पुस्तक निस्सन्देह शुद्ध-शुद्ध छपत, अन्यथा जे अशुद्धि रहि जाएत, ताहि हेतु पाठकवृन्दसँ निवेदन जे हमरा सहृदयतापूर्वक क्षमा करथि। अनेक स्थान पर हम हाथहिसँ शुद्ध कएल अछि, एकार अथवा चन्द्रबिन्दु हमर हाथहिसँ बनाओल भेटत, तथापि टंकन-विवशता-जन्य अनेक विषमताक दर्शन होएत। ई पुस्तक जाहि उच्च-शिक्षित वर्गक हेतु पुनः प्रस्तुत कएल जाए रहल अछि, से हमर विवशताकेँ बुझताह एवं नीर-क्षीर विवेकक परिचय देताह,तकर हमरा पूर्ण विश्वास अछि।

एहि पुस्तककेँ अद्यतन करबामे हमरा सर्वाधिक सहयोग प्राप्त भेल अछि नवयुवक कवि कथाकार श्री चन्द्रेश ओ डा. भीमनाथ झा क। अतः हम दुहू महानुभावक प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करैत छी। भारती - पुस्तक - केन्द्र दरभंगाक श्री शीतल प्रसाद कम धन्यवादक पात्र नहि जे किछु विलम्बेसँ किएक नहि, एकर पुनर्प्रकाशन कए हमरा अनवरत 'तगेदा'क भारसँ मुक्त कए मैथिली साहित्यानुरागी जिज्ञासुलोकनिक हेतु एकरा पुनः उपलब्ध कराए रहल छथि। इति

56जी, दिवाना तकिया,
कटहर बाड़ी, दरभंगा
15.08.1990

दुर्गानाथझा 'श्रीश'

आमुख

चालीस वर्ष सँ ऊपर भेल-- ठीक-ठीक तैंतालिस वर्ष भेल जे हम जखन ताहि दिनुक जी. बी. बी. कॉलेजक छात्र रही मुजफ्फरपुरक मैथिल छात्र-संघक हेतु अपन मित्र बेतिआ प्रान्तक धमौरा गामक वासी श्री भुवनेश्वर झाक प्रोत्साहनसँ मैथिलीमे साहित्यक इतिहास लिखने रही। एहि तैंतालिस वर्षमे मैथिली साहित्य बड़ प्रगति कएलक अछि ओ विश्वविद्यालय सबमे स्नातकोत्तर कक्षा धरि मैथिलीक अध्यापनक व्यवस्था भेलासँ मैथिलीक अध्ययन दिनानुदिन वृद्धयुन्मुख भए रहल अछि। अनेक शोधग्रन्थ लिखल गेल अछि जाहिमे ऐतिहासिक सामग्री तँ सबमे थोड़ बहुत अछिए मुदा कए गोट तँ विशुद्ध इतिहासे थिक। ओना मैथिली मे एको गोट शोधप्रबन्ध प्रकाशित नहि भेल अछि मुदा *डा जयकान्त मिश्रजीक* शोधप्रबन्ध मैथिली साहित्यक इतिहास अंगरेजीमे प्रकाशित अछि। ओही आधार पर मैथिलीमे लिखल *श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक* इतिहास सेहो प्रकाशित अछि। *डा. बालगोविन्द झाक* एक गोट छोट इतिहास सेहो प्रकाशित अछि मुदा ई अत्यन्त संक्षिप्त अछि। फलतः *श्री जयकान्तबाबूक* ग्रन्थ प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि यद्यपि ओकरो दोसर खण्ड ने ओतेक पूर्ण अछि ने प्रामाणिक। तेँ स्वतंत्र रीतिसँ लिखल ई इतिहास ग्रन्थ विशेष उपादेय सिद्ध होएत ओ जेँ ई मैथिलीमे लिखल अछि तेँ छात्रलोकनिसँ अतिरिक्तो साधारण पाठकक हेतु ई उपकारक हो से आशा कएल जाए सकैत अछि यद्यपि मुख्यतः इहो इतिहास छात्रहि लोकनिक हेतु लिखल गेल अछि। हमरा मनोरथ जे साधारण पाठकक हेतु मैथिली साहित्यक एक गोट एहन इतिहास लिखल जाइत जाहिमे एहि साहित्यक विकासक चित्र मात्र अंकित रहैत इतिहासक नाम ओ अंक ओतेक नहि रहैत। परंतु से ई भेल नहि। साहित्य अकादमी एहि रुपक एकटा इतिहास प्रस्तुत कराए रहल अछि परन्तु से होएत अंगरेजीमे, पछाति ओकर अनुवाद भाषान्तरमे भए जाओ।

परन्तु मैथिली साहित्यक जे इतिहास लिखल गेल अछि ताहिसँ हमरा पूर्ण संतोष नहि होइत अछि। मैथिलीक साहित्य बड़ पुरान थिक ताहिमे कोनो संदेह नहि परन्तु एहि साहित्यक विकास बहुत दिन धरि अवरुद्ध रहल जकर फलस्वरूप मैथिलीकेँ ओ मान्यता प्राप्त नहि भए सकलैक जे एहिसँ कतोक नव साहित्य सबकेँ भेटि सकलैक। *विद्यापति* हमर भाषाक महाकवि छथि ओ भारतक एहि पूर्वांचलमे ओ पहिल महाकवि भेलाह जनिक रचनासँ प्रेरणा लए, जनिक रीतिक अनुसरण कए, जनिक आदर्शकेँ समक्ष राखि एहि अंचलक भाषा-साहित्यक विकास भेल अछि। मुदा विद्यापतिक पश्चात् हमरालोकनिकेँ चन्दाझा भेटैत छथि। मध्यक पाँच सए वर्ष अनुकरणक युग रहल जाहिमे साहित्यक कोनो प्रगति नहि भेल। निश्चय एहि पाँच सए वर्षमे सैकड़ो हिसाबसँ कवि भेलाह अछि, हजारक हिसाबसँ गीत रचल गेल मुदा साहित्यक प्रगति की भेल ? *विद्यापतिक* जे गीत बड़ लोकप्रिय भेल, भावक दृष्टिसँ किंवा भासक दृष्टिसँ, तकर रचना होअए लागल। दृष्टान्तक हेतु मानक गीत लिअ। *विद्यापति खण्डिताक* मानक अपनोदनमे वर्णन कएल जे

भरि राति मनकेँ [illegible] भोर होइत प्रतीत अछि, [illegible] एहि प्रकारक गीत लोकप्रिय भेल। परिणाम भेल जे एहि [illegible] गीत लिखल गेल होएत जकर भाव भए गेल प्रचलित। विद्यापति [illegible] आधार पर नहि कएल मुदा विद्यापतिक [illegible] नामसँ कहल जाइत छल, अनेक नामसँ [illegible] *गोआलरी, [illegible]* इत्यादि। [illegible] भेदसब परिगृहीत भेल। [illegible] थिक होरीक प्रयोग सबसँ पूर्व *[illegible]* [illegible] गीत नहि, अबीर छल। समदाउनि [illegible] हमरालोकनिकेँ *[illegible]* [illegible] समदाउनिक गीत अवश्य रचने होएताह परन्तु [illegible] विद्यापतिक किछु उक्ति ओ एक गोट मात्र [illegible] अभिप्राय जे जाहि गीतकाव्यक विद्यापति [illegible] मैथिलीक साहित्य रहल। कवीश्वर चन्दाझा [illegible] सए वर्ष धरि ओएह एकटा मैथिली रचनाक रीति रहल [illegible] संगीत छल, काव्य नहि, तथापि कोनो [illegible] नहि। [illegible] प्रयोजन नहि होइन्ह, सब गीतक संग-संग ओकर भास [illegible]। ई [illegible] परिच्छिन्न कए वर्णित कहाँ भेटैत अछि ? [illegible] उपलब्ध कएने इतिहास भए गेल हम से नहि मानैत छी।

साहित्यक इतिहासमे जनमानसक भावनाक चित्रण होएबाक चाही परन्तु मैथिली साहित्य तँ जनमानससँ क्रमशः दूर होइत नितान्त [illegible] भए गेल जाहि कारणे आधुनिक कालमे यत्र-तत्र उपालम्भ सुनए पड़ैत अछि जे ई मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक साहित्य थिक। मिथिलामे जनभाषामे साहित्याराधना द्विजेतर जातिक द्वारा आरम्भ भेल छल ओ तकरा महामहोपाध्याय परमेश्वरझा धरि गमैया भासक गीत कहि [illegible] मनोरंजक वस्तु वर्णित कएल। ज्योतिरीश्वर पहिल पण्डित ब्राह्मण छलाह जे मैथिलीमे अपना नामसँ व्यक्त रूपेँ रचना कएल। विद्यापति जनमानसक तुष्टि कएल। तखने वस्तु लिखल जकर रसास्वादनमे जाति-वर्ण-धन-शिक्षा-लिंग कोनहु कारणसँ अन्तर नहि हो ओ तँहि तँ ओ देश-विदेश सर्वत्र पूजित भेलाह। मुदा हुनका उत्तर ? पाँच सए वर्ष पण्डितलोकनि मिथिलाभाषाकेँ हथिआए एकर विकासक मार्गकेँ अवरुद्ध कएने रहलाह। ई सांस्कृतिक अपकर्षक लक्षण थिक ओ पक्षधर मिश्रक पश्चात् मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्ष ह्रासोन्मुख रहल ई कथा सर्वविदित अछि।

एहि मध्यमे दू जन महाकवि मैथिली काव्य-धारामे मोड़ अनबाक चेष्टा कएल मुदा दुहू जन विफल भेलाह। *गोविन्दास झा* मैथिली कविता-क्षेत्रमे महाप्रभु चैतन्यदेवक महापण्डित शिष्यलोकनि द्वारा स्थापित मधुर-रसक समावेश कएल मुदा मिथिलाक

संस्कृतिक अनुकूल ओ वस्तु नहि छल ओ केओ दोसर कवि ओकर चेष्टो नहि कएल। मनबोध कृष्णचरितक शृंगारसँ भिन्न अंशकेँ लए गोस्वामी तुलसीदासक रीतिक अनुसरण करैत बड़ लोकप्रिय काव्य लिखए लगलाह मुदा कविसमाज जे पण्डित-समाज छल हुनको गुण नहि चीन्हए लागल। दू सए वर्षक बाद कवीश्वर चन्दा झा सेहो ओहिना उपहासक पात्र होअए लगलाह परन्तु किछु तँ सम्यक प्रभाव, किछु ओहि वातावरणक प्रभाव जाहि वातावरणमे चन्दा झा लिखबाक उत्साह पबैत रहलाह, किछु हुनक विषयक प्रभाव-रामचरितक महत्वक प्रभाव जाहि प्रसंग राष्ट्रकवि *मैथिलीशरण गुप्तजीक* उक्ति प्रसिद्ध अछि जे *"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है"*,- परन्तु सबसँ अधिक कवीश्वरक व्यक्तित्वक प्रभाव जे ओ उपहासकेँ प्रशंसामे परिणत कए सकलाह, बान्हकेँ तोड़ि मैथिली साहित्यमे एक गोट नवीनता आनि सकलाह, स्वदेश स्वधर्म ओ स्वभाषाक शंख फूँकि जनमानसकेँ आन्दोलित कए सकलाह ! परन्तु से तँ शाके 1808 मे मानव जहिआ रामायणक रचना समाप्त भेल। ताहिसँ पूर्व तँ गतानुगतिकतासँ मैथिली काव्य एकांगी, अनुकरणात्मक, कृत्रिम ओ वर्गीय होइत रहल।

एक गोटे उमापति उपाध्यायसँ मैथिली साहित्यमे एक गोट नवयुगक कल्पना करैत छथि कारण पारिजात-हरणक रचनासँ ओलोकनि मैथिलीमे नाटकक आरम्भ मानैत छथि। तथाकथित मैथिली नाटकक प्रसंग हमर मत सबकेँ बुझल अछि। मैथिलीमे जकरा किरतनियाँ नाटक कहल जाइत अछि हम ओकरा मैथिलीक नाटक मानितहिँ नहि छी; ओ तँ त्रैभाषिक संस्कृत नाटक थिक परञ्च ओकरहि किरतनियाँनाटक कहबाक यदि ककरहु आग्रह होइन्ह तँ हमरा ताहिमे कोनो आपत्ति नहि। मुदा उमापतिसँ ओकरा जोड़ब कोना सम्भव भए सकैत अछि जखन विद्यापतिक-गोरक्षविजय एहि जातिक नाटकक प्रथम कृति उपलब्ध अछि। तदुत्तर अमृतकरक वासवदत्ता ओ वत्सराज विषयक ओ कवि भीष्मक पुरुरवा ओ उर्वशी विषयक नाटकक गीत उपलब्ध अछि। नाटक लुप्त भए गेल अछि। उमापति तँ किछु नव नहि कएलैन्हि ओहो तँ विद्यापतिहिक प्रतिष्ठापित रीतिक पालन मात्र कएलैन्हि। किछु नवीनता कहाँ अनलैन्हि ओकरा ओहिना त्रैभाषिक रखलैन्हि जेना विद्यापति रचने छलाह। हँ, किरतनियाँ नाचक स्थापना ओएह कराओल ओ विद्यापतिसँ लए जे गीतमे लोकप्रियता मैथिल जनकेँ मुग्ध करैत आएल छल तकर तुष्टिक हेतु मुक्तक गीत रचि-रचि नाटकक मध्यमे समाविष्ट कएल, गोरक्षविजय तथा पारिजातहरणक गीतक तुलनासँ से केओ बूझि सकैत छी। मैथिल जनताक हेतु ओ केवल गीत रचल, नाटक संस्कृतज्ञहिक हेतु छल। *डा. जयकान्त मिश्र* किरतनियाँ नाचक प्रसंग हमर युक्ति ओ प्रमाणक विरुद्ध कतहु लिखने छथि जे हम इतिहास बिसरि गेलहुँ। मैथिली साहित्यक इतिहास प्रथमे प्रथम हमहि लिखल से हुनका ज्ञात छैन्हि ओ देखनो छैन्हि सएह तँ एहि उक्तिसँ ध्वनित होइत अछि। मुदा हम तँ कोनो इतिहास बनओने नहि छी जे हम बिसरब। मुदा श्री जयकान्तबाबू पारिजातहरणक भरतवाक्यक अन्तिम चरणक अर्थक भावना करथि जे *"आशूद्रान्त कवीनां भ्रमतु भगवती भारती भंगि भेदै"* मे भंगि भेदै पदक की व्याख्यार्थ होइत छैक।

अतएव मैथिली साहित्यक इतिहासमे युग-विभाजनक समस्या पर कोनहु आचार्यक मतसँ हमरा संतोष नहि होइत अछि। विद्यापतिसँ पूर्वक तँ केवल ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर भेटैत अछि। ओकर साहित्यिकता एखनहु विवादक विषय अछि। वर्णरत्नाकरक महत्व हमरा लेखेँ ओकर भाषाक हेतु अछि तथा ओहिमे वर्णित तत्कालीन साहित्याराधनक चित्रक हेतु अछि। विद्यापतिसँ हमर साहित्य आरम्भ होइत अछि ओ से कृष्णकाव्य रहैत अछि। मिथिलामे हर्षनाथ झा ओ बंगालमे रवीन्द्रनाथठाकुर धरि हम विद्यापतिक युग मानैत छी। तदुत्तर चन्दाझाक युग अबैत अछि ओ से होइत अछि रामकाव्यक युग। हम आइ धरि ओहि युगक परिणाम मानैत छी। हँ, एम्हर किछु दिनसँ प्रयोगवाद कहि एक नव जातिक कविता रचल जाए लागल अछि जकरा आब कए गोटे अकविता कहैत छथि। एहि श्रेणीक प्रत्येक कवि अपन रचनाकेँ *"माइल स्टोन"* घोषित करैत छथि ओ सब अपनाकेँ महाकवि कहैत छथि। प्रयोगवाद रीति थिक ओ प्रयोगवादी कविता रीतिकेँ मुख्यता दए कविताक विषयकेँ गौण कए दैत अछि। हमरा तँ कहुखनकेँ सन्देह होइत अछि जे एहि जातिक सब कवितामे विषय किछु रहितहुँ छैन्हि अथवा नहि। परन्तु जे हो, प्रयोगवादी कविता जनमानससँ दूर होइत जाए रहल अछि वर्गीय भेल जाइत अछि। कोनहु कविक रचना हुनक मित्र अथवा समानधर्मा जे छथिन्ह सएह बुझैत छथिन्ह। हम मानैत छी जे नवीन कविता लोकसाहित्य नहि भए रहल अछि। ओ जनजीवनक स्पन्दनकेँ प्रतिध्वनित करितहुँ अछि तँ विपथगामितासँ ऊपर नहि उठैत अछि। विपथागामिता नवयुगक एकटा फैशन थिक, ओ नवीन कविता सेहो तँ फैशनसँ आगाँ नहि बढ़ए पओलक अछि। तँ एकरा एक गोट नवयुग मानी अथवा नहि से एखन सन्दिग्ध अछि। काल सएह एकर निर्णय करत। तँ हम मैथिलीसाहित्यक दुइए टा युग मानैत छी- *विद्यापतिक युग, प्राचीन युग, कृष्णकाव्यक युग* ओ चन्दाझाक युग, नवीन युग, रामकाव्यक युग। हमरा बड़ संतोष अछि जे एहि इतिहासमे स्पष्ट रूपेँ तँ एहि मतक प्रतिपादन नहि अछि परन्तु लेखककेँ एहन सन किछु भाव हृदयक अन्तस्तलमे अवश्य छैन्हि। मुदा व्यक्तरूपेँ इहो गतानुगतिकतासँ अपनाकेँ मुक्त नहि कए सकलाह अछि !

परन्तु मैथिली साहित्यक एक गोट अंश एहन अछि जे आन कोनहु साहित्यमे नहि भेटत। मैथिलीमे साहित्य-रचना मैथिलीसँ भिन्न भाषा प्रान्तमे मैथिलीसँ भिन्न भाषा-भाषीक द्वारा भेल अछि ओ ताहिमे प्रत्येक प्रान्तमे अपन-अपन प्रतिभाक अनुकूल एहिमे भिन्न-भिन्न विधाक विकास भेल छैक। *विद्यापतिक* रचनामे मधुर स्वर-लहरीक संग-संग शब्दक श्रुतिमाधुर्य सेहो आकर्षक विषय छल। लोचन जकरा धातु ओ मातु कहैत छथि से दुनू समानरूपेँ उपर्युपरि आकर्षक छल। ततेक नवीन वस्तुक विधान ओ कएल जे जएह सुनए से मुग्ध भए जाए ओ विद्यापतिक समयसँ सए वर्षक अभ्यन्तरहिँ हुनक गीतिकाव्य समस्त उत्तर-पूर्व भारतवर्षमे भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे वसन्त आनि देलक। कविलोकनि विद्यापतिक अनुकरणमे राग-ताललयाश्रित गीत तँ रचबे करथि जे श्रुतिमाधुर्यक हेतु विद्यापतिहिक भाषामे रचना करए लगलाह। बंगालमे एहि अनुकरणक फलस्वरुप ब्रज-बुलिक सृष्टि भेल ओ रवीन्द्रनाथपर्यन्त बंगालमे केओ गीतकार नहि भेल छथि जे विद्यापतिक अनुकरण करैत

रचनाहुँमे रचना नहि कयने होथि। ई, मैथिलीक प्रादुर्भाव भेला उत्तर विद्यापति नाटक भेलाह ओ हुनक भाषा ओड़िआ बांग्ला–मैथिल होअए लागल। तैं ओहि ठाम साहित्यकेँ मैथिलीक साहित्य नहि कहल जाएत मुदा आसाममे तँ से स्थिति नहि भेल। ओतयके पण्डित महापुरुष शङ्करदेव विशुद्ध मिथिला भाषामे रचना कयल ओ किछु दिन धरि काव्य–परम्परा असमियामे अभिव्यक्तिक पूर्ण सामर्थ्य नहि भेल छलैक आसामक साहित्य मैथिली साहित्य थिक। शङ्करदेव साहित्यकेँ भक्ति–धर्मक प्रचारक माध्यम बनाओल ओ आसाममे जे लोकप्रिय छल तकर उपयुक्त नाटकक रचना कयल। मिथिलामे जे नाटक लिखल गेल ताहि सँ आसामक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट कए देत जे दुनू दू दृष्टिकोणसँ दू उद्देश्यसँ, दू रास्ता अपनौने। आसामक नाटक विशुद्ध मिथिलाभाषामे अछि जाहिमे गद्य सेहो अछि तथा काव्यकेँ मुख्यता नहि दए भक्तिकेँ प्रधानता देल गेल अछि। आसाममे ई युग मैथिली साहित्यक युग छल ओ लोकानुरञ्जक दृष्टिसँ भक्तिक प्रचार करबाक उद्देश्यसँ नाटक सब लिखित भेल कारण प्रचार सबसँ सुगम रीतिसँ अभिनय द्वारा भए सकैत छल। मुदा तैं कहब जे मिथिलामे सेहो नाटक ताहि उद्देश्यसँ लिखल गेल, भ्रान्तिपूर्ण होएत।

इएह थिक इतिहासकारक काज जे केहन सामाजिक वातावरणमे कोन रूपक साहित्यक रचना भेल वा भए सकैत तकर निरूपण करथि।

नेपालमे मुदा मैथिली बहुत दिन धरि चलैत रहल ओ विद्यापतिक समयसँ लए गोरखाविजयक दिन धरि मल्लराजालोकनिक समस्त राजत्वकाल, प्रायः तीनि सए वर्ष धरि नेपालक साहित्य मैथिलीक साहित्य थिक। वस्तुतः विद्यापतिक परवर्ती युगमे मिथिलामे जतबा मैथिली साहित्यक सर्जन भेल ताहिसँ कत बड़ विशेष मिथिलासँ बाहर, नेपाल ओ आसाममे भेल। नेपालक मल्लराजालोकनि स्वयं गीत ओ नाटक रचथि, कवि ओ नाटककार सबकेँ राखि काव्य ओ नाटक रचबथि। ओ सब राजाक नामसँ निर्मित हो। नेपालहुमे रंगमंच छल, एखनहु धरि भातगाममे मञ्चक चबूतरा विद्यमान अछि। एतए नाटक लिखल जाए, अभिनयक हेतु एक–एक गोट नाटक कए–कए दिन होअए। ओ सबटा नाटक विशुद्ध मिथिलाभाषामे अछि, मिथिला भाषा गद्य ओ पद्य। आओर की, नेपालमे शिलालेखादिकमे भाषा मैथिली अछि, मंगलाचरणमे मैथिलीक गीत अछि। नेपालक पुस्तकालयसबमे पचासोटा नाटक अछि, हजारो गीतक संग्रह अछि। मुदा ओहिठाम मैथिल पण्डितक मर्यादा रक्षा करनिहार जे कवि नाटक लिखने छथि, यथा वंशमणि झा, हुनक नाटक मिथिलेक नाटक जकाँ प्राकृतिक अछि। स्पष्ट अछि जे ई नाटक अभिनयक हेतु नहि रचित भेल छल, एकर अभिनय नहि भेल। अभिनयक हेतु रचित भेल ओ सब नाटक जे विशुद्ध मिथिलाभाषामे अछि। मिथिलाक प्रभावमे लिखल वंशमणिझा, आन–आन नाटककार नेपालक स्वतंत्र नाटक रचल। भाषा मैथिली छल से तँ नेपाल दरबारहिक भाषा मैथिली छल। तखन जकाँ नेपालमे मैथिलीक अनुकरण नहि भेल, प्रत्युत मैथिली सएह ओतएक भाषा साहित्यिक भाषा स्वीकृत छल, परिगृहीत छल। अतएव ओहि साहित्यकेँ नेपालक

मैथिली साहित्य कहब उचित। विद्यापतिक अनुकरणसँ एकर आरम्भ होइत परन्तु एकर विकासक क्रम स्वतंत्र छल। अतएव विद्यापतिक परवर्ती युगक मैथिली साहित्यक विवरणमे नेपालक मैथिली साहित्यक स्वतंत्र विवरण आवश्यक।

सब साहित्यक विकासक अपन स्वतंत्र क्रम होइत छैक। अंग्रेजी साहित्य किंवा हिन्दी साहित्य किंवा बंगला साहित्य जकाँ मैथिली साहित्यक इतिहास ने अछि ने लिखल जाए सकैत अछि। तैंतालीस वर्ष पूर्व जे हम मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल से तेहने स्वतंत्र, कारण, ताधरि साहित्यान्तरक इतिहाससँ हमर विचारधारा प्रभावित नहि भेल छल। हम तँ जे अपन साहित्यमे पाओल तकर एक गोट स्थूल रूप–रेखा अंकित कयल। तैंतालिस वर्ष पूर्व मैथिली साहित्यक वर्तमान युगक प्रथम चरण बितलेटा छल। नवीन साहित्यक रचना आरम्भ नहि भेल छल। हमरहु विदेशमे मैथिली–साहित्यक विकासक ज्ञान नहि छल। नेपालक मैथिली–साहित्यक परिज्ञान तँ हमरा पचासों वर्ष भेल अछि जखन काठमाण्डूक वीर–पुस्तकालय एवं ओकर परिसरमे मैथिलीक प्राचीन वैभव प्रत्यक्ष कयल। अतएव हमर ज्ञान अपूर्ण छल, विचारक सामर्थ्य अपरिपक्व छल, वर्णनमे अभिव्यक्तिक क्षमता अत्यंत सीमित छल। परन्तु साहित्यक विकासक जे चित्र तहिआ अंकित भेल से आइओ ओहने अछि। रूप–रेखा ओहिना दृढ़ अछि ओ हम इएह मानैत छी जे मैथिली साहित्य, जाहि भाषाकेँ मैथिली कहबामे ककरहु कोनो विप्रतिपत्ति नहि छैन्हि ताहि भाषामे रचित साहित्यक दुइए गोट युग अछि, प्राचीन ओ नवीन ओ एहि मध्यमे विदेशमे मैथिली साहित्यक विकास–इएह भेल मैथिलीक साहित्यक इतिहास।

एहि प्रसंग इहो बुझबाक थिक जे विदेशमे जे मैथिली साहित्यक रचना भेल से स्वतंत्र रूपसँ होइत रहल। विद्यापतिक प्रभाव सर्वत्र प्रेरक रहल मुदा मिथिलासँ नवीन प्रेरणा ने ककरहु भेटलैन्हि–मिथिलामे नवीन किछु होएबो नहि कयल – ने विदेशमे मैथिली साहित्यक विकासक कोनो प्रभाव मिथिलाक साहित्यकार पर पड़ल। उदाहरणार्थ लगनी मिथिलामे प्रचलित एक गोट प्रसिद्ध गीत थिक जकर दू गोट रूप छल, साहित्यिक जे एम्हर दू सए वर्षसँ कतेक सत्कवि अपन रचनाक विषय बनओने छथि मुदा एकर दोसर रूप अछि लोक–गीत, जाँतपरक लगनी, जे स्त्रीगण श्रमक काज करबाक काल मनकेँ दोसर दिशि लगएबाक हेतु गबैत छथि। नेपालमे चतुर्भुज रायक रचित कए गोट जाँतपरक लगनीक स्वरमे गीत भेटल अछि जे मिथिलामे नहि भेटल छल। अतएव हम कहल अछि जे मैथिली साहित्यक इतिहास ताधरि पूर्ण नहि होएत जाधरि देशान्तरमे एकर साधनाक क्रमबद्ध चित्र उपस्थित नहि कएल जाएत।

अतएव हमरा एहि इतिहाससँ पूर्ण नहि तथापि कम संतोष नहि अछि ओ हमरा विश्वास अछि जे जकरा हेतु ई लिखल गेल ताहि समाजमे एकर समुचित आदर होएत। सबसँ विशेष उपादेय अथ च प्रामाणिक अंश एहि इतिहासक भेल अछि आधुनिक युगक इतिहास। एहि विषयक विशेषज्ञ विद्वान लेखक बड़ रोचक रीतिसँ एकर विश्लेषण ओ

विवेचन कएलैन्हि अछि। इतिहासकारमे जे तटस्थता चाही तकर नीक जकाँ पालन भेल अछि। सबसँ पैघ वस्तु तँ ई जे मिथिलाभाषामे मैथिली साहित्यक ई प्रथमे प्रामाणिक अथ च स्वतंत्र इतिहास थिक ओ एहिमे आइ धरिक प्रगति ओ प्रवृत्तिक समावेश भए सकल अछि। देखबाक अछि जे सुधी समाजमे एकर केहन सम्मान होइत अछि। इति

8-9-68 श्री रमानाथ झा

-:o:-

प्रथम प्रकरण

मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि

मिथिलाक भाषामे रचित साहित्य मिथिलाभाषाक साहित्य अथवा मैथिली साहित्य कहल जाइत अछि। अतः मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ बुझबाक हेतु मिथिलाक सर्वांगीण परिचय, मिथिलाभाषाक स्वरुप, आधुनिक भारतीय भाषामे एकर स्थान एवं वैशिष्ट्य, मिथिलाक धार्मिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिकोण आदिक विषयमे सम्यक् परिचय प्राप्त कए लेब अत्यधिक महत्वपूर्ण अछि।

मिथिलाक भौगोलिक सीमा-क्षेत्र

मिथिलाक परम्परागत सीमा वृहदविष्णुपुराण (5म शताब्दी)क मिथिलामाहात्म्य-खण्डमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर *चन्दा झा* एहि प्रकारेँ कएने छथि ·

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा
कमला त्रियुगा अमृतता धेमुड़ा वागमती कृतसारा
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा

एहिसँ स्पष्ट अछि जे मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा एवं पूर्व ओ पश्चिममे क्रमशः कोशी ओ गण्डक (शालग्रामी) नदी बहैत अछि। एहि भूभागक विस्तार एहि प्रकार पूर्व-पश्चिम लगभग 290 कीलोमीटर एवं उत्तर दक्षिण लगभग 193 कीलोमीटर होइत अछि, यदनुसार एकर क्षेत्रफल होइत अछि 55970 वर्ग कीलोमीटर। एकर अन्तर्गत अविभक्त चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मुंगेर, भागलपुर ओ पूर्णियाक किछु भाग एवं नेपालक तराइक दक्षिणी भाग (सप्तरी, मोहतरी, मोरंग, सरलाही प्रभृतिक किछु जिला) अन्तर्भुक्त अछि।

मिथिलाक उपर्युक्त सीमामे परिवर्तन होइत रहल हो से सम्भव, कारण कोशीक स्रोत कहिओ स्थिर नहि रहल अछि, परन्तु म. म. महेश ठाकुरक समय (1557 ई.) धरि सिद्धान्ततः प्रायः मिथिलाक ओएह सीमा मान्य छल। सम्राट अकबर

म. म. महेश ठाकुरकें जाहि भूभागक शासनक भार देल, से दान-पत्रमे एहि प्रकार लिखल अछि- "अत्र कोष ता गोस व अत्र गंग ता संग" अर्थात् कोसस गोस धरि ओ गंगासँ पाथर [हिमालय] धरि। एतए 'कोष'क तात्पर्य कोशी तँ निश्चित बुझि पड़ैत अछि, परन्तु 'गोस'क तात्पर्य गंडक थिक अथवा नहि, से स्पष्ट नहि अछि।

जे किछु हो, सम्प्रति मिथिलासँ जाहि क्षेत्रक बोध होइत अछि, से परम्परागत मान्यतासँ बड़ परिवर्तित अछि। सम्पूर्ण, मोरंग प्रभृति तराइक भूभाग विदेशक भूमि बनि गेल अछि एवं गंगाक दक्षिण सम्पूर्ण भागलपुर जिला, मुंगेरक पूर्वीय भाग एवं संथालपरगनाक देवघर धरि मिथिलाभाषा-भाषी क्षेत्रमे आबि गेल अछि। पूर्वमे मिथिलाक सीमा कोशी मानल जाइत छल, आब पूर्णिया ओ भागलपुरक पूर्वीय क्षेत्र मानल जाइत अछि। एहिना परम्परागत वर्णित मिथिलाक पश्चिमीय भागमे भोजपुरीक प्राबल्य भए गेल अछि। अतः ताहि भागकें मिथिलाक अन्तर्गत नहि राखल जाए सकैत अछि। वस्तुतः जाहि भूभागमे मिथिलाभाषा कोनहुँ रूपें बाजल जाइत अछि, तकरहि मिथिलाक अन्तर्गत अन्तर्भुक्त कएल जाएब उचित ओ पण्डित श्री गोविन्द झाक मतसँ एहन वर्तमान मिथिला [तराइक मिथिलाभाषाभाषी क्षेत्रकें छोड़ि]क क्षेत्रफल 19620 वर्गमीलसँ अधिक नहि होइत अछि एवं ई क्षेत्र 25° ओ 27° उत्तर अक्षान्तर तथा 84° ओ 87° पूर्व देशान्तरक बीच अवस्थित अछि। एतए साल भरि 127° सेंटीमीटर औसत वर्षा होइत अछि तथा एहि ठामक न्यूनतम तापमान 7 सेंटीग्रेड [मकर-संक्रान्तिक समकाल] एवं अधिकतम तापमान 42° सेंटीग्रेड [कर्कसंक्रान्तिक समकाल] रहैत अछि।

मिथिलाक प्रमुख नाम

'बृहद-विष्णुपुराण' मे मिथिलाक बारह गोट नामक उल्लेख भेल अछि -

मिथिला तैरभुक्तिश्च वैदेही नैमिकाननम्।
ज्ञानशीलं कृपापीठं स्वर्णलांगलपद्धतिः ।।
जानकीजन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्मषा।
रामानन्दकरी विश्वभावनी नित्यमंगला ।।

एहि नामसभमे अधिकाश मिथिलाक स्थानीय वैशिष्ट्यक आलंकारिक वर्णन थिक। वस्तुतः एहि भूभागक तीनटा नाम विशेष प्रसिद्ध अछि-विदेह, मिथिला एवं तीरभुक्ति [तिरहुत]। एहि मध्य मिथिला ओ तिरहुत नाम एखनहुँ बड़ प्रसिद्ध अछि।

विदेह - एकर विदेह नाम मिथिलाक आदि-शासक विदेध अथवा विदेहक

नाम पर पड़ल छल। सरस्वती-तीरसँ यायावर आर्यक एकटा दल सर्वप्रथम गंगाक उत्तर सदानीराक तट पर अपन आर्य-संस्कृतिक प्रसार करबाक हेतु आएल छल, जकर नेतृत्व कएने छलाह विदेह माथव। तखन ई भूमि घोर वन्यप्रान्त छल। विदेह माथव अपन आचार्य गौतम राहुगण द्वारा सर्वप्रथम अग्नि प्रज्वलित कए एहि वन्यभूमिक संस्कार कएल तथा लोककें क्रमिक बसाए एतए अपन राज्यक स्थापना कएल। पश्चात् हुनक वंशजलोकनि एहि भूभाग पर कतोक पीढ़ी धरि शासन कएने छलाह। एही वंशमे विदेह जनक भेलाह, जनिक पुत्री भेलथिन्ह जगज्जननी सीता। हुनक राजधानी जनकपुर एखनहुँ प्रसिद्ध अछि। ओहि समयमे राजाक गोत्र-नाम पर जनपदक नाम रखबाक परम्परा छलैक। तेँ ई भूभाग 'विदेह' नामे ख्यात भेल-विदेहानां जनपदो विदेहः।

तिरहुत - मिथिलाक तुलनामे तीरभुक्ति [तिरहुत] बड़ नवीन नाम थिक, कारण, वाल्मीकि-रामायण अथवा अन्य प्राचीन ग्रन्थसबहिमे 'तिरहुत' नामक उल्लेख नहि अछि। सर्वप्रथम एहि नामक उल्लेख पुरुषोत्तमदेवक 'त्रिकाण्डशेष' [12म शताब्दी]मे भेल अछि-'प्राग्ज्योतिषः कामरूपे तीरभुक्तिः तु निच्छविः'। एहिना मिथिलाक वैशिष्ट्य-प्रशस्तिमूलक एकटा बहुप्रचलित श्लोकमे तीरभुक्तिक उल्लेख भेल अछि:-

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या
यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिंगम्।
मीमांसा-न्याय वेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या।
भूदेवो यत्र भूपो यजनवसुमती सास्ति सा तीरभुक्तिः।।

परन्तु ई श्लोक निश्चित रूपें 14म शताब्दीक पूर्वक रचित नहि भए सकैछ, कारण, भूदेव भूपति एतए सर्वप्रथम भेलाह ओइनवारवंशीय कामेश्वर ठाकुर जे ब्राह्मण-राजकुलक स्थापना एतए कएल। परन्तु एकटा प्रमाण एहन अछि, जाहिसँ एहि नामक प्राचीनता चारिम शताब्दी धरि सिद्ध कए दैत अछि आओर से थिक बसाढ़ [वैशाली] क उत्खननसँ प्राप्त एकटा गुप्तकालीन मुद्रा, जाहिमे एहि नामक स्पष्ट उल्लेख भेल अछि।

तीरभुक्ति-नामक सार्थकताक प्रसंग विद्वानलोकनि मध्य विशेष विवाद नहि अछि। *तीरभुक्ति* '*तीर*' ओ '*भुक्ति*' पदक संयोगसँ बनल अछि, जकर अर्थ होइत अछि तीर पर बसल देश। कोशी, गंडकी एवं गंगा एकर क्रमशः पूर्वीय, पश्चिमीय ओ दक्षिणी सीमा वर्णित अछि, संगहि मिथिलामे प्रकृति द्वारा अनेक छोट-छोट नदीक जाल बिछाओल अछि, अतः मिथिलाक '*तीरभुक्ति*' नाम कतेक सार्थक अछि, से विशेष व्याख्या-सापेक्ष नहि। '*भुक्ति*'क तात्पर्य प्रान्त सेहो होइत अछि जकर प्रयोग म. म.

हरप्रसादशास्त्रीक अनुसार सर्वप्रथम बंगालक सेननरपतिलोकनिक राजत्वकालमे भेल छल जे बारहम शताब्दीमे आक्रमण कए मिथिलाकेँ जीति एतए बंगाली ब्राह्मणकेँ बसओने छलाह। परन्तु पूर्वमे उल्लेख कएल जाए चुकल अछि जे गुप्तकालहुमे एहि भूभागकेँ तिरहुत कहल जाइत छल, तेँ सेननरपतिलोकनि एकर सर्वप्रथम प्रयोग कएल, से सिद्ध नहि होइत अछि।

'तिरहुत'क नामकरणक विषयमे एकटा आओर मत अछि जे तीन [ऋक, यजु एवं साम] वेदसँ आहुति देनिहार ब्राह्मणक मिथिला निवास-भूमि थिक, तेँ 'तिरहुत' अर्थात् '*तीरभुक्ति*' एकर नाम पड़ल। परन्तु तीर पर बसल प्रान्तहिक अर्थमे तीरभुक्तिक प्रयोग अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होइत अछि। वस्तुतः 'विदेह' नामसँ प्रसिद्ध सर्वसत्ता-सम्पन्न ई देश सर्वप्रथम गुप्त-साम्राज्य द्वारा पराधीन भेल ओ गुप्तशासक विदेह नामकेँ हटाए एकरा तीरभुक्ति-नामे ख्यात कएल। पश्चात् प्रशासनक हेतु मुसलमानी एवं ब्रिटिशशासन कालहुमे एकर इएह नाम चलैत रहल।

मिथिला - 'मिथिला' नामकरण प्रसंग सेहो मतान्तर अछि। भविष्य-पुराणक अनुसार अयोध्यानरपति निमि सर्वप्रथम एहि यज्ञभूमि पर पदार्पण कएल एवं हुनक पुत्र मिथि अपना नामे मिथिला नामक राजधानीक स्थापना कएलैन्हि। ओ नगर स्थापनाक कारणे 'जनक' नामे सेहो प्रख्यात भेलाहः-

निमिः पुत्रस्तु तत्रैव मिथिर्नाम महान स्मृतः
प्रथम भुजबलेर्येन तैहूतस्य पार्श्वतः
निर्म्मितं स्वीयनाम्ना च मिथिलापुरमुत्तमम्
पुरीजननसामर्थ्यात् जनकः स च कीर्तितः

विष्णुपुराण एवं श्रीमदभागवतमे एहि प्रसंग विस्तारसँ उल्लेख भेल अछि। तदनुसार इक्ष्वाकुक पुत्र निमि यज्ञ करबाक विचार कए पौरहित्यक हेतु वशिष्ठकेँ आग्रह कएल तँ वशिष्ठ से स्वीकार कए हुनका कहल जे '*हमरा इन्द्रक यज्ञ करबाए आबए दिअ तखन अपन यज्ञ आरम्भ करब*।' पर्याप्त समय बीति गेल ओ वशिष्ठ नहि घुरलाह तँ निमि गौतमक अध्यक्षतामे अपन यज्ञ आरम्भ करबाए देलैन्हि। ई यज्ञ ...तहि छल ता यज्ञ करएबाक हेतु हड़बड़ाएल वशिष्ठ ओतए पहुँचलाह ओ अपन ...उपस्थितिमे यज्ञ होइत देखि तमसाए हुनका शाप दए देलथिन्ह- "सद्यो विदेहो भव" अर्थात् एखनहिँ देहरहित भए जाउ। राजा निमि सेहो वशिष्ठकेँ विवेकहीन जानि ओएह शाप दए देलथिन्ह। एहि प्रकार दुहू व्यक्ति देहरहित भए गेलाह। तखन यज्ञमे उपस्थित महर्षिलोकनि निमिक मृत शरीरकेँ मथल जाहिसँ निमिक मिथिक रुपमे नव अवतरण भेल। इएह मिथि मिथिलानगरीक स्थापना कएल जे कालान्तरेँ हुनका द्वारा शासित

देशक नाम भए गेल।

परन्तु 'मिथिला' शब्दक पाणिनी द्वारा प्रदत्त व्युत्पत्ति विशेष समीचीन लगैत अछि। ओ लिखने छथि-

"मिथिलाद्यश्च मथ्यऽन्तेऽत्र रिपवो मिथिलानगरी"-

-मिथिला ओ देश थिक जतए शत्रु मथल (दमन कएल) जाइत अछि। पाणिनीक ई व्युत्पत्ति काल्पनिक तँ अवश्य अछि, परन्तु मिथिलाक शौर्य ऐतिहासिक साक्ष्यहुसँ प्रामाणित अछि। रामायणमे सीरध्वज जनक द्वारा संकाश्य पर विजय वर्णित अछि ओ महाभारतसँ सूचित होइत अछि जे तत्कालीन मिथिलेश महाभारतमे योद्धाक रुपमे सम्मिलित भेल छलाह, संगहिँ शास्त्र आ संस्कृतिक क्षेत्रमे एहि भूभागक विशिष्टता आदि-कालहिसँ प्रकृष्ट रहल अछि एवं एहि ठामक विद्वान द्वारा अन्य देशीय विद्वान सदैव पराजित होइत रहैत छलाह। अतः पाणिनीक ई व्युत्पत्ति सर्वथा सार्थक अछि।

डा. सुभद्र झा मिथिलाक व्याख्या सर्वथा भिन्न रीतिएँ कएने छथि। हुनक मान्यता अछि जे 'मिथिला' संस्कृतक 'मिथ'सँ निर्मित अछि ओ एकर अर्थ भेल संयुक्त। प्राचीन कालमे जे विदेह, वैशाली ओ अंग प्रदेश छल, से संयुक्त भए 'मिथिला' नामे ख्यात भेल-

"Mithila may mean attached together in as much as Mithila is the name of the part of that country which is made up of not less than three ancient principalities namely Vaishali, VIdeha and Ang."

एहि प्रकार मिथिलाक व्युत्पत्तिक प्रसंग जतेक मतसब अछि, ताहिमे पाणिनीक मत विशेष उपयुक्त ओ समीचीन प्रतीत होइत अछि। एकर विदेह नाम बड़ प्राचीन अछि एवं तिरहुत अपेक्षाकृत नव, यद्यपि तिरहुत ओ मिथिला आबहु बड़ प्रचलित अछि। वस्तुतः बुद्धयुगक समाप्तिक अनन्तर तिरहुत नाम प्रशासनिक व्यवहारक हेतु प्रचलित कएल गेल छल, परन्तु हिन्दू सांस्कृतिक अन्यतम विकास-क्षेत्रक दृष्टिएँ मिथिला नाम आदिकालसँ प्रयुक्त होइत रहल अछि।

मिथिलाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विदेध माथव सरस्वती-तीरसँ आबि मिथिलामे आर्य-सभ्यताक विस्तार

कएल एव विदेह अथवा जनकराज्यवंशक आधारशिला राखल। एही वंशमे जनक [द्वितीय] नामे प्रख्यात जगज्जननी सीताक पिता सीरध्वज भेल छलाह, जनिक माहात्म्यसँ एखनहुँ मिथिलावासी गौरवान्वित होइत रहैत छथि। विदेह-राज्यकुलक मिथिला पर शासनक समय 3000 ईश्वी पूर्वसँ 600 ई. पू. धरि अनुमानित अछि। वस्तुतः एहि कालकेँ ब्राह्मण-सभ्यता-संस्कृतिक स्वर्णकाल कहल जाए संकेत अछि, कारण, एही युगमे वैदिक संस्कृतिक नियामक स्मार्त-ग्रन्थसबहिक निर्माण भेल छल एवं समाजकेँ एकटा सुनिश्चित संरचनात्मक आधार प्राप्त भेल छलैक। जाति-व्यवस्था सेहो एही युगमे संघटित भेल तथा कर्मकाण्डक आधिपत्य भेलासँ ब्राह्मणक सत्ता सर्वोपरि भए गेल। जनक-याज्ञवल्क्य सन ऋषी-मनीषी एवं गार्गी-मैत्रीयी सन विदुषी ललना एही युगमे भेलीह।

जैन ओ बौद्ध ग्रन्थसबहिसँ ज्ञात होइत अछि जे-परवर्त्ती विदेहनरपतिलोकनि अपन राज्यक चिन्ता नहि कए ज्ञानमार्गक अनुसरण कए संन्यासी होइत गेलाह। फलस्वरुप विदेहराज्यतन्त्रक पतन भेल एवं कालक्रमे मिथिलाक शासन वृज्जी अथवा वज्जीगणतन्त्रक संयुक्त-संघटनक अन्तर्गत होअए लागल। बज्जीगणतन्त्र आठ गोट राज्यक संयुक्त संघटन छल, परन्तु एहि मध्य सर्वाधिक प्राधान्य छलैन्हि लिच्छवीलोकनिक, तेँ बज्जीगणतन्त्रक शासनकेन्द्र वैशाली भए गेल। बज्जीगणतन्त्रक शासन-काल 600 ई. पू. सँ 325 ई. धरि मानल जाइत अछि जे बौद्ध-धर्मक उत्कर्ष-काल छल। बौद्धधर्मक प्राबल्य भेलासँ वैदिक संस्कृति दबि तँ अवश्य गेल, तथापि मिथिला बौद्धधर्मक महासमुद्रमे ब्राह्मणधर्मक एक छोट-छीन द्वीप बनल रहल। मिथिलहुमे बौद्धधर्मक बड़ प्रसार भेल छल, जकर साक्ष्य पुरातत्व एवं इतिहासक अवशेषसँ प्राप्त होइत अछि, परन्तु ब्राह्मण धर्म ओ संस्कृति एतए कहिओ लुप्त नहि भेल, उच्चवर्गीय सामाजिक संरचना कहिओ भग्न नहि भेल। ओकर विकासक गति अन्तर्मुखी अवश्य भए गेल छल।

बज्जीसंघ अनेक बेर ए-ताबद्ध शौर्यक प्रदर्शन कए अन्तमे अजातशत्रुसँ पराजित भए परतन्त्र भए गेल। तहिआसँ मिथिलाक इतिहास पराजय ओ परतन्त्रताक इतिहास थिक। मगध ओ गुप्तनरपतिलोकनिक, पुनः हर्षवर्द्धनक अधीन अरुणाश्वक शासनकाल [7म शताब्दी]मे एकरा पर तिब्बती आक्रमण भेलैक। आठम शताब्दीक अन्तिम चरणमे बंगालक पालनरपतिलोकनिक आधिपत्य स्थापित भेल ओ अन्तमे 1097 ई.मे कार्णाटवंशीय क्षत्रियनरपति नान्यदेव जखन पुनः स्वतन्त्र मिथिलाराज्यक शिलान्यास कएल तँ मिथिला पुनः पूर्वक गौरवकेँ प्राप्त करए लागल, पुनः वैदिक ब्राह्मण-संस्कृतिक उत्कर्षक नवयुग आरम्भ भेल तथा समाजमे स्मृति-अनुशासित एहन वेगवती संरचनात्मक धारा प्रवाहित भेल, जाहिमे बौद्धधर्मक बचल-खुचल प्रभाव लुप्त भए गेल। कला ओ साहित्यक क्षेत्रमे कर्णाट-नरपतिलोकनिक राज्यकाल

[1097 ई. सँ 1326 ई.] विशेष रुपेँ स्मरणीय अछि, कारण परम्परागत शास्त्र-चिन्तन, सभ्यता-संस्कृति एव साहित्यक विकासक संग-संग मिथिलादेशीय संगीत-साधनाक आरम्भ एही युगमे भेल छल। प्रथम ओ अन्तिम नरपति नान्यदेव एव हरिसिंहदेव संगीतक मर्मज्ञ वेत्ता ओ पोषक छलाह तथा संस्कृत-साहित्य-साधनाक ओहि युगमे मिथिलाक जनभाषामे साहित्य-रचनाक श्रीगणेश भेल। हरिसिंहदेव द्वारा पंजी-व्यवस्थाक सम्पादन एवं आसन्न इसलामी प्रभावक परिप्रेक्ष्यमे हुनक मन्त्रिप्रवरलोकनिक द्वारा, विशेषतः चण्डेश्वरठाकुर द्वारा सप्तरत्नाकरक रचना-पूर्वक सामाजिक पुनर्संघटनक कार्यक सेहो उल्लेख कएल जाए संकेत अछि जे मिथिलाक धार्मिक संस्कृतिक दृढ़ कवच सिद्ध भेल। पृष्ठभूमिक रुपमे तकर परिज्ञान मैथिली साहित्यक अध्येताक हेतु आवश्यक अछि।

कर्णाटराज्यवंशक पतनक पश्चात् दिल्लीक केन्द्रीय इस्लामी सत्ताक अधीन ओइनवार-कुलीन राज्यवंशक शासन चौदहम शताब्दीक मध्यमे आरम्भ भेल, से सोलहम शताब्दीक प्रथम-चरण धरि स्थापित रहल। ओइनवार नरपति राजा शिवसिंहक राजत्वकालमे विद्यापति सन महाकवि उत्पन्न भेलाह जे मिथिलाक जनभाषाकेँ साहित्यिक गरिमा प्रदान कएल तथा एहन मैथिली साहित्यधाराक विकास प्रारम्भ भेल, जाहिमे मैथिलीय संगीत एवं मिथिलाक विशिष्ट भाववृत्ति-आध्यात्मिक ओ भौतिक-भक्ति-भुक्ति दुहूक मधुर ओ रागात्मक द्योतन भेल। वस्तुतः एगारहम शताब्दीसँ पन्द्रहम शताब्दी धरि मिथिलाक सामाजिक स्थितिमे कोनहुँ विशेष भेद उपस्थित नहि भेल छल, प्रत्युत ब्राह्मणनरपतिक शासन भेलासँ ब्राह्मणवादी संस्कृति आओर प्रबल भए गेल आओर ओइनबार राजकुलक पतन भेला पर पुनः उच्च-ब्राह्मणहिक द्वारा, खण्डबलाराजकुलक स्थापना म. म. महेशठाकुर द्वारा 1557 ई.मे भेल तँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन-धारा पूर्ववत बहैत रहल, ओहिमे कोनो प्रकारक उल्लेखनीय परिवर्तन नहि भेल। अतः मिथिलाभाषासाहित्यहुमे दृष्टिकोण-मूलक कोनो विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। ई परिवर्तन उपस्थित भेल ब्रिटिश शासनक आरम्भ भेला पर अंगरेजी भाषा ओ पाश्चात्य सभ्यता -संस्कृतिसँसम्पर्कक कारणे। इएह कारण थिक जे तत्पश्चाते मैथिली साहित्यहुमे विशेष परिवर्तनक दर्शन होइत अछि।

मिथिलाक धार्मिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिकोण

वस्तुतः मिथिला समाजक सांस्कृतिक दृष्टिकोण एकर धार्मिक दृष्टिकोणसँ तादात्म्य-रुपेँ सम्पृक्त अछि। बिहारक एहि भूभागहिमे सर्वप्रथम आर्य-संस्कृतिक ध्वजोत्तोलन भेल छल ओ तेँ एतहि सर्वप्रथम वैदिक कर्मकाण्डक प्रचार भेल छल। जैन ओ बौद्धधर्मक प्रचार ओ प्राबल्य भेलासँ वैदिक संस्कृतिक विकास एतए शिथिल तँ

अवश्य भए गेल छल, परन्तु वैदिक धर्मक जड़ि एतए जनजीवनमे एतेक जमि गेल छलैक जे जैन-बुद्धयुगहुमे ओकर विकास-धारा अन्तःसलिला सरस्वती जकाँ प्रवाहित होइत रहल ओ बुद्धयुगक अवसान भेला पर पुनः वैदिक ब्राह्मण-धर्मावलम्बी नरपतिक अधीन एकर स्वर्णयुग उपस्थित भेल। मैथिली भाषा-साहित्यक व्यक्तित्व-प्रतिष्ठापन चौदहम शताब्दीमे कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर एवं महाकवि विद्यापति द्वारा निष्पन्न भेल छल, किन्तु एकर शिलान्यास जैन ओ बुद्धयुगमे सएह भेल छल लोकभाषाक प्रतिष्ठापनसँ, कारण, जैन ओ बौद्धधर्मक आचार्य अपन-अपन धर्मग्रन्थक रचना संस्कृतमे नहि कए तत्कालीन लोकभाषा प्राकृतमे कएने छलाह। बौद्धधर्मक मैथिल महायानावलम्बी सिद्धलोकनि तँ अपन सिद्धान्तक प्रचारार्थ मिथिलाक तत्कालीन लोकभाषा (अवहट्ठ)क उपयोग कएने छलाह। '*चर्यापद*' तकर महत्वपूर्ण उदाहरण थिक जे मैथिलीक प्रामाणिक आदि-साहित्य मानल जाइत अछि।

मिथिला पर आर्यलोकनिक आधिपत्य भेला पर एतए वैदिक धर्म ओ आर्य-संस्कृतिक आधिपत्य भेल। ओहिसँ पूर्वक मिथिलाक सामाजिक धर्म ओ संस्कृति कोन रुपक छल, तकर सांगोपांग परिचय तँ प्राप्त नहि होइत अछि, परन्तु एतबा अवश्य ज्ञात भए गेल अछि जे पूर्वक कतोक धार्मिक ओ सांस्कृतिक मान्यता ओ विश्वास आर्यकालहुमे मिथिलामे अक्षुण्ण बनल रहल आओर जे वैदिक संस्कृतिमे अन्तर्भुक्त कए लेल गेल। उदाहरणार्थ मिथिलाक धार्मिक संस्कृतिमे शिवभक्तिक महत्वक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। शिव-पूजा मिथिलामे आर्य-ब्राह्मण धर्मक स्थापनासँ पूर्वहिसँ प्रचलित छल ओ एखनहुँ अछि तथा मैथिली साहित्यमे महेशबानी एवं शिवक नचारीक अत्यधिक महत्व अछि। एहिना मिथिलाक प्रचलित वैदिक कर्मकाण्डमे आर्येतर धार्मिक सांस्कृतिक तत्वक समाहारक अन्य उदाहरण थिक शालग्राम एवं पितरक सारा क पूजाक परिपाटी, जकरा आरम्भमे वैदिक कर्मकाण्डमे स्थान प्राप्त नहि भेल छलैक। पश्चात् आर्यलोकनि चैत्य (सारा) पूजाकेँ ग्रहण कए लेलैन्हि तथा पश्चात् जे बौद्धधर्ममे सेहो गृहीत भेल।

वस्तुतः मिथिलाक धर्म-संस्कृतिकेँ समन्वयात्मक ओ उदार कहल जाए सकैत अछि जे वैदिक होइतहुँ अन्य धर्मक लोकप्रिय सामाजिक तत्वकेँ ग्रहण करैत गेल। एतेक धरि जे उपनिषदकालीन मिथिलाक दार्शनिक चिन्तकलोकनि, यथा, जनक, याज्ञवल्क्य, गार्गी मैत्रेयी प्रभृति, वैदिक बाह्याडम्बर ओ कट्टरताक विरुद्ध विद्रोहक झण्डा फहराए देलैन्हि एवं मिथिलाक धर्म ओ संस्कृतिकेँ उदार ओ लोकसम्मत बनएबामे अपन-अपन महत्वपूर्ण योगदान दैत रहलाह। परवर्ती कालहुमे ई समन्वयात्मक प्रवृत्ति मिथिलाक धार्मिक संस्कृतिक विशेषता बनल रहल। वस्तुतः मिथिलामे बौद्ध ओ वैदिक संस्कृतिमे दीर्घकाल धरि संघर्षक वातावरण बनल रहल ओ अन्तमे जखन बौद्धधर्म पराभूत भए गेल तँ बौद्धधर्मक लोकप्रचलित सामाजिक तत्वकेँ मिथिलाक वैदिक संस्कृतिमे समाहित

कए लेल गेल। चौदहम शताब्दीक मिथिलाक सामाजिक पुनर्संघटनक विशिष्ट पुरोधा चण्डेश्वरठाकुरक '*कृतिरत्नाकर*' मे मिथिलामे प्रचलित बारहो मासक पाबनितिहारक जे विवरण प्रस्तुत अछि, ताहिमे बौद्धधर्मक अनेक पावनिक ब्राह्मणधर्मक कृतिक रुपमे उल्लेख भेल अछि। ताबत धरि मिथिलासँ बौद्धधर्म पूर्णतः समाप्त भए गेल छल तथा भगवान बुद्ध हिन्दू धर्मक देवताक रुपमे गृहीत भए चुकल छलाह।

बहुदेवोपासना एवं शिव, शक्ति ओ विष्णु-भक्तिक प्राधान्य

मिथिलामे धर्मक क्षेत्रमे साम्प्रदायिकता कहिओ प्रचलित नहि भेल, प्रत्युत वर्णाश्रम-धर्मक अन्तर्गत उदार ओ साकार बहुदेवोपासनाक एतए प्राधान्य रहल। तथापि आदिअहिसँ शिव, शक्ति ओ विष्णुक विशेष महत्व एतए उपलक्षित होइत रहल जे मिथिलाक धार्मिक विशेषता बनि गेल। नैष्ठिक मैथिलक ललाट पर भस्मसँ निर्मित क्षैतिज त्रिपुण्ड पर लम्बाकार श्रीखण्डक टीका ओ ताहि पर सिन्दूरक ठोप मिथिलाक धार्मिक विशेषताक द्योतन करैत अछि। भस्मसँ अंकित त्रिपुण्ड शिवभक्तिक, लम्बाकार श्रीखण्डक टीका विष्णुभक्ति एवं सिन्दूरक ठोप शाक्त-भावनाक प्रतीक मानल जाइत अछि।

मिथिलाक जन-जीवनमे शिव-पूजा बड़ प्रशस्त अछि एवं हिन्दूक सब जाति ओ सम्प्रदाय द्वारा समान रुपेँ शिवक आराधना होइत अछि, तेँ मिथिलामे शिव जन-देवता थिकाह ओ एही कारणे मिथिलामे एकहुटा एहन गाम नहि होएत जतए शिव-मन्दिर नहि हो। शिव मोक्ष-प्रदानकर्त्ता विशिष्ट देवताक रुपमे मान्य छथि। माँटिसँ शिवलिंग बनाए पूजा करबाक एवं करबएबाक परम्परा एतए बड़ प्रचलित अछि, कारण, एहिसँ नाना प्रकारक विघ्न शान्त होइत अछि। शिवभक्तलोकनि हजार-हजारक संख्यामे कामरु लए पएदल कपिलेश्वर, पशुपतिनाथ एवं सर्वाधिक वैद्यनाथ महादेवकेँ गंगाजल चढ़बैत छथि, से मिथिलामे शिवभक्तिक लोकप्रियताकेँ सूचित करैत अछि। एही कारणे विद्यापतिक महेशबानी ओ शिवक नचारी बड़ प्रसिद्ध भेल एवं ओहि प्रकारक पदावली-रचनाक परम्परा मैथिली साहित्यमे विद्यापति द्वारा जे स्थापित भए गेल, से एखनहुँ धरि अनुवर्तमान अछि।

मिथिलामे शक्तिक उपासना शिव-भक्तिसँ किंचितो कम प्रचलित नहि अछि। शिव यदि मुक्ति प्रदान करैत छथि तँ शक्ति सिद्धि प्रदान करैत छथि ओ एहि सिद्धिसँ शक्तिक उपासक अलौकिक एवं चमत्कारिक शक्ति प्राप्त करैत छथि। परन्तु सिद्धि-प्राप्तिक हेतु शक्ति-उपासनामे तन्त्र-साधना प्रयोजनीय होइत अछि। मिथिला भारतक प्रमुख शक्ति-पीठक रुपमे मान्य अछि, कारण उग्रतारास्थान [महिषी], उच्चैठ (मधुबनी), कात्यायनस्थान, जयमंगलास्थान आदि मिथिलहिमे स्थित अछि। वस्तुतः

तन्त्रोपासनामे शक्ति-साधनाक प्रमुखता रहितहुँ शिव-तत्वक मिश्रण सेहो अभिहित अछि, कारण शिव पुरुषक प्रतीक थिकाह जनिक शक्तिक संग भेलहिँ पर सृष्टिक विधान होइत अछि। एही कारणे शिवशक्तिमय तन्त्रोपासना मैथिल संस्कृतिक अभिन्न अंग बनि गेल अछि।

मिथिलामे तन्त्रोपासनाक विकासक मूल-उत्स प्राचीन आगमग्रन्थसब थिक, जकर उल्लेख ज्योतिरीश्वर ठाकुर अपन '*वर्णरत्नाकर*' (पृ. 60) मे कएने छथि। बौद्धधर्मक महायानशाखाक गुह्यसाधनाक प्रभाव सेहो आगमक तन्त्रोपासना पर पड़ल एवं से मिथिलाक शाक्त-भावनाक अभिन्न तत्व बनि गेल। एतेक धरि जे एकरा मिथिला समाजक सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवनक मुख्य विशेषता कहल जाए सकैत अछि। उदाहरणार्थ मिथिलाक प्रत्येक परिवारमे गोसाउनि होइत छथि जनिक आराधनाक बिना कोनो शुभकार्य आरम्भ नहि होइत अछि। कोनहुँ बालककेँ जे प्रथम-प्रथम श्लोक सिखाओल जाइत अछि से थिक शक्ति-भक्तिक-

सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी।
उग्रे तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः ।।

एही प्रकारेँ मिथिलामे सामाजिक एवं धार्मिक पर्वमे अड़िपन अंकित कएल जाइत अछि, से थिक तान्त्रिक प्रतीकमूलक यन्त्र। कुमारिकेँ भोजन करएबाक परिपाटी सेहो तन्त्रोपासनामे विहित अछि। मातृका-पूजाक प्रचलन एवं माता अथवा कोनहुँ मातृ-तुल्य गुरु व्यक्तिसँ इष्टदेवीक मन्त्र लेब प्रत्येक नैष्ठिक व्यक्तिक हेतु एतए आवश्यक अछि। मिथिलामे विजयादशमी जाहि उत्साह-उमंग ओ गहन धार्मिक विश्वाससँ मनाओल जाइत अछि, ताहूसँ जन-जीवनमे शक्तितत्वक प्रति एकान्त निष्ठाक द्योतन होइत अछि। एतबहि नहि, विद्वानलोकनिक मत अछि जे मैथिलत्वक परिचायक '*पाग*' सेहो तान्त्रिक मान्यतासँ सम्बद्ध अछि।

शक्ति-उपासना एवं ओहिसँ सम्बद्ध तन्त्र मिथिला-क्षेत्रीय लिपि ओ साहित्यकेँ सेहो प्रभावित कएने अछि। मिथिलाक्षरक विकास तान्त्रिक यन्त्रहिसँ मान्य अछि। ई सर्वमान्य अछि जे तिरहुताक्षरक आरम्भ जाहि मंगल-चिह्न '*आँजी*'सँ होइत अछि, से तान्त्रिक कुण्डलिनीक बोधक थिक।

मैथिलीमे शक्ति-आराधनाक परिचायक थिक गोसाउनिक गीत, जकर गायन बिना कोनो शुभ-कार्यक आरम्भ मिथिलामे नहि होइत अछि। विवाहक अवसर पर '*ओंग*' गाओल जाइत अछि, से तन्त्रसँ सम्बद्ध मानल गेल अछि। दशो महाविद्याक ध्यानमूलक गीत-रचना मैथिलीक शक्तिमूलक भक्तिकाव्य थिक।

शिवशक्ति-भक्तिक तुलनामे विष्णु-भक्तिक प्रचार मिथिलामे अपेक्षाकृत कम भेल। परन्तु भागवत, हरिवंश, ब्रह्मवैवर्तपुराण आदिक प्रचार मिथिलामे छल अवश्य एवं विष्णुसम्बन्धी व्रत-उपवास एखनहुँ एतए प्रचलित अछि, ताहिसँ सिद्ध होइत अछि जे मिथिलहु मध्य वैष्णव-भक्ति महत्वपूर्ण मानल जाइत छल। परन्तु मैथिली वैष्णवकाव्यक रचना मिथिलामे नहि, मिथिलेतर पूर्वांचलप्रदेशमे भेल। गृहस्थाश्रमकेँ त्यागि ओ सांसारिक सम्बन्धकेँ विच्छिन्न कए जे वैरागी बनि जाइत छथि, माछ ओ मांसकेँ छोड़ि जे तुलसीक माला धारण कए लैत छथि, से मिथिलामे शाक्त होइतहुँ वैष्णव कहबैत छथि एवं एहन व्यक्ति उच्च-वर्गमे विरल होइत छथि। एही कारणे विष्णुपदक प्रधानता मैथिली साहित्यमे नहि अछि। वस्तुतः मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्य धारा शिव ओ शक्ति-मूलक थिक।

संगीतक परम्परा एवं मैथिली गीतकाव्यक स्वरुप।

मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनमे संगीतक सर्वोपरि महत्व अछि। एही कारणे मैथिली साहित्यक विकास गीतसँ भेल एवं एकर इतिहास गीतमय अछि। वस्तुतः बड़ प्राचीन कालसँ संगीतसाधनाकेँ मिथिलामे महत्व देल जाए लागल छल, जकर आरम्भिक इतिहास एखनहुँ धरि पूर्ण स्पष्ट नहि भए सकल अछि। मैथिलीय रागरागिणीक प्राचीनतम उल्लेख सिद्धलोकनिक '*चर्यापद*' मे उपलब्ध होइत अछि। कार्णाटनरपति म. नान्यदेव (1097 ई.) मिथिलामे अपन राज्य स्थापित करबाक पश्चात् 'सरस्वती-हृदयालंकार' नामक संगीतग्रन्थ लिखल जाहिमे सर्वप्रथम ओ मैथिलीय रागरागिणीक उल्लेख क्रमबद्ध रीतिएँ कएल। मैथिलीय रागरागिणी ओ ताहि हेतु प्रयुक्त गीतरचना पर पश्चात् सुप्रसिद्ध '*गीतगोविन्द*'क महाकवि जयदेव (1120 ई.)क प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। महाकवि विद्यापतिक एकटा उपाधि 'अभिनवजयदेव' सेहो प्रसिद्ध अछि।

मैथिलीय संगीतक सक्रिय गतिविधि ओ विकास-प्रसारक दृष्टिसँ म. हरिसिंहदेव (1296-1326) क राज्यकाल विशेष रुपेँ उल्लेखनीय अछि। म. हरिसिंहदेव संगीतशास्त्रक मर्मज्ञ ज्ञाता छलाह, जाहि तथ्यक सूचना विद्यापति अपन 'पुरुषपरीक्षा'क '*नृत्यविद्यकथा*' मे देने छथि। हुनक आश्रित कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर अपन '*वर्णरत्नाकर*' मे गीत ओ नृत्य दुहूक सांगोपांग ओ सजीव वर्णन कएने छथि, ताहिसँ तत्कालीन समृद्ध संगीत- साधनाक सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

म. हरिसिंहदेवक नेपालमे पालायनक पश्चात् ओतहि हुनक वंशजलोकनिक छत्रच्छायामे संगीत-साधना विशेषरुपेँ होअए लागल। नेपालमे म. हरिसिंहदेवक अनन्तर

शक्रभूपाल (भूपालसिंह ?) भेलाह, तत्पश्चात् रत्नाधर ओ दमयन्तीक पुत्र जगद्धर भेलाह जे 'संगीतसर्वस्व' नामक ग्रन्थक रचना कएल। नेपालक मल्लवंशीय शासकलोकनिमे अनेक संगीतशास्त्रक मर्मज्ञ ओ अनुरागी नरपति भेल छलाह, जनिक गौरवपूर्ण उल्लेख मुद्रादिक आलेखमे प्राप्त होइत अछि। मल्लनरपतिमे जगज्ज्योतिर्मल्ल (1613-37) एतए विशेष उल्लेखनीय छथि जे काव्य ओ संगीत दुहूक विशिष्ट वेत्ता छलाह। उक्त नरपति 'स्वरोदयटीका', 'संगीतभाष्कर' 'संगीतसारार्णव', 'संगीतचन्द्र' 'संगीतसार-संग्रह' आदि अनेक संगीतशास्त्रीय ग्रन्थक रचना कएल। हिनक 'गीतपंचाशिका' मैथिलीय रागरागिणीक स्वरूपनिरूपणक दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय ग्रन्थ अछि, कारण, मैथिलीय रागरागिणीक प्रामाणिक विवरण सर्वप्रथम मिथिलामे रचित 'रागतरंगिणी'सँ प्राप्त होइत अछि, जकर रचना 1624 शकाब्दसे भेल एवं ताहूसँ पूर्व नेपालमे 'गीतपंचाशिका'क रचना 1550 शकाब्दमे, अर्थात् '*रागतरंगिणी*'सँ 74 वर्ष पूर्व भेल, जाहिमे मैथिलीय रागरागिणीक स्पष्ट उल्लेख भेल अछि, संगहिँ लगनी, कोबर, झूमरिक सेहो उदाहरण देल अछि, जकर नेपालमे प्रचार छल।

मिथिलामे खण्डबलाराज्यकुलक स्थापनाक पूर्व संगीतशास्त्रक कोनो रचना भेल छल, तकर प्रमाण उपलब्ध नहि होइत अछि, परन्तु ओइनवार-नरपति-लोकनि संगीतक अनुरागी छलाह, ताहिमे कोनो सन्देह नहि, विशेषतः म. शिवसिंह, जनिक मुख्य आश्रयमे मधुर कोमल-कान्त पदावलीक रचना विद्यापति कएल। 'रागतरंगिणी'क अनुसार हुनक आश्रयमे जयत नामक गायनकलाविद् रहैत छलाह जे विद्यापतिक पदावलीकेँ संगीतक कसौटी पर कसैत छलाह एवं ओकरा लोकप्रिय बनबैत छलाह। महाकवि लोचन स्पष्ट रूपेँ लिखने छथि जे विद्यापति जाहि मिथिलापभ्रंशमे काव्यरचना कएल, से मैथिलीय गीत थिक एवं मैथिलीय गीत भास-परिवर्तनानुसार विभिन्न नामे विश्रुत अछि-

तीरभुक्त्यन्यदेशेभ्यस्तीरभुक्तौ विलक्षणाः।
स्वरभेदात् परं नाम्ना, तेन तेनैव विश्रुताः।।

'*रागतरंगिणी*'क रचना म. महिनाथठाकुर (1668-90 ई.) एवं महाराजकुमार नरपतिठाकुर (1690-1701)क हेतु भेल छल, जनिक हेतु लोचन 'धुनिमानसिन्धु' उपाधिक प्रयोग कएने छथि। महाकविलोचनक संगीतज्ञक रूपमे एहि हेतु विशेष स्थान अछि कारण, ओ प्रथम बेर भारतीय संगीत-धारामे मिथिलादेशीय संगीतक स्वतन्त्र व्यक्तित्वक शास्त्रीय विवेचना कए ओकर स्वरूपकेँ प्रामाणिक रीतिएँ उपनिबद्ध कएल एवं मैथिली पदावलीक छन्द एवं मैथिलीय रागरागिणीक अभेद सम्बन्ध निरूपित कएल।

लोचनक पश्चात् मिथिलादेशीय संगीतशास्त्रीय ग्रन्थक रचना उपलब्ध नहि अछि, परन्तु हुनकासँ पूर्वहि, खण्डबलाराजवंशक मिथिला पर प्रशासन आरम्भ भेलाक अनन्तर मिथिलादेशीय संगीतक आकर-ग्रन्थ 'श्रीहस्तमुक्तावली'क रचना भेल छल, जकर टीका अपन दौहित्र अनन्तक प्रार्थना कएला पर घनश्याम लिखने छलाह। 'श्रीहस्तमुक्तावली'क रचना प्रायः म. म. महेशठाकुरक पुत्र शुभंकरठाकुर कएने छलाह, जनिक नृत्य-सम्बन्धी ग्रन्थ 'संगीत-दामोदर' सेहो उपलब्ध अछि।

उपर्युक्त विवरणसँ स्पष्ट अछि जे संगीतप्रियता मिथिलादेशीय चरित्रक विशेषता आदिकालहिसँ भए गेल छल। फलस्वरूप मैथिली साहित्यक प्रवर्तन ओ विकास गीतसँ भेल ओ तेँ मैथिली साहित्यमे गीतकाव्यक प्रधानता अछि।

मैथिली गीतकाव्यक प्रमुख भेद

मैथिली गीतकाव्यक सर्वप्रमुख भेद तिरहुति नामे ख्यात अछि। तिरहुति शृंगाररसक मधुर गीत थिक, जाहिमे नायक-नायिकाक संयोग-वियोगक रागात्मक वर्णन होइत अछि। विशेषतः एहि मध्य नायिकाक अनुरागपूर्ण अन्तरतरक मर्मस्पर्शी ओ स्वाभाविक उद्घाटन कएल जाइत अछि ओ टेकमे 'ना', 'हो', 'रे', अथवा '*सजनीगे*' प्रयुक्त होइत अछि। तिरहुति नामकरण एहि प्रभेदमूलक गीतक मिथिलादेशीय विलक्षणताक द्योतन करैत अछि। '*तिरहुति*'क चारिगोट मुख्य उपभेद अछि। ई उपभेद भास ओ विषय-वस्तु दुहू दृष्टिएँ ख्यापित होइत अछि-

(क) बटगवनी - तिरहुतिक सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभेद बटगवनी नामे ख्यात अछि। एहि मध्य सखीसभक संग समागम-गृहमे पतिसँ अभिसारक हेतु जाइत नायिकाक वर्णन होइत अछि। बटगवनी एक विलक्षण '*भास*'मे गाओल जाइत अछि आओर ओहि भाससँ एकर विलक्षणता द्योतित होइत अछि। एहिमे '*सजनी गे*' टेक प्रयुक्त होइत अछि। विद्यापतिक बटगवनीमूलक रचना बड़ प्रसिद्ध अछि।

(ख) गोआलरी - एकर विषय-वस्तु होइत अछि गोपीसभक संग कृष्णाक नोंक-झोंक एवं केलिकौतुक। विद्यापतिक गोआलरी प्रसिद्ध अछि, परन्तु नन्दीपति गोआलरीक विशेष प्रसिद्ध कवि छथि।

(ग) रास - एहि मध्य गोपीसभक संग कृष्णक रास-लीलाक वर्णन होइत अछि। वस्तुतः एहि प्रभेदक रचनामे व्रजभाषाक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। रासक सर्वप्रमुख रचयिता छथि साहेबरामदास।

[illegible]

[illegible] प्रति अविच्छिन्न [illegible] स्थापित करय। अत: विद्यापतिक गीत-प्रबंधक गीत [illegible] अछि। [illegible] अछि।

[illegible] अछि। [illegible] अछि।

गीत ओ [illegible] साहित्यिक ओ लौकिक [illegible] मैथिलीमे उपलब्ध अछि।

7. [illegible] - [illegible] प्रसिद्ध अछि। [illegible] प्रमाण।

8. [illegible] ओ [illegible] - [illegible] अछि। [illegible] अछि।

मिथिलामे प्रचलित [illegible] विशेष प्रसिद्ध अछि। [illegible] उपलब्ध अछि।

[illegible] गीत - [illegible] अछि। [illegible]

[illegible] - [illegible] अछि। [illegible] मैथिलीमे [illegible] अछि। [illegible]

एहि मध्य गौरीक माता मनाइनि [मेनका]कैं बारंबार सम्बोधित कएल जाइत अछि। महादेवक विवाहक अथवा हुनक पारिवारिक जीवनक कोनो रोचक प्रसंग महेशबानीक विषय होइत अछि। नचारीक नामहिसँ स्पष्ट अछि जे ई नाम विषयमूलक नहि थिक यद्यपि साक्षात् शिवप्रार्थनामूलक नचारीक मैथिलीमे प्रधानताक कारणे नचारीक अर्थ शिवमूलक प्रार्थनारुपमे रुढ़ भए गेल ओ मैथिलीक कतोक इतिहासकार (डा. जयकान्तमिश्र, प्रो. राधाकृष्ण चौधरी प्रभृति) नचारीक प्रयोग रुढ़ अर्थमे कएने छथि। वस्तुतः नचारी व्यापक अर्थबोधक शब्द थिक। एकर अर्थ भेल ओ गीत जकरा लोक भावतन्मय भए नाचि-नाचि गाबए एवं नाचि-नाचि गएबामे वाद्य-यन्त्रक अनिवार्यता स्वयंसिद्ध अछि। नचारीक प्राचीनतम उल्लेख 'अबुल फजलक आइनी अकबरी'मे भेटैत अछि। अबुलफजुलक विद्यापतिक 'लचारी'क उल्लेख करैत ओकर विषय उद्दाम प्रेमभावना (*Violence of Passion of love*)कैं कहने छथि। नचारीक व्यापक अर्थक पुष्टि जगज्ज्योतिर्मल्ल (1613-37)क '*गीतपंचाशिका*'सँ होइत अछि, जाहिमे शिवविषयक नचारीक अतिरिक्त गणेश, सूर्य, कृष्ण ओ भगवतीक, संग-संग योगप्रकारनचारी, तत्वज्ञानकथन नचारी, अपराधक्षमापन नचारी पर्यन्तक पदावली संगृहीत अछि। एतबहि नहि, एकटा शृंगारविषयक नचारीक पद सेहो स्पष्ट उल्लेखपूर्वक देल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक समयमे तँ सहजहिँ, तकर पश्चातो कतोक शताब्दी धरि मिथिलामे नचारीक व्यापक अर्थ प्रचलित छल। ओइनवारराज्यवंशक पतन भेला पर मिथिलाक भाषासाहित्य ओ नृत्यगीतक विकासक मुख्य केन्द्र नेपालक मल्लनरपतिलोकनिक राज्याश्रय भए गेल छल, से 'गीतपंचाशिका'क अध्ययनसँ पूर्णतः स्पष्ट अछि। 'गीतपंचाशिका'क रचना 'तौर्यत्रिकार्थ' भेल छल, से एकर अन्तक श्लोकमे स्पष्ट उल्लिखित अछि। तौर्यत्रिकमे वाद्य, गीत ओ नृत्य तीनूक मधुर समन्वय रहैत अछि ओ नचारीमे सेहो से रहैत अछि। तेँ नचारीकें तौर्यत्रिकक एकटा भेद कहल जाए सकैत अछि। हमर निर्भ्रान्ति धारणा अछि जे कलात्मक गरिमासँ युक्त भए मिथिलाक सुप्रचलित लोक-नृत्य नचारी नेपालक राजदरबारमे तौर्यत्रिकक संज्ञा धारण कएलक। हमर इहो धारणा अछि जे किर्तनियाँ नाचक अभिनय-परम्परा नचारीक रुपान्तर मात्र थिक।

परन्तु '*गीतपंचाशिका*'क जाहि रचनासभक शीर्षकमे नचारीक स्पष्ट उल्लेख अछि, से अधिकांश भक्तिमूलक थिक, तेँ क्रमशः नचारी वाद्य-नृत्य-युक्त भक्तिमूलक गीतात्मक अभिव्यंजनाक अर्थमे अधिक प्रयुक्त होअए लागल। पश्चात् शिवभक्तिक प्रधानताक कारणे शिवमूलक रागात्मक भक्ति-रचना नचारीक अर्थमे रुढ़ भए गेल।

मैथिली भाषासाहित्यक महत्व

मिथिलाक आचार-विचार, वेषभूषा, खानपान, धार्मिक आस्था ओ विश्वास

आदि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विभिन्न पाश्चात्य विचार-धाराक प्रभाव, नवयुगीन राजनीतिक जागरण, दिनानुदिन बढ़ैत सामाजिक संरचना पर नगरीय प्रभाव आदिक कारणे सम्प्रति परिवर्तनक द्रुततर प्रक्रियासँ गुजरि रहल अछि। एहि प्रकार आमूल परिवर्तन भेलासँ मिथिलाक ओहि सामाजिक गरिमाक स्खलनक सहजहिँ सम्भावना कएल जाए सकैत अछि, जकर कारणे भारतीय संस्कृति-धारामे मैथिल संस्कृतिक विलक्षण स्थान आदिकालहिसँ रहैत आएल अछि। तखन भविष्यमे मिथिलाक स्वतन्त्र व्यक्तित्व एकमात्र मैथिली भाषा ओ साहित्य पर आधारित रहि सकत ओ मिथिला भाषा मैथिल संस्कृतिक पर्याय चिरकाल धरि बनल रहत, ताहिमे सन्देह नहि। एहीसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक अप्रतिम महत्वक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

मैथिली भाषाक विभिन्न नाम

मिथिलाक लोकवाणीक हेतु 'मैथिली' शब्द-प्रयोग बड़ नवीन थिक। सर्वप्रथम एकर प्रयोग कएल कोलब्रूक 1801 ई.मे, परन्तु एहि नामकैं प्रसिद्ध करबाक श्रेय मैथिली भाषासाहित्यक आदि-उन्नायक ग्रियर्सनमहोदयकैं छैन्हि। एहिसँ पूर्व Alpha betum Brammhanicum ('1781) मे 'तिरहुतिया' शब्दक प्रयोग भेल छल जे रोमनलिपिमे Tourutiana लिखल गेल छल। भाषाक हेतु 'तिरहुतिया' शब्दक प्रयोग निश्चये भ्रामक छल, कारण, 'तिरहुतिया'क प्रयोग तिरहुतमे रहनिहार लोकक अर्थमे होइत अछि एवं 'तिरहुता'क अर्थ होइत अछि मिथिलाक्षर।

भाषाक हेतु मैथिली शब्दक प्रयोग आब बड़ व्यापक भए गेल अछि, परन्तु एहि शताब्दीक दुइ चरण धरि कतिपय विद्वान एकरा हेतु मिथिलाभाषाक प्रयोग करैत छलाह, उदाहरणार्थ कवीश्वर चन्दाझा मैथिली रामायण नहि, मिथिलाभाषा-रामायण लिखने छथि एवं म. म. मुकन्दझा बख्शी 'मिथिलाभाषामय इतिहास'क रचना कएने छथि। एखनहुँ धरि 'मैथिली' शब्दक स्थान पर मिथिलाभाषाक प्रयोग सर्वथा ऊठि नहि गेल अछि।

मिथिलाभाषा '*मिथिलापभ्रंशभाषा*'क संक्षिप्त रुप थिक। ई संक्षिप्तता उच्चारण-सौलभ्यक हेतु मध्यक '*अपभ्रंश*' शब्दकैं लुप्त कए निष्पन्न भेल। कवि-कोकिल विद्यापति जाहि भाषामे अपन पदावलीक रचना कएल, ताहि भाषाकैं लोचन स्पष्ट रुपैं मिथिलापभ्रंश भाषा कहने छथि:-

देश्यामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया ।
श्रीविद्यापतिकवि निबद्धास्ता मैथिलीय गीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।

परन्तु स्वयं विद्यापति एकरा मिथिलापभ्रंशभाषा नहि लिखि देशी बोली ओ अवहट्ठक संज्ञा देने छथि-

देसिल वयना सब जन मिट्ठा, तं तइसन जम्पओ अवहट्ठा आओर ज्योतिरीश्वर ठाकुर सेहो '*वर्णरत्नाकर*'क भाटवर्णनामे जाहि छओ प्रमुख भारतीय भाषाक उल्लेख कएल ताहिमे संस्कृत ओ प्राकृतक पश्चात् अवहट्ठहिक स्थान अछि- '**पराकृत अवहट्ठ पैशाची सौरसेनी मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ**'।

अवहट्ठ अपभ्रष्टक रुपान्तर थिक एवं अपभ्रष्ट अथवा अपभ्रंशभाषाकेँ देशी बोली कहल गेल अछि। श्रीपति अपन '*प्राकृतपैंगलम्*'क टीकामे लिखैत छथि-

प्राकृतादल्पभेदैव अपभ्रष्टा प्रकीर्तिता
देशभाषां तथा केचिदपभ्रंश विधुर्बुधी।
संस्कृते प्राकृते वापि रुप सूत्रानुपेद्यतः
अपभ्रशं स विज्ञेयो भाषा यत्रैव लौकिकी।।

परन्तु एतए ध्यातव्य जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर अवहट्ठक मागधी ओ शौरसेनीसँ पृथक् कए चर्चा कएने छथि, तेँ अवहट्ठक तात्पर्य हुनक छल होएत मिथिलापभ्रंश। विद्यापति तँ स्पष्ट रुपेँ तत्कालीन मिथिलादेशीय बोलीकेँ अवहट्ठक संज्ञा देने छथि।

भारतीय आर्यभाषाक विकास-क्रम ओ मैथिली

भाषावैज्ञानिकलोकनि विश्वक समग्र भाषाकेँ ध्वनि, व्याकरण एवं शब्द-प्रयोगक समानताक दृष्टिएँ प्रमुख रुपेँ 14 परिवारमे विभाजित कएने छथि, जाहिमे सर्वप्रमुख अछि भारोपीय (भारत-यूरोपीय) परिवार। भारोपीय भाषासँ अगणित आधुनिक भाषाक विकास भेल जे सादृश्यक आधार पर 12 उपशाखामे विभाजित अछि। एहि उपशाखामे एकटा प्रमुख शाखा थिक भारतीय एवं इरानी आर्यभाषा। कहल जाइत अछि जे आर्यलोकनिक आदि-निवास मध्यदेशमे छल। ओतएसँ आर्यलोकनिक एकटा दल पूर्व दिसि विदा भेल तँ इरान पहुँचि किछु आर्यलोकनि ओतए बसि गेलाह आओर किछु अफगानिस्तान होइत भारतमे प्रविष्ट भेलाह। एही कारणे प्राचीन इरानी ओ प्राचीन भारतीय आर्यभाषामे आश्चर्यजनक समता भेटैत अछि। प्राचीन इरानी ओ प्राचीन भारतीय भाषाक उदाहरण थिक क्रमशः जरथुस्त्रक गाथा (अवेस्ता) एवं ऋग्वेदक किछु अंश। प्राचीन इरानीक "*अथा, रतम, हेन्ति, बोहुनमु, हएना, अओजों*" प्राचीन आर्यभाषामे *अथ, ऋतुम, सान्ति, बहूनमु, सेना, ओजस्*' रुपमे प्रयुक्त अछि। एही कारणे कतोक विद्वानक मत अछि जे इरानी ओ भारतीय भाषा-समूह एकहि मूल

भारत-इरानी (Indo-Iranian) शाखाक दुइ प्रभेद थिक। कालानुसारेँ मूल भारोपीय भाषाक समय 2500 ई. पू. मानल जाइत अछि, जहिआसँ मध्यदेशक आर्यगणक पूर्व दिशामे प्रसार आरम्भ भेल। 1800 ई. पू. भारत-इरानी शाखाक समय मान्य अछि एवं 1250 ई. पू.क समकालमे आर्यगण दुइ दलमे बँटि एकटा दल 1200 ई. पू.मे भारतमे प्रविष्ट भेलाह।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा - एहि प्रकार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक इतिहास 1200 ई. पू.सँ आरम्भ होइत अछि। एहि भाषामे पाँचो वर्ण एवं 'ऋ, लृ, ऐ, औ', प्रभृति स्वरक उच्चारणक अस्तित्व छल। धातु-रुपक बहुलता, तीन लिंग ओ तीन वचनक प्रयोग एवं सन्धिक अनिवार्यता प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक विशेषता छल। एहिमे पदच्छेदपूर्वक बजबाक अथवा लिखबाक परिपादी नहि छल तथा प्रत्येक पदमे एक स्वरक उच्चारण किछु ऊपर उठाएकेँ ओ शेष स्वरकेँ नीचाँ खसाएकेँ अथवा ऊपर-नीचाँ कम्पित कए होइत छल जे क्रमशः उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित कहबैत अछि।

कालक्रमसँ एकर दुइ भेद भए गेल - 1. वैदिक (ग्रन्थक भाषा) एवं 2. लौकिक। वेदसभमे वैदिक भाषाक प्रयोग भेल अछि। लौकिक भाषा पश्चात् विद्वान ब्राह्मणलोकनि द्वारा परिनिष्ठित स्वरुपकेँ धारण कएलक ओ संस्कृत नामे ख्यात भेल तथा ओही मध्य काव्यादि ग्रन्थक निर्माण भेल।

प्राचीन लौकिक भाषाक संस्कृत-रुपक विकासमे भारतक आदि-निवासी आर्येतर जनसमुदायक भाषाक उल्लेखनीय प्रभाव पड़ल। विद्वानलोकनिक मत अछि जे संस्कृत शब्द-भण्डारमे कमसँ कम चतुर्थांश भारतक आर्येतर आदि-निवासीक भाषाक शब्द थिक। दोसर, प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक आइ केवल दुइ स्वरुपक उदाहरण भेटैत अछि-वैदिक ओ संस्कृत। परन्तु लौकिक भाषा पश्चात् संस्कृत ओ साहित्यिक अवश्य भए गेल, मुदा ओकर मौखिक औपभाषिक स्वरुप संस्कृतसँ किछु भिन्न अवश्य रहल होएत। भाषा-वैज्ञानिकलोकनि ओहि मौखिक औपभाषिक लोकभाषाक अस्तित्वकेँ स्वीकार कए ओही भाषाकेँ मैथिली-सहित समग्र आधुनिक आर्यभाषाक जननी मानने छथि, उदाहरणार्थ प्राचीन मैथिलीमे '*आजु*' शब्द भेटैत अछि। एकर वैदिक रुप थिक अद्य, जाहिसँ अज्ज-आजक विकास भए सकैछ, आजुक नहि। '*आजु*'क विकास '*अद्यु*'सँ भए सकैछ जे ने तँ वैदिक भाषामे अछि आओर ने संस्कृतमे। तेँ संस्कृतक औपभाषिक स्वरुप '*अद्यु*'क परिकल्पना कएल जाए सकैत अछि। मैथिली-सहित अन्यान्य आधुनिक भारतीय भाषामे अगणित शब्द भरल अछि, जकर व्युत्पत्ति संस्कृतक औपभाषिक लोकभाषाक परिकल्पना कएने बिना सम्भव नहि। अतः संस्कृतक औपभाषिक लोकभाषाक अस्तित्व मानए पड़त। एहि अनुमानित लोकभाषाकेँ

विद्वन्लोकनि प्रथम प्राकृतिक संज्ञा सेहो देने छथि।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक क्षेत्रीय विभाजन - प्राचीन आर्यभाषा सम्पूर्ण देशमे बोधगम्य तँ अवश्य छल, परन्तु देशक विशालताक कारणे ओहिमे क्षेत्रीय औपभाषिक विलक्षणताक आधार पर अनेक उत्तरकालीन भाषाक विकास भेल। एहि औपभाषिक भिन्नताक कारणक व्याख्या करैत रुडोल्फ होएर्नले, सर जौर्ज ग्रियर्सन प्रभृतिक मत अछि जे भारतमे आर्यजनक प्रवेश एक बेर नहि, कएक बेर भिन्न-भिन्न समयमे भेल। एहि मान्यताक आधार पर ओलोकनि आर्य-जनक मौखिक भाषाकेँ तीन शाखामे विभाजित कएने छथि :- 1. अन्तरंग उपशाखा (Inner Sub-Branch) - सबसँ पहिने भारतमे प्रविष्ट आर्यजनक भाषा, जकर अन्तर्गत पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, राजस्थानी आदिक गणना होइत अछि, (2) बहिरंग-उपशाखा (Outer Sub-Branch)- परागत आर्यजनक भाषा, जकरहि अन्तर्गत मैथिली-सहित अन्य प्राच्य-समूहक भाषा- उड़िया, बंगला, असमिया, मगही ओ भोजपुरीक गणना होइत अछि, एवं 3. मध्यवर्ती उपशाखा (Medial Sub-Branch)-उपर्युक्त दुइ उपभाषाक मिश्रणसँ युक्त मध्यवर्ती भाषा, जकर अन्तर्गत पूर्वी हिन्दी अबैत अछि।

डा. सुनीति कुमार चटर्जीकेँ उपर्युक्त मान्यता पर आधारित भाषाक क्षेत्रीय विभाजनक सिद्धान्त मान्य नहि छैन्हि। ओ वृत्तीय विभाजनक स्थान पर सरल रैखिक विभाजन विशेष तर्कसंगत बुझैत छथि। अतः ओ उदीच्य, प्रतीच्य, मध्यदेशीय, प्राच्य एवं दाक्षिणात्य नामसँ भारतीय आर्यभाषाक पाँच विभाग कएने छथि एवं मैथिलीकेँ प्राच्यभाषा-समूहमे रखने छथि। एहि प्रकार मैथिली ग्रियर्सनक अनुसार बहिरंग-उपशाखामे एवं ग्रियर्सन ओ चटर्जी दुहूक अनुसार प्राच्य-भाषा-समूहमे स्थित अछि।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा - 1000 ई. पू. धरि अबैत-अबैत प्राचीन आर्यभाषामे एतेक परिवर्तन भेल जे ओ सर्वथा नवीन भाषा बनि गेल। एकर कारण भेल स्थानीय आर्येतर भारतवासीक उच्चारण-असमर्थता, जाहिसँ स्वनप्रणालीमे अभूतपूर्व परिवर्तन भए गेल। परन्तु ई परिवर्तन भेल आर्यलोकभाषामे, परिष्कृत ओ साहित्यिक भाषा संस्कृत तँ अपन व्याकरणक अनुसरण करैत, मूलरूपमे अक्षुण्ण बनल रहल। एहि मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक समय मानल जाइत अछि 1000 ई. पू. सँ 800 ई. धरि। एहि 1800 वर्षक अवधिमे ओ विकासक स्वाभाविक प्रक्रियामे अपन स्वरूप परिवर्तित करैत रहल। डा. सुनीतिकुमार चटर्जी एकरा चारि वर्गमे विभाजित कएने छथि-1 आदि-रूप-700 ई. पू., 2. संक्रमणकालीन रूप-00 ई.,

3. द्वितीय रुप-300 ई. एवं 4. परवर्ती रुप-800 ई.। परन्तु आधुनिक विद्वन एकरा तीन वर्ग मात्रमे विभाजित करब उचित बुझैत छथि- 1. प्रथम अवस्था, जकरा प्रथम प्राकृत कहल जाइत अछि 2. द्वितीय अवस्था (नवीन प्राकृत) एवं 3. तृतीय अवस्था-अपभ्रंश।

वस्तुतः त्रिधा-विभाजन विशेष तर्कसंगत अछि, ओना प्राचीन भारतीय वैयाकरण विकासक पूर्वापर अनुक्रमे दुइ भाषा मात्रक उल्लेख कएने छथि-प्राकृत ओ अपभ्रंश। हुनकालोकनिक प्राकृतक आदर्श छल जैनग्रन्थ एवं संस्कृत नाटकसबहिमे प्रयुक्त प्राकृत, जकरा नवीन प्राकृतक अन्तर्गत राखल जाए सकैत अछि। प्राचीन प्राकृतक अन्तर्गत अशोकक शिलालेख एवं पालि साहित्यक भाषा अबैत अछि, जाहिसँ ओलोकनि प्रायः अनभिज्ञ छलाह।

प्राकृतिक भेद - क्षेत्रानुसार भिन्नता ओ विशेषताकेँ लक्ष्य करैत प्राचीन ओ आधुनिक भाषागवेषकलोकनि प्राकृतक अनेक भेद कएने छथि। *ग्रियर्सनक* अनुसार प्राकृतक निम्नलिखित भेद अछि-

(क) बहिरंग-उपशाखा-(i) पश्चिमोत्तर-पैशाची, ब्राचर, खस, (ii) दाक्षिणात्य-महाराष्ट्री एवं (iii) प्राच्यसमूह-मागधी।

(ख) मध्यवर्ती समूह- (iv) अर्द्धमागधी।

(ग) अन्तरंग-उपशाखा-(v) केन्द्रीय समूह-शौरसेनी एवं (vi) पहाड़ी समूह-खस।

मैथिलीक उत्पत्ति मागधी प्राकृतसँ अपभ्रंशक विकासक प्रक्रियाकेँ पार करैत भेल जेना एहि प्राच्य-समूहक अन्य भाषा-बंगला, असमिया, उड़िया एवं मगहीक भेल। मागधी प्राकृतसँ अतेक आधुनिक क्षेत्रीय भाषाक उत्पत्ति भेल, तेँ मागधी-प्राकृतहुक स्थानीय उपभेदक कल्पना करब तर्कसंगत होएत जे प्राकृतावस्थामे लक्षित तँ नहि होइत अछि, परंच ओकर परवर्ती अपभ्रंशक अवस्थामे अवश्य लक्षित होइत अछि, जाहिसँ साक्षात् रुपेँ भिन्न-भिन्न आधुनिक प्राच्यभाषा अपन-अपन आधुनिक स्वरुपकेँ प्राप्त कए सकल। एकहि मागधी प्राकृतसँ सम्पूर्ण पूर्वांचलीय भाषासमूहक उत्पत्ति भेल, तेँ एहि भाषा-समूहमे एकवंशीय समानताक दर्शन होइत अछि। एतए मागधी प्राकृतक सामान्य विशेषताक परिचय प्राप्त कए लेब उपयोगी होएत।

मागधी प्राकृत - एकर ई नाम मगधक तत्कालीन राजनीतिक प्रधानताक कारणे पड़ल। प्राकृत निम्नवर्गीय जनसमुदायक लोकभाषा छल। पश्चात् शौरसेनी प्राकृतक किछु साहित्यिक महत्व बढ़ल तँ एहि भाषाक प्रयोग संस्कृत नाटकक अशिक्षित उच्चवर्गीय पात्रक भाषाक रुपमे होअए लागल, मागधी प्राकृतक प्रयोग अधम पात्रक भाषाक रुपमे भेल। अतः संस्कृतनाटकमे अधम पात्रक भाषा एवं कीर्ण-विकीर्ण शिलालेखादिमे जे मागधी प्राकृतक किछु उदाहरण भेटैत अछि, तदनुसार एकर मुख्य विशेषता थिक-

1. 'र' क स्थान पर सर्वत्र 'ल'क प्रयोग, यथा सं. राजा, मागधी-लाजा शौरसेनी-राआः सं पुरुषः, मा. पुरुषः, शौ. पुरिसोः सं. चौरः, मा. चोले, शौ. चोरो। परन्तु एतए ध्यातव्य जे मिथिलामे 'र' ध्वनि सएह प्रधान अछि।

2. 'स' ओ 'ष'क स्थान पर 'श'क प्रयोग, यथा, प्राचीन भारतीयभाषा-विष, मागधी-विशः प्रा. भा. पुरुषः मा. पुलिसेः प्रा. भा. रभसं, मा. लहस। परन्तु महानन्दासँ पूर्वमे 'श'क उच्चारण आब होइत अछि, पश्चिममे 'स' ध्वनि सएह चलैत अछि।

3. 'ज'क स्थान पर 'य' एहिना 'ज्ज'क स्थान पर 'य्य', यथा, सं. अद्य, मा. अय्य शौ. अज्जः सं. कार्य्य मा. कय्य शौ. कज्ज।

4. ऊष्म स्पर्शमे समीकरण नहि होइत अछि, यथा ष्क <श्क, क्ष <श्क, स्त < श्त।

5. 'ण्य, न्य, ञ्ज'क स्थान पर 'ञ्ञ'क प्रयोग सर्वत्र होइत अछि यथा, सं. पुण्य मा. पुञ्ञ, सं. अन्य मा. अञ्ञ सं. प्रज्ञा मा. पञ्ञा आदि।

6. कर्त्तामे 'ए' विभक्तिक प्रयोग, यथा सं. जनः मा. अणे., सं. सः मा. शे आदि

अपभ्रंश - प्राकृतक तृतीय अवस्था अपभ्रंश कहबैत अछि, जकरा प्राचीन भारतीय वैयाकरण एक पृथक् भाषा मानने छथि। जखन प्राकृत साहित्यक भाषा बनि गेल तँ लोकमुखक भाषा विकासक अनेक प्रक्रियाकेँ पार करैत अपभ्रंशक रुपमे प्रकट भेल आओर जाहिसँ नवीन भारतीय भाषासबहिक उद्भव भेल। उपलब्ध उदाहरणक

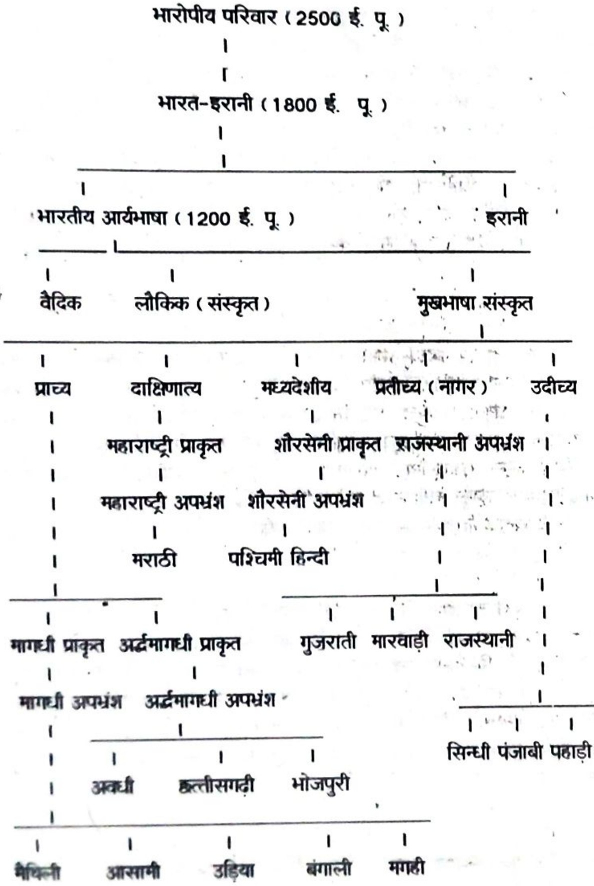
आधार पर भाषावैज्ञानिक एकर तीन भेद मात्रक उल्लेख करैत छथि - 1. **प्रतीच्य-ओहि** क्षेत्रक भाषा जतए गुजराती, राजस्थानी ओ हिन्दी बाजल जाइत अछि । एकरा शोरसेनी अथवा नागर अपभ्रंश कहल जाइत अछि । एहि मध्य कालिदासक नाटक, विशेषतः विक्रमोर्वशीय (5म शताब्दी)सँ लए हेमचन्द (12म शताब्दी) धरि प्रचुर मात्रामे साहित्य उपलब्ध होइत अछि । 2. **दाक्षिणत्य** - एहि अपभ्रंशक क्षेत्र थिक पुष्पदन्तक महापुराण, नागकुमारचरित, जसहरचरित', (965 ई.) आदि । 3. प्राच्य - एहि अपभ्रंशक क्षेत्र सम्पूर्ण पूर्वा - चलीय प्रदेश पड़ैत अछि जतए सम्प्रति मैथिली, असमिया, बंगला, उड़िया, मगही ओ भोजपुरी बाजल जाइत अछि । एकर उदाहरण थिक सिद्धलोकनिक **बौद्धगान ओ दोहा** (8म शताब्दी) तथा विद्यापतिक **'कोर्तिलता'** ओ **'कीर्तिपताका'** जे 14म शताब्दीमे रचित भेल । **'डाकार्णव महायोगिणीतन्त्र'**-हुमे एकर उदाहरण भेटैत अछि । एहि अपभ्रंशकेँ मागध अथवा बौद्ध-अपभ्रंश सेहो कहल जाइत अछि ।

एहि प्रकार प्राच्य-अपभ्रंशक उपलब्ध साहित्य तखन लिखल गेल जखन मैथिली एवं अन्य आधुनिक भारतीय भाषाक विकास भए चुकल छल। विद्यापति एवं ज्योतिरीश्वर ठाकुर अवहट्ट कहि मिथिलापभ्रंशभाषाकेँ मैथिली कहने-छथि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे प्राच्य-अपभ्रंशहुक आंचलिक विशेषता छल ओ ओहि विशेषताकेँ स्फुट कए भिन्न-भिन्न पूर्वांचलीय भाषासभक विकास भेल, यद्यपि एहि भाषासबहिमे मागधीभाषागत अद्भुत समानताक दर्शन होइत अछि। अतः एतए मागधी अपभ्रंशक सामान्य विशेषताक दिग्दर्शन कए लेब उपयोगी होएत।

मागधी अपभ्रंशक विशेषता - 1. मागधी प्राकृतक सामान्य लक्षणक विपरीत मागधी अपभ्रंशमे 'स-श' ओ 'र-ल'क प्रयोग अनियमित भए गेल। 2. कर्त्ता, करण ओ अधिकरणमे 'ए' विभक्तिक प्रयोग होअए लागल, यथा सं. यः मा. अ. जे, मैथिली जे, हिन्दी जो, सं. सः मा. अ. से मै. से हिन्दी सोः सं. गृहे मा. अ. घरे, मै. घरे, हिन्दी घरमे। 3. सम्बन्धमे 'केरा-केर'क प्रयोग, यथा ताखन केरा। 4. भूतक्रियापद एवं भूतकृदन्तमे 'इल्ल-ल्ल'क प्रयोग। 5. भविष्यत् क्रियापदमे तब्ब-अब्ब-ब'क प्रयोग भेटैत अछि।

उपर्युक्त विशेषता अवहटठ (मिथिलापभ्रंश)मे प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि।

एहि प्रकार भारतीय आर्यभाषाक विकासक्रममे मैथिलीक स्थान-निरुपण निम्नलिखित चित्रसँ नीक जकाँ भए जाइत अछि:-



नवीन भारतीय आर्यभाषाक सामान्य विशेषता

8म शताब्दी बितैत-बितैत अपभ्रंशसँ नवीन भारतीय भाषासभक स्वरूप स्पष्ट होअए लागल ओ 13म शताब्दी धरि तकरसभक प्राचीन रुप स्थिर भए गेल। मध्यकालीन आर्यभाषाक द्वित्व-व्यंजन-संयोग हटि पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ भए गेल यथा, चक्र/चक्क/चाक,हस्त/हत्थ/हाथ एवं कारक-रुपमे लिंग-भेद पूर्णतः समाप्त भए गेल। कारक-सम्बन्ध व्यक्त करबाक हेतु विभक्तिक स्थान पर तथा बहुवचन प्रकट करबाक हेतु प्रत्ययक स्थान पर अथवा संग-संग परसर्गक प्रयोग होअए लागल (यथा, बालककेँ, बालकसभकेँ) नाम, विशेषतः सर्वनामक दुइ गोट स्वरूप स्थिर भेल-एकटा सरल (कर्तृवाचक) यथा, हम, दोसर तिर्यक (Oblique,विकारी) यथा, 'मोहि'। एहिसँ अतिरिक्त संयुक्तक्रियापद लगएबाक परिपाटी विशेष रुपसँ चलए लागल (यथा, चलइत अछि, दए हलु) एवं क्रियापदमे कर्मवाच्य-वाक्य-रचना होअए लागल (यथा, देखि पड़ल)। परम्परागत भूतक्रियाक स्थान पर भूत-कृदन्तक अनिवार्य प्रयोगक प्रचलन बढ़ल (यथा, दिन बीतल)। मैथिली-सहित अन्यान्य नवीन भारतीय आर्यभाषामे एक दिसि यदि तत्सम शब्दक अधिक प्रयोग होअए लागल तँ दोसर दिसि विदेशी शब्दहुक वृद्धि भेल। एतबा अवश्य जे मिथिलाभाषाक क्षेत्र भारतक सुदूर पूर्वोत्तरमे पड़बाक कारणे अन्य भाषाक अपेक्षा मैथिलीमे विदेशीशब्द, विशेषतः अरबीफारसीक शब्द अधिक प्रयुक्त नहि भेल। एहि विशेषताक अतिरिक्त अन्य नवीन भाषा जकाँ मैथिलीमे पदक्रम स्थिर भेल।

उपर्युक्त भाषागत विशेषताक अतिरिक्त साहित्य-प्रयोगमे नवीन-नवीन छन्द ओ नव-नव काव्यरुपक, नित नूतन वर्णन-विषय ओ अभिव्यंजनाक नव-नव शैलीक प्रयोग होअए लागल।

अन्य प्राच्य-भाषा-समूह ओ मैथिली

जटिलतासँ सरलता एवं संश्लिष्टतासँ विश्लिष्टता दिसि विकसित होएबाक नवीन भारतीय भाषाक जे सामान्य प्रवृत्ति अछि, से मैथिलीमे सेहो अछि, परन्तु मैथिलीक धातु-रुपावलीमे अद्भुत प्रकारक संश्लेषणात्मक जटिलताक स्थिति एकरा कोनहुँ प्राच्यभाषासँ विलक्षण ओ पृथक् बनाए दैत अछि। मगहीक धातुरुपावली मात्रमे ई जटिलता अछि, मुदा कतोक विद्वानकेँ मैथिलीसँ पृथक् मगहीक अस्तित्व मान्य नहि छैन्हि।

मैथिली ओ बंगला - लिंग ओ उच्चारण दुहू दृष्टिएँ मैथिली बंगला ओ पूरवी

हिन्दीक मध्यमे पड़ैत अछि। जखन बंगलामे अर्थगत ओ शब्दगत दुहू प्रकारक लिंग-भेद उठि गेल अछि, ओतए मैथिलीमे शब्दगत लिंग तँ पूर्णतः उठि गेल अछि, परन्तु अर्थगत लिंग, विशेषण ओ क्रियापदमे एखनहुँ धरि विद्यमान अछि, यथा मै. छोटि बेटी गेलि बं. छोटो खुकि गेलो।

उच्चारण-भेदक दृष्टिएँ सामान्यतः स्वरसभक लघूच्चारण, अर्द्ध-अनुनासिक (ञ) एवं चन्द्रबिन्दुक प्रयोग मैथिलीमे होइत अछि, से बंगलामे नहि होइत अछि। तृतीय वचनमे भूतकालिक 'त' प्रत्ययक प्रयोग (यथा, करत, खाएत) सेहो एकरा बंगलासँ सर्वथा पृथक् करैत अछि। मैथिली मध्य धातु-रुपावलीमे जटिलताक प्रसंग पूर्वहि लिखल जाए चुकल अछि जे बंगलामे नहि अछि।

कारक-विभक्तिक प्रयोगक दृष्टिएँ प्राचीन मैथिली ओ बंगलामे बड़ समानता अछि, जाहि मध्य कर्त्ता, करण ओ अधिकरणमे 'ए' लगैत छल। परन्तु नवीन मैथिलीमे परसर्ग लगएबाक विशेष प्रवृत्ति अछि। एहिना शब्दभण्डारक दृष्टिएँ सेहो बंगलासँ मैथिलीक सम्बन्ध निकटतम कहल जाए सकैत अछि।

मैथिली ओ असमिया - उच्चारण-रीतिक दृष्टिएँ असमिया ओ मैथिली मध्य मुख्य विभेदकेँ लक्ष्य कएल जाए सकैत अछि। मैथिली बंगलाक उच्चारण-भंगिमासँ निकट, परन्तु शब्द-रचनाक दृष्टिएँ असमियासँ एकर अदभुत समानता अछि, यथा दिलाक (मै. देलक), करि राख (मै. कए राख), उठि (मै. उठि)। एहिना अनेक शब्द जे मैथिलीक प्रसिद्ध शब्द थिक, से ओही अर्थमे असमियाक शब्द सेहो थिक, यथा भाओ, वनिज, पाँजर, खुजली, कुसिआर, लग, पिच्छल (पिच्छर), सेप, बुधियाक (मै. बुधियार) आदि।

वस्तुतः ई भाषाक समानता पौराणिक कालहिसँ मिथिला ओ आसाम मध्य निहित घनिष्ठ राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्कक कारणे अछि। कतेक विद्वानक मत अछि जे असमियाभाषाक विकास मिथिलाभाषाक प्रेरणासँ भेल। शंकरदेव (1449-1560) एवं अन्य वैष्णव-कविलोकनि अपन धर्मक साहित्यिक अभिव्यक्ति मिथिलाभाषामे सएह कएल।

मैथिली ओ उड़िया - उड़ीसा पर द्रावीड़ीलोकनिक ताहि रुपक राजनैतिक ओ सांस्कृतिक आधिपत्य भेल जे उड़ियाक सम्बन्ध अन्य मागधीमूलक भाषासँ विच्छिन्न भए गेल। पश्चात् एहि पर पालि ओ प्राकृतक प्रभाव पड़ल एवं आधुनिक उड़िया मागधी प्राकृतसँ सएह विकसित भेल अछि। आठम शताब्दी धरि तेलंगनरपतिक आधिपत्यक अनन्तर पच्चास वर्ष धरि भोंसलेक शासन एतए छल। तेँ अन्य मागधीमूलक भाषा

जकाँ एकर विकास नहि भेल। अतः मैथिलीसँ एहि भाषाक पार्थक्य अधिक अछि, तथापि कतोक अंशमे ई बंगलाक अपेक्षा मैथिलीसँ निकट बुझि पड़ैत अछि, यथा, बंगलामे असमान-संयुक्त-व्यंजन नहि भए प्रथम व्यंजन दुइटा भए जाइत अछि, यथा, बंगलामे आत्मा'क उच्चारण 'आत्ता' होइत अछि, परन्तु मैथिली ओ उड़िया दुहूमे दुनू व्यंजनक उच्चारण संस्कृत जकाँ होइत अछि। बलाघातक दृष्टिएँ सेहो उड़िया ओ मैथिलीमे अद्भुत सादृश्य अछि, जाहिमे पूर्ववर्ती दीर्घ स्वरक उच्चारण होइछ। यदि सबटा स्वर दीर्घ रहैत अछि तँ उपात्य पर बल पड़ैत अछि, परन्तु मैथिलीक विपरीत उड़ियामे अति-लघु स्वरक अभाव अछि।

मैथिली ओ मगही - मगही मैथिलीमे सादृश्य अधिक अछि, पार्थक्य थोड़। पार्थक्यक उदाहरण भेटैत अछि वचन-प्रयोगमे। मगही ओ भोजपुरी दुहूमे 'न' लगाए बहुवचन बनैत अछि, यथा लोगन, लड़िकबन, लड़िकन आदि, अन्यथा सब दृष्टिएँ मैथिली ओ मगहीमे समानता अछि। ग्रियर्सनक अनुसार - *On the whole Magahi Grammar Closely follows that of Maithili. The two main distinguishing points are, first, the use of two tense......and second the form of the verb substantive which is 'hi' (I am) instead of the very common 'Chhi'.*

डा. सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार यदि मिथिला ओ मगधमे सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित रहैत तँ ई दुनू भाषा कोनहुँ एकहि भाषाक उपभाषा रहैत। अतः दुहूक पार्थक्यक कारण भाषात्मक नहि, ऐतिहासिक थिक। आनुवंशिकताक दृष्टिएँ दुहूमे कोनो अन्तर नहि अछि, अतः मगहीकेँ मैथिलीक बोली कही तँ कोनो अनुचित नहि होएत।

बिहारी भाषा ओ भोजपुरी-मैथिली

जौर्ज ग्रियर्सन अपन Linguistic Survey of India मे बिहारी भाषाक नामसँ मैथिली, मगही ओ भोजपुरीकेँ एक प्राच्यभाषावर्गमे परिगणित कएने छथि। परन्तु भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ ई वर्गीकरण युक्ति-संगत नहि अछि, कारण मैथिली, मगही एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषासबहिक मूल मागधी प्राकृत अछि तँ भोजपुरीक विकास अर्द्धमागधी प्राकृतसँ भेल अछि। वस्तुतः भोजपुरीक परिगणना संयुक्त-प्रान्त (यू. पी.) क भाषाक रुपमे सएह प्रसिद्ध अछि। डा. सुनीति कुमार चटर्जीक मन्तव्य अछि - "*Bhojapuria territory (Ancient Kasi Janapada) has always been under the influence of the west, and western forms of speech, like Brajbhasha, and Avadhi and literary Hindustani (Hindi and Urdu) in later times, have been cultivated by poets and others.*"

पाछाँ ग्रियर्सन सेहो बिहारीभाषाक अन्तर्गत भोजपुरीकेँ वर्गीकृत करबाक अपन भ्रान्तिकेँ अनुभव कएल। ओ लिखल- "*It was from neighbourhood that the famous Bundelkhand heroes Alha and Udan, traced their origin, and all its association and traditions point to the west and not to the east*"

भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ मैथिली ओ भोजपुरीमे जाहि रुपक समानता भेटैत अछि, से थोड़ बहुत अन्यो आधुनिक भाषामे अछि। भोजपुरीमे मैथिली जकाँ विशेषण ओ क्रियापदमे लिंग-भेद होइत अछि यथा माई अइली, बाप अइलन। एहिना मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक 'ल' क 'र' दुहू भाषामे समान रुपसँ होइत अछि। परन्तु दुहू भाषामे पार्थक्य सएह अधिक लक्षित होइत अछि, जे प्रमुख रुपेँ निम्न प्रकारक अछि-

1. भोजपुरीमे 'अ' स्वर पश्चिमीय भाषा जकाँ स्पष्ट तीव्रात्मक रीतिएँ उच्चरित होइत अछि, पूर्वाचलीय भाषा जकाँ वृत्तात्मक रीतिएँ नहि।

2. भोजपुरीमे संज्ञामे 'न' लगाए बहुवचन बनैत अछि, यथा 'लड़िका'क बहुवचन 'लड़िकवन'। एकर विपरीत मैथिलीमे परसर्ग लगाए बहुवचन निष्पन्न होइत अछि, यथा नेनासब।

3. सम्बन्ध-वाचक विभक्ति भोजपुरीमे 'के' अछि, मैथिली-सहित पूर्वाचलीय भाषा मातमे 'क' ओ 'केर' अछि।

4. सम्मानवाचक सर्वनामक हेतु भोजपुरीमे 'राउर'क प्रयोग होइत अछि। एहिना भोजपुरीमे क्रियाक संग 'बाटे'क प्रयोग होइत अछि। वर्तमान भूतकालमे 'इल' प्रत्यय लगैत अछि, जे मैथिलीमे नहि लगैत अछि।

एहिना भोजपुरीमे व्याकरणक संग-संग उच्चारण-प्रणालीमे एतेक विभेद अछि जे दुहू भाषाकेँ एक वर्गमे रखबाक कोनो युक्तिसंगत कारण नहि बूझि पड़ैत अछि।

मैथिली बोली (उपभाषा) नहि, स्वतन्त्र भाषा

मैथिलीकेँ बंगला ओ हिन्दीक अनेक विद्वान अपन-अपन भाषाक उपभाषा सिद्ध करबाक चेष्टा हालधरि करैत रहल छथि। बंगलाक विद्वान तँ आब एकर स्वतन्त्र अस्तित्वकेँ स्वीकारि लेने छथि, परन्तु हिन्दीक कतोक विद्वान आबहु यदा-कदा एकरा हिन्दीक बोली कहि दैत छथि, जे सर्वथा निराधार ओ अयुक्तिपूर्ण अछि। भाषाविज्ञानक

दृष्टिएँ स्पष्ट अछि जे यदि मैथिली मागधी आनुवंशिक भाषा थिक तँ हिन्दी शौरसेनी-अनुवंशक, मैथिली पूर्वाचलीय भाषा थिक तँ हिन्दी पश्चिमीय (मध्यदेशीय)। अतः जतेक अन्तर मागधी ओ शौरसेनी प्राकृतमे अछि ताहिसँ कतोक अधिक अन्तर हिन्दी ओ मैथिलीमे अछि। वाक्य-संघटन, वचन, सार्वनामिक रुप, धातुरुप आदि सब दृष्टिएँ हिन्दी ओ मैथिलीमे कतहु एकरुपता नहि अछि। दुहू मध्य सादृश्य ओतबहि अछि जतबा कोनहुँ परिवारक अन्य आर्यभाषाक मध्य भए सकैछ। भाषा-वैज्ञानिक कारणक अतिरिक्त मैथिली स्वतन्त्र भाषा कहएबाक अधिकारी अछि तकर अन्य प्रमुख कारण थिक: 1. मिथिलाभाषाक सुदीर्घ साहित्यिक परम्परा हिन्दीसँ प्राचीन अछि, 2. मिथिलाक स्वतन्त्र सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक विशेषता अछि जाहि कारणे मिथिला एखनहुँ सम्पूर्ण आर्यावर्तमे विलक्षण मानल जाइत अछि एवं 3. मिथिलाभाषाकेँ स्वतन्त्र लिपि छैक जे तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि।

मैथिलीक कालिक विभाजन

पं. गोविन्दझा विकासक दृष्टिएँ मैथिली-सहित अन्यान्य नवीन भारतीय आर्यभाषाकेँ कालानुक्रमे तीन वर्गमे विभाजित कएने छथि-1. आदिकाल-1300 ई.सँ 1600 ई., 2. मध्यकाल-1600 ई.सँ 1800 ई. एवं 3. आधुनिक काल-1800 ई.सँ अद्यपर्यन्त। परन्तु ओ इहो मानैत छथि जे अन्य आधुनिक आर्यभाषाक विकास साक्षात् रुपेँ कोनो-ने-कोनो अपभ्रंशसँ भेल तँ मैथिलीक विकासक एकटा शृंखला मागधी अपभ्रंशक पश्चात् अवहट्ठ अथवा मिथिलापभ्रंश थिक, जकर परिभाषा दैत ओ लिखने छथि-'अवहठ मिथिलामे एक समय प्रचलित एहन भाषा थिक जकर स्वतन्त्र तँ मभाक थिक, किन्तु रचना-तन्त्र नभा (नवीन आर्यभाषा)क'। अतः अवहट्ठकेँ मैथिलीसँ भिन्न बुझब युक्ति-संगत नहि। एहन अवहट्ठ-रचना कालिदासक 'विक्रमोर्वशीय' पर्यन्तमे भेटैत अछि तथा कीर्ण-विकीर्ण अनेक साहित्यिक कृति उपलब्ध होइत अछि। अतः मैथिलीक साहित्यिक विकासक दृष्टिएँ एकरा तीन वर्गमे एहि रुपेँ विभाजित कएल जाए सकैत अछि-

1. आदि-काल-प्रथम शताब्दीसँ 1300 ई., 2.(क) मध्यकाल-1300 ई.-1600 ई. (ख) संक्रमण-काल-1600 ई.-1800 ई. एवं 3. आधुनिक काल-1800 ई.-अद्यपर्यन्त। ई विभाजन हम भाषा-विज्ञानक संग-संग मैथिली साहित्यिक विकासक समन्वित प्रवृत्तिकेँ ध्यानमे रखैत कएल अछि, विशुद्ध साहित्यिक इतिहासक दृष्टिएँ काल-विभाजन हम भिन्न रीतिएँ कएल अछि जे ग्रन्थक तृतीय अध्यायमे वर्णित अछि।

मैथिलीक उप-विभाजन

मैथिली एकटा स्वतन्त्र भाषा थिक तकर एकटा प्रमुख कारण थिक एकर नवीन मानक स्वरूपक अतिरिक्त एकर अनेक सर्वबोधगम्य औपभाषिक स्वरुप। एतए ध्यातव्य जे आदि ओ मध्यकालीन मैथिलीक मानक स्वरुपकेँ उपलब्ध साहित्यक आधार पर बुझल जाए सकैत अछि, परन्तु तत्कालीन औपभाषिक रुप केहन छल, से निश्चयपूर्वक नहि कहल जाए सकैत अछि। जौर्ज ग्रियर्सन नवीन मैथिलीकेँ छओ उपभाषामे विभाजित कएने छथि:-

1. **मानक मैथिली** - एकर क्षेत्र केन्द्रीय ओ उत्तरीय पुरना दरभंगा जिला (सम्प्रति दरभंगा ओ मधुबनी जिला) अछि। सुपौल अनुमण्डलमे सेहो शुद्ध मानक मैथिली बाजल जाइत अछि।

2. **दक्षिणी मानक मैथिली** - एकर क्षेत थिक समस्तीपुर ज़िला, उत्तरी मुंगेर एवं सहरसाक मधेपुरा। दक्षिणी मानक मैथिलीमे 'जनै छी'क स्थान पर 'जानै छी', सम्बन्धकारक 'क'क स्थान पर 'कें' विभक्ति, 'ओ' सर्वनामक स्थान पर 'ऊ'क एवं अधिकरणमे 'ए'क प्रयोग (यथा 'भोर घरे तीन जना पाहुन छलथिन्ह') होइत अछि जे मानक मैथिलीमे लुप्त भए गेल अछि। एहिना 'हमर तोहर'क स्थान पर 'मोर तोर' तथा 'जखन, तखन'क स्थान पर 'जब, तब'क प्रयोग होइत अछि। क्रियापदमे 'देखलहुँक स्थान पर 'देखलु, देखली'क तथा 'देखलक, देखलथि'क स्थान पर 'देखलका, देखलतीह' रुप चलैत अछि तथा 'थिक, अछि'क 'छीक, अछ' प्रयोग होइत अछि।

3. **पूरबी मैथिली** - एकरा ग्रियर्सन गँवारी मैथिलीक नाम देने छथि। एहि उपभाषाक क्षेत्र थिक पूर्णिया जिलाक केन्द्रीय ओ पश्चिमीय भाग जतए ई अशिक्षित-वर्ग द्वारा बाजल जाइत अछि तथा 'क' विभक्तिक स्थान पर 'के, कर,र ओ केर'क प्रयोग होइत अछि। सार्वनामिक रुपमे सेहो मानक मैथिलीसँ भिन्नता अछि, यथा, हम्मे तोहे, तोहरे, हमाँ, उ, ऊ, आदिक प्रयोग। एहिमे क्रियापदक रुप कर्मक अनुसार परिवर्तित नहि होइत अछि तथा 'अल, अब'क स्थान पर बंगला जकाँ 'इल, इब'क प्रयोग सेहो भेटैत अछि, यथा 'हमे आज देखिलो, एखनी फेरि देखिबो'। एहिना मानक मैथिली 'थिक'क स्थान पर 'छिक'क प्रयोग होइत अछि तथा 'भेल'क स्थान पर 'होल'।

4. **छिकाछिकी बोली** - गंगाक दक्षिण-मुंगेरक पुबरिआ भागमे, दक्षिणी भागलपुरमे तथा संथालपरगनाक उत्तरी ओ पश्चिमी भागमे बाजल जाइत अछि। ई दक्षिणी मानक मधेपुराक बोलीसँ बड़ मिलैत अछि। एहिमे शब्दक अन्तमे 'हो' उच्चारित होइत अछि अंग्रेजीक *hot* सन, (यथा कहबाहो, अपनो) एवं पदान्तमे 'इ'क दीर्घ

उच्चारण (यथा, देखी आबहो) होइत अछि।

5. **पश्चिमी मैथिली** - एकर क्षेत्र मुजफ्फरपुर एवं चम्पारण जिलाक पुबरिया भाग थिक,जाहि पर भोजपुरीक उत्कट प्रभाव अछि।

6. **जोल्हा बोली** - पुरना दरभंगाक मुसलमान मैथिली भाषा बजैत छथि तैं उच्चारणमे विकृतिक संग-संग अरबी-फारसी शब्द विशेष मिश्रित भए जाइत अछि, जकरे ग्रियर्सन जोलहा-बोलीक संज्ञा देने छथि, प्रायः जोलहाक जनसंख्याक प्रमुखताक कारणे।

प. श्री गोविन्दझा ग्रियर्सनक उपर्युक्त विभाजनक आलोचना करैत एकरा क्षेत्रानुसारं निम्लिखित पाँच वर्गमे विभाजित कएने छथि:-

1. **पूर्वी मैथिली** - पूर्णिया, भागलपुर ओ पूरबी संथालपरगनाक बोली, जाहि पर बंगलाक प्रभाव अधिक अछि, विशेषतः आघातक विषयमे।

2. **दक्षिणी** - मुंगेरक बोली जाहिमे मगहीसँ अधिक सादृश्य अछि।

3. **पश्चिमी** - मुजफ्फरपुर ओ चम्पारणक बोली जाहि पर भोजपुरीक उत्कट प्रभाव अछि।

4. **उत्तरी** - नेपाल तराइक समस्त मैथिली क्षेत्रक बोली। तराइक पश्चिमांचलक उपभाषा सीतामढ़ी ओ पुपरीक बोलीसँ एवं पूर्वांचलक बोली पूर्वी मैथिलीसँ मिलैत अछि।

5. **केन्द्रीय** - मध्य मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्रक भाषा जकर निकट कोनो अन्य भाषा नहि अछि।

अंगिका ओ बज्जिका

गत किछु वर्षसँ मैथिलीक दुइ उपभाषाक नवीन नामकरण भेल अछि-अंगिका ओ बज्जिका। छिकाछिकी अर्थात् पूर्वी मैथिलीकेँ अंगिका भाषा कहल जाए लागल अछि, जकर केन्द्रस्थल भागलपुर थिक। पौराणिक अनुश्रुतिक अनुसारं भागलपुर महाभारत-कालीन अंगदेशक राजधानी छल, तेँ ओहि क्षेत्रक भाषा अंगिका भाषा भेल। एहिना बज्जिका मैथिलीक ओहि उपभाषाकेँ कहल जाए लागल अछि, जकरा उपर्युक्त

विभाजनमे पश्चिमी मैथिली बोली कहल गेल अछि। एकर नामकरण बज्जि ओ लिच्छविक इतिहासक आधार पर कएल गेल अछि। स्वतन्त्र नामकरण कए एहि भाषाकेँ मैथिलीसँ पृथक् सिद्ध करबाक आन्दोलन चलाओल जाए लागल अछि मैथिलीविरोधी-तत्व द्वारा। वस्तुतः अंगिका ओ बज्जिका कोनो स्वतन्त्र भाषा नहि, मैथिलीक बोली मात्र थिक।

मैथिली लिपि-तिरहुता

प्राचीन भारतमे दुइ लिपिक प्रचार छल-ब्राह्मी ओ खरोष्ठी। ब्राह्मी लिपिक सम्पूर्ण भारतमे प्रचार छल ओ वाम दिसिसँ दहिन दिसि लिखल जाइत छल। वस्तुतः एकरा तत्कालीन भारतक राष्ट्रीय लिपिक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। एकर विपरीत खरोष्ठी लिपिक भारतक पश्चिमोत्तर प्रान्त मात्रमे प्रचार छल ओ फारसी जकाँ दहिन कातसँ वाम दिसि लिखल जाइत छल।

डा. सुनीतिकुमार चटर्जीक अनुसार ब्राह्मी समस्त भारतीय लिपिक जननी थिक। प्रायः एकरा ई नाम एकर प्राचीनताकेँ ध्यानमे राखि देल गेल छल। एहि लिपिक प्राचीनतम दृष्टान्त अशोकक शिलालेखमे उपलब्ध होइत अछि। चारिम शताब्दीमे गुप्त-साम्राज्यक प्रभावक कारणे ब्राह्मीलिपि गुप्तलिपि कहबए लागल। इएह गुप्तलिपि पूर्वांचलीय प्रदेश-बिहार, उड़ीसा, बंगाल ओ आसाममे एकटा विशेष आकृति प्राप्त कए लेलक। ई आकृति गुप्त-लिपिकेँ एक विशेष प्रकारसँ शीघ्रतापूर्वक लिखबाक कारणे प्राप्त भेलैक, जकर विकासक मध्यवर्ती शृंखला थिक आदिकालीन ब्राह्मीक कुशानकालीन लेख। पूर्वांचलीय एहि प्रकार शीघ्रतापूर्वक लिपिक प्राचीनतम उदाहरण सातम शताब्दीक एकटा पाण्डुलिपिमे प्राप्त होइत अछि जे जापानक होरिउजी मन्दिरमे भेटल अछि। एहि पूर्वांचलीय लिपिकेँ विद्वानलोकनि मागधी लिपिक संज्ञा देने छथि।

बंगलालिपि ओ मिथिलाक्षर

एहि प्रकार गुप्तलिपिक पूर्वांचलीय आकृतिसँ समग्र पूर्वांचलीय लिपि (बंगला, तिरहुता, उड़िया एवं असमिया) क विकास भेल जेना मागधी अपभ्रंशसँ समग्र पूर्वांचलीय भाषाक। अतः एहि लिपिसबमे अद्भुत समानता अछि। एही कारणे तिरहुतामे लिखल प्राचीन पाण्डुलिपि बंगालीलोकनि सुकरतासँ पढ़ि लैत छथि, तहिना मैथिल विद्वानकेँ सेहो प्राचीन बंगलामे लिखल ग्रन्थ पढ़बामे कठिनता नहि होइत छैन्हि। बंगलासँ एहि समानताक कारणे कतोक विद्वानकेँ, विशेषतः प. गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकेँ एहो भ्रम भेलैन्हि जे बंगलाक किंचित परिवर्तित रुप मिथिलाक्षर थिक, ई कोनो स्वतन्त्र लिपि नहि थिक। वस्तुतः समानता रहितहुँ बंगला ओ तिरहुतामे कतोक अन्तर

अछि। 49 गोट वर्णमे 30 गोट वर्ण मध्य आकृतिमूलक सादृश्य अछि तँ 19 गोट वर्ण बंगलासँ सर्वथा भिन्न प्रकारेँ लिखल जाइत अछि। बंगलासँ मैथिली लिपि सर्वथा भिन्न अछि लिखबाक शैलीमे जे 'काट' कहल जाइत अछि। एहि लिखबाक शैलीमे बंगलासँ मिथिलाक्षरमे निम्नलिखित मुख्य अन्तर अछि:-

1. बंगलामे शिरोरेखा सरल होइत अछि तँ मिथिलाक्षरमे चापाकार।

2. दुइ उर्ध्वरेखासँ बनल वर्ण (यथा ब, म, स आदि) मे बंगला मध्य प्रथम उर्ध्वरेखा वाम-तिर्यकसँ आरम्भ होइत दक्षिण तिर्यक भए नीचाँ अबैत अछि तथा पहिसँ उन्टा 'एस' (S) सदृश आकृति भए जाइत अछि, परन्तु मिथिलाक्षरमे वाम केन्द्रिक अर्द्धवृत्त बनबैत हाथ नीचाँ दिसि अबैत अछि।

3. मिथिलाक्षरमे 'उ'कार नागरी 2 अंक जकाँ लगाओल जाइत अछि, बिनु हाथ उठओनहिँ, परन्तु बंगलामे उर्ध्वरेखा बनाए तखन 'उ'कार मात्रा लिखल जाइत अछि। एहिसँ तिरहुतामे 'उ'कार बंगलाक 'व'क आकार धारण करैत अछि तँ बंगलामे देवनागरीक 2 अंक जकाँ रहैत अछि।

4. 'उ'कार लिखबाकाल बंगलामे हाथ उपरसँ नीचाँ अबैत अछि तथा अधःशीर्ष पर बिन्दु नहि बनबैत अछि। एकर विपरीत तिरहुता लिखबा काल हाथ अधःशीर्ष पर बिन्दु बनबैत ऊपर जाइत अछि।

5. अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु मिथिलाक्षरमे शिरोरेखाक ऊपर लगाओल जाइत अछि तँ बंगलामे दहिन कातमे।

मिथिलाक्षरक विभिन्न नाम एवं प्राचीनता

मिथिलाक लिपिकेँ मैथिली लिपि, मिथिलाक्षर एवं तिरहुता सेहो कहल जाइत अछि। एतावता स्पष्ट अछि जे एहि लिपिकेँ तिरहुता तहियेसँ कहए जाए लागल जहिआ एहि भूभागक तिरहुत नाम पड़ल। पूर्वहि कहल जाए चुकल अछि जे गुप्त-शासन-काल (चतुर्थ शताब्दी) मे मिथिलाक तिरहुत नाम पड़ल छल। ओहूसँ पूर्वक बौद्धधर्मक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'ललितविस्तर'मे 'वैदेहीलिपि'क उल्लेख अछि जकरा मैथिली लिपिक प्राचीनतम स्वरुप कहल जाए सकैत अछि जखन ब्राह्मीक पूर्वांचलीय उपशाखासँ मिथिलाक्षरक व्यक्तित्व क्रमिक स्फुट होअए लागल छल।

परन्तु प्रमाणक दृष्टिएँ सर्वाधिक प्राचीन तिरहुताक उदाहरण भेटैत अछि म.

म. हर प्रसादशास्त्री द्वारा अनुसन्धान कएल 'बौद्धगान ओ दोहा'क तालपत्रपाण्डुलिपिमे। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन तिब्बत मध्य 'कुरुकुल्ला साधन'क तालपत्रक दर्शन कएने छलाह जकरा ओ प्राचीन तिरहुता कहने छथि। एहि मध्य लिपिकालक उल्लेख नहि अछि, परन्तु 'बौद्धगान ओ दोहा'सँ नवीन नहि छल। शुद्ध तिरहुताक उदाहरण भेटैत अछि कार्णाटनरपति नान्यदेव (1097 ई.)क मन्त्री श्रीधरदासक अन्धराठाढ़ीक शिलालेखमे। एही कारणे डा. अमरनाथझाक अनुसार मिथिलाक्षरक सर्वांगसम्पूर्ण स्वरुप 9म-10म शताब्दीमे स्पष्ट भए गेल छल। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी वैशालीक कटरानामक स्थानसँ उपलब्ध ताम्रपत्र लेख, महिपाल (प्रथम)क समयक इमादपुरक मूर्त्तिमे उत्कीर्ण आलेख एवं विग्रहपाल (द्वितीय)क समयक नौलगढ़ एवं वनगाँवक अभिलेखक उल्लेख कएने छथि, जाहिसँ प्राचीन तिरहुताक वैशिष्ट्य पर प्रकाश पड़ैत अछि। 11म शताब्दीक पश्चातक पनिचोभताम्रपत्रक आलेख, आसी शिलालेख आदिक उल्लेख सेहो कएल जाए सकैत अछि। 'वर्णरत्नाकर'क पाण्डु-लिपि एवं विद्यापतिक भागवतक हस्तलेख सेहो एही दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। तत्पश्चात् महाभारतक कर्णपर्वक प्रतिलिपि (ल. स. 327, 1436 ई.), ओइनवारवंशीय नरपति नरसिंहक कणदाहाक अभिलेख (1357 साल, 1435 ई.) आदिक सेहो चर्चा कएल जाए सकैत अछि। एहिसँ अतिरिक्त तिरहुतालिपिमे लिखल अनेक संस्कृतग्रन्थ उपलब्ध अछि। बिहार रिसर्च सोसाइटी तिरहुतामे लिखल ग्रन्थक कालानुक्रमे सूची तैयार कए वस्तुतः मिथिलाक्षरक अध्ययनक मार्ग प्रशस्त कएने अछि, परन्तु खेदक विषय जे एखन धरि मिथिलाक्षरक विकास-यात्राक विस्तृत एवं वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। तथापि आचार्य परमानन्दशास्त्रीक मिथिलामिहिरमे धारावाहिक प्रकाशित अनेक लेख एवं प. राजेश्वरझाक 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास' नामक प्रबन्धक एतए उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

मिथिलाक्षरक विलक्षणता

मिथिलाक्षर अथवा तिरहुता जाहि शैली (कांट) अथवा अकारमे लिखल जाए लागल, तकर कारण निश्चयपूर्वक कहब कठिन। एहि मध्य कतोक एहन विलक्षणता अछि जे एकर बंगला ओ असमिया लिपिसँ सर्वथा पृथक् व्यक्तित्व स्थापित करैत अछि। बंगला ओ उड़िया लिपि अपन प्राचीन आकृतिकेँ पर्याप्त परिवर्तित कए चुकल अछि जे एकर प्राचीन ओ नवीन 'र'क तुलनासँ स्पष्ट भए सकैत अछि, परन्तु तिरहुता एखनहुँ अपन मूलरुप धारण कएने अछि। तिरहुता ओ असमिया दुहू लिपिक आरम्भ 'आँजी'सँ होइत अछि। मिथिलामे कोनो बालकक अक्षरारम्भ होइत अछि तँ सर्वप्रथम ओहि बालकसँ 'आँजी' ओ 'सिद्धिरस्तु' लिखाओल जाइत अछि। देवनागरीक प्रचारसँ मिथिलाक दैनिक व्यवहारसँ तिरहुता उठि जकाँ गेल अछि, तथापि परम्परागत

मैथिल-संस्कृति-सम्पोषक परिवारमे एखनहुँ तिरहुताक व्यवहार पूर्ववत होइत अछि विशेषतः विवाह-उपनयनादिक अवसर पर निमन्त्रणपत्र लिखबामे। कतोक व्यक्ति देवनागरीक व्यवहार करितहुँ आरम्भमे 'आँजी'क चिह्न अवश्य अंकित करैत छथि।

'आँजी'क अर्थक प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतान्तर अछि। कतोक व्यक्ति एकरा मंगलसूचक गणेशजीक दाँतक आकृति मानैत छथि, परन्तु पद्मनाभ भट्टाचार्यक मतानुसार आँजी कोनो अक्षर नहि, तन्त्र-सम्बन्धी कुण्डलिनीक सर्पाकार प्रतीकात्मक आकृति थिक जे प्रत्येक अक्षरमे व्याप्त रहैत एकर उच्चारणकेँ नियमित बनओने रहैत अछि। तन्त्रग्रन्थसँ सिद्ध होइत अछि जे द्विदलचक्र (आँजीचक्र)सँ उपर कलाक स्थिति रहैत अछि जे योगिन् (तन्त्रोपासक मात्र)केँ बड़ प्रिय छैन्हि।

अनेक विद्वानक मतानुसार तिरहुताक्षरक आकृति तान्त्रिक यन्त्रसँ विकसित भेल अछि, यथा त्रिकोण, चतुष्कोण, वृत्त, बिन्दु प्रभृतिसँ, अर्थात् तिरहुताक अक्षरसभ तान्त्रिक यन्त्रक प्रतीक थिक। मिथिला आदिकालसँ तान्त्रिक उपासनाक केन्द्रभूमि रहल अछि एवं एकर सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनपर तन्त्रक घनिष्ठ प्रभावकेँ एखनहुँ अनुभव कएल जाए सकैत अछि। एही कारणे एखनहुँ अन्य लिपिक अपेक्षा तिरहुतामे लिखल ग्रन्थ पूजा-पाठक हेतु अधिक उपयुक्त ओ प्रभावपूर्ण बुझल जाइत अछि।

तिरहुताक अन्य विशेषता जे एकरा अन्य पूर्वांचलीय लिपिसँ विलक्षण सिद्ध करैत अछि, से थिक 1. अधिकांश संयुक्ताक्षर, गँ, क्, ष्ण, त्र, कृ, प्रभृतिक हेतु पृथक्-पृथक् अक्षराकृति, 2. 'ओ' तथा 'औ' 'अ'मे माता लगाए नहि लिखल जाइत अछि, प्रत्युत ओहि हेतु स्वतन्त्र अक्षरसभक प्रावधान अछि, 3. एहि मध्य देवनागरीसँ भिन्न रीतिएँ माताक संयोजन होइत अछि, 4. ई बड़ शीघ्रतासँ लिखल जाए सकैत अछि, रोमनलिपि जकाँ बिनु हाथ उठाओने अथवा पाछाँ कएने, 5. एकर वर्णकेँ ककहरा कहल जाइत अछि एवं प्रत्येक अक्षरमे माता लगएबाक नाम निश्चित अछि, यथा, तरटेका 'क', काइंचुन 'का', हरिसँ कि प्रभृति। पूर्णविराम पासी कहल जाइत अछि।

उपर्युक्त विवरणसँ स्पष्ट अदि जे मिथिलाक्षर एक स्वतन्त्र लिपि थिक जे हजारो वर्षसँ मिथिलाक व्यावहारिक जीवन एवं ग्रन्थ-लेखनमे प्रयुक्त होइत रहल अछि।

***

द्वितीय प्रकरण

मैथिलीक लोकसाहित्य

'लोक' शब्द दुइ अर्थमे प्रचलित अछि। 'लोक'क एकटा अर्थ होइत अछि, जगत। इहलोक अथवा परलोक आदिक बोध एही अर्थमे होइत अछि। एकर दोसर अर्थ होइत अछि जनसामान्य। प्रायः सर्वप्रथम वेदव्यास महाभारतक आदि-पर्वमे 'लोक'क जनसामान्य-अर्थमे प्रयोग कएल-"अज्ञानतिमिरान्धस्य लोकस्य तु विचेष्टमः" एवं प्रत्यक्षदर्शी लोकानां समदर्शी भवेन्नरः। प्राचीन कालमे 'लोक' आ 'वेद' शब्द पर विचार कएल गेल एवं तदनुसार दुइ गोट परिपाटीक अस्तित्वक प्रमाण भेटैत अछि-लोक-परिपाटी एवं वेद-परिपाटी। वेद-परिपाटी वेद-सम्मत छल तँ लोक-परिपाटी वेदक बन्धनसँ स्वतन्त्र। लोक-विधि ओ वेद-विधिमे जेहन अन्तर छल, से आरम्भहिसँ साहित्यहुक क्षेत्रमे छल। कोनहु युगमे शिष्ट ओ परिनिष्ठित साहित्यसँ भिन्न जे रचना होइछ, से ओहि युगक लोक-साहित्य कहबैत अछि। परन्तु इहो ध्यातव्य जे पण्डितवर्ग द्वारा समादृत भेलाक पश्चात् तथा साहित्यक विकास-प्रक्रियामे अपन प्रामाणिक महत्व सिद्ध करबाक पश्चात् आजुक लोक-साहित्य काल्हिक शिष्ट-साहित्यक अन्तर्गत अन्तर्भूत कए लेल जाए सकैत अछि। उदाहरणार्थ ऋतुगीत, व्यवहार-गीत, महेशवानी, नचारी प्रभृति लोक-साहित्यक अन्तर्गत विकसित भेल, मुदा ई सब आब शिष्ट-साहित्यक अन्तर्गत परिगणित होइत अछि। एतबहिटा नहि, पाछाँ पण्डितकविलोकनि सेहो ओहि रीतिक रचना कए-कए मैथिलीसाहित्यकेँ समृद्ध करैत गेलाह।

लोकसाहित्यक सर्वमान्य परिभाषा एखनहुँ धरि नहि कएल गेल अछि। कतोक विद्वानक मत अछि जे शास्त्र ओ पद्धतिसँ विहीन एवं नगरसँ बहिर्भूत ग्राम्यसाहित्य मात्र लोक-साहित्य थिक, किन्तु कतोक विद्वान एहि मतकेँ भ्रामक मानैत छथि। एहि श्रेणीक विद्वानलोकनिक मन्तव्य अछि जे 'लोक' शब्दक अर्थ ग्राम्य अथवा जनपदीय नहि थिक। लोकत्र तात्पर्य होइत अछि नगर ओ ग्राममे प्रसरित समस्त जनसमूह, जकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार शास्त्र नहि होइत अछि। ई जनसमूह नगरक शिष्ट, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत रुचिसम्पन्न लोकक अपेक्षा अधिक सरल ओ अकृत्रिम जीवन जीवैत अछि एवं लोक-साहित्य हुनकहिलोकनि द्वारा स्वाभाविक रीतिएँ निर्मित भए हुनका लोकनिक सुख-दुःख, आशा-आकांक्षा, यथार्थ ओ कल्पनाक अनलंकृत एवं आवेगात्मक अभिव्यक्ति करैत अछि।

वस्तुतः आधुनिक भारतीय साहित्यमे लोक-साहित्य अंग्रेजी Folk literatureक अनुवाद थिक। एहिना लोक-वार्ता (Folk-lore), लोक-संगीत (Folk Music) प्रभृति पदक निर्माण कए आइ प्रयोग कएल जाइत अछि। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाक अनुसार आदिम समाजमे ओकर समस्त सदस्य लोक कहबैत छल। पश्चात् एकर व्यापक अर्थ कएल गेल तथा एहिसँ सभ्य राष्ट्रक समस्त जनसमूह अभिहित भेल। परन्तु अंग्रेजीअहुमे लोक-वार्ता, लोक-संगीत आदिक अर्थ संकुचित अछि एवं एहि प्रकारक वस्तु ओहन लोकसँ सम्बद्ध मानल गेल जे नगरीय सभ्यता-संस्कृति तथा सविधि शिक्षाक प्रभावसँ मुख्यतः दूर छथि, निरक्षर छथि अथवा जनिका नाममात्रक अक्षर-ज्ञान छैन्हि।

मैथिली साहित्यक उद्‌गम ओ विकास लोकसाहित्यहिक रुपमे भेल, अज्ञात-अपरिचित लोक-साहित्यकार द्वारा अलिखित रुपमे रचित रचनासँ, दीसर, युग-युगसँ मौखिक रहबाक कारणे ओकर भाषा बदलैत गेल, विषय-वस्तु जोड़ल-घटाओल गेल ओ ओहि मध्य निहित ऐतिहासिकता विलुप्त भए गेल। अतः उपलब्ध लोकसाहित्यक प्राचीनताक प्रसंग किछु निश्चित रुपेँ नहि कहल जाए सकैत अछि, परन्तु एहि मध्य कतोक रचना 13म-14म शताब्दीमे एतेक प्रचलित छल जे कविशेखर ज्योतिरीश्वरठाकुरपर्यन्त अपन 'वर्णरत्नाकर'मे तकर उल्लेख कएल, यथा, "विरहा, चाँचड़ि, लोरिक नाच, लगनी, चउपाइ" प्रभृति। वस्तुतः लोकसाहित्यक निर्माण जनमनोरंजनक हेतु भेल तथा कतोक जनजीवनक उपकारी विषयक रुपमे सेहो भेल। जन्मसँ लए मृत्युधरिक अनुभव, जय-पराजय, राग-विराग, रीति-रेवाज, व्रत-उपवास, शोषण-उत्पीड़न, सम्पन्नता-विपन्नता प्रभृतिक सहज भावाभिव्यक्ति एहि मध्य भेल अछि ओ तेँ एहि रीतिक साहित्यकेँ वास्तविक अर्थमे लोक-जीवनक दर्पण कहल जाए सकैत अछि।

मैथिलीक अधिकांश साहित्य गीतमय अछि। कोनहुँ भाषाक लोकसाहित्य गीतमय होइत अछि, जकर कारण थिक मानवजातिएटामे नहि, मानवेतर जीवहुमे नृत्य-गीतक सहजात प्रवृत्ति। भाषा सिखबाक पूर्वहिसँ मनुष्य गान ओ अनुकरण करब आरम्भ करैत अछि ओ भाषा सिखबाक पश्चात् गीतक माध्यम भाषा भए जाइछ। सभ्यताक विकासक क्रममे गीत परिमार्जित होइत गेल ओ कविताक स्वरुप धारण करैत गेल। कालक्रमे गीत ओ कविता भिन्न-भिन्न वस्तु बुझल जाए लागल एवं दुनूक हेतु दुइटा भिन्न-भिन्न शास्त्रक निर्धारण भेल। परन्तु आदि-कालक लोक-जीवनमे दुनू मध्य कोनो विभेद नहि छल एवं मनोरंजनक साधन गीत छन्दमय छल। ग्रियरसन अपन मैथिली क्रेस्टोमैथीमे 'सलहेस'क संग्रह कएने छथि, से गद्य-रचना लगैत अछि शब्द-रचना अवश्य समता-संयुत अछि, परन्तु छन्दोबद्ध नहि अछि। तथापि ओकर पाठ आइओ स्वरयुक्त गीतमय होइत अछि। हमर धारणा अछि जे गद्यहुमे निर्मित

[illegible]

[illegible] (प्रकाश-'प्रबन्ध-संग्रह'क 'प्राचीन मैथिली साहित्यक [illegible]' [illegible]।)

1. जनमनोरंजनक

(क) [illegible]।
(ख) [illegible]।
(ग) [illegible]।
(घ) [illegible]।
(ङ) [illegible]।
(च) [illegible]।

2. जनजीवन-उपकारी

(क) कृषि, [illegible]।
(ख) [illegible]।
(ग) [illegible]।
(घ) भजन।

[illegible] लोक-साहित्यक वर्गीकरण [illegible] अछि-

1. लोकगीत,
2. लोकगाथा,
3. लोककथा,
4. लोकनाट्य,
5. [illegible],
6. [illegible]।

आब हम एहिसभक लोकसाहित्यक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करैत छी।

1. [illegible]

[illegible]

1. [illegible] 2. [illegible] 3. [illegible] 4. [illegible] 5. [illegible] 6. [illegible] 7. [illegible]।

[illegible]

वस्तुतः मैथिलीक लोकगाथा [illegible] सामाजिक-सांस्कृतिक [illegible]। [illegible] भिन्न-भिन्न लोकगाथा [illegible]। मैथिलीक [illegible] लोकगाथा [illegible] सल्हेस, [illegible], दुलरा दयाल, [illegible], दीनाभद्री, [illegible] आदि। [illegible]

मैथिलीक [illegible] सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तथा तत्कालीन व्यापक समाज-दर्शन होइत अछि, से केवल भौतिके नहि, आध्यात्मिक सेहो।

बड़ खेदक विषय जे एखन धरि यथोपलब्ध लोकगाथासबहिक संकलन ओ प्रकाशन नहि भए सकल अछि, जाहिसँ सकल-साधारणक हेतु अध्ययनक मार्ग प्रशस्त भए सकए। एहि सबक वैज्ञानिक संकलनक दृष्टिसँ डा. व्रजकिशोर वर्माक कार्य सर्वोपरि महत्वक अछि। डा. *पूर्णानन्द दास, पं. राजेश्वर झा, प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, जयगोविन्द मिश्र, प्रो. धीरेन्द्र, डा. विश्वेश्वर मिश्र, प्राचार्य प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'*, डा. *प्रबोधनारायण सिंह* आदि सेहो एकर संकलनक कार्य कएने छथि, परन्तु अद्यापि तकर प्रकाशन सम्भव नहि भए सकल अछि। डा. व्रजकिशोर वर्मा लोकगाथाक आधार पर 'राजा सल्हेस', 'लोरिक-विजय', 'नैका-बनिजारा' 'लवहरि-कुशहरि' एवं रामारणपाल नामक पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित कएल अछि, जाहिसँ एहि सबहिक साहित्य-सौन्दर्यक महत्ता दिसि समाजक ध्यान आब नीक जकाँ आकृष्ट भए चुकल अछि। हिनक 'मैथिली लोकगाथाक अध्ययन' सेहो प्रकाशनाधीन अछि।

2. लोकगीत

साहित्यक विद्वान लोकगीतक तीन प्रकारक अर्थ करैत छथि- 1. लोकमे प्रचलित गीत, 2. लोक-निर्मित गीत एवं 3. लोक-विषयक गीत। किन्तु लोकविषयक गीत शिष्ट-साहित्यक अन्तर्गत पण्डित कविक द्वारा सेहो रचित भए सकैत अछि। अतः एहि प्रकारक गीतकेँ लोकगीत कहब संगत नहि होएत। वस्तुतः लोकनिर्मित एवं लोक-मध्य प्रचलित गीतहिटाकेँ लोकगीतक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। यदि कालक्रमे कोनो लोक-गीतकेँ शिष्ट-साहित्यमे स्थान भेटि जाए एवं लोक-जीवनसँ ओकर सम्बन्ध विच्छिन्न भए जाए तँ एहन गीतकेँ लोक-गीतक श्रेणीसँ बहिर्भूत मानल जाएत। वस्तुतः लोक-गीत कोनो भावक आलम्बन कए गानक उद्देश्यसँ रचित भए मौखिक रूपेँ प्रचारित होइत अछि। एकरा लिखिकेँ सुरक्षित रखबाक परिपाटी नहि रहल एवं आदिअहिसँ एकर मौखिके प्रचार-प्रसार होइत रहल। लोकगीतक निम्नांकित विशेषता कहल जाइत अछि-

1. भाषाक सरलता, सुबोधता एवं अविच्छिन्न प्रवाह-सम्पन्नता,

2. भावक उदारता, सहज रूपेँ धन-धान्य लुटा देबाक स्वाभाविक अभिव्यक्ति जेना निम्नलिखित पंक्तिमे:-

सेर जोखि सोनमा लुटाएब, पसेरि जोखि रुपया रे।
सौंसे अजोध्या लुटाएब, किछु नहि राखब रे।।

3. मंगलैषणाक प्राधान्य। लोकगीतकारलोकनि वैयक्तिक जीवनमे, परिवारमे तथा समाजमे शान्ति ओ अभ्युदयक कामना करैत समग्र देशक मंगल-कामना स्थाने-स्थान पर अभिव्यक्त करैत छथि, यथा-

भारतजन बउराय गरै छथि इलट-विलट कए हे देवी।
सब अपजस अहीँकेँ होइये, हृदय विचारु हे देवी।।

4. धर्मोन्मुख जीवनक कामना, आत्मसमर्पण ओ वैराग्यक भाव, जेना-

विपन मायामोहादिमे महामाया सतौने छी।
अहीँकेँ आसरा जगतजननी, हम सदिखन लगौने छी।।

5. पारिवारिक ओ सामाजिक सम्बन्धक आदर्शीकरण। एहि भावक लोकगीतसभमे आदर्श भाइ-बहिन, आदर्श पति-पत्नी, आदर्श सेवक-स्वामी एवं आदर्श नागरिकक अंकन भेल अछि।

मैथिली लोकगीतकेँ निम्नांकित श्रेणीमे विभाजित करब जाए सकैत अछि-

(क) संस्कार-गीत - जेना सोहर, छठिहार, मुण्डन, उपनयन, पितर, परिछन, गोसाउनी आदि विधि-व्यवहार ओ संस्कारक समय गानमे प्रयुक्त भेनिहार लोकगीत। एहि प्रकारक रचना प्रत्येक सांगोपांग, स्वाभाविक एवं सरस अछि जे ओ लोक-जीवनक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पक्षकेँ सजीव रीतिएँ उद्घाटित करैत अछि।

(ख) देवी-देवताक गीत - ई देवी-देवता पौराणिको भए सकैत छथि ओ आधुनिको, यथा गोसाउनि, गौरी, भैरव, हनुमान, महादेव, विष्णु, कृष्ण, राम, ब्रह्म, जीवछ, कमला, शीतला, विषहरि। एहि गीतसभमे महेशवानी ओ नचारी सर्वाधिक प्रचलित भेल, जाहि मध्य जनसाधारणक विवशता, दारिद्र्य एवं करुणाक सजीव अभिव्यक्ति भेल अछि, उदाहरणार्थ-

टुटल मड़ैया सिट सिट वदना, कोन विधि बचतनि लाज यो
गौरीकेँ नहि नूआ चेथरा, नहि छनि फाटल पुरान यो
एकहि कम्मल तिनि पुत्र मीलि घीचि तीरि घमसान यो
पूस मोइठा जाड़ खेपलनि, असहो भेलनि पराइ यो
अपने सोना खेसारी पर ई माघो खेपती दाइ यो

एही प्रकारेँ महेशवानीमे पारिवारिक जीवनक विविध पक्षक स्वाभाविक अभिव्यक्ति भेल अछि जे जन-जीवनकेँ संवेदित करैत रहैत अछि।

(ग) ऋतुगीत - मैथिली ऋतुगीत बड़ प्रसिद्ध अछि। एकर अन्तर्गत अबैत अछि कजरी, फागु, बसन्त, चैतावरि, तिरमासा, चौमासा, बारहमासा प्रभृति। ऋतु-गीतसभमे यदि एक दिसि मिथिलाक कृषकसमुदायक दारिद्र्यक वर्णन बड़ यथार्थ रीतिएँ भेटैत अछि तँ दोसर दिसि दाम्पत्य-जीवनक, संयोग ओ वियोगक सेहो मधुर ओ सरस चित्रण भेल अछि। निम्नलिखित पंक्तिमे दीनहीन द्वारा विभिन्न मासकेँ बितएबाक बड़ करुण चित्रण भेल अछि-

"पूस मोइठा डाहि तापब माघ खेसारिक साग यो
फागुन हुक्का छिम्मरि चोकरि, चैत खेसारिक दालि यो
कातिक दुख-सुख संगहि खेपब, अगहन हुनू साँझ भात यो।"

तँ निम्नलिखित पंक्तिमे विरहिणीक मनोव्यथाक मार्मिक व्यंजना भेल अछि-

रीम्म समय भेला मधुबन मोहन
संभहल न सोहावै है दैया
आयल बरसा समैया।
बरसै मेघ दमकै दामिनी
वन-वन बोलै कोइलिया है दैया
आयल बरसा समैया।।

(घ) व्रत-उपवास ओ सात्विक उत्सवक गीत, यथा, अनन्त-पूजा, छठि, बरिसाइत, भ्रातृद्वितीय, मधुश्रावणी, सामा-चकेबा आदिक गीत। एहि प्रकारक गीतहुमे मानवीय तत्वक बड़ संवेदनशील अभिव्यक्ति यत्रतत्र भेल अछि। उदाहरणार्थ निम्नलिखित छठिक गीतक प्रस्तुत पंक्तिमे बाँझक अवहेलना तथा दीनानाथसँ दु:खिनीक प्रार्थना केहन मार्मिक अछि, से द्रष्टव्य थिक-

सासु पड़े बँझिया हो दीनानाथ ननदि दुरकार
घर के जनमल सौतनियाँ हो दीनानाथ सेहो दै उलहन

(ङ) श्रम-सम्बन्धी गीत - लगनी, रोपनी, चरखा काटबाक, उखरि कुटबाक समयक गीत। एहि प्रकारक अधिकांश लोक-गीतमे शृंगार-भावनाक सरस

अभिव्यक्ति भेल अछि।

(घ) शिशु-गीत - मैथिलीमे कतोक प्रकारक शिशुगीत उपलब्ध अछि, जेना कतेक नेनाकेँ सूत करबाक, खेलएबाक एवं सुतएबाक। नेनागीतक दुइ गोट दृष्टान्त नीचाँ उद्धृत अछि-

1. घुघुआ झुल, मकेला झुल,
कोन गाम झुल, केनी झुल
पोखरि कात-कात हिरना खगा
हिरना भेली टूटि, पुनु भेली कवि।

2. अटकन मटकन, दहिया चटकन
माघ मास करैला फरै
आमुन गोटी जामुन गोटी
तेतरी सोहाग गोटी
बीच कटै ठाँय ठाँय, नदी गुँगुआइ
कमलक फूल दुनु अलगल जाइ।

एही प्रकारेँ मैथिली लोकगीतक अनेक प्रभेद अछि, जाहि मध्य एक दिसि यदि प्रणय-निवेदन, अभिसार, कुमारिक प्रेम-व्यथा, विरहक मार्मिकता, मिलनक आनन्द-विह्वलता आदिक सरल ओ सहज व्यंजना भेल अछि तँ दोसर दिसि मिथिलाक सिद्धि-साधना, तन्त्र-मन्त्र आदिक सेहो चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि एक दिसि प्राकृतिक सुषमाक सतरंगी सम्मोहन कयल गेल अछि तँ दोसर दिसि यथार्थ जीवनक व्यथा ओ विवशताक सेहो अभिव्यक्ति भेल अछि। साहित्यकेँ युग-जीवनक प्रतिबिम्ब कहल जाइत अछि, से मैथिली लोकगीतक प्रसंग वस्तुतः पूर्ण संगत प्रतीत होइत अछि।

मिथिलामे लोकगीत-प्रणयनक परम्परा एखनहुँ धरि अक्षुण्ण अछि। मुद्रणक सुविधा भेलाक कतिपय पूर्वक लोकगीतकारमे कतोक अज्ञात नहि छथि। महारानी सुचिता भेलाक कविगन मूलक लोकगीतकारमे कतोक अज्ञात नहि छथि। महारानी अधिरानी श्रीमती राजलक्ष्मीजी, श्रीमती नन्दिनी देवी, श्री मोदवती देवी, भोजेश्वरी देवी, अखिलेश्वरी देवी प्रभृतिक व्यवहारगीत ओ भक्ति-रचनाकेँ मैथिली लोकगीतक परम्परामे रचित साहित्य कहल जाए सकैत अछि। वैद्यनाथधाम देवघरक भक्तिगानमध्यक भजनकेँ एही श्रेणीमे परिगणित कयल जाए सकैत अछि। लोकप्रचलित भेलासँ एहि रचनासभमे कतोक मैथिली लोक-गीतक अभिन्न अंग सिद्ध भए सकैत अछि।

मिथिलाक विभिन्न अंचल ओ मिथिला-नेपालक सीमावर्ती क्षेत्रमे युग-युगसँ रचित भेल अगणित संख्यामे मैथिली लोकगीत छिड़िआएल अछि, जकर संकलन बड़ आवश्यक अछि। प्रसन्नताक विषय जे श्रीमती डा. अणिमा सिंह (मैथिली लोकगीत), डा. श्री लोकनाथ मिश्र ("मैथिलीक व्यवहारपरकगीत"), डा. श्री बालगोविन्द झा 'व्यथित' (मैथिली ग्रामगीत-1.2), श्री रामइकबाल सिंह 'राकेश' (मैथिली लोकगीत), प्राचार्य श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' ('थारु लोक-गीत', 'मैथिली नेनागीत') श्री विभूति आनन्द ('गीत-नाद') प्रभृति एहि क्षेत्रमे महत्वपूर्ण कार्य कए किछुकेँ प्रकाशित कयल अछि। व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क कार्य सेहो एहि क्षेत्रमे महत्वपूर्ण अछि। परन्तु एहि प्रकारक कार्य एखनहुँ करब बड़ शेष अछि।

3. लोककथा

अन्यान्य मूलभूत वृत्तिक समान कथा कहबाक ओ सुनबाक औत्सुक्य मानवजातिक विकासक संग-संग जाग्रत भेल होएत। मिथिलाक प्रत्येक जनपदमे एखनहुँ अनेक लोक छथि जे निरक्षर रहितहुँ लोककथाक भण्डार छथि। लोककथा अन्यान्य प्रकारक लोकसाहित्य जकाँ मौखिके एक युगसँ दोसर युग धरि प्रसारित होइत रहल एवं एकरो सबहिक लेखक अज्ञात छथि। इएहटा एहन लोकसाहित्य थिक जे निर्विवाद रूपेँ गद्यक साहित्य थिक।

मैथिली लोककथामे मुख्यतः प्रेम, शौर्य, त्याग, धर्म ओ नैतिक विषय वर्णित भेल। श्रीमती अणिमा सिंहक अनुसार मुख्यतः चारि प्रकारक लोककथा मैथिलीमे उपलब्ध अछि-

1. रूपकथा (Supernatural Tales), 2. हास्यकथा (Humorous Tales), 3. व्रतकथा एवं 4. नीतिकथा (Moral Tales)। प्रथम प्रकारक लोककथामे अमानवीय वस्तु ओ चरित्रसभक वर्णन होइत अछि। बैतालक कथाकेँ एहि श्रेणीमे राखल जाए सकैत अछि। एहिना जाहि कथामे भूत-प्रेत, दानव-देवता, जादू-टोना आदिक वर्णन होइत अछि, से रूपकथा थिक। हास्यकथा भेल यथा गोनूझाक कथासब। व्रतकथाक अन्तर्गत जितियाक, मधुश्रावणीक, छठि प्रभृतिक कथासबकेँ परिगणित कयल जाए सकैत अछि। व्रतकथासबकेँ मुख्यतः मैथिल ललनालोकनि सुरक्षित रखने छथि। पंचतंत्र ओ हितोपदेशसँ प्रभावित कोनहुँ प्रकारक उपदेशप्रद कथासभकेँ चतुर्थ श्रेणीमे परिगणित कयल जाए सकैत अछि।

बड़ खेदक विषय जे मैथिलीक समृद्ध लोक-कथाक संकलन दिसि एखन धरि

सम्यक् ध्यान आकृष्ट नहि भेल अछि। तथापि प्रो. तन्त्रनाथ झाक 'जीवितहिँ स्वर्ग' एवं 'बोयक संगी', श्री हंसराजक 'एगो रहथि राजा', डॉ. अमरनाथझाक 'लोक-कथा-संग्रह', श्री विभूति आनन्दक 'एकटा छल गोनूझा' प्रभृतिकेँ एहि दिशामे महत्वपूर्ण कार्य कहल जाए सकैत अछि। श्रीमती जयन्तीदेवी 'आराधना' प्रकाशित कए मैथिलीक व्रतकथाकेँ सर्वजन-सुलभ बनाए देल अछि। स्वर्गीय तेजनाथझाक 'मधुश्रावणी-कथा' सेहो पुस्तकाकार प्रकाशित अछि। परन्तु लोककथाक प्रसंग एहि कार्यकेँ सन्तोषप्रद नहि कहल जाए सकैत अछि।

4. लोकनाट्य

अन्य प्रकारक लोकसाहित्यहि जकाँ लोकनाट्यक आरम्भ ओ विकास कहिआ भेल, से अज्ञात अछि। परन्तु मानव-प्राणीक अनुकरणशीलताक सहजात प्रवृत्तिक कारणे आदियुगहिसँ कोनो-ने-कोनो प्रकारक नाट्यक प्रचलन आरम्भ भए गेल होएत, से सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि। अवस्थाक अनुकरण अभिनय कहल जाइत अछि, से कोनहुँ प्रकारक भए सकैछ। नाट्यशास्त्रक निर्माण तँ बहुत पाछाँ भेल होएत, परन्तु एकर आदर्श लोकनाट्य सएह रहल होएत। मैथिलीक लोकगीत हो अथवा लोकगाथा, तकर निम्न-अशिक्षितवर्गमे जाहि रुपक गान अथवा पाठक परिपाटी अछि, ताहिमे अंग-संचालन एवं अभिनयमुद्रा धारण करबाक प्रवृत्ति अछि, से लोकजीवनमे व्याप्त नाट्यक प्रति गहन अभिरुचिक द्योतक थिक।

मैथिलीमे सम्प्रति चारि प्रकारक लोकनाट्यक प्रचलन पाओल जाइत अछि-

(क) भक्ति-भावाश्रित लीलानाट्य - एहि श्रेणीक अन्तर्गत देवता, अवतारी-पुरुष अथवा लोकनायकलोकनिक चरितकेँ रुपायित कएल जाइत अछि। रामलीला, शिवलीला, ब्रह्माक लीला, विष्णुक लीला, प्रभृति भक्ति-भावाश्रित लीलानाट्य थिक। लीला-नाट्यक मैथिलीमे सर्वाधिक प्रचलन अछि।

(ख) प्रहसनात्मक नाट्य - एकर कोनो साहित्य तँ उपलब्ध नहि अछि, परन्तु मिथिलाक विपटाक अभिनय प्रसिद्ध अछि। विपटा रंग-विरंगक फक्कड़ा बनाए, विकृतिमूलक वेश धारण कए अथवा अंग-संचालन कए लोककेँ हँसबैत छल।

(ग) प्रेमाख्यानमूलक लोकनाट्य - लीलानाट्यक पश्चात् प्रेमाख्यान-मूलक नाट्य सर्वाधिक प्रचलित भेल। 'जट-जटिन' प्रेमाख्यानमूलक लोकनाट्य थिक। ई नारीलोकनिक मनोरंजनक हेतु एकमात्र नारी द्वारा अभिनीत होइत अछि। दाम्पत्य-जीवनक उद्दाम प्रेम-विलासक अभिव्यक्ति जेहन जट-जटिनमे भेल अछि

तेहन अन्यत्र दुर्लभ अछि। ई तन्त्रसँ सेहो सम्बद्ध मानल जाइत अछि तथा साओन-भादवमे वर्षाक हेतु सोद्देश्य एकर अभिनय कएल जाइत अछि।

'जट-जटिन'मे मानवजीवनक, मुख्यतः नर-नारीक मधुर सम्बन्धक विभिन्न पक्षक मार्मिक उद्घाटन भेल अछि। एकर गीतमे कतहु स्त्रीगणक नैहरक प्रति पक्षपात तँ कतहु स्वामीक प्रति अनन्य प्रेमक अभिव्यक्ति भेल अछि, सर्वत्र सामाजिक मर्यादा, नैतिकता एवं आदर्श प्रेमक स्थापनाक संग। उदाहरणार्थ, नैहरक उन्मुक्त वातावरणसँ आएल जटिनकेँ जखन जट पारिवारिक मर्यादाक अनुरुप व्यवहार करबाक आग्रह करैत अछि तँ जटिन पहिने ओकर विरोध करैछ-

"जट - नविकैं चलिहैं गे जटिनियाँ नविकैं चलिहैं गे।
जहिना नवतै कोँच करचिया तहिना नविहैं गे।।
जटिन - नहियैं नवबौ रे जटबा नहिये नवबौ रे।
हम त बाबा के दुलारु धीया तनिकै चलबौ रे।"

परन्तु अन्ततः जटिनकेँ जटक अनुकूल होअए पड़ैत छैक एवं पारिवारिक मर्यादाक रक्षा होइत अछि।

एहिना जखन जट विदेशक हेतु विदा होइत अछि तँ जटिन ओकरा रोकबाक चेष्टा करैत अछि-

"जट - हाथीपरक हौदा बेचबौले गे जटिन
आब जटा जाइ छी विदेश।
जटिन - ओहूसँ उत्तम बना देबह है जटा
आब नहि जटा जाउ विदेश।"

एहि वारणमे जटक प्रति जटिनक हृदयक गहन प्रणय-भावनाक सरस अभिव्यक्ति भेल अछि।

(घ) विविध विषयक लोकनाट्य-एकर अन्तर्गत अन्यान्य विविध विषयक लोकनाट्यक गणना होएत।

वस्तुतः मैथिलीक लोकनाट्य मिथिलाक सांस्कृतिक चेतनाक उपलब्धि थिक जे समाजक निम्नवर्गहुक अन्तस्तलकेँ, आदिकालहिसँ स्फुरित करैत, प्राणवन्त बनओने रहल। बड़ खेदक विषय जे मैथिलीक लोकनाट्यहुकेँ वैज्ञानिक रीतिएँ संकलित कए प्रकाशित करबाक दिसि साहित्यमनीषीक ध्यान एखन धरि पूर्ण रुपेँ नहि गेल अछि,

लगनी, भूतक सम्बोध (गोपाल चौधरी), अलबाटिन (र. नागेश्वर झा एवं डॉ. ओहदानन्द मिश्र), अपना–सबेया (र. नागेश्वर झा) प्रभृतिक कार्य अभिनन्दनीय थिक।

5. बुझौअलि

दैनन्दिन जीवनसँ सम्बद्ध रहबाक कारणे तथा समाजक प्रत्युत्पन्नमतित्व एवं बौद्धिक व्यायामक साधन होएबाक कारणे बुझौअलि सेहो लोकसाहित्यक अभिन्न अंग मानल जाइत अछि। प्राचीन कालसँ वैदिक ऋषिलोकनि बुझौअलि पुछबाक एवं ओकर उत्तर देबाक परिपाटी छल। महाभारतक यक्ष–युधिष्ठिर–संवाद बुझौअलिक दृष्टान्त थिक। विद्यापतिक प्रहेलिकाक आधार बुझौअलि अछि। फलतः शिष्टसमाजमे बुझौअलिकेँ महत्व स्वीकार कयल गेल अछि।

मैथिलीक लोकसाहित्यमे अगणित बुझौअलि कीर्ण–विकीर्ण अछि, जकर संकलन मैथिलीक समृद्धिक कारण भए सकैत अछि। उदाहरणार्थ किछु बुझौअलि नीचाँ उद्धृत कयल जा रहल अछि–

1. कनातलामे झिलमिल पानी।
ओहिमे नाचै बुढ़िया रानी।। – पूरी

2. कटर पटर खटर बाजन।
तीन मूड़ी दस टाँग।। – बरद–हरवाह

3. एक चिड़िया सेमरी,
फुदका घर बैसली,
फूटी फूटी चाउर खिलावै,
से चिड़िया कैसली ? –जाँत

4. एक रानी फुटकी फुटकल जाए।
ओकरा धानपुर लूटने जाए।। – आगि

6. फकड़ा (कहबी)

फकड़ाक उत्पत्तिक प्रसंग सेहो किछु निश्चित रूपेँ नहि कहल जाए सकैत अछि, परन्तु फकड़ाक आधार कोनो–ने–कोनो सत्य घटना रहैत अछि। अर्थगाम्भीर्य

फकड़ाक मुख्य विशेषता थिक एवं सर्वजनीनता अभिन्न धर्म। उक्ति–वैचित्र्यक कारणे फकड़ा मार्मिक भए जन–जीवनकेँ बहुत प्रभावित करैत रहैत अछि। किछु उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

1. हलकी विआह कनपट्टी सिनूर।
2. कंनी घर कंनी तइ घर ढेंढकिरी।
3. सब देखतोकेँ घीढ़कूड़ सासोकेँ घुसकुनियाँ।
4. गौर माउगि कुमाने आन्हर।
5. माय करै कुटाउन पिसाउन बेटाक नाम दुर्गादत्त।

7. वचन

वचनक अन्तर्गत उपयोगी लोक–साहित्य अबैत अछि, मुख्यतः कृषि, ज्योतिष अथवा व्यवहारक। परिनिष्ठित साहित्यमे जकरा सूक्ति कहल जाइत अछि, सएह लोकसाहित्यमे वचन नामसँ प्रसिद्ध अछि। लोकजीवनमे पाण्डित्यसँ अधिक अनुभवकेँ महत्व देल गेल, अतः वचनक निर्माणक आधार मुख्यतः अनुभवे भेल होएत। अन्यान्य प्रकारक लोकसाहित्य जकाँ वचनहुक निर्माताक परिचय अज्ञात अछि, तथापि डाक, घाघ, भड्डरीक वचन प्रसिद्ध अछि। एहि वचनसभक मध्यकालमे पण्डितवर्गहुमे समादर छल, कारण उच्चकोटिक कतोक संस्कृतक कृतिसबहुमे एहन वचनसभ प्रमाणक हेतु उद्धृत भेटैत अछि (द्रष्टव्य एहि ग्रन्थक चतुर्थ अध्याय)। एतबहिसँ लोक–जीवनमे वचन–सबहिक उपयोगिताकेँ आँकल जाए सकैत अछि। किछु वचन उदाहरणार्थ उद्धृत कयल जाइत अछि–

1. जौं पुरबैया पुरबा बहै,
सुखलो नदिया नाव बहावै।
2. आदिमे बरसे आद्रा, अन्तमे बरसै हस्त।
कतबो राजा डाँरै बान्है, सुखी रहै गृहस्त।।
3. हथिया बरसै चित मड़राइ।
घर बैसल गिरहथ अगराइ।।
शुक दिनके बादरी, रहे सनीचर छाय।
कहे भड्ड सुनु भड्डरी, बिनु बरसा नहि जाय।।

ई भेल लोकसाहित्यक संक्षिप्त परिचय मात्र। उपलब्ध सामग्रीक आधार पर एहिसँ अधिकक उल्लेखो नहि कयल जाए सकैत अछि। लोक–साहित्यक इतिहास देब तँ सर्वथा कठिन अछि, कारण कोन रचना कहिआ रचित भेल एवं ओकर रचयिता के छलाह, से बुझबाक साधन नहि अछि। काव्य–गुणक प्रसंग सेहो अन्तिम रूपेँ किछु नहि

कहल जाए सकैत अछि, कारण जतबहु लोक-साहित्य संगृहीत भेल अछि, ततबा प्रकाशित नहि भेल अछि ओ जतबा संगृहितो भेल अछि, से एखनो धरि कीर्ण-विकीर्ण लोक-साहित्यक शतांशो नहि अछि। आवश्यकता अछि वृहत् योजना बनाए, पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कए, आवश्यक वैज्ञानिक उपकरण जुटाए मनोयोगपूर्वक मिथिलाक विभिन्न जनपदमे छिड़िआएल विशाल लोक-साहित्यक संकलनक एवं तकर प्रकाशनक, पश्चात् विषय-वस्तु ओ विधाक अनुसार विभाजन-विश्लेषणक, तखनहि लोक-साहित्यक वास्तविक स्वरूप बुझबा योग्य होएत ओ तखनहिं एकर विस्तृत विवरण प्राप्त भए सकत।

मुदा जतबहि लोकसाहित्यक प्रसंग एतए सूचना देल जाए रहल, अछि, ततबहिसँ एकर महत्ता प्रतिपादित भए जाइत अछि। मैथिली साहित्यक विकास लोकसाहित्यक अनुसरणमे भेल ओ विद्यापति प्रभृति प्राचीन कविक रचना शिष्टसाहित्य होइतहुँ लोकसाहित्य थिक, कारण लोक-साहित्यक अनुसरणमे रचित ओ रचनासब लोकप्रचलित भए जन-जनक मानसक अभिन्न अंग भए गेल। अतः मैथिली शिष्ट-साहित्यहुक ताबत कालधरि वास्तविक मर्म नहि बुझल जाए सकैत अछि, जाबत कालधरि लोक-साहित्यक पूर्ण परिचय प्राप्त नहि होइत अछि। एहीसँ मैथिली लोकसाहित्यक महत्वक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

तृतीय प्रकरण

विषय-प्रवेश : काल-विभाजन

साहित्यक इतिहासकारकेँ अपन लेखन-कार्यक आरंभहिमे सर्वाधिक कठिन, दुरुह एवं महत्वपूर्ण निर्णय लेबए पड़ैत छैन्हि, इतिहासक काल-विभाजनक प्रसंग। मैथिलीक इतिहास तँ सर्वप्रथम अंगरेजीमे लिखि प्रकाशित कएल डा. श्री जयकान्त मिश्र, ओ तकर मैथिली रुपान्तर कएल श्री कृष्णकान्त मिश्र, मुदा समय-समय पर साहित्यक संक्षिप्त परिचय देबाक निमित्त आनो-आनो विद्वान-लोकनि अपन-अपन मन्तव्य प्रकाशित कएने छथि। ओहि विद्वनसभमे डा. उमेश मिश्र ('कृष्णजन्मक भूमिका ओ "मैथिली भाषा ओ इतिहास"), कुमार गंगानन्द सिंह ('मैथिली साहित्यक प्रगति'), डा. श्री सुभद्र झा (Formation of Maithili language), प्रो. रमानाथ झा (एहि पुस्तकक आमुख), स्व. भोलालाल दास (मिहिर'क 'मिथिलांक') डा. व्यथित ('मैथिली साहित्यक इतिहास'), प्रो. धीरेन्द्र ('मैथिली प्रकाश',नवम्बर 1948), मेधातिथि (मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि)। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी (A Survey of Maithili literature), डा. दिनेश कुमार झा (मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास) आदिक नाम अग्रगण्य अछि। प्रायः सब केओ एकरा आदि, मध्य ओ आधुनिक खण्डमे विभाजित कएल अछि, कतोक व्यक्ति आनहु दृष्टिएँ एकर प्रकारान्तर नामकरण कएल अछि, जाहि प्रसंग आगाँ विचार कएल जाएत।

मैथिली साहित्यक आदिकाल सर्वाधिक विवादक विषय थिक। डा. उमेश मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह, स्व. भोलालाल दास एवं प्रो. धीरेन्द्र आदि-कालक आरम्भ 8म शताब्दीक अन्तिम चरणसँ मानल अछि। डा. श्री सुभद्र झाक अनुसार 1000 ई. ओ मेधातिथिक अनुसार मैथिली साहित्यक आरम्भिक काल थिक 1300 ई.। व्यथितजी आदिकालक आरम्भक प्रसंग मत व्यक्त नहि कएल अछि। आदिकालक आरम्भहि जकाँ एकर अन्तक विषयहुमे मतैक्य नहि अछि यद्यपि अधिकांश विद्वान 1300 ई. धरि आदिकाल मानल अछि। डा. व्यथित ओ प्रो. धीरेन्द्र एकर सीमा-रेखा 24-25 वर्ष तँ प्रो. राधाकृष्ण चौधरी ओ डा. दिनेश कुमार झा 50 वर्ष आओर आगाँ बढ़ाए दैत छथि। डा. उमेश मिश्र एकरा 100 वर्ष आओर आगाँ, 1400 ई. धरि मानल अछि। डा. श्री जयकान्त मिश्र 1600 ई. ओ मेधातिथि 1556 धरि आदिकाल मानल अछि।

उपलब्ध तथ्यक साम्प्रतिक आधार पर एखनहुँ धरि आदिकालक आरम्भक प्रसंग निश्चित कोनो निर्णय नहि लेल जाए सकैछ, परन्तु 8म शताब्दीक अन्तमे आदिकालक आरम्भ मानब सत्यक निकट अवश्य अछि। एहि प्रसंग अग्रिम प्रकरणमे विस्तारक संग विचार कयल गेल अछि। डा. श्री सुभद्र झा ओ मेधातिथि 1100 ई.सँ आदिकालक आरम्भ मानैत छथि, जे स्पष्टतः असंगत लगैत अछि। डा. झाक कालविभाजनक आधार भाषाक विकास रहल हो, जे सम्भव ई मानि जे 'वर्णरत्नाकर'मे प्रयुक्त भाषा ओकर रचनाकालक 300 ई. वर्ष पूर्व विकसित भए गेल छल। परन्तु की मिथिलाभाषाक विकासक प्रक्रियाकेँ बुझबाक हेतु 'चर्यापद'क भाषा सहायक सिद्ध नहि भए सकैछ ?

डा. श्री जयकान्त मिश्र ओ मेधातिथिक आदिकाल-सम्बन्धी विचार विशेष कोँ विचारणीय थिक। डा. मिश्र आरम्भिककाल मानैत छथि 1300-1600 ई. तँ मेधातिथि 1100 सँ 1556। मेधातिथि अपन 'मैथिलीक प्रमुख कृति'मे अपन विचार व्यक्त कएने छथि, तेँ हिनक एहि प्रसंगक दृष्टि शुद्ध साहित्येतिहासिक होएबाक चाहैत छल, मुदा से अछि नहि। हिनक विभाजनसँ 'चर्यापद' मैथिलीक विवेच्य वस्तु नहि रहि जाइत अछि आ 1100 ई.क तँ एहन कोनो कृति नहि अछि जकरा आधार मानि 1100 ई.सँ आरम्भिक कालक आरम्भ मानल जाए।

डा. मिश्र 1300 ई.सँ मैथिली साहित्यक आरम्भ मानैत छथि, परन्तु विद्यापतिक पूर्वक साहित्यकेँ 'प्राग्विद्यापति-साहित्य' संज्ञासँ विस्तारसँ चर्चा कएने छथि। एहि साहित्यमे 'वर्णरत्नाकर' तँ हुनक आरम्भिक युगक रचना थिक, 'चर्यापद'हुक चर्चा ओ बड़ परिश्रमपूर्वक कएने छथि। तखन 1300 ई.सँ मैथिली साहित्यक आरम्भ मानब कोना तर्कसंगत भेल ? वस्तुतः मैथिलीक साहित्यिक प्रक्रिया ईस्वी-पूर्व शतकमेँ स्पर्श करैत अछि ओ छिटपुट रूपसँ अनेक मिथिलापभ्रंश-साहित्य सेहो उपलब्ध होइत अछि, तेँ 1300-25 धरिक पूर्वक साहित्यकेँ आरम्भिक साहित्य मानब सर्वथा युक्तिसंगत थिक। एही कारणे अधिकांश विद्वान 1300 ई.सँ मध्यकाल मानने छथि। प्रो. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' सेहो एहन मानैत छथि, अन्तर एतबे जे ओ ओकरा मध्यकाल नहि कहि एकरा तीन खंड मे विभाजित कए लेल अछि- 1. ज्योतिरीश्वर-युग (1324-1412), 2. विद्यापति-युग (1412-1527) एवं 3. उत्तर- विद्यापति-युग (1527-1860)। विद्यापति-युग ओ उत्तर- विद्यापति युग-सम्बन्धी हुनक मन्तव्यसँ सहमत भेल जाए सकैत अछि, परन्तु ज्योतिरीश्वरक नामसँ एक पृथक युगक कल्पना उचित नहि बूझि पड़ैत अछि, कारण 'वर्णरत्नाकर' सन अद्भुत ग्रन्थात्मक रचना करितहुँ ओ कोनो परम्पराक स्थापना नहि कए सकलाह। अतः विद्यापतिसँ मध्य युगक आरम्भ ओ हुनक पूर्वक समस्त साहित्यकेँ आरंभिक साहित्य मानब अधिक तथ्यक अनुकूल होएत। प्रायः एही कारणे डा. उमेश मिश्र

मध्यकालक आरम्भ 1400 ई.सँ मानल अछि।

डा. श्री जयकान्त मिश्र एक विशेष उद्देश्यसँ अपन इतिहासक रूप-रेखा प्रस्तुत कएल। हुनक मुख्य उद्देश्य छल मैथिलीमे नाट्य-परम्पराक विकासकेँ विशिष्टताक संग उपस्थापित करब। हुनक अनुसार 1600 ई.क पश्चात् मैथिली नाटकक रचनाक प्राचुर्य भेल, जकरा ओ किर्तनियाँ नाटक कहल अछि। हुनक अनुसारेँ विद्यापति द्वारा मैथिलीक पदावलीक जे सशक्त धारा प्रवाहित भेल, से उमापतिसँ नाट्य-रचनाक प्राचुर्य द्वारा एक महत्वपूर्ण ओ प्रौढ़ दिशान्तरकेँ प्राप्त कए नवयुगमे प्रवेश कएल। परन्तु हुनक ई धारणा पूर्वाग्रहसँ अनुप्राणित अछि। वस्तुतः जकरा ओ मैथिलीक नाट्य-परम्परा कहैत छथि, से ओहिसँ बहुत पूर्व विद्यापतिसँ आ ताहूसँ पूर्व ज्योतिरीश्वरसँ प्रारम्भ भेल छल, यदि 'मैथिली धूर्तसमागम'केँ ज्योतिरीश्वरक कृति निर्विवाद रूपेँ मानि लेल जाए। दोसर, डा. उमेश मिश्र ओहिसँ पूर्वक साहित्यकालकेँ गीतयुग ओ प्रो. धीरेन्द्र सिद्ध-युगक संज्ञा देने छथि। परन्तु 1400 ई.सँ पूर्व गीतेटाक रचना नहि भेल छल, सिद्धलोकनिक रचनाक संग-संग 'प्राकृत-व्याकरण'क मिथिलापभ्रंश प्रभृति साहित्य मध्य शृंगारिक कविता प्रचुरतया उपलब्ध होइत अछि।

एतए ध्यातव्य थिक जे मिथिलाभाषामे रचित ओ संस्कृतनाटकमे प्रयुक्त पदावली की भाव-विषय आ' की शब्दशिल्पमे विद्यापति द्वारा प्रचारित गीतिरीतिक एकान्त अनुसरण करैत रहल आ आद्यन्त विद्यापतिक प्रभावक अन्तर्भूत रहल। नेपाल ओ आसाममे रचित नाटक मध्य गद्यक समावेश भेल, नाटकीय प्रयोगगत मौलिकता सेहो आएल, परन्तु ताहू मध्य विद्यापति-रीतिक पदावलीक प्रधानता रहल। अतः नेपाल आ आसाममे विकसित नाट्य -साहित्यक ऐतिहासिक महत्वकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैछ। परन्तु संगहि इहो स्मरणीय थिक जे विद्यापतिक गीत-परम्परा क्षीण नहि भेल छल, मिथिलामे तँ से सहजहि अक्षुण्ण छल, नेपालमे तथा आसाम-बंगाल-उड़ीसामे ब्रजबुली साहित्यक रूपमे तीव्र गतिसँ प्रवाहित भए रहल छल। आबहु गीत-पदहिक प्रधानता छल, नाटकक नहि। अतः एहि कालकेँ सेहो पूर्वकालसँ पृथक् नहि कएल जाए सकैत अछि। एही कारणे स्व० रमानाथ झा हमर एहि इतिहासक 'आमुख'मे दुइएटा युग मानैत छथि- 1. विद्यापतिक युग, प्राचीन-युग, कृष्णकाव्यक युग ओ 2. चन्दा झाक युग, नवीन युग ओ रामकाव्यक युग। ई मत प्रत्यक्ष रूपेँ 1300-50 सँ 1860 ई. धरि मध्य-युग मानि अधिकांश विद्वान द्वारा समर्थित अछि, केवल मेधातिथि मात्र किछु वर्ष घटाए-बढ़ाए डा. श्री जयकान्त मिश्रक समर्थन कएने छथि। एहि मध्य-युगक आरम्भक धारि सए वर्षक पश्चात्, 18म शताब्दीसँ विभिन्न रूपक काव्य-रचनाक प्रक्रिया पूर्वक अपेक्षा अधिक तीव्र भेल, मैथिलीमे काव्य-रचना करब हीन नहि बुझल जाए लागल तथा भाषा ओ अभिव्यक्ति-शिल्प सेहो पण्डिताम होअए लागल, तेँ चतुर्भुज ओ उमापतिसँ काव्यगत प्रवृत्तिमे किछु नवीनता अवश्य परिलक्षित होइत अछि ओ एही हेतुएँ

1700सँ चन्दा झा पर्यन्त धरिक समयकेँ उत्तर-कालीन मध्यकाल कहल जाए सकैछ ओ ओहिसँ पूर्वकेँ, 1300 सँ 1700 ई.केँ पूर्वकालीन मध्यकाल। प्रो. धीरेन्द्र 1412 सँ 1527 ई. धरि विद्यापति-युग ओ 1527 सँ 1860 ई. धरि उत्तर-विद्यापति-युग मानैत छथि, परन्तु काव्यगत प्रवृत्तिकेँ ध्यानमे रखैत 1527 ई. मात्र धरि विद्यापति-युग मानब समीचीन नहि प्रतीत होइत अछि। एहि काल-सीमाक विभाजनमे ओ प्रायः डा. जयकान्त मिश्रसँ प्रभावित बूझि पड़ैत छथि यद्यपि समग्र रुपसँ ओहो साहित्यिक विकासक मर्म अनुभव करैत अवश्य प्रतीत होइत छथि।

मध्य-युगक अन्त ओ आधुनिक-युगक आरंभक विषयमे मतान्तर अछि 60 वर्ष मात्रक। कुमार गंगानन्द सिंह ओ डा. श्री सुभद्र झा 1800 ई.सँ आ प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी 1830 ई.सँ आधुनिक युगक आरम्भ मानैत छथि तँ डा. उमेश मिश्र, डा. श्री जयकान्त मिश्र, डा. व्यथित, प्रो धीरेश्वर, मेधातिथि ओ डा. दिनेश कुमार झा 1857-60 ई. सँ। स्व. भोलालाल दास 17म शताब्दीसँ वर्तमान कालक आरम्भ मानि लेने छथि जे मानबाक स्पष्टतः कोनो ठोस कारण नहि अछि।

1800-30 ई.सँ सेहो आधुनिक युगक आरम्भ मानबाक कोनो ठोस कारण नहि भेटैत अछि-ने तँ तत्कालीन कोनो साहित्य उपलब्ध अछि आ ने मिथिलामे एहन कोनो राजनीतिक अथवा सामाजिक घटनाक सूत्र प्राप्त होइत अछि जकर मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे प्रभाव पड़ल हो। 1860 ई.मे दरभंगा-राज कोर्ट ऑफ वार्ड्सक शासनमे चल गेल ओ अंगरेजी शिक्षाक प्रसार आरम्भ भेल छल। 1857 ई.मे अंगरेजी शासनक विरुद्ध सिपाहीविद्रोह भेल छल ओ जाहिसँ राष्ट्रव्यापी स्वतन्त्राक आकांक्षा सजग भए गेल छल। मिथिलहुमे तकर तरंग उपस्थित भेल हो से सम्भव, यद्यपि तत्कालीन मैथिली साहित्यमे कतहु ताहि प्रकारक भाव व्यक्त भेल नहि भेटैत अछि। भाषा-साहित्यक गौरवक अभ्युदय प्रकारान्तरसँ अंगरेजी शिक्षासँ सम्बद्ध अवश्य अछि, परन्तु अंगरेजी शिक्षाक आरम्भसँ मैथिली साहित्य-सर्जनामे वस्तु वा शिल्पमूलक नूतन प्रवाह गत-शताब्दीमे उपस्थित भेल हो, तकर दृष्टान्त कतहु उपलब्ध नहि होइत अछि। अंगरेजी शिक्षासँ एतबहिटा भेल जे लोकक ध्यान अपन मातृभाषाक महत्व दिसि आकृष्ट भेल, मैथिली भाषामे पद-कवित्तक अतिरिक्त गद्य-पद्य दुनू प्रकारक लोकोपयोगी साहित्यक अभ्युदय दिसि संवेदनशील प्रतिभाक ध्यानाकर्षण भेल, जकर प्रथम स्फुरण मुख्यतः चन्दा झाक रचनामे फलीभूत भेल परिलक्षित होइत अछि आ सेहो गत शाताब्दीक अन्तिम दुइ दशकमे। चन्दा झाक आरम्भिक रचनामे तँ भाषागत नवीनताक यत्किंचित् समावेश रहितहुँ गतानुगतिकता मात्रक अनुसरण भेल अछि, तँ उपलब्ध साहित्यक आधार पर 1880-85 सँ पूर्व आधुनिक युगक आविर्भाव मानबाक कोनहुटा कारण नहि देल जाए सकैत अछि। हमर विचारसँ तँ आधुनिक युगक आरम्भ 1900 ई. सँ मानब उचित थिक। आधुनिक वातावरण-निर्माणक आरम्भ

1860 ई.सँ अवश्य मान्य थिक।

मैथिली साहित्यमे आधुनिक युगक एखन एक सएसँ किछुए वर्ष अधिक बीतल अछि, परन्तु एतबहि अल्प समयमे गद्य-पद्य दुहू रीतिक साहित्यक अभूतपूर्व विकास भेल अछि ओ ओहि मध्य नव-नव प्रवृत्तिक विलक्षण समाहार होइत रहल अछि। कोनो रीति-नीति आ भाव-विषय स्थिर नहि अछि। परिवर्तनशीलताक गति एतेक तीव्र अछि जे पूर्वमान्यता निरन्तर खण्डित होइत रहल अछि ओ नवीन मान्यता स्थापित होएबासँ पूर्वहि खण्डित भए जाइत अछि। एहना स्थितिमे कतोक विद्वान आधुनिक युगहुकेँ दुइ वा तीन उपखण्डमे विभक्त करबाक मत व्यक्त कएने छथि, से विचारणीय थिक। उदाहरणार्थ प्रो. धीरेन्द्र 1890 सँ 1925 ई.केँ पुनर्जागरण-युग ओ 1950 सँ अद्य-पर्यन्त-केँ नवयुगक संज्ञा देने छथि। एकर विपरीत डा. दिनेश कुमार झा 1857 सँ 1947 ई. धरिकेँ ब्रिटिश-काल ओ 1947 ई.क पश्चात् समयकेँ स्वातंत्र्योत्तरकालक नामे आधुनिक युगकेँ दुइ भागमे विभाजित कएल अछि। चन्दा झा देश-दशा एवं सामाजिक आधोगति-विषयक यथार्थवादी ओ नवोत्थानमूलक रचना द्वारा आधुनिक युगक प्रवर्त्तन कएल आ ताहि रीतिक रचना 1925-30 धरि होइत रहल; तँ एहि युगक चन्दा झा-युग वा नवजागरण-युग कहब सर्वथा समीचीन थिक, परन्तु 1947 ई. वा 1950सँ नवयुग मानब तर्क-संगत नहि लगैत अछि। 1947 ई.मे भारत स्वतंत्र तँ अवश्य भेल, परन्तु ओहिसँ मैथिली साहित्यमे होनहुँ उल्लेखनीय ऐतिहासिक दिशान्तर उपस्थित भेल हो, तकर कोनो प्रमाण नहि अछि।

1925-30 ई.क मध्य भुवनजी द्वारा प्रगीतकाव्यक अवतरण भेल ओ तकर लगले पश्चात् ओ समानान्तर, परन्तु ओकर अंग भए नव-नव प्रयोग होअए लागल। एही कालमे प्रो. हरिमोहन झा 'कन्यादान' प्रकाशित कए नवीन रीतिक कथा-शिल्पक विकास-मार्गकेँ सेहो प्रशस्त कएल। एहीकालक पश्चात् उच्चकोटिक विभिन्न प्रकारक गद्य-रचनाक गति तीव्र भए गेल। अतः ई कालावधि स्पष्टतः दिशान्तर सूचित करैत अछि।

कविताक क्षेत्रमे राजकमलक 'स्वरगन्धा, (1958)क प्रकाशनक पश्चात् प्रयोगवादी काव्य-रचनाक आन्दोलन जकाँ चलल ओ जकर समानान्तर कथाशिल्पहु मध्य प्रयोगक आग्रह प्रबल भए उपस्थित भेल। तत्पश्चात् बड़ शीघ्रता सँ नव-नव 'वाद'क अवतारणा आ तकरा अस्वीकृत करबाक प्रक्रिया गतिशील भए उठल। फलस्वरूप कोनो 'वाद' अधिक समयक हेतु स्थिर नहि रहल आ तेँ कोनो युगक स्थापना सेहो नहि भए सकल। 'प्रयोगक हेतु'क सिद्धान्तक प्रबलताक कारणे प्रयोगवादी रचना जनमानससँ दूर होइत गेल, वर्गीय होइत गेल। ओहि मध्य जँ कदाचित् जन-जीवनक स्पन्दन प्रतिध्वनित भेवो कएल तँ ओ विपथगामितासँ ऊपर नहि उठि

सकल। तेँ एकरा नवयुग मानल जाए अथवा नहि, से एखनहुँ सन्दिग्ध अछि। वस्तुस्थिति तँ ई अछि जे 1958 ई.क पश्चात् कवि वा कथाकार, निस्सन्देह किछु अपवादकेँ छोड़ि, एखनहु धरि ओहि स्तरक कृतिक रचना नहि कए सकलाह अछि आ ने तादृश प्रतिष्ठे अर्जित कए सकलाह अछि जतबा प्रगीतवादी कवि वा कथाकार कएल वा कए रहल छथि। वस्तुतः एखनहुँ धरि भुवनजी ओ यात्री द्वारा प्रवाहित रचना-परम्पराक युग समाप्त नहि भेल अछि, एखनहुँ धरि ओ पूर्ण विकासमे अछि।

वस्तुतः चन्दा झाक पश्चात् आधुनिक मैथिली साहित्यमे जे नित नूतन नवीनताक दर्शन होइत अछि, से एहि युगक सामान्य धर्म थिक, स्वयं नवयुग नहि थिक। तथापि आधुनिक युगक विश्लेषणार्थ एकर प्रमुख प्रवृत्ति-तत्वकेँ ध्यानमे रखैत एकर तीन उप-विभाग कएल जाए सकैत अछि।

उपर्युक्त विवेचनक आधार पर हमर विचारसँ मैथिली साहित्यक उपयुक्त काल-विभाजन होएत:-

1. आदिकाल, प्राक्ज्योतिरीश्वरकाल

अथवा अपभ्रंश-युग -ईस्वी-पूर्व प्रथम शतकसँ 1300 ई.

2. मध्यकाल अथवा विद्यापति-युग 1300- 1860 ई.

(क) विद्यापति-युग-1300-1700
(ख) उत्तर-विद्यापति युग-1700-1860

3. आधुनिक युग 1860सँ अद्यपर्यन्त

(क) वातावरण-निर्माण-1860-1880
(ख) चन्दा झा-युग-1880-1930
(ग) नव नव विकासक युग-1930सँ अद्यपर्यन्त

\+ + +

एहि इतिहासकेँ हम उपर्युक्त काल-विभाजनक क्रममे लिपिबद्ध नहि कएल अछि,प्रत्युत प्रमुख-प्रमुख शिल्पविधान ओ भावप्रवृत्तिक विकास-क्रमक स्पष्ट रुप-रेखा प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल अछि। मुदा विवेचनाक क्रममे रचनाक समय ओ तदनुसार ओहि ओहि कृतिकेँ बुझबाक प्रणालीक अविकल अनुसरण कएल अछि। अतः एहि

पुस्तककेँ मैथिली साहित्यक विकासात्मक इतिहास कहब सएह युक्तिसंगत होएत। मुदा आरम्भमे तकर अपवाद जकाँ भेटत, मुख्यतः चारिम-पाँचम प्रकरणमे। मैथिली साहित्यक निर्माता विद्यापति मैथिली भाषाक सबसँ प्रतिभाशाली युगस्रष्टा कवि भेलाह। हुनकहि अनुसरणमे 19म शताब्दीक अन्त धरि काव्यरचना होइत रहल ओ तत्पश्चातो गौण रुपेँ भेल। मध्यमे गोविन्ददास ओ मनबोध भिन्न रीतिक काव्यरचना करबो कएल तँ हुनक वैशिष्ट्य हुनकहि धरि सीमित रहल, कोनहु स्वतन्त्र परम्पराक क्रमबद्ध विकास नहि भेल। दोसर, विद्यापतिक कृतित्व ओ व्यक्तित्वमे एतेक विविधता ओ विस्तार अछि जे हुनका हेतु एक गोट-स्वतन्त्र प्रकरणक अवतारणा करब सएह श्रेयस्कर बुझल गेल। विद्यापतिसँ पूर्वक साहित्य अल्प अछि, तेँ उपलब्ध सामग्रीसभक एकहि ठाम चर्चा प्राक्-विद्यापति-साहित्यक नामसँ एकहि प्रकरणमे कएल गेल अछि। एहि साहित्यक पृथक् चर्चा करबाक कारण इहो अछि जे ओहिसँ कोनो परम्पराक अनवरुद्ध विकास नहि भेल अछि।

यद्यपि जाहि-जाहि विषयक ऐतिहासिक विकासकेँ एहि पुस्तकमे देखाओल गेल अछि, तकर प्रकारान्तर भेदहुक विस्तारक संग स्वतन्त्र अध्यायमे विवेचना कएल जाए सकैत अछि, मुदा हम सामान्य वैशिष्ट्यक सूत्रमे सभकेँ एकत्र गुम्फित कएल अछि। एहिसँ प्रायः जिज्ञासुकेँ मैथिली साहित्यक विकासक स्वरुप बुझबामे अधिक सरलता होएतैन्हि। जाहि संक्षिप्तताक संग मैथिली साहित्यक रुपरेखा प्रस्तुत कएल गेल अछि, ताहिसँ अधिकक की एहि लघुकाय पुस्तकमे केओ सुधी पाठक अपेक्षा कए सकैत छथि ?

***

चतुर्थ प्रकरण

प्राक्-विद्यापति-साहित्य

विद्यापतिसँ पूर्वक उपलब्ध मैथिली साहित्य अछि 'चर्यापद' (8म-11म शताब्दी) एवं 'वर्णरत्नाकर' (14म शताब्दी)। प्रथम मैथिली अपभ्रंश एवं दोसर निस्सन्देह विकसित मैथिली भाषाक ग्रन्थ थिक, जाहि मध्य अपभ्रंशक पर्याप्त छाप स्पष्ट अछि। किन्तु 'वर्णरत्नाकर' सन जेहन परिमार्जित ग्रन्थ उपलब्ध अछि एवं जाहि उद्देश्यसँ लिखल प्रतीत होइत अछि, तकरा ध्यानमे रखैत कोनहुँ आन ग्रन्थ उपलब्ध नहि होएब आश्चर्यजनक बुझि पड़ैत अछि। 'वर्णरत्नाकर'क पूर्वक के कहए, एकर रचनाक पश्चातहु, विद्यापतिक अवतीर्ण होएबाक पूर्व धरि, कोनो रचना उपलब्ध नहि होइत अछि। 'वर्णरत्नाकर' गद्यरचना थिक। कोनहुँ साहित्यक रचनाक आरम्भ पद्यसाहित्यसँ होइत रहल अछि। 'वर्णरत्नाकर' जेहन परिमार्जित गद्यरचना थिक ताहिसँ ई निस्सन्देह कहल जा सकैत अछि जे एहूसँ पूर्व, समकाल एवं पश्चातो मैथिलीमे गद्य वा पद्यक रचना अवश्य भेल होएत। विद्यापतिक लोकप्रिय, व्यापक ओ उच्च कोटिक परिमार्जित रचना सेहो एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करैत अछि, कारण, भाषा ओ साहित्यक सुदीर्घ परम्पराक आधारहि पर एहन उच्च-कोटिक महाकविक जन्म कोनहु साहित्य मध्य होइत अछि।

किन्तु एखन धरि 'चर्यापद' एवं 'वर्णरत्नाकर'क पूर्वक एवं दुहूक मध्यकालमे एहन कोनहु प्रामाणिक ग्रन्थ प्राप्त नहि होइत अछि, जकरा मैथिली साहित्य-मध्य निश्चयपूर्वक अन्तर्भूत कएल जा सकए। नान्यदेवक मन्त्री श्रीधर कायस्थ द्वारा मैथिली भाषामे रचित 'सुक्तिकर्णामृत' नामक जाहि ग्रन्थक विषयमे मुंशीरघुनन्दनदास लिखने छथि, से उपलब्ध नहि होइत अछि। एहिसँ अतिरिक्त 'वर्णरत्नाकर' मध्य किछु एहन साहित्यक चर्चा अछि, जकरा द्वारा लोकजीवन मनोरंजन प्राप्त करैत छल, यथा, बिरहा, चाँचहि, लोरिक नाच, लगनी, चउपाइ तथा संगीत ओ नृत्यक विभिन्न भेद ओ उपकरणक जेहन चर्चा अछि, ताहूसँ अनुमान कएल जा सकैत अछि जे ओहि हेतु प्रयुक्त करबाक निमित्त साहित्यरचना सेहो अवश्य भेल होएत। तहिना लोककथा एवं पावनितिहारक हेतु जनोपयोगी कथाक सेहो प्रचलन अवश्य भेल होएत। किन्तु ओहि सभक तत्कालीन भाषामे लिखित कोनो रचना प्राप्त नहि अछि। एकर परम्परः लोककंठमे चलैत रहल। एम्हर लोरिक आदि लोकगीतकाव्यक संकलन विभिन्न साहित्यान्वेषकगण कएलेन्हि अछि। मुदा ओहि मध्य कालक्रमे भाषामे एतेक परिवर्तन

आबि गेल जे ओहिसँ मूल-रुपक अनुमान कठिन होएत। 'डाक-वचनावली' सेहो प्रकाशित अछि, किन्तु ओकरहु सएह स्थिति। मुदा एहिसँ एतबा तँ सिद्ध भइए जाइत अछि जे प्राक्-विद्यापतिकालमे अधिक लिखित मैथिली साहित्य भनहिँ नहि प्राप्त होइत हो जे ओहि समयक मैथिली भाषाक स्वरुपकँ स्पष्ट करए, किन्तु मैथिली साहित्यक विकास लोकजीवनक भीतरेभीतर अवश्य होइत रहल छल। एहि तथ्यक पुष्टि उपर्युक्त विवेचनसँ भए जाइत अछि। प्रो. रमानाथ झा 'वर्णरत्नाकर'सँ प्राचीन अनुपलब्ध साहित्यक दुइ प्रभेदक उल्लेख कएने छथि :-1. जनमनोरंजक, यथा-गीत, वीरगाथा, तत्तत् जातिक देवतालोकनिक आराधनाक, प्रबन्धकाव्य, पावनिसबहिक कथा एवं 2. जनजीवनक उपकारी, कृषि, यात्रा, शकुन प्रभृतिक धर्मोपदेशक, धर्मप्रचारक, भजन।

कोनहु जनपदीय भाषाक विकासक क्रम लोकजीवनमे सदत चलैत रहैत छैक आओर तेँ आत्माभिव्यक्तिक स्वाभाविक वृत्तिक कारणे ओहिमे साहित्यहुक निर्माण होइते छैक। एही दृष्टिएँ विदेहजनपदक लोकभाषाक अस्तित्व त्रेतायुगहिसँ आबि रहल अछि। वाल्मीकि रामायण (सुन्दरकाण्ड, सर्ग 10, श्लोक 10-19) क आधार पर कहल जाइत अछि जे बहुभाषाविज्ञ हनुमानजी अशोक-वाटिकामे सीताजीसँ हुनक मातृभाषामे गप्प कएल। ओहि समयमे एहि जन-पदक लोकभाषा प्राकृत छल। ओएह प्राकृत-भाषा आधुनिक मैथिली भाषाक बीज थिक। किन्तु एहि प्राकृतभाषाक स्वरुप केहन छल, तकरहु दृष्टान्त नहि भेटैत अछि। विदेहजनपदक मानुषी भाषा वा ओहि भाषासँ मिलैत-जुलैत भाषाक सबसँ प्राचीन लिखित साहित्य जे उपलब्ध होइत अछि, से थिक 'बुद्धवचन' एवं 'महावीर-वचन'। 'बुद्धवचन' सम्प्रति पालीभाषामे उपलब्ध अछि जे डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जीक मतानुसार मूलतः मगधजनपदक भाषामे लिखल गेल छल। ई भाषा विदेहजनपदक भाषासँ विशेष भिन्न नहि रहल होएत, कारण दुनू जनपद सन्निहित छल। कोशलजनपदहुक सएह स्थिति छलैक। बुद्धवचनहि जकाँ महावीक वचन सेहो विदेहजनपदक भाषामे सएह रचित भेल होएत, कारण महावीर विदेह छलाह। महावीरक वचनक भाषा अर्द्धमागधी कहबैत अछि आ भाषाविज्ञानवेत्ता मैथिलीक उत्पत्ति मगधीसँ मानैत छथि। मुदा एहि ऐतिहासिक तथ्यक अनुसार मैथिलीक प्राचीनतम स्वरुप महावीरक मूल-वचन अर्द्धमागधी सएह थिक।

मुदा मागधी, अर्द्धमागधी तथा पाली, जाहिमे धार्मिक ग्रन्थक रचना भेल, से कालक्रमे साहित्यक भाषा भए गेल ओ लोकभाषाक अन्तःसलिला धारा आगाँ बढ़ैत रहल। परंच विदेहजनपदीय भाषाक विकासक एहि क्रममे तकर वास्तविक स्वरुपकेँ स्पष्ट कएनिहार कोनहु लिखित साहित्य उपलब्ध नहि होइत अछि तँ आश्चर्य होइत अछि, कारण आन-आन जनपदीय भाषामे-मागधी एवं शौरसेनी, गौड़ी एवं महाराष्ट्री भाषामे अनेक ग्रन्थ उपलब्ध अछि। एहि अनुपलब्धिक कारण दुइएटा भए सकैछ-1. लिखबाक कठिनता। तेँ तहिआ अत्यावश्यक संस्कृतग्रन्थेटा लिखल जाइत छल,

लोकभाषाक साहित्य मैथिलीके रहैत छल, एवं 2. एहि भू-भागमे पैठ राजाक प्रभाव। उक्त विदेहमे कर्णाटवंशीय राजाक राजत्वकाल अन्तधरि [illegible] स्थापना भेल, से बहुतायत देशी भाषाक महत्त्व बढ़ाए आओर तकर लिखित साहित्यक क्रमिक विकास होइत गेलाह। पहिनें पुर्व एहि ठामक विद्वान्लोकनि अन्य देशीय राजाक ओहि ठाम आश्रय लेने छलाह ओ साहित्यिक रचना करैत छलाह। उदाहरणार्थ कालिदासक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। ई मैथिले छलाह, से प्रसिद्ध अछि। ई महाकवि उज्जैनक विक्रमादित्यक राज्याश्रयमे रहैत छलाह विक्रमोर्वशीयक प्रथम अध्ययने, हुनि-पूर्व प्रथम शताब्दीक [illegible] 450-500 वर्षक मध्याह। ई अपन नाटकमे जाहि प्राकृतभाषाक प्रयोग कयने छथि से हिनका मैथिली एवं हिनक प्राकृतकें समकालीन मिथिलाजनपदीय भाषा सिद्ध करैत अछि। 'विक्रमोर्वशीय' क लेखक चतुर्थांकक निम्नलिखित दोहा ओ तकर निम्नलिखित रूपान्तर द्रष्टव्य थिक

मूल- मइ जाणिअ मिअलोअणि णिसिअरु कोइ हरेइ
जाव ण णवतडिसामलि धाराहरु वरिसेइ।

मैथिली रूपान्तर- मोंहे जानिअ मृगलोचनी निशिचर कोइ हरेइ
जाव न नवतड़ितश्यामली धाराधर बरिसेइ।

उपर्युक्त उद्धरण मैथिली भाषाक सबसँ प्राचीन स्वरूप कहल जा सकैत अछि। तकरा पश्चात् 11म शताब्दीसँ लए 14म शताब्दी धरि मिथिलेतर प्रान्तमे रचित किछु एहन साहित्य उपलब्ध होइत अछि, जकरा मध्य मिथिलापभ्रंशक कतोक प्रवृत्तिक समावेश भेटैत अछि। एहिमे सबसँ पूर्व थिक कन्नौजक दामोदर पण्डितकृत "उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण", जकरा ओ गाहड़वाल राजकुमारकें देश-भाषा पढ़एबाक हेतु 12म शताब्दीमे रचल। एहि मध्य 'पढ़ब', 'लिखब', 'अभ्यासब', 'करत आछ', 'आछ', 'कर' ओ (नै, जै) सन्नान्तनिर्मित प्रयोग ठाम-ठाम भेटैत अछि। तहिप्रकारें 11म शताब्दीक रचना रोडाकविकृत 'राउल वेल' नामक शिलालेखकाव्य दिसि ध्यान आकृष्ट होइत अछि जे शिला-लेखक रूपमे मालवाक धार नामक स्थानसँ प्राप्त भेल। ई शिलालेख सम्प्रति बम्बइक प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियममे सुरक्षित अछि। एकरा सर्वप्रथम प्रकाशमे अनबाक श्रेय छनि डा. हरिवल्लभ भायाणीकें। एहि कृति मध्य टकियानी, गौड़ी, मालवीय प्रभृति छओ देशक नायिकाक नखशिखक वर्णन अछि ओ से तकर प्रान्तक भाषामे। गौड़ नायिका वर्णित अछि—"मोहें राउल वेल वखाणी, पुनु तहँ मनहर सारी ठाणी।" गौड़ीय नायिकाक वर्णनमे 'इल' प्रत्यय प्रयुक्त अछि जे अन्यत्र अछि मुश्किल कतहु नहि अछि। उदाहरणार्थ-

"[illegible] कापड़ ओढ़िअल अछले, मुह पानि-तोंबल समारल अइसे।"

एतय 'ओढ़ल' ओ 'समारल' स्पष्टतः मिथिलाभाषाक क्रियापद थिक। 'कहवों' ओ 'जइसे'क प्रचुर प्रयोग मैथिलीक प्राचीन साहित्यक भाषामे भेटैत अछि। एतदतिरिक्त 'खोपा' (खोपाहि), जनि (जनि), भूलहिं-बोलहिं, कतहु (कतहू), दीठि, देखि, भीत, जनु (जनु) आदि मैथिलीक अनेक शब्दावली प्रयुक्त अछि। छोट-छोट वाक्य-रचना मिथिलापभ्रंशक अनुकूल अछि ओ अन्यान्य व्याकरण-सम्बन्धी प्रवृत्तिमे सेहो समानता अछि।

दक्षिण चालुक्यवंशक द्वितीय महाराज सोमेश्वर भूलोकमल्ल (1127-37 ई.)क राज्याश्रयमे रचित 'मानसोल्लास-अभिलषितार्थचिन्तामणि' नामक संस्कृतग्रन्थक संगीत-विषयक खण्ड 'गीतविनोद'मे एकटा दशावतार-वर्णन-विषयक गीत उद्धृत अछि जाहिमे मिथिलाभाषाक स्पष्ट प्रयोग भेटैत अछि। उदाहरणार्थ-

कहु कहु मई जाइव गोविन्द सह खेलन......
नारायण जगत केर गोसाईं।

* * *

"जेणँ रसातल तलु मत्स्य रूपे वेद आणियलु.......
ते संसार-सागर-तारणु मइ तैं राखो नारायणु"

एहि प्रकारक अनेक कीर्ण-विकीर्ण दृष्टान्तक अतिरिक्त एहि दृष्टिएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अछि हेमचन्द्र-रचित 'प्राकृत-व्याकरण'मे उद्धृत कतोक अपभ्रंश दोहा। हेमचन्द्र अपभ्रंशक प्रकाण्ड विद्वान ओ जैनमतक प्रसिद्ध आचार्य छलाह ओ गुजरातमे सोलंकी सिद्धराज जयसिंह द्वारा संरक्षण पाबि ओतहि 'प्राकृत व्याकरण'क रचना 12म शताब्दीक मध्यकालमे कए लोकभाषाक रूपमे विकसित होइत अपभ्रंशकें वैयाकरणिक गरिमा प्रदान कएल।

'प्राकृत-व्याकरण'मे उद्धृत अनेक दोहामे मिथिलापभ्रंश अथवा प्राचीन मिथिलाभाषाक वैयाकरणिक अथवा अभिव्यक्तिमूलक प्रवृत्तिक स्पष्ट उदाहरण भेटि जाइत अछि। अतः एहि प्रकारक दोहाकें मैथिलीक अपभ्रंश-साहित्य मध्य परिगणित करब सर्वथा उचित थिक। हेमचन्द्र मैथिल नहि छलाह, परन्तु जैनधर्मक उद्भव ओ विकास विदेहमे भेल छल एवं जैनधर्मक आदि-ग्रन्थ अर्द्ध-मागधीमे रचित भेल छल। अतः अन्य देशीय जैन-विद्वानक लोकभाषामे हुनका लोकनिक अपन धर्मक भाषा, मिथिलाजनपदक भाषाक समाहार सर्वथा स्वाभाविक थिक। एहि मध्य उद्धृत अपभ्रंश दोहा समस्त हेमचन्द्रक रचना नहि थिक, ओ अपनासँ पूर्वक अनेक रचनाकें प्रमाणक हेतु उद्धृत कयने छल होएताह, जाहि मध्य कतोक अज्ञात मैथिली कविक सुप्रचलित रचना छल होएत। उदाहरणार्थ किछु दोहा प्रस्तुत अछि -

1. अंबणि अंम न मिलिउ हलि, अहरें अहक न पत्तु।
पिअ जोअन्तिहि मुह-कमलु एम्बइ सुरउ-समत्तु।।

2. लोणु विलिज्जइ पाणीएण, अरि खल मेह म गज्जु।
बालिउ गलइ सु झुम्पड़ा, गोरी तिम्मइ अज्जु।।

3. कहिँ ससहरु कहिँ मयरहरु कहिँ वरिहिणु कहिँ मेहु।
दूर ठिआहँ वि सज्जणहँ होइ असड्ढल नेहु।।

4. विप्पिअ आरउ जइ वि पिउ तो वि तं आणहि अज्जु।
अग्गिण दड्ढा जइवि घरु तो तें अग्गि कज्जु।।

उपर्युक्त उदाहरणमे प्रयुक्त 'हिं', 'एँ', 'हँ', प्रभृति विभक्ति-प्रत्यय ओहि रीतिक अछि जाहि रीतिक 'वर्णरत्नाकर' 'कीर्तिलता' अथवा प्राचीन पदावलीमे प्रचुरतया व्यवहृत अछि। 'जोअब' (जोअन्तिहि), 'नोन' (लोणु), 'बिलाएब' (विलिज्जइ) 'पानि' (पाणि), 'आनहि' (आणहि), 'गलए' (गलइ), 'मिलल' (मिलिउ), 'काज' (कज्जु), 'आगि' (अग्गि) प्रभृति सुप्रचलित मैथिली शब्दावली थिक। एहि प्रकारक 'प्राकृत-व्याकरण'मे अनेक अपभ्रंश-दोहा अछि, जकरा मैथिलीक अपभ्रंश-साहित्यक एकांत सम्पत्ति कहल जाए सकैत अछि। (विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक 'मैथिली-प्रकाश' मे प्रकाशित हमर प्रबन्ध "प्राकृत-व्याकरणक अपभ्रंश दोहामे मिथिलाभाषाक बीज।")

'प्राकृतव्याकरण'क पश्चात् मिथिलापभ्रंश साहित्यक अमूल्य निधिक रूपमे 'प्राकृतपैंगलम्'मे छन्दसम्बन्धिक उदाहरणक हेतु उद्धृत अनेक पद्यमाक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि ग्रन्थक सर्वाधिक प्राचीन टीका अछि रविकरक। रविकर हरिहरक बालक छलाह। (द्रष्टव्य Catalogus Catalogorum-पृष्ठ संख्या 493) 'कीर्तिलता'क तृतीय पल्लवसँ ज्ञात होइत अछि जे हरिहर कीर्तिसिंहक धर्माधिकारी छलाह। प्रायः 'प्राकृतपैंगलम्'क हरिब्रह्म (1.108 ओ 1.116) हरिहरे छलाह जे 1360-90 ई. मध्य अपन रचना एहि ग्रन्थमे मिलाए देने होथि। रविकर अपन टीकामे पूर्वरचित एक अन्य टीकाक उल्लेख कएने छथि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे 'प्राकृतपैंगलम्'क संकलन हुनकासँ बहुत पूर्वे भए चुकल छल एवं ओ एहन ग्रन्थक रूपमे मान्य छल जे ओकर टीका करब विद्वानक कार्य बुझल जाइत छल। परन्तु एहि मध्य हम्मीरक समकालीन शार्ङ्गधरक 'हम्मीररासो'सँ अनेक छन्द उद्धृत अछि। 'हम्मीररासो'मे हम्मीर ओ अलाउद्दीनक युद्धक वर्णन अछि। ई युद्ध 1303 ई.मे समाप्त भेल। तैं 'प्राकृतपैंगलम्'क रचना तकर पश्चात् 1310 ई.क समयकालमे भेल छल हो, से सम्भव। परन्तु एहि मध्य उद्धृत रचना तादृशी पूर्वक 100-200 वर्ष धरि

पूर्वक हो, तैं कोनो आश्चर्य नहि, कारण प्रमाणक हेतु उद्धृत रचनाक प्राचीनता स्वयंसिद्ध विषय थिक।

'प्राकृतपैंगलम्'क अनेक रचना की भाषाविज्ञान ओ व्याकरणक दृष्टिएँ आ' की ऐतिहासिक साक्ष्यक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक अमूल्य सम्पत्ति थिक। कतोक छन्द तँ मूल-रूपहिमे अविकल मैथिलीक लगैत अछि। उदाहरणार्थ-

सो हर तोहर। संकट संहर।। (2.24)

पवण वह सरिर दह। मअण हण तवइ मण।। (2.40) आ' किछुकेँ कनिएँ वर्णपरिवर्तन कए देलासँ ओ मैथिली भए जाइत अछि-

फुल्लिअ महु भमर बहु रअणि पहु
किरण लहु अवतरु वसंत।
मलयगिरि कुहर धरि पवन वह
सहब कत सुण सहि णिअल णहि कंत।
फुलिअ महु भमर बहु रजनि पहु
किरण लघु अवतरु वसंत।
मलयगिरि कुहर धरि पवन वह
सहब कत सुनु सखि निअर नहि कंत।।

एहिना ऐतिहासिक दृष्टिएँ हरिब्रह्म द्वारा मिथिलाक सुप्रसिद्ध 'सप्तरत्नाकर'कार म. म. चण्डेश्वरठाकुरक वन्दना स्पष्टतः एकरा मिथिलापभ्रंशक कविता सिद्ध करैत अछि-

पिअ पाअ पणाए दिट्ठ पुणु णिहुअ हसइ जह तरुणिगण।
वरमंति चंडेसर कित्ति तुअ तत्थ देखि हरिबंभ भण।।

आ' कोनो अज्ञात कविक द्वारा हुनक पिता वीरेश्वरठाकुरक प्रशंसामे रचित निम्नलिखित रचना एहि तथ्यकेँ पुष्ट करैत अछि-

सुरअरु सुरही परसमणि णहि वीरेस समाण।
ओ वक्कल ओ कठिन तणु ओ पसु ओ पासाण।।

'प्राकृतपैंगलम्'क कतोक कवितामे मिथिलाक जीवन-रीति, व्यक्तित्व ओ

भावधाराक बड़ यथार्थ चित्रण भेल अछि ओ ताहूसँ एहन रचनाक मैथिलत्व सिद्ध भए जाइत अछि। उदाहरणार्थ-

ओगरभत्ता रंभअ पत्ता गाइक घित्ता दुद्धसजुत्ता।
मोइणिमच्छा णालिचगच्छा दिज्जइ कंता खा पुणवंता।।

अर्थात् केराक पातमे दूधसँ युक्त ओगरक भात तथा गाइक घृत, मोदिनीमाछ ओ णालिचगाछ (पटुआ क साग प्रियाक द्वारा देल जाइत अछि ओ पुण्यवान द्वारा खाएल जाइत अछि।

एहि ठाम मिथिलाक विशिष्ट भोज्यसामग्रीक वर्णन भेल अछि। मोइणिमच्छा भेल भुन्ना माछ ओ णालिचगच्छा भेल पटुआसाग। ओगरक प्रसंग 'वर्णरत्नाकर'मे लिखल अछि "कर्पूरमंजरी, खिरोदक, लोकरी प्रभृति ओगर"। तात्पर्य भेल सुगन्धित प्रकारक मेही धानक चाउर। गाइक घृत ओ दूध प्रसिद्ध अछिए तथा केरापात पर भोजन करब एखन आइओ प्रशस्त अछि। कविताक अन्तिम चरणसँ मिथिलाक दाम्पत्य-जीवनक रसिकता ओ माधुर्य अभिव्यक्त होइत अछि।

उपर्युक्त कवितासभमे प्रयुक्त विभक्ति-प्रत्यय, क्रिया-संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय आदि एकरा स्पष्ट रुपसँ मिथिलाभाषाक रचना सिद्ध करैत अछि, कारण, ओसब ओहिना ओही रीतिएँ ओही प्रकारक भाषागत संघटनासँ युक्त भए 'वर्णरत्नाकर', 'विद्यापति-पदावली' एवं अन्यान्य मध्यकालीन रचनासबमे प्रयुक्त भेल भेटैत अछि। फलतः ई रचनासब मैथिली साहित्यक अभिन्न अंग थिक।

मिथिलाक्षेत्रमे चर्यापदकेँ छाड़ि 'वर्णरत्नाकर'-पूर्वक कोनो निविष्ट मिथिलापभ्रंशसाहित्य उपलब्ध नहि होइत अछि। परन्तु मौखिक रुपमे मिथिलाभाषाक विकासक यत्र-तत्र आभास भेटैत अछि। खिष्टाब्दक आरम्भ होइत-होइत अपभ्रंश रुपमे मिथिलाभाषाक व्यक्तित्व स्पष्ट भए चुकल छल एवं जे लोक-भाषाक रुपमे अनवरत विकासोन्मुख छल। पाछाँ एहन लोकभाषाक शब्दसब मिथिलाक संस्कृतविद्वान द्वारा संस्कृतटीकासबहिमे स्पष्टता-सम्पादनक हेतु प्रयुक्त भेल। 9म शताब्दीमे वाचस्पतिमिश्र अपन 'भामती' मध्य 'हड़ि' (हरी) शब्दक प्रयोग कएल। 11म शताब्दीमे शर्वानन्द अपन अमरकोशक टीका मध्य 300-400 शब्द मिथिलाभाषाक प्रयुक्त कएल। पश्चात् 14म-15म शताब्दीमे मिथिलाभाषाक शब्दक प्रयोग करब संस्कृतटीकाक अनिवार्य विशेषता भए गेल एवं चण्डेश्वरठाकुर, रुचिपतिठाकुर, जगद्धर, वाचस्पति, विद्यापति प्रभृतिक टीकासबहि मध्य स्पष्टता-सम्पादनक हेतु अनेक मैथिली शब्दक प्रयोग भेटैत अछि।

लोकभाषा-साहित्यक रुपमे विरहा, चाँचड़ि, लोरिक, नगनी, चउपाइ प्रभृतिक चर्चा 'वर्णरत्नाकर'मे भेल अछि, परन्तु एकर लेखबद्ध प्राचीन रुप प्राप्त नहि होइत अछि। परन्तु एहि कोटिक ग्रामीण जीवनसँ संबद्ध यात्रा, कृषि, शकुन प्रभृति ज्योतिषविषयक डाकक वचन अछि जे अधिकांश तँ लोकजिह्वामे युगान्तरसँ चल अबैत अपन भाषागत रुप बदलैत रहल, मुदा अनेक तीन-चारि सए वर्ष पुरान हस्तलेख-ग्रन्थसबहि मध्य प्रमाणत्वेन उद्धृत भेल तत्कालीन मिथिलापभ्रंशक अध्ययनक यत्किंचित् मार्ग प्रशस्त करैत अछि। 13म-14म शताब्दीमे प्रमाणक हेतु उद्धृत होएबाक कारणे ई तथ्य सहजहिँ स्थापित होइत अछि जे ओ वचनसब ताहिसँ बहुत पूर्वक रचना थिक। डाकक वचन समग्र उत्तर भारतमे प्रचलित अछि ओ से विभिन्न भाषामे। डाक के छलाह ओ कहिआ अवतीर्ण भेलाह, ताहिमे मतभेद अछि, परन्तु दन्तकथा अछि जे ओ वाराहमिहिरक वीर्यसँ एक अहीरक क्षेत्रमे उत्पन्न भेल छलाह। एहि दन्तकथाक आधार पर डाकक समय छठम शताब्दी निर्धारित होइत अछि। (विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक पण्डित श्रीजीवानन्दठाकुरक 'मैथिलीडाक') प्राचीन हस्तलेखग्रन्थसबहिमे उद्धृत वचनक भाषागत स्वरुपहुसँ ओकर प्राचीनता सिद्ध होइत अछि यद्यपि ओ रचनाकारक मूल-पाठ थिक अथवा नहि, से निश्चयपूर्वक नहि कहल जाए सकैत अछि। उदाहरण द्रष्टव्य थिकः-

1. मेष मीन तिअ दण्डा दीस, ता उप्परि दिअ पल अठतीस।
वृष कुम्भा चौदण्डा मान, पल एगारह भृगु तिस मान।।
\+ + +
तिक्खा कर्णा वाउता मुंजय देवहा तीस।
ताडे ओढ़े भूमि सुअ मास अठारह सीस।।
जत्ते देवहा चन्दगउ तत्ते शनि रवि सा।
बारहमान बेहपफय इत्थि गुनि वृतु का।।
(हरिपतिक 'व्यवहारदीपक'क 'राशिस्वभाव-विचार' सँ)

2. स्वाती दीआ जँ बरए विसाखा खेलए गाय।
अवसओ नरवर जुज्झए अन्न महग्घा जाय।।
(म. शुभंकरठाकुरक 'तिथि-द्वैध-निर्णय' सँ)

डाक-वचनक अतिरिक्त म. म. चण्डेश्वरठाकुर अपन ग्रन्थ-रत्न 'कृत्यचिन्तामणि'मे अद्यावधि अनुपलब्ध क्षपणकजातक, कापालिकजातक प्रभृति ग्रन्थसँ मिथिलापभ्रंशक किछु वचन प्रमाणत्वेन उद्धृत कएने छथि, जाहिसँ मिथिलाभाषामे साहित्यिक रचनाक परम्परा सेहो प्रमाणित होइत अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक-

1. अस्मिन रवि सोमह चिती, पूवाषाढ़ महीसुत जुत्ती।
   होइ जइछह सरना मंगो, सवाती होइ बेहप्पइ अंगो।।

(क्षपणक जातक)

2. स (?) ज्ञे अंगा अंगाचार, दशक मूल न हय विचार।
   जे से चन्दा से हेम, सेहे जान शुभाशुभ सेम।।
   एगुण वेगुण जाइ, एहा अन्त अरि कअगन पाइ।
   सगुण वेगुण तेगुण करिआँ, जनह जीवन मरण करिआँ।।

(कापालिक जातक)

उपर्युक्त उद्धरणक संग 'चर्यापद', 'वर्णरत्नाकर' एवं 'कीर्तिलता' तथा कीर्तिपताका'क भाषाक तुलनासँ मिथिलाभाषाक तत्कालीन स्वरुप नीक जकाँ स्पष्ट भए जाइत अछि।

एहि प्रकार विवेचित तथ्यक आधार पर ई विश्वासपूर्वक कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीभाषाक साहित्यिक स्वरुप ईश्वी शताब्दीक आरम्भहिसँ स्पष्ट होअए लागल छल। 8म शताब्दीमे अवैत-अवैत मैथिली लोकसाहित्यक संग-संग मैथिलीक लिखित साहित्यक परम्परा अपभ्रंश-साहित्यक रुपमे स्थापित भए गेल आ' ओहिसँ आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक विकास आरम्भ भेल। 'कृत्यचिन्तामणि'सँ उद्धृत अवहट्ठ एवं डाकवचनक भाषा मिथिलाजनपदक भाषा अवश्य छल। जँ से नहि रहितए तँ पण्डितलोकनि स्पष्टताक हेतु तकरा उद्धृत नहि कएने रहितथि। किन्तु अवहट्ठहुसँ आगाँ लोकभाषाक विकास भए रहल छल ओ जनसमूहमे सूक्ष्मभेदापन्न दुहू भाषाक समान रुपेँ प्रयोग होइत छल। तेँ विद्यापति 'कीर्तिलता'क भाषाकेँ 'देशी बोली' कहल आ' जाहि मैथिली भाषामे पदावलीक रचना कएल अछि ताहिमे मैथिली अवहट्ठभाषाक प्रबल प्रभाव अछि। 'वर्णरत्नाकर'क भाषा 'विद्यापतिपदावली' एवं 'चर्यापद'क मध्यक भाषा थिक।

विद्यापतिक पूर्वक जे साहित्य अछि ताहिमे 'प्राकृतव्याकरण'क अनेक दोहा, 'प्राकृतपैंगलम्'क अनेक छन्द, 'चर्यापद' एवं 'वर्णरत्नाकर'क विशेष महत्व अछि। 'चर्यापद' आ' 'वर्णरत्नाकर' मिथिलाक्षरमे लिखित प्राप्त भेल अछि आओर सामाजिक, ऐतिहासिक एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ ई मैथिली साहित्यक विशिष्ट वस्तु थिक। तेँ एहि दुनू साहित्यक सविस्तर चर्चा करब आवश्यक अछि।

चर्यापद

म.म. हरप्रसादशात्री 1916 ईमे सिद्धसाहित्यक अन्वेषण नेपाल मध्य कएल एवं तकरा बंगलाभाषाक प्राचीनतम साहित्य मानि 'बौद्धगान ओ दोहा'क नामसँ प्रकाशित कएल। तहिआसँ ई प्राचीन बंगला, आसामी, उड़िया ओ हिन्दी भाषाक दृष्टान्तक रुपमे तत्तत् भाषासाहित्यक विद्वानलोकनिक द्वारा मान्य होअए लागल। मुदा वास्तविक तथ्य ई जे ई मैथिली भाषाक प्राचीन रुप तथा मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य थिक।

'बौद्धगान ओ दोहा'मे वस्तुतः बौद्धसिद्धलोकनिक तीन प्रकारक रचनाक संकलन भेल अछि-(1) चर्याचर्यविनिश्चय। इएह 'चर्यापद'क नामसँ ख्यात अछि, (2) दोहाकोश एवं (3) डाकार्णव। एहि मध्य 'दोहा-कोश' निस्सन्देह अपभ्रंशभाषामे अछि, किन्तु 'चर्याचर्यविनिश्चय' तथा 'डाकार्णव' निश्चयपूर्वक मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य थिक। एहि तथ्यकेँ भाषा-वैज्ञानिक एवं अन्य दृष्टिएँ विचार करैत महापंडित राहुलसांस्कृतायन, डा. के. पी. जायसवाल, म. म. डा. उमेशमिश्र, डा. सुभद्र झा, स्व. शिवनन्दन ठाकुर, प्रो. रमानाथ झा, डा. जयकान्त मिश्र सन-सन मूर्द्धण्य विद्वान एकमत भए सिद्ध कए चुकल छथि। तेँ एहि प्रसंग विशेष व्याख्याक आवश्यकता प्रतीत नहि होइत अछि। तथापि संक्षेपमे मुख्य-मुख्य तथ्यक उल्लेख कएल जाइत अछि:-(1) एहि साहित्यक रचयिता अधिकांश सिद्धलोकनि विदेह अथवा विदेहक सन्निकट प्रान्तक वासी छलाह। 'वर्णरत्नाकर'मे जाहि विस्तारक संग एहि सिद्धलोकनिक चर्चा भेल अछि, से एहि तथ्यकेँ पुष्ट करैत अछि। ग्रुनवेडेल, कार्डियर, म. म.शास्त्री, राहुल सांस्कृतायन आदि अग्रगण्य विद्वान एहि विषयकेँ स्वीकार करैत छथि। (2) दोहाकोश अपभ्रंशमे होइतहुँ तकर भाषाक संग 'कीर्तिलता', 'कीर्त्तिपताका, 'वर्णरत्नाकर' एवं 'विशुद्ध विद्यापतिपदावली'क भाषाक बड़ समानता छैक, यथा-तृतीयाविभक्तिक रुपमे 'एँ', चन्द्रबिन्दु (ँ), सम्बन्ध-सूचक विभक्ति 'क', सप्तमी विभक्तिक रुपमे 'हि' 'तथा' 'ए', सर्वनामक रुपमे 'मयिँ', 'जे', 'एहु', 'तसु', 'अप्पन', क्रियाविशेषणक रुपमे 'जहि' 'तहि', 'तेहिखन' प्रभृतिक एवं उघाड़िय, वेढ़, वड़िल, भित्त-घरहिँ वइसो अग्नि हुण्न्तं (घरही वइसी दीवा जाली), पढिज्जइ सावि गुणिज्जइ (पढब-गुनब), चउदह, पाँक, पाक्खर, घरिणि आदि ठेठ मैथिली भाषाक शब्दावली तथा लोकोक्तिक प्रयोग। (3) ध्वनिविचारहुक दृष्टिएँ 'चर्यापद'क भाषाकेँ मैथिलीभाषाक संग अद्भुत समानता छैक। उदाहरणक दृष्टिएँ अनुनासिक ध्वनिक सर्वत्र स्थिति तथा दन्त्य उष्मवर्ण 'स'क आधिक्य एहि तथ्यकेँ पुष्ट करैत अछि। (4) शब्दरुपक दृष्टिएँ सेहो मैथिलीभाषाक संग एकर घनिष्ठ सादृश्य छैक, यथा, (क) संज्ञाक रुप-तृतीयामे 'एँ' परसर्गक प्रयोग मैथिलीक अपन विशेपता थिक। तहिना

सम्बन्धकारक विभक्ति 'क'क प्रयोग मैथिलीमे सबसँ अधिक होइत छैक, किन्तु बंगलामे अपवादिक रुपमे। 'एर', 'अर' 'केरि' प्राचीन मैथिलीमे प्रयुक्त होइत छल जाहिमे 'कर' आ 'करि' आइओ प्रयुक्त होइत अछि। एकर अतिरिक्त कारकान्तमे चन्द्रबिन्दुक प्रयोग तथा तृतीया विभक्तिक रुपमे 'तँ'क प्रयोग (यथा 'सुखदुखतेँ') मैथिली-भाषाक प्राचीन प्रयोग थिक। एहि प्रकारक प्रयोग 'वर्णरत्नाकर'मे सेहो भेल अछि। (द्रष्टव्य थिक 'वर्णरत्नाकर'क पृ. 24) (ख) सर्वनाम-'चर्यापद'मे 'मो-हाउँ', 'स्वयं-अपने', 'मों', 'तो' 'तोहे', 'तोहर', 'तोरा', 'से', 'काहि', 'ए', 'एहु' प्रयोग पर्याप्त भेटैत अछि जे 'कीर्तिलता', 'वर्णरत्नाकर', 'विशुद्ध-विद्यापतिपदावली' प्रभृतिमे प्रयुक्त भेल अछि। (ग) क्रिया-'चर्यापद'मे अछ आ 'थाक'क प्रयोग अछि जे ओही रुपमे मैथिलीभाषाक प्राचीन रचनासभमे भेटैत अछि एवं जकर आधुनिक रुप अछि 'अछि' ओ 'थिक'। एही प्रकारेँ क्रियाक आनहु भेदमे समानता अछि, यथा-'छाड़िअ'-'करिअ'क 'छअ'क तथा 'केलहु'-'छलहु'क 'अहु' प्रभृतिक प्रयोग (घ) लिंग-स्त्रीलिंग संज्ञाक संग स्त्रीलिंग क्रिया तथा स्त्रीलिंग विशेषण प्राचीन मैथिलीमे प्रयुक्त होइत छल, तहिना 'चर्यापद'हुमे अछि। (ङ) क्रियाविशेषण-'अइसन', 'जइसन'क प्रयोग 'चर्यागीत'मे अछि। एही रुपमे ई 'वर्णरत्नाकर' एवं विद्यापतिपदावली'मे पर्याप्त भेटैत अछि। (च) लोकोक्ति-'चर्यापदक'मे प्रयुक्त लोकोक्ति आधुनिक मैथिली भाषामे खूब प्रचलित अछि, यथा-'बाढ़ बिआएल काग रहल बाँझ', 'हाक पाड़इ', 'जे जे आएल तेते गेला', 'टुटि गेल कन्था', 'पतिल विआव', 'छान्दक बान्ध' (छान्ह बान्ह) आदि। (छ) शब्दावली-'चर्यापद'क अगणित शब्द आइधरि मैथिलीमे प्रयुक्त भए रहल अछि, यथा- 'आजि' (आइ) 'तेतलि' (तेतरि), 'सासु', 'उपाडि', 'भात', 'आवेश', 'एतकाल', 'बाटी', 'भणइ (भनइ) 'जउतके' आदि। (5) मिथिलामे धारक आधिक्य अछि तेँ ई तीरभुक्तिक नामसँ सेहो प्रसिद्ध रहल अछि। एही कारणे एहिठाम पशुपालनक सुविधा छलैक। अत: एहि ठाम ग्वालालोकनिक जनसंख्या सेहो अधिक अछि। 'चर्यापद'मे ग्वालालोकनिक जीवनसँ सम्बद्ध वस्तु ओ चित्रक वर्णनसँ मिथिला- क्षेत्रक तात्कालिक सामाजिक विशेषता स्पष्ट होइत अछि। (6) 'चर्यापद'मे जेहन सांस्कृतिक विशेषताक उल्लेख अछि से विदेहजनपदीय थिक। उदाहरणार्थ :

> सिद्धिरस्तु मइ पढमे पढिअउ
> मइ पिबन्ती बिसरअ एमइउ तथा कुक्कुरीपादक
> दिवसइ बहुड़ी कागडरें भाअ
> राति भइले कामर जाअ

आदि दृष्टान्त देल जा सकैत अछि, कारण, मिथिलामे अक्षरारम्भ आइओ 'सिद्धिरस्तु'सँ होइत अछि, तहिना मिथिलामे आबहु विश्वास छैक जे मौँह पीलासँ के अधिक बल होइत छैक। एही प्रकारेँ मिथिलामे कहबी छैक 'दिनकेँ धनी कागेँ

डेराथि, राति भेलेँ धनी कामरु जाथि'। एहिना 'चर्यापद'मे मिथिलाक अनेक सांस्कृतिक चित्र भेटैत अछि। (7) सिद्धलोकनिमे अनेक निम्नवर्गक लोक छलाह जे अपन सिद्धान्तकेँ 'चर्यापद'मे वाणी दए जनसामान्यमे तकरा प्रचार करबाक चेष्टा कएल। किन्तु मिथिलाक उच्चवर्गमे तन्त्रोपासनाक सएह प्रबलता छल। सिद्धलोकनिक सिद्धान्तसँ जेना तन्त्रोपासना प्रभावित भेल तहिना तन्त्रोपासनासँ सिद्धलोकनि सेहो प्रभावित भेलाह। एकर पर्याप्त दृष्टांत 'बौद्धगान'मे भेटैत अछि। एहिसँ इहो सिद्ध होइत अछि जे सिद्धलोकनिक मिथिलाक संग अभिन्न सम्बन्ध छल।

मूल-प्रतिसँ उतारि सिद्धसाहित्यक सम्पादन करबाक कार्य मुख्यत: बंगलाभाषाक विद्वान सएह कएल अछि जे तिरहुतालिपि पढ़बामे ओतेक पटु नहि होइत छथि जतेक मैथिल विद्वान। बंगला ओ तिरहुतामे निहित बड़ किंचित् वैषम्यक कारणे ओलोकनि प्रतिलिपिमे भ्रम कए सकैत छथि। तेँ एकर सर्वांगीण अध्ययन तखनहिँ सम्भव होएत जखन ई कार्य कोनहु तिरहुतालिपिमे निष्णात मैथिल विद्वान द्वारा सम्पादित हो। ई अभाव बड़ खटकैत अछि। डा. श्री जयधारीसिंह अपन शोधप्रबन्ध 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त'मे 'चर्यापद'क मूलक संग ओकर मैथिली छाया सेहो देने छथि। एहिसँ ओहि अभावक आंशिके पूर्त्ति होइत अछि।

'चर्यापद'क रचयिता छथि भारतक मध्यकालीन इतिहासक 84 सिद्धलोकनिमे 23 सिद्धगण। एहि सिद्धगणमे लुइपाद सबसँ पहिल सिद्ध कहल जाइत छथि, किन्तु राहुल सांस्कृत्यायन अपन 'पुरातत्वनिबन्धावली'मे सरहकेँ सबसँ प्राचीन ओ प्रमुख सिद्ध मानैत छथि। एहि सिद्धलोकनिक आविर्भाव पालवंशी राजालोकनिक समय (750-1150)मे भेल। नीचाँ प्रमुख-प्रमुख सिद्धलोकनिक परिचय देल जाइत अछि-

(1) सरह - राहुलभद्र, महाशवरसरह, आचार्य महासेनी सरह एवं सरोरुह वज्रहुक नामसँ ख्यात ई प्राच्यदेशक ब्राहमण-परिवारमे उत्पन्न एक बालिकाक संग रहैत छलाह जे हिनका हेतु शर बनबैन्हि, तेँ हिनक नाम शरह पड़ल। नालन्दा विश्वविद्यालयमे ई शिक्षा प्राप्त कएल। हिनक सोलह गोट भाषा-साहित्यक कृतिक तिब्बती भाषामे अनुवाद कहल जाइत अछि। ई धर्मपालक समय (770-809) मे अवतीर्ण भेल छलाह। (2) शबर - सरहक प्रमुख शिष्य ई शवरलोकनिक संग श्रीपर्वत पर समयापन कएल, तेँ शबर हिनक नाम पड़ल। हिनक छओ गोट भाषाक कृतिक अनुवाद तिब्बती भाषामे सुरक्षित अछि। (3) लुइ- ई सबसँ पैघ सिद्धक रुपमे ख्यात छथि। ई धर्मपाल (770-809) नरेशक कायस्थ दिवानजी छलाह। परम्परासँ प्रसिद्ध अछि जे ई बंगालक मयूरभंज प्रान्तक वारेन्द्र नामक गामक रहथि। हिनक पाँचगोट कृतिक तिब्बती भाषामे अनुवाद उपलब्ध अछि। (4) कान्हा - कृष्णपाद, कृष्णाचार्य, कृष्णवज्र नामे सेहो प्रख्यात छथि। जातिक कार्णाट ब्राहमण ई सबसँ पैघ विद्वान सिद्धक

रुपमे प्रसिद्ध छथि। 'चर्यापद'मे सबसँ बेशी हिनके पद उपलब्ध अछि। (5) भुसुक - नालन्दा विश्वविद्यालयक सबसँ प्रसिद्ध व्यक्ति छलाह। सौराष्ट्रमे हिनक जन्म भेल। कतोक व्यक्ति हिनका एवं शान्तिपादकेँ एके सिद्ध मानैत छथि। किन्तु वसु ओ शहीदुल्ला दुनूकेँ भिन्न-भिन्न सिद्ध मानैत छथि। (6) शान्तिपाद - क्षत्रिय राजकुमार ई पाछाँ मंजुलवज्रक शिष्य भेलाह एवं मगधक सेनापतिक रुपमे सेहो किछु दिन कार्य कएल। जीवनक अन्तिम कालमे नालन्दामे वास कएल, जतए अपन शान्तिपूर्ण स्वभावक कारणे एहि नामसँ प्रसिद्ध भेलाह। राहुलजीक अनुसार इएह विक्रमशिला विद्यालयमे पूर्वीय प्रवेशद्वारक अध्यक्ष रत्नाकरशान्तिभिक्षुक छलाह। यदि ई सत्य तँ ई सोमपुरी बिहारक अध्यक्ष सेहो छलाह जे मालव ओ सिंहल द्वीपक यात्रा महीपालक राज्यकाल (974-1026)मे कएल। शतायु भए ई नओ दार्शनिक, 23 तान्त्रिक एवं एक छन्दःशास्त्रक ग्रन्थक रचयिता सेहो कहल जाइत छथि।

एकर अतिरिक्त अन्य सिद्धलोकनिक परिचय हुनकालोकनिक पदहिसँ प्राप्त होइत अछि जे बौद्धगानमे संकलित अछि, जाहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ई सिद्धलोकनि समाजक सब स्तरक लोक छलाह-उच्च कुलसँ लए निम्नकुल-जाति धरिक, तेँ समाजमे बड़ लोकप्रिय ओ चर्चाक विषय छलाह। हिनक पदक भाषा लोकभाषा अछि ओ एहिसँ सिद्ध अछि जे हिनक सन्देशसँ लोकजीवन बड़ प्रभावित भेल छल। हिनक रचनाक उद्देश्यो सफल छल।

कोनहु साहित्यसँ तत्कालीन, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितिक परिचय भेटैत अछि। 'चर्यापद'हुसँ से भेटैत अछि। एहि प्रसंग किछु उपरहु उल्लेख कएल गेल अछि। एतदतिरिक्त ओहि समय खेती-गृहस्थीक विशेष महत्व छल। परिवारक संग आनन्द अनुभव कएल जाइत छल। विवाहादिक महत्व ओ व्यवहार ओहने छल जेहन आइ अछि। जीवन सुखमय छल। पशुपालनक सुव्यवस्था छल आदि।

वस्तुतः बौद्धगान दार्शनिक ओ धार्मिक साहित्य थिक। तेँ एहिमे सिद्ध लोकनिक मुख्य उद्देश्य अछि धार्मिक साधनाक रुपरेखा प्रस्तुत करब। फलतः प्रत्येक गीतमे दार्शनिक रहस्य प्रस्तुत कएल गेल अछि। सिद्धलोकनिकेँ एकर प्रचार जनसामान्यमे करब छलनि तेँ अनुभूतिकेँ साक्षात्कार करएबाक हेतु ओलोकनि अपन पदसभमे दार्शनिक सिद्धान्तक वर्णन पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतीकक रुपमे कएल अछि। अतः एकर भाषा-शैली प्रतीक-पद्धति पर आधारित अछि तथा संगीतक आश्रयण ओ अभिव्यक्तिमे साहित्यिकताक सम्पादन कए ओहिमे सरसताक समन्वय कएल गेल अछि, जाहिसँ ओ जन सामान्यमे अधिकाधिक प्रचलित भए सकए। अनुत्तर-तत्व, बोधिचित्त, शून्यता, करुणा, सामरस्य, महासुख आदिक स्वरुप केहन अछि तथा कोना सिद्धि प्राप्त होइत अछि, इएह 'चर्यागीत'क दार्शनिक सिद्धान्तक स्वरुप

थिक।

'चर्यापद'क कवित्व दुनू दृष्टिएँ विचारणीय थिक-कलापक्ष एवं भावपक्षक दृष्टिएँ। एकर कलापक्षक मूलाधार प्रतीक-पद्धति अछि तेँ लाक्षणिकताक स्वर सर्वत्र मुखर अछि। उदाहरणार्थ ढणढणक 'हाड़ीत भात नहि नित आवेशी-अड़ियामे भात नहि नित्य आवेश राखए पड़ैत छैक। एहि ठाम 'हाड़ी'सँ शरीर एवं भातसँ परिपक्व चित्तक अर्थ अछि जे लाक्षणिक प्रतीक पर आधारित अछि। तहिना अलंकार सेहो डेग-डेग पर भेटैत अछि, यथा-

रुपक- मण तरु पांच अन्दि तसु साहा।
आसा वहल फल बाहा।। (कान्हपाद)
भ्रान्तिमान- राजा साप देखि जो चमकहि
साँचे कि ताके बोड़े खाए। (भुसुकपाद)

एहन कतेको दृष्टान्त देल जाए सकैत अछि।

संगीतक आश्रयण जे विद्यापति कएल, तकर परम्परा 'चर्यापद'हिसँ चल अबैत छल। 'चर्यापद'क प्रत्येक रचनामे शीर्षस्थ राग-रागिणीक उल्लेख एहि तथ्यकेँ सिद्ध करैत अछि। एहिमे 24 प्रकारक रागरागिणीक प्रयोग भेल अछि, ताहिसँ इहो सिद्ध होइत अछि जे ओहि समय मिथिलामे संगीत जनसामान्यमे प्रचलित छल तथा मनोरंजनक विशेष साधन छल।

भावपक्षक दृष्टिएँ 'चर्यापद'मे रसध्वनि ओ भावध्वनि भेटैत अछि आओर ताहूमे विशेषतः शृंगाररस एवं रतिभावध्वनि। कहए नहि पड़त जे एकर उद्देश्य दार्शनिक अछि, कारण, एहिसँ चितनैरात्मक भावुकताकेँ प्रकट कएल गेल अछि। भुसुकपादक हरिण-हरिणीक प्रेमालापक वर्णन, कान्हपादक 'सुतेलि', 'छिनारि', 'विवाहे' ओ 'सुरअ-पसंगे', कुक्कुरीपादक 'बहुडी' ओ 'भतेरि' आदि शब्दसँ रतिभाव व्यक्त होइत अछि। तहिना शबरपादक रचित पदमे शृंगारिकता स्पष्ट अछि जे सिद्धलोकनिक रहस्यवादी भावनाक सरस अभिव्यक्ति थिक।

उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे सब तरहेँ मैथिली भाषाक प्रारंभिक स्वरुपक अन्यतम निदर्शनक दृष्टिएँ, तत्कालीन परिस्थितिक दर्पणक दृष्टिएँ अथवा साहित्यिक उत्कर्ष वा परम्पराक दृष्टिएँ 'चर्यागीत'क स्थान मैथिली साहित्यक इतिहासमे बड़ महत्वपूर्ण अछि।

वर्णरत्नाकर

'वर्णरत्नाकर' [illegible] साहित्यक [illegible] ग्रन्थ [illegible]। [illegible] 1895-1900 ई. [illegible] 'वर्णरत्नाकर'क [illegible] 1940 ई. मे [illegible] अछि।

'वर्णरत्नाकर'क [illegible] ज्योतिरीश्वर ठाकुर। हिनक [illegible] (1) 'धूर्तसमागम' [illegible] (2) [illegible] ज्योतिरीश्वर [illegible] 'धूर्त-समागम'क [illegible] अछि।

[illegible] ज्योतिरीश्वर [illegible] प्राचीन [illegible] ज्योतिरीश्वर [illegible]।

हिनक समयक निर्धारण [illegible] हिनक [illegible] कन्याक विवाह [illegible] आधार पर [illegible] अछि। [illegible] ज्योतिरीश्वर [illegible] समकालीन [illegible] ज्योतिरीश्वर [illegible] हरिसिंहदेवक [illegible] पुष्ट [illegible]।

'धूर्तसमागम'क प्रस्तावनामे हरिसिंहदेवक उल्लेख अछि, किन्तु 'पञ्चसायक' ओ 'वर्णरत्नाकर'मे नहि अछि। [illegible] अनिरुद्धभुज-प्रतापवती [illegible] अछि। [illegible] हरिसिंहदेवक जन्म भेल 1216 शाके (1294 ई.) मे ओ मिथिलासँ पलायन कयलनि 1245 शाके (1323 ई.) मे तथा [illegible] 1326 ई. मे। फिरोजतुगलकक [illegible] 1353 ई. मे। [illegible] 1323 ई. सँ 13[illegible] ई. [illegible] 'वर्णरत्नाकर'क। एही तर्कक आधार पर हिनक जन्म 1288 ई.क [illegible] 'वर्णरत्नाकर'क रचनाकाल 1340 ई.क [illegible] जा सकैत अछि।

[illegible] हस्तलेख पोथी मे 79 [illegible] अछि। [illegible] उत्तम-उत्तम [illegible] ज्योतिष [illegible] अछि। द्वितीय कल्लोलमे नायक वर्णित अछि। [illegible] तृतीय कल्लोलमे आस्थानवर्णना (राजसभाक वर्णन) अछि। [illegible] वर्णन [illegible] अछि।

राजवर्णनकार, अश्वयुद्ध, ध्वजस्तम्भक वर्णनक संग-संग राजाक क्रियाकलापमे सम्बद्ध प्रभात, मध्याह्न, सन्ध्या, ज्योत्स्ना, अन्धकार, उद्यान ओ चेराइक प्राकृतिक वर्णन कएल गेल अछि। चतुर्थ कल्लोलमे ऋतुवर्णना अछि। एकर अन्तर्गत छओ ऋतुक वर्णन, संग-संग छअ कला, चौंसठ कलादान, नगर, कच्छ, अभिषेक, द्यूत, वेश्या, कुट्टनी, कामाकन्या प्रभृतिक वर्णन कएल गेल अछि। पंचम कल्लोलमे प्रयाणकवर्णना अछि। एहिमे राजप्रस्थान, आखेट, वन, पहाड़, ऋषिक आश्रम आदिक वर्णन अछि। षष्ठ कल्लोलमे भट्टादिक वर्णना अछि, जकर अन्तर्गत वाद्य, संगीत, नृत्य आदिक वर्णनक समावेश कएल गेल अछि। सप्तम कल्लोलमे श्मशानवर्णना अछि, जकर अन्तर्गत श्मशानक पश्चात् मरुभूमि, सागर, तीर्थस्थान, नदी, नाव, पहाड़ आदिक वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त मुद्रित प्रतिमे अष्टम कल्लोल सेहो अछि राजपुत्रकुलवर्णनाक नामसँ। एकर अन्तर्गत आयुध, देश, राज्य, विवाह, अष्ट नायिका, वणिक पुत्र, चोर, दुर्ग, नौका, वैद्य, भोजन प्रभृतिक वर्णन कएल गेल अछि।

उपर्युक्त विषयवस्तुक क्रम अनियोजित बुझि पड़ैत अछि यथा चतुर्थ कल्लोलमे वेश्या, कुट्टनी, कामाकन्या आदिक जे वर्णन अछि, से नायक-वर्णनक अन्तर्गत अन्तर्भुक्त करब समीचीन छल। अतः 'वर्णरत्नाकर'क वर्तमान उपलब्ध संस्करण एकर मूल-संस्करण नहि कहल जाए सकैत अछि, कारण, एकर वर्णन-प्रणाली जेहन क्रमबद्ध अछि, तकरे लेखक द्वारा विषयवस्तुक क्रमयोजना एहन शिथिल नहि रहल होएत।

मैथिली साहित्यमे 'वर्णरत्नाकर'क बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि। निर्विवाद रूपेँ ई मैथिली भाषा-साहित्यक ग्रन्थ थिक। दोसर, इएह एहन प्रामाणिक साहित्य अछि जे तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितिक प्रामाणिक साक्ष्य थिक। एकर आधार पर मैथिली भाषा ओ साहित्यक परम्परागत विकासक बड़ स्पष्ट परिचय प्राप्त होइत अछि। तेसर, ई महाग्रन्थ थिक। आधुनिक उत्तरीय भारतीय भाषाक सर्वाधिक प्राचीन महाग्रन्थ होएबाक गौरव एकरा प्राप्त छैक आओर तेँ अन्य गद्य-पद्यात्मक अनुपलब्धिक परिस्थितिहुमे ई तत्कालीन मैथिली साहित्यक उत्कर्षक प्रमाण साक्षी थिक। म. म. हरप्रसादशास्त्री 'वर्णरत्नाकर'केँ काव्यसँ अधिक काव्योपयोगी ग्रन्थ कहल अछि, से सर्वथा समीचीन, कारण परवर्ती कविगण, विद्यापति पर्यन्त, अपन काव्यरचनामे एहि ग्रन्थक उपयोग कएने छथि। तत्कालीन मैथिली साहित्यक विकासमे 'वर्णरत्नाकर'क महत्वपूर्ण योगदानक परिचय तँ प्राप्त होइतहिँ अछि, संगहिँ तत्कालीन मिथिलाभाषाक उत्कर्षक सेहो द्योतन होइत अछि।

'वर्णरत्नाकर'मे विविध विषयक सांगोपांग वर्णन भेल अछि। कविक उद्देश्य बुझि पड़ैत अछि वर्णनक सूची प्रस्तुत करब, अर्थात् कोनो वस्तुक वर्णन करबामे

तत्सम्बन्धी कोन-कोन सामग्रीक चर्चा कएल जाए, तकर उल्लेख करब, जाहिसँ समसामयिक अथवा भविष्यक भाषा-कविकेँ सुविधा होइनि। यथा-

वृक्षक सुललित पल्लवक उद्गम, कुसुमक सम्भार, मलयानिलक वेग, कोकिलाक कलरव, भ्रमरक झंकार, कन्दर्पक प्रभाव, विरहिणीक उत्कण्ठा, नायकक हास्य, नायिकाक अभिलाष, दिनकरक रम्यता, शिशिरक अपगम, मधुकरक समृद्धि, पुष्पक सौरभ, पवनक आकांक्षा, एवम्विधगुणविशिष्ट वसन्त देषु।

एही कारणे ज्योतिरीश्वरकेँ जाहि ठाम आवश्यक बुझि पड़लैन्हि, ताहि ठाम एके वस्तुक विभिन्न रूपसँ वर्णन कएल। यथा, पर्वतक वर्णनक प्रसंग एक दिसि यदि ओकरा 'राक्षस, दैत्य, भूत वेताल, वनेचर' प्रभृतिक विश्राम-स्थल तथा 'गोण्ड, पतंगोण्ड, शबर, किरात, बब्बर, भिल्ल, पुक्कर, भेर, भंवर प्रभृति अनेक म्लेच्छ-जातिक निवास-स्थान' कहि पर्वतक भीषणताक वर्णन कएल अछि तँ दोसर दिसि 'किन्नरक ध्वनि, विद्याधरक आलाप' आदि रमणीयताक वर्णन सेहो कएल अछि। इएह रमणीयता-भीषणता दुनू दशाकेँ देखएबाक प्रणाली जनक वर्णनमे सेहो अपनाओल अछि।

'वर्णरत्नाकर'कारक उद्देश्य अछि एके ठाम विविध सामग्रीक संकलन करब, तेँ पुराण, वायु-रत्न, ऋतु, नृत्य, द्युत आदि जे कोनो काव्योपयोगी वस्तु अछि, तकर भेद, वैशिष्ट्य एवं तकर पर्यायवाची शब्दक सेहो यथासाध्य चर्चा कएल गेल अछि। अतः 'वर्णरत्नाकर'केँ मैथिलीक प्रथम भाषाकोष कही तँ अत्युक्ति नहि होएत।

किन्तु भाषाकोषक रूपमे काव्योपयोगी ग्रन्थ होइतहुँ 'वर्णरत्नाकर'मे स्थान-स्थान पर कविशेखराचार्यक कवि-हृदय अभिव्यक्त भइए गेल अछि जे वर्णनकेँ कतहु शुष्क नहि होअए देलक अछि। ज्योतिरीश्वरक इएह कवित्वभावना, स्थान-स्थान पर खण्डित भेलहु सन्ताँ, वर्णनमे सरसताक संचार कएने रहैत अछि। निम्निलखित उद्धरण एहि तथ्यकेँ स्पष्ट कए देत:-

1. कुमुद, कुन्द, कदम्ब, कास, भास, कैलास, कर्प्पूर पीयूषक कानि (कान्ति) प्रसारि। सन, क्षीर समुद्रक दक्षिणानिले चालल तरंग सनक लहरी अइसन, शरतक पूर्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन.... कन्दर्पक पाँचओ बाणगुणताक सन्धानशक्ति सन, मोहनता प्रकाशिता बसिता, उत्साहिता एवम्विध रस प्रकाशयिते त्रैलोक्यो वश करइतेँ नायिकासन हास्य संचारइतेँ देषु (नायिकाक हास्यवर्णनासँ)

2. 'पाताल अइसन दु:प्रवेश, स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य, कालिन्दीक अइसन मांसल, काजरक पर्व्वत अइसन निविल..... तेज पिबइतैं दिश घसइतैं आकाश करइतैं प्रत्यक्ष मूर्तिमन्त, भटताक पक्ष स्थापइतैं दश द्रव्य अइसन दुर्गम्य अन्धकार देषु। ('अन्धकार वर्णना' सं)।

एही प्रकारैं सम्पूर्ण 'वर्णरत्नाकर' उपमाउत्प्रेक्षादिसँ भरल अछि। अनुप्रासक झंकार सेहो स्थान-स्थान पर बड़ चमत्कारपूर्ण भेल अछि। आखेटक वर्णनक प्रसंग "टोकार सिसिकार तुतकार झुकुकार दिघवार प्रभृति अनेक कुक्कुर परिचित शब्द करइते आछ" मे 'कार'क पुनः-पुनः आवृति ध्वन्यर्थव्यंजनाक बड़ सुन्दर दृष्टान्त थिक।

नायक-नायिका एवं कामावस्थादिक वर्णनमे शृंगार-रसक, श्मशान-वर्णनमे भयानक ओ वीभत्सरसक बड़ सुन्दर अभिव्यक्ति भेल अछि। कुट्टनीक निम्नलिखित वर्णनमे हास्यक कैहन सजीव चित्र अछि, से द्रष्टव्य थिक-

"वर्ष सए तीनि भितर वयस पाण्डुर भ्रू, शंखावदात केश, संकुचित त्वचु, उन्नति शिरा, निर्मांस काय, भांपल कपोल, झलल दाँत....लोभक बेटी अइसनि, वृद्धिक कानूनि अइसनि, कुटिलमति, चारदक सहोदर अइसनि घटक कुटिलाकार कुट्टनी देषु.... अपि सुधाल सरोवर अइसनि शरीर भर गेलइक, तहु दशा रेसटीप अंजन शरीर.... परजाति [illegible] कुट्टनी देषु।

'वर्णरत्नाकर'क प्रभाव मैथिलीक पद ओ नाटकमे स्पष्ट अछि। विद्यापतिक नायक-नायिका वर्णनमे एहि ग्रन्थक प्रभाव बड़ अधिक अछि। 'वर्णरत्नाकर'मे बारबार प्रयुक्त भेल 'पुन अइसन देषु' एवं 'अपर प्रकारक' तथा वर्णनक क्रममे आएल अनुप्रासक झंकार तथा 'शिवक उद्योत [illegible] संचार'सँ सिद्ध होइत अछि जे [illegible]-नाट्य-परम्परा पर हिनक प्रभाव अन्यतम छल। मैथिलीमे [illegible] दृष्टान्त तँ नहि भेटैत अछि, किन्तु मैथिलीक कीर्तनियाँ नाच पर हिनक प्रभाव स्पष्ट अछि। [illegible] 'श्रीकृष्ण-जन्म-रहस्य'क पात्र एहि प्रकारक वाक्यविन्यासक प्रयोग करैत छथि।

मैथिली धूर्त-समागम

मैथिली 'धूर्त-समागम'कैं डा. जयकान्त मिश्र 1957 ई.मे अपन नेपालयात्राक क्रममे अनुसन्धान कएल जे मैथिली-साहित्य-समिति, प्रयाग द्वारा प्रकाशित भए चुकल अछि। 'धूर्त-समागम' ज्योतिरीश्वरक सुप्रसिद्ध संस्कृत-प्रहसन थिक, जकर चर्चा ऊपर कएल जा चुकल अछि। जयकान्त बाबूक संस्करणमे 'पारिजातहरण' जकाँ बीच-बीचमे

किछु मैथिली पदक सेहो प्रयोग भेल अछि। एकर उपलब्धि मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक घटना थिक। मैथिलीक जाहि काव्यपरम्पराकैं विद्यापति अपन प्रतिभाक स्पर्शसँ गौरव प्रदान कए सुप्रतिष्ठित ओ लोकप्रिय कए देल, से 'धूर्त-समागम'मे मैथिली पद प्राप्त भेलासँ एक सए वर्ष आओर अधिक पुरान भए जाइत अछि। तहिना संस्कृत-नाटकमे मैथिली पद-प्रयोग करबाक परम्पराक आरम्भ विद्यापतिक 'गोरक्षविजय'सँ नहि, 'धूर्त-समागम'सँ मानल जाएत। एहिमे प्रयुक्त पदमे सर्वत्र म. हरिसिंहक उल्लेख भेलासँ ज्योतिरीश्वरक समय-निर्धारणक प्रसंग अन्य तथ्य निष्प्रयोज्य भए जाइत अछि।

मुदा कवित्वक दृष्टिएँ 'धूर्त-समागम'क पद साधारण कोटिक लगैत अछि। ई आश्चर्यक विषय थिक। डा. मिश्र 'कविशेखर-पुष्पांजलि'क अपन लेखमे तर्क देल अछि जे "नाटकक गीत कवित्वक स्थान नहि थिक", किन्तु उमापति, नन्दीपति प्रभृति नै नाटकहुमे गीतक प्रयोग कए अपन कवित्वकैं चरम सीमा पर पहुँचाए देल अछि। तैं डा. मिश्रक तर्क युक्तिसंगत नहि लगैत अछि। एकर अधिकांश पद खण्डित अछि, तैं अर्थ-ग्रहणमे बाधा भेलासँ रस-ग्रहणमे सेहो बाधा पहुँचैत अछि। चारिटा चरण नीचाँ उद्धृत कएल जाइत अछि-

अरे रे सनातक तोरहि कुमान्ति।
अनंगसेना लेल अरताति।
कतए विचार कराओल आनि।
जन्हिक चरित सुन भूत नाशक जानि।।

एकर भाषा सेहो 'वर्णरत्नाकर'क भाषाक अपेक्षा आधुनिक बुझि पड़त अछि। एही सभ कारणे डा. सुकुमार सेन ओ प्रो. रमानाथ झा एकरा ज्योतिरीश्वरक कृति मानबामे शंका प्रकट कएने छथि।

'धूर्त्त-समागम'क एकटा नवीन संस्करण पाठ-परिशुद्धिपूर्वक प. शशिनाथ झा द्वारा सम्पादित भए दरभंगा-संस्कृत-विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1985 ई.मे प्रकाशित भेल अछि।

****

पंचम प्रकरण

महाकवि विद्यापति

विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। वस्तुतः हिनके पर मैथिली साहित्यक समग्र गौरव आधरित अछि। आधुनिक भारतीय भाषाक इएह सर्वप्रथम महाकवि छथि जे संस्कृतसाहित्यक अभेद्य गढ़कें दृढ़तापूर्वक तोड़ि भाषामे काव्यरचनाक साहस कएल। विद्यापतिक ई कार्य परवर्त्ती महाकविलोकनिक हेतु बड़ प्रेरक सिद्ध भेल आओर एहि आदर्शसँ अनुप्रेरित भए हुनकर चरण-चिह्नक अनुसरण करैत पश्चात् शंकरदेव (ज. 1449), चण्डीदास (ज. 1418), रामानन्द राय (ज. पन्द्रहम शताब्दीक मध्य), कबीर (ज. 1399), तुलसीदास (ज. 1540), मीरा बाइ (ज. 1497), सूरदास (ज. 1435) आदि अपन-अपन भक्तिभावनाक माध्यम अपन-अपन मातृभाषाकें बनाओल।

मैथिली साहित्यमे विद्यापतिक युग ओतबे महत्वपूर्ण अछि, जतबा अंग्रेजी साहित्यमे शेक्सपियरक युगः कारण, सबसँ पहिने विद्यापति-पदावलीमे सएह मिथिलाक अपन वैशिष्ट्य भक्तिक तन्मयता, शृंगारिक सरसता एवं संगीतानुरंजन ओतेक स्फुट ओ व्यापक रुपमे व्यक्त भेल तथा शीघ्र हिनक पदावली जन-जनक मानसमे उतरि गेल। राजासँ लए रंक धरि, प्रकाण्ड विद्वानसँ लए हरबाह-चरबाह धरि हिनक पदसभमे अपन-अपन आत्मानुभूतिकें अभिव्यक्त भेल पाओल। संगीत हिनक लोकप्रियताक वाहन मात्र भेल।

परन्तु हिनक पदसभमे जेहन रमणीय भावराशि ओ तदनुरुप मधुर एवं सरस संगीतक मणिकांचन-संयोग भेल, तकर विकास पूर्वहिसँ भए रहल छल। नान्यदेव (1097 ई.) संगीतक बड़ मर्मज्ञ ज्ञाता छलाह। हिनक समयमे जे संगीतक प्रसार प्रारम्भ भेल, से हरिसिंहदेव धरि अबैत-अबैत पूर्णताकें प्राप्त कए लेने छल। दोसर, लोकानुरंजक हेतु कवितामे संगीतक माध्यम बहुत दिनसँ प्रयुक्त होइत आबि रहल छल। सिद्धलोकनि सेहो अपन दार्शनिक ओ धार्मिक विचारधाराकें मिथिलाक जनसमुदायमे पहुँचएबाक हेतु संगीतक आश्रय लेने छलाह। प्रो. रमानाथ झा अपन 'प्रबन्धसंग्रह'मे विभिन्न तथ्यक आधार पर ई सिद्ध कए देने छथि जे विद्यापति-पूर्वक साहित्य (जे सबटा उपलब्ध नहि अछि) गीतमय छल। विद्यापतिक ओहि परम्पराकें आओर अधिक सुदृढ़ कए देल तथा हिनक प्रभावापन्न भेल मैथिलीक प्रायः सम्पूर्ण

साहित्य गीतमय भए विकसित भेल।

भारतक इतिहासमे मध्यकाल भारतीय संस्कृति ओ सभ्यताक हेतु बड़ संकट ओ संघर्षक समय छल। सम्पूर्ण भारतवर्षमे मुसलमानी आतंक वर्तमान छल। ई अवश्य जे मिथिलामे मुसलमान बड़ पाछाँ आबि अपन प्रभाव-विस्तार करबाक हेतु प्रस्तुत भेल, मुदा दिल्लीमे मुसलमानी राज्य स्थापित भए चुकल छल। आन प्रान्तक लोक मुसलमानी आक्रांताक संग सशस्त्र संघर्ष कए रहल छलाह, परन्तु पूर्वहिसँ सावधान नहि रहबाक कारणे तथा आन्तरिक अनैक्यक कारणे क्रमशः सभ केओ पराजित भेलाह। एहि पराजयसँ ओहि-ओहि क्षेत्रमे केवल मुसलमानलोकनिक राज्यहिटाक विस्तार नहि भेल, प्रत्युत भारतीय संस्कृतिक सेहो बड़ क्षति पहुँचल तथा ओहि-ओहि क्षेत्रमे हिन्दूलोकनिक आन्तरिक संघटनक अभावमे मुसलमानी सभ्यता ओ संस्कृतिक बड़ विस्तार भेलैक। एहि प्रकार प्रायः कोनो प्रान्तक स्थानीय सभ्यता-संस्कृति तथा सामाजिक आचार-विचार अपन मूल-रुपमे नहि रहि पाओल।

मुदा मिथिलाक मनीषीलोकनि बड़ अग्रसोची छलाह। हिनकालोकनिकें राजनीतिक अस्तित्वक प्रति ओतेक मोह नहि छलैन्हि जतेक अपन सभ्यता-संस्कृतिक, अपन आचार-विचारक शुद्धताक प्रति। तें भावी विपत्तिसँ रक्षाक हेतु अपन सांस्कृतिक संघटनकें पहिनहिसँ सुदृढ़ करए लगलाह। तात्कालिक परिस्थितिकें ध्यानमे रखैत सामाजिकताक स्वरुप स्थिर होअए लागल। कहए नहि पड़त जे एहि प्रक्रियामे आचार-विचारक, जे परम्परागत धर्म ओ सभ्यता-संस्कृति पर आधारित छल, पुनर्निर्धारण भेल। एही दृष्टिएँ काणाटवंशीय अन्तिम नरपति हरिसिंह देव द्वारा पाँजिक व्यवस्था (1326)क बड़ ऐतिहासिक महत्व अछि जकर आधार पर तहिआ जे मैथिली ब्राह्मण एवं कर्ण-कायस्थक वैवाहिक व्यवस्था स्थिर भेल, से आइ धरि किछु-ने-किछु चलिते अछि। दोसर, सुविधाक हेतु फेरसँ पद्धतिक रचना कएल गेल, 'गृह्य-सूत्र'क 16मे संस्कारमे केवल 10 गोट मात्र आब मैथिलक हेतु ग्राह्य भेल आओर मैथिल समाजक आचार-विचारमे सरलीकरण कएलगेल। एहि सामाजिक पुनर्संघटनमे विद्यापतिक पूर्वजलोकनिक बड़ पैघ अवदान अछि, विशेषतः विद्यापतिक पिता गणपति ठाकुरक पितामह महावार्तिक नैबन्धिक धीरेश्वर ठाकुरक अग्रज सान्धि-विग्रहिक महावार्तिक नैबन्धिक महामत्तक म. म. वीरेश्वर ठाकुरक आत्मज 'सप्तरत्नाकर'कार म. म. चण्डेश्वर ठाकुरक। हुनकहि 'रत्नाकर' सभक अनुसरण मिथिलाक विभिन्न सामाजिक व्यवहारमे होअए लागल। ओएह प्रमुख प्रमाण-ग्रन्थक रुपमे स्वीकृत भेल।

तहिआसँ भाएतक एहि भूभाग मिथिलाक अस्तित्व ओही पर निर्धारित होइत आबि रहल अछि। कतेक शताब्दी बीति गेल, कतेक उत्थान-पतन भेल। हरिसिंहदेवक राजत्वकालक पश्चात् मिथिला साक्षात् मुसलमानी शासनक अन्तर्गत पहिले-पहिले

1326 ई.मे आएल। मुदा मिथिलाक सामाजिक जीवन विघटित नहि भेल। मिथिलाक संस्कृति अपन मूल-रुपक कहिओ परित्याग नहि कएलक। मुसलमान शासक एहि ठाम वेशी दिन नहि रहलाह, ओइनवार वंशक मैथिल ब्राह्मणराजालोकनिकेँ राज्यक भार दए कर मात्र पर सन्तुष्ट भेलाह। पुनः मिथिला देशीय राजाक अधीन विद्या-व्यसनमे लीन भए गेल। बीच-बीचमे मुसलमानलोकनिसँ सघर्ष अवश्य भेल। परन्तु मुसलमानी प्रभाव एतए ओतेक विस्तार प्राप्त नहि कए सकल, जतेक अन्यत्र कएने छल। मिथिलाक व्यक्तित्व सुरक्षित रहल ओ मैथिललोकनिक सामाजिक जीवनमेँ मुसलमानी सभ्यता-संस्कृतिक प्रभाव अत्यल्प पड़ल।

एहि सामाजिक पुनर्संघटनक प्रक्रियामे विद्यापतिहुक कम योगदान नहि अछि। 'शैवसर्वस्वसार', 'गंगावाक्यावली', 'दुर्गा-भक्ति-तरंगिणी', 'वर्षकृत्य', 'गयापत्तलक' आदि ग्रन्थक रचना ओ मिथिलाक धार्मिक व्यवहारकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु कएल। परन्तु मैथिल समाजकेँ एकसूत्रतामे आबद्ध करबामे हुनक मैथिली रचना जतेक उपयोगी सिद्ध भेल ततेक संस्कृत-रचना नहि। सामाजिक वा सांस्कृतिक संघटनक जे चर्चा कएल गेल अछि, से वर्गगत छल, ब्राह्मणलोकनिक निर्धारित कएल। ई अवश्य जे ओहि समय समग्र हिन्दू समाजक प्रतिनिधि ब्राह्मणे छलाह। हुनकालोकनिक व्यवस्था समाजक हेतु अकाट्य छल, मुदा ब्राह्मण ओ ब्राह्मणेतरमे भेद तँ छले। मुसलमानलोकनिक धार्मिक ओ सांस्कृतिक प्रभावक विस्तार मिथिलहुमे यत्किंचित् होइते रहैत छल। मिथिलामे जे एतेक मुसलमानक जनसंख्या अछि, से सबटा आने ठामसँ आएल नहि, अधिकांश तँ एहीठामक आदिवासी छथि, जे छल-बल वा कोनो आने कारणसँ मुसलमान बनलाह। हुनकालोकनिकेँ इस्लामधर्म ग्रहण करबासँ पण्डितलोकनिक व्यवस्था बचा नहि सकल।

ओही परिस्थितिमे विद्यापतिक आविर्भाव भेल। भाषा मात्र वर्ग-जातिक भेदसँ अतीत होइत अछि। इएह एहन तत्व थिक जे जन-साधारणक बीच सामान्य भावनाक क्षेत्रमे अनन्य सम्बन्ध स्थापित करबामे समर्थ होइत अछि तथा समाजकेँ विघटनसँ बचा सकैत अछि। विद्यापति मैथिलीमे पदावलीक रचना कए छोट-पैघक बीच अभिन्न सम्बन्ध स्थापित कएल तथा समाजकेँ विघटित होएबासँ बचाओल। समाजक निम्न-स्तरक लोकसभक सम्मुख भाषा ओ साहित्यक विकल्प राखि, अपन स्थानीय सांस्कृतिक गौरवकेँ भावनाक क्षेत्रमे उभारि विदेशी धर्म ओ संस्कृति ग्रहण करबासँ रोकल। एहि हेतु ओ शृंगार तथा भक्तिरस मात्र पर अधिक ध्यान देल। शृंगारभावना गरीब, धनिक, ऊँच-नीच, नर-नारी सभक हृदयकेँ समान रुपसँ संवेदित करैत अछि, तेँ ई सर्वसामान्यमे समान रुपसँ प्रचलित भेल। तहिना भक्तिपद सेहो लोक-जीवनकेँ स्पर्श कएलक। भक्तिपद तँ ओ विभिन्न देवताक अर्चनामेँ लिखल, मुदा महादेवक नचारी ओ महेशवाणी लिखि ओ समाजक सभ वर्गक हेतु भक्तिभावाभिव्यक्तिक द्वारा

खोलि देल। वेदाचार सब केओ नहि कए सकैत अछि, मुदा महेशवाणी ओ नचारी तँ गाबि सकैत अछि। एहिमे जन-सामान्यक धार्मिक पिपासाकेँ शान्त होएबाक सबल माध्यम भेटलैक ओ भाषा-साहित्यक रुपमे सामान्य भावाभिव्यक्तिक साधन सेहो। विद्यापति अपन प्रतिभा-पारसक स्पर्शसँ लोकभाषाकेँ सोना बना देल तथा ओकरा परिनिष्ठता ओ साहित्यिकता प्रदान कएल। एहिसँ मिथिलाक सांस्कृतिक अखण्डता स्थापित रहल। आइ उच्च-वर्गहुमे पूर्वनिर्धारित आचार-विचारक व्यवस्था शिथिल भए गेल अछि ओ पाँजिक अनुशासन सेहो नाम मात्रहिक शेष रहल अछि। एहिना परिस्थितिमे मैथिली भाषा ओ साहित्येटाक बल पर हमरालोकनि स्वतन्त्र सांस्कृतिक अस्तित्वक घोषणा कए मिथिलाक अपन व्यक्तित्वक रक्षा कए सकैत छी।

विद्यापतिकेँ संस्कृत, अवहट्ठ ओ मैथिली भाषा पर समान रुपसँ अधिकार छलैन्हि। तेँ ओ तीनू भाषामे ग्रन्थसभक रचना कएल। मध्यकाल मिथिलाक हेतु पाण्डित्यक क्षेत्रमे स्वर्णिम काल छल। परम्परागत संस्कृत विद्याक उत्कर्षक दृष्टिएँ सेहो एवं आधुनिक भारतीय भाषाक अन्तिम उत्थानक दृष्टिएँ सेहो विद्यापति ओहियुगक एहि दुनू गुणक प्रतीक कहल जा सकैत छथि। परन्तु युगस्रष्टा प्रतिभाक जे स्वाभाविक गुण थिक, हुनक दृष्टि भविष्योन्मुख अधिक छल। संस्कृत पण्डितलोकनिक भाषामात्र रहि गेल छल, प्राकृत भाषा नीरस भाषाक रुपमे मान्य छल। अतः एहन भाषाकेँ साहित्यिक गौरव प्रदान करबाक आवश्यकता छलैक जे समाजक सब वर्गक हेतु बोधगम्य ओ सरस मनोरंजनक साधन हो। एहि हेतु विद्यापति अवहट्ठ ओ मैथिली भाषामे रचना कएल। अवहट्ठ सेहो देशी बोली छल, परन्तु पदावलीमे प्रयुक्त मैथिली भाषाक पूर्वकालक, तेँ पदावलीक भाषापर सेहो ओकर यत्किंचित् प्रभाव स्पष्ट अछि। मातृभाषाकेँ साहित्यिक माध्यमक रुपमे प्रयुक्त करब विद्यापतिक सुदूरभेदी प्रतिभाक परिचायक छल।

विद्यापतिक गौरव एहीसँ सिद्ध होइत अछि जे बंगला ओ हिन्दी दुहू भाषाक द्वारा समान रुपेँ अन्तर्भूत कएल गेलाह। एकरा *ग्रियरसन साहेब* मैथिली क्रैस्टोमैथिमे Unparallel in the history of literature कहल अछि। एहि अद्भुत लोकप्रियताक दृष्टिएँ भारतीय भाषाक कोनो महाकवि हिनक समता नहि कए सकैत छथि।

जीवन-परिचय

1. वंश - विद्यापतिक जन्म गढ़विसपीक शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखाक काश्यप गोत्रीय मैथिल ब्राह्मणपरिवारमे भेल। एहि वंशक बीजी पुरुष छलाह विष्णु ठाकुर। विष्णु ठाकुरक पुत्रक नाम हरादित्य ठाकुर एवं पौत्रक नाम त्रिपाठी कर्मादित्य

ठाकुर छलैन्हि। कर्मादित्य ठाकुरकेँ दुइ गोट बालक भेलथिन्ह देवादित्य प्रसिद्ध शिवादित्य एवं भवादित्य। ई दुहू भ्राता उच्च राज्याधिकारी छलाह। पाँजिक अनुसार देवादित्य सान्धिविग्रहिक तथा भवादित्य राजवल्लभ छलाह। देवादित्यकेँ सात गोट बालक भेलथिन्ह एवं सातो सुयोग्य। पितहि जकाँ हुनक ज्येष्ठ बालक वीरेश्वर ठाकुर महाराज शक्र सिंह (1984-96) क उच्च राज्याधिकारी नियुक्त भेलाह-सान्धिविग्रहिक। ई विद्याक क्षेत्रमे सेहो बेजोड़ छलाह ओ महामहोपाध्यायक उपाधि धारण कएल तथा महावार्तिक-नैबन्धिक रुपमे प्रसिद्ध भेलाह। इएह म. म. वीरेश्वर ठाकुरक सुपुत्र भेलाह म. म. चण्डेश्वर ठाकुर, जे पिता द्वारा गृहीत राजकीय पदकेँ तँ ग्रहण करबे कएल, संगहिँ मिथिलाक सामाजिक पुनर्संघटनमे सबसँ अधिक योगदान देल। ओ समान रुपसँ राजनीति, ज्योतिष, धर्मशास्त्र आदिक प्रकाण्ड विद्वान छलाह एवं हिनक रचित 'कृत्यरत्नाकर' गृहस्थरत्नाकर' प्रभृति सप्तरत्नाकरक अतिरिक्त 'राजनीति-रत्नाकर', 'सूर्यसिद्धान्त' आदिक विशेष महत्व अछि। ई प्रसिद्ध योद्धाक रुपमे सेहो ख्यात छथि जे मुसलमान आक्रान्तासँ युद्ध कएल ओ मारि बैलाए देल। लखिमा ठकुराइन हिनके धर्मपत्नी छलथिन्ह। हिनक वंशवृद्धि नहि भेल।

देवादित्यक अन्य पुत्रसभ सेहो राज्याधिकारी छलाह-गणेश्वर ठाकुर महासामन्ताधिपति महामत्तक, जटेश्वर ठाकुर भाण्डागारिक, हरदत्त ठाकुर स्थानान्तरिक, लक्ष्मीदत्त ठाकुर मुद्राहस्तक एवं शुभदत्त ठाकुर राजबल्लभ। परन्तु देवादित्य ठाकुरक द्वितीय पुत्र, विद्यापतिक प्रपितामह धीरेश्वर ठाकुर मात्र विद्याक क्षेत्रमे उल्लेखनीय छथि। पाँजिक अनुसार ओ वार्तिक नैबन्धिक छलाह। धीरेश्वर ठाकुरकेँ पुत्र भेलथिन्ह जयदत्त ठाकुर ओ जयदत्तकेँ पुत्र भेलथिन्ह गौरीपति (गोपाल) ठाकुर एवं गणपतिठाकुर। जयदत्त ठाकुरक द्वितीय बालक गणपतिठाकुरक विवाह भेल बुधवाल परिवारक श्रीकरक दुहिता गंगादेवीक संग एवं तनिकेसँ विद्यापतिक जन्म भेल।

एहि प्रकार विद्यापतिक जन्म एहन कुलमे भेल जे पाण्डित्य ओ राज्य-सम्पर्केटामे नहि, राज्याधिकारी होएबाक कारणेँ समाजमे बड़ प्रतिष्ठिति ओ प्रसिद्ध कुलक रुपमे सम्मान्य छल आओर जे मिथिलाक राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक उत्कर्षक हेतु बहुत किछु कएल।

2. **जन्म ओ मृत्यु-तिथि** - विद्यापतिक जन्म-तिथिक प्रसंग बड़ विवाद अछि ओ एहि विवादक आधार अछि लक्ष्मण-संवतक समय-निर्धारण, कारण, विद्यापतिक समयक प्रसंग जाहि जाहि ठाम चर्चा अछि, सब लक्ष्मण-संवतमे सएह। एहि प्रसंग चारि प्रकारक सामग्रीक उल्लेख करब आवश्यक अछि, जकर आधार पर विद्यापतिक आविर्भावकाल निश्चित होइत अछि:- (1) दरभंगा राजपुस्तकालय (आब दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय)मे सुरक्षित विद्यापति द्वारा लिखल श्रीमद्भागवतक

हस्तलेखप्रतिलिपि। एकरा विद्यापति लिखल राजबनौलीमे ल. स. 309 श्रावण शुदि 15 मंगलकेँ (2) 'लिखनावली'मे एकर रचनाक समयक उल्लेख छैक ल. स. 299। एकरा विद्यापति सप्तरीक द्रोणवार राजा पुरादित्यक हेतु प्रस्तुत कएल। (3) अपन अवहट्ठक निम्नलिखित गीत-पंक्तिमे देवसिंहक मृत्यु-तिथि तथा म. शिवसिंहक सिंहासनारुढ होएबाक तिथिक स्पष्ट उल्लेख विद्यापति कएने छथि-

अनल रन्ध्र कर लक्खन णरवइ सक समुद्द कर अगिनि ससी
चैत कारि छठि जेठा मिलिओ बार बेहप्पइ जाए लसी।

एकर अनुसार ओ तिथि छल ल. स. 293क चैत्र वदि 6, जखन चन्द्रमा ज्येष्ठामे छलाह आओर दिन छल मंगल। एहिमे लक्ष्मण-संवतक संग-संग शक-संवतक उल्लेख सेहो छैक 1324 अर्थात् 1402 ई.। अतः एहि संवतक प्रसंग विवादक कतहु अवकाश नहि रहैत छैक। (4) 'कीर्तिलता'क द्वितीय पल्लवमे असलान द्वार गणेश्वररायक हत्याक तिथिक स्पष्ट उल्लेख छैक ल. स. 252क चैत्र शुक्ल पंचमी। एकर अतिरिक्त म. शिवसिंहक द्वारा विद्यापतिकेँ प्रदत्त विसपी ग्रामक ताम्रपत्रमे ल. स. 293क श्रावण शुदि 7 मंगल दिन लिखल छैक। कहल जाइत अछि जे शिवसिंहक राजगद्दी पर आसीन भेलाक साढ़े चारि मासक पश्चात् ई दानपत्र प्रदान कएल गेल छलैन्हि। ग्रियरसन एहि ताम्रपत्रकेँ जाली मानैत छथि, मुदा एहि ताम्रपत्रमे दान देबाक तिथि परम्परासँ अनुमोदित अछि।

उपर्युक्त तृतीय तथ्य निश्चित कए दैत अछि जे लक्ष्मण-संवतक आरम्भ 1031 शक संवत वा 1109 ई. मे भेल। एकर अनुमोदन मिथिलाक पंचागसँ सेहो होइत अछि, कारण परम्परासँ लक्ष्मण-संवत एवं शक-संवतक उल्लेख ओहि मध्य संग-संग होइत आबि रहल अछि आओर ओहिसँ इएह सिद्ध होइत अछि।

विद्यापति जन्म-तिथि-निर्णय परम्परासँ प्रसिद्ध श्रुतिक आधारहि पर करए पड़ैत अछि कारण, अपन जन्मतिथिक उल्लेख विद्यापति कतहु नहि कएने छथि आ ने कोनो दोसर कवि अथवा विद्वाने कएने छथि। जनश्रुतिक आधार पर विद्यापतिक प्रसंग चन्दा झा 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवादमे लिखने छथि जे विद्यापति म. शिवसिंहसँ दुइ वर्ष जेठ छलाह। राज्यारोहणक समय म. शिवसिंहक अवस्था छल 50 वर्षक, तेँ विद्यापतिक अवस्था छल 52 वर्षक। 293 ल. स. अथवा 1324 शाके अथवा 1402 ई. मे राजा देवसिंहक मृत्यु भेल तथा शिवसिंह राजा भेलाह। तेँ 1350 ई.मे विद्यापतिक जन्मतिथि निश्चित होइत अछि। डा. सुभद्र झा, प्रो. रमानाथ झा एवं पं. शशिनाथ झा सेहो इएह तथ्यकेँ मानैत छथि। किन्तु डा. उमेश मिश्र ओ डा. जयकान्त मिश्र हिनक जन्मतिथिकेँ स्वीकार करैत छथि 241 ल. स. (1360 ई.)। प्राय:

हुनकालोकनिकैं अवहट्ठक पद दिसि ध्यान नहि गेलैन्हि अछि आओर प्रायः तें किल्हार्नक मतानुसार लक्षण-संवतक आरम्भ 1119 ई.सँ मानैत विद्यापतिक जन्मतिथि 1360 ई. मानैत छथि।

विद्यापतिक मृत्युतिथिक प्रसंग प्रसिद्ध 'विद्यापतिक आयु अवसान कातिक धवल त्रयोदशीजान' अन्य प्रसिद्ध तथ्यहुसँ युक्ति-संगत सिद्ध होइत अछि। प्रवाद अछि जे म. शिवसिंह 3 वर्ष 9 मास राज्य कएल आओर तत्पश्चात् मुसलमान आक्रान्तासँ युद्ध करइत युद्धभूमिसँ नहि घुरलाह, नापता भए गेलाह। बारह वर्ष धरि पतिक प्रतीक्षा करबाक पश्चात् लखिमा रानी सती भए गेलीह। म. शिवसिंह 1402 ई.मे राज्यासीन भेलाह, तें मुसलमानक संग अन्तिम युद्ध ओ 1406 ई.मे कएल। अतः लखिमा रानीक सती होएबाक समय 1418-19 सिद्ध होइत अछि। एहि बीच विद्यापति अपन प्रिय महाराजक पत्नीसभक संग पुरादित्यक आश्रयमे राजबनौलीमे रहैत छलाह। 'लिखनावली'क रचना 1408 ई.मे एवं भागवतक हस्तलेखप्रतिलिपि ओ 1418 ई.मे राजबनौलीमे कएल, से एहि अनुमानकें युक्तिसंगत सिद्ध करैत अछि। विद्यापति राजा शिवसिंहक, नापता होएबाक 32 वर्षक पश्चात् अर्थात् 1438-39 ई.मे स्वप्नमे देखल ओ दोसर वर्ष अर्थात् 1439-40 ई.मे हुनक मृत्यु भए गेल। डा. सुभद्र झा नेपाल दरवार-पुस्तकालयमे उपलब्ध हलायुध मिश्रकृत 'ब्राह्मण-सर्वस्व'क विद्यापतिक एक छात्र द्वारा 341 ल. स.मे तैयार कएल गेल प्रतिलिपिक आधार पर विद्यापतिक मृत्यु 1448 सँ 1461 ई. धरि मानैत छथि। मुदा जाहि विद्यापतिक छात्र द्वारा एकर प्रतिलिपि भेल, से 'ठक्कुर' नहि, 'उपाध्याय' छलाह। अतः ओ विद्यापति निस्सन्देह हमरालोकनिक महाकवि नहि छलाह। डा. उमेश मिश्रक अनुसार हिनक देहान्त 1446 ई.क समकाल भेल। डा. जयकान्त मिश्र हिनक देहान्त 1448 ई.क अक्टूबरमे मानैत छथि, किन्तु उपर्युक्त तथ्यक आधार पर पं. शशिनाथ झा हिनक मृत्युक तिथि 1450 मानैत छथि। एतावता सब प्रकारें सिद्ध होइत अछि जे ओ दीर्घजीवी छलाह।

3. जीवनक प्रमुख वृतान्त - विद्यापति बाल्यावस्थाक विषयमे कोनो प्रामाणिक विवरण प्राप्त नहि होइत अछि। मिथिलामे प्रसिद्ध प्रवादक अनुसार ओ शिक्षाक हेतु नैमिषारण्य वास कएने छलाह। किन्तु मिथिलामे इहो प्रवाद प्रसिद्ध अछि जे जगद्गुरु पक्षधर मिश्रक पितृव्य म. म. हरि मिश्र हिनक गुरु छलथिन्ह। दोसर, मध्यकालमे मिथिला स्वयं विद्याक विशिष्ट केन्द्र छल, तखन हुनका शिक्षाक हेतु आन ठाम जएबाक प्रयोजने किएक पड़ल होएतैन्हि ?

वस्तुतः विद्यापतिक जीवनवृत्त तत्कालीन नरपतिलोकनिक उत्थान-पतनक संग सम्बन्धित अछि। विद्यापतिक पूर्वजलोकनि मिथिलाक राजालोकनिक ओहिठाक उच्च-पद पर आसीन होइत आबि रहल छलाह। तें ओ बाल्यावस्थहिसँ राजदरबारक

सम्पर्कमे आबि गेलाह। राजा शिवसिंहक संग जे हुनक एतेक घनिष्ठ परिचय भेटैत अछि, से बाल्यावस्थहिसँ विकसित होइत रहल छल। एना विद्यापतिक राय भोगीश्वरसँ लए म. भैरवसिंह धरिक संग किछु-ने-किछु सम्बन्ध रहबे कएल, किन्तु म. कीर्ति सिंह ओ म. शिवसिंह संग हुनक घनिष्ठ सम्बन्ध छल। म. कीर्तिसिंह अल्पायु भेलाह, किन्तु *'कीर्तिलता'* लिखि ओ हुनक नामकें अमर कए देल। म. शिवसिंहक आज्ञासँ *'पुरुषपरीक्षा'*, *'गोरक्ष-विजय'* ओ *'कीर्त्तिपताका'* लिखलैन्हि। एकर अतिरिक्त अगणित पदावलीक रचना हिनके हेतु कएल। वस्तुतः विद्यापतिक समग्र कवित्व-साधना म. शिवसिंहक आश्रयहिंसे निष्पन्न भेल। म. शिवसिंहक पट्ट-महिषी लखिमा विदुषी ओ काव्यरस-मर्मज्ञा छलीह। तें जाहि पदमे शिवसिंह-लखिमाक भनिता अछि, से निस्सन्देह विद्यापतिक उत्कृष्ट पद सिद्ध भेल अछि। म. शिवसिंहक ओ कतबा विश्वासपात्र छलाह, से एहीसँ पता चलैत अछि जे युद्धमे जएबासँ पूर्व ओ अन्तःपुरक समग्र सुरक्षाक भार विद्यापति पर छाँड़ि देल। विद्यापति सेहो अपन कर्त्तव्यकें आजन्म निभाओल। हुनक अनुपस्थितिमे हुनक परिवारकें राजबनौली लए गेलाह आओर ओहीठाम अपन साहित्य-साधनाक केन्द्र बनाओल।

म. शिवसिंहक अन्तर्हित भए जएबाक पश्चात् 1406 सँ 1418 ई. धरि मिथिलाक हेतु बड़ विपत्तिक समय छल। यद्यपि बारह वर्ष धरि लखिमा पतिक नामपर राज्य करैत छलीह, मुदा राज्य सुचारु रुपसँ नहि चलैत छल। जौनपुरक सेना मिथिलाकें लूटि घूरि गेल छल। नहिआसँ देश आतंकित छल। लखिमा सेहो गजरथपुरमे नहि रहि गढबनौलीमें रहैत छलीह। संयोगसँ बैद्यनाथ बेजल नामक सूबेदार जौनपूरक दिसिसँ प्रान्तक शासन करबाक निमित्त पटना आएल। ओ चौहान राजपूत छल-विद्वान् तथा सहृदय। मिथिलाक हेतु ई एक नीक अवसर छल। अतः एहि ठामसँ एक प्रतिनिधिमण्डल सूबेदारसँ भेंट करबाक निमित्त पटना गेल ओ राज्य फेरसँ प्राप्त कएल। बैजलदेव सेहो इएह चाहैत छलाह, जाहिसँ अराजकता दूर हो। एहि प्रतिनिधिमण्डलक नेतृत्व मन्त्रिवर अमृतकर कएने छलाह, किन्तु एहिमे एक सदस्यक रुपमे विद्यापतिक हाथ प्रमुख छल। ओ कविता द्वारा सेहो बैजलदेवकें सन्तुष्ट कएल। 'विद्यापति-गीत-संग्रह'क पद संख्या 124मे ओ चन्दलदेवीक पति वैद्यनाथक शरण चाहैत छथि एवं 253 मे सेहो वैद्यनाथ आस्पद बैजलदेवकें चन्दलदेवीक पति कहल अछि।

म. शिवसिंहक अन्तर्हित होएबाक पश्चात् मातृभूमिक अराजकतासँ विद्यापति क्लेशित-चित्त छलाह, लखिमादेवीक सती भेलासँ हुनक हृदय विगलित भए गेलैन्हि। अवस्थो आब वृद्ध भए गेल छलैन्हि। एहने समयमे ओ अधिकांश निर्वेद-भाव-व्यंजक मैथिली पद ओ धार्मिक संस्कृत-ग्रन्थक रचना कएल। विद्यापति प्रसिद्ध शिवभक्त छलाह। हिनक 'शैवसर्वस्वसार' एवं अनेक महेशवानी-नचारी तकर प्रमाण थिक।

तीसर, उगनाक प्रसंग किम्वदन्ती एवं मौआँ-बाजितपुरमे मृत्युक समय गंगाजीक हुनक पाएर पखारबाक कथा एहि तथ्यकें प्रमाणित करैत अछि।

विद्यापतिक पारिवारिक जीवनक प्रसंग कोनो उल्लेखनीय विषय नहि अछि। प्राय: हुनक पारिवारिक जीवन सुखद छलैन्हि। पाँजिक अनुसार हिनका तीन गोट बालक भेलैन्हि-वाचस्पतिठाकुर, हरपतिठाकुर एवं नरपतिठाकुर। हिनक विवाह सकरिबार सं. हरिवंशझाक कन्यासँ भेल। 'दुल्लहि तोहर कतए छथि माएक आधार पर हुनका एकगोट कन्या दुल्लहि छलथिन्ह। हुनक पुत्र हरपति एवं पुत्रवधू चन्द्रकला सेहो सुकवि छलथिन्ह, जे विद्यापतिक हेतु सन्तोषक कारण रहल होएत।

4. भनिता - विद्यापति जाहि-जाहि राजा ओ सामन्तक सम्पर्कमे अएलाह, तनिका-तनिका हेतु किछु-ने-किछु पदक अवश्य रचना कएल। हुनक पदावलीमे अधिकांश भनितायुक्त रचनामे शिवसिंह (रूपनारायण) एवं हुनक अनेक पत्नी लखिमा, मोदवती, मेधावती, सुखमादेवीक उल्लेख अछि। ओहिसँ अतिरिक्त अन्य पदमे देवसिंह ओ हुनक पत्नी हासिनीदेवीक (रागतरंगिणी-पृ.46), देवसिंहक भ्राता त्रिपुरसिंहक पुत्र अर्जुनसिंह ओ हुनक पत्नी कमलादेवीक (नगेन्द्रनाथगुप्त पृ-99), धीरसिंहक पौत्र जगन्नारायणक पुत्र रुद्रसिंहक (न.ना. गु.-पद 613), राघवसिंह (ग्रियरसन-61) ओ हुनक पत्नी मोदवती तथा सोनमति प्रभृतिक चर्चा अछि। बैजलदेवक प्रसंग पहिनहिँ उल्लेख कए देल गेल अछि। अन्य पदमे नसरतसाह, गयासुद्दीन ओ बहरुद्दीन मलिक तीन गोट मुसलमानहुक नामक उल्लेख अछि। एकर अतिरिक्त एहनो कतोक व्यक्तिक चर्चा हुनक पदमे अछि जकर परिचय उपलब्ध नहि होइत अछि, यथा रमापति, दामोदर, जयराम,' कविराज, अमयमति, चम्पति प्रभृति। प्राय: ई छोट-छोट, सामन्त, कविक प्रियपात्र वा अन्यान्य व्यक्तिसभ रहल होएताह अथवा हिनकालोकनिक नाम पाछाँ जोड़ल गेल अथवा जाहि जाहि पदमे एहन नाम अछि से विद्यापतिक पद थिके नहि। एहि प्रसंग विशेष अनुसन्धानक प्रयोजन अछि।

5. उपनाम - विद्यापति अपन जीवितावस्थहिमे बड़ लोकप्रिय ओ प्रसिद्ध भए गेल छलाह। ओ अपन कवित्वक कारणे कतेक उपाधि-उपनामसँ विभूषित भए गेल छलाह। हुनक निम्नलिखित उपाधि कहल जाइत अछि-अभिनवजयदेव, महाराज पण्डित, सुकविकण्ठहार, सरस कवि, कविकण्ठहार, कविवर, सुकवि, नव जयदेव प्रभृति। भए सकैत अछि जे एहिमेसँ किछु आनो कविक उपाधि हो। किन्तु जाहि जाहि पदमे उपाधिक संग-संग विद्यापतिक नाम सेहो उल्लिखित अछि से निश्चित रूपसँ विद्यापतिक उपाधि थिक। एहन उपाधि अछि अभिनव-जयदेव ओ कविकण्ठहार-दुनु सर्वविदित ओ ई विख्यात। अभिनवजयदेव ई विरुदीक दानपत्रहुमे अछि।

कृतिक परिचय

संस्कृत ग्रन्थ :-

1. **भूपरिक्रमा** - एकर रचना विद्यापति कएल म. देवसिंहक आज्ञासँ नैमिषारण्यमे राय गणेश्वरक मृत्युक पश्चात् जखन ओ राज्यभ्रष्ट भेल ओहि ठाम रहैत छलाह। सुतवधहीन ब्रह्महत्याक पाप-मुक्तिक हेतु महर्षि धौम्यक आज्ञासँ बलदेव भूपरिक्रमा कएल, तकरे इतिवृत्त एहि ग्रन्थमे अछि। मुदा आठ गोट कथा सेहो अछि जे आगाँ 'पुरुष-परीक्षा'मे देल अछि। एकरा भूगोल ओ नीति दुनु विषयक ग्रन्थ कहि सकैत छी। भाषा-शैली आदि सब दृष्टिएँ ई विद्यापतिक प्रथम ग्रन्थ सिद्ध होइत अछि।

2. **पुरुष-परीक्षा** - पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि परम्पराक ई संस्कृत नीतिकथा थिक। एकर आदिक आठ गोट कथा 'भूपरिक्रमा'से अछि। एहिमे विद्यापति वास्तविक पुरुषक परिभाषा-

वीरः सुधीः सविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान्।
तदन्ये पुरुषाकाराः पशवः पुच्छवर्जिताः।।

-दए वीर, सुधी, सविद्य ओ पुरुषार्थवानक उदाहरण-प्रत्युदाहरणक संग चारि परिच्छेदमे वर्णन कएल अछि। एकर भाषा प्रगल्भ ओ प्रसादपूर्ण अछि। ई बड़ लोकप्रिय भेल अछि। लार्डविशप टर्नरक आदेश- सँ राजा कालीकृष्ण बहादुर 1830 ई.मे अंगरेजीमे, हरप्रसादराय 1896 ई.मे बंगलामे एवं चन्दा झा सेहो मैथिलीमे अनुवाद कएल। प्रो. रमानाथ झाक संस्करणमे चन्दाझाक गद्य-पद्य अनुवाद ओ हुनकहु द्वारा कएल आधुनिक मैथिली गद्यमे अनुवाद अछि।

3. **शैवसर्वस्वसार ओ शैवसर्वस्वार प्रमाणभूत पुराणसंग्रह** - एकर रचना म. पद्मसिंहक धर्मपत्नी विश्वास देवीक आज्ञासँ भेल। आरम्भमे विश्वासदेवीक सविस्तार यशोगान अछि। एहि ग्रन्थमे शिवपुजासम्बन्धी विधि-विधानक वर्णन कएल गेल अछि। एकर खण्डित हस्तलेख दरभंगा राज पुस्तकालय (सम्प्रति दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय)मे सुरक्षित अछि।

4. **गंगावाक्यावली** - एकर शैली हिनक अन्य नैबन्धिक ग्रन्थ 'दानवाक्यावली' ओ 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'सँ मिलैत अछि। एहिमे गंगाक स्मरण-कीर्तनसँ लए गंगातट पर प्राणविसर्जन धरिक विधिविधानक उल्लेख कएल गेल अछि। 'शैवसर्वस्वसार' जकाँ एहि ग्रन्थक लेखकक रूपमे विश्वासदेवीक उल्लेख अछि। वस्तुत: विश्वासदेवी प्रयोजक कार्य केनिहि, विद्यापति प्रयोज्य कर्ताक रूपमे छथि।

5. विभागसार - एकर रचना दर्पनारायण नरसिंह आज्ञासँ भेल। एहिमे दायभागक संक्षेपमे उल्लेख भेल अछि।

6. दानवाक्यावली - एकर रचना दर्पनारायण नरसिंहक रानी धीरमतिक आज्ञासँ भेल। दानक प्रकार, विधिविधान तथा देश, काल ओ पात्रक सविस्तर वर्णन भेल अछि। एहिमे ठेठ मैथिलीक किछु शब्दक विभक्ति-तथा कर प्रयोग भेटैत अछि, यथा-सातनि, साठी।

7. दुर्गाभक्ति-तरंगिणी - दुइ तरंगक एहि ग्रन्थक रचना दर्पनारायण नरसिंहक पुत्र म. धीरसिंहक आज्ञासँ भेल। प्रथम तरंगमे दुर्गापूजाक विधिविधान-मूर्तिनिर्माण, प्रतिमानिवेशन आदिक प्रामाणिक विशद वर्णन तथा दोसर तरंगमे पूजाक पद्धति अछि। ग्रन्थारम्भक श्लोकसँ ज्ञात होइत अछि जे एकर रचनाक समय महाराज धीरसिंह ओ म. भैरव सिंहक पिता म. नरसिंहदेव सेहो जीवितहि छलाह।

8. मणिमंजरी - ई एक नाटिका थिक। एहिमे राजा चन्द्रसेन ओ मणिमंजरीक कथा वर्णित अछि। आरम्भहिमे सूत्रधार कहैत अछि-"परिषद्‌क आदेश भेल अछि जे विद्यापतिक 'मणिमंजरी' नामक नाटकक अभिनय करी"। 1663 शाकेमे लिखल एकर एक हस्तलेख प्रतिलिपि पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि। एकरे आधार पर प्रो. रमानाथ झा द्वारा सम्पादित भए एकर प्रकाशन पटना विश्वविद्यालय द्वारा भेल।

9. लिखनावली - राजा शिवसिंहक अन्तर्हित भेला पर जखन सप्तरी परगनाक राजबनौलीमे रहैत छलाह, तखने विद्यापति एकर रचना गिरिनारायण पुरादित्यक आज्ञासँ कएल। एहिमे पत्र लिखबाक परिपाटीक उल्लेख अछि। एहिमे सभ मिलाए चौंसठ पत्र अछि, जाहिमे कतेक पत्रमे 299 ल. स. क उल्लेख अछि। प्रायः ओही समयक ई रचनासब थिक। 'लिखनावली'मे तत्कालीन सामाजिक ओ सांस्कृतिक अवस्थाक परिचय भेटैत अछि। एही दृष्टिएँ एकर ऐतिहासिक महत्व अछि। एकर एक छोट सुन्दर संस्करण डा. इन्द्रकान्त झा द्वारा सम्पादित भए प्रकाशित भेल।

10. गयापत्तलक - सकललोककल्याणार्थ एकर रचना भेल; कारण एहिमे कोनो आश्रयदाताक उल्लेख नहि अछि।

11. वर्षकृत्य - एहि वर्ष-कृत्य मे तिथिद्वैधक विशद विवेचन भेल अछि जे मिथिलामे प्रचलित अन्य 'वर्षकृत्य'मे नहि अछि। एकर रचना ककरा आज्ञासँ कएल से

स्पष्ट नहि अछि, खाली रूपनारायणक चर्चा अछि। ओइनवार वंशमे तीनटा रूपनारायण भेलाह। दुइटा रूपनारायण हुनक समकालीन छलाह-शिवसिंह ओ चन्द्रसिंह। मुदा विद्यापति सब शास्त्रीय ग्रन्थक रचना शिवसिंहक परोक्ष भेलाक पश्चात् कएल। तेँ ओ एकर रचना रूपनारायण चन्द्रसिंहक समयमे कएने होएताह, से सम्भव। गयापत्तलक ओ वर्षकृत्य दुनू अपूर्ण अछि। एहि मध्य प्रस्तावनाक कथा कोन, मंगल-श्लोक पर्यन्त नहि अछि। तेँ एकरा दुनूकेँ ग्रन्थ नहि कहब।

12. व्याड़ि-भक्ति-तरंगिणी - '*दुर्गाभक्ति-तरंगिणी*'क शैलीमे रचित एहि ग्रन्थमे सर्प-पूजाक विधि-विधान ओ पद्धतिक समावेश अछि। एकर रचना विद्यापति दर्पनारायण म. नरसिंहक राज्यकालमे कएल। एकर पाण्डुलिपि ढाका विश्वविद्यालयमे सुरक्षित अछि।

अवहट्ठ कृति :-

1. कीर्तिलता - ई अवहट्ठक गद्यपद्यमय ग्रन्थ थिक। म. कीर्तिसिंहक यशोगान एकर लक्ष्य बूझि पड़ैत अछि। एकर रचना ऐतिहासिक चरित्काव्य-परम्परामे भेल अछि। चारि पल्लवक एहि काव्यमे उपनिबद्ध कथाक विस्तार भृंगी-भृंगक प्रश्नोत्तर रूपमे होइत अछि। असलान नामक यवन द्वारा म. कीर्तिसिंहक पिता गणेश्वर रायक हत्या एवं राज्यापहरणक पश्चात् म. कीर्तिसिंहक अपन अग्रज वीर सिंहक संग जौनपुर जएबाक एवं ओहिठामक सुलतानक सहायतासँ असलानकेँ युद्धमे परास्त कए पुनः राज्य प्राप्त करबाक तथा पितृवधक प्रतिशोध लेबाक कथा एहिमे वर्णित अछि। चरित-काव्यक लक्षणक अनुसार एकर आरम्भ सज्जनक प्रशंसा ओ खलनिन्दासँ होइत अछि तथा कथाक वर्णनक संग-संग नगर ओ युद्धक सविस्तर वर्णन भेल अछि।

सर्वप्रथम म. म. हरप्रसादशास्त्री नेपाल-दरबार पुस्तकालयमे उपलब्ध एक प्राचीन प्रतिलिपिक आधारपर एकरा प्रकाशित कएल। हिन्दीमे डा. बाबूराम सक्सेना एवं डा. श्री शिवप्रसादसिंह द्वारा सम्पादित 'कीर्तिलता'क संस्करण विशेष लोकप्रिय भेल अछि, मुदा डा. वासुदेवशरण अग्रवालक संस्करण सबसँ विशेष उपादेय भेल अछि। प्रो. रमानाथ झा द्वारा सम्पादित भए एकर चन्दा झाक प्रतिलिपिक आधार पर अभिनव संशोधित संस्करण पटना विश्वविद्यालय दिसिसँ सेहो मुद्रित भेल।

विद्यापतिक रचनासभमे 'कीर्तिलता'क बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहि कृतिक आधार पर विद्यापतिक आविर्भाव-कालक अनुमान कएल गेल अछि कारण, एकर दोसर पल्लवमे गणेश्वर रायक मृत्युकालक स्पष्ट उल्लेख अछि। किन्तु एकर अन्तिम श्लोकमे म. म. हर प्रसाद शास्त्री 'खेलन कवि'क जे पाठ देल अछि, ताहिसँ भ्रमक सेहो बड़ प्रचार भेल जे ई विद्यापतिक प्रथम ग्रन्थ थिक। डा. उमेश मिश्र,

डा. विमान विहारी मजुमदार, डा. जयकान्त मिश्र, डा. उपेन्द्र ठाकुर प्रभृतिक द्वारा सेहो इएह पाठ शुद्ध मानि लेल गेल। परन्तु वस्तुतः ई पाठ 'खेलन' नहि 'खेलतु' होएबाक चाही; कारण एक तँ नेपालीक पोथी सर्वसुलभ नहि अछि जे तकर पुनर्परीक्षण सहजहिं हो, दोसर रायल एसिएटिक सोसाइटी, बम्बई तथा अनूप पुस्तकालय, विकानेरक प्राचीन पाण्डुलिपि एवं चन्दा झा द्वारा लिखल जायसवाल रिसर्च इन्स्टीच्युटमे सुरक्षित प्रतिलिपिमे 'खेलतु' पाठ छैक। एकर रचना-शैली एवं शब्द-विन्यास जेहन परिमार्जित अछि, ताहिसँ ई हुनक प्रौढ़ रचना सएह सिद्ध होइत अछि। डा. सुभद्र झा एवं पं. शशिनाथ झा एहि तथ्यक आधार पर एकरा कविक प्रौढ़ावस्थाक रचना मानैत छथि।

बालचन्द विज्जावइ भासा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ-

मे अपन भाषाक गौरव प्रति ओ जेहन स्वाभिमान प्रकट कएल अछि, सेहो एकरा हिनक प्रौढ़ावस्थाक रचना सिद्ध करैत अछि।

'कीर्तिलता'क महत्व अछि अवहट्ठ-भाषाक दृष्टिएँ तथा तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक अवस्थाक विशद चित्रणक दृष्टिएँ। मिथिलामे अपभ्रंश-साहित्य विशेष उपलब्ध नहि अछि। तेँ आधुनिक मैथिली भाषाक विकासक अध्ययनक हेतु एहि ग्रन्थक विशेष महत्व अछि। विद्यापतिक मैथिली पदावलीक भाषाक पूर्वक मिथिला भाषाक की स्थिति रहल होएत, तकर अनुमानक साधन 'बौद्धगान' ओ 'प्राकृतपिंगल'क पश्चात् एकरे भाषा अछि। विद्यापति एकरा *'देसिल बअना'* कहल अछि। तेँ विद्यापतिक समयमे एहि भाषाक प्रचार रहल होएत साहित्यिक माध्यमक हेतु, तकर अनुमान सहजहिं कएल जा सकैत अछि। मुदा ई भाषा 'देसिल बअना' रहल होएत विद्यापतिसँ पूर्वयुगक, 'वर्णरत्नाकर'हुक पूर्वक। पूर्वक अध्यायमे 'प्राकृतपिंगल'सँ जे उद्धरण देल गेल अछि, ताहिसँ एकर भाषा मिलैत अछि। अधिकांश विद्वानक मन्तव्य अछि जे ई भाषा मिथिलापभ्रंश थिक जाहिमे सौरसेनी अपभ्रंशक प्रभाव स्पष्ट अछि। वस्तुतः से सर्वथा समीचीन थिक।

एहि रचनामे सामाजिक ओ राजनीतिक स्थितिक बड़ यथातथ्य चितांकन भेल अछि। ताबत मुसलमानलोकनि अपन राज्यकेँ स्थिर कए लेने छलाह ओ हिन्दूलोकनि पर हुनक अन्याय ओ अत्याचार बड़ बढ़ि गेल छल। 'कीर्तिलता'क द्वितीय पल्लवमे हिन्दूपर मुसलमानक अन्यायक बड़ नग्न चित्र भेटैत अछि:-

हिन्दू तुरके मिलल वास। एकक धम्मे अओकाउपहास।
कतहु तुरुक वर कर। बाट जाइते बेगार धर।

धरि आनए वाभन बटुआ। मथाँ चढ़ाबए गाइक चुडुआ।
फोट घाट जनेऊ तोर। उपर चढ़ावए चाह घोर।

'कीर्तिलता'मे मुसलमानलोकनिक जेहन वर्णन भेल अछि, ताहिसँ मुसलमानक प्रति हिन्दूक अश्रद्धाभाव नीक जकाँ व्यक्त होइत अछि:-

अति गह सुमर षोदाए षाए ले भाँगक गुण्डा
बिनु कारणहि कोहाए वएन तातल तम कुण्डा
तुरुक तोषारहि चलल हाट भम हेडा चाहइ
आड़ी डीठि निहार दबलि दाढ़ी थुक वाहइ

मिथिलामे वर्तमान तत्कालीन सामाजिक दुरस्थिति एवं राजनीतिक अराजकताक बड़ यथार्थ चित्र निम्नलिखित पंक्तिमे भेटैत अछि:-

ठाकुर ठग भएँ गेल चोरेँ छप्परि घर लिज्जिअ
दास गोसाउँनि गहिअ धम्म गए धन्ध निमज्जिअ
खले सज्जन परिभविअ कोइ नहि होए विचारक
जाति अजाति विवाह अधम उत्तम काँ पारक
अक्खर रस बुज्झनिहार नहि कइकुल भमि भिक्खारि भउँ
तिरहुत्ति तिरोहित सव्व गुणे रा गणेश जवे सग्ग गउँ

विद्यापतिक रचनामे सर्वत्र काव्य-कौशल भेटैत अछि। 'कीर्तिलता' सेहो तकर अपवाद नहि। एहूमे कविक कवित्व-भावना ठाम-ठाम बड़ स्फुट भए उठैत अछि, विशेषतः नगर-वर्णनक प्रसंग वेश्यावर्णनमे; यथा **"तन्हि केश कुसुम वस जनि मान्य जनक लज्जावलम्बित मुखचन्द्रिका करी अधओगति देखि अन्धकार हँस"**। एही प्रकारेँ अलंकारक चमत्कारक संग-संग वर्णन-विषयक चित्रमयता सर्वत्र रमणीय भेल अछि।

(क) कीर्तिपताका - विद्यापतिक दोसर अवहट्ठभाषाक ग्रन्थ थिक 'कीर्त्तिपताका'। एहि मध्य म. शिवसिंहक दश-प्रशस्ति अछि। एहि ग्रन्थक रचना मुख्यतः दोहा ओ छन्दमे अछि, मुदा कतहु-कतहु संस्कृतक श्लोक सेहो अछि ओ मध्य-मध्यमे गद्यक रचना सेहो अछि। प्रारम्भमे अर्द्धनारीश्वर, शिव ओ गणपतिक वन्दनाक पश्चात् कवि सुजनकेँ कहल अछि:-

पण्डिअ मण्डलि बद्धगुणे भीषम कीर मुहेन
वाणी महुर महग्घ रस पिअउ सुअन सबलेन।।

तत्पश्चात् म. शिवसिंहक आचरणक वर्णन करैत अवहट्ठ गद्यक रचना अछि-

"धम्म देखी व्यवहार लोक नहि, महइ पर भेद। सबकाँ घर उब्बाह पलटि जनि जन्मिअ। बाहर दाने दलइ। दारिद्द सग्गोपरि पड़ी खण्डिअ......तिरहुति कतिपय मज्जादा बहि रहिअ" आदि।

म. शिवसिंहक प्रशंसाक अनन्तर कतिपय शृंगारिक पद्य अछि जाहि मध्य ओ कहैत छथि-

कवि महं नवजयदेव कवि रसमह एहु सिंगार।
जयत सिंह रिपुराज मह तीनिउ त्रिभुवन सार।।

पुनः धर्म ओ शृंगारक प्रसंग हुनक मन्तव्य अछि :-

"धम्म सहित सिंगार रस कव्व कला वर रंग"

शृंगाररसक प्रशस्तिक पश्चात् विद्यापति एहि ग्रन्थमे सुलतानक संग म. शिवसिंहक युद्धक विस्तृत वर्णन कएल अछि ओ एहि ग्रन्थक इएह मुख्य विषय थिक। एकरा 'वीरगाथा-काव्य' कहल जा सकैत अछि।

एहि ग्रन्थक एकमात्र खण्डित प्रति नेपाल दरबार पुस्तकालयमे उपलब्ध अछि जकर बीचक 22 गोट पत्र हेराएल अछि, जे पत्र अछिओ तकरहु मध्य पंक्तिसब छूटल अछि। एहि पाण्डुलिपिक आधार पर डा. उमेश मिश्र 'कीर्तिपताका'क एक गोट संस्करण सम्पादित कए प्रकाशित कए चुकल छथि। मुदा ओकर पाठ भ्रष्ट ओ अकार्यक अछि। विद्वानसबहिक मत अछि जे वर्तमान उपलब्ध 'कीर्तिपताका'क पूर्वांश 'कीर्तिपताका'क नहि, कोनहुँ अन्य अवहट्ठ काव्य-ग्रन्थक अंश थिक, प्रायः भीषम कवि-रचित जे एहिमे मिझराए गेल अछि।

मैथिली कृति

1. **गोरक्षविजय** - ई विद्यापतिक संस्कृत नाटक थिक, जाहिमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि, डा. कान्त मिश्र जकरा किर्तनियाँ नाटक कहल अछि, ताही परम्पराक ई पुस्तक थिक। एहि नाटकहुक रचना विद्यापति म. शिवसिंहक आज्ञासँ भगवान भैरवक प्रसादार्थ कएल। एहिमे गोरक्षनाथ एवं मत्स्येन्द्रनाथक कथाक वर्णन अछि, जे नटक उक्तिसँ सिद्ध होइत अछि। दोसरः मैथिली पदक भनितामे सेहो

बारंबार हुनके चर्चा होइत अछि। एहिमे शृंगार, अद्भुत एवं शान्तरसक समावेश प्रचुर मात्रामे भेल अछि।

विद्यापतिक एहि कृतिक महत्व ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'हुसँ अधिक अछि। प्रो. तन्त्रनाथ झा एकर दुइ कारणक उल्लेख कएने छथि:- 1. 'वर्ण-रत्नाकर'सँ कोनहु काव्य-स्रोतक आरम्भ नहि भेल, किन्तु 'गोरक्षविजय'सँ आरम्भ भए हर्षनाथ धरि एहि रुपक काव्यस्रोत बराबरि प्रवाहित होइत रहल। 2. जँ 'वर्णरत्नाकर' उत्तर भारतक भाषा मध्य प्रायः सबसँ प्राचीन गद्यकाव्य थिक तँ 'गोरक्षविजय' संस्कृत-प्राकृतसँ भिन्न समस्त भारतीय भाषा मध्य प्राचीनतम नाटक थिक। 'मुदा 'धूर्त-समागम'मे मैथिली पद भेटि गेलासँ एहि परम्पराक एहूसँ प्राचीन नाटक ओएह सिद्ध होइत अछि। तथापि एकर महत्व कम नहि होइत अछि, कारण, एहिसँ सिद्ध अछि जे विद्यापति एहू विधाक प्रयोग कएल। डा. जयकान्तमिश्रक अनुसार खण्डबलाराज्यक स्थापनाक पश्चात् मिथिलामे मैथिली नाटकक परम्पराक विकास भेल, से 'धूर्तसमागम' ओ एकर आधार पर भ्रामक सिद्ध होइत अछि।

'गोरक्षविजय'क एक प्रतिलिपि मात्र नेपाल दरबार पुस्तकालयमे उपलब्ध अछि जे एक तँ खण्डित अछि, दोसर मध्यक 6-7 संख्यक पत्र नहि अछि। एकर फोटो चित्र डा. उमेशमिश्र द्वारा कएल देवनागरी प्रतिलिपिक संग अखिल भारतीय मैथिली साहित्य-समिति, प्रयाग द्वारा प्रकाशित भए चुकल अछि। किन्तु देवनागरीमे देल पाठ बड़ खण्डित ओ भ्रामक अछि। प्रो. रमानाथ झा द्वारा देवनागरीमे लिखल 'गोरक्षविजय'क प्रतिलिपि हमरा संगमे अछि। एहि प्रतिलिपि ओ डा. मिश्रक प्रतिलिपिसे बड़ अन्तर अछि। पं. शशिनाथ झा उपलब्ध सब सामग्रीक उपयोग कए एकर एकटा अभिनव संस्करण दरभंगा-संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करबाओल अछि।

2. **मैथिली पदावली** - वस्तुतः हिनक यशक मेरुदण्ड हिनक मैथिली पदावली थिक। हिनक लोकप्रियताक प्रकाश जे मिथिलासँ बहार भए प्राच्यपाश्चात्य प्रदेशमे पसरि गेल, से मैथिली पदहिक बल पर। किन्तु पदावली सम्पूर्ण कतहु एकत्र संकलित नहि अछि, कविक हाथसँ लिखल तँ कतहु नहि अछि। तैं ई कहब कठिन जे ओ कतेक लिखलैन्हि ओ ओकर मूल-पाठ की छल होएत। आइ जे पद उपलब्ध अछि, से थिक प्राचीन पदक संकलन, पाण्डुलिपिमे प्राप्त एवं लोककण्ठसँ प्राप्त। विद्यापतिक पद एतेक लोकप्रिय भेल आबि रहल अछि जे कालक्रमे ओहिमे कतेक परिवर्तन भए गेल होएत। प्राचीन संकलनक जे पाण्डुलिपि प्राप्त भेल अछि से जर्जर, खण्डित, स्थान-स्थान पर अक्षर, शब्द ओ वाक्य मेटाएल ओ फाटल, तैं भ्रामक। दोसर, एक प्रतिलिपिमे प्राप्त पदक पाठ अन्य प्रतिलिपिमे ओहि पदक पाठसँ भिन्न। अतः विद्यापतिक पदक

मूल-स्वरुप केहन छल, से निश्चित रुपसँ कहब कठिन। सबसँ प्राचीन संकलन-नेपालमे प्राप्त एवं "विशुद्ध विद्यापति-पदावली" विद्यापतिसँ कमसँ कम एक शताब्दीक पश्चातक संकलन थिक। तेँ विद्यापतिक पदक मूल-रुपक अनुमानेटा कएल जा सकैत अछि।

जाहि-जाहि ठामसँ विद्यापतिक पदावली उपलब्ध भेल अछि, तकर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कएल जाइत अछि। (क) नेपाल पदावली - ई पदावली नेपाल दरबार-पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि आओर एही पदावलीक दुइ संस्करण भेल अछि प्रथम, डा. सुभद्र झा-द्वारा 'विद्यापतिक-गीत-संग्रह'क नामसँ एवं दोसर, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् दिसिसँ। लिपिविशेषज्ञक अनुसार ई 18म शताब्दीक आरम्भिक कालक संकलन थिक। किन्तु प्राचीन तिरहुतालिपि एवं एकर लिपिमे कोनहु अन्तर नहि अछि, तेँ एकरा ओहूसँ प्राचीन मानि सकैत छी। डा. सुभद्रझा भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ विचार करैत एकरा सोलहम शताब्दीसँ नवीन नहि मानैत छथि।

एहि पदावलीमे कुल 284 पद संकलित अछि। 261 पदमे विद्यापतिक भनिता अछि, किन्तु 13 गोट पद अन्य कविक-राजपण्डित (30), कंसनूपति (41), आतम (48), कंसनारायण (56), विष्णुपुरी (60), लखिमिनाथ (130), रतन (132), सिरिधर (146), नृपमल्लदेव (170), अमृतकर (175), अमिड.कर (179), पृथ्वीचन्द (204), भानु (224), धीरेसर (269), तथा रुद्रधर (270) क। कतेक एहनो अछि जाहिमे कोनो कविक नाम नहि अछि।

(ख) रामभद्रपुरपदावली - ई पदावली रामभद्रपुरमे प्राप्त भेल, सम्प्रति पटना विशवविद्यालय पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि। ई सम्पूर्ण नहि, खण्डित अछि। प्राप्त संकलनक अन्तिम पदसंख्या 448 अछि ओ सेहो खण्डित। ई पदसंख्या 10 ओ पदसंख्या 28 सँ आरम्भ होइत अछि। बीच-बीचक पत हेराएल अछि। कुल मिलाए एहिमे 96 पद भेटैत अछि, जाहिमे प्रथम ओ अन्तिम पद खण्डित अछि। एकरे आधार पर पं. शिवनन्दनठाकुर विद्यापतिक 'विशुद्ध-पदावली' प्रकाशित कएने छलाह-84 गोट पद मातक संकलन। एहि पोथीमे दुइटा अवश्य अमृतकरक भनितासँ युक्त पद अछि, किन्तु दसटा पदक संकलन करब ओ किएक छोड़ि देल, से नहि जानि। डा. सुभद्रझाक अनुसार इहो पदावली नेपालपदावलीक समकालिक संकलन थिक। तेँ भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ एकरहु महत्व नेपालपदावलीक समाने अछि।

(ग) तरौनी-पदावली-तरौनी गामक स्व. लोकनाथझाक ओहि ठाम श्रीमद्भागवतक संग इहो सुरक्षित छल। स्व. मोहिनीमोहनदत्त जखन दरभंगाक मुन्सिफ छलाह, तखन एकरा उपलब्ध कएल। ओहि दत्तसाहेबसँ नगेन्द्रनाथ गुप्त एकरा

प्राप्त कए अपन विद्यापति-पदावलीमे उपयोग कएल एवं पाण्डुलिपिकेँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे जमा कए देल। किन्तु पाछाँ पुनः आवश्यकता पड़ला पर ओ पाण्डुलिपि हुनका नहि भेटलैन्हि। तेँ ई पदावली आब उपलब्ध नहि अछि। अतः एहि विषयक नगेन्द्रनाथगुप्त जे विवरण देल अछि, सएहटा आब शेष अछि। नगेन्द्रनाथगुप्तक अनुसार एहिमे 350 पद छल, जकरा ओ अपन विद्यापतिपदावलीमे संकलित कए प्रकाशित कए देलैन्हि। किन्तु ओहिमे गणना कएलाक पश्चात् पता चलैत अछि जे ओहिमे ओहि पदावलीक 239 पद मात्र संकलित अछि। तेँ गुप्तजीक वक्तव्य परस्पर विरोधी बुझि पड़ैत अछि। किन्तु जएह प्रकाशित अछि, ताहीसँ स्पष्ट अछि जे ओहिमे आनो कविक रचना संकलित छल, जकरा विद्यापतिक रचना मानि अपन पदावलीमे ओ लए लेल अछि यथा, 784 पद, एकर भनितामे विद्यापतिक नहि, 'पंचानन'क नाम अछि।

(घ) रागतरंगिणी - लोचनकृत 'रागतरंगिणी'मे विद्यापतिक 51 टा पद अछि। लोचन म. महिनाथठाकुर एवं प. नरपति ठाकुरक आश्रित कवि छलाह। म. महिनाथठाकुरक राज्यकाल 1668 ई.सँ 1690 ई. मानल जाइत अछि, तेँ ई 300 वर्षक पुरान संकलन अवश्य अछि। 'रागतरंगिणीक दुइटा संस्करण प्रकाशित अछि-राज प्रेस द्वारा सं. 1991क एवं पटना विश्वविद्यालय द्वारा शाके 1886क। एमहर पं. शशिनाथ झा द्वारा संपादित भए 'मैथिली अकादमी' द्वारा एकटा एकर नवीन संस्करण सेहो प्रकाशित भेल अछि। एहि ग्रन्थक विशेष महत्व अछि, कारण, मिथिलाक संगीत-शास्त्रक ई सबसँ प्राचीन ग्रन्थ थिक जे विद्यापति-सम्प्रदायक प्राचीन काव्य-परम्पराक वैशिष्ट्य पर सबसँ अधिक प्रकाश दैत अछि, विशेषतः संगीत ओ छन्दक अन्योन्याश्रित सम्बन्धक प्रमाणक दृष्टिएँ। एहि विषय पर आगाँ विचार करब।

(ड.) भाषागीत-संग्रह - सन् 1967 ई.क ग्रीष्ममे प्रो. रमानाथझा काठमाण्डूक यात्रा कए नेपालक राष्ट्रीय पुस्तकालयमे भाषागीतसंग्रहक अनुसन्धान कएल, जाहि मध्य विभिन्न कविक कुल 146 गीत संगृहीत अछि ओ ताहि मध्य अठसठि गोट विद्यापतिक अछि। एहि अठसठि गोट गीतमे सँएतीस गोट पूर्वप्रकाशित छल, शेष 31 गोट गीत सर्वथा नवीन अछि। एहि भाषागीतसंग्रहक प्रकाशन हुनकहि द्वारा सम्पादित भए 1969 ई.मे पटना विश्वविद्यालयक मैथिलीविकास-कोष दिसिसँ भेल। एहि प्रकाशित संस्करणक परिशिष्टमे एक गोट तालपत्र पर प्राप्त विद्यापतिक दुइ गोट गीत तथा जगज्जयोतिर्मल्लक 'हर-गौरीविवाह'मे प्रयुक्त सात गोट गीत सेहो सम्मिलित कए देल गेल अछि। एहि प्रकार 'भाषा-गीत-संग्रह'क प्रकाशित संकलनमे विद्यापतिक कुल मिलाए सतहत्तरि गोट गीत अछि, जाहि मध्य चालीस गोट गीत प्रकाशित शेष ताहिसँ पूर्व अप्रकाशित छल।

एहि संग्रहक विशिष्टता ई जे अद्यावधि प्राप्त अन्यान्य संग्रह एतेक परिशुद्ध

रीतिएँ लिखल नहि भेटल छल। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे एकर संग्रह-कर्ता केओ पण्डित छलाह, किन्तु से के छलाह, तकर उल्लेख एहि मध्य नहि अछि, मुदा छलाह धरि ओ मैथिल पण्डित जे नेपालक कोनो राजाक आश्रित भए एकरा लिखल। जे किछु हो, ई संग्रह विद्यापति-पदावलीक कतेक भ्रष्ट पाठकेँ परिशुद्ध करबामे सहायक सिद्ध भए सकैत अछि।

एहि संग्रहमे 17म शताब्दीक उत्तरार्द्धमे अवतीर्ण मिथिलाक गोविन्ददास, रामदास, लोचन, उमापति प्रभृति प्रख्यात कविगणक रचना संगृहीत नहि अछि। ललितपुरक राजा प्रतापमल्ल (1639-89), पाटनक निवासमल्ल तथा भातगाँवक जगज्जयोतिर्मल्ल ओ हुनक दरबारक महाकविवंशमणिक रचना सेहो एहि मध्य समाविष्ट नहि अछि तथा 'रागतरंगिणी'क अनेक कविक रचना सेहो एहि मध्य नहि अछि। अतः एहिसब कारणे एकर 'रागतरंगिणी'सँ किछु पूर्वक, 17म शताब्दीक मध्यक संग्रह निश्चयपूर्वक कहल जाए सकैत अछि।

(च) **नानारागगीतम्** - विद्यापतिक गीतक नव स्रोतक चर्चा करैत प्रो. लक्ष्मीकान्तझा 'नानारागगीतम्'क संक्षिप्त विवरण चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगाक पत्रिकामे सर्वप्रथम प्रकाशित कएल। नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयक प्रथम सूचीक क्रमसंख्या 391क ई. पाण्डुलिपि थिक। एहि मध्य विभिन्न रागक उदाहरण-स्वरुप कुल मिलाए 198 गोट पद संगृहीत अछि, जाहि मध्य 141 गोट पद भनिताहीन अछि। एहू संग्रहमे सर्वाधिक संख्यक 29 गोट पद विद्यापतिक संगृहीत अछि, 19 गोट भनितायुक्त एवं शेष अपूर्ण भनिताहीन।

'नानारागगीतम्' सुस्पष्ट नेवारीलिपिमे लिखल अछि, प्रायः नेवारी भाषा-भाषी लिपिकारक द्वारा। प्रो. झा एकरा कम-सँ-कम दुइ सए वर्ष पूर्वक संग्रह अवश्य मानैत छथि, मुदा एहि मध्य सधुक्कड़ी भाषाक दुइ गोट पद सेहो संकलित अछि, अतः शंका उत्पन्न होइत अछि। अन्तिम रुपसँ एकर संग्रहकालक विषयमे सम्प्रति किछु नहि कहल जाए सकैत अछि।

(छ) **वैष्णवपदावली** - जाहि वैष्णव पदावली मध्य विद्यापतिक पदसभ संकलित अछि, तकर संख्या अनेक अछि यथा राधामोहनठाकुरक *'पदामृत-समुद्र'*, गोकुलानन्दसेनक *'पदकल्पतरु'*, दीनबन्धुदासक *'संकीर्तनामृत'*, कोनो अज्ञात व्यक्ति द्वारा संकलित *'कीर्तनानन्द'*। एहिमे क्रमशः विद्यापतिक 64,161,10 एवं 58 गोट पद संकलित अछि। एकर अतिरिक्त कतेक अप्रकाशित पदावली सेहो अछि जे बंगीय साहित्यपरिषद, कलकत्ता विश्वविद्यालय पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन प्रभृति संस्था द्वारा सुरक्षित अछि। एहि सभ पदावलीक कतेक पद अन्य पदावलीमे नहि पाओल जाइत अछि। दोसर, ओहिसभमे एतेक भाषागत परिवर्तन भए गेलैक अछि जे ओ सरिपहुँ विद्यापतिक पद थिक, ताहिमे सन्देह होइत अछि।

(ज) **लोककण्ठसँ उपलब्ध पद** - एहि पद दिसि सबसँ पहिने ग्रियरसन साहेबक ध्यान गेल जखल ओ मधुबनीमे मैजिस्ट्रेट छलाह। ओ एहि प्रकारक 84 टा पदक संकलन कए ओकरा **'एन इनट्रोडक्सन टु द मैथिली लैंगुएज आफ नौर्थ बिहार कनटेनिंग ए ग्रामर एस्क्रेप्टोमैथि एण्ड भोकेबुलरी'** नामसँ प्रकाशित कएल। एहिमे संकलित पदमेसँ कतोक पद आनहु प्राचीन पदावलीमे पाओल जाइत अछि। ग्रियरसनक पश्चात् नगेन्द्रनाथगुप्त चन्दाझाक सहायतासँ 663 पदक संग्रह एहिना कए अपन पदावलीमे संकलित कएल। एहूसँ अतिरिक्त कतेक पद प्रायः लोककण्ठहिसँ प्राप्त चन्दाझाक पोथीमे लिखल भेटल अछि जे प्रो. रमानाथझाक संगमे छल, जाहि मध्य कतोक अद्यावधि प्रकाशित नहि भेल अछि। लोककण्ठसँ प्राप्त अधिकांश व्यावहारिक पद अछि सोहर, मलार, बटगवनी, तिरहुति, योग, उचिती, समदाओन प्रभृति।

विद्यापति पदावलीक उपर्युक्त स्रोतक अतिरिक्त अनेक पदावली मिथिला मध्य हस्तलेखक रुपमे आबहु पड़ल अछि, यथा गजहराक हस्तलेख, मंगरौनीक हस्तलेख, राजेक श्री जितेन्द्रनारायणझाक पारिवारिक हस्तलेख प्रभृति, जाहि मध्य सर्वाधिक संख्यक विद्यापतिक पदावली अछि। मुदा जतबा सूचना अछि ततबहिटाक पदसबहिक हस्तलेख नहि होएत। एहि सभक अनुसंधान ओ प्रकाशनक कार्य बड़ आवश्यक अछि। प्रो. रमानाथझाक संगमे चन्दाझाक पोथीमे लिपिबद्ध किछु विद्यापतिक पद हमरा देखल अछि जकर अन्य प्रकाशित पदावलीसँ मिलान हम हुनक आदेशसँ कएने छलहुँ। ओहि मध्य कतोक अप्रकाशित पदसब छल। एतावता जतबहु पद विद्यापतिक प्राप्त भए सकल अछि अथवा किंचित् आयाससँ सुलभतापूर्वक प्राप्त भए सकैत अछि, ततबहु अद्यावधि प्रकाशित भए सर्वजन-सुलभ नहि भए सकल अछि।

विद्यापतिक काव्य-साहित्यक वैशिष्ट्य

विद्यापतिक महत्वक चर्चा करैत आरम्भमे लिखल जा चुकल अछि जे पदावलीक रुपमे ओ जनसाहित्यक निर्माण कएल आओर मानव-हृदयक-मूलभूत भाववृत्ति-श्रृंगार ओ भक्तिकेँ रागात्मक अभिव्यक्ति देल अत्यन्त सूक्ष्मताक संग। पदक अर्थ होइत छैक गीत। हिनक पदावली गीतकाव्य थिक। हिनक भावाभिव्यक्तिक सूक्ष्मता राग-ताललयाश्रित कोमलकान्तपदावलीक प्रसादपूर्ण माधुर्यसँ मिलि अलौकिक रसास्वाद्य भए गेल ओ जनमानसकेँ संवेदित कए भावविह्वल बना देलक।

मैथिली गीतक समग्र विशिष्टता विद्यापतिक रचनामे पुंजीभूत भए गेल अछि।

तैं विद्यापति मैथिली गीत-काव्यक प्रेरके नहि, प्रतीकक रुपमे सेहो मान्य छथि। अतः हुनक गीत-काव्यक विशिष्टता मैथिलीक समग्र प्राचीन गीतकाव्यक विशिष्टता थिक आओर से थिक 1. गेयधर्मिता, 2. निर्दोष आवेगात्मक भावाभिव्यक्ति, 3. संक्षिप्तता, 4. भावक विविधता, 5. पौराणिक आख्यान तथा संस्कृत रीतिक प्रयोग एवं 6. भनिताक प्रयोग।

गेयधर्मिताक प्रसंग विशेष व्याख्याक आवश्यकता नहिः कारण विद्यापतिक संगीत केहन कर्णप्रिय होइत अछि से सभकेँ अनुभवगम्य अछिए। केहनो अपटु गायक किएक नहि विद्यापतिक पद गाबथु, ओ आह्लादित करबेटा करत। विद्यापतिक पदमे कोमल, कान्त ओ मधुर शब्दावली एहि प्रकार गुम्फित रहैत अछि जे अपन प्रसादपूर्ण विशदता एवं भावाभिव्यक्तिक सहजताक कारणे हृदयकेँ सहसा स्पर्श कए लैत अछि। लोचनक 'रागतरंगिणी'क अनुसार हिनक प्रत्येक पद 'जयत' नामक पटु गायक द्वारा साधल अछि। हिनक पदमे निबद्ध छन्दविन्यास ओ रागविन्यासक अभेद्य सम्बन्ध रहबाक कारणे आगाँ लोचन 'रागतरंगिणी'मे चर्चा करैत लिखैत छथि- ***'एतन्नामैवछन्दः', 'एतन्नामकमेवछन्दः' 'एतच्छन्दोलक्षणम्',*** आदि। एहि प्रकार विद्यापतिक पद मैथिल प्रणालीक संगीतक पर्याय भए गेल। हुनक पद भावपक्ष ओ अभिव्यक्तिरीतिक दृष्टिएँ अवश्य उत्कर्षपूर्ण अछि किन्तु ई युग-युगसँ लोककण्ठमे मुखरित भए रहल अछि तथा अन्य भाषाभाषी क्षेत्रमे जे एकर एतेक प्रचार-प्रसार भेल, से सम्भवतः नहि भेल रहैत यदि एहिमे संगीतक हृदयसम्मोहक स्वर-प्रवाह नहि रहैत।

विद्यापति पदावलीक अन्य गुण संक्षिप्तताक तँ कतहु अपवाद नहि भेटत। भावक विविधताक प्रसंग ई ज्ञातव्य जे ई दुइ प्रमुख भाववृत्ति-शृंगार ओ भक्ति मात्रक रसात्मक अभिव्यक्ति देल। व्यवहारगीत ताहीक अन्तर्गत परिगणित होएत। कूटक गीत ओ लिखल विनोदक हेतु, किन्तु जाहि भाववृत्तिकेँ ओ लेल, तकर विविध अंगक यथार्थ ओ स्वाभाविक चित्रांकन कएल। पौराणिक आख्यान तँ हिनक भावाभिव्यक्तिक पृष्ठभूमि थिक-राधाकृष्णक केलिकौतुक एवं महादेवक अढरनढरन भक्तवत्सलता तथा अद्‌भुत पारिवारिक जीवन। एहि हेतु विभिन्न पौराणिक प्रसंगक सेहो संक्षिप्त उल्लेख होइत अछि स्थान-स्थान पर, मुदा जकर एकमात्र उद्‌देश्य रहैत अछि भावाभिव्यक्तिमे स्वाभाविक प्रभावक सृष्टि करब।

विद्यापतिक पदक प्रमुख ओ विशिष्ट गुण थिक भनिताक प्रयोग। 'बौद्धगान'मे सेहो भनिता भेटैत अछि। किन्तु ओहिमे कविमात्रक नामोल्लेख अछि, जे स्वाभाविके थिक। विद्यापति सेहो अपन पदसभमे अपन नाम वा उपनाम देने छथि, मुदा ई जाहि-जाहि राजालोकनिक आश्रयमे रहलाह, ताहि-ताहि राजालोकनिक हुनक पत्नीक नामक संग उल्लेख कए देने छथि। आगाँक कविगण विद्यापतिक भनिता-

प्रयोग-प्रणालीक अनुसरण कएल; केवल मैथिलीक कविएटा नहि, अन्य भाषाक कविगण सेहो। पदसभमे भनिताक प्रयोग करब विद्यापति वा हुनक परवर्त्ती कविलोकनिक उद्‌देश्य आश्रयदाताकेँ प्रसन्न करब भनहिं रहल होइन्हि, मुदा आइ ओ हुनकालोकनिक आविर्भाव-कालक निर्धारण करबामे प्रमुख साधन सिद्ध भए रहल अछि।

विद्यापतिक गीत साहित्य-गीत होइतहुँ लोकगीत ओ लोकगीत होइतहुँ साहित्य-गीत थिक। हुनक युगातीत ओ स्थानातीत लोकप्रियताक मूलाधार एही तथ्य पर आधारित अछि। विभिन्न अवसर पर प्रयुक्त व्यवहार-गीत निश्चित रुपसँ लोकगीत थिक, मुदा ओकर शब्दविन्यास, अभिव्यक्तिरीति ओ भावसौष्ठव निश्चित रुपसँ साहित्यिक। तिरहुति शृंगाररसक गीत थिक, जाहि मध्य संयोग-वियोगक बहुविध भाव ओ रुपक चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि। 'ना', 'हो', 'रे' अथवा 'सजनी' प्रभृति दए तिरहुति 'सुर'क समन्वय कएल जाइत अछि, किन्तु ओकर अभावहुमे शुद्ध कविताक दृष्टिएँ सेहो ओ कम सुपाठ्य नहि होइछ। एहि प्रकार भावक प्रकर्ष एवं संगीतक उत्कर्षक समन्वय भेलाक कारणे हिनक रचना पश्चिम प्रान्तहुमे प्रचलित भेल। अबुलफजल अपन 'आयनी' अकबरी'मे देशी संगीतक चर्चा करैत 'लाचारी' (नचारी)क विषयमे लिखने छथि, जकर ग्लैडविनक अंगरेजी अनुवाद प्रस्तुत कएल जाइत अछि- *"Those in the Tirhut language called Lachari were composed by Bedyapet and are on the violence of the passion of love'.* ई अवश्य जे प्रचलित अर्थमे ई व्याख्या अशुद्ध लगैत अछि, मुदा जगज्जयोतिर्मल्लक 'गीतपंचाशिका'क अनुसार जे नचारीक व्यापक अर्थ छल, तकर पुष्टि होइत अछि। एहि प्रकार नचारीक प्रसिद्धिक ई सबल प्रमाण थिक। एहिसँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे विद्यापतिक शृंगारिक पद ताबत अखिल भारतीय ख्याति अर्जित कए लेने छल।

विद्यापतिक पद मुक्तककाव्यक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। मुक्तकक अर्थ होइछ ***'छन्दोबद्ध पदं पद्य तेन मुक्तेन मुक्तकम्'*** *(सा. द.)* अर्थात्, छन्दमे लिखल काव्य पद भेल। ओ यदि दोसर पद्यक सन्दर्भसँ निरपेक्ष भेल तँ मुक्तक भेल। मुक्तकमे दोसर पदक सन्दर्भक प्रयोजन नहि, ओ अपनहिमे स्वतन्त्र ओ पूर्ण होइत अछि। विद्यापतिक पदहुमे ई विशेषता उपलब्ध अछि। रसक परिपाकक हेतु विभाव, अनुभाव, सचारी आदिक योग आवश्यक होइत अछि, किन्तु विद्यापतिक पदमे तकर सम्पूर्ण समन्वय नहि भेटैत अछि कतहु नायिकाक सौन्दर्य तँ कतहु उद्‌दीपन मात्रक विन्यास भेटत ओ कतहु संचारीभावक चित्रण मात्र। एहिसँ जे चमत्कार उत्पन्न होइत अछि, से मुक्तकक चमत्कार थिक। एही कारणे विद्यापतिक पदमे रसक परिपाक बड़ विरल अछि, सर्वत्र भावक विन्यास सएह भेटैत अछि। मुदा आनन्दवर्द्धन 'अमरुकशतक'क मुक्तकक प्रसंग जे कहने छथि-'अमरुकस्य कवेर्मुक्तकाः शृंगाररसस्यन्दिन प्रबन्धायमाना प्रसिद्धा एव' सएह विद्यापतिहुक मुक्तकक प्रसंग सत्य अछि।

विद्यापति अपन पदमे शृंगारक बहुविध चित्र प्रस्तुत करैत छथि, शृंगारक दुनू पक्ष संयोग ओ वियोगक। अपन शृंगारिक रचनामे ओ जयदेवक 'गीत-गोविन्द'सँ सब तरहेँ प्रभावित छथि आलम्बनग्रहण तथा कोमल-कान्त पदावली-प्रयोगक दृष्टिएँ। किन्तु जयदेवक भावचित्रणमे जाहिठाम नायकक महिमा द्योतित होइत अछि, ताहि ठाम विद्यापतिक चित्रणमे नायिकाक महिमा। स्वयं विद्यापति एकरा स्वीकार करैत लिखने छथि 'नारि मानोरथ अभिमत शत-शत रहस निरूप'। तेँ ओ नारीक यौवनोद्भवसँ लए यौवनक पूर्ण विकास धरिक स्वरूप-वर्णन एवं पूर्वरागसँ लए प्रेमक पूर्णावस्था तथा संयोगवियोगक विभिन्न मनोभावक चित्रण पूर्ण तन्मयताक संग कएने छथि। रुपवर्णन करबाकाल कवि उपमा-उत्प्रेक्षादिक बड़ स्वाभाविक प्रयोग करैत छथि। वर्णनमे चित्रमयता, संग-संग सरसताक कोमल ओ मधुर वातावरण प्रणयलीलाक पृष्ठभूमिक कार्य करैत अछि। उदाहरणार्थ किछु पंक्ति प्रस्तुत कएल जाइत अछि :

1. सैसव जौवन दुहु मिलि गेल, श्रवनक पथ दुहु लोचन लेल।
पहिल बदरि सम पुनि नवरंग, दिन-दिन अनंग अगोरल अंग।।
2. सुनइत रसकथा थापय चीत, जइसे कुरंगिनी सुनय संगीत।
3. खने खन नयन कोन अनुसरई, खने खन वसन धूलि तन भरई।
खने खन दसन छटा छट हास, खने खन अधर आगे गहु वास।
X X X X
हृदय मुकुल हेरि हेरि थोर, खने आँचर दइ खने होए भोर।
4. कुच युग धरए कुम्भथल काँति, बाँक नखर खत अंकुश भाँति।

उपर्युक्त उद्धरणसे यौवनक उद्भव, विकास ओ तज्जन्य अंगज अलंकारक बड़ स्वाभाविक वर्णन भेल अछि। एहिना सद्यःस्नाता-नायिकाक वर्णन कए ओ नारी-शरीरक तरुणिमाक चित्रांकन तँ करबे कएल अछि, संगहिँ ओहिमे अलौकिक कवित्वक सरसताक एहन सृष्टि कएने छथि जे ओ नग्न रुपक मादकतासँ उच्च कोटिक वस्तु भए गेल अछि।

विद्यापतिक शृंगारभावनाक विकास क्रमिक रुपसँ प्रतिपादित होइत अछि। कृष्णक प्रति राधाक ओ राधाक प्रति कृष्णक प्रेम-विकास बड़ मनोवैज्ञानिक रीतिएँ चित्रित भेल अछि। पूर्वरागक वर्णन कए विद्यापति राधाकृष्णक उद्दाम विलासक, विपरीत रतिक पृष्ठभूमिक निर्माण करैत छथि। एहि प्रसंग नायिकाक मुग्धत्व, संग-संग संकुचित किन्तु आवेगात्मक प्रेमक सरल विह्वलताक यथार्थ एवं मधुर-मादक अभिव्यक्ति भेल अछि। उदाहरणार्थ-

1. कानु हेरब छल मन बड़ साध, कानु हेरइत भेल अत परमाद।

2. अवनत आनन कए हम रहलहुँ बारल लोचन चोर।
पिया मुख रुचि पिबए धाओल जनि से चाँद चकोर।।

कृष्णक पूर्वरागक आधार राधाक अनिर्वचनीय रुपलावण्य होइत अछि-

ससन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर संचरु रे जनि बिजुरी रेह।

एहीक्रमे विद्यापति सखीशिक्षा, अभिसार आदिक वर्णन कएल अछि। प्रथम-प्रथम विलासक समय नव कामोद्भवा तरुणीक मनोभावक बड़ यथार्थ ओ अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक रीतिएँ सरसकवि विद्यापतिक कएने छथि, जे काव्यरसिककेँ सहजहि आह्लादित करैत अछि। एक दिसि संकोच ओ भय तथा दोसर दिसि विलासक प्रबल आकांक्षाक सूक्ष्म चित्रण करबामे विद्यापति बेजोड़ छथि। द्रष्टव्य थिकः

थर-थर काँपल लहु-लहु भास, लाजे वचन न करय परगास।
आजु धनि पेखल बड़ विपरीत, खने अनुमति खने मानए भीत।

एहि प्रकार नर-नारीक सौन्दर्यक स्वाभाविक अतिशयता ओ पारस्परिक प्रेमक प्रबलताक विविध पक्षक जे वर्णन विद्यापति कएल अछि, से अभिनव भेल अछि। संयोग-शृंगारक विकासक चित्रण करबा काल जखन ओ ओकर सांगोपांग भाव ओ कार्य-व्यापारक उल्लेख अपन विभिन्न पदमे करैत छथि, तखन जेना कामशास्त्रहिक विविध अंग-प्रत्यंगक कवित्वपूर्ण अभिव्यक्ति दैत बूझि पड़ैत छथि, किन्तु प्रेमक उच्छलताक द्योतन जतेक हिनक अभिसार-वर्णनमे भेल अछि ततेक अन्यत्र नहिः कारण, कोमलांगी नवयुवती प्रकृतिक भयंकर व्यवधानकेँ पार करैत जखन प्रियतमसँ मिलन करबाक हेतु जाइत छथि, तखन जेना ओ प्रेमक कठिन परीक्षा दैत प्रतीत होइत छथि, जाहिमे ओ पूर्णांक प्राप्त करैत छथि। द्रष्टव्य थिक-

रयनि काजर वम, भीम भुअंगम, कुलिस परए दुरवार,
गरजेँ सरस मन, रोसेँ बरिस घन, संसन्ने परु अभिसार,
सजनी वचन छड़ैतेँ मोहि लाज
जे होएअ से होअओ वरु सबे हमे अंगि करु साहससँ मन दए आज।। आदि

किन्तु संयोगशृंगारमे यदि विलासभावनाक उच्छल ओ चंचल आवेग अछि तँ वियोगशृंगारमे निष्कपट प्रेमक गहन उद्वेग, जे मनमे पराग जकाँ रमि जाइत अछि।

संयोगश्रृंगारहि जकाँ विद्यापति वियोगश्रृंगारहुक विविध स्वरूपक चित्रण कएल अछि। एक दिसि वियोग-वेदनासँ नायिकाक अंग-अंग दुर्बल ओ कान्तिहीन भए जाइत छैक तँ दोसर दिसि प्रिय-मिलनक प्रबल उत्कण्ठा वियोगक विभिन्न दशाक विकासकेँ उत्तेजित करैत अछि। समय बितैत रहैत अछि। ऋतुक चक्र घुमैत रहैत अछि आ विरहिणीक वियोगानुभूति विविध रूपेँ संघर्षशील होइत रहैत अछि। बारहमासा, चौमासा प्रभृति ऋतुवर्णनक आधार पर विरहक विभिन्न अवस्थाक जे वर्णन थिक से बड़ लोकप्रिय भेल। विद्यापतिक विरहवर्णनमे प्रेमक तन्मयताक यथार्थ ओ सुन्दर अभिव्यक्ति अद्वितीय भेल अछि। विरहावस्थाक प्रेम गहन ओ गम्भीर होइत अछि। संयोगावस्थाक प्रेम होइत अछि भदवारिक नदीक प्रवाह सन चंचल ओ पंकिल तँ विरहक प्रेम होइत अछि शरद-कालीन शान्त जलधाराक समान निर्मल ओ पवित्र। विरहाग्निक ज्वालामे जरि प्रेम सोन जकाँ आओर अधिक चमकि उठैत अछि। तेँ विरहक प्रेममे तन्मयताक जेहन विन्यास रहैछ, तेहन संयोगक प्रेममे नहि। एही दृष्टिएँ विद्यापतिक प्रसिद्ध पदसभक किछु प्रथम पंक्तिक उल्लेख नीचाँ कएल जाइत अछि-

> **1. सखी हे हमर दुखक नहि ओर, 2. लोचन नीर तटिनि निर्माणे, 3. सजनि के कह आओत मधाई, 4. के पतिया लए जाएत रे, 5. माधव कठिन हृदय परवासी, 6. विरह व्याकुल बकुल तरु तर, पेखल नन्दकुमार रे, 7. नयनक नीर चरण तल गेल, प्रभृति।**

विरहश्रृंगारहिक प्रभेद 'मान' मानल जाइत अछि। संगत वा असंगत कारणसँ नायक नायिकासँ वा नायिका नायकसँ प्रतिकूल भेल विमुख भए जाइत छथि, तखन ताहि दशाकेँ 'मान' कहल जाइत अछि: विद्यापतिक मानवर्णन मैथिली साहित्यमे प्रसिद्ध अछि। यथा-

> **1. मानिनि आब उचित नहि मान,**
> **2. मान परिहरि हे करु वचन मोरा,**
> **3. मानिनि आकुल हृदय मोर, प्रभृति।**

उपर्युक्त कवितामे विद्यापति बड़ सूक्ष्मतापूर्वक सरस रमणीयताक संग जेहन विरहक बाह्य-दशाक चित्रण कएल अछि तेहने अन्तर्दशाक सेहो। एहन रचनामे वाच्यार्थसँ व्यंग्यार्थ विशेष चमत्कारक भेल अछि।

संयोग-वियोगश्रृंगारक अतिरिक्त विद्यापति काव्यशास्त्रोक्त नायक-नायिकाक प्रत्येक प्रमुख प्रकारक वर्णन यत्र-तत्र कएने छथि, सेहो बड़ स्वाभाविक रीतिएँ। वस्तुतः

विद्यापति रसराज श्रृंगारक अपूर्व कवि छथि, जनिक रचना-सागरमे डुबकी लगाओला सन्ताँ अगणित भावराशिक शत-शत मोती प्राप्त होएबामे कठिनता नहि होइत अछि।

एहि ठाम ऋतुवर्णनक चर्चा करब आवश्यक अछि। वस्तुतः विद्यापति मानव-भाव वृत्तिक कवि छथि, प्रकृतिक कवि नहि। मुदा पदावलीमे यत्र-तत्र प्रकृतिक सेहो वर्णन भेटैत अछि। ई अपन रचनामे मुख्यतः वसन्त एवं वर्षाऋतुक वर्णन कएल अछि। वर्षा-ऋतुक वर्णन निरपवाद उद्दीपन-विषयक रूपमे भेल अछि, किन्तु वसन्तऋतुक उद्दीपन ओ आलम्बन दुनू रूपक। वसन्तकेँ आलम्बन मानि ओ प्रकृतिक संग मानव-मनोभावक सामंजस्य स्थापित कएने छथि, से विद्यापतिक काव्यशिल्पक विलक्षणता थिक। उदाहरणार्थ, विद्यापति वसन्तक नरपति रूपमे वर्णन करैत छथि-

> **अभिनव पल्लव बइसक देल, धवल कमल फुल पुरहर भेल।**
> **माइ हे आइ दिवस पुनमन्त, करिय चुमाओन राय वसन्त।**

प्रो. रमानाथ झाक शब्दमे-"**ई गुण संस्कृत-काव्यहुमे भेटत, परंच विद्यापति ओकरा भाषा-काव्यमे ताहि रूपेँ अंकित कएल जे मैथिली काव्यमे ओ काव्यकलाक एक गोट अभिन्न अंग भए गेल।**"

भक्ति-कविता - विद्यापतिक भक्तिकविताकेँ निम्नलिखित श्रेणीमे विभक्त कए सकैत छी,-1. शिवविषयक नचारी ओ महेशवाणी, 2. शक्ति, गंगा ओ विष्णु-स्तुति तथा 3. शान्तिपद।

विद्यापतिक भक्तिपद मध्य नचारी ओ महेशवानी सबसँ अधिक लोकप्रिय अछि। जाहि प्रकार रतिभावक अस्तित्व सर्वसामान्यमे निहित अछि, तहिना जनदेवताक रूपमे महादेव मिथिलाक घर-घरमे गृहीत छथि। एहन कोनो गाम नहि अछि, जाहि ठाम एकटा-ने-एकटा शिवमन्दिर नहि हो। शिवजीक अर्चना-पूजामे जातिगत बन्धनो नहि रहैत अछि। तेँ विद्यापतिक शिवविषयक पद मिथिलामे हुनक श्रृंगारिक पदसँ किंचितो कम लोकप्रिय नहि भेल। महेशवानी ओहि शिवविषयक पदकेँ कहल जाइत अछि, जाहि मध्य शिव-पार्वतीक पारिवारिक जीवनक वर्णन होइत अछि तथा नचारी थिक शिवविषयक शुद्ध भक्तिपद। यद्यपि एहन रचना बड़ थोड़ अछि, किन्तु जएह अछि,सएह जनमानसक भक्ति-विह्वल आत्माकेँ परितृप्त करबाक सबल साधन भेल अछि। जखन महादेवक भक्तगण शिवमन्दिर वा अन्यत्रो तल्लीन भए गबैत रहैत छथि, तखन भक्तिक आनन्दक आस्वादन करैत ओ क्षण भरिक हेतु अपन लौकिक अस्तित्वकेँ बिसरि, पूर्ण तन्मयताकेँ प्राप्त करैत छथि। शिवविषयक पदक रचना विद्यापति प्रायः अपन वृद्धावस्थामे कएल जखन ओ सांसारिकतासँ ऊबि शिवसायुज्यक कामी भए रहल

छलाह। तेँ एहन रचनामे हुनक वैयक्तिक भक्तिभावानुभूति अभिव्यक्त भेल अछि। अतः एहन पद जनमानसकेँ सहजहि स्पर्श कए लैत अछि। **'कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ'** अथवा **'तौं हे प्रभु त्रिभुवननाथ हे हर'** अथवा **'हम सौँ रुसल महेसे, गौरि विकल मन करथि उदेसे'** आदि पद जे स्वयं गबैत छथि वा ककरहु अनके द्वारा गबैत सुनैत छथि, तनिक चितवृत्ति अलौकिक आनन्दक अनुभव करैत एहि संघर्ष ओ कपटसँ ओतप्रोत यथार्थ लोकसँ ऊपर उठि कोनो अलौकिक आध्यात्मिक भावभूमि पर अवस्थित भए जाइत छैन्हि। महेशवानीक साहित्यिक विशेषता अछि अद्‌भुत ओ हास्यरसक परिपाकमे जे विद्यापतिक अन्य पदमे दुर्लभ अछि।

विद्यापति शक्ति, गंगा ओ विष्णुविषयक पदहुक रचना कएने छथि जे हिनक भक्तिपद मध्य कम लोकप्रिय नहि अछि। **'जय जय भैरवि असुर भयाउनि'** तँ मिथिलाक सबसँ अधिक उपयोगी ओ लोकप्रिय सिद्ध भए रहल अछि। कोनहु शुभकार्यक आरम्भ एही पदसँ होइत अछि कारण, सभ घरमे गोसाउनि होइतहिँ छथि आओर कोनहु कार्यकर्तव्यतामे सबसँ पहिने हुनके प्रसन्न कएल जाइत अछि। दोसर, दुर्गाक स्तुति थिक **'कनक भूधर सिखर वासिनि'**। एहि पदक विशेषता अछि अलंकार ओ ओजपूर्ण शब्दविन्यास, जे वीररसद्योतक, किन्तु मधुर ओ सरस अछि। एकटा पद अर्द्धनारीश्वरक वर्णन करैत अछि **'जय जय शंकर जय त्रिपुरारि जय अधपुरुष जयति अधनारि'**। गंगास्तुतिक दुइटा पद उपलब्ध अछि **'बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे'** एवं **'ब्रह्म कमण्डल वास सुवासिनि नागरसागर गृहबाले'**। दुहू पदमे कविक स्वानुभूति, जे एक मैथिल भक्तक अनुभूति थिक, बड़ मार्मिक रीतिएँ व्यक्त भेल अछि। एकर अतिरिक्ति एकटा जानकी-वन्दना-मूलक पद सेहो उपलब्ध अछि- **'रे नरनाह सतत भजु ताही, ताहि नहि जननि जनक नहि जाहीं'**। एकेश्वरवादी भावना व्यक्त कएनिहार एकटा पद अछि **'भल हर भल हरि भल तुअ कला, खन पित वसन खनहि बघछला'**। एहू पदमे कतहु कृत्रिमताक भान नहि होइछ। विष्णुपदहुमे अत्यन्त स्वाभाविक भक्तिभावनाक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। **'माधव कत तोर करब बड़ाई'**, **'माधव बहुत मिनति कर तोय'** आदि हिनक किछु प्रसिद्ध विष्णुपद थिक।

तेसर प्रकारक विद्यापतिक भक्तिपद थिक शान्ति-पद। एहिमे निर्वेदजन्य वैराग्यक बड़ मार्मिक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि प्रकारक रचना ओ मृत्युक किछुए दिन पूर्व कएने छल होएताह, से पदमे निबद्ध उत्कट वैराग्यभावनाक कारणे सर्वथा अनुमानगम्य अछि। किछु पंक्ति द्रष्टव्य थिकः-

1. तातल सैकत वारिविन्दु सम सुत मित रमनि समाजे।
तोहे विसरि मन ताहे समरपल अब मझु हब कोन काजे।।
माधव हम परिणाम निरासा।

2. जतने जतेक धन पापे बटोरलहुँ मिलि-मिलि परिजन खाय।
मरनक बेरि हरि, कोइ न पूछत करम संगे चल जाय।।

एहि प्रकार यद्यपि हिनक भक्तिपदक संख्या बड़ अल्प अछि, मुदा भावाभिव्यक्तिक मर्मस्पर्शी रागात्मक स्वाभाविकताक दृष्टिएँ एकर महत्व मैथिली साहित्यक इतिहासमे अत्यधिक अछि।

विद्यापतिक धार्मिक सम्प्रदाय

विद्यापतिक धार्मिक सम्प्रदायक विषयमे जतेक मतान्तर अछि, तकर मुख्य कारण अछि हिनक अनेक देवताक भक्तिमे पदक रचना करब। कोनहु पदमे ओ दुर्गाकेँ सर्वशक्तिसम्पन्ना देवी मानैत छथि, तँ कोनहु पदमे शिवकेँ। विष्णुपदमे विष्णु सर्वश्रेष्ठ देवताक रुपमे वर्णित छथि। 'विभागसार'क प्रस्तावना पदमे परमशक्तिक रुपमे ब्रह्मक अभ्यर्थना भेल अछि। तहिना अर्द्धनारीश्वर एवं गंगाक भक्तिमे रचित पदसभमे ओ ताहि ताहि देव ओ देवीकेँ सर्वोत्कृष्ट मानल अछि। हिनक सम्प्रदाय-निर्धारणक वाद-विवादमे भाग लेलैन्हि भागीरथ प्रसाद शुक्ल (माधुरी, जुलाई 1936 ई.), म. म. हरप्रसाद शास्त्री (कीर्तिलता'क भूमिका), डा. जनार्दन मिश्र (विद्यापति, 1933 ई.), नगेन्द्रनाथ गुप्त (विद्यापति-पदावली, भूमिका पृ. 12), प. शिवनन्दन ठाकुर (महाकवि विद्यापति ठाकुर, भूमिका-पृ. 175), खगेन्द्रनाथ मित्र (विद्यापति-पदावली, भूमिका पृ. 5), डा. विमानबिहारी मजुमदार (सर्चलाइट, जुलाई 1937 ई.) प्रभृति। श्री भागीरथ प्रसाद शुक्ल विद्यापतिकेँ शाक्त मानैत छथि तँ म. म. हरप्रसाद शास्त्री पंचदेवोपासक, डा. जनार्दन मिश्र एकेश्वरवादी, नगेन्द नाथ गुप्त ओ प. शिवनन्दन ठाकुर शाक्त एवं खगेन्द्रनाथ मिश्र, डा. विमान बिहारी मजुमदार तथा प्रो. राधाकृष्ण चौधरी वैष्णव। सब विद्वानकेँ अपन-अपन मतकेँ पुष्ट करबाक निमित्त किछु-ने-किछु कारण भेटिए जाइत छैन्हि, मुदा केओ एहि विषय पर ध्यान नहि दैत छथि जे विद्यापति अनेक देवताविषयक पदक रचना कएने छथि संमग्र आत्मनिष्ठ भक्तिविह्वलताक संग। तेँ कोनहु साम्प्रदायिक सीमामे हुनका बद्ध करबाक चेष्टा युक्तिसंगत नहि।

सबसँ अधिक भ्रान्ति अछि विद्यापतिकेँ वैष्णवक रुपमे परिगणित करबाक प्रसंग। ई कार्य मुख्यतः बंगालमे भेल महाप्रभु चैतन्यदेवक अवतार (1456-1534 ई.)क पश्चात्। ओहि समयमे मिथिला न्यायस्मृति-विद्याक केन्द्र छल ओ बंगालक छात्रगण ओहि विद्यामे निष्णात होएबाक हेतु मिथिला अबैत छलाह। एहि ठामसँ घुरबाकाल प्रगाढ़ पाण्डित्यक संग-संग विद्यापतिक ललित-मधुर-कोमल ओ लोकप्रिय पदहुकेँ संग लेने जाइत छलाह, जाहिमे राधाकृष्णक प्रणयलीलाक वर्णनं रहैत छल। एहन पद शीघ्रे बंगालमे प्रसिद्ध भए गेल। महाप्रभु चैतन्य जखन विद्यापतिक पद सुनल,

तँ ओहि मध्य राधाकृष्णक मधुर लौकिक सम्बन्धक आध्यात्मिक अर्थ लगाओल। ओ दार्शनिक प्रतिपादनक द्वारा अपन सम्प्रदायक प्रचार तँ करबे कएल, संगहिं भक्तिक सहजानुभूतिजन्य तन्मयता प्रदर्शित कए लोककेँ आकृष्ट करैत अप्न धर्मक विस्तार सेहो कएल। कहल जाइत अछि जे विद्यापतिक गीत गबैत-गबैत ओ भावविभोर भए सुधिबुधि बिसरि नाचए लागथि। एहि प्रकार चैतन्य-महाप्रभुक प्रश्रय पाबि विद्यापतिक शृंगारगीत भक्तिगीतक रुपमे परिगणित होअए लागल ओ विद्यापति वैष्णव-कविक रुपमे प्रख्यात भेलाह। बंगालमे एतबे नहि भेल, ओहिठाम विद्यापति ओ लखिमाक प्रसंग काल्पनिक प्रणयकथा गढ़ल जाए लागल तथा ओ दुनू गोटा वैष्णव-धर्मक प्रतीक भए गेलाह:-

लखिमारुपिणी राधा इष्टवस्तु जाब।
जावे देखि कविता स्फुरय शत धार। (नरसिंह दास)

सर्वप्रथम खगेन्द्रनाथ मित्र एवं डा. विमानबिहारी मजुमदार तर्क द्वारा हिनका वैष्णव सिद्ध करैत निम्नलिखित मुख्य कारण देल:- 1. विद्यापतिक द्वारा भागवतक प्रतिलिपि करब एवं 2. विद्यापतिक राधाकृष्ण सामान्य युवक-युवतीक प्रतीक नहि; कारण, कवितामे स्पष्ट रुपसँ हुनक अर्चना कएल अछि एवं अपन भक्तिविह्वल उद्गार प्रकट कएल अछि।

ई सत्य जे विद्यापतिक कतेक विष्णु-पदमे स्पष्टतः राधाकृष्णक देवत्वक उल्लेख भेल अछि, किन्तु अधिकांश रचना शृंगारगीत सएह थिक; कारण, शृंगारक जेहन उत्तान ओ उद्दाम वर्णन भेल अछि, से भक्तिरचनामे कोनहुना नहि भए सकैछ। दोसर, अपन रचनाक उद्देश्यक प्रसंग ओ स्वयं स्थान-स्थान पर घोषणा कएने छथि; यथा-'रस सिंगार सरस कवि गाओल', 'सुरतरससरंग संसार सारा' प्रभृति। 'कीर्तिपताका'क एक पदमे ओ कविगणमे अभिनव जयदेवकेँ ओ रससभमे शृंगाररसकेँ श्रेष्ठ कहल अछि:-

कवि मह नव जयदेवकवि, रस मह एहु सिंगार,
जगतसिंह रिपुराअ मह तीनिनु त्रिभुवनसार।

ओहि मध्य एक ठाम महादेवोक वर्णन शृंगारिक रुपमे कएल अछि-'शृंगारवानवतु नो नवचन्द्रचूड़:'। एहि प्रमाणक अतिरिक्त विद्यापति अपन जन्मभूमि मिथिलामे शृंगारिक कविक रुपमे ख्यात छथि, वैष्णवकविक रुपमे नहि। हुनका सम्बन्धी परम्परासँ प्रसिद्ध किंवदन्ती सेहो हुनका गंगा ओ महादेवक भक्त सिद्ध करैत अछि, विष्णुक भक्त नहि।

वस्तुतः विद्यापति सामान्य मैथिल जकाँ अनेक ईश्वरक भक्त छलाह। हमरालोकनिक ओहिठाम एक देवताक भक्ति दोसर देवताक भक्तिक विरोधी नहि मानल जाइत अछि। हिन्दूमात्र परब्रह्मकेँ सर्वोपरि मानैत छथि जे विभिन्न रुपमे भक्तगणकेँ अनुरंजित करैत छथि। अतः एहि ठामक लोक जाहि तन्मयताक संग शक्तिक उपासना करैत छथि, ओही तन्मयताक संग महादेव, विष्णु ओ अन्य-अन्य भगवानोक। मिथिला जाहि धार्मिक उदारताक हेतु प्रसिद्ध रहल अछि, विद्यापति सेहो ताहि प्रवृत्तिक पोषक छलाह।

भाषा-शैली - विद्यापतिक भाषा मैथिली लोकभाषा थिक जकरा ओ साहित्यिक परिनिष्ठता प्रदान कएल। हिनक पदावलीक भाषामे प्रसाद, माधुर्य ओ लालित्यक मणिकांचन-संयोग भेल अछि आओर एही कारणे हिनक रचना एतेक लोकप्रिय होइत आबि रहल अछि। एहि मध्य आइ जे कतहु दुरुहता भेटैत अछि, तकर दुइ प्रमुख कारण अछि-1. जाहि युगमे ई लिखल गेल तकर छओसए वर्ष भए गेल अछि। ओहि समयक भाषाप्रयोग ओ एहि समयक भाषाप्रयोगमे अत्यधिक अन्तर भए जाएब सर्वथा स्वाभाविक थिक। अतः किछु दुरुहता तज्जन्यो लगैत अछि तथा 2. विद्यापतिक रचनाक मूल-पाठमे परिवर्तन आबि गेलासँ कतहु-कतहु अर्थ लगाबामे कठिनता भए जाइत अछि। प्रो. रमानाथ झाक शब्दमे- *Whenever.... anyline of Vidyapati's song presents a difficulty of construction or interrelation, I come at once to doubt if there is not some mistake somewhere and if the reading genuine* (पुरुषपरीक्षा-भूमिका-पृ. 58-59)

विद्यापतिक अभिव्यक्तिशैलीक दुइटा मुख्य गुण अछि, जकर कारणे हिनक पद बड़ मार्मिक भए जाइत अछि-1. उत्प्रेक्षादिक स्वाभाविक एवं मार्मिक प्रयोग तथा 2. लोकोक्तिक प्रयोग। कालिदासक उपमामे जाहि प्रकारक स्वभाविक चमत्कार अछि तेहने चमत्कार अछि हिनक उत्प्रेक्षामे। लोकोक्तिक प्रयोग तँ हिनक भावभिव्यंजनाक प्रमुख विशेषता थिक जे हिनक रचनामे अद्भुत व्यंग्यार्थक सृष्टि करैत मर्मस्पर्शी प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। किछु लोकोक्ति उदाहरणार्थ नीचाँ उद्धृत कएल जाइत अछि-

1. आनक वेदन नहि बुझ आन, 2. गेल दिन पुनु पलटि न आव,
3. छोट पानि चहचह कर पोठी, 4. जेहन विरह हो तेहन सिनेह,
प्रभृति।

विद्यापतिक भाषामे तत्सम संस्कृतशब्दक कमसँ कम प्रयोग भेल अछि। ई एहि हेतु जे ओ पदक रचना पण्डितलोकनिक हेतु नहि, जनसामान्यक हेतु कएल, अतः

लोकभाषाक प्रयोग करब उचित बुझल। मुदा आगाँ ई प्रवृत्ति हटैत गेल ओ हर्षनाथ झा धरि अबैत-अबैत मैथिली भाषा पूर्ण संस्कृतनिष्ठ भए गेल।

विद्यापतिक मैथिली साहित्यक प्राणवायु थिकाह। हिनके प्रतिभाक चेतनासँ स्पन्दित भए मैथिली काव्यधारा अनवरत प्रवाहित होइत रहल अछि ओ मैथिली साहित्यक मध्यकालीन काव्यधारा हिनके प्रभावक एकान्त उपजा थिक। अतः कतोक व्यक्तिक ई आक्षेप जे विद्यापतिक आदर हुनक मातृभूमि मिथिलामे नहि भेल, कथमपि युक्तिसंगत नहि। ई अवश्य जे मिथिला मध्य विद्यापतिक प्रसंग अनुसंधान-कार्य कइ पाछाँ आबि आरम्भ भेल अछि, किन्तु जाहि प्रकार ओ अपन जीवितावस्थेमे मिथिलामध्य प्रसिद्ध भए गेलाह, से हुनक सम्यक् समादरक साक्षी थिक। ओ अपन रचनामे अभिनव-जयदेव, सुकवि, सरसकवि, कविकण्ठहार प्रभृति उपाधिक प्रयोग कएने छथि, से अपने मने नहि कएने होएताह, प्रत्युत काव्यरसिकगण द्वारा ओहि उपाधिसँ भूषित भए कएने होएताह। 'आइनी-अकबरी' (1598 ई.)मे नचारीक चर्चा हुनक एहि समादरक साक्षी थिक कारण, अपन भूमिमे समादृत होएबाक पश्चाते साधारणतः अन्यत्र लोक समादृत होइत अछि। बंगाल, आसाम, उड़ीसामे हिनक रचनाक प्रभावस्वरुप ब्रजबुली-साहित्यक निर्माण भेल, जकरा मैथिली साहित्यक अन्तर्गत अन्तर्भुत कएल जाइत अछि। मध्य-प्रदेशहु मध्य हिनक ख्यातिक प्रथम साक्षी आइनी-अकबरी अछि एवं दोसर नागरीप्रचारिणी-सभाक 1944-46क सर्च-रिपोर्टमे प्रकाशित हरिचरित्र विराटपर्वक वर्णनमे लक्खनसेनि कवि जयदेव-घाघक संग विद्यापतिक सेहो चर्चा कएने छथि-

जैदेव चले सर्ग को बाटा ओ गए घघ सुरपति भाटा
नगर नरिन्द्र जे गए उनारी विद्यापति कइ गए लांचारी

वस्तुतः विद्यापति सार्वदेशिक ओ सार्वकालिक कवि छलाह। एहन कविकेँ उत्पन्न करबाक हेतु मैथिली भाषा ओ साहित्य एकान्त गौरवक अनुभव करैत अछि।

***

षष्ठ प्रकरण

प्राचीन गीत-परम्परा

प्राचीन गीत-परम्पराक तात्पर्य भेल विद्यापति-काव्य-परम्परा वा विद्यापति-काव्य-सम्प्रदाय। की काव्य-प्रतिभाक दृष्टिएँ, की भाषाक माधुर्य ओ लालित्य आ' की रचना-कौशलक दृष्टिएँ विद्यापति मैथिली-काव्य-साहित्यक अन्तरिक्षमे प्रखर सूर्य जकाँ भासमान भेलाह ओ अपन रश्मिराशिसँ चतुर्दिशाकेँ आलोकित कए देल। हिनक प्रतिभाक रश्मि मिथिला मध्य अपन प्रभा विकीर्ण करबे कएलक, अन्यत्रो कम अमृतमय सिद्ध नहि भेल। पाछाँ छोट-पैघ कविगण हिनक रचना-प्रणालीक अनुसरण करब अपन कृतित्वक चरम उत्कर्ष मानि लेलन्हि ओ तहिआसँ 19म शताब्दी धरि जे काव्यसाहित्यक रचना भेल से ताही रुपक। वर्तमान शताब्दिअहुमे ओहि प्रभावक अन्त नहि भेल अछि। आबहु ओहि रीतिक अनुसरण होइतहिँ अछि। चन्दा झासँ ओहि प्रणालीक पदमे वस्तुनिष्ठताक मात्रा अवश्य आबि गेल अछि, नवीन रीतिक प्रयोगक समावेश अवश्य भेल अछि, किन्तु जहाँ धरि विषयवस्तु, संगीतधर्मिता ओ 'भनिता' प्रयोगक प्रश्न अछि, विद्यापतिक अविकल अनुसरण आबहुं होइतहिँ अछि।

विद्यापतिक काव्य-परम्पराक विकास केवल मिथिलहि मध्य भेल हो, से नहि। विद्यापति-पदावलीक बंगालमे कोना निर्यात भेल ओ चैतन्य महाप्रभु कोना विद्यापतिकेँ वैष्णव-कविक रुपमे प्रख्यात कएल, तकर चर्चा गत-प्रकरणमे कएल जा चुकल अछि। विद्यापति केवल वैष्णव-कविहिक रुपमे ख्यात नहि भेलाह, प्रत्युत विद्यापतिक पदक भाषा सेहो एहि क्रममे वैष्णव-धर्मक साम्प्रदायिक भाषाक रुपमे गृहीत भेल। पाछाँ बंगालक वैष्णव-कविगण सेहो मैथिलीमे विद्यापतिक अनुसरण करैत पदक रचना करए लगलाह। एहि प्रकार जे परिपाटी चलल, से ब्रजबुलीसाहित्यक नामसँ प्रसिद्ध भेल। तहिना आसाममे सेहो शंकरदेव प्रभृति मैथिलीमे पद ओ नाटक लिखल, कारण, बंगालमे मैथिली भाषाक ग्रहणसँ वैष्णवधर्मक प्रसारमे बड़ तीव्रता आबि गेल छल तथा आसामक संग मिथिलाक सांस्कृतिक सम्बन्ध पूर्वहिसँ चल अबैत छल, स्वयं शंकरदेव मिथिलाक यात्रा पन्द्रहम शताब्दीमे कएने छलाह। उड़ीसा मध्य मैथिली कविताक रचना भेल बंगालक वैष्णव-सम्प्रदायक प्रभाव-स्वरुप, मुख्यतः चैतन्य महाप्रभुक संग रामानन्द रायक 1511-12 ई. मे गोदावरी-तट पर मिलनक पश्चात्, महाप्रभुक प्रेरणास्वरुप।

विद्यापति-सम्प्रदायक काव्य-रचना नेपालमे सेहो पल्लवित भेल। नेपालक संग मिथिलावासिक सम्पर्क पुरान छल। आदिअहिसँ नेपालक राजनीतिकनिक दरबारमे मैथिल विद्वानलोकनि आश्रय पबैत छलाह ओ पण्डितक रूपमे हुनका लौकिक स्थान सेहो बड़ महत्वपूर्ण रहैत आएल छल। मिथिलाक सुप्रसिद्ध महाराज हरिसिंहदेव (1294–1323) मुसलमान आक्रान्तासँ पराजित भए भातगाँवमे जाए राज्य स्थापित कयने छलाह। पछाति मुसलमानी नरपतिक ओहिठाम बसि गेलासँ नेपाल विद्याव्यवसायक केन्द्र भए गेल ओ विद्याव्यवसायक हेतु प्रसिद्ध पार्श्ववर्ती मिथिलाक सम्बन्ध ओहिठामसँ रहब स्वाभाविक। नेपालक संग एहि अनन्य सम्बन्धक परम्परा चलैत रहल। ओइनवार-वंशक पतन एवं मिथिलामे साक्षात् मुसलमानी शासनक समयमे मैथिली विद्वान विद्या ओ धर्मक रक्षार्थ नेपालमे आश्रय लेल। एहि प्रकार नेपालक राजनीतिकनिक दरबारमे अनवरत रूपमे मैथिल विद्वानलोकनिक सम्पर्क भेलासँ कतिक(?) ओहिठामक राजकीय भाषाक रूपमे मिथिला भाषा समादृत भेल। डा. बागचीक अनुसार-"मिथिलार राजसभा तखन विद्यापतिर संगीते मुखरित हय्छे। एइ संगीतओ ये कम दिन दीर्घिये नाये आर आश्चर्य कि ? ... नेपालेर प्राचीन नाटक(?) ओ प्रभावसम्पन्न व्यक्तिदेर भाषा छिल मैथिली कारण तांदेर अनेके इ मिथिला थेके गिये छिलेन।" अतः नेपाल मध्य सेहो एहि गीतिक रचना भेल। ओहिठाम जे मैथिलीमे पद-रचना भेल, से अधिकांश विशुद्ध मैथिलीमे, किन्तु पछाति जे नेपालक स्थानीय भाषाक रंगसँ रंग(?) अछि, किन्तु प्रवृत्ति धरि अछि विद्यापति-सम्प्रदायक कविताक समाने। एही कारणे मिथिलामे प्राप्त प्राचीन-गीत-संग्रहमे ओहुठामक कविगणक रचना संकलित प्राप्त भेल अछि। एहिसँ सेहो सिद्ध होइत अछि जे नेपाल क उत्कृष्ट कविलोकनिक रचना मिथिलहु मध्य मिथिलाक कविलोकनिक समान प्रसिद्ध भेल। राजनीतिक दृष्टिसँ भिन्नता रहितहुँ साहित्यिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिसँ नेपाल एवं मिथिलाक मध्य सम्बन्ध अभेदमूलक छल।

एहि प्रकार विद्यापति-काव्य-परम्पराक साहित्यकें हम दुइ भागमे विभक्त कए सकैत छी— 1. मिथिलामे विकसित मैथिलीक प्राचीन काव्य-परम्परा। एहि वर्ग अन्तर्गत ओहि कविगणकें सेहो अन्तर्भुक्त कए लेब जे नेपालक राजकीय आश्रयमे काव्य-रचना कयलन्हि, किन्तु जनिक भाषा अविमिश्रित मैथिली अछि ओ जे मैथिलीक प्राचीन परम्पराक्रमे उपलब्ध अछि, एवं 2. मैथिलेतर भाषाभाषी क्षेत्रमे विकसित प्राचीन काव्य-परम्परा। एहि वर्गक मैथिली काव्य-परम्पराक विकास अमैथिली भाषा-भाषी कविगण द्वारा भेल जे विद्यापतिक काव्यगीतिक प्रभावमे आबि हुनक भाषा ओ शिल्पक अनुसरण करैत पदक रचना कयलन्हि। एहि वर्गक पदक भाषा मिश्रित-मैथिली अथवा अपभ्रष्ट मैथिली थिक। जाहि भाषाभाषी द्वारा पदक रचना भेल, तत्तत् भाषाक प्रभाव पदक पदावलीक भाषामे स्पष्ट अछि। एहि वर्गक अन्तर्गत ओहन पदावलीक काव्य होयत जे वैष्णवसम्प्रदायक उपासनार्थ बंगाल, आसाम, ओ उड़ीसामे

ब्रजबुलीसाहित्यक नामे विख्यात भेल। नेपालमे उपलब्ध ओहन पदक गणना सेहो एहि वर्गक अन्तर्गत होयत, जाहिमे मैथिलीक संग-संग स्थानीय भाषाक उत्कट प्रभाव परिलक्षित होइत अछि।

1. मिथिलामे विकसित प्राचीन-गीत-परम्परा

मिथिलामध्य मैथिलीक प्राचीन-गीत परम्पराक विकासकें काल-क्रमक दृष्टिसँ तीन भागमे विभक्त कए सकैत छी-(क) विद्यापतिक समयसँ 1400ई. सँ ओइनवार राज्यवंशक पतन (1527) धरि, (ख) 1527ई. महाराज महेशठक्कुरक राज्यकालसँ अन्त (1860) धरि, एवं (ग) मिथिलाराज्यक कोर्ट आफ वार्ड्स द्वारा शासनक आरम्भ (1860ई.) सँ आइ धरि। डा. जयकान्तमिश्र दोसर भागकें सेहो दुइ भागमे बाँटि देल छथि-(अ) विद्यापतिक उत्तराधिकारी कविगण (1527–1700) एवं (ब) मध्यकालीन कविगण (1704–1860)। वस्तुतः एहि विभाजनक आवश्यकता नहि बुझि पड़ैत अछि कारण, दुहू विभागक कविगणक काव्य-रचनामे कोनो मूलभूत अन्तर नहि प्रतीत होइत अछि। विद्यापतिसँ लए म. महेशठक्कुरक शासनक अन्त धरि जे कोनो पदरचना भेल, से सब विद्यापतिक अनुकरणमे। कविलोकनि प्रतिभाक अनुसार उच्च कोटिक वा निम्नकोटिक जे काव्यरचना भेल हो, भाषा-प्रयोगमे जे किछु अन्तर आएल हो, मुदा काव्य-प्रवृत्ति धरि ओएह विद्यापति-सम्प्रदायक रहल। मैथिली पदमे मिथिलाक कठिन राजनीतिक परिस्थितिक अभिव्यक्ति नहि भेल, कारण, ने तँ शृंगार-पदमे आ ने भक्तिपदमे तकर अभिव्यक्ति करबाक अवकाश रहैत छैक। अठारहम शताब्दीक मध्यमे नवीनताक समावेश अवश्य भेल-शृंगारिक पदसँ अधिक भक्तिपद लिखल गेल एवं रहस्यवादी रचना सेहो भेल। किन्तु तादृश(?) विद्यापति-सम्प्रदायक मुख्य गुण संगीत-सम्मिलित होयब एवं भणिताक प्रयोग करब, रहबे कयल। भक्तिपरक(?) रचना तँ विद्यापतिहिक समयसँ होइत आबि रहल छल, किन्तु रहस्यवादी काव्य-रचना नवीन छल। एहन कविता करयवलालोकनि(?) जे साम्प्रदायिक दृष्टिसँ निर्गुण उपासक छलाह। एहन कविगणक मध्य महात्मा साहेब-रामदास एवं लक्ष्मीनाथ गोसाँइ प्रमुख छलाह। ई महात्मालोकनिक अधिकांश उच्च-जातिक छलाह, किन्तु संसारसँ विरक्त भए गेल छलाह। अतः हिनकालोकनिक प्रभाव समाजक उच्च-वर्गहुमे छल। एहि प्रकारक प्रवृत्तिक विकासक दोसरो कारण भेल। बिहारक शासन ब्रिटिशलोकनिक हाथमे गेलासँ मिथिलाक संग मध्यप्रदेशक सम्बन्ध घनिष्ठ भए गेलैक। फलस्वरूप मिथिला-मध्य मध्यप्रदेशक तात्कालिक भाषा ओ कविक प्रभावक वृद्धि भेल। पण्डितामक(?) लोक आब सूर ओ तुलसीक रचनाक संग विशेष सम्पर्कमे आएल। अतः काव्यरचनाक क्षेत्रहुमे सूर-तुलसीक साम्प्रदायिक रचनाक अनुसरण भेल। भाव-दृष्टिसँ किंचित् परिवर्तनक संग-संग तत्कालीन मैथिली पदमे ब्रजभाषाक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। तुलसी-सूरक तत्कालीन

ख्यातिक एकटा प्रमाण इहो जे कतोक मैथिली पदमे सूरदासक नाम धरि जोड़ए जाए लागल अथवा सूरदासहिक पदक मैथिली रूपान्तर भेल। उदाहरणार्थ निम्नलिखित पद द्रष्टव्य थिक–

काहु मटुकी मोहन हो आबे यश भेलहुँ तोहार ।
घाट बाट मोहि रोकओ टोकओ, नहि तोर सरहोजि सारि।
कर कंकन फुट चुनरी फाटल आओर टुटल शिंगार।
अबिर गुलाल लाल उर केशरि सकल भरए ब्रजनारि:
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को कृष्ण करत बटमारि।

किन्तु प्राचीन गीत-परम्परा मध्य एहि प्रवृत्तिक आगम क्षणिक छल ओ एकर विकास नहि भेल। अतः 18म शताब्दीक मध्यमे रचित सन्तकाव्य अपवादहिक कोटिमे अबैत अछि। वस्तुतः एहन रचनाक साम्प्रदायिकता दृष्टिएँ जे महत्व हो, कविताक भावात्मक उत्कर्षक दृष्टिएँ विद्यापति-सम्प्रदायक गीतकाव्यक विकास होइत रहल।

एहि कालमे मैथिली पदक जे रचना भेल, से दुइ रूपक–1. स्फुट मुक्तक-पद एवं 2. मिथिलामे लिखल गेल संस्कृत-प्राकृत नाटक मध्य जन-सामान्यक हेतु बीच-बीचमे पात्र-पात्रीक भावानुभूतिव्यंजक मैथिली पद। एहि प्रकारक नाटककेँ डा. जयकान्तमिश्र 'कीर्तनियाँ नाटक' कहल अछि। एहि प्रसंग हम नाटकक प्रकरणमे विचार करब। परन्तु एहन नाटकमे प्रयुक्त मैथिली पदकेँ हम मैथिलीक प्राचीन-गीत परम्पराक सएह अभिन्न अंग मानैत छी, कारण, एहन पदहुक विषय ओ रचना-प्रणाली ओही प्रकारक अछि जेहन अन्य मुक्तक-पदक।

विद्यापतिक मुक्तकक प्रसंग विवेचन करैत कहल जा चुकल अछि जे रसाभिव्यंजनाक दृष्टिएँ विद्यापतिक पद सर्वांगसम्पन्न नहि अछि। हुनक कोनहु पदमे आलम्बनक विस्तृत वर्णन भेल अछि तँ कोनहुमे उद्दीपनक, कोनहुमे संचारीक सांगोपांग चित्रण भेल अछि तँ कोनहुमे भावसन्धि वा भावशबलताक। अतः हुनक पदमे शृंगाररस बहु थोड़ ठाम परिपक्व भए पाओल अछि। इएह विशेषता समसामयिक अथवा परवर्ती कविगण द्वारा रचित मुक्तकहुमे परिलक्षित होइत अछि। अतः रसपरिपाकक सुगमताक हेतु प्रसंग ओ प्रकरणक बोध करबाए मुक्तकमे उपनिबद्ध भावक प्रभावकेँ अधिक तीव्र करबाक निमित्त कविगण ओकरा नाटकमे लिखए लगलाह। नाटकक कोनहु गीतकेँ मुक्तक जकाँ गाबि जतबा आनन्द होइत अछि, ताहिसँ अधिक नाटकक प्रकरणमे गाओल उत्तर वा पढ़ला उत्तर। प्रो. रमानाथझाक तँ एतेक दूर धरि मन्तव्य अछि जे ई गीतसभ मुक्तक जकाँ रचित भेल ओ पश्चात् तत्तत् प्रकरणक हेतु नाटकमे सन्निविष्ट कए देल गेल। एहि प्रणालीक प्रारम्भ विद्यापति अपन 'गोरक्षविजय' नाटकमे कएल।

'वर्णरत्नाकर'क रचयिता ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'हुक एक संस्करणमे किछु पद एहि प्रकार प्रयुक्त भेल भेटल अछि। मुदा एहि रीतिकेँ उमापति अपन 'पारिजातहरण'मे उत्कर्षक चरम सीमा पर पहुँचाए देल। एहि परिपाटीक उपयोगिता सिद्ध अछि, कारण, उमापति, नन्दीपति आदि सुकविक ओहन पद विशेष लोकप्रिय भेल जे एहि प्रकारक नाटकसभमे प्रयुक्त भेल। कतेकै पद एहनो अछि जे मुक्तक जकाँ प्रसिद्ध अछि, किन्तु ओकर रचनारीतिकेँ देखि ई कल्पना करब असंगत नहि होएत जे ओ कोनहुँ अनुपलब्ध संस्कृत-प्राकृत नाटकक बीचमे प्रयुक्त करबाक हेतु लिखल गेल छल। उदाहरणार्थ भीषम कविक दुइटा पद उपलब्ध अछि, जाहिमे उर्वशी ओ सागरिकाक चर्चा अछि। अतः ई दुनू पद उर्वशी-पुरूरवाक प्रेमप्रसंग लए लिखल गेल नाटकक गीत थिक, से अनुमान करब असंगत नहि। एहिना अमृतकरक गीत सब रत्नावली-नाटिकाक हेतु लिखल गेल प्रतीत होइत अछि।

मुदा स्फुट-रूपमे वा नाटकक हेतु मैथिली पदक जे रचना भेल हो, थिक धरि ई सब प्राचीन रीतिक गीतिकाव्य, कारण, दुनू दृष्टिएँ ओहने पदक अधिकांश रचना भेल जेहन विद्यापतिक रचना विशेष लोकप्रिय भेल छल। उदाहरणार्थ 'मान' कहाए अन्य कविगणक जे पद प्रसिद्ध भेल, से लिखल गेल विद्यापतिक विशेष लोकप्रिय भेल खण्डितानायिकाक चित्रणक अनुसरणमे। एहिना विद्यापतिक 'तिरहुति' बड़ प्रसिद्ध भेल ओ तकरहि अनुसरणमे तिरहुतिक भिन्न-भिन्न भेदक रचनाक परिपाटी चलल। बटगमनी, मान, उचिती, योग, सोहर, फागु, मलार, चौमासा, चैत, लगनी, गोआलरी प्रभृतिक रचनाक एहि परम्परामे बड़ विकास भेल ओ से ओही 'भास' पर जाहि 'भास' पर विद्यापति ओहि जातिक पदक रचना कएने रहथि। 'भास'क भेद मैथिली गीत-साहित्यक प्रधान विशेषता थिक, जकर आदि हमरालोकनिकेँ प्रायः सब ठाम विद्यापतिहिक गीतमे भेटैत अछि। एहि प्रकार विकसित भेल प्राचीन काव्य-परम्परामे मिथिलाक्षेत्रीय संगीतात्मकता ओतबे प्रगाढ़ अछि, जतबा विद्यापतिक पदमे अछि। किन्तु 'भास'हि मात्रटा प्राचीन-काव्य-परम्पराकेँ अनुप्राणित नहि कएने अछि, विषय, भाव, भाषा, ओ शैली सब दृष्टिएँ विद्यापतिक रचनासँ मैथिलीक प्राचीनकाव्य-परम्परा अनुप्राणित अछि। उदाहरणक हेतु पुनः हम 'मान'क चर्चा करब। विद्यापति अपन 'मान'मे सभ कालमे नायिकाकेँ प्रसादन करैत नायकक चित्रण कएने छथि। किन्तु हुनक ओहि रीतिक 'मान'-पद विशेष प्रसिद्ध भेल जाहि मध्य भरि राति नायिकाकेँ प्रसन्न करबामे थाकि अरुणोदयक समय नायक निराश भए अपन मनोभाव व्यक्त करैत छथि। अतः मानविषयक भोरुका गीत परवर्ती कविलोकनि विशेष लिखलैन्हि ओ सेहो प्रभातीक 'भास' पर। उमापति ओ हर्षनाथ एहन पदक हेतु सुप्रसिद्ध छथि। एहिना आनो कतोक पदक रचना भेल जे विद्यापतिक पदसँ भिन्न नहि प्रतीत होइत अछि। विद्यापतिक प्राचीन पदसंग्रहमे आनहु कविलोकनिक एहन रचना विद्यापतिक भनितासँ युक्त भए मिझराए गेल हो, ताहिमे कोनो आश्चर्य नहि।

विद्यापतिक प्रभावक ई क्रम 19म शताब्दीक अन्तो धरि रहल होअए, से नहि। आधुनिक युगहुमे ओहि परम्पराक अनुसरण होइतहिँ रहल अछि। 1860क पश्चात् मिथिलाक राजनीतिक परिस्थितिमे बड़ परिवर्तन भेल। कोर्ट आफ-वार्ड्सक 18 वर्षक शासनक पश्चात् म. लक्ष्मीश्वरसिंह ओ म. रमेश्वरसिंहक शासन-कालमे अंगरेजी शिक्षाक विस्तारसँ मिथिलाक जनजीवनमे नवीन दृष्टिक उदय भेल। एहि काल मध्य मिथिलाक शासन-कार्यमे मैथिलीक स्थान गौण भए गेल तथा उर्दू ओ हिन्दीक प्रभावक विस्तार भेल। दोसर दिसि मिथिलाक सामाजिक ओ आर्थिक अधःपतन चरम सीमा पर पहुँचि गेल। ओहि कालमे आर्यसमाजक सुधारवादी आन्दोलन जे व्यापक रुप लेलक, ताहिसँ मिथिला सेहो निरपेक्ष नहि रहल। एहि प्रक्रियाक फलस्वरुप मैथिली साहित्यक विधा ओ वस्तुविन्यासने विविधता तँ अएबे कएल, प्राचीन धाराक काव्य-परम्परा पर सेहो एकर प्रभाव पड़ल। अतः 1860क पश्चात् जे प्राचीन सम्प्रदायक काव्यधाराक विकास भेल, से दुइ प्रकारक-1. सामाजिक परिवेशसँ निरपेक्ष प्राचीन रीतिक। एहि प्रकारक रचनामे विद्यापतिक अविकल अनुसरण होइत रहल-ओहिना भक्ति-शृंगारविषयक भनितायुक्त संगीताश्रित पदक रचना, ओ 2. समाजसा क्ष वस्तुनिष्ठ तत्वसँ युक्त प्राचीन रीतिक। अवश्य एहन पद भक्तिविषयक मात्र अछि। भक्ति-पदक उद्देश्य आत्मगत होइत छैक, वस्तुगत नहि; अर्थात् एहिमे भक्त अपन आत्मकल्याण, मोक्ष, ईश्वरसान्निध्य प्रभृति वैयक्तिक कल्याण- कामना करैत अछि। प्रायः सब भाषाक उत्कृष्ट भक्तिकाव्यमे इएह आत्मगत-तत्वक प्रतिपादन भेल अछि, मुदा एहि युगमे आबि मैथिलीक भक्त-कवि आत्मकल्याण संग-संग वा कतहु-कतहु ओहिसँ अधिको देश, समाज, जाति प्रभृतिक कल्याणक भाव प्रकट करए लगलाह। एहन कवि, जनिक प्राचीन रीतिक पदमे एहि प्रकारक वस्तुनिष्ठ तत्व अधिक स्फुट भेल अछि, ताहि मध्य कवीश्वर चन्द्राझा, यदुनाथझा 'यदुवर' छेदीझा, पुलकितलालदास 'मधुर', भोलालालदास, भुवनजी, आरसीप्रसादसिंह आदिक नाम प्रमुख अछि। मुदा श्रृंगाररसक रचनामे ओएह प्राचीन रीतिक अनुसरण होइत रहल। अधिकांश नवीन कविगण विद्यापति-सम्प्रदायक रचना करबा काल पूर्ण रुपसँ प्राचीन रीति-विन्यासमे लीन भए जाइत छथि, अपनाकेँ वस्तुनिष्ठतासँ बचबैत रहैत छथि। एही दृष्टिएँ बाबू दुर्गादत्तसिंह, विन्ध्यनाथझा, गणनाथझा, गंगानाथझा, आदिनाथझा प्रभृतिक पश्चात् कविशेखर बदरीनाथ झा, स्व. ईशनाथझा, प्रो. तन्त्रनाथझा प्रभृतिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। व्यवहार-गीतक क्षेत्रमे कवयित्रीगणक सक्रिय योगदान नवीन युगक प्राचीन काव्य-परम्पराक प्रमुख विशेषता थिक आओर एही दृष्टिएँ महारानी अधिरानी राजलक्ष्मी, श्रीमती नन्दिनीदेवी, श्रीमती मोदवती देवी, श्रीमती मेधेश्वरीदेवी प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

प्राचीन-काव्य-धाराक प्रसंग एक विषय आओर ध्यान देबाक योग्य अछि

आओर से थिक नवीन कवि द्वारा श्रृंगारिक पद-रचना दिसिसँ विरक्ति। एहि विशेषताक प्रस्फुटन गत-शताब्दीक पूर्वहिसँ प्रारम्भ भए गेल छल। मुदा हर्षनाथझाक कवितामे श्रृंगाररस अपन सम्पूर्ण सरस काव्योत्कर्षक संग प्रगट भेल। तत्पश्चात् श्रृंगाररसक रचना होएबो कएल तँ से अधिक लोकप्रिय नहि भेल, काव्योत्कर्षक दृष्टिएँ तँ निम्न कोटिक। वस्तुतः एहि युगमे भक्तिपदक रचनामे बड़ व्यापकता आएल। एकमात्र चन्दाझा जतेक महेशवानी, नचारी, लिखलैन्ह ततेक सम्पूर्ण गत-युगमे लिखल उपलब्ध नहि भेल अछि। दोसर, जाहि-जाहि देवी-देवताक अर्चनामे पद-रचना भेल, ताहुमे विविधता आएल। मैथिली साहित्यक भक्तिकाव्यमे ज्ञानपक्षक अभिव्यक्ति बड़ थोड़ ठाम भेल अछि। एहू क्षेत्रमे महात्मा सत्यनारायणझाक रचनामे नवीनताक दर्शन होइत अछि।

किन्तु नवीन युगक विद्यापति-सम्प्रदायक गेयपद, यत्किंचित नवीन प्रवृत्तिसँ युक्त भेलहु सन्ताँ, प्राचीन-काव्य परम्पराक रचना सएह थिक; कारण, जेना उपरहु व्याख्या कएल गेल अछि, ओहि सभमे विद्यापतिक गीत-शैलीक सएह अनुसरण भेल अछि तथा विद्यापति-सम्प्रदायक जे मूल तत्व अछि, तकर अविच्छिन्न स्वरुप ओहिमे फूलमे सुगन्धि जकाँ सन्निहित भेटैत अछि।

विद्यापतिक पदहिक समान हुनक अनुसरण कएनिहार कविलोकनिक रचना संयोगहिसँ महाकालक गालसँ बाँचि उपलब्ध भए सकल अछि; कारण, कोनो कवि अपन रचनाक संकलन कए नहि राखि गेलाह। जँ कदाचित केओ अपन रचनाक संकलन कएनहुँ होएताह, तँ से उपलब्ध नहि भेल। पाछाँ जे पदसंकलन उपलब्धो भेल से एक तँ बड़ विरल, दोसर, बड़ अशुद्ध, प्रायः अशिक्षित काव्यरसिक द्वारा लिखित। कवि-परिचयक तँ कतहु उल्लेख नहि अछि। भनितामे प्रयुक्त कविक नाम एवं आश्रयदाताक उल्लेखक आधार पर परिचय तथा उद्भवकालक अनुमानटा कएल जा सकैत अछि। कविलोकनिक समयक निश्चित अनुमान करबहुमे कठिनता होइत अछि; कारण, एकहि नामक एकहि कालमे कतोक व्यक्तिक अस्तित्वक प्रमाण भेटि जाइत अछि। अतः कविगणक सूचीटा प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि, हुनक आविर्भावकाल एवं हुनक कृतित्व ओ कवित्वक सम्यक् मूल्यांकन करब तँ सर्वथा कठिन। कतेक कविक तँ एकटा पद मात्र प्राप्त भेल अछि आओर ताहि आधार पर हुनक कवित्व-प्रतिभाक आलोचना कोना सम्भव होएत ? अतः प्राचीन काव्य-परम्पराक कवि एवं तनिक काव्यकृतिक ऐतिहासिक इतिवृत्ति लिखब नितान्त असम्भव अछि। एही हेतुएँ एहि ग्रन्थमे ओहि कविगणक परिचयक चर्चा कएल जाएत जनिक परिचय आश्रयदाताक निश्चित समयक आधार पर अपेक्षाकृत अधिक सम्भावित अछि वा जनिक उपलब्ध पदक संख्या सएह अधिक अछि। वस्तुतः एहि परम्पराक प्रवृत्तिमूलक इतिहासेटा लिखब सम्भव अछि। कम-सँ-कम मध्यकाल धरिमे अवतीर्ण कविलोकनि, चूचारि

अपवादकेँ छोड़ि, एखनहुँ धरि अपरिचिते छथि। हुनकालोकनिक जे एक-आध पद विनष्ट होएबासँ बाँचि सकल, से हुनकालोकनिक नामटा बचओने अछि।

प्राचीन काव्य-धाराक कविलोकनिक स्फुट-पद निम्नलिखित पदावलीसँ उपलब्ध भेल अछि :-

1. **विद्यापतिक नेपाल-पदावली** - एहिमे विद्यापतिक पदक अतिरिक्त राजपण्डित, कंसनृपति, आतम, कंसनारायण, विष्णुपुरी, लखिमिनाथ, रतन, सिरिधर, नृप मल्लदेव, पृथिवीचन्द, भानु, धीरेश्वर एवं रुद्रधरक एक-एकटा पद ओ अमृतकरक दुइटा पद उपलब्ध अछि। एकर अतिरिक्त 12टा एहन पद अछि, जाहिमे ककरो नाम नहि अछि। अतः एहि कवितासभक रचयिता आन कवि सेहो भए सकैत छथि।

2. **विद्यापतिक रामभद्रपुर-पदावली** - ई पदावली खण्डित अछि। एहिमे दूटा पद अमृतकरक अछि। चौंतीस पदमे ककरो नाम नहि अछि। अतः एहिमे कतेक पद आन-आन कविगणक रचना भए सकैछ।

3. **विद्यापतिक तरौनीपदावली** - एहिमे 350 पद छल, से नगेन्द्रनाथ गुप्त अपन विद्यापतिक पदावलीक भूमिकामे लिखने छथि। किन्तु ओ ओहिमे 239 पद मात्र संकलित कएने छथि। शेष पद आन कविक रचना भए सकैत अछि। दोसर, अपन पदावलीमे विद्यापतिक कविता मानि जे रचना संकलित कएने छथि, ताहूमे पद-संख्या 784 पंचाननक तथा पद-संख्या 366 उमापतिक रचना थिक।

4. **विद्यापतिक राजलाइब्रेरीबला पदावली** - प्रो. रमानाथ झा द्वारा अन्वेषित एहि एक अत्यन्त छोट पदावलीमे एकटा पद लखिमिनाथ एवं एकटा कोनो अज्ञात कविक रचना अछि। एकर प्रकाशन सविस्तर आलोचनात्मक विवरणक संग गंगानाथझा-रिसर्च इन्स्टिटियूटक जर्नल ग्रंथ संख्या-2 भाग-4 पृ. सं. 403.416मे भए चुकल अछि।

5. **भाषागीत हस्तलेख** (क) - नेपालक दरबार लाइब्रेरीसँ म. म. हरप्रसाद शास्त्री एवं डा. पी. सी. बागची द्वारा अन्वेषित ई मैथिली पदक महत्वपूर्ण ग्रन्थ थिक। एकर संकलन प्रायः भूपतीन्द्र मल्ल (1696-1722) द्वारा करबाओल गेल छल। एहिमे 81टा मात्र पद अछि। (ख) डा. जयकान्त मिश्र द्वारा राजगुरु हेमराज शर्माक पुस्तकालयसँ अन्वेषित एहि संग्रहमे 173 पद संकलित अछि। एहिमे 99 पद एक गोटाक ओ शेष 74 पद दोसर गोटा द्वारा लिखल अछि। एहिमे संकलित कविगणमे 8 गोट मात्र परिचित छथि, शेष अद्यावधि अपरिचित छथि।

6. **कंसनारायण-पदावली अथवा भाषागीतसंग्रह** - एहि पदावलीक सम्बन्धमे पहिल बेर चर्चा डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे कएने छथि। किन्तु 1967 ई.मे प्रायः एकरे फोटो-प्रतिलिपि राजगुरु हेमराज शर्मा लाइब्रेरीसँ प्रो. रमानाथ झा अनलैन्हि जे 'भाषागीत-संग्रह' नामसँ पटना विश्वविद्यालय द्वारा 1969 ई.मे प्रकाशित भेल। एकर अध्ययनसँ सिद्ध होइत अछि जे एकर कंसनारायण-पदावली नाम उपयुक्त नहि: कारण, कंसनारायणक अतिरिक्त आनहु कविगणक रचना एहिमे संकलित अछि। एकर प्रतिलिपि कोनो विद्वान व्यक्ति द्वारा कएल प्रतीत होइत अछि कारण, पद बड़ शुद्ध-शुद्ध लिखल अछि। एहिमे विद्यापतिक कएक गोट अद्यावधि अप्रकाशित पद प्राप्त भेल अछि जे उत्कृष्ट कोटिक अछि। विद्यापतिक अतिरिक्त 26 गोट अन्यान्य कविगणक रचना सेहो एहि मध्य संगृहीत अछि।

7. **पारिजातहरणक भूमिकामे चेतनाथ झा** द्वारा उद्धृत दुइ कविक रचना।

8. **चंदा झाक पोथासभमे** प्रायः लोककण्ठसँ संकलित पद।

9. **रागतरंगिणी** - लोचन-कृत एहि ग्रन्थमे 51 गोट विद्यापतिक, शेष 46 आन-आन कविक रचना संकलित अछि। लोचनक समय ज्ञात अछि, अतः एहिमे संकलित कविगण हुनक समसामयिक वा हुनकासँ प्राचीन छथि। एहिसँ ओहि कविगणक मोटामोटी आविर्भावकालक सीमानिर्धारण करबामे बड़ सहायता भेटैत अछि।

10. **नानारागगीतम्** - एकर विवरण पूर्वप्रकरणमे देल जाए चुकल अछि। एहि मध्य 28 गोट अज्ञात मैथिली कविक रचना संगृहीत अछि।

11. **वैष्णव-पदावली** - पदकल्पतरु, पदामृतसमुद्र आदि वैष्णव-पदावलीमे विद्यापतिक पदहिक समान अन्य मैथिली कविगणक रचना सेहो संकलित अछि। उदाहरणार्थ, रागतरंगिणीमे संकलित सिंहभूपतिक दूटा पद अछि। किन्तु पदकल्पतरुमे सिंहभूपतिक नामसँ कतोक पद संकलित अछि। द्रष्टव्य थिक 'विद्यापतिगोष्ठीक'क हिन्दी संस्करणक पृ.-96।

उपर्युक्त पदावलीमे जे कविगण उपलब्ध छथि, ताहि कविगणक चर्चा डा. जयकान्त मिश्र विद्यापतिक समसामयिक वा उत्तराधिकारी कविगणक रुपमे कएने छथि।

मध्यकालीन कविगणक रचना निम्नलिखित ग्रन्थसभमे उपलब्ध होइत अछि जे मुद्रित ओ अमुद्रित दुहू रुपक अछि।

1. **संस्कृत-प्राकृतक नाटक** जाहिमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि। उमापति, रामदास, रमापति, वंशमणि, शिवलाल, कविलाल, नन्दीपति, रत्नपाणि, भानुनाथ, हर्षनाथ, प्रभृतिक अधिकांश पद एही माध्यमसँ उपलब्ध भेल अछि।

2. **प्राचीन गीत-संग्रह-मुद्रित (क) मैथिली क्रिस्टोमैथी** (1882) **सं-ग्रियरसन, (ख) ट्वेण्टी वन हीम्स सं.-ग्रियरसन, (ग) मिथिला-गीत-संग्रह (1917) सं.-भोल झा। एहिमे 200 पद संकलित भेल अछि। (घ) मिथिला-भक्ति-प्रकाश (1920) सं. बाबू ललितेश्वर सिंह, (ङ) पत्रपत्रिकामे वा स्वतन्त्र ग्रन्थक रुपमे प्रकाशित**, यथा साहेबरामदास-पदावली, हर्षनाथ झा-ग्रन्थावली, विन्ध्यनाथ-गणनाथ-पदावली प्रभृति। अमुद्रित हस्तलेख-संग्रह, (क) **मगरौनी-हस्तलेख**-एहि मध्य रतिपति द्वारा गीतगोविन्दक अनुवाद, आनन्द कविक ब्रजभाषाक कृति कोकशास्त्र, मनबोधक कृष्णजन्म, सुरदासक गीत-दशावतार, ब्रजभाषामे दानलीला, अपरिचित कविक रचित सुदामा-चरित्र आदि संकलित अछि। ई हस्तप्रतिलिपि फाटल ओ सए वर्ष पुरान लगैत अछि। एकर अन्वेषणकर्ता डा. उमेश मिश्र छथि, (ख) **गजहराक हस्तलेख**-शतावधि दुर्लभ पदक संकलन एहिमे अछि, संगहि कोनो अज्ञात कविक रुक्मिणीस्वयंवर, चक्रपाणिक 'उपाहरण' सेहो एहि मध्य लिखित अछि। हस्तप्रतिलिपिक ऊपरमे चानपुराक विश्वनाथ चौधरीक नाम लिखल अछि, किन्तु मूलतः सोतिपुराक कोनो कायस्थक संकलन थिक, जाहि मध्य कतेक लिपिकारकक अक्षर अछि। एकर अनुसंधान डा. जयकान्त मिश्र कएल। ई प्रतिलिपि सए वर्षक ऊपरेक बूझि पड़ैत अछि, (ग) **श्री जितेन्द्र नारायण झाक** अधिकारमे सेहो एकटा **प्राचीन गीत-संग्रह** अछि, जकर सहायता लए **कविशेखर बदरीनाथ झा** 'मैथिली-गीत-रत्नावली'क संकलन प्रकाशित कएल। एहिमे प्राचीन-प्राचीन कविसँ लए रत्नपाणि धरिक पदक संकलन अछि। एहिमे कोनो रुद्रधर कविक पद-समूह सेहो लिखल अछि, जकर ऊपरमे नाट्यनिर्देश सेहो कएल अछि। सम्भवतः ई रुद्रधरक कोनो कीर्तिनिआँ-नाचमे प्रयुक्त भेनिहार पद थिक, जे संस्कृत-प्राकृतसँ अनभिज्ञ मिथिलाक नाच-मण्डलीक हेतु संस्कृत -प्राकृतसँ भिन्न कए लिखल गेल हो।

एहि संकलनक अतिरिक्त स्त्रीगणकेँ सिखबाक हेतु आओर कतेक प्राचीन पदावली होएत जे प्रकाशमे नहि आएल अछि वा रखले-राखल कृमिक शिकार भए गेल। मु. रघुनन्दन दास, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, बाबू गंगापति सिंह आदिक वैयक्तिक पुस्तकालयमे सुरक्षित शिवदत्तक 'सीता-स्वयंवर', कर्ण श्यामक पदावली आदिक चर्चा डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे कएने छथि। मुदा ओहि सभक उपलब्धि सर्वजन-सुलभ नहि अछि।

आधुनिक कालक विद्यापति-सम्प्रदायक रचना वा पत्रिकामे प्रकाशित भेल अथवा कविक वैयक्तिक कविताक संग्रहमे। 'गीतमाला'मे प्राचीन कवि ओ आधुनिक कविक पदसभ संगृहीत भेल, जाहिमे अधिकांश स्व. ईशनाथ झाक पद अछि। वैयक्तिक पदसंकलनक दृष्टिएँ चन्दा झाक 'चन्द्रपदावली', गोसाँई सत्यनारायण झाक 'भजनामृततरंगिणी', बद्रिनाथ झाक 'लक्ष्मीवती-गीतांजलि', बाबू [illegible] सिंहक पदसंग्रह, श्यामानन्द झाक 'मैथिली गीतचन्द्रिका', नन्दिनीदेवीक 'मैथिली गीतांजली', राजलक्ष्मीक 'भजनमाला', भुवनेश्वरीदेवीक 'गीतांजलि' आदि उल्लेखनीय अछि। 'नमस्या'मे प्रो. तन्त्रनाथझाक नवीन रीतिक संग-संग प्राचीन रीतिक कविता सेहो संकलित भेल अछि। विद्यापति-सम्प्रदायक काव्यधाराक क्रमबद्ध ओ ऐतिहासिक रुपरेखा प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ कविशेखर बदरीनाथ झा ओ प्रो. रमानाथ झाक प्राचीन रीतिक पदक संकलन बड़ महत्वपूर्ण अछि। कविशेखरजी सर्वप्रथम 'मैथिली गीत-रत्नावली'मे विद्यापतिसँ लए आधुनिक युगक प्रमुख-प्रमुख कविगणक पदक क्रमबद्ध संकलन कएल, जाहिमे पहिल बेर प्राचीन काव्य-परम्पराक अविच्छिन्न ऐतिहासिक रुपरेखा प्रस्तुत कएल गेल। प्रो. रमानाथ झा 'प्राचीन गीत'मे एहि कार्यकेँ व्यापक रुपमे, प्रवृत्तिविभाजन तथा आलोचनात्मक विश्लेषण करैत आगाँ बढ़ाओल, जाहिसँ एहि परम्पराक विकासक रुपरेखा आओर अधिक स्पष्ट भेल। वस्तुतः ई कार्य मैथिली कविताक अध्ययनक दृष्टिएँ ऐतिहासिक महत्वक भेल अछि। 'भाषागीतसंग्रह'क परिशिष्ट-3 मे ओहि मध्य संगृहीत कविलोकनिक विषयमे परिचयात्मक टिप्पणी एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।

- कवि-परिचय

1. **अमृतकर (अमिअकर)** - ई. म. शिवसिंहक मन्त्री बल्लाहनिमुल्लक चन्द्रकरक पुत्र ओ श्रीधरक वंशधर छलाह। श्रीधरक एक गोट वंशधर सूर्यकर हरिसिंहदेव (1324)कैं पाँजिव्यवस्थाक संघटनमे बड़ सहायता कएने छलथिन्ह। एही वंशमे मुं. रघुनन्दन दासक जन्म भेल जे आधुनिक काव्यक्षेत्रमे प्रख्यात छथि। अमृतकर अपन रचनामे म. शिवसिंह (द्रष्टव्य 'रागतरंगिणी) एवं म. भैरवसिंह-जसमादेवि (रामभद्रपुर पोथीसँ संगृहीत प्राचीन गीत सं. 105)क नामोल्लेख कएने छथि, अत समकालीन होइतहुँ विद्यापतिसँ नवीन छलाह। 'विद्यापति-काव्यालोक'मे उद्धृत छप्पयक अनुसार विद्यापति हिनक गुणज्ञता, उदारता ओ विद्वत्ताक हेतु प्रशंसा कएने छथि। अन्तिम दुइ पंक्ति द्रष्टव्य थिक-

कायस्थ माँह सुप्रसिद्ध भउ चन्द्र तुल्लाइव शशिधरः।
कवि कण्ठहार कल उच्चरइ अमिअ बरस्सइ अमिअकर।।

"पुष्पाञ्जलि"क मैथिली अनुवादक परिशिष्टमे कवीश्वर चन्दा झा तिनक मिथिलाराज ओ विद्यापति व. शिवसिंहक सेवाक उल्लेख कएने छथि। अनुमानतः हिनक रचना प्राचीन पदावलीमे प्रायः भेटितहि अछि। अद्यावधि तिनक सात गोट पद- 'रागतरंगिणी'मे एक गोट, रामभद्रपुरक पोथीमे दू गोट (68 ओ 82), नेपालक तालपत्रपोथीमे दू गोट (175-6) एवं नागमीतसंग्रहमे दू गोट (87 ओ 96) उपलब्ध अछि, जाहिमे तिनक उच्चकोटिक कवित्वक परिचय भेटैत अछि। पहिने सिद्ध भेल अछि जे ओ लोकप्रिय कविक रूपमे सेहो प्रख्यात छलाह। तिनक कतोक पद नाटक छल अथवा रत्नाकर-विद्यापतिक उक्त गीतक पद 'नाग-गीतसंग्रह'मे उपलब्ध अछि।

तिनक शृंगारिक पद मात्र उपलब्ध अछि। किन्तु जत उपलब्ध अछि, सएह तिनका उच्चकोटिक कविक रूपमे सिद्ध करैत अछि। 'रागतरंगिणी'मे संकलित मुग्धा-वर्णन एकर दृष्टान्त थिक। रामभद्रपुर पोथीमे उपलब्ध लोचन लोचनक कविक निम्नांकित पंक्ति सेहो द्रष्टव्य थिक -

आनन विकसित कमलक ई दीपि अइसन हो भान।
नयन योवन भरल तन ई भमि भमि कर मधुपान॥

अभिनव कविक मातर्में जे पद उपलब्ध अछि, सेहो अनुमानतः हिनक थिक, परिचय कोनो सन्देह नहि। परन्तु प्रो. राधाकृष्ण चौधरी दुहुकें भिन्न-भिन्न कवि मानैत छथि।

(2) हरपति - हरपति विद्यापतिक जेठगर पतीक जेठ बालक छलाह। तिनक मातामह छलथिन्ह मधुसूदन मकरन्दपुरक वंशीधरठाकुर। तिनक पर्याप्त परिचय पञ्जीमे प्राप्त होइत अछि। तिनक रचनाक उल्लेख नहि अछि। 'व्यवहारप्रदीप' नामक सुप्रसिद्ध ज्योतिषग्रन्थ तिनकहि द्वारा रचित मानल जाइत अछि, जकर अन्तमे ओ अपनाकें 'सुसत्यकरक' कहने छथि। चन्दा झा 'दैवज्ञ-बान्धव' नामक ज्योतिषग्रन्थक रचयिता तिनके मानने अछि, जाहिमे लेखकक स्थान पर हरपतिक उल्लेख अछि। प्रो. ह. जयकान्त मिश्र ओ म. म. जीवानन्दठाकुरक मतानुसार हरपति ओ हरपत्न व्यक्ति एहि विद्यापतिक जेठ बालक छलाह। दैवज्ञ-बान्धवमे ओ अपनाकें 'महामहोपाध्याय' कहने छथि।

हरपति द्वारा 'व्यवहारप्रदीप'मे प्रमाणक हेतु मैथिलीमे छाकल अनेक वचन उद्धृत कएने छथि जे मिथिलाभाषाक पूर्व-रूपक अध्ययनमे बड़ सहायक भऽ सकैत अछि। तिनक मैथिलीक तीन गोट पद उपलब्ध अछि। तीन गोट पद डा. उमेशमिश्र द्वारा प्रथम दिबीज 'विद्यापतिठाकुर' नामक ग्रन्थमे उद्धृत, एक गोट गीत मोंगल उपलब्ध

ग्रन्थकारी बटुकनाथ द्वारा 1894मे कुमारस्वामीक म.म. कामेश्वर्मा-कृत 'श्रीकामेश्वरसिंहक कृष्णजन्मप्रकाशक काव्यमिलावपत्र'मे प्रकाशित अछि तथा डा. वेदनाथक द्वारा 'गीतकार हरपतिठाकुर' (मिथिला 21 फरवरी, 1965) नामक निबन्धमे उद्धृत कएने छथि। पाँचम गीत हमरा उपलब्ध भेल अछि एकटा अप्रकाशित गीत-संग्रहमे। प्रथम चारि गोट गीतमे कोनो आध्यात्मिक भणिता नहि अछि, परन्तु पाँचम गीतमे भणिता अछि-

कहि हरपति ई कविता रे। रस बुझ सकलगुणग्राम पिया रे॥

अनेक विद्वानक मतानुसार यदि हरपति सभटिहूँ विद्यापतिक बालक छलाह तँ ई सतानन्दक म. म. कमलेश्वरक पुत्र म. धीरेश्वरक पौत्र तथा म. गणपतिक अनुज म. आनन्दपालक कनिष्ठ बालक म. सतानन्दक सेहो सिद्ध होइत छथि। मुदा शंका होइत अछि जे यदि हरपति सभटिहूँ सुसत्यकर छलाह तँ अन्यान्य पदावलीमे आध्यात्मिक उल्लेख किएक नहि अछि।

हरपतिक उपलब्ध पद सभटा शृंगारात्मक अछि। पञ्चकोटि मानिनी एवं प्रोषितपतिकाक मनोभावकें ओ बड़ स्वाभाविक रीतिसँ अभिव्यक्त कएने अछि, जाहि मध्य मधुर नाटक सम्पदा, अभिव्यक्तिक सजीवता एवं भाषाक सरलता सहजहि हृदयकें आकृष्ट कए लैत अछि। पाँचम पदक किछु पंक्ति एतए उद्धृत अछि जाहि मध्य नायकक हेतु नायिकाक हृदयमे उमड़ल अनुरागक चित्रात्मक वर्णन अछि-

हे कान्हु, हमरें हेतु हम चूक रे,
पहिलहुँ मानें न बाजल किछु रे।
हे कान्हु, तुअ गुण सुमरइत जावे रे,
अइसन कए सुख विहुँसति तावे रे॥

वस्तुतः हरपतिक पदमे कलात्मक दृष्टिएँ नहि, नायिकाक मनोभावक भावात्मक अभिव्यक्तिक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि।

3. चन्द्रकला - 'रागतरंगिणी'मे एकटा पद अछि, जकर अन्तिम पंक्ति थिक 'चन्द्रकला ई गाओल कएलाँ, मानिनि मानव अनुकरवाँ' तथा नीचाँमे लोचन द्वारा लिखल छैक- "इति विद्यापतिसुतवध्वा:"। किन्तु डा. सुकुमार सेनक 'विद्यापति-गोष्ठी'क अनुसार ई युक्तिसंगत नहि, गायक मनोक नाम ई भऽ सकैछ।

यदि वस्तुतः चन्द्रकला विद्यापतिक पुत्रवधू छलीह, तँ निस्सन्देह विदुषी महिला

होइतहि। पंजीक अनुसार विद्यापतिक पौत्रा बालक हलधिक-हरपति, नरपति एवं [illegible]। हरपतिक तेरह बिशु पद उपलब्ध अछि। अतः बहुत सम्भव जे हरपतिक रचना होइतहि। [illegible] कवित्वक दृष्टान्तक हेतु निम्नलिखित पंक्ति उद्धृत कयल जाइत अछि, जाहिसँ सिद्ध भऽ जाइत जे हुनका संस्कृतभाषा पर कोन सबल अधिकार छलनि-

> [illegible] कोमलम्
> [illegible]॥
> [illegible]।
> [illegible] ते हुलम्॥

4. भानुकवि - एहि कविक पचास पद नेपालमे उपलब्ध भेल अछि, जाहि भनितामे लिखल अछि- 'चन्द्रसिंह नरेश जीवओ भानु जम्पए रे'। चन्द्रसिंह म. भैरवसिंहक वैमात्र छलाह, अतः हिनक समय निश्चित अछि 1475-1540। किन्तु ओहू कालमे दू गोट भानु छलाह-1. सोदरपुर कटकासमूलक विद्यानिधिक बालक भानु मिश्र एवं 2. सोदरपुर मानिनकमूलक साहित्यशास्त्रक प्रमेय ग्रन्थ 'रसमंजरी', 'रसतरंगिणी', 'रसपारिजात' एवं 'कुमार-भार्गवीय' चम्पूक रचयिता म. म. कविराज भानुदत्त मिश्र। डा. जयकान्त मिश्र ओ प्रो. रमानाथ झा दुहु विद्वान सहमत छथि जे ई दोसर भानुदत्त मिश्र स्वयं भानु कवि छथि, जनिक नाम पर हुनक सार मिसरुमिश्र 'विवादचन्द्र'क रचना कयने छलाह। हिनक जे पद अछि से नातिस्पष्ट अछि। एहिमे [illegible] नायिकाक चित्रण भेल अछि। काव्यगुणक दृष्टिएँ ई मध्यम कोटिक कवि सहज सिद्ध होइत छथि। द्रष्टव्य थिक 'प्राचीन गीत'क पद संख्या 106।

5. गजसिंह - गजसिंहक परिचय नहि प्राप्त अछि। 'रागतरंगिणी'क एक पदमे ओ [illegible] पुरुषोत्तमक कीर्तन करैत छथि ओ दोसरमे कुमार गजसिंह ओ [illegible] दुहु लिखल अछि। एकटा हस्तलेखपोथीमे हिनक एकटा पद भेटल अछि, तहु पद "पुरुषोत्तम हे [illegible]"क उल्लेख अछि। सिंहान्त नामसँ हुनक राजकुलमे होयब सूचित होइत अछि एवं 'कुमार'क विशेषण तकर पुष्टि करैत अछि। तखन कोन राजकुमार भऽ नृप पुरुषोत्तमक कीर्तन कियेक करतैथि? [illegible] दू गोट पुरुषोत्तम भेल छलाह-1. म. भैरवसिंह ओ रानी जयाक बालक [illegible] पुरुषोत्तम तथा 2. महाराज पुरुषोत्तम ठाकुर (1671-1726)। बहुत सम्भव थिक जे गजसिंह प्रथम पुरुषोत्तमक समकालमे रहल होथि।

डॉ. रमानाथ झाक उक्ति अछि जे "सम्भव थिक ई ओइनिवार राजा पुरुषोत्तमोक [illegible], पुरुषोत्तम जे [illegible] पिता रामभद्रक भार

हलधिक (भा. गी. सं.-पृ. 170)।

'भाषागीत-संग्रह'मे हिनकर एकटा पद (65) संगृहीत अछि। अतः काव्योत्कर्षक दृष्टिएँ गजसिंहक उपलब्ध चारु पद उच्चकोटिक अछि। मधुर भाषा, सरस स्वाभाविक भाव एवं संगीतात्मक प्रवाहक दृष्टिएँ हिनक रचना उत्कृष्ट अछि। हिनक प्रतिभा विरह-वर्णनमे अधिक निखरल अछि। प्रो. रमानाथ झा हिनक उपलब्ध गीतसभकेँ हुनक कोनो नाटकक रचना मानैत छथि, मुदा पदसभसँ ओहि नाटकक कथावस्तुक अनुमान नहि होइत अछि। द्रष्टव्य थिक हस्तलेखपोथीक निम्नलिखित पंक्ति-

> हे अनुरागिनी बाला विरह विकल छिक हे।
> कलय टरकि खसु हार भेल भारे
> निकसय सजल रे पुनु पुनु धारे
> असनिरयन काय बहु नोरा
> मोतिम वमावय रे जनि निचल चकोरा" आदि

6. दशावधान ठाकुर - दशावधान विद्यापतिक उपाधिक रूपमे ख्यात छल, मुदा 'भाषा-गीतसंग्रह'क 18-99 संख्यक पदक अन्तमे "दशावधान ठाकुरस्य हैं" उल्लेखसँ आब पूर्णतः सिद्ध भऽ जाइत अछि जे ओ कोनो आन कवि छलाह। हिनक एक गोट पद 'रागतरंगिणी'मे भीम-पलासीक लक्षणक उदाहरणक रूपमे, एक गोट नगेन्द्रनाथगुप्तक पदावली (120)मे विद्यापतिक नामसँ तथा चारि गोट पद (16, 34, 98 एवं 116) 'भाषा-गीतसंग्रह'मे संगृहीत अछि, एकर 16म पद 99म पदमे पुनरावृत्त अछि। एकटा हस्तलेख पोथीमे सेहो हिनक पद भेटल अछि, मुदा यत्किंचित पाठ-भेद रहितहुँ ओ 'रागतरंगिणी'क पद थिक। भा. गी. सं. क 116म पद सेहो 'रागतरंगिणी'क पद थिक, मुदा एहि मध्य आरम्भक तीन चरण अधिक ओ भनिताक पंक्ति सेहो अछि। 'रागतरंगिणी'क पदमे आलमसाहक, नगेन्द्रनाथ गुप्तक पदमे दामोदरक एवं भा. गी. स.क पदमे बंग-पुरन्दर चान्दराकक चर्चा अछि। एहि सब आधार पर हिनक आविर्भाव कालक अनुमान कयल जाए सकैत अछि।

पञ्जीमे तीन गोट दशावधान-उपाधिधारी व्यक्ति भेटैत छथि, प्रथम कटकासोदरपुर-मूलमे हरपतिक बालक, मुदा ओ मिश्र छलाह, ठाकुर नहि। दोसर छलाह गढमाण्डर-मूलक रुचिपतिक बालक नरपति जे दशावधान कहाबथि। हिनक मातृमातामह छलथिन्ह रैआमवासी सोदरपुरिआए गंगापतिमिश्र। गंगापतिक वैमातेय भाए धानुक कन्यासँ पदमसिंहक विवाह छल। अतः हिनक आविर्भाव-काल 1500 छल, मुदा ई ठाकुर कहाबथि अथवा नहि से नहि कहि। तेसर दशावधान छलाह

बहेराढ़ी-मूलक प्रज्ञाकरक बालक। प्रज्ञाकरक पितामह बराहक जेठ भाए बिरखूक कन्या उमासँ शिवसिंहक पाँचम विवाह छल। अतः हिनक आविर्भाव-काल 1500 ई.सँ पूर्व नहि रहल होएत। बराहक विवाह छल रुद्रक पिउसिमे ओ म. महेशठाकुर रुद्रक दौहित्र छलाह। एहि प्रकार दशावधान छलाह म. महेशठाकुरसँ किछु जेठ, मुदा समकालिक। ई लोकनि ठाकुर कहाबथि। अतः हमरालोकनिक दशावधान हएह प्रज्ञाकरक बालक भए सकैत छथि, मुदा सन्देह उत्पन्न कए दैत अछि एक ठाम एकवचनान्त ठक्कुरस्य (भा. गी. सं. 16 ओ 99) एवं दोसर ठाम (116) 'ठक्कुराणां' बहुवचनान्त उल्लेख।

हिनक पदमे उल्लिखित चान्दराय के छलाह, से निश्चय नहि होइत अछि। बंगकोशक अनुसार केदाररायक जेठ भाए विक्रमपुरक राजा चान्दराय राजमहलक पैघ जमिन्दार छलाह, असच्चरित्र एवं दस्युदलाधिपति। हएह पश्चात् नरोत्तम ठाकुरक शिष्य भए परम वैष्णव भेलाह। नरोत्तम ठाकुरक जन्म शाके 1453-54मे निश्चित अछि, अतः दशावधानक चान्दराय ई लोकनि सिद्ध नहि होइत छथि। एहिना 'रागतरंगिणी'बला पदक आलमसाह सेहो के छलाह, से निश्चयपूर्वक नहि कहल जाए सकैत अछि। यदि ई आलमसाह (1444-51) छल होथि तँ 15म शताब्दीक मध्य हमरालोकनिक दशावधानक हेतु बड़ पुरान भेल। अतः प्रो. रमानाथ झाक मतानुसार ई आलमसाह छलाह हाजीपुरक शासक मखदूम आलम जे 1536 ई.मे शासन करैत रहथि। नगेन्द्रनाथगुप्तक पदमे उल्लिखित दामोदरक प्रसंग डा. जयकान्त मिश्रक अनुमान अछि जे ओ म. महेशठाकुरक भाए छलाह, मुदा राय हुनक आस्पद नहि छल, अतः ई अनुमान युक्तिसंगत नहि लगैत अछि।

दशावधानक पाँच गोट मात्र पद उपलब्ध अछि, मुदा ताहिसँ ओ प्रथम श्रेणीक शृंगाररसक कवि सिद्ध भए जाइत छथि। हिनक जतेक रचना अछि, से सब रुप-वर्णन थिक। भा. गी. सं.क तीन गोट पद सम्भुक्ताक वर्णन एवं एक गोट पद पसाहनिक वर्णन थिक जे सर्वथा अभिनव रीतिक कहल जाए सकैत अछि। गीतसबहिक भाषाक मधुर सरलता एवं भावाभिव्यक्तिमे कल्पनाक विच्छित्तिपूर्ण रमणीयता विशेष रुपसँ द्रष्टव्य थिक। उदाहरणार्थ :-

1. पसाहनिक वर्णन :-

ए राहि बनलि पसाहनि तोहि रे, हेरितहिँ जुवक हृदय जा मोहि रे।
सिन्दुर सीम सिरँ चान्दन बिन्दु रे, कच तम रुधिर धार बिच इन्दु रे।
अंजने रंजित लोचन तोरा रे, भमर सुतल जनि कमल कोराँ रे।

2. विरहिणीक सन्ताप-वर्णन-

देखलि तोहरि धनि अनुदिने अड़ि पिनि
जनि दिन उगलि तारा।
तिलाओ न देहरि तेज तुअ पथ हेरि
नयन बारिस जलधारा।। आदि

7. विष्णुपुरी - करमहातरौनीमूलक श्रीधरक पौत्र ओ रतिधरक पुत्र छलाह। श्रीधर छलाह म. महेशठाकुरक पिता चन्द्रपतिठाकुरक मातामह। रमापति हिनक मूल नाम थिक। पहिने शिवभक्त ई पाछाँ संन्यासी भए विष्णुपुरी अपन नाम धएल, पाछाँ फेर गृहस्थाश्रममे आबि विवाह कएल। 'भक्ति-रत्नावली'क ई प्रसिद्ध लेखक अनेक संस्कृत-ग्रन्थक रचना कएल, मुदा 'भक्ति-रत्नावली' मात्र उपलब्ध अछि। एकर बंगला अनुवाद 1487ई.मे लौरियाकृष्णदास कएल। अतः हिनक समय (1425-1500) निश्चित अछि। कविशेखर बदरीनाथझा हिनक परिचय 'मैथिली-गीत-रत्नावली'मे दैत लिखने छथि-"चैतन्यदेवक परमगुरु माधवेन्द्रपुरीक संगी म. म. महेशठाकुरक माम छलाह। 'प्रेमचन्द्रिका'क रचयिता परमानन्दपुरी हिनक शिष्य-कोटिमे छलथिन्ह। एखनहुँ विष्णुपुरीक डीह तरौनी गाममे प्रसिद्ध अछि"। विष्णुपुरीक कवित्व उत्तम कोटिक अछि। प्रो. तन्त्रनाथझा अपन Vishnupuri: The Maithil Vaishnava Savantमे हिनक प्रसंग विस्तारसँ लिखल अछि। हिनक कुल पाँच गोट पद उपलब्ध अछि, दुइ-दुइ गोट शिव ओ कृष्ण-विषयक एवं एक गोट रामविषयक। उच्च कोटिक शिव ओ विष्णुभक्त होइत ओ शृंगाररसक रचना कएल, से हिनक रसिकताक परिचायक थिक। उदाहरणार्थ

1. भमि भमि पुछ गौरी देहे उपदेशे।। माइ हे
कि देब मनाओब रूसल महेशे।।
खाट तुरैया सेज हुनि न सोहाबए।।
जतहु कतहु बाघछाल ओछाबए।।
क्षीर कपूर, पान हुनि न सोहाव।।
आक धुतुर फुल ताहि भल भाव।।
विष्णुपुरी कह हित उपदेश। आदि

2. प्रथम वयस जत उपजल नेह। एक परान एक जनि देह।।
तइसन पेम जंदि विसरह मोर। काठहु चाहि कठिन हिअ तोर।।
ए प्रभु ठाकुर न तेजहु नारि। तोहि बिनु लागब कओन ओहारि।।
सुपुरुष चिन्हअ एहे परिनाम। जइसन प्रथम तइसन अवसान। आदि

8. यशोधर - 'रागतरंगिणी'मे यशोधरक जे पद कहल जाइत अछि, तकर एक पदमे 'नवकविशेखर'क उपाधि अछि, किन्तु दोसर पद जे यशोधर कविशेखर रचित कहल जाइत अछि, ताहिमे 'नव' नहि अछि। प्रथम पदमे हुसैन-शाहक एवं दोसर पदमे नसरत शाहक उल्लेख अछि। एहि हुसैनशाह ओ नसरतशाहक समय कालक्रमसँ एक दोसराक पश्चात् पड़ैत अछि। ई दुनू गोटा की तँ जौनपुरक शासक नसिरुद्दीन महमुद (1442-1454) ओ हुसैनशास (1457-1491) छल होएताह वा बंगालक शासक हुसैन शाह (1489-1520) ओ नसरत शाह (1521-1533)। भा. गी. सं. (2) मे पञ्चगौड़ेश्वर नासिरशाहक स्पष्ट उल्लेख अछि। बंगालक शासक विद्याप्रेमी छलाह; दोसर, ओही समयमे पलिबारमूलक महिन्द्रबालाशाखामे एकटा यशोधर कवि भेल छलाह, नैयायिक नाथूझाक ज्येष्ठ बालक। हिनक श्वशुर छलथन्हि दरिहरय महेश, जनिक बापक वैमातेय बहिनिमे विवाह छल नरओनय दिनकरक। दिनकरक दौहित्र छलाह ओइनिवारक कंसनारायणक पिता रामभद्र। अतः 1489 सँ 1533 धरि हिनक आविर्भाव-काल निश्चित होइत अछि। बहुत सम्भव थिक जे इएह यशोधरकवि कविशेखर ओ नवकविशेखरक नामसँ मैथिलीमे लिखने होथि। मुदा पंजीमे ई 'कविशेखर' उपाधिसँ रहित छथि। हिनक रचना उच्च कोटिक श्रृंगाररसक अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्ति-

1. से गुनगाहक नाह देसाँतरँ कामे-पसारब उसारब ना।।
सुदिना दिना, मोर पिआ घर आओत ना।। आदि
-'भा. गी. सँ.' सँ

2. भमरवर ! मोरे बोले बोलब कन्हाई।
विरह-तन्त जदि जान मनोभव की फल अधिक जनाई।।
तोहँ हमँ पेम जते दुरेँ उपजल सुमरवि से परिपाटी।
आबे पर-रमनि-रंग रस भुलला हे कओन कला हम घाटी।। आदि
'रा. त.' सँ

9. कंसनारायण - म. शिवसिंहक पश्चात् अन्तिम ओइनिबार-नरपति लक्ष्मीनाय कंसनारायण मैथिली साहित्य-संगीतक पैघ आश्रयदाता भेलाह। हिनक आश्रयमे कतोक कविगण साहित्यसेवा कएल। अतः कंसनारायण इएह नरपति रहल होथि, से सम्भव। मुदा 'रागतरंगिणी'क हिनक गीतमे 'नसिरा भूपति' ओ 'नासिरशाह सुरतानें' उक्ति सन्देह उत्पन्न कए दैत अछि। मोरंगमे ओ. नसिरामे सेहो कंसनारायण नामक राजा भेल छथि। इहो सम्भव जे मोरंगक राजा कविताक आश्रयदाता छल होथि, कारण ई अपनहु सुकवि छलाह। दुइ गोट 'रागतरंगिणी'मे, एक गोट नेपालतालपत्र-पोथीमे तथा एक गोट भा. गी. सं. मे हिनक पद संगृहीत अछि। दुइ गोट

पद लक्ष्मीनाथ नामे हिनक भा.गी.सं. मे अछि। कतेक पदमे 'कंसनृपति' भनिता अछि। भए सकैछ जे कंसनृपति कंसनारायणहिक पर्याय हो। हिनकहि आश्रयमे गोविन्द, काशीनाथ, रमानाथ ओ श्रीधर नामक कविगण रहथि, जनिक कतोक पद उपलब्ध भेल अछि। 'रागतरंगिणी'मे उपलब्ध कंसनारायणक पदमे नायकक पूर्वरागक वर्णनक प्रसंग नायिकाक नखशिखसौन्दर्यक चित्रण विद्यापतिक अनुसरणमे बड़ सुन्दर जकाँ भेल अछि:-

तन सुकुमार पयोधर गोरा, कनकलता जनि सिरिफल जोरा।
देखलि कमलमुखि बरनि न जाइ, मन मोर हरलक मदन जगाइ।
भौँहा धनुष घएल तसु आगू, तीष कटाष मदन शर लागू।
सबतरु सुनिय एहन बेवहारा, मरिअ नागिर उवर गमारा।
कंसनारायण कौतुक गावए, पुनफल पुनमत गुनमति पावए।

10. गोविन्द - अन्तिम ओइनिवार-नरपति लक्ष्मीनाथ कंसनारायणक आश्रित चारि गोट कविमे गोविन्द सबसँ महत्वपूर्ण कवि छथि। हिनक 12 गोट पद 'भाषागीत-संग्रह'मे संगृहीत अछि, जकर 57 ओ 75 संख्यक पद 'रागतरंगिणी'मे सेहो अछि। हमरा एक गोट हस्तलेखमे हिनक तीन गोट पद भेटल अछि, ताहिमे दुइ गोट तँ एहिमे अछि, मुदा एक गोट नव अछि। एकटा महेशवाणी जगज्ज्योतिर्मल्लक 'हरगौरीविवाह'मे एवं एकटा म. वै. प. दीनबन्धु झाक 'मिथिला-भाषा-विद्योतन'मे भेटैत अछि। एही प्रकार हिनक 15 गोट पद प्राप्त अछि, ताहिमे 13 गोट पद श्रृंगारविषयक अछि। एतेक संख्यामे ओहि युगक कोनो कविक रचना भेटब कम महत्वक विषय नहि भेल।

उपलब्ध पदक आधार पर कविगोविन्दकेँ चीन्हब कठिन नहि अछि। 'रागतरंगिणी'क दूनू पद एवं भा. गी. सं. 103, 110 एवं 146 संख्यक नव पदमे कंसनारायण ओ हुनक पत्नी सोरमादेवीक तथा 51 संख्यक पदमे सोरमादेवी-लक्ष्मीनाथक उल्लेख अछि। सोरमा कंसनारायणक पहिल पत्नी छलीह, बेहट- निवासी करमहय मानुक कन्या। मानुझाक प्रपौत्र छलाह म. म. हरिहर उपाध्याय, जनिक सुभाषित ग्रन्थ विख्यात अछि। भगीरथपुरक शिलालेखक अनुसार ओ ल. स. 394 (1503) मे राज्य करैत छलाह। इएह गोविन्दक समय सेहो भेल। भा. गी. स.क 51 ओ 56 संख्यक पदमे ओ अपनाकेँ मन्त्री कहैत छथि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे विद्यापति जेना म. शिवसिंहक बाल-सहचर ओ कवि-अनुचर छलाह, तहिना गोविन्द सेहो कंसनारायणक छलाह। परन्तु भा. गी. सं. क 12 संख्यक पदमे ओ 'कमलारमण वासुदेवनरेश'क चर्चा करैत छथि। ई वासुदेव ओइनिवार-कुलक केओ नहि थिकाह। प्रो. रमानाथझाक मत अछि जे ई वासुदेव छलाह कंसनारायणक पिता

नम्पक्षक समाने आनन्दर्भ-विजेता तथा 'सुभद्राहरणविवेक'क रचयिता गोविन्दसिंहक आश्रय भेटलनि। एक संकेत जे गोविन्द कृष्णक दरबारमे जाए नाटक रचना करने होथि।

मिथिलामे गोविन्द नाम सहस्र बड़ प्रचलित अछि। ओहू समयमे कतेक गोविन्दक रचना भेटैत अछि। परन्तु उपलब्ध तथ्यक आधार पर 'कंसवध-नाटक'क रचयिता गोविन्द ठाकुर कंसनारायणक कवि छलाह। यैह गोविन्दक ओइनिवारकुलक सन अधिक सम्बन्ध छल। 1350 ई.मे आविर्भूत [illegible] कुलमे कुर भाष [illegible] स्थिति वा [illegible] अनु ओइनिवारकुलमे राजकीय महत्व। मिथिलाक राजक [illegible] विवाह र. [illegible] कन्याने भेल छल एवं तनिक बालक [illegible] गोविन्दक [illegible] छलाह। मिथिले ठाकुरक पुत्र ओ पौत्र सेहो [illegible] पद पर प्रतिष्ठित रहथि। हुनक [illegible] पौत्र [illegible] एवं हुनक पौत्र [illegible] उपाधिसँ युक्त गोविन्द रहथि, जनिक पुत्र छलाह गोविन्द। अतः हुनक गोविन्द कंसनारायणक सभामे रहल होथि तँ आश्चर्य नहि। परन्तु हुनो सम्भव थिक जे ओ [illegible] कंसनारायणक केशवठाकुर ओ [illegible] बालक र. र. गोविन्दठाकुर रहल होथि, जे प्रसिद्ध तान्त्रिक छलाह एवं जनिक 'काव्यप्रकाश'क टीका 'काव्यप्रदीप' प्रसिद्ध अछि। हिनकहि बालक देवनाथ ठाकुर 410 ल. स. (1529 ई.) मे तन्त्रक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मन्त्रकौमुदी'क रचना कयलनि। मुदा कंसनारायणक सभा हिनक सम्बन्धक कोनो प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहि अछि।

लोक समाजमे गोविन्दक पद उपलब्ध भेलासँ हिनक कवित्व-प्रतिभाक प्रवृत्ति स्पष्ट भए जाइत अछि। ओ मूलतः [illegible] रचना कयलनि, मुदा भक्ति-कविता सेहो हिनक [illegible] अछि। हिनक रूप ओ विरहवर्णनमे सूक्ष्म-कल्पनाजनित कुशलता तँ अवश्य अछि, मुदा पद-लालित्यक दृष्टिएँ उच्च कोटिक अछि। 'रागतरङ्गिणी'क पद [illegible] लिखल [illegible] मे [illegible] पूर्व-रागक [illegible] भेल अछि तँ भावाभिव्यक्ति मनक गीत (136 मे [illegible] प्रभावक कुछ गीत हिनक कल्पनाक उत्कर्षक दृष्टिएँ मनोरम अछि। मुदा [illegible] प्राप्त हुनक उक्तिमे भावक सरलता ओ भावक स्वाभाविकता हुनक कवित्वक सर्वथा अभिन्न रूप प्रस्तुत करैत अछि। किछु पंक्ति नीचाँ उद्धृत कयल जाइत अछि जाहिसँ हिनक कवित्व-गुणक आर सब पदक अनुमान होइत अछि-

1\. मिलिकर [illegible] पयोधर [illegible] हिमकर [illegible]।
अंक [illegible] कम्पु भरि कनक शम्भु धरि [illegible] सुरधारि धारा।।
[illegible] हिरि भरि [illegible] गान।।
[illegible] उठिल भेल हरिलोकिन [illegible]।।

-श. गी. सं.-55

2\. सुनु सुनु सुमुखि नारि, माधव कतिय वचन निरधारि।
सुमुखि [illegible] माधव अपनहुँ गुन गुन जानि।
किछु कहल अपराधे, माधव, हेरित कतिय किय बाधे।
अविनय [illegible] दोसर, माधव, रजनि रहत अछि रोख।
गोविन्द कह अवधारि, माधव, सुमुखि अब गुन धारि।

-[illegible]

3\. अवधार इनक कसह [illegible]। [illegible] विपाक [illegible] अवसाना।
जत जत [illegible] आकुल आनी। [illegible] बेर सब [illegible] भवानी।
सुनुल कुआरी गोविन्द भाखा। [illegible] हर पुरबहु आसा।

11\. धीरकवि - मोरंगनरपति-राज्य-कालमे अवतीर्ण लक्ष्मीनारायण गोपीनाथ, धीरनारायण, धीरेश्वर, गंगाधर आदि कविगनमे ई सबसँ प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय कवि छथि। उपर्युक्त कविगण स्वयं मोरंगनरपति रहथि अथवा हुनक आश्रयमे छलाह, से पुष्पिकालोकनिक पदक भनितासँ स्पष्ट ज्ञात होइत अछि। 16म शताब्दीक मुरारिमिश्र अपन 'कुलकीर्तिपञ्जी'मे एहि राजालोकनिक वंशवृक्ष देल अछि - लक्ष्मीनारायण - इन्द्रनारायण - धीरनारायण - नरनारायण - जगन्नारायण - त्रिविक्रमनारायण - [illegible]नारायण (मुरारिमिश्रक समकालीन)। उपर्युक्त कविगणमे लक्ष्मीनारायण, इन्द्रनारायण ओ धीरनारायण राजा अपनहुँ सुकवि छलाह। हुनक धीरनारायण 'विद्याविलास'क लेखक भए सकैत छथि जे [illegible] (1572-1586) क अधीन लिखलनि। धीरेश्वरक परिचय ज्ञात नहि अछि, किन्तु ई नरनारायणक राज्यकालमे छलाह। गंगाधर त्रिविक्रमक राज्यकालमे भेलाह।

'रागतरङ्गिणी'मे संकलित कृष्णदत्त-पति जगन्नारायणक आश्रित भीष्म कविक एक गीत 'सरसहर सहस राय कुसुमय, [illegible] न बचन [illegible]' बड़ प्रसिद्ध ओ भावपूर्ण पद थिक, जकर धुआमे छैक 'देख देख आइ, सरसक सरवस उपजासि जाइ' तथा ओकर दोसर पदमे छैक 'हरि हरि मोर उपजासि की भेलौं'। एहि पंक्तिक आधार पर प्रो. रमानाथ झा ओ डा. सुकुमार सेनक अनुमान अछि जे ई उर्वशीक कथा लए कोनो नाटक लिखने रहथि जे उपलब्ध नहि अछि ओ हुनक उपलब्ध गीतसभ ओही नाटकक थिक। हिनक एकटा पद एहन प्राप्त भेल अछि जाहिमे सावरिकाक चर्चा अछि-

सावरिका (सरसिजमुखी) [illegible] भूष छलि धारि सखी।
[illegible] छलि, [illegible] पहुँ मोति सलिलतला सावरिका भेलि।

एहिसँ निश्चित रुपसँ अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे भीषमकवि कोनो नाटकक रचना अवश्य कएने रहथि, जकरा हेतु एहि पदक रचना कएल। कवित्वक दृष्टिएँ हिनक रचना उच्च कोटिक अछि; विशेषतः सौन्दर्य ओ विरहवर्णनमे।

खण्डबला - राज्यक आरम्भ भेलासँ पूर्व बहुत सम्भव, उपर्युक्त कविक अतिरिक्त रुद्रधर, कविराज भिखारी मिश्र, राजपण्डित, मधुसूदन, जीवनाथ, काशीनाथ आदि अनेक कवि भेलाह, जनिक निश्चित परिचयक अनुमानो धरि करबामे कठिनता होइत अछि। हिनकालोकनिक पदहुक संख्या नगण्य अछि। उपलब्ध रचनाक आधार पर कविरत्न, लखनचन्द, जीवनाथ आदिक नाम कवित्वक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।

12. महेशठाकुर - ओइनवार राजवंशक पतन (1527) क पश्चात् 30 वर्ष धरि मिथिलाक शासनव्यवस्था विशृंखल रहल। मुदा म. म. महेशठाकुर द्वारा खण्डबला-राज्यकुलक स्थापनाक पश्चात् पुनः मैथिली-राजवंशक छत्रच्छायामे मैथिली काव्य-साहित्यक विकास होअए लागल। भाग्यवश खण्डबला-राज्यकुलक संस्थापक स्वयं सुकवि छलाह।

म. महेशठाकुरक चारिटा पद चेतनाथझा अपन 'पारिजातहरण'क भूमिकामे उद्धृत कएने छथि एवं चारिटा पद म. म. मुकुन्द झा बक्सी अपन 'मिथिलाभाषामय इतिहास'मे सेहो देने छथि। ओ 1559मे राज्यत्यागक पश्चात् काशीक गंगा-कातमे तारा ओ गंगाक प्रार्थनामे पदसबहिक रचना कएलैन्हि। भारतीय दर्शनक विविध 'वाद'क अध्ययन, मनन ओ लेखनमे लीन रहितहुँ अपन मातृभाषामे ओ काव्यरचना कएल, जाहिमे हुनक भक्तिभावनाक बड़ स्वाभाविक अभिव्यक्ति भेल। विद्यापति-सम्प्रदायक रीतिबद्धताकेँ त्यागि ओ जाहि सरल स्वाभाविकताक संग अपन अनुभूतिकेँ प्रसादपूर्ण भाषामे व्यक्त कएल, से सर्वथा स्तुत्य अछि। उदाहरणार्थ गंगाक प्रार्थनाक निम्नांकित पंक्ति द्रष्टव्य थिक-

उधारि अधम जन जानि।
हम बनिजार पाप वटमार, सुकृत बेसाहल सुरसरिधार।
जेहि खन देखल धवल जलधार, जीवन जन्म सुफल संसार।। आदि

13. चतुरचतुर्भुज - आब अनेक रचना उपलब्ध भेलासँ गोविन्ददास ओ उमापतिक समकक्ष कवित्वक दृष्टिएँ उत्कृष्ट रचनाकारक रुपमे चतुर्भुजक स्थान निश्चित भए जाइत अछि। हिनक एक गोट रचना 'रागतरंगिणी'मे उपलब्ध छल आ एक गोट रचना ग्रियरसन एसियटिक सोसाइटीक जर्नल (1884) मे प्रकाशित करबओने छलाह। एम्हर एक गोट रचना जगज्ज्योतिर्मल्लक 'हरगौरीविवाह'मे प्रयुक्त

भेटल अछि एवं एगारह गोट पद प्रो. रमानाथ झा द्वारा प्रकाशित 'भाषागीतसंग्रह'मे उपलब्ध अछि। एहि गीत सबहिक अतिरिक्त तीन गोट आओर नवीन गीतक अन्वेषण कए डा. शैलेन्द्रमोहनझा हिनक पदसबहिक संग्रह **"गीतसप्तदशी"** प्रकाशित कए देने छथि। अतः हिनक कवित्व-गुण बुझबाक पर्याप्त साधन उपलब्ध भए गेल अछि।

चतुर्भुजक परिचय एखनहुँ धरि पूर्ण रुपसँ निश्चित नहि अछि। मध्यकालीन मिथिलामे तीन गोट चतुर्भुजक सूचना भेटैत अछि-(1) संस्कृत-काव्य 'हरिचरित'क रचयिता चतुर्भुज। हरिचरितक उपलब्ध हस्तलेख 16म शताब्दीक प्रथम चरणमे भानुकरक लिखल अछि। डा. जयकान्त मिश्र हिनके मैथिलीक कवि चतुर्भुज मानैत छथि, कारण, ओ कृष्ण-चरित के आधार बनाए पद-रचना कएल। मुदा मध्यकालीन पदावली तँ कृष्ण-चरितहि पर आधारित अछि। अतः हुनक एहि तर्ककेँ सबल नहि कहल जाए सकैत अछि। डा. शैलेन्द्रमोहन झा डा. मिश्रक मतकेँ मानैत हिनका मोरंगपति वीरनारायणक सभा-पण्डित कहल अछि, परन्तु इएह मैथिलीक कवि चतुर्भुज छलाह, तकर ठोस प्रमाण नहि देने छथि।(2) 511 ल. स. (1630)मे वाचस्पतिक 'शुद्धिनिर्णय'क प्रतिलिपिकार चतुर्भुज एवं (3) द्वितीय पत्नीसँ उत्पन्न पण्डितराय रघुनन्दनक ज्येष्ठ बालक चतुर्भुज राय। प्रो. रमानाथझाक अनुसार इएह चतुर्भुज राय मैथिलीक सुकवि चतुरचतुर्भुज छलाह। चतुर्भुजरायक बेमातेय भाए अभिनव-पण्डितराय शंकर अवनिपालनायक मानसिंहक कीर्तन कएने छथि जे राजमहल (सन्तालपरगन्ना)मे 1589 सँ 1604 ई. धरि मुगल सम्राटक प्रतिनिधि भए रहथि। अतः चतुर्भुजक इएह समय प्रामाणिक रीतिएँ सिद्ध होइत अछि। पंजीमे हिनक दुइ गोट उपाधिक उल्लेख अछि-'महामहोपाध्याय' ओ 'माकमानी पातसाह'। 'माकमानी पातसाह' उपाधिक इएह आशय भए सकैछ जे माकमानीमे हिनक बड़ प्रतिष्ठा ओ सम्मान छल। अतः अपन बेमातेय भाए पण्डितराय शंकरक संग हिनको राजमहलसँ सम्बन्ध अवश्य छल, परन्तु प्रायः मकवानपुरक प्रथम लोहांगसेन (1609-41)क राज्यमे हिनक विशेष प्रतिपत्ति छल होएत, से संभव। प्रायः अपन इएह प्रतिपत्तिकेँ सूचित करबाक हेतु ओ अपनाकेँ 'चतुर' कहने छथि। 'भाषागीतसंग्रह'मे एकटा पद (112) हिनक बंगलाभाषाक अछि। राजमहलसँ हिनक सम्बन्ध सिद्ध अछि ओ एहि सम्पर्कसँ ओ बंगालसँ अवश्य सम्बद्ध छलाह, हिनक बंगलारचना एहि तथ्यकेँ प्रामाणिक रीतिएँ स्पष्ट कए दैत अछि। मुदा एकटा विषय एहन अछि जे हिनक प्रसंग सबटा तर्क ओ प्रमाणकेँ शंकाग्रस्त कए दैत अछि आओर से थिक 'भा. गी. स.'क 132 संख्यक पदक अन्तिम पंक्ति-**"कृष्ण चरण गुणसागर त्रिभुवन आगर रे"**। भीष्म कवि सेहो **"कृष्ण चरण बुझ गुणक निधाने"** लिखि 'कृष्ण चरण'क कीर्तन कएने छथि। मुदा दुनू 'कृष्ण-चरण'केँ एक मानलासँ आविर्भाव-कालमे मेल नहि खाइत अछि। अतः प्रायः ओ केओ आन, प्रायः हिनक कोनो अनन्य मित्र रहल होथि, से सम्भव। हिनक रचनामे उपनिबद्ध पण्डिताम भाषा, क्लिष्ट कल्पना ओ पाण्डित्यपूर्ण उक्तिविच्छित्ति सिद्ध करैत अछि जे हिनक आविर्भाव

निश्चय ओहि युगमे भेल जाहि युगमे गोविन्ददासक जन्म भेल छल। दुहूक रचनात्मक दृष्टिकोण मैथिलीमे पाण्डित्य ओ चमत्कारक सन्निवेश करब बूझि पड़ैत अछि जे प्रायः ओहि युगक सामान्य प्रवृत्ति छल।

चतुर्भुजक रचना निश्चये उच्च कोटिक अछि, मुदा से जनसामान्यक हेतु नहि, मर्मज्ञ पाठकक हेतु। ग्रियर्सन द्वारा प्रकाशित पद मात्र सरल अछि ओ जाहि मध्य नवोढ़ाक मनोविश्लेषण बड़ स्वाभाविक रीतिएँ भेल अछि। द्रष्टव्य थिक-

हृदय धरिअ जत गोइ, माधव, नयन बेकत तत होइ।
चतुरचतुर्भुज भान, माधव पेम न होये पुरान।।

परन्तु अन्यान्य अधिकांश रचनामे हिनक कल्पना बड़ सूक्ष्म ओ क्लिष्ट अछि। उदाहरणार्थ मानक गीतमे प्रभातवर्णन करैत ओ प्रातःकालमे चन्द्रमाक अस्त होएबाक ओ तारागणक क्रमिक लुप्त होएबाक केहन दुरूह कल्पना कयल अछि, से देखल जाओ-

पहुलि कुसुम पन रतन विभूषण ताराबने अतिसंके।
बासनि मदन ससि पर गिरि चलु निसि कलंक कपटें कर अंके।।

परन्तु लोकगीतक भास पर साहित्यिक काव्यक प्रयोग एवं जाहि मध्य जाँत पिसैत दू युवतीक स्वाभाविक वर्णन हुनक एतेक अभिनव ओ विलक्षण अछि जे उच्च कोटिक मौलिक कल्पनाशीलताक परिचय दए दैत अछि-

आधेवदने तनु आधे ओ आध पयोधर रे।
आँचर वसने झँपाइए गाव मधुर सरे रे।।
पिसए बैसलि धनि कौतुके समुचित सखि सबे रे।
दगध मनोज जिआबए अनुभव तनुभवे रे।। आदि

शब्दरचनामे लालित्य ओ माधुर्य एवं अभिव्यक्तिमे आलंकारिक चमत्कार तथा सूक्ष्म कल्पनाशील विलक्षणता हिनक कवित्वक विलक्षणता थिक। चतुर-चतुर्भुज अपन पदावलीमे केवल काव्यरचनाक चातुर्येटाक परिचय नहि देल अछि, प्रत्युत अपन अन्तर्भेदी भाव-ग्रहणक प्रतिभासँ मैथिलीक प्रथम श्रेणीक कविगण मध्य अग्रगण्य भए जाइत छथि।

14. लोचन - लोचनझाक स्थान मैथिली साहित्यमे बड़ महत्वपूर्ण अछि। हिनक 'रागतरंगिणी' मैथिलीक प्राचीन-काव्य धाराक अध्ययनक मार्ग प्रदर्शित करैत

अछि_ काव्य-परम्पराक ऐतिहासिक इतिवृत्ति बुझबाक दृष्टिएँ, संगहि मैथिली पदावलीमे प्रयुक्त छन्द ओ रागक वास्तविक स्वरूपक परिचय प्राप्त करबाक दृष्टिएँ सेहो। यदि हिनक ई ग्रन्थ उपलब्ध नहि भेल रहितए तँ मैथिली साहित्य-विरोधी तत्व आओर मुखर रहैत तथा षड्यन्त्रक व्यामोह खण्डित नहि भेल रहैत। मिथिलाक स्वतन्त्र संगीत-परम्पराक रूपरेखा प्रस्तुत करबामे ई कतबा महत्वपूर्ण अछि, से एहीसँ सिद्ध अछि जे संगीतशास्त्रक भातखण्डे सन अधिकारी विद्वान हिनका मध्यकालीन संगीतशास्त्रक प्रमुख अधिकारी ओ विशेषज्ञ मानैत छथि।

आरम्भमे बंगाली विद्वानलोकनि, मुख्यतः आचार्य क्षितिमोहनसेन लोचनकेँ बंगाली सिद्ध करबाक चेष्टा कयल बारहम आल-इण्डिया ओरिएण्टल कान्फरेन्सक टेकनीकल साइन्स सेक्सनक अपन लेखमे। किन्तु डा. श्री सुभद्रझा पटना विश्वविद्यालय-पत्रिकाक प्रथम भाग पृ. 38-39मे प्रकाशित अपन निबन्धमे हुनक सब तर्ककेँ खण्डित कए देल ओ एहि विवादकेँ आगाँ नहि बढ़ए देल।

'रागतरंगिणी'क निम्नलिखित संस्करण अद्यावधि प्रकाशित भेल अछि -

(1) श्री बी एस. सुखथंकर द्वारा बम्बइसँ 1910 ई.मे, (2) दत्तात्रय केशवजोशी द्वारा पूनासँ 1918 ई.मे, (3) पं. बलदेवमिश्र द्वारा दरभंगा राज प्रेससँ 1934 ई., (4) डा. सुधाकरझा द्वारा सम्पादित पटना विश्वविद्यालयक मैथिली-विकास-कोश द्वारा शाके 1886मे एवं (5) पं. शशिनाथ झा द्वारा सम्पादित मैथिली अकादमीसँ। उपर्युक्त प्रथम दुइ संस्करणमे मैथिली पद नहि देल गेल अछि आओर ओहिमे एकटा संस्कृत श्लोकमे 'श्रीमद्वल्लालसेनराज्यादौ' छपल छल ओ ताही आधार पर आचार्य क्षितिमोहनसेन हिनका बंगाली सिद्ध करबाक चेष्टा कयने छलाह। पाछाँ म. म. परमेश्वर झा अपन 'मिथिलातत्वविमर्श'मे सिद्ध कयल जे ओ श्लोक वल्लालसेन द्वारा लिखाओल 'अद्भुतसागर' नामक ग्रन्थक छल।

पं. बलदेवमिश्र जे 'रागतरंगिणी' प्रकाशित कएने छथि, से पचहीड्यांढ़ीक बाबू इन्द्रपतिसिंहक ओहि ठामसँ प्राप्त हस्तलेखक आधार पर तथा डा. सुधाकरझा जाहि 'रागतरंगिणी'केँ प्रकाशित कएने छथि, से हुनका दरभंगा-राजलाइब्रेरीसँ उपलब्ध भेल छलैन्हि। किन्तु दुनूमे कोनो विशेष अन्तर नहि अछि, प्रायः दोसर प्रथमक प्रतिलिपि थिक। पं. शशिनाथ झा एहि दुनू मुद्रित संस्करणहिक आधार पर तर्क ओ संगतिकेँ ध्यानमे रखैत पाठ-शुद्धिपूर्वक एकर नवीन संस्करण उपस्थित कएने छथि। एहि तीनू प्रतिलिपिमे म. महेश ठाकुरसँ लए म. नरपति ठाकुर धरि प्रशंसाश्लोक अछि। अतः ई म. नरपति ठाकुरक समकालिक सिद्ध होइत छथि। एहि तथ्यकेँ पुष्ट करैत अछि लोचन द्वारा कयल नैषधक प्रतिलिपि, जाहिमे तिथिक उल्लेख छैक 1603 शाके (1681) एवं

पाँजिक वंशावली सूची। एकर अतिरिक्त चन्दाझा 'रागतरंगिणी'क स्वयं लोचन द्वारा लिखित प्रतिलिपि देखने छलाह, जाहिमे तिथिक उल्लेख छलैक:-

वेदवाहुरसक्ष्मामितैर्लक्षिते शाकवत्सरे
शुभे भाद्रद्वितीयां जातमेतत्तु पुस्तकम्।
उजाननगरान्तस्थ त्वरितस्यविलेखने
देवानन्दस्य प्रतीकस्य लिपिर्लोचनशर्मणः।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे 1702मे एकर प्रतिलिपि कएल गेल। चन्दाझा एकर दोसरो प्रतिलिपि देखने छलाह, जाहि मध्य 1607 शाके (1685) लिखल छल। सम्भवतः ई 'रागतरंगिणी'क रचनाकाल छल।

पाँजिक अनुसार ई एकहरे कन्हौली श्रोत्रिय वंशक वैधनाथझाक प्रपौत्र, परमानन्दझाक पौत्र एवं बबूझाक बालक छलाह। हिनक वंशज उजानगाममे एखनहुँ निवास करैत छथि।

उपर्युक्त प्रमाणक आधार पर निश्चयपूर्वक कहल जा सकैत अछि जे लोचन म. महिनाथठाकुरक ओ हुनक उत्तराधिकारी अनुज महाराज नरपति ठाकुरक सभाकवि छलाह ओ हिनक समय 1625-85 मध्य पड़ैत अछि।

मिथिलाक स्थानीय संगीतशास्त्रक प्रमाण-ग्रन्थक दृष्टिएँ 'रागतरंगिणी'क स्थान बड़ महत्वपूर्ण अछि कारण, सर्वप्रथम एही पुस्तक मध्य मैथिल संगीतक लक्षण ओ विकास देखाओल गेल जे हिनका अधिकारी संगीतशास्त्री मध्य अग्रगण्य सिद्ध करैत अछि। कोन-कोन छन्द ओ राग एक दोसराक पर्याय छल, तकरहु उल्लेख एहिमे भेल अछि। विद्यापतिक प्रसंग नव विषयक चर्चा एहिमे भेटैत अछि जे कोना विद्यापतिक पदसभकेँ जयत नामक गायक रागरागिणीमे साधल करथि। अतः विद्यापतिसाहित्यक अध्ययनक हेतु ई अन्यतम सहायक ग्रन्थ थिक। एहिमे मैथिलीक अनेक कविक रचना संकलित अछि, जाहि मध्य आठ गोट पद स्वयं लोचनक उपलब्ध अछि। लोचनक जे पद उपलब्ध अछि, ताहि आधार पर मैथिलीक प्रतिनिधि कविक रुपमे निस्सन्देह हिनक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

लोचन मध्यदेशीय ओ मैथिली भाषाक समान रुपसँ निष्णात कवि छलाह। किन्तु अपन मातृभाषाक प्रति हुनका अनन्य प्रेम छल तथा अपन कवित्वक उत्कर्षक प्रति अटूट आत्मविश्वास सेहो। एही कारणे जाहि-जाहि ठाम विद्यापतिक पद उद्धृत कएल, ताहि ताहि ठाम अपनो पदकेँ "इतिविद्यापतेः मम तु" लिखि उद्धृत कएल।

ई म. महिनाथठाकुरक राजसभामे छलाह। म. महिनाथठाकुर अपनहु सुकवि छलाह। जखन हुनक अनुज नरपतिठाकुर मोरंगदेशक विद्रोही नेताकेँ दबएबाक हेतु विदा भेलाह, तखन हुनक कल्याणक कामना करैत 'बदन भयानक कान जब कुण्डल' आदि पदक रचना ओ स्वयं कएल। ओहि नरपतिक आश्रयमे लोचनकेँ विद्याव्यवसायक विकासक संग काव्य-रचनाक हेतु प्रोत्साहन भेटल आओर ओ शृंगार तथा भक्तिविषयक पदक रचना कएल। हिनक अभिसारिका-वर्णन 'आनन्दकन्दा पुनिमक चन्दा सुमुखिवदन तह मन्दा' आदि तथा नायिकाक रुपवर्णन 'चामर चिकुर बदन सानन्द, सरबस सनि जनि पुनिमक चन्द' आदि पद बड़ प्रसिद्ध अछि। भक्ति-पदमे ताराक वर्णन 'जय जय जय नत सतत शिवंकरि' आदि अत्यन्त भावपूर्ण रचना थिक। वस्तुतः लोचन कविक रुपहुमे अग्रगण्य छथि।

15. गोविन्ददास - विद्यापतिक पश्चात् गोविन्ददास मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कविक रुपमे परिगणित होइत छथि। हिनकहु विषयमे बहुत दिन धरि विवाद होइत रहल जे ई मैथिल थिकाह अथवा बंगाली। कारण छल ब्रजबुलीसाहित्यमे हिनक शीर्षस्थान तथा बंगालक कतोक कविक गोविन्ददासक नामसँ रचना करब। मुदा सबसँ पहिने नगेन्द्रनाथ गुप्त गोविन्ददासकेँ मैथिल होएब सिद्ध कएल, पाछाँ एहि तथ्यकेँ चेतनाथझा ओ चन्दाझा परिपुष्ट कएलैन्ह। एही क्रमे मथुराप्रसाद दीक्षित हिनक पदक संकलन भूमिकाक संग प्रकाशित कएल। डा. अमरनाथझा कविवर चन्दाझाक पोथीसभसँ हिनक पदक संकलन कए सम्पादन कएल जे प्रो. रमानाथझाक द्वारा 'मैथिली-साहित्य पत्र'मे 'शृंगार-भजनगीतावली'क नामसँ दुइ भागमे प्रकाशित भेल।

प्रसन्नताक विषय जे हिनक परिचय आब निश्चित भए गेल अछि। 'आनन्दविजयनाटक'क रचयिता म. म. रामदास हिनक छोट भाइ छलाह। अतः हिनक समय म. सुन्दरठाकुर (1643-4 सँ 1670-1)क समकाल निर्णीत अछि। पाँजिक अनुसार ई कात्यायन गोत्रक कुजौलीबार शाखाक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह, म. म. शुचिकरझाक प्रपौत्, म. म. शिवदासझाक पौत्र एवं म. म. कृष्णदासक बालक। हिनक अग्रजक नाम छल गंगादास ओ अनुजक नाम छल हरिदास ओ रामदास। हिनका एकटा बहिन छलथिन्ह, जनिक विवाह म. पुरुषोत्तमठाकुरक संग भेलैन्हि। हिनकहि प्रपितामह म. म. शुचिकरसँ म. म. महेशठाकुर न्यायशास्त्र पढ़ने छलाह जे सम्बन्धसँ हुनक मौसा छलथिन्ह। एहिसँ अनुमान कएल जाए सकैछ जे ओ केहन विद्यहुमे शीर्षस्थ महाकुलसम्भूत छलाह। महाकवि चारु भाइ साहित्यसेवी छलाह। गंगादासक कोनहु कृति तँ अद्यावधि उपलब्ध नहि भेल अछि, मुदा हरिदासक एकटा पद 'रागतरंगिणी'मे प्राप्त अछि। रामदासक नाटक सेहो प्रकाशित अछि जाहिमे ओ अपन अग्रजक प्रसंग लिखने छथि :-

यस्मिन् गर्जति रोमदण्डकपटेनाकल्परत्नांकुरा,
नातन्वन्ति वपुर्विदूरस्तनयां विख्यातसंख्यावताम्।
श्रीगोविन्दयनेन तेन कृष्णा काममयपुण्याम्भिसा
सिक्तस्यामरशाखिनो नवरसं रामस्य रम्यं फलम्।

पहिने 'श्रीगोविन्दयनेन तेन कृष्णा' शब्दसँ रामदास गोविन्ददासकेँ गुरु कहैत छथि। 'यस्मिन् गर्जतिरोमदण्डकपटे.......विख्यातसंख्यावताम्' अर्थात् 'गोविन्ददासक गर्जन सुनि प्रख्यात संख्यावानलोकनिकेँ रोमांच भए जाइत छनि कहि ओ हुनका प्रकाण्ड नैयायिक सिद्ध करैत छथि। मुदा गोविन्ददासक युगमे मैथिल विद्वानलोकनिक तादृश प्रतिभा नहि छल। ओहि समय नवद्वीपक शिरोमणिसँ मिथिलाक पक्षधरो पराजित भए गेल छलाह। अतः ओहि समय बिनु शिरोमणि ओ हुनक परवर्ती नवद्वीपक महारथीलोकनिक तर्क, युक्ति ओ वादशैलीक अनुसरण करैत केओ वादी-पंडित प्रख्यात संख्यावानलोकनिकेँ रोमांच कराए देथि, से युक्तिसंगत नहि लगैत अछि। अतः प्रो. रमानाथझाक मत अछि जे गोविन्ददासझा नवद्वीपमे दीधितिकारक सम्प्रदायमे अन्तेवासी भए न्यायशास्त्रक अनुशीलन करैत छलाह। 'प्रबन्धसंग्रह'क पृ. 159-60मे सविस्तर विवेचन कयल गेल अछि जे कोना ओहि युगमे न्यायशास्त्रक विशेषज्ञताक केन्द्र नवद्वीप भए गेल ओ कोना शतशताब्दीक अन्तधरि मैथिल छात्र ओतए जाए न्यायशास्त्र पढ़ि आबथि। म. म. शुचिकरझा सन प्रकाण्ड नैयायिकक प्रपौत्र गोविन्ददासो एही क्रमे पढ़ि कौलिक विद्यामे पारंगत होयबाक हेतु नवद्वीप गेल होथि, से सर्वथा युक्तिसंगत लगैत अछि।

उपर्युक्त तथ्यकेँ आधार मानि यदि हुनक काव्यप्रतिभाक विश्लेषण कयल जाए तँ हुनक कवित्वक सब भेद स्पष्ट भए जाएत ओ प्राचीन काव्यपरम्पराक कविलोकनिसँ हिनक जे विलक्षणता अछि-की भावक दृष्टिएँ अथवा की भाषाशैलीक दृष्टिएँ, तकरो कारणक पता लागि जाएत।

विद्यापतिसम्प्रदायक काव्य-विषय अछि भक्ति ओ शृंगार। भक्तिपरक रचना भेल शक्तिवन्दना, गंगावन्दना, शान्तरसक गीत एवं महेशवानी-नचारी; विष्णुपद सेहो अछि। हिनक जे रचना अछि से थिक राधाकृष्ण-केलिलीला, जे मैथिली परम्परामे शृंगाररसहिक मानल गेल अछि, किन्तु जकरा चैतन्यमहाप्रभुक वैष्णवसम्प्रदायमे मधुररसक वैष्णवभजन कहल गेलैक अछि। एहन भजनमे शृंगार आवरण मात्र रहैत अछि। कवि अपन भक्तिविषयक मनोभावकेँ उत्कट शृंगाररसक रचनहुमे कृष्णक अलौकिकत्वक आभास दैत व्यक्त कए दैत छथि। गोविन्ददासक पदमे ई विशेषता सर्वत्र परिलक्षित होइत अछि। एकर प्रमाण अछि हिनक भनिताक पंक्ति, जाहि मध्य शृंगाररसक नामो नहि अछि, प्रत्युत जाहि मध्य ओ अपन हृदयकेँ खोलि दैत छथि।

विद्यापति जेना अपन भनितामे 'रसशृंगार सरसकवि गाओल' प्रभृति लिखि अपनाकेँ शृंगारिक कवि होयबाक घोषणा करैत छथि, ताहिना गोविन्ददास अपन पदमे स्थान-स्थान पर 'गोविन्ददास हृदयमणि मन्दिर अविचल मूरति त्रिभंग', 'गोविन्ददास हरि भेल भोर', 'आनन निरखै गोविन्ददास', 'गोविन्ददास अपन गुण गाय' आदि लिखि अपनाकेँ भगवल्लीलाक साक्षी ओ द्रष्टा मानैत छथि। एही कारण चन्दाझा 'मिथिलाभाषा-रामायण'क परिशिष्टमे गोविन्ददासक पदकेँ कृष्णलीला कहने छथि ओ डा. अमरनाथझा जे हिनक पदक संकलन कयल, तकर नाम राखल 'शृंगारभजनगीतावली'। जखन ओ न्यायशास्त्रक अध्ययन करबाक निमित्त नवद्वीप गेलाह, जे महाप्रभुक लीलाक्षेत्र छल, तँ ओ ओहिसँ प्रभावित भेलाह ओ वैष्णव-संप्रदायक उपयोगार्थ भजनक रचना कयल तथा माधुर्यक रसस्रोत प्रवाहित कए देल। एहि पदसम्यक् रचना कयल छालिमृदंगक संग गयबाक हेतु, वैष्णवभजनमे प्रयुक्त होयबाक हेतु। हुनक रचनामे शब्दविन्यासक जे आडम्बर भेटैत अछि, तकर कारण इएह थिक। एही कारणे ओ शब्दविन्यासकेँ श्रुतिमधुर बनयबाक हेतु पदक अर्थप्रसाद दिसि ध्यान नहि देल। अपन रचनाक उद्देश्य ओ स्वयं लिखि देने छथि-'रसभागोचन प्रबन्धविलास रचाइ रुचिर पद गोविन्ददास'। तेँ प्रो. रमानाथझाक शब्दमे "शब्दक एहन विन्यासी कवि मिथिलाभाषामे दोसर नहि भेल तथा पदकेँ ललित श्रुतिमधुर, अर्थानुसारी एवं समतासंयुत बनएबामे यदि शब्दकेँ तोड़हु पड़लैनि, ओकर स्वरूप विकृतो करए पड़लैनि तथा अपन हृदयक भाव झाँपलो भए गेलैनि तथापि गोविन्ददास अर्थक प्रसादक हेतु शब्दविन्यास नहि दूरि कयलैनि"। (शृंगारभजनगीतावली-भूमिका पृ. 5) हुनक रचनामे आनुप्रासिक शब्दविन्यासक जे छटा सर्वत्र उपलब्ध अछि, तकरहु कारण इएह थिक। विद्यापति ओ गोविन्ददासमे केवल एही दृष्टिएँ एतेक अन्तर अछि जे दुनूक पद सुनितहिँ भेद स्पष्ट भए जाइत अछि।

किन्तु अनुप्रासक एहि आधिक्यसँ हिनक कविताक भावपक्ष गौण नहि भए जाइत अछि। ई अवश्य जे हिनक रचनामे प्रसादगुणक अभाव अछि, भाषामे स्वाभाविकता नहि अछि जे विद्यापतिक प्रमुख आकर्षण थिक, किन्तु भावगाम्भीर्यक दृष्टिएँ हिनक अधिकांश रचना विद्यापतिक कतोक गीतसँ उच्चकोटिक अछि। अर्थक गूढ़तामे अछि भावनाक रससरिता। मुदा अर्थक ई गूढ़ता केवल भाषागत दोषहिक कारण अछि से नहि। अपरिपक्व अवस्थाक कविक भाषामे, जकरामे अभ्यासक अभाव छैक आओर जे सम्प्रदाय विशेषक हेतु खालिमृदंगमे गयबा योग्य शब्दाडम्बरसँ युक्त पदक रचना कयल अछि, एहन दोष आबि जायब सर्वथा स्वाभाविक। मुदा हिनक रचनामे जे दुरूहता अछि, तकर प्रधान कारण थिक नैयायिक कविक कठोर परन्तु सूक्ष्म कल्पनाशक्ति। आशयक गाम्भीर्य, ध्वनिक सूक्ष्मता, व्यंग्यक दूरत्व सेहो प्रायः अधिक ठाम हिनक गीतमे अर्थक दुरूहताक कारण बनि गेल अछि, से सब नैयायिक सूक्ष्म विवेचनक अभ्यासक परिणाम कहल जाए सकैत अछि। एही कारणे गोविन्ददासक गीत

भारविक समान नारिकेर-फलसम्मित अछि। किन्तु भारविमे जाहिठाम अर्थक गौरव ओ व्यंग्यक गम्भीरता अछि, ताहि ठाम गोविन्ददासमे शब्दाडम्बरक कारणे प्रसादगुणक अभाव तँ अछिए, संग-संग व्यंग्यक दूरत्व सेहो अछि।

गोविन्ददास संगीतात्मक तत्वक दृष्टिएँ विलक्षण छथि। लालित्य ओ श्रुतिमाधुर्य हिनक काव्यक अनन्य धर्म थिक। अतः हिनक पद केवल गेयगुणहिक हेतु संगीतात्मक नहि अछि, प्रत्युत पढ़लहु सन्ताँ ई संगीतात्मकताक बोध करबैत अछि। ओ एहि क्षेत्रमे विद्यापतिक प्रभाव स्पष्ट शब्दमे स्वीकार करैत छथि- 'कविपति विद्यापति मतिमाने, जाक गीत जगचित्त घोराओल गोविन्दगौरि सरस रस गाने'। किन्तु अपन पदक पोर-पोरमे संगीतात्मक रस प्रवाहित करबामे ओ विद्यापतिसँ बहुत आगाँ बढि गेल छथि।

भावक क्षेत्रमे, विद्यापतिक कतेक पदक समान, राधाकृष्णक लीलाक वर्णन करितहुँ गोविन्ददास हुनकासँ भिन्न छथि। गोविन्ददासक रचना मधुररसक थिक तँ विद्यापतिक श्रृंगाररसक। विद्यापतिक श्रृंगारिक पदमे 'अमरुक', 'आर्यासप्तशती', 'गाथासप्तशती', 'श्रृंगारतिलक', एवं 'गीतगोविन्द'क छाया स्थान-स्थान पर अछि, मुदा अनुवाद कतहु नहि अछि। एकर विपरीत गोविन्ददासक पदमे वैष्णव-सम्प्रदायक रुपगोस्वामी, जीवस्वामी प्रभृतिक सिद्धान्तग्रन्थ 'उज्ज्वलनीलमणि', 'विदग्धमाधव' ओ 'श्रीमद्भागवत'क छायाटा नहि, अविकल अनुवादो भेल अछि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे गोविन्ददासक रचना निस्सन्देह मधुररसक थिक। उदाहरणार्थ हुनक 'कहाँ नख चिन्ह चिन्हल तोहैं सुन्दरि' पद उज्जवलनीलमणिक 'नखांका न श्यामे' श्लोकक अनुवाद थिक, तहिना 'सजनि कि कहब राहिक सोहागि', ओ 'सजनि मरण मानि बड़ भागि' सेहो रुपगोस्वामीक श्लोकक अनुवाद थिक। एहिना कतोक दृष्टान्त ताकल जा सकैत अछि। एही कारणे हिनक रचनामे विशुद्ध श्रृंगाररसक अभाव अछि। हिनक बारहमासामे विशुद्ध श्रृंगारक चित्र भेटैत अछि, संगहिँ ओहिमे राधाकृष्णक नामोल्लेख नहि अछि। मुदा जाहि रुपक गहन आत्मसमर्पणक भावना ओहिमे निहित अछि, से ओकरहु आध्यात्मिक भावद्योतक रचनाक रुपमे प्रतिष्ठित कए दैत अछि।

मिथिलामे मधुररसक कहिओ प्रचार नहि भेल। तँ मिथिलामे गोविन्ददासक पदक ओहि रुपक प्रचलन नहि भेल, जेहन विद्यापतिक पदक। प्रसादगुणक प्रेमी मिथिला मध्य हुनक पदक दुरुहता सेहो प्रचारक बाधक भेल। मुदा श्रृंगारभजनक पद मिथिलामे उपलब्ध भेल छल जखन चन्दाझा विद्यापतिक पदावलीक संकलन नगेन्द्रनाथगुप्त संग कए रहल छलाह। एहिसँ सर्वथा सिद्ध होइत अछि जे गोविन्ददासक काव्यक रसिक मिथिलहु मध्य छलाह आओर से छलाह केवल काव्यरसिकेटा नहि, काव्यमर्मज्ञ सेहो। ई अवश्य जे विद्यापतिक समान हिनक कविता लोककाव्य नहि भेल, मुदा ई विद्वान

काव्यमर्मज्ञक सरस मनोरंजनक साधन छल, ताहिमे कोनो सन्देह नहि।

हिनक दुइ गोट पद नीचाँ उद्धृत कएल जाइत अछि। विशेष दृष्टान्तक हेतु द्रष्टव्य थिक 'श्रृंगार-भजन गीतावली'। हिनक कविताक वैशद्य बुझबाक हेतु 'प्राचीनगीत'मे संकलित पद ओ तकर स्व. ईशनाथझा द्वारा लिखित संलग्न टीका सेहो जिज्ञासुलोकनिक हेतु मननीय थिक।

1. राधाक प्रति कृष्णक रसिकतापूर्ण उक्तिः-

कानन कुसुम तोड़ल किय गोरी, कुसुमहि सब तन निरमित तोरी।
आनन हेम सरोरुह भास, सौरभ श्याम भ्रमर मिलु पास।
नयन युगल निल उतपल जोर, सहज सोहाओन श्रवणक ओर।
अपरुप तिल फूल सुललित नास, परिमल जितल अमरतरु बास।
बन्धुक मिलित अधर जहँ हास, दशनहि कुन्द कुसुम परकास।
सब तनु घटित चम्पक सन गोरा, पानिक तल थलकमल इजोरा।
गोविन्ददास एतय अनुमान, पूजह पशुपति निज तनुदान।

2. श्रीकृष्णक रासलीलानृत्यक शब्दाडम्बरपूर्ण वर्णनः-

नीरद नील नयन निरनिन्दित बंक नेहारनि छन्द।
निरखैत निअर नितम्बिनि निश्चल निकसल नीबीबन्ध।।
नाँचत नन्दनन्दन नटराज।

नागरि नारि नगरि नव नागरि निरुपम नटिनि समाज।
नागरि नाह नन्दिनि नदि निकटे नीपनिकुंज निवासी।।
नित नव यौवनि निधुवनालंकृतनिभृत निनादनवासी।।
नाचहि नारि निकेत नहि रह नूतन नेह विलास।
निन्दहि निज जन नाह न हेरए निरिमत गोविन्ददास।।

अठारहम शताब्दीक आरम्भक पूर्व धरि अनुमानतः अवतीर्ण कविगणमे भागीरथकवि, भवेशदुति, भवनाथ, चतुराननकवि, धरणीधर, जयकृष्ण, जयराम, कुमुदी, राजालखनचन्द्र, नृपप्रीतिनाथ, पृथ्वीचन्द, कविराजपूर्णमल्ल, रतनाज्ञिकवि, सदानन्द, संगम आदि अनेक कविक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि, जनिक किछु पद उपलब्ध अछि, किन्तु जनिक परिचय निश्चयपूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि। एहिमे कतेक सुकवि छलाह, से उपलब्ध पदक आधार पर अनुमान कएल जा सकैत अछि। मुदा लोचन ओ गोविन्ददासक पश्चात् महाराज नरेन्द्रसिंहक राज्यकाल धरि मिथिलामे कोनो उच्च-कोटिक कविक उदय नहि भेल। म. नरेन्द्रसिंहक शासनकाल (1744-1761)

सँ लए महाराज महेश्वरसिंहक शासनकाल (1850-60) धरि मैथिली साहित्यक बहुमुखी विकास भेल। एहि कालमे मैथिलीक मुक्तक-पदक रचना तथाकथित किर्तनिञा नाटकहु मध्य प्रयुक्त होएबाक निमित्त प्रचुर मात्रामे भेल आओर गोविन्द दासक पश्चात् ओहने प्राचीन कविलोकनिक अधिक ख्याति भेल जे नाटकहुक हेतु लिखल। किन्तु एहनो कवि छथि जे स्वतन्त्र रुपहुसँ पदक रचना कएल। एतए ई ध्यातव्य अछि जे जे कवि नाटक मध्य लिखबो कएल, तनिक ख्याति कविक रुपमे सएह अछि, नाटक्कारक रुपमे नहि। आधुनिक युगमे 1860क पश्चात् तथाकथित किर्तनिञा नाटकक रचना नगण्य भेल। पूर्वयुगहि जकाँ स्वतन्त्र रीतिक मुक्तक-पदहिक रचनाक विकास होइत रहल। अतः अठारहम शताब्दीक आरम्भसँ लए आधुनिक काल धरि दुइ प्रकारक प्राचीन रीतिक गीतकाव्यकार भेलाह:-(क) जे नाटकमे प्रयुक्त करबाक हेतु अधिक पदक रचना कएल, स्वतन्त्र रीतिसँ कम। एहने कविलोकनिक परम्परा गत-शताब्दीक अन्त होइत-होइत समाप्त भए गेल एवं (ख) जे केवल स्वतंत्र रीतिसँ मुक्तक-रचना कएल। एहन कविलोकनिक परम्परा अद्यावधि चलैत आबि रहल अछि। पहिने प्रथम प्रकारक प्रमुख-प्रमुख कविलोकनिक परिचय लिखल जाएत, पाछाँ दोसर प्रकारक।

16. उमापति उपाध्याय - विद्यापति ओ गोविन्ददासक पश्चात् उमापति सर्वश्रेष्ठ कविक रुपमे परिगणित होइत छथि। हुनक आविर्भावकाल ग्रियरसन, डा. उमेशमिश्र, बी. के. चटर्जी प्रभृति विद्यापतिक पूर्व मानैत छलाह, किन्तु एम्हर आबि स्थिर भए गेल अछि जे ओ अठारहम शताब्दीक आदिमे अवतीर्ण भेल छलाह।

सर्वप्रथम प. चेतनाथझा अपन 'पारिजातहरण'क भूमिकामे हिनका म. म. गोकुलनाथ उपाध्याय (1685-1717)क समकालिक मानल। ई महामहोपाध्यायजी म. राघव सिंह (1707-40)क राज्यकालमे अवतीर्ण भेल छलाह। हुनका अनुसार उमापतिक 'हिन्दूपति' छलाह नेपालक सप्तरी परगन्नाक एक जमिन्दार हरिदेव। किन्तु ई एक साधारण जमिन्दारकेँ हिन्दूपति कहथि, से नहि जँचैत अछि। एम्हर आबि सिद्ध भए गेल अछि जे ओ बुंदेलखण्डक राजा हिन्दूपतिक हेतु, जे इतिहास-प्रसिद्ध छत्रसालक पौत्र ओ हृदयशाहक बालक छलाह, 'पारिजातहरण' नाटकक रचना कएल। एहिमे कोनो आश्चर्य करबाक विषय नहि अछि कारण, मध्यकालमे मैथिल विद्वनलोकनि बुंदेलखण्ड प्रभृति स्थानक राजालोकनिक आश्रय ग्रहण करैत छलाह। एकर अनेक प्रमाण अछि। उमापतिक एक पदमे छत्रसालक सेहो नाम अछि, ताहिसँ हुनक बुंदेलखण्ड आश्रित होएबाक तथ्यक परिपुष्टि भए जाइत अछि।
द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्तिः-

एस बुझ तेँ बुल रसिक सबहु फुल अधिक प्रेम गुनवान।
छत्रपति भूप रसिक रसविन्दक सुमति उमापति भान।।

ई हिन्दूपति म. नरपति ठाकुरक समकालीन छलाह, तेँ हिनक समय अठारहम शताब्दीक आदिमे सिद्ध होइत अछि। 'पारिजातहरण'क एक पदमे 'गुरु उमापति' पाठ अछि। एहि आधार पर अनुमान कएल जा सकैत अछि जे ओ बुन्देलखण्ड-राज्यक राजपण्डित छलाह। उपर्युक्त निष्कर्षक सम्मुख एकहिटा आपत्ति अछि जे लोचन हिनक पद अपन 'रागतरंगिणी'मे किएक नहि लेल। एकर समाधान ई जे की तँ ई लोचनक पश्चात् भेलाह अथवा प्रवासमे कविता करबाक कारणे ताबत काल धरि हिनक प्रसिद्धि ताहि रुपक एहि ठाम नहि छल जे लोचन हिनक रचना 'रागतरंगिणी' सन ग्रन्थमे उद्धृत करब उचित बुझने होथि। 'रागतरंगिणी'क रचना म. नरपति ठाकुरक जेठ भाइ म. महिनाथ ठाकुरक समयमे भेल ओ उमापति म. नरपति ठाकुर ओ हुनक बालक म. राघवसिंहक समयमे छलाह। तेँ लोचन निश्चये उमापतिसँ प्राचीन छलाह।

पाँजिक आधार पर उमापति कोइलखवासी दरिहरएमूलक म. म. कवि रत्नपतिक बालक छलाह। *'पारिजातहरण*मे ई अपनाकेँ *'कविपण्डित-मुख्य'* कहैत छथि तथा पदमे *'सुमति'*। ई दुनू हुनक उपाधि बूझि पड़ैत अछि। ओ *'पारिजातहरण*क पदक अतिरिक्त स्वतन्त्र पदहुक रचना कएल, जाहिमे किछु उपलब्ध अछि। शृंगारिक पदक अतिरिक्त हिनक विष्णुपद ओ सोहर प्रसिद्ध अछि। 'बेरि बेरि विरचथि विधि विधुमंडल हरिमुख सरि नहि होए' हिनक सुप्रसिद्ध एकमात्र उपलब्ध विष्णुपद थिक ओ 'परम सुदिन मोर यशुमति कोर देखिअ यदुराजे' प्रसिद्ध सोहर। 'पारिजातहरण'मे प्रयुक्त पद नाटकक कथाक प्रसंगमे पात्र-पात्रीक विभिन्न मनोदशाक प्रकरणमे लिखल गेल अछि यथा, मंगलगीतमे भगवती ओ शिवक वन्दना, कृष्णक महत्ताक वर्णन, वसन्तक वर्णन, पतिप्रेम-गर्विता सत्यभामाक गर्ववचन, मानिनी सत्यभामाक विरहवर्णन, कृष्णद्वारा सत्यभामाक मानप्रसादन आदि। उमापतिक प्रतिभा जतबा शृंगाररसमे निखरैत अछि ओतबा भक्तिपदमे नहि। नारदक वर्णनमे कथात्मक तत्त्व अवश्य प्रधान भए गेल अछि, मुदा अधिकांश स्थल पर ओहने मैथिली पद उच्चकोटिक अछि जे प्राचीन-काव्य-परम्पराक अनुकूल अछि। किछु पदक प्रथम पंक्ति नीचाँ लिखल जाइत अछि, जाहिमे उमापतिक कवित्वप्रतिभा चरम सीमा पर पहुँचि गेल अछि :- (1) जय जय मधुकैटभमर्दिनि (2) सुरतरु घन उपवन करु मंडप (3) कि कहब माधव तनिक विशेशे, (4) हरिसँ प्रेम आस कय लाओल पाओल परिभव ठामे, (5) अरुण पुरुब दिसि बहल सगर निसि, आदि।

विद्यापतिक संग हिनक तुलनासँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे ओ विद्यापति-सम्प्रदायहिक अनुसरण कएल। किन्तु भाषाशैली ओ भावविन्यास हिनक पाण्डित्यपूर्ण अछि। प्राचीन-काव्य-धाराक भाषाप्रयोगक विकासकेँ ध्यानमे रखैत ई

स्पष्ट अछि जे लोकभाषा त्यागि पण्डितक भाषा हिनकहि कालमे विशेष प्रयुक्त होअए लागल ओ तैं हिनक रचना लोकसाहित्यक रूपें त्यागि वर्जित होअए लागल। हिनक कविताक वैशिष्ट्य थिक कल्पनाक प्रौढ़ता, संस्कृत साहित्यक कवितामय सुन्दर उपयोग, अलंकारक विन्यास एवं वर्णमैत्री। ई सभ वैशिष्ट्य जेना हिनक स्फुट पदमे भेटैत अछि, तहिना नाटकहुक पदमे, जेना शृंगारिक पदमे भेटैत अछि तहिना भक्तिपदहुमे भेटैत अछि।

17. रामदास - ई महाकवि गोविन्ददासक अनुज छलाह। तैं हिनक परिचय गोविन्ददासक परिचयमे द्रष्टव्य अछि। उमापतिसँ ई निश्चये पूर्वक छलाह। ई म. सुन्दर ठाकुरक हेतु 'आनन्द-विजय' नाटकक रचना कयल जे मैथिली पदक भणितासँ स्पष्ट अछि।

'आनन्द-विजय'क कथा कृष्णक रूप पर मोहित होयब, पुनः साक्षात्कार भेला पर राधाक हृदयमे कृष्णक प्रति प्रेम जाग्रत होयब, पुनः राधाकृष्णक विरह-वर्णन, पश्चात् सखिक सहायतासँ राधाकृष्ण-मिलन आदि पर आधारित अछि। कथा एहि तरहें नियोजित कयल गेल अछि जे शृंगाररसक विविध पक्षक-पूर्वरागके रूप-वर्णनसँ लए संयोगवर्णन धरिक पदकेँ प्रयुक्त करबाक अवसर कविकेँ भेटि सकए। रामदास विद्यापतिनीतिक अनुसरणो धरि नहि कए हुनक कविताक अविकल अनुकरणो करबाक चेष्टा कयने छथि। विद्यापतिक प्रसिद्ध वटजनीक आधार पर राधाक रूपवर्णनक किछु पंक्तिक उदाहरण द्रष्टव्य थिकः -

आज मधुपुर जाइतें रे पथ भेटलि राधा।
मानस मीनतरंगिनी रे विरह अगाधा।। आदि

राधाक विरहवर्णनक निम्नलिखित पद प्रायः रामदासक सर्वश्रेष्ठ रचना थिकः -

कि कहब ओ रे, ताहरि कहिनि पुछिअ जनु तुअ बिनु
वानि कुसुम सन दर तनु ।।
घामल ओ रे घउपुर घेउँकि घेउँकि रह धनि कह,
कौन देल देल हुतबह ।। आदि

एहू पद पर विद्यापतिक प्रभाव स्पष्ट अछि।
हिनक स्वतंत्र रूपें जे मुक्तक प्राप्त अछि, सेहो अधिकांश शृंगाररसक थिक।

मानिनी नायिकाकेँ सन्तुष्ट करैत नायकक उक्ति देखु: -

तोहर अपय साथि लाबे, सपनहु हरि नहि दोसर सम्भावे।
मन मानह जनु आने, सुजन सिनेह सुजन जन जाने।
सरस राम एहो वानी, नागर गुन हो नारि से जानी।

एहिना 'माधवि कत कर आज वेआजें', 'आबे कमिलिनि कनह कुसुम परवाल' प्रभृति हिनक उत्कृष्ट शृंगारपद थीक। 'सरस' उपाधि हिनक साभिप्राय अछि ओ तैं ई 'सरसराम' हिक नामसँ अधिक परिचत छथि।

18. रमापति झा - ई अपन परिचयक उल्लेख अपन 'रुक्मिणी-हरण' नाटकमे कए देने छथि। तदनुसार ई वत्सगोत्र पलिवाड़ महिसी ग्रामक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह। हिनक पिता छलथिन्ह कविकृष्णपति ओ माता प्रसिद्ध मैथिल विद्वान सोदरपुर सरिसव परिवारक अयाची मिश्रक सन्तान। रमापतिझाक विवाह म. नरपतिठाकुरक बालक बाबू ठाकुर सिंहक कन्यासँ भेल छलैन्हि। तैं हिनक समय अठारहम शताब्दीक मध्यमे स्थिर होइत अछि।

'रुक्मिणी-हरण' 'रुक्मिणी-परिणय' ओ 'रुक्मिणी-स्वयंवर'क नामहुसँ प्रसिद्ध अछि, जकरा ओ म. नरेन्द्र सिंहक संरक्षणमे लिखल। एकर कथाक आधार अछि हरिवंशपुराणक स्कन्ध 10 अध्याय 52-54। नाटकक नामे कथाक द्योतन करैत अछि। रमापति झा कथाक अनुसरण करैत मैथिली पदक रचना कए ओहिमे प्रयुक्त कयने छथि। जाहि जाहि ठामक मनोदशाकेँ द्योतित करैत पदक रचना भेल अछि, ताहि ताहि ठाम सुन्दर पद अछि, यथा, कृष्णक गुण सुनि रुक्मिणीक पूर्वरागक वर्णन: -

प्रथमहि ओ रे, सखिमुखि परिजन मुखे सुनि।
ओ की तुअ गुन अनुखन नेह उपज दुन।। आदि

तथा कौतुकागारमे रुक्मिणीकेँ कृष्णक समीप बैसाए सखीसभक उक्ति: -

माधव सुनिअ निवेदन वानी, सुनुकि मिलत तोहेँ गुनमय जानी।
तैं परि प्रेम करब सखि ठामे, दिने दिने होअ अधिक अभिरामे ।। आदि

तहिना कौतुकागारमे मान कयने रुक्मिणीक प्रति कृष्णक अनुनय वचन: -

गिरिवर लीन मलीन निसाकर अलप नखत नहि भासे।
मुदित कमलवनि नहि तुअ धनि नयनसरोज विकासे ।।
ओ गे मानिनि। आदि।

एहि पदमे उमापतिक 'अरुण पुरब दिसि बहलि सगर निसि'क छाया स्पष्ट अछि, जेना पूर्वक पद सरससरामक।

उपर्युक्त पदक अतिरिक्त 'अविरल लोचन गर जलधार कुवलयदल जनि उग्ध तुषार', 'अनुपम उपचित दुहुक सिनेहे, थिर भए दामिनि मिलु जनि मेहे' आदि पद सेहो काव्योत्कर्षक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।

किन्तु नाटकक जाहि स्थलमे इतिवृत्तात्मक वर्णन अछि, ताहि ठाम कथात्मकता एतेक उभरि जाइत अछि जे ओ कथाकाव्यक समीपक वस्तु भए जाइत अछि। उदाहरणार्थ रुक्मी द्वारा कृष्णक निन्दावचन:-

हमर वचन सुनिअ महाराज, एहन विचार देल कोना आज ।....
गोप सबहुँ परिपालन जाहि नृपति सुतावर के कह ताहि।। प्रभृति

यद्यपि ई उत्कृष्ट कोटिक श्रृंगारपद सेहो लिखने छथि, परन्तु स्थान-स्थान पर 'हरिपद प्रनत रमापति भान', 'मुरारि भगति सुमति रमापति भान' प्रभृति भनिता-पंक्ति सिद्ध करैत अछि जे हुनक समस्त रचना एक भक्तक निश्छल भावोद्गार थिक।

19. लालकवि - लालकविक परिचय हुनक प्रसिद्ध नाटक 'गौरी-स्वयंवर'मे उल्लिखित नहि अछि। परन्तु परम्परासँ प्रसिद्ध अछि जे ओ म. नरेन्द्र सिंह (1744-61)क दरबारमे छलाह। म. नरेन्द्रसिंहक विजयक उपलक्षमे रचित लालकविक एकटा हिन्दीक ग्रन्थ उपलब्ध अछि। सम्भवतः दुनू एके कवि छथि। प्रो. रमानाथझा हिनक परिचयक अनुमान करैत हिनका मड़रौनीक पलिबार मानल अछि। मुदा प्रो. श्री उपेन्द्रझा 'गौरी-स्वयंवर'क भूमिकामे, पलिवार जमदौलमूलक हिनका ज्योतिर्विद झड़ुलाझा कहल अछि। हिनक पिता सोनमणिझा छलथिन्ह, जनिक ई सबसँ छोट बालक छलाह। इएह सोनमणिझाक प्रपौत्रक प्रपौत्र श्रीदयानाथझा सम्प्रति खड़रखमे वर्तमान छथि। एहि प्रमाणक आधार पर ई म. नरेन्द्रसिंहक पूर्वहिक सिद्ध होइत छथि। हिनक 'गौरीस्वयंवर' अथवा 'गौरीपरिणय' नाटक 'पारिजातहरण'हि जकाँ प्रसिद्ध अछि।

लालकविक नाटकक कथा महादेवपार्वतीक विवाहक प्रसंगक अछि। तेँ समग्र पद महेशवानी सएह थिक ओ प्रत्येक पद एक भक्तक हृदयोद्गार बूझि पड़ैत अछि। एहिमे सर्वश्रेष्ठ पद अछि कामदेवक दाहक पश्चात् रतिक विलाप -

हरि हे कोन हरल मोर नाह।
अछल अभेद भेद नहि भरमहुँ से नहि मन अवगाह।।
पल विसलेख पहर सम्भो मानिय कोन परि होयत निवाह।
शोक कलाप दाप दह मानस उर उपजाबए धाह।।

एहि नाटकमे कवि घटकैतीसँ लए नैनायोगिन, कोबर परिछन प्रभृति मिथिलाक प्रमुख वैवाहिक व्यवहारक सांगोपांग वर्णन कएने छथि। रसक दृष्टिएँ हिनक हास्यक वर्णन अपूर्व भेल अछि, यथा:-

गौरीशंकर मण्डप गेल, बड़ कठिन पुरोहितकाँ भेल।
बापपितामह नाम नहि जान, कोन परि होयत कन्या दान।
तीनू नाम वरहि कहि देल, तेँ विधि गोत्र उच्चारण भेल।
पुरोहित कैलनि अपन छुटानि, महा हरष मय भेल शुलपानि।

मेनकाक मनोभावकेँ व्यक्त करनिहार निम्नलिखित पद बड़ प्रसिद्ध अछि:-

1. घर घर भरमित जनि तनिकाँ कहन विवाह।
2. हे सखि सबहुँ सुने छी गारि, ककरहुँ तइ नहि होअ निवारि।

वस्तुतः किर्तनियाँ नाटकसबहु मध्य उपयुक्त भेनिहार पदमे हिनक रचनाक विशेषता अभिनव ओ उत्कृष्ट लगैत अछि कारण, श्रृंगाररसक प्राधान्यक स्थान पर हिनक प्रायः सब रचना भक्तिपद थिक। किन्तु हिनक पदहुमे वर्णनात्मक तत्व प्रधान भए गेल अछि, जाहिसँ रागात्मकताक स्थान पर कथात्मकता विशेष स्फुट बूझि पड़ैत अछि।

20. नन्दीपतिझा - नन्दीपति उमापति ओ रमापतिक समाने बड़ ख्यात कवि छथि। हिनक नाटक अछि 'कृष्णकेलिमाला'। मुदा एहिमे ओ अपन आश्रयदाताक नामोल्लेख नहि करैत छथि। परम्परासँ प्रसिद्ध अछि जे ओ म. माधवसिंह (1776-1808)क समसामयिक छलाह। हिनक पिता छलथिन्ह पवौलिवार बढ़ियामी शाखाक पुंगौली-मूलक म. म. कृष्णपति। म. म. कृष्णपति म. शुभंकरठाकुरक

दौहित्रीपुत्र छलाह। स्वयं नन्दीपतिझा म. म. हरिहरझाक दौहित्रीपुत्र छलाह। हिनक प्रसिद्ध नाम छल बादरि। ई तथ्य पाँजिसँ सेहो सिद्ध होइत अछि।

हिनक नाटकक नाम 'कृष्णकेलिमाला' अछि, तेँ नामक अनुसार आद्यन्त कृष्णक लीलावर्णन करब हिनक उद्देश्य अछि आओर सएह ओ करबो कएल अछि, मुदा वर्णनमे कतहु रागात्मक पक्ष गौण नहि भए पाओल अछि। गीतामात्रमे जेहन गहन भावात्मकता चाही, सर्वत्र तकर निर्वाह भेल अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक जे पूतनाक विलापक वर्णन कवि केहन पटुता ओ तन्मयताक संग कएने छथि:-

हमेँ न एहन हरि जानल मानल अपराधे।
न हनु न हनु सिरिपति तिरिवध आड बाधे। आदि

पहिना शकटभंगलीलाक सेहो मैथिली पदमे वर्णन कएल गेल अछि। जखन कृष्ण युवक होइत छथि, तखन हुनक गोपीसभक संग केलिकौतुक प्रारम्भ होइत छैन्हि। गोपीक उपालम्भपूर्ण वाक्यवचन सेहो हिनक बड़ सजीव भेल अछि:-

1. छोड़ु छोड़ु आँचर मोरा, माधव मोर निहोरा।
किए बिलमावह मोही, भल न कहत कैओ तोही।। आदि।
2. ऐसन करम मोर मन्दा, देखहुँ बकार दन्दा।
न एक धारीअ कौड़ी, न हम तोहर नौड़ी।। आदि

हिनक गोआलरी बड़ प्रसिद्ध अछि, जाहिमे किशोर कृष्णक लीलाक उपराग हुनक मायकेँ गोपी दैत अछि:-

यशोमति मोर उपरागे, हरिक चरित्र मोहि बड़ मन्द लागे।
जाइत जमुनापथ आजे, वन तेँ बाहर भेल यदुराजे।
आँचर धएलन्हि मोरा बालहुक अनमल तोर किशोरा। आदि

किन्तु हिनक नारीक मान ओ अनुतापद्योतक रचना मनोभावक स्वाभाविक चित्रणक दृष्टिसँ उत्कृष्ट अछि, जाहि मध्य प्राचीन रीतिक गीतक बड़ सुन्दर प्रयोग कएल गेल अछि। मुख्य-मुख्य पदक उल्लेख कएल जाइत अछि:-

(1) के जान कओने दोषेँ रुसि गेल राम, (2) कत उद्वेग कहब हम तोहि साजनि हे, आदि।

नन्दीपतिक किछु स्फुट पद सेहो उपलब्ध अछि। तादृमध्य ओ श्रृंगाररसक विविध पक्षक बड़ सजीव, कवित्वपूर्ण ओ सरस वर्णन कएने छथि। उदाहरणार्थः-

1. प्रथम समागमक वर्णनः-

भाङ.ए थाह चिकुर भर सजनी सहजहि दूबर देह।
प्रथमहि सुपहु समागम सजनी उपजल अधिक सन्देह।। आदि

2. अनुतप्ता नायिकाक नायकक प्रति वक्र उक्ति वचनः-

बड़ जन ने तेजए पिरीत रे, कबहु न कर कुरीत रे। आदि

3. विरहातिरेकक कारणे नायिकाक विलापः-

पहु विशलेष पराभव सजनी नहि अते हन अनुताप।
सुपहु वचन निफल भेल सजनी तेँ अति करिअ विलाप।। आदि

4. प्रवस्यत्पतिकाक भावोदगारः-

मोहि तेजि पहु परदेश गेल सजनी परधनि वश भेल।
चारि पहर निशि न देखिअ सजनी सहजहि जीव उपेखि।।

उपर्युक्त उद्धरणसँ नन्दीपतिक काव्य-प्रतिभाक वास्तविक स्वरूप स्पष्ट भए जाइत अछि। हिनक भाषाशैली परिमार्जित ओ सहजतापूर्ण छैन्हि। कतहु-कतहु पंडिताम भाषा सेहो भेटैत अछि। सब दृष्टिएँ विचारलासँ नन्दीपति मैथिलीक प्रथम पंक्तिक कवि सिद्ध होइत छथि।

21. रत्नपाणिझा - उपाहरण नाटिकाक प्रसिद्ध रचयिता रत्नपाणिझाक परिचय हिनक एहि नाटिकाक द्वितीय ओ तृतीय प्रकरणमे अछि- 'गंगौलीसँ जीवेश्वरात्मज रत्नपाणिविरचितायाम्' इत्यादि। एहि परिचयसँ सिद्ध होइत अछि जे 'उपाहरण'क रचयिता रत्नपाणिझा ओएह व्यक्ति छथि जे दशो महाविद्याक प्रसिद्ध गीत संस्कृत ओ मैथिलीमे लिखल ओ जे पद 'मैथिल-भक्तिप्रकाश'मे संकलित अछि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे रत्नपाणिझा नवानीक सर्वतन्त्रस्वतन्त्र पंडितावतार धर्मदत्त प्रसिद्ध बच्चाझाक पितामह छलाह। एहि नाटकसँ ज्ञात होइत अछि जे 'उपाहरण'क रचना ओ म. महेश्वरसिंहक राजत्वकालक आदिमे कएल। ई म. रुद्रसिंहसँ लए म.

महेश्वरसिंहक समय धरि दरभंगा-राजक आश्रित छलाह। हिनक रचित सोलह गोट ग्रन्थक पता चलल अछि, जाहिमे अधिकांश धर्मशास्त्र ओ कर्मकाण्डक, एकगोट 'नाड़ीविज्ञान नामक आयुर्वेदहुक अछि। हिनक 29 गोट मैथिलीक स्फुट पद उपलब्ध अछि, जाहिमे 21 गोट 'मैथिल-भक्ति-प्रकाश'मे संकलित अछि। एकर अतिरिक्त एकगोट ताराक, एकगोट दुर्गाक, चारिगोट गंगाक तथा एकगोट विष्णु-पद अछि।

हरिवंशक 115-128 भागक कथाक आधार पर उषा ओ अनिरुद्धक प्रेम-कथा 'उषाहरण'मे चित्रित अछि। एहिमे प्रयुक्त मैथिली पदमे अधिकांश कथात्मक ओ दीर्घ अछि जे कोनहु प्रकारेँ विद्यापति- सम्प्रदायक गीत-मुक्तक नहि कहाए सकैत अछि, संगहिँ एहि सभमे विद्यापतिसम्प्रदायक शृंगारभावनाक सेहो अभाव अछि। एहि नाटकक मैथिली कवितामे एहन सांगोपांग वर्णनप्रणाली अपनाओल गेल अछि जे एकरा नाटक कम, कथाकाव्य अधिक सिद्ध करैत अछि। एहि प्रकारक नाटकमे प्रयुक्त मैथिली पदमे कथात्मक वर्णन परवर्त्ती कृतिसबहुमे सेहो थोड़-बहुत भेटतहिँ अछि, मुदा एहिमे से अतिशय पर अछि। तेँ एकर रचना यदि कथाकाव्यक रुपमे भेल रहैत तँ आओरो अधिक सफल भेल रहैत। आगाँ हर्षनाथझा सेहो 'उपाहरण'क रचना कएल। किन्तु ओहिमे गेयतत्व प्रधान अछि, कथातत्व नहि। तथापि एहि मध्य निम्नलिखित पद गीतक दृष्टिएँ सेहो उच्चकोटिक अछि, ओएह परम्परागत शैलीमे गहन भावाभिव्यंजक गीत-शिल्प - (1) कि कहब कामिनी आजे, सपन अपन गति कहइते लाजे, (2) उचित तोरति रसदान, (3) तेजल मान हम तुअ वश रे, न करिय पहु रोषे (4) शिव मोर करिय तराने, आदि।

वस्तुतः एहि नाटिकाक रचना ओ भिन्न शैलीमे कएल। यत्किंचित् नाटकीयता रहितहु एकरा कथाकाव्य कहीतँ अनुचित नहि होएत। नाटकीय रुपमे लिखितहुँ प्रायः हुनक उद्देश्य नाटक लिखब नहि छल, अथवा पहिने कथाकाव्य लिखि ओकरा नाटकक रुप दए देने होथि, सेहो सम्भव। द्रष्टव्य थिक जे ओ अंकक स्थान पर प्रकरण लिखल अछि।

नाटकसँ भिन्न मुक्तहुमे हिनक संस्कृतप्रियता स्पष्ट अछि। हुनका संस्कृतभाषा पर कतबा अधिकार छल, से छिन्नमस्ताक वर्णनक हुनक निम्नलिखित पद स्पष्ट कए देत :-

जय जगज्योति जगत गति दाइनि चिकुर घारु रुचि भाले
परम असाम्भव सम्भव तुअ वस पीन पयोघर बाले।।
कमल लोप रवि मंडलता विच विविध त्रिकोणक रेखा।
ता विच रति विपरीत मनोभव सुषमा सरित विशेषा।।

जाहि ठाम नाटिकामे ओ सरल सुलभ भाषा प्रयोग कएल, ताहि ठाम अपन महाविद्याविषयक पदमे संस्कृतनिष्ठ, ओजपूर्ण ओ आलंकारिक भाषा अपनाओल। शृंगारविषयक स्फुट पदमे हुनक भाषा सरल, सहज ओ मधुर अछि। द्रष्टव्य थिक लगनीक निम्नोद्धृत पंक्ति :-

सरस मास निशि साओन ननदी बालमु हमर विदेश।
कओन परि होएत समागम ननदी कत दिन रहत कलेश।।
उमड़ि घुमड़ि घन बरिसए ननदी दामिनि दमक हुताश।।
दछिन पवन निशि दिन बह ननदी जीवमोर जाइछ हताश।।

वस्तुतः रत्नपाणिझा भावानुरुप भाषा-शैली प्रयोग करबामे निष्णात छथि।

22. **हर्षनाथझा** - सुकवि हर्षनाथझा म. लक्ष्मीश्वरसिंहक सभापण्डित, वृजनाथझा ओ शीलावतीक बालक शारदापुरक वासी छलाह। हिनक जन्म 1847 ई. में एवं मृत्यु 1898 ई. मे भेल। ई गोपालठाकुरसँ 15म वर्षक अवस्थामे शिक्षारम्भ कए 1868 ई. मे समाप्त कएल। तत्पश्चात् काशीमे राजारामशास्त्री, बालाशास्त्री ओ नृसिंह सन विशेषज्ञ विद्वन्सभसँ अध्ययन कएल। ओहि ठामसँ आबि मृत्युपर्यन्त म. लक्ष्मीश्वर सिंहक सेवामे रहलाह।

हिनक तीन गोट भाषासाहित्यक रचना प्रकाशित अछि:- 1. 'उषाहरण नाटकम्' 2. 'माधवानन्द' नाटिका तथा 3. 'राधाकृष्णमिलनलीला' (ब्रजभाषा)। एहि पुस्तकक मूल रचना मैथिलीमे भेल, से प्रसिद्ध अछि। मुदा से 'हर्षनाथ-ग्रन्थावली'मे प्रकाशित नहि अछि, 4. विविधविषयक स्फुटगीत यथा, शक्तिक गीत, सोहर, उचिती, तिरहुति आदि। ई संस्कृतमे व्याकरणक तीन, धर्मशास्त्रक एक, कर्मकाण्डक तीन एवं सहित्यक दुइ गोट ग्रन्थक रचना सेहो कएल।

हर्षनाथ विद्यापति-सम्प्रदायक अन्तिम महाकवि छथि। हिनक भाषा संस्कृतनिष्ठ अछि एवं काव्यरचनहुमे ई संस्कृतसाहित्यक रीतिक अनुसरण कएने छथि। प्राचीन काव्यधाराक जतेक प्रवृत्ति अछि, से सब हिनक पदमे बड़ सुन्दर जकाँ समन्वित अछि। हिनकामे प्रौढ़ ओ सूक्ष्म कल्पना अछि, अलंकारक बाहुल्य अछि, मुदा से भावाभिव्यक्तिक अपकर्षक नहि, उत्कर्षके अछि। भावक विशदता हिनक प्रत्येक रचनामे प्रचुर मात्रामे अछि नवीनता-निष्पन्न मौलिक चमत्कार लेने। उत्तमकाव्यक जतेक गुण होइत छैक से सबटा हिनक रचनामे उपलब्ध अछि।

'उषाहरण'क रचना ओही कथा लए कएल जाहि कथा लए रत्नपाणिझा

कएने छलाह। मुदा हिनक ध्यान कथातत्व दिसि नाहे, परम्परागत गीततत्वहि दिसि सतत रहल अछि। अतः हिनक नाटकमे प्रयुक्त पद उत्कृष्ट कोटिक गीतकाव्य थिक। काव्योत्कर्ष, संगहिँ उत्कृष्ट गीतशिल्पक दृष्टिएँ हिनक निम्नलिखित पद उल्लेखनीय अछिः 1.-उसरल जग भरि शिशिर पसार, बसल सरस ऋतुपति बनिजार, 2. सुनु सखि ओरे सरस देखल जनि सुपुरुष, 3. पहु बिनु किछु नहि भावए रे कि करब परकारे, 4. कि कहब हे सखि धनिक विशेष, 5. हे सखि हे सखि करह उपाय 6. हरि हरि देखल अपरुप रामा, 7. कहव, तनिक विशेष माधव, 8. चलल‍ि शयनगृह सुन्दरि, 9. चलल‍ि केलि-गृह सुन्दरि रे, आदि।

'माधवानन्द'क रचना ओ बाबू एकरदेश्वर सिंहक हेतु कएल। एहि मध्य कृष्ण ओ राधाक पारस्परिक प्रेमोद्भव, मिलनक उत्कण्ठा तथा अभिसार आदिक वर्णन भेल अछि। अतः एहू मध्य श्रृंगाररसक विविध पक्षक अवसरानुसार मैथिली पद प्रयुक्त भेल अछि, जे सुन्दर गीत-काव्यक दृष्टान्त थिक। यद्यपि भाव परस्परागत श्रृंगाररीतिक अछि, तथापि कवि अपन आह्लादिनी प्रतिभाक स्पर्शसँ ओहिमे नव सरसता भरि देने छथि। एहि मध्य प्रयुक्त किछु उल्लेखनीय पद थिक- 1. सजल जलद गेल विमल गगन भेल 2. सखि हे बुझल हरिक अनुरागे, 3. माधव बूझल तोहर सिनेह, 4. सुनु सखि ओ रे कओन दुरित फल, आदि।

हिनक स्फुट-पदहुक मुख्य विषय श्रृंगारिके अछि। वस्तुतः उमापतिक पश्चात् प्राचीन काव्य- धाराक हर्षनाथझा सर्वश्रेष्ठ कवि छथि-की काव्योत्कर्षक दृष्टिएँ ओ की श्रृंगाररसक चमत्कारपूर्ण सरस विविधताक दृष्टिएँ। एही कारणे काव्यरसिक पण्डितवर्गमे ई बड़ लोकप्रिय भए समादृत छथि।

प्रकृतिवर्णन हिनक बड़ सजीव ओ चित्रमय होइत अछि। एहू दृष्टिएँ हिनक वर्णनप्रणाली आलंकारिक होइत अछि, किन्तु तकर ओ एहन सूक्ष्म कल्पना करैत छथि जे चित्र बड़ आकर्षक भए उठैत अछि। अतः प्रकृतिकाव्यक रचयिताक रुपमे ई प्राचीन काव्य-धाराक प्रायः सर्वश्रेष्ठ कवि कहल जा सकैत छथि। माधुर्य ओ लालित्यमे हिनक प्रत्येक रचना उपरियुपरि अछि, मुदा प्रकृतिकाव्यमे से चरम सीमा पर पहुँचि गेल प्रतीत होइत अछि। सांग-रुपकक केहन चमत्कारपूर्ण वर्णन ओ वसन्तवर्णनक निम्नलिखित पंक्तिमे कएल अछि, से द्रष्टव्य थिक :-

उसरल जग भरि शिशिर पसार, बसल सरस ऋतुपति बनिजार।
पसरल सओदा मधुरस फूल, अभिनव सौरभ प्रेम अमूल ।।
तौलल दक्षिण पवन विचारि, भमि भमि माँगत भ्रमर भिखारि।
पिक्कुल करत दलालक काज, गाहक तरुणी तरुण समाज ।।
हसित वचन लोचन दए दाम, किनत सनेह रतन सब ठाम।
रसमय हर्षनाथ कवि भान, नृप लक्ष्मीश्वर इहो रस जान।।

एही दृष्टिएँ निम्नलिखित पंक्ति सेहो द्रष्टव्य थिक -

1. धीवर अंक मयंक तरणि चढ़ि शशिकर जाल पसार।
उडुगन मीन बझाए चलल जनि गगनपयोनिधि पार।। आदि

2. सुन्दर शरद समय सुख धामे।
सजल जलद गेल विमल गगन भेल शशिमंडल अभिरामे।।
तेजि ककुभकामिनि निज दिनमणि अस्तशिखर चल गेला।
निरखि सून घर जनि रजनीकर उपपति लज्जित भेला।। आदि

एहि प्रकारक सूक्ष्म चित्रमय कल्पना, पाण्डित्यपूर्ण लालित्य एवं माधुर्यकेँ ओएह हृदयंगम कए सकैछ जे काव्यरस ओ काव्य-रीतिक मर्मज्ञ हो। तेँ हिनक रचना लोककाव्य नहि भेल। प्रो. रमानाथ झाक शब्दमे-उमापतिसँ जे भाषा पाण्डित्यपूर्ण होअए लागल से हिनक रचनामे आबि चरम पर पहुँचि गेल। ई तथ्य सर्वथा सत्य अछि।

एहीप्रकारेँ नाटक मध्य जे जे कविगण मुक्तक पदक रचना कएल, ताहिमे 'धूर्तसमागम'कार ज्योतिरीश्वर ओ 'गोरक्ष-विजय'कार विद्यापतिक अतिरिक्त 'नलचरित' नाटकक रचयिता गोविन्द, उषाहरण'क देवानन्द, मानचरित'क गोकुलानन्द, 'पारिजात-हरण' तथा 'गौरीपरिणय'क शिवदत्त, 'रुक्मांगद'क करणजयानन्द, 'श्री कृष्णजन्मरहस्य'क श्रीकान्त गणक, 'गौरी-स्वयंवर'क कान्हाराम दास, 'प्रभावती-हरण'क भानुनाथ झा प्रभृतिक नामोल्लेख सेहो कएल जा सकैत अछि। एहिमे अधिकांश उच्च कोटिक कवि छलाह जे नाटकमे मैथिली गीतक अतिरिक्त कतोक स्फुट मुक्तक- पदहुक रचना कएल।

नाटकसँ भिन्न मुक्तक-कवि-

23. कविशेखर भंजन - हिनक पदक भनितासँ ज्ञात होइत अछि जे ई म. राघवसिंहक (1704-40)क दरबारसे कविक रुपमे रहैत छलाह। हिनक एकटा पदमे लिखल अछि-रसमय भंजन कवि इहो भाने, नरइन्द्र नरपति गुणक निधाने।। अतः हिनक समय म. राघवसिंहसँ महाराज नरेन्द्रसिंहक राज्यकाल मध्य स्थिर होइत अछि। ई 'रसमयकवि'क उपाधिसँ विभूषित छलाह, सेहो स्पष्ट अछि। कोनहु-कोनहु पदसे 'कविशेखर' सेहो अछि-कह कविशेखर भंजन, दोसर न एहि जग हर सन, गौरि सहित होथु परसन। हिनक निश्चित परिचय ज्ञात नहि अछि, परन्तु कविशेखर बदरीनाथझाक अनुमान अछि जे हिनक नामसँ प्रायः पाँजि चलल छल।

हिनक कविताक मुख्य विषय शृंगारिक अछि। विरहक वर्णन हिनक बड़ सुन्दर होइत अछि। महेशवानी ओ योगगीत सेहो हिनक नगण्य संख्यामे उपलब्ध अछि, जाहिमे भक्त-कविक रुपमे सेहो हिनक प्रतिभा निखरल अछि। उदाहरणार्थः-

1. महेशवानी-देखह मनाइनि आई, अपरुप हर समुदाई सुखदाई लो।
डमरु खटंग शुलधारी, वर बड़ वृद्ध भिखारी गौरीवारी लो।।

2. योगगीत...जगत विदित हमे मोहिनी, मेदनि उदित शशि रोहिनी।
रविहुक रथ अटिकाबिअ, तैं जग योगिनि कहाबिअ ।।
कह कविशेखर भंजन, दोसर न एहि जग हर सन ।

मुदा हिनक प्रतिभा शृंगाररसहिक वर्णनमे विशेष उत्कर्षक होइत अछि। दृष्टान्तक हेतु द्रष्टव्य थिक विरहिणी नायिकाक वर्णनः-

मणिमय विषधर डाँसल, नैननोर जल भाँसल।
अधर सुधारस पीउति, सएह पिउति पुनि जोउति।।

एवं कलहान्तरिताक अनुतापवर्णनः-

जँ हम जनितहुँ तनि तह होएत विरह दुख भार।
अंकम भरि हरि धरितहुँ हृदयक हार।

उपर्युक्त उद्धरणहिसँ हिनक भाषाशैलीक विशेषता सेहो स्पष्ट अछि। अभिव्यक्तिक नवीनता ओ सरल भाषाक सरस प्रयोग हिनक रचनाक मुख्य गुण थिक। भावनाक अन्तरंग गहनताकेँ स्वाभाविक भाषामे व्यक्त कए चमत्कार उत्पन्न करब हिनक विशेषता थिक। मुदा परम्पराकेँ इहो पूर्ण रुपसँ अनुसरण कएने छथि।

24. चक्रपाणि - चक्रपाणि 'उषाहरण' नाटिकाक रचयिता रत्नपाणिझा प्रसिद्ध बबुरैयाझाक पूर्वज ओ म. राघवसिंहक समकालिक सुकवि छलाह जे हुनक एकटा पदक निम्नलिखित पंक्तिसँ स्पष्ट अछि :-

राघवसिंह रसविन्दक सरस सुरत सुख भेल।
चक्रपाणि कवि गाओल अधिक विरह दुख गेल।

हिनक पदकेँ ग्रियरसन अपन Vaishnava Hymns मे संगृहीत कएने छथि।

प्रो. रमानाथझाक 'प्राचीन-गीत'मे संकलित ओएह पद थिक। डा. जयकान्तमिश्रक अनुसार हिनक दू सए पंक्तिक 'उषाहरण' नामक वर्णनात्मक काव्य उपलब्ध अछि, परन्तु से एखन धरि प्रकाशित नहि भए सकल अछि। म. राघवसिंहक समकाल अथवा हुनक पश्चात्‌क प्रायः कोनो गीत-संग्रह नहि अछि, जाहि मध्य हिनक पद संकलित नहि भेल हो। नेपालक राष्ट्रीय पुस्तकागारमे सुरक्षित 'नानागीतम्'मे सेहों चक्रपाणिक एकटा पद संगृहीत अछि। एहिसँ हिनक व्यापक लोकप्रियताक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

चक्रपाणिक उपलब्ध पदावली शृंगार-विषयक अछि। ओ जाहि पक्षकेँ अपन गीतक विषय बनाओल, तकरा बड़ स्वाभाविक रीतिएँ सुललित शब्द-विन्यास ओ अलंकारपूर्ण विच्छित्तिक संग चित्रित कएल। द्रष्टव्य थिक अभिसारिकाक रुप-सज्जा एवं काम-प्रेरित मनोभावक वर्णन-

अलक विरचि ललाट शशिमुख देल सिन्दुर बिन्दु।
भान हो जनि राहु तर रवि, ताहि तर बसु इन्दु।।
चललि मदगजराजगामिनि साजि सुपहु समीप।
पहिल मास तरास दुर कए, संग मदन-महीप।।

तहिना द्रष्टव्य थिक विरहिणी स्वीयानायिकाक पथिककेँ समादः-

पथिक समाद ततहि लए जा हे, जतए रतल अछि रे निरदय नाहे।।
कहिहह उकुति जुगुति परचारी, विरह गरसलि रे जनि तुअ वर नारी।।
दृगजलधर तनु मनमथ आहे, जिउति न जानह रे जनि पड़ल अथाहे।।

वस्तुतः चक्रपाणि प्राचीन शृंगार-काव्य-धाराक सरस गीतकार छलाह ओ जनिक पद-रचनामे आलंकारिक शब्द-योजनाक संग-संग मधुर भावक तन्मयता सेहो बड़ स्वाभाविक रीतिएँ अभिव्यंजित भेल अछि।

25. निधि :- भाषाक लालित्यमे शृंगाररसक कमतीयता घोरबाक दृष्टिएँ प्राचीन काव्यधारामे निधिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। लगनीक प्रख्यात रचयिता निधिक नामसँ एकटा विलक्षण मान-गीत सेहो उपलब्ध भेल अछि, जाहि मध्य आश्रयदाताक रुपमे विष्णुसिंहक नामोल्लेख अछि। यदि मानगीतक कवि निधि अपन लोकप्रचलित लगनीक रचना सेहो कएल तँ हिनक आविर्भाव-काल स्पष्ट रुपसँ निर्धारित भए जाइत अछि। कविशेखर बदरीनाथझा दुहूक रचयिताकेँ एके कवि मानि हिनका विष्णुसिंह (1739-43)क समकालक कवि मानल अछि। हिनक परिचय प्रसंग

कविशेखरजी ओ रमानाथझाक मान्यता अछि जे निधि पं. जीरखनझाक उपनाम छल। लगनीक प्रख्यात कवि जीरखनझा छलाह, तकर पुष्टि डा. वेदनाथझाक संगमे सुरक्षित पं. खुद्दीझाक पाण्डुलिपिक एकटा पृष्ठसँ सेहो होइत अछि, जाहिमे निधिक तीन गोट लगनी लिखल अछि ओ तकर शीर्षकमे लिखल अछि 'मैथिल पंडित जीरखन (झा) शर्म (निधिकवि) रचित लगनी पंचक"। परन्तु, डा. झा अपन 'गीतकार निधि'(मि. मि. 12 जून 1966)मे जीरखनझाकेँ कोइलखवासी यजुयारे भड़गाममूलक शाण्डिल्य-गोत्रीय पं. तोताझाक पौत्र वंशीधरझाक बालक मानल अछि, गतशताब्दीक उत्तरार्द्धक कवि। यदि इएह जीरखनझा लगनीक रचयिता छलाह तँ निश्चये मानगीतक रचयिता कोनो आन प्राचीन कवि छलाह। डा. रामदेवझाक मन्तव्य अछि जे 'निधि' नन्दीपतिक सुप्रसिद्ध उपनाम 'कलानिधि'क संक्षेप रुप थिक। डा. वेदनाथझाक अनुसार मानगीतक रचयिता छलाह निधि उपाध्याय, उजानगामक श्रोत्रिय, काश्यपगोत्रीय भण्डाररिहौलमूलक, पं. परमानन्दझाक प्रपौत्र, हिमकरझाक बालक एवं पराशरगोत्रीय नरओनेमूल वीरझाक दौहित्र, विष्णुसिंहक समकालिक। निधि उपाध्याय छठम पीढ़ीक वंशज उजानगाममे बसैत छथि। डा. वेदनाथझाक मन्तव्य विचारणीय अछि।

लगनी ओ मानगीतक किछु पंक्ति उद्धृत कएल जाइत अछि, जाहिसँ सुकवि निधिक उत्तम कवित्व-प्रतिभाक वैशिष्ट्य स्वतः स्पष्ट भए जाइत अछि। स्वाभाविक भावक सरसता तथा भाषाक लालित्य, माधुर्य ओ प्रौढ़ता दुनू रचनामे उपर्युपरि अछि:-

लगनी-

अमल कमल दल सरस नयनमा,
चातक शुक पिक मधुर बयनमा,
नहि कुचभार सम्भारए बेरि-बेरि लचकए रे की।।

मानगीत-

सामर चिकुर कपोल सोहाओन अधर चिबुक अभिराम।
जनि मनमथ निज कर कुच कुन्दन कनक कमल अनुपाम।।
कोकिल विकल वचन तुअ सुनि-सुनि गति पर विकल मतंग।
विकसित वदन रदन अनुपामिअ जनि शशि दामिनि संग।।

26. **साहेबरामदास** - मैथिली साहित्यक सन्त कविमे साहेबरामदासक नाम अग्रगण्य अछि। कवीश्वर चन्दाझा हिनक पदावलीक संकलन कएने छथि, जाहि मध्य हिनक परिचयक उल्लेख अछि -

शिव लोचन मुख शिव मन जखन, साहेबरामदास. तिथि तखन।
प्रबल नरेन्द्रसिंह मिथिलेश शासित छल ई मिथिला देश।।

अर्थात् 1153 साल (1746 ई.) मध्य म. नरेन्द्रसिंहक राज्यकालमे ई रहथि। हिनक परिचय ओहिमे कवीश्वर देने छथि।

साहेबरामदास कुसुमौल ग्रामक एक मैथिल ब्राह्मण छलाह। अपन प्राणप्रिय पुत्र प्रीतमक देहावसानसँ हिनका बड़ विषाद भेलैन्हि ओ परिवारकेँ छोड़ि जगन्नाथपुरी आदि विभिन्न तीर्थक पर्यटन कएल। पर्यटनसँ घुरबाक पश्चात् ओ केओटीक निवासी योगिराज बलिरामदामसँ संन्यासक दीक्षा लए लेलैन्ह। एकर प्रमाण ओ **'गुरु बलिराम चरण धए माथहिं'** लिखि स्वयं देने छथि। पश्चात् म. नरेन्द्रसिंहक स्त्री म. पद्मावती पचाढ़ी मौजा (प्र. पिण्डारुछ) धर्मार्थ हिनका दान दए देल, जतए ई कुटी बनाए रहए लगलाह। पाछाँ ओएह कुटी पचाढ़ी स्थानक नामे प्रसिद्ध भेल।

ओ अलौकिक सिद्ध-पुरुषक रुपमे ख्यात छथि आओर एहि प्रसंग कतेक किंवदन्तीक प्रचार अछि, यथा, भीतकेँ हाँकब, जहलमे रहितहुँ नित्य गंगास्नान आदि करब। एहिसँ हिनका प्रति लोक कतेक श्रद्धावान छल, से सिद्ध होइत अछि।

साहेबराम वैष्णव भक्त पहिने छथि, कवि पाछाँ। पदक रचना हिनक साधन छल, साध्य तँ छल विष्णुक भजनकीर्तन करब। ओ भक्तिमार्गी छलाह, कर्म वा ज्ञानमार्गी नहिं। तँ भक्तिमार्गक सिद्धान्तक अनुरुप ओ भजन-कीर्तनक हेतु रचना कएल। भक्तिसाहित्यक आचार्यलोकनि रस तेरहटा मानैत छथि-साहित्यशास्त्रक नओ रसक अतिरिक्त दास्य, सख्य, वात्सल्य ओ मधुर। किन्तु रुपगोस्वामी भक्तिक पाँच रसकेँ प्रधान मानैत छथि-शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य ओ मधुर रस जकर वैष्णवसम्प्रदायमे विशेष महत्व छैक। महाप्रभु चैतन्य जाहि वैष्णव-भक्तिक आन्दोलन नवद्वीपमे आरम्भ कएलैन्हि ओ जे आसाम, बंगाल, उड़ीसा आदि भारतक समग्र पूर्वीय अंचलमे पसरि गेल, तकर प्रधान रस मधुर सहए छलैक। गोविन्ददास एहि मधुर-रसक पोषण कएने छलाह। साहेबरामदासहुक पदावलीमे अधिकांश मधुर-रसहिक रचना अछि, तत्पश्चात् शान्त, दास्य ओ वात्सल्यरसक। सख्यरसक रचना विरल अछि। मधुररसक रचना मध्य भनितामे ओ अपन भक्तिगत मनोभाव व्यक्त कए देने छथि: यथा, **'निर्गुन सगुन पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब करइछ ध्यान। धैरज धरिअ मिलत तोर कन्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त।** आदि।

साहेबराम अपन बनाओल पद गाबि भजन-कीर्तन कएल करथि, तँ हुनक कविताक चमत्कार गओले उत्तर बुझल जा सकैछ। मिथिलाक स्वतन्त्र संगीत-प्रणाली सुदीर्घ कालसँ एतए चलैत आबि रहल अछि। ओ अपन रचनामे ओहि प्रणालीकेँ जीवित रखने छथि। अतः प्रत्येक पदक राग निर्दिष्ट अछि। साहेबरामदास भरि वर्ष कृष्ण ओ रामचन्द्रक जतेक पर्व होइत अछि, यथा, रामनवमी, कृष्णाष्टमी प्रभृति,

ताहि-ताहि पर्वक अवसरक उपयुक्त पदरचना कए गाओल करथि। रामनवमीमे रामजन्मविषयक, कृष्णाष्टमीमे कृष्णजन्म-विषयक, विवाहपंचमीक हेतु रामविवाहमूलक तथा भरि वर्षक ऋतुगीत सेहो रचथि, तहिना अहोरात्रक भिन्न-भिन्न समयोपयुक्त यथा, प्राती, सारंग, ललित, बिहाग इत्यादि सेहो। एही कारणे हिनक रचनामे भक्तिभावक विविध स्वरूपक दर्शन होइत अछि। किछु पंक्ति उद्धृत कएल जाइत अछि :-

विरहिणी ईजोरनक मनोभावक चित्रण:-

1. कमल नयन मनमोहन रे कहि गेल अनेके
कतेक दिवस भर राखब रे हुनि वचनक टेके
के पतिया लए जायत रे जहं बस नन्दलाल
लोचन हमर सतओलनि रे छतिया दए शाल

2. विरह उठय मुरली धुनि सुनि-सुनि चित मोर चंचल डोल।
कंठ सुखाय, दरद हो छतिया, मुखहु न आबए बोल।।

हनुमानक फागु:-

प्रबल अनिल कपि कौतुक साजल लंका कएल प्रयान
कनक अटारी कए असवारी छाड़थि अगनिक वान
जरए लंक कपि खेलए फागुआ, उड़ए गगन अंगार
धूआँ बाढ़ि अकासहि लागल, दिवसहि भेल अन्धार

साहित्यिक दृष्टिएँ हिनक रास विशेष विवेचनक विषय थिक। हिनक रचिता एकटा महादेवक गीत सेहो अछि -

पुछइत फिरए गौरा वटिया हे राम।
कहु हे माइ, जाइत देखल मोर भङि.आ हे राम।।
हाथ भसम केर गोला हे राम
बड़द रे चढ़ि कोन नगर गेल भोला हे राम।।

हिनक महादेवक गीतक मौलिकता स्पष्ट अछि। मुदा हिनक महादेव-गीतक महत्व दोसरहु दृष्टिएँ विचारणीय अछि। वैष्णप्रसम्प्रदायमे संन्यास लैतहुँ हुनकामे धार्मिक संकीर्णता नहि छलैन्हि। भारतक अन्य भागमे साम्प्रदायिक संकीर्णता एतेक छल जे एक सम्प्रदाय दोसर सम्प्रदायकेँ देखए नहि चाहैत छल। ई गीत सिद्ध करैत अछि जे,

एही दृष्टिएँ ओ मिथिलाक धार्मिक उदारताक पोषक छलाह।

हुनका अपन मिथिलासँ अनन्य प्रेम छलैन्हि। सन्यास लए ओ परिवारकेँ छोड़ि देल, मुदा मिथिलाकेँ ओ नहि बिसरि सकलाह, अपन मातृभूमिक मोह-पाशकेँ ओ तोड़ि नहि सकलाह। एक पदमे ओ लिखैत छथि 'मिथिला नगरी तोर दान बिनु साहेब होइछ बेहाल' तथा दोसर पदमे 'साहेब करुणा करए शीत्र धुनि मिथिला होइछ अन्धेरी।'

साहेबरामक भाषा सेहो भक्तिभावनाक सरलता ओ सहजताक समान सरल ओ सहज छैन्हि। गोविन्ददास सेहो वैष्णवभजनक रचना कएने छथि, किन्तु हुनक रचना सर्वप्रथम आकृष्ट करैत अछि पाण्डित्यपूर्ण शब्दविन्यासक आडम्बरक कारणे, भाव ओ ध्वनि सेहो कठिन ओ दुरुह सूक्ष्मता लेने, जे भक्तिभावमे तन्मय नहि होअए दैछ। मुदा साहेबरामदासक पद सुनितहिँ हृदय मोहित भए जाइत अछि। भक्तिभावनाक मसृण निष्कपट गहनतामे भाषा अवश्य कतहु-कतहु "सधुक्कड़ी" सन लगैत अछि, जाहि मध्य व्रजभाषाक सेहो यत्किंचित् प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। मुदा प्रत्येक पदमे स्वर ओभावनाकसम्मिलित संगीत अद्‌भुत आकर्षक अछि।

27. वेणीदत्त - ई करमहेबेहट कुलक श्रोत्रिय ब्राह्मण म. माधवसिंहक माम छलाह। हाटीक पं. कुंजनाथझाक वृद्धप्रपितामह ई 'रसकौस्तुभ' एवं 'अलंकारमंजरी' नामक संस्कृत ग्रन्थक निर्माण कएल।

हिनक मैथिली रचना श्रृंगाररसक उपलब्ध अछि, जाहि मध्य सरलता प्रधान गुण अछि। द्रष्टव्य थिक सद्यःसमागत नायकसँ खण्डितानायिकाक उक्तिः-

कतय गमओलहुँ राति आँखि कोना रंगलहुँ रे
काजर देलहुँ भौंहें सिन्दुर कोवा अनलहुँ रे

तथा सम्भोगश्रृंगारक वर्णन-

बलाहिँ वसन पहु मोचल किछु नहि सोचल रे
मदन महीपति सोचल, जत मन रोचल रे

28. करणश्याम - करणश्याम अपन एक पदमे लिखने छथि-'रस बुझ सब गुन आगर सजनि गे छत्रसिंह मिथिलेश'। म. छत्रसिंहक राज्य-काल 1808 सँ 1839 धरि छल। मुदा एकटा श्यामकवि म. रुद्रसिंहक समय (1839-1850) मध्य

'दोहावली' नामक हिन्दी कविताक रचना कएल। यदि दुनू कवि एके व्यक्ति छथि तँ करणश्याम निस्सन्देह उन्नैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धक कवि सिद्ध होइत छथि। एहि प्रकार ई आधुनिक युगक प्रवेशद्वार पर अधिष्ठित छथि।

करणश्यामक महेशवानी प्रसिद्ध अछि, जाहि मध्य ओ महादेवपार्वतीक विवाहक विविध पक्षक बड़ रोचक वर्णन कएने छथि तथा ओहि मध्य मिथिलाक वैवाहिक व्यवहारक आरोप कएने छथि। उदाहरणार्थ घसकट्टीक वर्णनः-

हरिअर तृण चुनि काटल सजनी गे बाढ़ल दुहु दिसि भार।
रूसलि गौरि हरि बैंसल सजनी गे, कौतुक कएल विचार।।

हिनक सोहर ओ रास सेहो सुन्दर भेल अछि। रासवर्णनक निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिकः-

कोकिल मोर शोर कर दादुर, झननननझिंगुर शोर।
बाजत दृंग मृदंग पखाउज, भेरि दंदुभी जोर।।
धीरहि मलय पवन बह कानन मुरली उठय अनोर
ब्रजवनिता विलसत वनवारी चन्द्रवदनि लखि भोर।।

उपर्युक्त पंक्तिसँ स्पष्ट अछि जे हिनक रचना अनलंकृत अछि। मुदा छन्दक प्रवाह, भाषाक सरलता ओ भावक सहजता मनकेँ मुग्ध कए लैत अछि।

29. आदिनाथ - हिनक नाम छल दामोरदरझा, मुदा ओ आदिनाथक नामसँ प्रसिद्ध छलाह। म. माधवसिंहक दौहित्र, मनोहरझाक बालक ओ पं. गौरीनाथझा (ज. 1885)क पिता ई महरैलमे रहैत छलाह। तेँ हिनक समय उन्नैसम शताब्दी पूर्वार्द्धसँ लए उत्तरार्द्धक अन्त धरि मानल जा सकैत अछि। प्रो. रमानाथझा हिनका रैयामवासी नरोनए मानैत छथि तथा समय 1850 सँ 1900 धरि। हिनक 8टा पदक संकलन 'मैथिल-भक्ति-प्रकाश'मे उपलब्ध अछि। ई आठोटा पद शक्तिसम्बन्धी अछि, जाहि मध्य हिनक आत्मसमर्पण-मूलक भावना विशेष द्रष्टव्य थिक। उदाहरणार्थ :-

हम अति विकल विषयरस मातल भगवति तोहर भरोशे।
अशरण शरण हरण दुख दारिद तुअ पद पंकज कोशे।। आदि

30. लक्ष्मीनाथगोसाञि - ई उत्तर भागलपुरजिलाक सुखपुरपरसरमा ग्रामक एक कर्मनिष्ठ ब्राह्मण-परिवारमे जन्म लेने छलाह। हिनक देहान्त 85 वर्षक आयुमे 5

दिसम्बर, 1872 ई. मे भेल। अतः हिनक जन्म 1787 ई. मे भेल रहल होएत। हिनक पिताक नाम छल बच्चाझा। बाल्यावस्थहिसँ ओ धार्मिक प्रवृत्तिक छलाह। तेँ बहुत शीघ्र वेदान्तमे पारंगत भए गेलाह। हिनकामे सांसारिक व्यवहारसँ स्वाभाविक विरक्ति-भाव देखि हिनक विवाह दरभंगाजिलाक कहुआगामक सोखदत्तझाक कन्यासँ शीघ्र कराओल गेल। मुदा पारिवारिक जीवन हिनका बान्हि नहि सकल। विवाहक पश्चात् ओ सिंहेश्वरनाथक यात्रा कएल। पाछाँ दूर-दूर धरि तीर्थाटन कएल, मुख्यतः बेतियासँ काठमांडू धरि। तराइक जंगलमे लंबना नामक स्वामीसँ हिनका भेँट भेलैन्हि, जनिकासँ ओ दीक्षा लए लेल ओ नओ वर्ष ओहि ठाम तपस्या कएल। पाछाँ ईश्वरभक्तिक प्रचारार्थ संसारमे पुनर्गमन कएल।

हिनक हिन्दी ओ मैथिली भाषाक रचना उपलब्ध अछि। अपन पदक भनितामे ओ लक्ष्मीपति उपाधिक प्रयोग कएने छथि। मुदा ओ प्राचीन धर्मशास्त्री 'श्राद्धरत्न'क लेखक अथवा 'विद्याकरसहस्रकम्'मे उद्धृत लक्ष्मीपति नहि छलाह।

हिनको पद मैथिल परम्पराक गीतशैलीक अनुसरण करैत अछि। विषय सेहो तदनुसारे-चौमासा, तिरहुति, प्राती, विष्णुपद ओ महेशवानी अछि। प्रातीने प्रमुख रुपसँ गंगाक वन्दना अछि। लक्ष्मीनाथी विष्णुपदक संज्ञासँ जे प्रसिद्ध अछि से निस्सन्देह हिनके रचना थिक, श्रृंगाररसक रचना आन कविक भए सकैछ। साहेबरामदास जकाँ इहो धार्मिक उदारताक परिचय देल।

रचनात्मक प्रतिभाक दृष्टिएँ कविक रुपमे लक्ष्मीनाथ साहेबरामसँ उत्कृष्ट कवि प्रतीत होइत छथि, किन्तु सिद्ध-भक्तक रुपमे ओ ओतेक ख्यात नहि छथि। हिनक भाषा लोकभाषासँ अधिक निकट अछि तथा ओहिमे साहित्यिक भाषाक परिनिष्ठताक अभाव प्रतीत होइत अछि। उदाहरणार्थ :-

यमुनामे पड़ल कन्हाई

गौआ चराओल गए गोप माली वोनसे रहले भुलाई
भुष पीयास लगै अति दारून जल भोजन अकुलाई
x x x x
जागे नाग धाए मुख वाऐ गरूड़ देखी सिर नाई
लक्ष्मीपति भाषा के नाथो सफल देव सुख पाई

31. चन्दाझा - आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक कवीश्वर चन्दाझा अधिकांश पद मैथिलीक प्राचीन काव्य-रीतिक लिखने छथि-अधिकांश महेशवानी, अन्य

देवीदेवताक प्रसंगहुँ, मुदा शृंगाररसक अत्यल्प।

हिनक जन्म 20 जनवरी, 1831 ई.मे भेल पिण्डारुछ गाममे। हिनक पिता छलथिन्ह म. म. भोला झा। हिनकामे कवित्व-शक्ति बाल्यावस्थहिसँ विद्यमान छल। शिक्षा-लाभ करबाक पश्चात् ई नरहनि राजाक दरबारमे दसपन्द्रह वर्ष धरि रहलाह, पाछाँ म. लक्ष्मीश्वर सिंह हिनक यश सुनि हिन्का अपन दरबारक शोभा बनाओल। एहि दरबारमे ओ प्रत्येक दिन तीन-चारि पद बनाए महाराजकेँ सुनाओल करथि। हिनक रचनाकेँ ओहि दरबारक गबैआसभसँ गबाओल जाइत छल। 'चन्द्रपद्यावली', 'महेशवानी' आदि पदसंग्रहमे रागरागिणीक जे उल्लेख अछि, से तदनुसारे।

हिनक पदावलीमे महेशवानीक आधिक्यक कारण अछि हिनक शिवभक्ति। ई प्रत्यह अपन बनाओल पद गाबि शिवपूजा कएल करथि। हिनक महेशवानीक संग्रह कए डा. अमरनाथझा प्रकाशित करबओने छलाह, जकर मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान अछि।

चन्दाझा बड़ उचित-वक्ता छलाह। तेँ अप्रसन्न भए पिण्डारुछक बबुआनलोकनि हिनका बड़ सतओलथिन्ह। अंततः ओ पिण्डारुछ छोड़ि ज्यौ. भगवान दत्तकेँ संग लए अपन सासुर ठाढ़ीमे जा बसलाह। पिण्डारुछ छोड़बा कालक निम्नलिखित पंक्ति ओहि घटनाक निर्देश करैत अछि :-

अब नहि उचित पिण्डारुछ वास, उपटि चलिय जबदी केर पास।
शाइत बहुरिया ई यश लेल, दुइ पण्डित ठाढ़ीकेँ देल।।
दैयन भैयन भेल रकसिनिया, चानीक कलश सेहो लेल बनिया।
बाबू मिसर गोबरक घोत, तीनू कोसकेँ कैलनि भोत।।

कवीश्वरचन्दाझा 78 वर्षक आयुमे पक्षाघातसँ पीड़ित भए गेल छलाह। ताबत काल धरि म. लक्ष्मीश्वरसिंहक मृत्युक पश्चात् म. रमेश्वरसिंह 9-10 वर्ष धरि राज्य कए चुकल छलाह। महाराज स्वयं दरभंगाटीशन पर जाए हिनका काशीक हेतु विदा कएने छलथिन्ह। एहि प्रकारक आदर मिथिलेशक द्वारा कोनहुँ आन कविकेँ अद्यावधि नहि भेटल छलैन्हि। हिनक मृत्यु 1907 ई.मे भेल। हिनक निम्नलिखित ग्रन्थक चर्चा कएल जाइत अछि :- 1. महेशवानी, 2. गीतसप्तशती, (प्रथम भाग मात्र प्रकाशित), 3. वाताह्वान, 4. चन्द्रपद्यावली, 5. लक्ष्मीश्वरविलास, 6. गोविन्ददासक गीतावलीक संकलन, पाछाँ जे डा. अमरनाथझा द्वारा संकलित सम्पादित भए प्रकाशित भेल, 7. 'साहेबराम-गीतावली', 8. 'मिथिलाभाषा रामायण', 9. 'पुरुषपरीक्षा'क अनुवाद ओ पुरातत्व-विषयक सम्बद्ध टिप्पणी', 10. 'गीत-सुधा'। एकर अतिरिक्त पोथामे

विद्यापतिक पवक संकलन सेहो अछि जे अद्यावधि प्रकाशनमे नहि आएल अछि। हिनक 'अहिल्याचरित' नाटक, 'मूल-ग्रामविचार', 'छन्दोग्रंन्थ', 'ऐतिहासिक वृतान्त' आदिक सेहो नाम सुनैत छी, मुदाएहिमे कोनो भेटल नहि अछि। एहिमे 'मूल-ग्रामविचार'क किछु अंश हुनक पोथामे टिप्पणीक रुपमे प्रायः किछु शेष अछि। कहल जाइत अछि जे हुनक ऐतिहासिक वृत्तान्तक आधारहि पर 'मिथिलातत्व-विमर्श'क रचना भेल छल। उपर्युक्त अनेक पुस्तकक सूचीसँ हिनक कृतित्वक विशालता ओ विविधताक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

हिनक प्राचीन रीतिक पद मुख्यतः 'महेशवानी-संग्रह' ओ 'चन्द्रपद्यावली'मे संकलित अछि। 'गीतसुधा'क विषय तँ मुख्यतः शृंगारिक अछि, मुदा एहिमे प्रयुक्त छन्द परम्परागत प्रणालीक गेयपद नहि थिक। सब प्रकारक रचनामे ओ पाण्डित्यपूर्ण भाषाक प्रयोग नहि कएने छथि। सरलता ओ सहजता हिनक कविताक प्रमुख विशेषता थिक। द्रष्टव्य थिक :-

1. महादेव पुण्य कतय सौं लाउ।
   अड़ड़ा लागल नाव आव शिव, ककरा शरणमे जाउ।। आदि
2. जौं मोर विनति धरब देवि कान।
   तौं मोर एक विपति नहि अनुभव सतत रहत कल्याण।। आदि

मुदा भक्तिविषयक हो वा शृंगारिक, हिनक रचनामे ओहि प्रकारक सरसता ओ माधुर्यक अभाव अछि जे प्राचीन-काव्य-धाराक कविताक प्रमुख विशेषता थिक।

चन्दाझाक अधिकांश रचना भक्तिविषयक अछि, जाहिमे ओ भक्तिक विविध अंगक वर्णन कएने छथि। मुदा ओहिमे ओ देश-जाति-भाषाक तत्कालीन दशाक वर्णन तथा तकर पुनरुत्थानक कामना कएने छथि, जे प्राचीन रीतिक भावधाराक विकासक इतिहासमे अभिनव वस्तु थिक। एहि ठाम आत्म-कल्याणक संग-संग देशकल्याणक भावनाक सामंजस्य नवयुगक काव्यधाराक नवीनता थिक जे हिनका प्राचीनता ओ नवीनताक सन्धिक कवि सिद्ध करैत अछि। भक्तिपदमे एहि समाजगत प्रवृत्तिक अनुसरण चन्दाझाक चरणचिह्न पर परवर्त्ती कविगण सेहो अपन अपन प्राचीन रीतिक कवितामे करैत रहलाह, जाहिमे जीवनझा, यदुवर, छेदीझा, भुवनजी, आरसी प्रसाद सिंह प्रभृति प्रमुख छथि। चन्दाझाक एहि प्रकारक रचनाक किछु पंक्ति नीचाँ दृष्टान्तक हेतु उद्धृत कएल जाइत अछि :-

1. जन पर दया जानकि करु
   अपन नैहर लोक भेल मन्द सकल रक्षा करु
   नव उत्सव धर्म कर्म सौं सभक घरकैं भरु

2. जानकी महारानी दयामय गुण तोर।
भारत दशा एहन बितयित अछि साधु कहाबथि चोर।

वस्तुतः चन्दाझा नवयुगक कवि छथि। तेँ हिनक प्रवृत्ति नवीनता दिसि अधिक अछि, प्राचीनता दिसि कम। शिल्पक दृष्टिएँ ओ अधिकांश प्राचीनताक अनुसरण करैत भनितायुक्त गेयपदक रचना कएल। मुदा ई अनेक अन्य छन्दहुमे रचना कएने छथि।

32. जीवनझा - समस्तीपुरक समीप हरिपुरगामक वासी पं. जीवनझा आधुनिक नाटकक प्रवर्त्तक छथि। ई नवगाँव, पश्चात् काशीमे शिक्षा प्राप्त कएल ओ काशीक महाराज प्रभुनारायणसिंहक दण्डाध्यक्षक पद पर नियुक्त भेलाह। म. म. चित्रधरमिश्र बिना परीक्षह हिनका धौतपरीक्षोतीर्ण कएल। हिनक समय 1856सँ 1920 ई. धरि अछि।

पं. जीवनझाक ख्यातिक मेरुदण्ड छैन्हि मिथिला भाषामे लिखल नाटक, जाहिमे ओ सर्वप्रथम मैथिली गद्यक प्रयोग कएल। हिनक नाटक थिक 'सुन्दर-संयोग' (1904), 'नर्मदासट्टक' (1906) एवं 'सामवती-पुनर्जन्म', जाहिमे ओ स्थान-स्थान पर प्राचीन रीतिक मैथिली पदहुक प्रयोग कएने छथि।

हिनक पद उत्कृष्ट कोटिक अछि-की कल्पनाक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ ओ की कोमल मधुर संगीतात्मक शब्दविन्यासक दृष्टिएँ। ई विशेषता हिनक भक्ति ओ शृंगार दुहू प्रकारक रचनामे सन्निहित अछि। मुदा शृंगारिक रचना हिनक अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल अछि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित किछु पंक्ति :-

1. भक्तिक संकल्प-
हरक चरण हम गहि गहि माइ हे धनदहु सेवब नहि नहि
पर-सम्पति लए डहि डहि माइ हे माथ दुखाएब नहि नाहे
2. पावसमे विरहिणीक उत्कण्ठा-
जलद पटल नभ घुमरल उमड़ल मानस मोर
दामिनि सम तनु पहिरल पिअ अनुराग पटोर
+ + + +
एक तँ राति निबिड़तम दोसर विपिन घनघोर
कहु तरुवर मोर जीवन पहु बिलमल कोन ओर

33. विन्ध्यनाथझा (1867-1912)

34. गणनाथझा (1869-1914)

ई दुनूगोटा म. म. डा. गंगानाथझाक भ्राता मैथिलीक सुकवि छलाह। विन्ध्यनाथझा प्रथम मैथिली बी. ए. पास छलाह। दुहू कविक रचनाक संकलन 'विन्ध्यनाथझा-गणनाथझा-पदावली'क नामे प्रकाशित अछि। विन्ध्यनाथझाक कविता साधारण कोटिक अछि। हिनक 'हर हे देल धिया समुझाय' तथा 'धिया हे रहब सभक प्रिय जाय' समदाउनि पद बड़ प्रसिद्ध अछि।

गणनाथझाक कवित्वशक्ति बड़ उत्कृष्ट कोटिक छल। ओ विविध विषयक मिथिलाक भिन्न-भिन्न व्यवहारोपयोगी पदक रचना कएल। शक्ति-विषयक पद हिनक प्रचुर अछि। एकर अतिरिक्त महेशवानी तथा रामचन्द्रक कोबर ओ रामचन्द्रक द्विरागमन-कालक समदाउनि सेहो उल्लेखनीय अछि। शृंगाररसक हिनक लगनी 'गगन उमड़ि घन बरिसय दमकय दामिनि रे' तथा 'प्रेम मनहिं मन उमड़ नेह घन कत गुन छन छन सजनी' बड़ उत्कृष्ट कोटिक अछि। तहिना निम्नलिखित तिरहुतिमे नवयुवतीक रुप-सौन्दर्यक बड़ सुन्दर वर्णन कएने छथि :-

तुअ नखरुचि परतर नहि पाय, लाज चीत गेल जलद छपाय।
चिकुर निकर लखि जलद पिशंग, लोचन लोल कमल दल भंग।

हिनक भाषा सरस, मधुर ओ पांडित्यपूर्ण अछि, से उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट भए जाइत अछि।

35. सत्यनारायणझा - सत्यनारायणझा सकढ़िबारमूलक उजानवासी ब्राह्मण छलाह। हिनकहि पौत्रीमे राजाबहादुर विश्वेश्वर सिंहक द्वितीय विवाह भेल। हिनक समय 1860 सँ 1940 ई. मध्य पड़ैत अछि। हिनक रचना 'शिवायन' हिन्दीमे रचित अछि। मैथिली पदक संकलन 'भजनामृततरंगिणी' नामसँ प्रकाशित अछि।

महात्माजी बहुदेवोपासक शैव योगी छलाह, तेँ भक्तिक विविध पक्षक पदक रचना कएल। हिनक भक्तिभावमे दार्शनिकताक स्वर विशेष स्फुट अछि। हिनक भक्ति विशुद्ध भक्ति नहि, प्रत्युत ओहिमे कर्म ओ ज्ञानमार्गक उत्कट प्रभाव अछि। अतः अपनाकेँ विशुद्ध भक्तिगत उद्गार धरि सीमित नहि राखि ओ कखनहुँ 'शून्य धरती शून्य वस्ती शून्य सब व्यवहार' लिखि शून्यवादक तँ कखनहुँ 'माटिक पुतरी थिक ई देह' लिखि मनुष्यजीवनक निस्सारताक व्याख्या करैत छथि; कतहु सृष्टिक रहस्यक विवेचन करैत ज्ञानोपदेश दैत छथि-'चलु मन अपन नगरिया रे, सतमहला मन्दिर निकुंजवन पुरत अमिय गगरिया रे',तँ कतहुँ नायकनायिकाक रुपक दए जीवात्मा-परमात्माक

मिलनक चित्र आँकि भावात्मक रहस्यवाद अंकित करैत छथि :-

पहुक भवन लखि चललिह सजनी मध्य राति अभिसार।
द्वरा भवन लगिवाएल सजनी मंद मंद संचार।।
नाभिभवनजन बिसरंल सजनी पहु पद एक अधार
प्रेम भाव तनमय रस सजनी दोसर हर्ष अपार।।

एहि पदमे योगमार्गक प्रतीकक प्रयोग अछि-'पहु' सहस्रारक हेतु, 'मध्य' कुम्भक हेतु, 'द्वर' आज्ञाचक्रक हेतु, नाभिभवनजन' रागद्वेषादिक हेतु।

मिथिलाक प्राचीन गीतरीतिक लगनी, प्राती, तिरहुति आदिक प्रचुर प्रयोग ओ कएने छथि जे 'भजनामृततरंगिणी'मे संकलित पदक शीर्षकमे लिखल अछि। भक्तिभावक पदमे लालित्य प्रधान गुण अछि। एहि प्रकार सत्यनारायण झा साहेबरामदास, लक्ष्मीनाथ गोसात्रि आदि सन्त-कविरु परम्पराक, व्यवसायसँ सन्त नहि होइतहुँ, अन्तिम शृंखला सिद्ध होइत छथि।

मैथिलीक प्राचीन काव्य-परम्परा मध्य कविशेखर भंजनक पश्चात् अगणित कवि छथि। बीसम शताब्दीक पूर्वक कंविगणमे जाहिमे कतेक कवि एहू शताब्दीक उत्तरार्द्धमे जीवित छलाह, बुद्धिलाल, रामेश्वर, केशव, मोदनारायण, हरिनाथ, श्रीपति, महिपाल, चतुर्भुज, मँगनीराम, मनबोध, कुलपति, कृष्णदत्त, कृष्णकवि, जयकृष्ण, बबुजन, फतूरीकवि, कार्णाट, विश्वनाथ, रघुनन्दन, भीमदत्त, जीवनाथ, मोदनाथ, चन्द्रनाथ, दुर्मिल, सुकवि गणक, बाबू दुर्गादत्तसिंह, म. रमेश्वरसिंह, बाबू ललितेश्वर सिंह (सं. 'ललितेश्वर-रंजन'), महाराज कुमार गोपीश्वरसिंह, बाबू एकरदेश्वर सिंह, डा. गंगानाथझा, दीनबन्धु झा आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। उपर्युक्त कविगणमे बाबू दुर्गादत्तसिंह, बाबू गोपीश्वरसिंह, विश्वनाथ झा, म. रमेश्वरसिंह, डा. गंगानाथझाक नाग कवित्वक दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय अछि।

एहि शताब्दीक मध्य क्षेमधारीसिंह, पं. ऋद्धिनाथझा, कविशेखर बदरीनाथझा, श्रीगणेश्वरझा, पं. जीवानन्दठाकुर आदिक नाम प्राचीन-काव्य-धाराक अविकल अनुसरणक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि। यदुनाथझा 'यदुवर', छेदीझा 'मैथिलीमधुप', भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', लक्ष्मीपतिसिंह, आरसीप्रसादसिंह आदिक नाम चन्दाझाक समान प्राचीन काव्य-रीतिमे नवीन प्रवृत्ति व्यक्त करबाक दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय अछि। आधुनिक काव्यशिल्पक वरिष्ठ ओ प्रतिनिधि कविक रुपमे मान्य स्व. ईशनाथझा, प्रो. तन्त्रनाथझा आदि कवि प्राचीन-काव्य रीतिक प्रयोग करबाकाल ओहिमे नवीन प्रवृत्ति व्यक्त नहि कए, परम्पराक अविकल अनुसरण करैत छथि। कवयित्रीलोकनि मध्य

महारानी राजलक्ष्मी, श्रीमती नन्दनीदेवी, श्रीमती मेधेश्वरीदेवी प्रभृतिक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि, जनिक रचनामे काव्यगत उत्कर्ष तँ नहि अछि, मुदा व्यवहार-गीतक दृष्टिएँ जनिक रचना नीक अछि।

2. मैथिलेतर क्षेत्रमे विकसित प्राचीन-काव्य-धारा

एहि श्रेणीमे ओहि प्रकारक अमैथिल कविगण चर्चा होइत अछि ज विद्यापति-सम्प्रदायक काव्यरीतिक अनुसरण करैत मैथिली भाषामे काव्य रचना कएल। तेँ जाहि क्षेत्रमे एहन रचना भेल तत्तत् भाषाक न्यूनाधिक प्रभाव ओहि मध्य अछि। एहि प्रकारक कविता बंगाल, आसाम ओ उड़ीसामे वैष्णवधर्मक साम्प्रदायिक व्यवहारार्थ ब्रजबुलीसाहित्यक रुपमे रचित भेल। मुदा नेपालमे से सम्प्रदायविशेष द्वारा रचित नहि भेल, भिथिलामे जेना भेल तहिना ओहू ठाम शुद्ध साहित्यिक अभिव्यक्तिक रुपमे भेल।

बंगालमे

बंगालमे विकसित ब्रजबुली-साहित्यक इतिहास डा. सुकुमारसेन अपन *History of Brajbuli literature* नामक ग्रन्थमे लिखने छथि, जाहि मध्य वर्णित सभ कवि विद्यापतिक अनुसरण कए अपना जनितेँ मैथिली भाषामे सएह काव्यरचना कएल। मुदा ओहिमे घर्चित सभटा कविता मैथिलीक नहि थिक। डा. सुभद्रझाक अनुसार ओहि मध्य (क) किछु पद विशुद्ध मैथिलीक, (ख) किछु बंगला-मिश्रित मैथिलीक एवं (ग) किछु पद ब्रजभाषा-मिश्रित बंगलाक थिक। जाहि पदसंग्रहसबमे एहि प्रकारक पद संकलित अछि ताहिमे प्रधान अछि 'क्षणदागीत-चिन्तामणि', 'पदामृतसमुद्र' 'पदकल्पतरु', 'संकीर्तनामृत', 'पदरससार', 'पदरत्नाकर' आदि।

एहि श्रेणीक कविगणमे ज्ञानदास (ज. 1530)क सर्वप्रथम उल्लेख कएल जाइत अछि। ई 105 गोट पदक रचना कएल आओर सेहो उत्कृष्ट कोटिक। प्रसादपूर्ण वाक्य-विन्यास हिनक पदक प्रमुख गुण थिक। वैष्णवधर्मक साम्प्रदायिक सिद्धान्तकेँ ध्यानमे रखैत ओ राधाक परकीयाभावक प्रेमक वर्णन सजीव रीतिएँ कएने छथि। उदाहरणार्थ सखीक उक्ति राधासँ :-

लहु लहु मुचकि हासि चलि आओल पुन पुन हेरसि फेरि।
रतिपति सत्रो मिलन रंगभूमि ऐच्छन कएल पुछेरि।।
हरि हे बुझलौं ए सक बात।
एत दिन तोहुँक मनोरथ पुरल भेटल कानुक साथ।।

गोविन्ददास ब्रजबुलीसाहित्यमे कमसँ कम तीनटा भए चुकल छथि, मैथिल गोविन्ददासकेँ छोड़ि। ई सब थिकाह (1) गोविन्ददासकविराज (1535-1613), (2) गोविन्ददास चक्रवर्ती (गोविन्ददासकविराजक समसामयिक) एवं (3) गोविन्ददास आचार्य (1533)। पहिमे गोविन्ददासकविराज-रचित जे पद कहल जाइत छैक, से वस्तुतः मैथिल गोविन्ददासक पद थिक।

बलरामदास सेहो उल्लेखनीय कवि छथि, जनिक 80 गोट पद उपलब्ध अछि। हिनक पद ज्ञानदासक पदक तुलनामे निस्सन्देह निम्नस्तरीय अछि, किन्तु संवेदनाक प्रगाढ़ता एवं प्रेमपीड़ाक गम्भीरताक दृष्टिएँ हिनक रचना अवश्य अन्य कविक अपेक्षा उत्तम अछि। हिनक रचनाक मुख्य वैशिष्ट्य थिक वात्सल्यरसक चित्रण। उदाहरणार्थ कृष्णक सखाक प्रति यशोदाक उक्ति :-

श्रीदाम सुदाम सुन ओ रे, बलराम मिनती करिय तो समीरे
वन कत अति दूरे नव तृण कुशांकुर गोपाल, लैये न जाहि दूरे
+ + + +
बलरामदासेर वाणी ओ ये नन्दरानी मने किछु ना भाविह भय
चरणेर बाधा लैया दिव मोरा जोगैया तोमार आगे कहिल निश्चय

हिनक भाषामे बंगला भाषाक प्रभाव कोन रुपक अछि, से उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि।

नरोत्तमदास (1583) सेहो एहि श्रेणीक प्रमुख कवि छथि। हिनक राधाकृष्णलीला-सम्बन्धी पद साधारण कोटिक अछि; परंच हिनक प्रार्थना सर्वसम्मतिसँ सर्वश्रेष्ठ कृतिक रुपमे मान्य अछि। हिनक रचनामे ने तँ भाषाशैलीक प्रांजलता अछि आ ने कल्पनाक सूक्ष्मते अछि, किन्तु अकृत्रिम आत्माभिव्यक्तिपूर्ण सरलता एवं प्रेमी-हृदयक उत्कण्ठापूर्ण वेदनाक एहन सुन्दर समन्वय अछि जे पाठकक मानकेँ सहसा आर्द्र कए दैत अछि। उदाहरणार्थ

हे गोविन्द गोपीनाथ कृपा करि राख निज पथे
काम क्रोध छओ जन लैया फिरे
नाना स्थाने विषय भुंजाय नाना मते
हैया मायार दास करि नाना अभिलाष
तोमार स्मरण गेल दूरे। आदि

गोविन्ददासक शैलीमे लिखनिहार कविगणमे कविराज कविशेखरक स्थान सबसँ महत्वपूर्ण अछि। द्रष्टव्य थिक :-

1. काजर भाति हर रचनि बिशाल, ताहु पर अभिसारि करु ब्रजबाल।
घर सञो निकसल चिकन चोर, निरशब्द पदगति चललिह थोर।।
2. उन्मत चित अति आरति बिथार, गुरुआ नितम्ब नव यौवन भार।
3. कुन्दय कनक कमल कचि निन्दित गुरुयनि तीन बिहारी।
कुंचित कमठ कलित कुसुमाकुल कुन्तकामिनि मनोहारी।।

तेसर दृष्टान्तमे गोविन्ददासक केहन अविकल अनुकरण अछि, से ध्यान देबाक थिक।

मैथिली भाषामे एहि प्रकारक पदरचना करबाक परम्परा चलैत रहल। उन्नैसम शताब्दी मध्य जनमेजयमित्र, बंकिमचन्द्र चटर्जी, राजकृष्ण राय प्रभृति एही श्रेणीक मैथिली पदक रचना कएल। तरुणावस्थासँ विद्यापतिक कविता रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कल्पनाकेँ बड़ उत्तेजित कएने छल। हुनकहि शब्दमे - *"His (Vidyapati's) poems and songs were one of the earliest delight that stirred my youthful imagination and I, even had the privilege of setting one of them to music"* (विद्यापतिकाव्यालोकसँ उद्धृत) ओ भानुसिंहक प्रक्षिप्त नामसँ 21 टा मैथिली पदक रचना 1921 ई.मे कएने छलाह, जकर उल्लेख ओ अपन *'My Reminiscence'*मे सेहो कएने छथि। हुनक रचनाक किछु पंक्ति उदाहरणार्थ उद्धृत कएल जाइत अछि :-

गहन कुसुम कुंज माझे मृदुल मधुर वंशी बाजे
बिसरि त्रास लोकलाजे सजनि आओ आओ लो
x x x
आओ आओ सजनिवृन्द हेरब सखि श्री गोविन्द
श्याम ओ पदारविन्दु भानुसिंह वन्दिछे

यद्यपि एहन रचना वैष्णव-सम्प्रदायक साहित्यिक रुपमे रचित होइत आबि रहल छल, मुदा बंकिमचन्द्र ओ रवीन्द्रनाथ ठाकुर एकर रचना उच्च-कोटिक स्थायी साहित्यक परम्पराक अनुसरणमे कएल।

आसाममे

आसामहु मध्य मैथिली भाषाक प्रवेश साम्प्रदायिक प्रचारार्थ भेल। शंकरदेव (1449-1568) अपन यात्राक क्रममे अनुभव कएल जे वैष्णवधर्मक प्रचारमे लोक-भाषा बड़ उपयोगी सिद्ध भए सकैत अछि। बंगाल तकर उदाहरण छल। तेँ ओ

आसामहु मध्य मैथिली भाषाक आश्रय लेल। दोसर, मिथिला ओ कामरुपक निवासी मध्य सांस्कृतिक ओ सामाजिक सम्पर्क परम्परासँ छल। स्वयं शंकरदेव 15म शताब्दीमे मिथिलाक यात्रा कएने छलाह। ओ मैथिली भाषाक माधुर्यसँ मुग्ध भए ओकरा ओ अपन साहित्यिक अभिव्यक्तिक माध्यम बनाओल जे पाछाँ असमिया भाषा ओ साहित्यक विकासक आधारशिला सिद्ध भेल।

विद्यापतिक प्रभावमे रचित आसामी व्रजबुली साहित्यक दुइ मुख्य भेद अछि:- (क)'वरगीत' एवं (ख)'अंकिया-नाट'गीत। एहु गीतसभक मैथिली गीत जकाँ विशेषता अछि :- 1. रागरागिणीक आग्रहानुकूल पदक रचना। अतः पदक शीर्षकमे रागक उल्लेख, 2. भनिताक प्रयोग, 3. ध्रुपद, 4. कृष्णक कथाक आधार प्रभृति।

वरगीतक मैथिली भाषा 'अंकियानाट'मे प्रयुक्त गीतक अपेक्षा अधिक विकृत अछि। 'अंकियानाट'क प्रमुख रचयिता छथि शंकरदेव (1449-1568), माधवदेव (1489) एवं गोपालदेव (1547-1611)। नीचाँ तीनू कविक एक-एकटा पद उद्धृत कएल जाइत अछि, जकर आधार पर प्रतिभा, काव्यरीति ओ भाषाप्रयोगक विशेषताक मूल्यांकन कएल जाए सकैत अछि :-

1. शंकरदेवः 'रुक्मिणी-परिणय' नाटसँ

रागसिन्धुरा

ध्रु. - अये जगतगुरु कयो परवेश, जितिये काम कोटि नटवर वेश।
प. - श्याम तनु पीत अम्बर लासा, वदन छन्द रुचि ईषत् हासा।
नयन पंकज भुज लम्बित जानु, कण्ठे कौस्तुभ नव शोभित भानु।
हार मुकुट मणि कुण्डल दोले, चरण पंकज मनि मंजीर बोले।
शशधर कोटि कान्ति परकाशा, शंकर कह उहि केशवदासा।

2. माधवदेवः 'रसझुमुरा'सँ

रागकल्याण खरमाल

ध्रु. - व्रजमंगलरस रासे रसिक गुरु करत अनंग रस केलि।
राधा पूरत मन साधु अधर मधु पाने मोहित मति भेलि।

प.- घनघन भुज दोहों भेलि आलिंगन चुम्बत बयन मिलाय।
हरि कहु कण्ठे आलिंगन रहु राधे नयने बयन धियाय।
परमानन्द अनंग रस सागर तविये भजि रहु माय।
हरिको परशरासे विघुरि रहत तनु माधव दीन गुण गाय।

3. गोपालदेवः 'उद्धवसंवाद'सँ

राग सुहाई

ध्रु. - पुछय नन्दे आनन्दे आति।
प्रवेशिया मधुपुर मारि वैरी कंसासुर खे कि आछन्त पालि ज्ञाति।।
व. - ए कुंज निकुंजवन गिरिवर गोवर्द्धन कालिन्दी पुलिन गोप गरु।
मोहार पालन धन बुलि प्रभुनारायण स्मरा कि भगत कल्पतरु।।
शुनह उधव प्राण आर कि अन्धार थान वारेक मिलव प्राण हरि।
देखि दूर हैवे दुख सुन्दर कमलमुख आनन्दे देखब नेत्र-भरि।।

भावक ऐक्य एवं अनुभूतिक तन्मयता, संगीताश्रित माधुर्य, सरस कोमल ललित शब्दविन्यास आदि सब तरहेँ उपर्युक्त उद्धरण प्राचीन मैथिली काव्यधाराक उत्कृष्ट दृष्टान्त थिक। भाषाक दृष्टिएँ बंगालक व्रजबुलीक भाषाक अपेक्षा मैथिलीसँ कतबा सन्निकट अछि, सेहो स्पष्ट अछि।

उड़ीसामे

उड़ीसामे मैथिलीक प्रभावक दर्शन सर्वप्रथम 16म शताब्दीमे होइत अछि। 'पूजाप्रदीप' एवं 'काव्यप्रदीप'क रचनाकार म. म. गोविन्द ठाकुर उड़ीसा गेल छलाह। किन्तु उड़ीसामे मैथिलीक मुख्य प्रभावक माध्यम भेल बंगालक व्रजबुली-साहित्य।

उड़ीसामे सर्वप्रथम मैथिली भाषामे काव्यरचना प्रचलित भेल सुप्रसिद्ध कवि ओ नाटककार रामानन्दराय द्वारा, उड़ीसाक राजा प्रतापरुद्रदेवक समय (1504-32)मे। मैथिली भाषामे रचना करबाक प्रेरणा हुनका भेटलन्हि गोदावरीक तीर पर विद्यानगर मध्य 1512 ई.मे महाप्रभुसँ हुनक मिलनक पश्चात्। हुनक मैथिली रचनाक किछु पंक्ति नीचाँ उद्धृत कएल जाइत अछि :-

न खोजलौँ दोति न खोजलौँ आन, दुहुँक मिलाने मध्यत पांचवाण।
अवसो विरागे तुहुँ भेलि दोति, सुपुरुष पेमक ऐछन रीति।
वर्धन रुद्रनराधिप मान, रामानन्द राय यति कवि भान।

श्री प्रियरंजन सेन द्वारा प्रकाशित 'रामानन्दरायक भनितायुक्त पदावली'मे शताधिक कृष्णविषयक उत्तम मैथिली पद संकलित अछि। हिनक मैथिलीमे ब्रजभाषा, उड़िया ओ बंगलाक फेँट अछि। द्रष्टव्य थिक :-

सभ सखागणे कृष्ण बोलए वचन, स्नाहान बढ़ाआ मोरे मिलब अखन।
सुरेशमन्दिरे विजे हरि हलधर, गोपाल चलेन घरे स्नाहाने तत्पर।।

हिनक मैथिली पदक प्रमुख वैशिष्ट्य थिक कृष्णक दैनिक कार्यक्रमक विस्तृत विवरण समयानुक्रमे प्रस्तुत करब।

उड़ीसाक अन्य 16म शताब्दीक मैथिली कवि मध्य म. प्रतापरुद्रदेवक महापात्र चम्पतिराय एवं स्वयं अपनहुँ म. प्रतापरुद्रदेवक स्थान अग्रगण्य अछि। माधवीदासी, कान्हूदास एवं मुरारी निम्नस्तरीय कवि छथि, जनिक रचना 'पदकल्पतरु' एवं 'क्षणदाचिन्तामणि'मे संकलित अछि।

16म शताब्दीक मैथिली कवि मध्य दामोदर दास, चन्दा कवि ओ यदुपति दासक नाम प्रसिद्ध अछि। एहिमे प्रथम दुइ कवि पुरीक नरपति रामचन्द्रदेव (प्रथम)क दरबारमे भेलाह ओ तेसर उड़ीसाक शासक नरसिंहदेवक दरबारमे। ई कविगण सेहो विद्यापतिक चरणचिह्नक अनुसरण कएल।

वस्तुतः अद्यावधि उड़ीसा मध्य लिखित मैथिली कविताक अनुसंधान नहि भेल अछि। कतेक उत्कृष्ट कवि होएताह, जनिक नाम हमरालोकनि नहि जनैत छी।

नेपालमे

नेपाल ओ मिथिला मध्य कोन रूपक सम्बन्ध म. हरिसिंहदेवक समयमे स्थापित भेल एवं ओहि सम्बन्धक परम्परा कोन रूपेँ चलैत रहल, तकर यत्किंचित् विवेचन कएल जा चुकल अछि। वस्तुतः विद्यापतिक पश्चात् मैथिली काव्य-रचनाक मुख्य धारा मिथिलामे नहि, नेपालमे प्रवाहित भेल। आओर, से विद्यापतिक प्रभावसँ प्रवाहित भेल हो, से नहि। म. शिवसिंहक 1406 ई. मे पलायनक पश्चात् मिथिलाक राजनीतिक ओ सांस्कृतिक सक्रियता कुण्ठित ओ अवरुद्ध भए गेल छल। राजनीतिक विशृंखलताक कारणे प्रश्रय ओ प्रोत्साहन अभावमे मिथिला मध्य पण्डितलोकनि मातृभाषा-सेवासँ विरत भए गेल छलाह ओ ई स्थिति खण्डबलाराज्यकुलक स्थापनाक पश्चातहु कतेक दिन धरि रहल। ओम्हर नेपालमे तेहन स्थिति नहि छल, संगहिँ नेपालक राजालोकनिक संग मिथिलाक सम्पर्क कहिओ नहि टूटल।

मुसलमानलोकनिसँ आक्रान्त (1323-4) भए म. हरिसिंहदेव ओतहि अपन राज्य बसाए लेने छलाह ओ ओतए हुनक वंशजलोकनिक शासन छल। मिथिलाक राज्याश्रयसँ विहीन भए विद्वत्समुदाय ओतहि आश्रय ग्रहण करए लागल छलाह। नेपालक एहि कार्णाटवंशीय राज्यवंशक अन्तिम नरपति भेलाह श्यामसिंहदेव जे अपन एकमात्र कन्याक विवाह नेपाल संवत्क संस्थापक मल्लवंशीय नरपति अभयमल्लक वंशज अशोकमल्लसँ कराओल, जनिक पूर्वज नान्यदेवक आक्रमणक समय (1097ई) नेपालसँ पड़ाए मिथिलामे बसि गेल छलाह। श्यामसिंहदेवक पश्चात् अशोकमल्ल भातगाँवक शासक भेलाह। फलस्वरूप मिथिलाक संग नेपालक सांस्कृतिक सम्बन्ध आओर अधिक घनिष्ठ भए गेल। अशोकमल्लक पश्चात् जयस्थितिमल्ल नेपालक नरपति भेलाह। ई जयस्थितिमल्ल कोटाहुति-यज्ञ 1395 ई.क माघशुदिदशमीकेँ कएने छलाह, से प्रमाणित अछि। हिनक मृत्यु भेल 1429 ई.क कार्तिक वदिकेँ। एहि कालमे मैथिली साहित्यक रचनाक दृष्टिएँ मिथिलामे ह्रासयुग उपस्थित छल। अतः मैथिलीक श्रेष्ठ प्रतिभा एहि मल्लनरपतिक दरबारमे आबि काव्यसाधना कएल करथि एवं ताही क्रमे मैथिली भाषा मल्लराज्यमे राजकीय भाषाक रूपमे सम्मानीय पद प्राप्त कए लेलक। तेँ तहिआ जे मैथिली काव्य-साहित्यक प्रधान स्रोत अशोकमल्ल ओ जयस्थितिमल्लक दरबारमे प्रवाहित भेल, से हुनक उत्तराधिकारीलोकनिक राज्यदरबारमे 1768 ई. धरि प्रवाहित होइत रहल। 1768 ई.मे मल्लराजालोकनिकेँ पराजित कए पृथ्वीनारायण वर्तमान गोरखाराज्यक आधारशिला राखल ओ क्रमिक गोरखालीभाषाक महत्व बढ़ैत गेलैक।

जयस्थितिमल्लक सन्तान जययक्षमल्ले (मृ. 1492)क पश्चात् मल्लराज्य तीन शाखामे बँटि गेल, भातगाँव, बनिकपुर ओ कान्तिपुरमे, जे थोड़-थोड़ दूर पर स्थित छल एवं तेँ हुनकालोकनि पारस्परिक सम्पर्क ओ प्रतिस्पर्धाक भाव बड़ प्रबल रहैत छल। अन्य-अन्य प्रतिस्पर्द्धा जकाँ साहित्यिक प्रतिस्पर्द्धा सेहो रहैत छल ओ ताहिसँ मैथिली साहित्यक विकासमे बड़ गति आएल। मित्रताक अवस्थामे कविनाटककारक एक दरबारसँ दोसर दरबारमे आयात-निर्यात होइत रहैत छल। एक दरबारमे नीक कविता वा नाटक रचल जाइत छल वा ओकर अभिनय होइत छल तँ ओ कविनाटककार दोसरो दरबारमे आमन्त्रित होइन छलाह तथा अपन ओही कविता वा नाटकमे आश्रयदाताक नाम मात्र बदलि ओहिना प्रस्तुत करैत छलाह। विरोधक अवस्थामे यदि कोनहु दरबारमे नीक कविता वा नाटकक रचना होइत छल तँ से सूनि दोसर राजा नीकसँ नीक कविकेँ आश्रय दए ओहूसँ उत्तम ओही विषय पर कविता अथवा नाटकक रचना करबबैत छलाह। एहि स्पर्द्धाक कारणे नाटकक रचना अधिक भेल तथा जेँ कि नाटकमे पदक प्रधानता रहैत छल तेँ श्रेष्ठसँ श्रेष्ठ पदसभक रचना सेहो होइत रहल। मुदा स्वतन्त्र रूपहुसँ पदक रचना कम नहि भेल एवं प्रायः एहन कोनो राजा नहि भेलाह, जनिक नामसँ पदसब उपलब्ध नहि होइत हो। एही कारणे एकहि नाटकक

अनेक प्रतिलिपि नेपालक पुस्तकालयसभमे उपलब्ध अछि, जाहि मध्य कतेकमे तँ आश्रयदाताक नाममात्रक भेद अछि, अन्यथा नाटक एकहि लेखक द्वारा रचित एके वस्तु थिक तथा कतेक तँ विषय समान रहितहुँ स्वतन्त्र नाटक थिक- नाटककार ओ आश्रयदाता दुनू दृष्टिएँ।

श्यामदेवक पश्चात् एहन कोनो नेपालक राजा नहि छथि, जनिक नामसँ पद उपलब्ध नहि होइत अछि। मुदा नेपालमे उपलब्ध पदक ई विशेषता ध्यातव्य थिक जे अनेक काव्यरचनामे लेखकक रुपमे आश्रयदाताक नामक सएह उल्लेख अछि तथा बीच-बीचमे कविक अपनहुँ नाम देल अछि। तथापि राजाक नामसँ रचित सबटा पद आने कविक रचना थिक, से कहब उचित नहि, कारण, स्वयं नरपतिलोकनिमे सिद्धनरसिंह, सिंहभूपति,, श्रीनिवासमल्ल, भूपतीन्द्र, जगज्ज्योतिर्मल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल प्रभृति सुकवि छलाह। परंच नेपालमे उपलब्ध अधिकांश पदावलीक नहि तँ एखन धरि यथोचित अनुसन्धाने भेल अछि आओर ने अध्ययन ओ विश्लेषणे। तेँ कोन कविक कोन रचना थिक ओ कतेक रचना उपलब्ध अछि, से निश्चयपूर्वक नहि कहल जाए सकैत अछि। एतबा धरि निश्चित रुपसँ कहल जाए सकैत अछि जे विद्यापतिक पश्चात् मैथिली कवितादक मुख्य-धारा नेपालमे प्रवाहित भेल एवं रचना सेहो पर्याप्त मात्रामे भेल। हालहिमे उपलब्ध जगज्ज्योतिर्मल्लक *'गीतपंचशिका'*सँ, जकरा सम्पादित कए हम प्रकाशित कए देल अछि, ई तथ्य आओर नीक जकाँ सिद्ध होइत अछि। नरपतिक अतिरिक्त जे कविलोकनि काव्यरचना कएल तनिक परिचय अद्यावधि ज्ञात नहि भेल अछि, केवल *'गीतदिगम्बर'*क रचयिता वंशमणिझाक परिचयटा नीक जकाँ ज्ञात अछि। हम एहिठाम किछु प्रमुख नेपालीय मैथिली कविलोकनिक चर्चा करैत छी।

1. सिंहभूपति - एहि नामकेँ नगेन्द्रनाथगुप्त शिवसिंह अथवा विद्यापतिक उपाधि मानि लेने छलाह, मुदा से भ्रामक सिद्ध भेल अछि। हिनक परिचय निश्चित रुपसँ ज्ञात नहि अछि, किन्तु ओ कोनो नेपालराज्यक कवि भए सकैत छथि। एक गोट सिंहभूपाल शृंगारदेवक 'संगीतरत्नाकर' एवं 'रसार्णवसुधाकर'क भाष्य लिखने छथि। ई सिंहभूपाल कर्णाटवंशीय मैथिल राजा भूपालसिंह भए सकैत छथि। बहुत सम्भव थिक जे सिंहभूपति पाटनक प्रसिद्ध नेपाली राजा सिद्धिनरसिंह (1620-57) होथि, जे सिद्धनृपति नामसँ सेहो प्रसिद्ध छलाह। ई एक उत्कृष्ट कोटिक कवि छलाह ओ हिनक नामसँ एक सम्पूर्ण पदावली उपलब्ध अछि, जाहि मध्य नृपति, नरसिंह तथा सिद्धिनरसिंहक भनिता प्रयुक्त भेल अछि। ई नाटकहुक रचना कएल, से प्रसिद्ध अछि। ओ जीवनमुक्त छलाह। हुनक गुरु भेलथिन्ह एक मैथिल विश्वनाथ उपध्याय। हिनक जन्म 1652 ई. मे मानल जाइत अछि।

सिंहभूपतिक संग-संग नृपसिंह वा सिंहनृपतिक कविता मिथिला मध्य बहु

प्रसिद्ध छल। 'रागतरंगिणी'मे सिंहभूपतिक दुइ गोट एवं नृपसिंहक एक गोट पद संगृहीत अछि। रागतरंगिणीक नृपसिंहक एकटा पद 'भाषा-गीतसंग्रह'क मध्य सेहो अछि ओ चारि गोट गीत सिंहनृपतिक अछि, जाहि मध्य 121 संख्यक पद नगेन्द्रनाथ गुप्तक पदावली (682)मे भेटैत अछि। सिंहनृपतिक एक गोट नव पद हमरा उपलब्ध भेल अछि। 'नानारागगीतम्'मे नृपसिंहक दुइ गोट पदक उल्लेख भेल अछि। एहिसँ एहि पदसबहिक लोकप्रियताक अनुमान कएल जाए सकैत अछि। भए सकैछ जे एहि एकार्थक तीनू नामसँ उपलब्ध पदावली एकहि कविक रचना हो, मुदा से सम्प्रति निश्चित रुपसँ नहि कहल जाए सकैत अछि। एतबाटा अवश्य जे एहि पदसभक भाषा मिश्रित नहिं, विशुद्ध मैथिली अछि, तेँ सन्देह होइत अछि जे कदाचित् ओ कोनो मिथिलाक कवि ने रहल होथि। उदाहरणार्थ हिनक किछु पंक्ति उद्धृत कएल जाइत अछि :-

सबहुँ सखि परबोधि कामिनि आनि देल पिय पास।
जनि बाँधि व्याधत्रे विपिन सत्रो मृग तेजय दीघ निसास।।
बैसलि शयन समीप सुवदनि जतने समुखि न होए।
भेल मानस बुलय दहो दिस देल मनमथ फोए।।

सिंहनृपतिक विन्यस्त छन्द ओ नवभासक गीतक निम्नलिखित पंक्ति सेहो द्रष्टव्य थिक :-

दुइ तनु एक जिअ, से पिअ निठुर हिअ
एकहि नगर परदेशिआ ।। एगे माइ हे।
के जान कओन कहु, तेँ रुसि रहु पहु
अनदिन सनि न विहुँसिआ ।। एगे माइ हे।

2. भूपतीन्द्र(1695-1722) - ई जितामित्रमल्लक पश्चात् भक्तपुरक राजा भेलाह। नेपालक उत्कृष्ट कविगणमे भूपतीन्द्रमल्लक स्थान अन्यतम अछि। हिनक पद एक पदावलीमे संकलित अछि, जकर अन्वेषण डा. बागची कएल। श्रीझवाली अपन 'नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास' मे 100 मैथिली गीतक हिनक एकटा संग्रहक उल्लेख कएने छथि। कतोक पद शिलोत्कीर्ण सेहो उपलब्ध अछि। ई भक्ति-विषयक पदक रचना कएल: यथा, शिव, गौरी, हरि ओ शक्तिक अर्चनाविषयक। किछु पंक्ति उदाहरणार्थ उद्धृत कएल जाइत अछि :-

हरिवन्दना - पीत वसन कुमित विराज, खगपति आसन विराज
शंख चक्र गदा पद्म वाहु सहास....
भूपतीन्द्र हरि गुण गाव।
पदयुग सुन्दर हृदय विहाव।। आदि

प्रेमविषयक - **कि माधव न तेजह अबलाअ पानि। ध्रु**
सरद जामिनि हम हरिलोह हे चउदिसे देखि ससिदाह परान।
नाह अपने कट मने भावि, मलय पवन हन घान।
मधुकर भमि विपिन कुसुमरमि,धूलि पिवय कर लाव।।

3. **जगज्ज्योतिर्मल्ल** - ई नेपालक शासन 1613 सँ 1637 ई. धरि कएल। संगीतशास्त्रक ई बड़का संरक्षक छलाह, संगहि सुकवि सेहो। हिनक दरबारमे अनेक मैथिल विद्वान आश्रय पबैत छलाह। **'मुदितकुवलयाशव'** (1628), **'हरगौरीविवाह'** (1629), **'कुंजविहारनाटक'** आदि हिनक रचना कहल जाइत अछि। एहिमे 'कुंजविहारनाटक'क निम्नलिखित पंक्ति हिनक कवित्वक वैशिष्ट्यकेँ नीक जकाँ स्पष्ट कए दैत अछि :-

जाहि वह जमुनातीर, शीतल सुरहि समीर।
नवदले तरुअरे सोह, मधुकर धनि सब मोह।
ताहि विरिदाबन माँझ, हमरहु हृदय गुणे बाँझ।
ताहि गए करिए बिलास, जात्रा पहु पुराबए आस।
नृपजगज्ज्योतिर्मल्ल वाणी, मोर गति एके भवानी।

हिनक विविध भाव-विषयक पदसंग्रह **'गीतपंचाशिका'** उपलब्ध भेल अछि, जाहिसँ हिनक कवित्वप्रतिभाक आब बड़ नीक जकाँ परिचय भेटि जाइत अछि। एहि मध्य भक्ति ओ शृंगारक अतिरिक्त आनो विषयक भावाभिव्यंजनाक दर्शन होइत अछि यथा, वृद्धावस्थाक वर्णन, नवरसक वर्णन, विरहावस्थाक वर्णन, नवरसक वर्णन आदि। एहि मध्य सूर्य और गणेशक नचारीक अतिरिक्त शृंगारिक भावक नचारी-पद सेहो संगृहीत अछि, जाहिसँ आब मैथिली साहित्यमे नचारी शब्द केवल शिवविषयक भक्तिपदक अर्थहिटामे सीमित नहि रहल अछि, प्रत्युत एकर व्यापक अर्थ भए गेल अछि। वस्तुत: जगज्ज्योतिर्मल्ल उत्कृष्ट कोटिक कवि छलाह। हिनक भाषा सरस, मधुर ओ प्रांजल तथा पदविन्यास सुसंघटित ओ सुनियोजित अछि एवं कतहु निम्न-कोटिक कवित्वक दर्शन नहि होइत अछि। 'गीतपंचाशिका'सँ विरहावस्थाक निम्नलिखित पद उद्धृत कएल जाइत अछि -

दूत्वास्त्रीविरह अष्टव्याधिकथनम्
कुसुम साजल सेज परिहर दूर, तोहे बिनु हृदय होअए तसु झूर
जतन करए तुअ दरसन लाई, अविरल नयन नीर बहि जाई।
अनुखन तोहर धरए धेयान, लए कुंकुम लिह तनु अनुमान।
पए परि पुन पुन कर अनुताप, खन हँस खन रूस करए विलाप।
नृप जगज्जोतिमल्ल इहो रस गाव, दूति उकुति बुझ आठओ भाव।

हिनक **'हरगौरीविवाह'**मे विद्यापति, कृष्णराय, वंशमणि, विष्णुपुरी, सदानन्द आदि अनेक सुकविक कविता प्रयुक्त भेल अछि, किछु अपनो रचित छैन्हि। एहूसँ हिनक कवित्व-शक्तिक उत्कर्ष सिद्ध होइत अछि। नीचाँ 'हरगौरीविवाह'सँ एकटा महेशवानी उद्धृत कएल जाइत अछि :-

धवल वसह पर चढ़ल महेश, भसम धवल तनु देखिअ सुवेश।
हाड़माल धवल धवल रुण्डमाल, धवल कपालकर शशिधर भाल।
शिरहु धवल रह सुरसरि धार, धवल धएल शिर धुथुर मन्दार।
शिवक चरण रवि कोटि सम धाम, नृप जगजोति कर तसु परनाम

4. जगतप्रकाशमल्ल - ई नेपालक शासन 1637सँ 1672 धरि कएल। हिनक अनेक **मैथिली** पद, 'पदसमुच्चय', नानारंग गीतसंग्रह, 'गीतपंचक' आदिमे उपलब्ध अछि, **विषयानुक्रमेँ** जे एहि प्रकारक अछि :- 1. भगवानक दशावतारक पद, 2. विष्णुपद एवं 3. सदाशिवक पद।

कोनहुँ-कोनहुँ पदमे 'नृप' भनिताक कारणे सन्देह उत्पन्न होइछ। तीन-चारि पदमे 'नृपचन्द्रप्रकाश' भनिता अछि, जे जगतप्रकाशमल्लक लिखबाक नाम भए सकैछ। हुनक कएक गोट शिलालेख ओ अन्य मैथिली गीतमे लिखल अछि- **'जगतप्रकाश कि आभन आ आ, चन्द्रशेखरसिंह मन कि हारा', 'भन किछु ओ रे जगतप्रकाश-नृपतिवर, की पुरहर चान्द शेखरसिंह भल'** प्रभृति। चन्द्रशेखर हुनक विशेष प्रियपात्र मंत्री छलाह ओ प्रायः एही कारणे ओ हुनक पदप्रभृतिमे उल्लिखित भेलाह। नेपालक दरबार-पुस्तकालयमे हिनक सात गोट नाटक सुरक्षित अछि, जाहि मध्य ओ मैथिली गद्यक बड़ सुललित प्रयोग कएने छथि। ई नाटक थिक 1.**'उषाहरण'**, 2. **'नलीय नाटक'**(1670), 3. **'पारिजातहरण'**, 4. **'प्रभावतीहरण'** (1656), 5. **'मलयगन्धिनी'**, 6. **'मूलशशिदेवोपाख्यान'** एवं 7. **'मदनचरित'**। वस्तुतः जगतप्रकाशमल्लक समय मैथिली साहित्य-संगीतक उत्कर्ष नेपाल मध्य चरम सीमा पर पहुँचि गेल छल ओ एहि उत्कर्षमे हुनक महत्वपूर्ण अवदानक एहिसँ अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे मध्ययुगीन इतिहासमे ओ **'गन्धर्वविद्या-गुरु'** एवं **'कवीन्द्र'** नामे प्रख्यात भेलाह। हिनक दुइ रचनाक उद्धरण नीचाँ देल जाइत अछि :-

1. शिवविषयक-
मोह ईसर कयल पितृ वनवास, तुअ पद पंकज मोरा आस।
तिलक राख रताह तालक यति, बाम दिस नलय धरु मधुर जति
कान कुंडल अहि हाल मुण्डमाल। आदि

2. निवासमल्लक प्रशंसा-
चौखंड नरपति तोहर बखान, त्रिभुवन महीपति सम नहि आन।
निरमल मति तुअ गाँग जलधार, गल गजराज मोति सुन्दर हार।
चौषशहि कला पर सरुपहि काम, शवदेक शशीमुख बड़ अभिराम।

उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे ओ मैथिली भाषाक बड़ सुन्दर प्रयोग कएने छथि।

5. कविसिद्धिनरसिंह (1620-57) - हरिहरसिंहक पश्चात् सिद्धिनरसिंह मल्ल ललितपुर-पाटनशाखाक सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी, नरपति भेलाह। ओ शासक रहितहुँ संन्यासी जकाँ धर्मकर्ममे लीन रहैत छलाह। कृष्णमन्दिरक शिलालेखमे हुनका युधिष्ठिरक समान धर्मात्मा, अर्जुनक समान पराक्रमी ओ कर्णक समान दानी कहल गेल अछि। वस्तुतः कृष्णमन्दिरक निमार्ण ओ कोटाहुति-यज्ञ कए ओ अपन भक्ति-भावकेँ साकार कए देल तँ कृष्णविनयक पदावलीक रचना तथा कार्तिक नाचक प्रवर्तन कए साहित्य ओ नृत्यक प्रति अपन सर्जनात्मक प्रतिभा सेहो अभिव्यक्त कएल। हिनक साहित्य-मर्मज्ञताक सूचना जगज्ज्योतिर्मल्लक 'गीत-पञ्चाशिका'क ओहि कूट-पदसँ स्पष्ट अछि, जाहि मध्य ओ हुनक चर्चा करैत छथि-नृप जगजोतिमल्ल ई रस गाव, भूप सिद्धनरसिंह बुझ भाव।"

सिद्धिनरसिंह स्वयं सुकवि होएबाक अतिरिक्त विद्वान ओ कवि-नाटककारक उदार पोषक छलाह। विश्वनाथ उपाध्याय सन हुनक मैथिल पुरोहित छलथिन्ह तथा 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्'क रचयिता रामचन्द्र सन कवि-नाटककार। हिनक सात गोट विलक्षण श्रृंगाररसक पद 'भाषागीतसंग्रह'मे उपलब्ध अछि, जाहिसँ हिनक उच्च-कवित्व-सौष्ठवक परिचय भेटि जाइत अछि। एकर चौबीस संख्यक पद एहन अछि जकर अन्तिम पंक्तिमे हुनक हरिभक्तिसँ ओत-प्रोत आत्माक स्वरुप स्फुट भए गेल अछि-"हरिपद जुग भज नृपसिद्धिनरसिंह भाने।"

सिद्धिनरसिंहमल्ल विरह-वर्णनमे अपन प्रौढ़ कवित्व-कल्पनाकेँ चरम सीमा पर पहुँचाए देने छथि, सूक्ष्मता ओ स्वाभाविकता दुहू दृष्टिएँ। विरहिणी नायिकाक वर्णन केहन विलक्षण अछि, से द्रष्टव्य थिक-

विष सेमार पवनासन हारे। पावक सम धनि मान तुषारे।
नोरहिं काजर बहि बहि परइ। ससिँ वसि मसि खञ्जन जनि वमइ।।

तहिना सखी द्वारा प्रेमीक अनुनयसँ मानिनीकेँ मान छोड़बाक उपदेश कतेक मार्मिक ओ विच्छित्तिपूर्ण अछि, से निम्नलिखित पंक्तिमे द्रष्टव्य थिक :-

आरति सञ्चर मनमदकुञ्जर भेल मगन गुनपंके।
हृदय निकारुण तुअ अति दारुण जुग भरि रहत कलंके।।
उचित न मानल मोर अकरमबल जत हमे करू परकारे।
पिअ विनय रतने देह मानधन भन सिद्धिनरसिंह सारे।।

भावाभिव्यक्तिक माधुर्य ओ परिमार्जित भाषाक सुनियोजित लालित्य सिद्धिनरसिंहक पदावलीक अनन्य विशेषता थिक। भावक्स्तु दुहूक चित्रणमे कविक सूक्ष्म अन्तर्दृष्टिक परिचय भेटैत अछि। सूक्ष्म कल्पना ओ शब्दार्थगत चमत्कारक सम्पादन करितहुँ ओ जाहि स्वभाविकताक संग नायिकाक मनोदशा स्फुट कए दैत छथि, से हुनक उच्च कोटिक कवित्व-प्रतिभा ओ अभिव्यक्ति-कौशलक परिचायक थिक।

6. प्रतापमल्ल (1641-74) - नरसिंहमल्लक पश्चात् कवीन्द्र उपाधिसँ प्रख्यात प्रतापमल्ल कान्तिपुरक राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित भेलाह। हिनक कएक गोट विवाहक प्रमाण भेटैत अछि, यथा, कूचबिहारक राजा वीरनारायणक पुत्री रुपमतिसँ, कार्णाटकन्या राजमतीसँ, महुत्तरी राज्याधिपति कीर्तिनारायणक पुत्री लालमती ओ अनन्तप्रिया, प्रभावती प्रभृतिसँ। एहिसँ हिनक विलासिताक अनुमान कएल जाए सकैत अछि। परन्तु ओ निविष्ट संस्कृतज्ञ ओ भाषाकविक संग-संग संगीत-नृत्य ओ तन्त्रादिक मर्मज्ञ सेहो छलाह। हुनक बहुभाषा ओ लिपिक ज्ञानक प्रसंग एकटा शिलालेख (1954 ई.)क निम्नलिखित वाक्य प्रमाण थिक-"गोलमोल आखर, पार्सिआखर, तिरहुतिआखर, रंज(ना) आखर, माड़ेपातआखर, देवनागरआखर, सयाउजआखर, गोत्रियाआखर, आर्बीआखर, कयथिनागर, कटाक्षआखर, सयाउमतेआखर, नेवारआखर, कास्मिरीआखर, फिरंगिआखर,........पंचदशप्रकाराणि अक्षराणि शिलातले। श्रीभवान्याः प्रसादेन ज्ञात्वां तु लिखितमया ।।शुभ।।" एकटा शिलालेखमे उत्कीर्ण हुनक अपन विषयमे लिखित प्रशंसा द्रष्टव्य थिक- "गद्यपद्यादिविविध-काव्यकरणचातुरी-धुरीण सतत-कृत मीमांसा-न्याय-पातञ्जलवेदान्त -वैशेषिक-काव्यकोपालंकारादि सकलशास्त्रानुसरण........रविकुलतिलक हनुमध्वज नेपालेश्वर महाराजाधिराज भूपकेसरी श्रीश्रीकवीन्द्रजय प्रतापमल्ल.....।"

प्रतापमल्लक पदावली राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित "गीतप्रतापमल्लीयम्", "गीतागोविन्दम् प्रतापमल्लस्य" ओ "प्रतापमल्ल विरचित गीतम्" प्रभृति गीतसंग्रहसबमे उपलब्ध होइत अछि। कान्तिपुरक तुलजाभवानीक मन्दिरमे उत्कीर्ण एकटा शिलालेखमे हिनक देवीवन्दनाविषयक नओटा पद उपलब्ध होइत अछि जे उत्तम कवित्व ओ प्रांजल भाषा-शैलीक दृष्टिएँ वस्तुतः हिनक

'कवीन्द्र'क उपाधिकेँ सार्थक बनबैछ। एकटा गीतक निम्नलिखित अन्तिम चरणमे कर्णाट-किशोरीक एहन कुशलताक संग प्रयोग भेल अछि जे तकर कर्णाट कुलदेवी (तुलजा) ओ कर्णाटकुलजा (राजमती) श्लेषार्थ बहार भए जाइत अछि-

हेरह हरषि दूष हरह भवानि। तुअ पद सरण कएल मने जानि।
मोय अति दीन हीन मति देषि। नर करूणा देवि सकल उपेषि।
कुतनय करय सहस अपराध। तैअओ जननि कर वेदन बाध।
परतापमल्ल कहए कर जोरि। आपद दूर कर करनाट किशोरि।

7. **वंशमणिझा** - मल्लनरपतिलोकनिक आश्रित अनेक कविगणमे वंशमणिझाक स्थान सर्वोपरि अछि, से संस्कृतक पाण्डित्य ओ कवित्व दुहू दृष्टिएँ। जगज्योतिर्मल्लक आश्रयमे ओ 'मुदितकुवलयाश्व', 'नरपतिजयचर्या'(1614) एवं 'संगीतभाष्कर'(1631) प्रभृतिक रचना कएल तथा **'गीतदिगम्बर'**क ओ रचना कएल कान्तिपुरक नरपति प्रतापपमल्लक आश्रयमे। जगज्ज्योतिर्मल्लक 'हरगौरीविवाह'मे हिनक अनेक पद प्रयुक्त अछि। अन्तिम पदमे तुलादान-समयक, संवत् 749 ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्याक सूर्यग्रहण दिनक स्पष्ट निर्देश करैत ओ हुनक चिरायुक कामना कएने छथि-

शात उपर शत शातहि गूनू, समत नेपाल एहि विधि जानू।
जेठ कुहू तिथि सुरूज गरास, तुलादान मख कएल विचार।
x x x x x
सुकवि वंशमणि मंगल गाउ, नृपजगजोतिमल होथु सहाय।

प्रतापमल्लक तुलापुरुषदानक अवसर पर अभिनीत हुनक 'गीतदिगम्बर' मिथिलाक त्रैभाषिक पद्धतिक नाटक थिक ओ जाहि मध्य प्रयुक्त हुनक पदावली हुनक कवित्व-प्रतिभाकेँ नीक जकाँ उद्घाटित कए दैत अछि। उदाहरणक हेतु द्रष्टव्य थिक महादेवक अपूर्व नाचक वर्णन-

आध मौलि-मण्डल भल माले। आध तरंगित सुरसरि धारे।।
आध अलिक तिलक नव इन्दु। आध सोहाओन सिन्दुर बिन्दु।।
कोमल विकट चरणदुहु धारी। अपरूब नाच करथि त्रिपुरारी।।
एक देह अध पूरुष दारा। तेतिस कोटि देव देखनिहारा।।
सुकवि वंशमणि एहु रस गावे। सेवि देव हर की नहि आवे।।

वंशमणिझा बेलत्रोचएमूलक भारद्वाजगोत्रीय मैथिल ब्राह्मण छलाह, जनिक पिता

रामचन्द्र शर्मा जगयज्योतिर्मल्लक पिता त्रैलोक्यमल्लक राज्याश्रयमे रहि काव्य-रचना कएल। 'मुदितकुवलयाश्व'क सूत्रधार-नटी-संवाद ध्यातव्य थिक, जाहि मध्य रामचन्द्रशर्माकेँ "कविपण्डित" कहल गेल अछि-"**मैथिल भारद्वाजगोत्र कविपण्डित श्रीरामचन्द्रशर्म पुत्र श्रीवंशमणि उझात्रे कएल। जे मोत्रे कहि अएलाहु तन्हिहि कुवलयाश्वमदालसाक चरित्र नाम नाटक से नाचह।**" 'हरिकेलिकाव्यम्'मे सेहो ओ अपन माता-पिताक नामोल्लेख कएने छथि-

पित्तायस्यान्वी क्षाम्बुधिवहलने चन्द्रमा रामचन्द्रो।
जगत्ख्याता माता जयमतिरिति भवाणीवंध्या।।

अतः वंशमणिझा वंशपरम्परासँ मल्लनृपतिलोकनिक साहित्य-साधानाक संचालनक मुख्य केन्द्र छलाह। उपर्युक्त कृतिक अतिरिक्त हिनक **'चतुरंगतरंगिणी'**, **'प्रभावतीहरणम्'** नाटक प्रभृति ग्रन्थ एवं अनेक पदावली उपलब्ध अछि।

8. **श्रीनिवासमल्ल** (1657-85)-ललितपुर पाटनशाखाक कव्रिसिद्धिनरसिंहक बालक निवासमल्ल सेहो सुकवि छलाह ओ मिथिलामे हिनक सुप्रसिद्धिक प्रमाण ई जे लोचनपर्यन्त अपन 'रागतरंगिणी' सन ग्रन्थमे हुनक पद उद्धृत कएल। जगज्ज्योतिर्मल्लक पौत्र जगतप्रकाशमल्लक संग हिनक मैत्री छल से 'मलय-गन्धिनी'क "**शिरिनिवास भूपतिशरण लेला जगतप्रकाश अति ताह सुख देला।**" एवं सूत्रधारक संवाद-वाक्य "**हे प्रिय एहनं श्रीश्रीनिवासमल्ल। उन्हिक जश वर्णना भक्तपुरक राजाश्रीश्रीजगतप्रकाश सतत करथि**" सँ स्पष्ट अछि।

श्रीनिवासमल्लक कवित्वगुण निम्नलिखित पंक्तिसँ द्योतित भए जाइत अछि-

उपमिअ आनन नीरज पंकज ससधर दिवस मलीने।
भौँहँ अनूपम अधर सोहाओन, नवपल्लव रुचि जीने।।
सुन पेअसि की मोर, परल गरूअ अपराधे।
वह मलयानिल जार कलेवर, न कर मनोरथ बाधे।।

9. **नृपमल्लदेव** - एकटा नृपमल्लदेवक लोकप्रिय कवित्वक सूचना सेहो भेटैत अछि। हिनक एकटा विलक्षण पद **'भाषागीत-संग्रह'** ओ एकटा नेपाल-तालपत्रक विद्यापति-गीत संग्रहमे सेहो उपलब्ध होइत अछि, जाहिसँ निश्चित रुपसँ कहल जाए सकैत अछि जे ओ एक गोट प्रतिभाशाली सुकवि छलाह। रातिक चारिम पहरमे नायिकाकेँ विदा करबाक दूतीक वचन सुनि कविक निम्नलिखित उक्ति कतेक सरस ओ अर्थगर्भित अछि, से ध्यातव्य थिक-

मल्लदेव नृप कैतव वचन सुनि तोहैं दुति दुरमति जाती।
ऐसनि प्रीति कैसे विघटाबह दुहु दिसें दोगुन माती।

विशुद्ध मिथिलाभाषाक स्वाभाविक शब्द-विन्यासमे श्रृंगारिक सहृदयताक मधुर अभिव्यक्ति कविक काव्यकुशलताक सूचना दैत अछि।

10. रणजीतमल्ल (1722-71) - भूपतीन्द्रमल्लक पश्चात् ई भक्तपुरक अन्तिम नरपति भेलाह ओ हिनके पराजित कए पृथ्वीनारायणशाह गोरखाली राज्यक स्थापना कएल। हिनका समयमे सर्वाधिक संख्यामे नाटकक रचना भेल ओ हिनकहि आश्रित भए काशीनाथ, धनपति, गणेश प्रभृति कविनाटककार साहित्यसाधना कएल। ओहि नाटकसभक अधिकांश पदमे कविक रुपमे रणजीतमल्लक उल्लेख अछि।

x x x x x

नेपालक अधिकांश पदावली-साहित्य एखनहुँ धरि अप्रकाशिते अछि ओ तेँ सर्वजनसुलभ नहि अछि। मल्लनरपति कविगण अथवा हुनक आश्रित कविलोकनिक साहित्यसाधनाक प्रसंग प्रामाणित रीतिएँ अध्ययन-अनुसन्धानक कार्य एखनहुँ धरि पर्याप्त नहि कहल जाए सकैत अछि। नेपालक राजकीय पुस्तकागारमे अनेकानेक मिथिलाभाषाक विशाल साहित्य पड़ल अछि ओ अपन उद्धारक बाट ताकि रहल अछि। परन्तु एहि हेतु एकटा सुदृढ़ संघटन एवं सम्मिलित आयास अपेक्षित अछि। एखन धरि जे कार्य भेल अछि से व्यक्तिगत प्रयाससँ ओ बड़ थोड़। तथापि जएह किछु सामग्री उपलब्ध अछि ताही आधार पर एतए मल्लनरपतिक राज्याश्रयमे विकसित प्राचीन काव्य-धाराक रुपरेखा मात्र एतए प्रस्तुत अछि ओ ताहूसँ मैथिली काव्य-साहित्यक हेतु नेपालमे उपस्थित ओहि स्वर्ण-युगक नीक जकाँ परिचय भेटि जाइत अछि। मुदा ई रुप-रेखा पूर्ण नहि कहल जाए सकैत अछि।

***

सप्तम प्रकरण

नवीन काव्यधारा

उन्नैसम शताब्दीक मध्यमे अबैत-अबैत मिथिलाक सामाजिक जीवनमे द्रुत गतिएँ परिवर्तन होअए लागल। ताबत काल धरि भारतवर्षमे अंगरेजलोकनिक राज्य नीक जकाँ प्रतिष्ठित भए गेल छल। ओलोकनि भारत पर राजनीतिक अधिकार प्राप्त करबाक पश्चात् धार्मिक-सांस्कृतिक अधिकार सेहो स्थापित करए चाहैत छलाह। ईसाई-धर्म-प्रचारक प्रक्रिया बहुतो दिनसँ चलितहिँ आबि रहल छल, आब ओ आओर तीव्र भए उठल। भारतवासी अगणित संख्यामे छल-बलसँ ईसाई बनाओल जाए लगलाह। ताबत अंगरेजी शिक्षाक आलोक सेहो क्रमिक पसरए लागल। विदेशीलोकनिक अंगरेजी-शिक्षा-व्यवस्थाक मुख्य उद्देश्य छल भारतवासीके अंगरेजी-शिक्षामे निष्णात कए हृदयसँ आंगल-सभ्यतासंस्कृतिक अन्धभक्त बनाएब, हिन्दुस्तानी साहेब बनाएब। किछु अंशमे ओलोकनि ताहिमे सफल भए गेलाह, परन्तु सर्वतोभावेन ओहिसँ समाजमे नवजागरण सएह उपस्थित भेल। ओहिसँ भाषा-साहित्यक विकासमे उपकारे भेल, कारण, ओहिसँ समाजक संवेदनशील लोक जागरुक भए गेलाह, अपन भाषा-साहित्यके आदर करब क्रमिक सिखलैन्हि, अपन अधोगतिक क्रमिक परिज्ञान भेलैन्हि। पाश्चात्य-साहित्यसँ प्रेरणा ग्रहण कए अपन मातृभाषा-साहित्यकेँ नवीन-नवीन भाव-शिल्पसँ समन्वित करबाक हेतु दत्तचित भेलाह। 1854 ई. मे चार्ल्स उड (Charles Wood) जाहि प्रणालीक शिक्षाक आधारशिला भारतवर्षमे राखल, ताहिमे मातृभाषाकेँ शिक्षाक माध्यमक रुपमे स्वीकार कएल गेलैक जे भारतवर्षक हेतु सर्वथा नवीन वस्तु छल। पहिने अपना ओहिठाम मातृभाषा-साहित्यक एकमात्र उद्देश्य छल मनोरंजन। अतः ओहिमे तेहने वस्तु लिखल जाइत छल जे समाजोपयोगी नहि होइत छल। आब ताहिमे परिवर्तन आएल। मिथिला मध्य 1860 ई. मे कतोक अंगरेजी स्कूलक स्थापना भेल। 1879 ई. मे दरभंगाक राज-हाइ स्कूलक स्थापना भेल। म. लक्ष्मीश्वरसिंह ओ म. रमेश्वरसिंह राज्यासीन भेला पर, एहि प्रकारक शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु आर्थिक साहाय्य ओ प्रोत्साहन सेहो देल। मुदा एहि शिक्षाक कारण मैथिली साहित्यमे जे नवीनता आएल, से बहुत पश्चात्। ध्यातव्य थिक जे मैथिली काव्य-साहित्यमे बीसम शताब्दीक तीन दशक बितलाक पश्चातो अंगरेजी शिक्षामे पूर्ण पारंगत कोनो व्यक्ति प्रतिष्ठित कवि नहि छथि। प. विन्ध्यनाथझा, म. म. गंगानाथझा प्रभृति जे अंगरेजीक उच्च-शिक्षा प्राप्त कएल से प्राचीन रीतिक विद्यापति-सम्प्रदायक काव्य-रचना कएल। कवीश्वर चन्दा झा, जनिक रचनामे सर्वप्रथम नवीनताक दर्शन होइत अछि, से अंगरेजी-शिक्षित नहि छलाह। एतबे नहि, सम्पूर्ण आधुनिक कविगणमे

दुइए-चारि कवि एहन छथि जे उच्च-आंगल-शिक्षा-प्राप्त छथि। अंगरेजी शिक्षासँ एतबे भेल जे नवीनताक प्रति लोक साकांक्ष भेल तथा मैथिली साहित्यो कोनो वस्तु थिक, ताहिसँ अवगत भेल। इएह चेतना बीज-रुपमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक बहुमुखी उत्थानक प्रेरक होइत आबि रहल अछि।

मैथिली काव्य-साहित्यमे सर्वप्रथम नवीनताक स्फुरण युगक यथातथ्य चित्रणक रुपमे भेल। मुदा ई केवल मैथिली साहित्यहि मध्य भेल होअए से नहि। वस्तुतः ई अखिल भारतीय सुधारवादी आन्दोलनक प्रतिफल छल, जकर नेतृत्व कएने छलाह पूबमे राजा राममोहनराय ओ पश्चिममे दयानन्द सरस्वती। ईसाई-धर्मप्रचारकलोकनि हिन्दूसमाजमे प्रचलित मूर्त्ति-पूजा, छुआ-छूत, तीर्थाटन, व्रत-उपवास, बाल-विवाह ओ विधवा-प्रथा प्रभृतिक आलोचना कए ओ ओहि सभकेँ निस्सार सिद्ध कए, हिन्दू-धर्मक त्रुटिक प्रचार कए-कए जनसमुदायके ईसाई बना रहल छलाह। ओहि प्रचारकेँ निष्फल बनएबाक हेतु, समाजकेँ धार्मिक आक्रमणसँ बचएबाक हेतु राममोहनराय 'ब्रह्म-समाज'क स्थापना कएल ओ 'वेदान्तसूत्र'क नवीन भाष्य सन् 1857 ई. मे लिखल। तहिना दयानन्द सरस्वती नव-शिक्षितवर्गकेँ 'पैगम्बरी ईश्वरवाद' दिसि आकृष्ट देखि 'वैदिक एकेश्वरवाद'क सिद्धान्त लए सन् 1863 ई. मे नगर-नगर भ्रमण कएल एवं अपन विगत प्राचीन सांस्कृतिक-धार्मिक गौरवक व्याख्या कएल। एहीक्रमे ओ 'सत्यार्थ-प्रकाश'क रचना एवं 'आर्य-समाज'क स्थापना 1875 ई. मे कएल। अतः हिन्दू-समाजक जागरणमे हुनक अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान अछि। हुनक आन्दोलनसँ एहि विषयक अनुभव होअए लगलैक जे हमरालोकनि वैदिक ऋषि-दर्शनकार तथा विशिष्ट काव्यकारकक सन्तान थिकहुँ। एहि प्रकार हिन्दू-समाज अतीत-गौरवक अभिमान कए वर्तमान अधोगतिक प्रतीकारार्थ भविष्यक उन्नति हेतु प्रवृत्त भेल।

राजाराममोहनराय ओ दयानन्द सरस्वती विदेशी धर्म-प्रचारकं जकाँ अपन सामाजिक एवं धार्मिक दोपसभक आलोचना कएत ओहि दोषकेँ सुधारबाक हेतु लोककेँ प्रेरित करैत छलाह। समाजकेँ दिनानुदिन विदेशी धर्म ग्रहण करैत देखि ओकर प्रतीकारार्थ 'आर्य-समाज' ओहि व्यक्तिकेँ पुनः हिन्दू-धर्ममे अन्तर्भुक्त होएबाक व्यवस्था देबए लागल जे विदेशी धर्मकेँ ग्रहण कए चुकल छलाह। मिथिला कट्टर सनातनधर्मी छल। अतः 'आर्य-समाज'क धार्मिक उदारताकेँ तँ ग्रहण नहि कएलक, मुदा अपन दोषक प्रति साकांक्ष अवश्य भेल। मिथिलामे उपर्युक्त आन्दोलनक प्रभाव एतबहिटा पड़ल जे समाजक एक सशक्त वर्ग सुधारक प्रति विशेष सचेष्ट भए गेल। इएह सुधारवादी भावनाक अभिव्यक्ति उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दू दशकसँ लए बीसम शताब्दीक तीन दशक धरि काव्य-साहित्यमध्यकु विशेष स्फुट ओ अविच्छिन्न रुपेँ अभिव्यक्त भेल। चन्दा झा एहि प्रवृत्तिकेँ सर्वप्रथम ग्रहण कए अपन रचनामे सामाजिक यथातथ्यक चित्रण करब आरम्भ कएल।

एहि हेतु उचित वातावरणो प्रस्तुत छल। सामाजिक ओ राजनीतिक अधोगति चरम सीमा पर पहुँचि गेल छल। म. महेश्वरसिंहक देहावसानक पश्चात् मिथिलाराज्यक शासन 'कोर्ट-आफ-वाईस'क अन्तर्गत चल गेल छल। एहन परिस्थितिमे मिथिलाक लोक मिथिलेशक उदार आश्रय ओ साहाय्यक अभावमे पूर्ण रुपे विपन्न भए गेल। 1870 ई. ओ तत्पश्चातो अनेक बेर अकाल आबि मैथिल-समाजक आर्थिक स्थितिकेँ घोर दयनीय बनाए देलक। एहना स्थितिमे देश व्याकुल छल एवं समाज अव्यवस्थित। नीति-अनुशासनहीन मिथिलाकेँ कोनो प्रतीकार नहि फुरैत छलैक। चन्दा झा निम्नांकित पंक्तिमे ओहि कठिन समयक यथार्थवादी चित्र केहन साकार अंकित कए देल अछि, से द्रष्टव्य थिक :-

अस्त्रशस्त्र रोक आब मामिलाक मारि
भाइ भाइकेँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि
ठक्क लोक हक्क पाव साधुकेँ उजारि
दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि

तहिना ओहि अकाल-समयक प्राकृतिक प्रकोपक चित्रण सेहो द्रष्टव्य थिक -

भदइ सुखाएल धान दहाय
गरिब किसान कि करत उपाय
केना दिन काटत जिउत कि खाय
बालबचा मिलि करु हाय-हाय
हृदय जनु फाटत

आ ओकर प्रतिफल :

मरीच भाव अन्न भेट से जनेर गोट
उपायहीन लोककेँ सुखाय गेल भोट

वस्तुतः चन्दाझाक उपर्युक्त प्रकारक पंक्ति मैथिलसमाजक अन्तस्तलमे सुनगैत व्यथाक विस्फोट छल, तेँ बड़ लोकप्रिय भेल ओ एहि प्रकारक सामाजिक अपकर्षक चित्रणक परम्परा मैथिलीक प्राचीन काव्य-परम्पराक तुलनामे कतेक नवीन वस्तु अछि, से स्पष्ट अछि।

एहि यथार्थोन्मुखी प्रवृत्तिक विकासक पाछाँ प्रेरक भेल (1) गाँधीजीक स्वतन्त्रता-आन्दोलन एवं (2) अपन मातृभाषासाहित्यक गौरव-सम्पादन करबाक जागरण। प्रथमतः मैथिली कवितामे समाजगत तत्व आओर अधिक परिपुष्ट होइत गेल तथा द्वितीयतः अपन साहित्यकेँ विविध रुपेँ विकसित करबाक बलवती प्रेरणा सक्रिय सचेत भए उठल। एहि हेतु प्रेरक भेल द्रुत-गतिएँ विकास करैत हिन्दीसाहित्य सेहो, जकर प्रचार मिथिलामध्य बड़ छल। अतः भाव ओ शिल्प दुहू दृष्टिएँ मैथिली साहित्यमे विविधताक समावेश भेल। काव्यक क्षेत्रमे गीतक अतिरिक्त आन-आन छन्दहुमे मुक्तक-रचना होअए लागल। प्रबन्धकाव्यहुक विकास भेल। मैथिली काव्य-साहित्यक बहुविध उन्नतिक आयास होअए लागल।

मुदा मैथिली भाषासाहित्यक गौरव-सम्पादन करबाक अनुभूति एखन सुप्तावस्थहिमे छल, पत्रपत्रिकाक प्रकाशन एखन आरम्भे भेल छल ता हिन्दीभक्तलोकनिक द्वारा मिथिलाभाषाकेँ पददलित करबाक कुचेष्टा तीव्र भए गेल। सन् 1913-14 ई. मध्य बिहार-हिन्दी-सम्मेलनक भागलपुर अधिवेशनमे मैथिली-विरोधी प्रस्ताव पारित भेल। ओहूसँ पूर्व 12 जून 1908 मे आराक 'बिहारबन्धु'मे मिथिलामिहिरक आलोचला कएल गेल, कारण, ओहि मध्य मैथिली भाषाक लेखादि प्रकाशित होइत छल। एहि आलोचनासभक प्रतिक्रिया मैथिल विद्वनलोकनि पर बड़ अधिक पड़ल। जे म. म. मुरलीधर झा उदारतापूर्वक अपन 'मिथिलामोद'मे हिन्दीक लेखादि प्रकाशित करैत छलाह, से घोर हिन्दीविरोधी भए गेलाह एवं मैथिलीक पक्ष लए हिन्दीक विरोधमे कतेक लेख छापल तथा अपन पत्रसँ हिन्दीकेँ तँ सर्वथा बहिष्कृत कइए देल, संगहिँ मिथिलाक जाहि पत्रमे हिन्दीक स्थान छल, तकरहु घोर आलोचना कएल। मिथिलामे तहिआ हिन्दीक बड़ प्रतिष्ठा छलैक, 'कोर्ट- आफ- वार्ड्स'क शासनक पश्चात् अंग्रेजी दरभंगाराजक भाषा भए गेल छल, कारण, हिन्दी तावत सम्पूर्ण भारतमे पसरि गेल छल। भारत सरकारहुक तत्कालीन नीति हिन्दीकेँ प्रोत्साहन दैत छलैक। मैथिल कवि-विद्वन मैथिलीमे प्राचीन रीतिक किछु पदक रचना कए सन्तुष्ट छलाह, प्रायः एहिसँ बेशी चाहितहु नहि छलाह। मिथिला भाषाकेँ सर्वांग-सम्पूर्ण साहित्यिक भाषाक रुपमे विकसित करबाक केओ स्वप्नो नहि देखैत छलाह। जनसामान्यमे प्रचारक भाषा हिन्दी ग्राह्य भए चुकल छल। कवीश्वर चन्दा झा द्वारा 'पुरुषपरीक्षा'क मैथिली अनुवादक हिन्दी भूमिका ओ स्थान-स्थान पर हिन्दीअहिमे टिप्पणी लिखब तथा मैथिलसमाजक कल्याणार्थ प्रकाशित पत्रपत्रिकामे अधिकांश हिन्दी लेखादिक प्रकाशन तकर प्रमाण थिक। किन्तु जखन हिन्दी भक्तगण मैथिली-विरोधी-नीति प्रकट करबाक संकीर्णता देखबए लगलाह तँ मैथिल विद्वन सावधान भए गेलाह। प्रतिक्रियामे हुनका लोकनिक हृदयमे मातृभाषा-साहित्यक व्यापक विकासक कामना जागल, संगहिँ हिन्दी भाषा द्वारा प्रचार कए मैथिलसमाजक दोष-निवारण करबाक आयास उपहासात्मक बुझल जाए लागल। एना 1910-11 ई.मे प्राचीनता- नवीनता प्रसंग एहि प्रवृत्तिक आलोचना 'मिथिलामोद'क 47म उद्गारमे कएल गेल छल- "जे लोकनि हिन्दीमे अखबार छापि मिथिलाक उन्नति चाहैत छथि तनिकालोकनिक अदीर्घदर्शिता एहने होइत छैन्ह जेना एक मूर्ख लोभी मनुष्यकेँ एक हंसी छलैक जे प्रतिदिन दूइटा अण्डा दैत छलैक। एक बेर लोभी मनुष्य विचार कैलन्हि जे यदि एकरा काटि दी तँ सब अण्डा एके बेर बाहर भए जाएत......कृपा कए हिन्दी हटाए मैथिली बढाउ ओ यथार्थ देश हितैषी होउ।" मुदा आब जखन एक दिसि हिन्दी-प्रचारकलोकनिक मैथिली-विरोधी नीति उग्र रुपमे प्रकट भेल आ दोसर दिसि नवशिक्षित समुदायकेँ मैथिलीक प्रति साकांक्ष नहि भए हिन्दी साहित्यहिक उन्नतिमे लागल देखल, तँ एकर बड़ तीव्र प्रतिक्रिया मैथिली भाषाक प्रेमीलोकनिमे भेल। 'मोद'क 100म उद्गारमे प्रकाशित कमलनाभ चौधरीक निम्नलिखित कविता ओही प्रवृत्तिक द्योतन करैत अछि :-

वैदेही अकुलाय कहथि की हम अबला नारी,
हिन्दी आनि बसाबथि घरमे जे छथि गांपबिहारी,
नहि हम कैल अवज्ञा तइओ उक लेसथि धधकारी,
आन सब देलक तारी।

एहि प्रतिक्रिया पर आधारित भए मातृभाषा-प्रेमक ज्वार सजग भए मैथिली प्रेमीलोकनिक आत्माकेँ उद्वेलित करए लागल, जे एकर नव-नव विकासक हेतु यत्न करए लगलाह। एहि आन्दोलनक आरम्भ कएल संतशिक्षितवर्ग, अंग्रेजीशिक्षितवर्ग तँ आरम्भमे पूर्णरुपेँ विरक्त रहलाह। एक-आध अपवादकेँ छोड़ि ई स्थिति 1925 ई. धरि रहल। एही दृष्टिएँ द्रष्टव्य थिक भोला लालदासक 'श्रीमैथिली' (1925)क पृ. 34मे एवं म. म. मुरलीधर झाक 'मिथिला' 1-1 पृ. 13मे प्रकाशित लेख, जाहि मध्य दुनू गोटा अंगेजीशिक्षित-लोकनिक द्वारा मैथिलीक उपेक्षाक घोर भर्त्सना कएने छथि।

किन्तु ई स्थिति अधिक दिन नहि रहल। अंग्रेजी-शिक्षितलोकनि सेहो आब साहित्य-रचनाक संग-संग मैथिलीकेँ विश्वविद्यालय प्रभृत्तिमे उचित स्थान दिअएबाक हेतु यत्न करए लगलाह। एहिसँ अंग्रेजी-शिक्षित नवीनतावादी एवं संस्कृतशिक्षित प्राचीनतावादी विद्वज्जनक बीच समन्वय स्थापित भए गेल। 'मिथिला'क प्रकाशन एही समन्वय-बुद्धिसँ भेल छल। अतः ओकर सम्पादकद्वय कुशेश्वरकुमर ओ भोलालालदास दुहू वर्गक क्रमशः प्रतिनिधि छलाह। प्रथम अंकक सम्बद्ध नियमावलीमे छपल छल :

'कुमर' पुरातन नीति निरत छथि, 'दास' नवीन समाजी
अछि आशा दूनू दूनकेँ राखथि सब दिन राजी

एहि समन्वयक प्रतिफल बड़ नीक भेल। मैथिलीक उन्नति शक्ति अर्जन कएलक ओ मैथिलीक स्वीकृति विश्वविद्यालयसभमे होइत गेल- सबसँ पहिने कलकत्ता विश्वविद्यालयमे, तत्पश्चात् काशी विश्वविद्यालयमे। सबसँ पाछाँ स्वीकृत भेल पटनाविश्वविद्यालयमे स्व. लक्ष्मीकान्त झा, कुमार गंगानन्द सिंह, भोलालाल दास, डा. सुभद्र झा, प्रो. तन्त्रनाथ झा, प्रो. परमाकान्त चौधरी प्रभृतिक संयुक्त आयाससँ। एहि ठाम पाठ्यक्रममे मैथिली मातृभाषा ओ साहित्यक स्वीकृति भेटि गेलासँ प्रथम-प्रथम प्रो. रमानाथ झा आरम्भसँ लए आधुनिक काल धरिक कविताक 'पद्यसंग्रह'क नामसँ संकलन कए मैथिली काव्य-साहित्यक ऐतिहासिक रुपरेखा प्रस्तुत कएल। अतः एहि 'पद्य-संग्रह'क ऐतिहासित महत्व अछि। ओकर पश्चात् ओ 'कविता-कुसुम' ओ कालान्तरेँ पुनः 'प्राचीन गीत', 'नवीन गीत' एवं 'कथाकाव्य' नामक जे पद्यसंग्रह बहार कएल, से मैथिली काव्य-साहित्यक इतिहासक बड़ सुन्दर भाव ओ शिल्पविपयक विकासात्मक रुपरेखा प्रस्तुत करैत अछि। एहि प्रकार जेना-जेना मैथिलीक स्वीकृति व्यापक होइत गेल एवं अधिकाधिक छात्र मैथिलीक अध्ययन दिसि आकृष्ट होइत गेलाह, तेना-तेना विविध विषयक अधिकाधिक ग्रन्थक प्रकाशन होअए लागल। प्रकाशनमे विशेष गति तखन आएल जखन 1966 ई.मे मैथिली भारतक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रुपमे

[illegible] साहित्य अकादमी द्वारा स्वीकृत भेल। एहि सुप्रसिद्ध साहित्य-संस्था द्वारा सर्वाधिक संख्यक काव्यकृति सभ पुरस्कृत भेल अछि। 1976 ई.मे बिहार सरकार द्वारा मैथिली अकादमीक स्थापना कयल गेल, जकरा द्वारा अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भए चुकल अछि। आरम्भमे एहि संस्था द्वारा ऐतिहासिक महत्वक नवीन काव्य-कृति प्रकाशित नहि भेल, किन्तु पश्चात् आबि स्व. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क 'हाथिबौ', श्री [illegible] 'सूर्यमुखी', किरणजीक 'कन्या', राजकमलक कविता [illegible] आदि प्रकाशित भेल। परन्तु एकर सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य भेल अछि एहन कृति सभक प्रकाशन जकर पूर्व प्रकाशित प्रति दुर्लभ भए गेल छल अथवा जकर अप्रकाशित पाण्डुलिपि सब [illegible] वर्षसँ प्रकाशनक बाट ताकि रहल छल. काव्य-कृतिक क्षेत्रमे कवि [illegible] 'जानकी रामायण' ओ [illegible] '[illegible]' खण्डकाव्य। एही दृष्टिएँ डा. [illegible] द्वारा सम्पादित '[illegible]', डा. जयकान्त मिश्र द्वारा सम्पादित 'मैथिली अभिलेख-गीतमाला', [illegible] द्वारा सम्पादित 'मैथिली प्राचीन गीतावली' ओ [illegible] '[illegible] रामायण' विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि। प्रबन्ध-काव्यक क्षेत्रमे स्व. तन्त्रनाथ झाक 'कृष्णचरित' सेहो उल्लेखनीय थिक।

मैथिली काव्यसाहित्यक आधुनिक विकासमे पत्रपत्रिकाक बड़ महत्वपूर्ण योगदान अछि। यद्यपि पत्रपत्रिकामे अधिकांश गद्य- रचने छापल जाइत अछि, तथापि [illegible] स्थान [illegible] मैथिली कविता [illegible] संख्यामे [illegible] छपल। 'मिथिलामिहिर' सँ आदि कोनो पत्रिका अधिक दिन धरि नहि बाहर भेल, मुदा जतबाहि दिन ई प्रकाशित भेल, ततबाहि दिनमे ई मैथिलीक विकासमे नव-नव चेतना भरैत गेल। [illegible] काव्य-साहित्य अद्यावधि प्रकाशित भेल अछि, तकर चतुर्थांशो पुस्तकाकार प्रकाशित नहि अछि। [illegible] आधुनिक मैथिली कविताक वास्तविक स्वरूप [illegible] पत्रपत्रिकाक [illegible] कएने बिना नहि बूझल जाए सकैछ। एहि पत्रपत्रिकाक मध्य 'मैथिली-साहित्य-[illegible]' ओ 'मिथिला'क बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि। [illegible] साहित्यके पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक सुनियोजित प्रयास यदि 'साहित्यपत्र' द्वारा भेल तँ [illegible] प्रतिभाशाली मैथिली साहित्यकेँ [illegible] प्रयास कयल गेल [illegible] 'मिथिला'क द्वारा।

मैथिलीक नवीन काव्यधाराकेँ [illegible] [illegible] [illegible] कार्य [illegible] भऽ चुकल अछि। काव्यरचनाक क्षेत्रमे ई [illegible] दू प्रकारक कयल गेल - 1. [illegible] आदि [illegible] अछि एहि [illegible] मौलिक काव्यक रचना द्वारा। एहि [illegible] [illegible] [illegible] ओ [illegible] '[illegible]', [illegible] '[illegible]', [illegible] '[illegible]' तथा अन्यान्य अनेक महाकाव्य एवं 2. [illegible] आधुनिक भाषा-साहित्यमे [illegible] नवीन शैलिक रचना [illegible] अछि [illegible] रचनाक

द्वारा। एहि प्रकारक रचनामे अन्यान्य भाषा साहित्यक प्रभाव प्रचुर मात्रामे पड़ल - हिन्दीसँ साक्षात् रूपेँ सबसँ अधिक एवं बंगला ओ अंगरेजीसँ अपेक्षाकृत कम।

डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक कारण अंगरेजी शिक्षा ओ साहित्यक प्रभाव मानैत छथि। मुदा ई विषय एतबे दूर धरि सत्य अछि जे ई प्रभाव साक्षात् नहि, हिन्दी-बंगला साहित्यक माध्यमसँ असाक्षात् रूपेँ अधिक पड़ल। एही कारणे बंगला-हिन्दीमे अंगरेजीक जेहन उत्कट प्रभाव अछि, तेहन मैथिलीमे नहि अछि।

बंगलाक प्रभावसँ मैथिलीमे मृदुलता ओ कल्पनाशीलताक समावेश भेल। एही क्रमे अनेक बंगला काव्यकृतिक अनुवादक नवीन मौलिक गीतकाव्यक रचनाक संग-संग मैथिलीमे भेल, यथा माइकेलमधुसूदनक 'मेघनादवध', 'विरहिणीव्रजांगना', 'वीरांगना', रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'गीतांजलि' प्रभृति प्रबन्ध-काव्य ओ गीत-काव्यक। अनुवादकमे मुख्य भेलाह गौरीशंकरझा, भुवनजी, गोविन्द झा, सुमनजी, प्रभृति, मुदा कविताक क्षेत्रमे अंगरेजीसँ कोनो महत्वपूर्ण अनुवाद पुस्तकाकार नहि प्रकाशित भेल। प्रो. मुक्तिनाथ झा 'पैराडाइजलॉस्ट'क अनुवाद करबो कयल तँ से अद्यावधि अप्रकाशिते अछि। हिन्दीसँ अनुवाद होयबाक आवश्यकतो नहि छलैक।

बहुत पाछाँ आबि अंगरेजी-शिक्षित व्यक्ति सेहो मैथिली काव्यरचनामे सम्यक् योगदान देबए लगलाह। एहि क्षेत्रमे प्रो. तन्त्रनाथ झा, श्री उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास', डा. रमानाथझा प्रभृतिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि जे 'कीचकवध' महाकाव्य, 'संन्यासी' खण्डकाव्य एवं नवीनतम शैलिक प्रयोगवादी कविता लिखल। एहि रचनासभमे नवीन शैलिक शिल्पविधान, मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण-प्रणाली ओ प्रतीकक प्रयोग कयल गेल आओर से अंगरेजी-साहित्यक साक्षात् प्रभाव-स्वरूपेँ। एकर अतिरिक्त अंगरेजी काव्यसाहित्यमे प्रयुक्त 'बैलेड', 'सौनेट' प्रभृति काव्य- शैलिक सेहो प्रयोग कयल गेल। तथापि मैथिलीक नवीन काव्यसम्पत्तिके ध्यानमे रखैत एहि प्रकारक रचना उत्कृष्ट कोटिक तँ अवश्य अछि, मुदा बड़ अल्पसंख्यक अछि।

ऐतिहासिक इतिवृत्तिक सौलभ्य हेतु समस्त नवीन काव्यधाराके निम्नलिखित रूपेँ बाँटि सकैत -

1. चन्दाझा,
2. चन्दाझासँ लए 1930 ई. धरि-देशदशा, उद्बोधनात्मक तथा तन्मूलक समाज-सापेक्ष काव्य,
3. नवीन प्रतीककाव्य- जकर अन्तर्गत सम्पूर्ण 'वाद' साहित्य,
4. कथाकाव्य- महाकाव्य, खण्डकाव्य ओ पद्यकथा,

5. प्रकीर्णकाव्य- बालसाहित्य, वैद्यकादिशास्त्रसाहित्य ओ नवीन शिल्पक साहित्य।

1. चन्दाझा

कवीश्वर चन्दाझा युगसन्धिक कवि छथि, किन्तु नवीनोन्मुख अधिक। जेना विद्यापति प्राचीन काव्यपरम्पराक मुखद्वार पर ठाढ़ भए अग्रिम विकास-मार्गकेँ निर्देश करैत सबसँ प्रखर प्रकाशपिण्डक समान अधिष्ठित छथि, तहिना कवीश्वर चन्दाझा नवयुगक मुखद्वार पर ठाढ़ भए नित नूतन नवीनताक प्रेरणा दैत प्रतीत होइत छथि।

कविताक अरिरिक्त आनहु क्षेत्रमे चन्दाझा नवीनताक सूत्रधार भए प्रकट भेलाह। पुरातत्व तँ हुनक जीवनक व्यसन छल, लक्ष्य छल, अतः ओहीमे लीन रहैत छलाह। मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहासकेँ प्रकाशित करब ओ बड़ आवश्यक बुझैत छलाह। 1905 ई.मे 'मैथिलहितसाधन'क प्रकाशन जयपुरसँ होअए लागल तँ प. चन्द्रदत्तझाकेँ 15 जनवरीक अपन पत्रोत्तर दैत लिखल-

लिखल जाए मिथिला इतिहास, नहि हो तहिमे शिथिल प्रयास।
विषय विशेष हमहु लिखि देब, स्वप्नहु एक टका नहि लेब।
मासिक मिथिला पत्र प्रचार, मैथिलभाषेँ विहित विचार।

एहिमे हुनक वैयक्तिक रुचि नीक जकाँ व्यक्त भेल अछि- मिथिलाक इतिहास लिखब। मैथिलीक प्रथम मासिक पत्रक प्रकाशनक जाहि शब्दमे ओ स्वागत कएल, सेहो हुनक नवीनताप्रिय व्यक्तित्वक नीक जकाँ द्योतन करैत अछि। वैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन, प्राचीन साहित्यक शोधसंकलन आदिक आब कतेक महत्व बढ़ि गेल अछि, से व्याख्येय नहि अछि। मुदा तकरो आधारशिला ओएह राखल। एहि क्रममे साहेबरामदासक पदावलीक संकलन-सम्पादन, विद्यापति ओ गोविन्ददासक गीतावलीक संग्रह प्रभृति हुनक कार्य बड़ महत्वपूर्ण अछि। तहिना प्राचीन विद्वान-कविक परिचयमे पाँजिक उपयोग ओएह चलाओल। रचनात्मक साहित्यसर्जनाक क्षेत्रमे कविताक अतिरिक्त 'पुरुष-परीक्षा'क गद्यपद्य-अनुवाद एवं परिशिष्टमे संलग्न टिप्पणीक पुरातत्वान्वेषण ओ इतिहासक दृष्टिएँ महत्व तँ अछिए, संग-संग मैथिलीमे गद्यपरम्पराक आरम्भहुक दृष्टिएँ महत्व अछि। दोसर शब्दमे, मैथिली साहित्यमे जे कोनो भावशिल्प-विषयक नवीनताक आरम्भ भेल, से चन्दाझासँ। एहिसभक हेतु हुनक नवीनतावादी दृष्टि सएह प्रेरक छल। ओ युगक सभसँ प्रतिभाशाली आधुनिक-दृष्टिसम्पन्न महापुरुषेटा नहि, मैथिली साहित्यक सब दृष्टिएँ नवयुगस्रष्टा कविसाहित्यकार छलाह। ओ अपने युगटाक महत्व नहि बुझैत छलाह, ओ अग्रिम युगीन आवश्यकताक मनीषी छलाह आओर तदनुरुप अध्ययन-अनुशीलन एवं साहित्यसर्जन कए आगामी युगक पथप्रदर्शन सेहो कएल।

मैथिली कविताक क्षेत्रमे ओ प्रबन्धकाव्य ओ गीतकाव्य दुहूरीतिक रचना कएल। हिनक प्रबन्धकाव्य थिक 'मिथिलाभाषा रामायण'। एहिसँ पहिने प्रबन्धकाव्य लिखबाक परम्परा मैथिलीमे नहि छल। मनबोधक 'कृष्ण-जन्म'टा एहिसँ पूर्वक कथाकाव्य अवश्य उल्लेखनीय अछि, मुदा ओहिसँ महाकाव्य-रचनाक परम्पराक प्रारम्भ नहि भेल। शिल्पक दृष्टिएँ महाकाव्य प्राचीन वस्तु अवश्य थिक, किन्तु से संस्कृतसाहित्यक इतिहासमे, मैथिली साहित्यक इतिहासमे नहि। मैथिलीमे तँ ई सर्वथा नवीन वस्तु थिक। कवीश्वर चन्दाझा मैथिली काव्य-साहित्यकेँ विविध विधासँ सर्वांग-सम्पन्न करबाक निमित्त एकरा रचल जे बड़ लोकप्रिय भेल। महाकाव्यक उल्लेख पाछाँ होएत। एहि ठाम एतबेटा कहब पर्याप्त होएत जे चन्दाझा प्रबन्धकाव्यरचनामे पूर्ण पटु सिद्ध भेलाह आओर एहिमे अपन कवित्वकौशलकेँ चरम सीमापर पहुँचाए देल। इहो काव्य मिथिलामे ओही प्रकारेँ लोकप्रिय भए प्रसिद्ध भेल जेना तुलसीदासक 'रामचरित-मानस'। एहि मध्य कथाक समुचित विकास भेवे कएल, मुदा भाषा ओ छन्दक एहन प्रवाहपूर्ण प्रयोग भेल जे जन-जनक मानसमे रमि गेल। ठेठ मैथिली शब्द ओ लोकोक्तिक प्रयोग एकर बड़ चमत्कारपूर्ण भेल। विद्यापतिक पश्चात् मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनएबाक सबसँ महत्वपूर्ण कार्य मिथिला भाषामे रामायण लिखि इएह कएल। महाकाव्य-रचनाक शास्त्रीय शिल्पकेँ ध्यानमे रखितहुँ एहि मध्य मैथिली गीत ओ विविध छन्दक स्थान-स्थानपर हिनक प्रयोग अद्भुत भेल अछि। केशवदास विविध छन्दक प्रयोग करवाक हेतु हिन्दी साहित्य मे प्रसिद्ध छथि। चन्दाझा हुनकहुसँ आगाँ बढ़ि गेल छथि। मुदा केशवदास जकाँ हिनक काव्यक भाषा ओ अभिव्यक्ति-रीति कृत्रिम नहि भेल आओर ने ओहिसँ महाकाव्योचित कथाक विकासमे अवरोधे उपस्थित भेल अछि।

गीतकाव्य हिनक प्राचीन रीतिक अछि - भनितायुक्त ओ संगीताश्रित, मुदा भक्तिविषयक। शृंगारिक रचना सेहो अछि, किन्तु अधिक नहि आ ने उत्कृष्ट। अतः ई प्राचीन काव्य-धाराक अन्तर्गत परिगणित भए चुकल छथि। अपन एहि प्राचीन काव्य-परम्पराक गीतहु मध्य ओ अपन नवयुगीन प्रवृत्तिक परिचय दए देलैन्हि, भक्तिभावजनित एकान्त आत्मगत तत्व मध्य देश-दशामूलक वस्तुगत तत्वक अभिव्यक्ति द्वारा। वस्तुतः हिनक गीतशिल्प यदि प्राचीनोन्मुख अछि तँ भाव नवीनोन्मुख। युग-संवेदनशील व्यक्तिमे समसामयिक युग-चेतनाक रस अन्तर्निहित रहैत अछि तथा ओ कोनहुँ स्थितिमे युगसत्यकेँ व्यक्त करितहिटा अछि। एही कारणेँ चन्दाझा अपन भक्तिकाव्यहुमे युगधर्मक यथार्थवादी अभिव्यक्तिक आभास दए देने छथि, कखनहुँ देशदशाक चित्रणक रुपमे तँ कखनहुँ आत्माभिव्यक्तिक रुपमे, युगक नैतिक पतनक उल्लेख करैत। निम्नलिखित उद्धरणसँ उपर्युक्त तथ्य नीक जकाँ सिद्ध भए जाइत अछि :-

1. यदपि जन्म मैथिल छल उत्तम बसलहुँ मिथिला देश।
कविबनिपण्डितमणि संग रहलहुँ सेवल नृप मिथिलेश।
की की नीच कर्म नहि कैलहुँ तरुण वयस परवेश।

लघु अपराधहि साधु सताओल धन विन गरव धनेश।

2. महादेव महादेव।
   मन्द कलिकाल जाल बादल फरेब
   सभ मन अभिलाष पर धन लेव
   के बुझ अगम्य ज्ञान शास्त्र इत्थमेव
   थोर पाठ अभिमानी धर्ममूल छेय
3. निरधनपन बड़ दोष शिव
   बिनु अपराध धनिक कर गंजन दुस्सह हुनकर रोष
4. समय केहन भेल घोर हे शिव
   कन्द मूल फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर
5. भारत दशा एहन वितयित अछि साधु कहाबथि चोर
   उत्तम अधम अधम गति उत्तम एहन काल अछि घोर
6. मोल भल साक्षी साहेबराम।
   गमहिँ पड़यलहुँ कलह न कयलहुँ त्यागल धरमिक गाम।
   ग्राम पिंडारुछ कयलहुँ हम तुछ तोहरहु कयल प्रणाम।

उपर्युक्त पंक्तिसँ स्पष्ट अछि जे एहि प्रकारक रचनामे ओ अपने मनोगत भावकेँ सामाजिक यथार्थक परिवेशमे अभिनव रीतिएँ व्यक्त कएने छथि। एहन रचनामे केवल ओ अपन भक्तिभावटाक वर्णन नहि करैत छथि, केवल अपन वैयक्तिक भक्तिनिवेदनेटा नहि करैत छथि, प्रत्युत समाजक अधोगतिक वर्णन आत्मानुभूतिक रुपमे करैत छथि। इएह आत्मानुभूतिक तत्व आगाँ नवीन रीतिक गीतक सबसँ प्रमुख तत्वक रुपमे गृहीत भेल। एहू दृष्टिएँ चन्दाझाक कविताक महत्वक आकलन कएल जाए सकैत अछि।

किन्तु देशदशाक चित्रणमे लिखित हिनक अनेक रचना अछि, जकर उद्देश्य भक्तिभावाभिव्यक्ति नहि, देशदशाक यर्थाथ चित्रणेटा करब अछि। एहन दुइगोट रचना पूर्वहि उद्धृत कएल जा चुकल अछि-सामाजिक अव्यवस्था एवं अकालजन्य दुरस्थितिक प्रसंग। ओही प्रकारक देशदशाक विषमता ओ अव्यवस्थाक चित्रण निम्नांकित पंक्तिमे सेहो भेल अछि आओर से बड़ यथार्थ पूर्ण रीतिएँ :-

सुखी देखैछि दुइ गोट चोर ओ भिखारि।
बहुत खर्च वादि बन्धु बन्धु बीच मारि।
नवीन व्याधि आधिसँ समस्त स्वास्थ्य टारि।
अनर्थ दैव सृष्टि देखु दृष्टिकेँ उघारि।।

एकर अतिरिक्त 'चन्द्रपद्यावली'मे संकलित राजनैतिकपद (357-59), वेश्योपालम्भगीतम् (461), लोभीगीतम् (481), रेलगीत (482) आदि सेहो उल्लेखनीय थिक। एहि रचनासभक उद्देश्य अछि तत्कालीन परिस्थितिक यथार्थ

चित्रांकन करब - अंगरेजी राज्यक स्थापनासँ लाभ ओ हानि, तत्कालीन वेश्यावृत्तिक आधिक्य ओ तकर दोष, प्रथम-प्रथम मिथिलामे रेलगाड़ी चलबासँ जनसामान्यक विस्मयभाव ओ तकर प्रतिक्रिया आदि। राजनैतिक पदमे कचहरीक जेहन व्यंग्यपूर्ण चित्रण अछि ताहिसँ नवीन शासनव्यवस्थाक प्रति हुनक धारणा सुस्पष्ट परिलक्षित होइत अछि :-

'न्याय भवन कचहरी नाम। सम अन्याय भरल तेहि ठाम।
सत्य वचन विरले जन भाष। सम मन धनक हरण अभिलास।'

आदि। ई तथ्य कतबा यथार्थ अछि, से भुक्तभोगी सएह जनैत छथि।

हिनक एहि प्रकार रचना देशदशाक वर्णन करैत सामाजिक दोषादि दिसि ध्यान आकृष्ट करैत अछि ओ सुधारक प्रेरणा दैत अछि। अतः स्थान-स्थान पर ओ उद्बोधन सेहो करैत छथि :-

दूध ओ दही नहीं स्वकण्ठकेँ सुखाउ।
अन्न ई महार्घ तँ जनेर कीनि खाउ।
नीच कर्ममे रहैछि धर्मकेँ बढ़ाउ।
की अहाँ छलौं भेलौं से सोचिकेँ लजाउ।

एहन रचना मध्य मार्मिकता उत्पन्न करबाक हेतु ओ कखनहुँ हास्य-व्यंग्यशैलीक प्रयोग करैत छथि तँ कखनहुँ वक्रतापूर्ण लक्षणा ओ व्यंजनाक। मूर्खक वर्णन उदाहरणार्थ प्रस्तुत अछि :-

आयसँ बहुत खर्च कर्ज नार छूट
गेह मध्य छल सँ गमार आबि लूट
तथा
वासमे सन्देह हो उपाति हेतु मारि।
मूर्ख नीच नारिसँ सुनैछ नित्य गारि।

तथा कतिपय ब्राह्मणक अमर्यादित भोजनप्रियताक वर्णन सेहो द्रष्टव्य थिक :-

चूड़ा दही बाभन सोंटथि गटगट रे।
बिनहि नओत बेसि जाथि निरहट रे।

एहि प्रकार चन्दाझा देशदशाक बहुविध वर्णन कएल जे पूर्ववर्ती मैथिली काव्यधाराकेँ ध्यानमे रखैत अभिनव प्रतीत होइत अछि। आगाँ मैथिली कवितामे नवीन गीतकाव्यक अतिरिक्त प्रगतिवाद-प्रयोगवादक अन्तर्गत जाहि रीतिक रचनाक परिपाटी चलल, तकरहु बीज हमरालोनिकेँ चन्दाझाक रचनामे भेटैत अछि। 'उपायहीन लोककेँ सुखायगेल भोट' लिखि विपन्न जनताक जे चित्र ओ अंकित कयल, से तत्कालीन वातावरणकेँ ध्यानमे रखैत कतेक प्रगतिशील छल, से कोनो अध्येताक हेतु सहजहिँ संवेद्य होएत।

प्रयोगक क्षेत्रमे चन्दाझाक एहन कोनो रचना नहि अछि जकरा दृष्टान्तक हेतु नहि राखल जा सकए। मैथिली भाषामे रामायणक रचना करब पैघ प्रयोग छल, कारण,

ओहिसँ पूर्व भक्ति-शृंगारपदक अतिरिक्त अन्य प्रकारक रचना करब सोचलहु नहि गेल छल। तहिना मैथिली गद्यकेँ साहित्यक माध्यम बनाएब पैघ प्रयोग छल। मुक्तक-रचनाक क्षेत्रमे ओ प्राचीन शिल्पक अनुसरण कएलक, किन्तु देशदशाक विषम चित्रणक हेतु ओ अधिकांश आन-आन संस्कृत छन्द प्रयुक्त कएल जे मैथिली कविताक इतिहासमे नवीन प्रयोग छल।

मुदा हिनक रचनाक सफलता युगसर्जनाक दृष्टिएँ-भाषाक सरलता, स्वच्छता ओ सहजता तथा अभिव्यक्तिक मार्मिक व्यंग्यशैली पर आधारित अछि। हर्षनाथक भाषाक संग यदि हिनक भाषाक तुलना कएल जाए तँ भेद स्पष्ट भए जाएत। ई कविताक भाषा एवं सामान्य व्यवहारक भाषामे भेद नहि रहए देल। आरम्भमे एहि हेतु हुनक कुचेष्टा भेल, निन्दैँ 'कवीश्वर'क उपाधि हुनका देल गेल, मुदा ताहिसँ ओ विचलित नहि भेलाह, प्रत्युत दृढ़तापूर्वक कविताकेँ युगजीवनक संग सम्बद्ध कए देल। प्रो. रमानाथझाक शब्द मे- "मैथिलीमे जे रचना संस्कृतबहुल होइत होइत चरम पर पहुँचि गेल छल ओ तेँ ई साहित्य जे लोकसाहित्यसँ दूर होइत होइत वर्गीय भए गेल छल तकरा ई तोड़ल ओ लोकरचना कए मैथिलीकेँ पुनः लोक साहित्य बनाओल" (क. कु.)। भाषा ओ अभिव्यक्तिक ई प्रवृत्ति हिनक मुक्तक-रचनेटामे नहि अछि, 'मिथिलाभाषा रामायण'हु मध्य अछि। स्थान-स्थान पर 'टेगरा पोठी चाल दै रोहुक शिर किसाय', 'कनही गायक भिन्न बथान', 'कहरिक तरु पर सितुआ चोख', 'चोर सहथि की कतहु इजोत', 'नाक बड़ ऊँच कान दुहू बूच' प्रभृतिक प्रयोगसँ हिनक भाषा बड़ प्रभावपूर्ण, स्वाभाविक एवं मार्मिक भए गेल अछि।

वस्तुतः आबहु आधुनिक काव्य-धाराक तरुवर हिनकहि कविप्रतिभा ओ व्यक्तित्वक उर्वर भूमि पर अवलम्बित भए नव-नव प्रवृत्तिक शाखा-प्रशाखा धारण कए रहल अछि। 1880 सँ लए 1925-30 ई. धरि, की भाववृत्तिमे आ की भाषा ओ अभिव्यक्ति-रीतिमे, मैथिलीक काव्यरचना चन्दाझाक एकान्त अनुसरणमे भेल अछि, अतः एहि अवधिकेँ 'चन्दाझायुग' कही तँ अतिशयोक्ति नहि होएत।

2. देशदशा, उद्बोधनात्मक प्रभृति समाजसापेक्ष कविता - चन्दाझासँ लए सन् 1930 ई. धरि।

एहि वर्गक अन्तर्गत ओहन कविताक गणना होएत जे चन्दाझाक नवयुगीन दृष्टिक अनुरूप रचित भेल। अतः एहि श्रेणीक रचनाक विषय भेल मिथिलाक अवनतिक दिग्दर्शन ओ तकर उत्थानक उद्बोधन, मैथिली भाषाक पतनक प्रति क्षोभ ओ तकर पुनरुत्थानक प्रति यत्न। दोसर शब्दमे, मिथिलादेशदशाक वर्णन, कुरीति प्रभृतिक चर्चा नवीन कविताक प्रधान विषय छल। अतः वस्तुनिष्ठ तत्व एतेक उभरिकेँ सम्मुख आएल

जे रचना नीरस, स्थूल ओ इतिवृत्तात्मक भए गेल। कविताक उद्देश्य भए गेल एक मात्र समाजकेँ सुधारब। एहि युगमे दुइटा उल्लेखनीय कविताक संग्रह प्रकाशित भेल- 1 यदुनाथझा 'यदुवर' द्वारा संकलितसम्पादित 'मैथिली गीतांजलि' एवं 2 श्यामानन्दझा (1906-49) द्वारा सम्पादित 'मैथिली-सन्देश'। 'मैथिली गीतांजलि'क भूमिकाक निम्नलिखित पंक्ति - "ज्ञान-शृंगार सम्बन्धिनी कविता पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल अछि। किन्तु आब समय बदलि गेल अछि। आब विकट मार्मिक समय उपस्थित भेल अछि... वीर वेषमे माता मिथिलाक भक्तिपूर्ण गानमे तन्मय होबाक चाही। एहिमे देशानुराग, देश ओ समाज कुरीति सुधार सम्बन्धिनी उत्साहवर्धिनी कविता, विशेषतः गानक संग्रह भेल अछि" - ओहि युगक मूल-प्रवृत्तिकेँ नीक जकाँ स्पष्ट करैत अछि। श्यामानन्द झा तँ अपन भूमिकामे एतेक धरि लिखल जे भनहि एहन रचना उत्कृष्ट कोटिक कविता नहि हो, मुदा ओकर मूल्यांकन समाजोपयोगिताक दृष्टिएँ होएबाक चाही।

अतः ओहि युगमे अधिकांश कविता ओही उपयोगिताक दृष्टिएँ लिखल गेल। नहि तँ ओहिमे कल्पनाक कमनीयता अछि आओर ने भावक वैशद्य अछि, नहि तँ अभिव्यक्तिक लाक्षणिक सूक्ष्मता अछि आओर ने व्यंग्यार्थक मार्मिकता अछि। मुदा ओहिमे समाजसापेक्षता अछि सरल सहज शब्दमे ओ तेँ ओहिमे प्रभाव उत्पन्न करबाक क्षमता अछि। एहि युगक पश्चातो देशदशाक वर्णन ओ उद्बोधन कएल गेल। आइओ से होइत अछि। मुदा ओहि मध्य ओ एहि मध्य विषयप्रतिपादन एवं अभिव्यक्तिसम्पादनमे स्पष्ट अन्तर अछि, जे यदुवर- छेदीझाक रचनाक यात्री-मधुपक रचना संग तुलनासँ स्पष्ट भए जाएत। तुलनाक पश्चात् ओहि युगक प्रवृत्ति भनहिँ शुष्क ओ पुरान रीतिक लगैत हो, किन्तु तहिआ ओ कतेक अभिनव ओ प्रगतिशील रहल होएत तकर अनुमान करब कठिन नहि अछि।

एहि कालमे अवतीर्ण कविगणमे चन्दाझाक अतिरिक्त जीवनझा, गणेशझा, पद्मनाभझा, केदारनाथझा, ताराचरणझा, पुलकितलालदास 'मधुर', छेदीझा, रामचन्द्रमिश्र, यदुनाथझा 'यदुवर', रघुनन्दनदास, कुशेश्वरकुमर, बुद्धिनाथझा, गंगाधरझा, जनार्दनझा, सीतारामझा, भोलालालदास प्रभृतिक नाम अग्रगण्य अछि। किन्तु नवीन गीतक प्रवाहक भूमिकामे एहि युगक भावप्रवृत्तिकेँ अपन काव्यरचना द्वारा घोषणा कएनिहार कविगणमे आनन्दझा (संग्रह-'रसनिर्झरिणी'), कांचीनाथझा 'किरण', जयनारायणझा 'विनीत', श्यामानन्दझा प्रभृतिक नाम अग्रगण्य अछि। एहिमे विनीतजी ओ किरणजी यदाकदा पश्चातो रचना प्रकाशित करबैत रहलाह, किन्तु ताहि रचनासभमे कतोक ठाम ओही बीतल युगप्रवृत्तिक पुनरावृत्ति होइत रहल।

उपर्युक्त कविगणमे यदुनाथझा 'यदुवर' (1881-1935) निस्सन्देह ओहि युगक प्रतिनिधित्व करैत छथि, कारण, ओएह सर्वप्रथम 'मैथिली गीतांजलि'मे युगप्रवृत्तिक

विश्लेषण कएल। एतावता सबसँ पहिने ओएह युगक आवश्यकताकेँ आधुनिक रीतिएँ चिन्हल। अतः ओही रीतिक कविता इहो लिखल - मिथिलाक अधोगति आ मैथिलीक तिरस्कार-विषयक । हिनक विषय-प्रतिपादन-रीति भेल तुलनात्मक-पूर्वक उत्कर्ष एवं साम्प्रतिक अपकर्षक तुलना कए, तत्पश्चात् उद्‌बोधन कए। द्रष्टव्य थिक :-

1. मातृभूमि उद्धार पाठ जे सदत पढ़ै छथि।
नित निर्भय उन्नतिक शिखर सोपान चढ़ै छथि।। आदि
2. देश जाति भाषा विषय जनिक हृदय शुचि प्रीति।
सैह महापण्डित थिकथि, सैह विशारद नीति।। आदि

प्रायः इएह यदुवरजी यदुनाथझा, मुरहोक नामसँ प्राचीन रीतिक गेय पद पत्रपत्रिकामे प्रकाशित करबैत छलाह।

एहि युगक दोसर प्रमुख कवि छथि छेदीझा 'मैथिलमधुप' (1893-1973)। हिनको कविता मध्य मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक दुरवस्थाक चित्रण अछि। मुदा उद्‌बोधनक दृष्टिएँ हिनक रचना अपेक्षाकृत अधिक प्रौढ़ ओ प्रवाहपूर्ण अछि। उदाहरणार्थ :-

1. बहुत बिताओल काल, भला आबहु तँ जागू।
दृढ़ भए भरकछ मारि, देश-सेवामे लागू।। आदि
2. कहू जन्म नेने किये छी अहाँ औ।
स्वभाषा उपेक्षा सहै छी सदा औ।
विचारु गमारी तथा अन्य जाया।
बजैये कि 'है मैथिली एक भाषा'।। आदि

पुलकितलालदास 'मधुर' (1893-1943) विषयक दृष्टिएँ तँ अवश्य युगीन प्रवृत्तिकेँ ग्रहण कएने छथि, मुदा भाषाशैली हिनक संस्कृतनिष्ठ अछि। मिथिलामैथिली-विषयक कवितामे इतिवृत्तात्मकताक जे क्रमिक ह्रास भेल एवं मैथिली भाषाकेँ पुनः जे सरस अभिव्यंजना प्राप्त भेलैक, ताहिमे हिनक योगदान अप्रतिम अछि। दोसर, मैथिलीकेँ परम्परागत गेयछन्दक कारासँ मुक्त कए नव-नव छन्द दिसि अग्रसारित करबामे हिनक प्रयास स्तुत्य अछि। द्रष्टव्य थिक 'मातृवन्दना' शीर्षक हिनक कविताक निम्नलिखित पंक्ति :-

जय प्राकृतिक सुषमा समन्वित सतत सुस्मितहासिनी।
आमोद पूरित मोदमय, भारत-सुअंक विलासिनी।।
मृदु मधुर हृदयोल्लासिनी, दारिद्र्य दुःख विदारिणी।
जय स्निग्ध सरस सुधन्य शुचि, मिथिले जननि भयहारिणी।।

एहि युगक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि चौगामाक कविवर सीतारामझा (1891-1975)। कवीश्वर चन्दाझाक पश्चात् इएह कविवर मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ सबसँ अधिक लोकप्रिय बनाओल। हिनक प्रकाशित पुस्तकमे 'अम्बचरित'

महाकाव्यक अतिरिक्त मौलिक पुस्तक अछि 'उनटा बसात', '[illegible]', 'पढ़ुआ-चरित ओ पूर्वापर व्यवहार', 'परिचय-दर्पण', 'शिक्षापुष्प' आदि। हिनक गीताक अनुवाद सेहो उल्लेखनीय अछि। 'मैथिली काव्योपवन' नामसँ 1972 ई.मे मैथिली एकेडमी, इलाहाबाद द्वारा काव्य-परिचय, ऋतुवर्णन, परिचयकुंज, कथाकुंज एवं प्रकीर्णकुंज विषयक पाँच विभागसँ युक्त हिनक नव-पुरान कविताक एकटा [illegible] आकर्षक रूप-सज्जामे प्रकाशित भेल। हिनक रचनाक प्रमुख विशेषता थिक ठेठ मैथिलीक चमत्कारपूर्ण ठाठ। विषय हिनकहु अछि देशदशाविषयक, किन्तु सरल, स्वाभाविक ओ स्पष्ट भाषा एवं प्रवाहपूर्ण छन्दविन्यासक दृष्टिएँ हिनक रचना अद्वितीय अछि।

ई अपन कवितामे हास्यव्यंग्यक वक्रता भरि भावाभिव्यक्तिकेँ बड़ मार्मिक बनाए दैत छथि। मुक्तकक क्षेत्रमे तँ ई बेजोड़ छथि। वस्तुतः हिनक अधिकांश रचना मुक्तक सएह थिक। एहि क्षेत्रमे यदुवरजी तथा धनुषधारीलालदासक पश्चात् इएहटा छथि।

आरम्भमे कविवरजीक भाषाशैली परिमार्जित नहि छल। किन्तु क्रमिक हुनक रचना परिमार्जित, परिनिष्ठित तथा प्रवाहपूर्ण होइत गेल। अपन जीवनक अन्तधरि ओ अनवरत काव्यरचनामे संलग्न रहलाह। 1960 ई. क पश्चात् रचित हिनक कविता पूर्ववर्ती कवितासँ उत्कृष्ट कोटिक अछि, किन्तु भाषाप्रवाह हुनक ओही रीतिक अछि जाहि हेतु ओ प्रसिद्ध छथि। एम्हर आबि शृंगारविषयक रचना, विशेषतः ऋतुवर्णन सेहो कएल, मुदा हुनक रचनाक जे गुण सभ दिनसँ लोकके आकृष्ट करैत रहल, से थिक देशदशाक विषमताक सरल, प्रांजल ओ प्रभावपूर्ण भाषामे व्यंग्यकाकोक्तिपूर्ण वर्णन। एम्हरहु प्रकाशित ओही प्रकारक रचना पाठककेँ अधिकाधिक आकृष्ट करैत अछि। निम्नलिखित उद्धरणसँ हुनक रचनाक वैशिष्ट्य स्पष्ट भए जाएत :-

1. कहाँ पानि तँ लावए पात, पटवा आड़ न जाय बचान।
लाख बुझओने सुनय न कान, ई लक्षणसँ बुझू अकान।
2. केश छल्ला जकाँ माथ हल्ला जकाँ, आँखि मल्ला जकाँ दाँत फारे बुझू,
बोल रोड़ा जकाँ, चालि घोड़ा जकाँ, पेट मोरा जकाँ वा कमारे बुझू।
3. आएल पावस राति अन्हरिया करिया घन चारू दिसि घेरि।
छपित चान रवि, भान एक सम, निसि दिन साँझ सकारि।।
4. पंडितजी ! अपने तँ ज्योतिषकेँ छानि देखल।
कहने सब करैये ई हमहुँ मानि देखल।
X X X
बनिनिक समादर बनिकिरनिक समान देखल।
X X X
साधुकेँ भैंसैत बैसल, चोरकेँ फनैत देखल
गरीबकेँ हँसैत आ धनीककेँ कनैत देखल।

उपर्युक्त कविक अतिरिक्त भोलालाल दास (1897-1977)क नाम सेहो उल्लेखनीय अछि जे अधिकांश प्राचीन रीतिक रचना कएल राग-ताललयाश्रित, भाव अवश्य युगानुरूप। हिनक 'युवक' शीर्षक कवितामे जे उद्बोधनात्मक शक्तिक उद्घोष भेल, से उल्लेखनीय अछि, कारण, एहि रचनामे निबद्ध क्रान्तिभावना युगक अन्तस्तलमे उताहुल होइत युद्धघोषणा छल जे अपनामे अग्रिम युगक उत्साह नुकओने छल :-

भूमिकम्प छी प्रबल विश्वविप्लवकारी हम।
छी अति प्रखर तरंग रुढ़ि-गिरि-रजकारी हम। आदि

एहि क्रममे श्रीजयनारायणझा 'विनीत' (ज. 1906, क. स. 'पुष्करिणी')क शुद्ध उद्बोधनात्मक पंक्ति सेहो उद्धृत कएल जाइत अछि, जाहिमे नवीन गीतक भावनारुप शब्द-विन्यासक बीज निहित अछि, मुदा विषय अछि ओहीयुगक बदलैत परिवेशक :-

जीवित जड़वत छी आइ अहाँ,
छी और शरद तोयद अशक्त
बनु विश्वव्योम पावसपयोद,
गरजू बरसू करु बीज व्यक्त।

किन्तु एहि युगक अन्त होइत-होइत सामाजिक समस्याक अनुसार देशदशाक चित्रणक रुप बदलि गेल, आब अन्यो समस्या पर कविगणक ध्यान गेल। सबसँ अधिक ध्यान आब आकृष्ट कएलक नारीक सामाजिक दुर्दशा। नारी-दुर्दशाक मूल-कारण बुझल गेल बालवृद्ध-विवाह ओ अशिक्षा। वैधव्य-विगलित स्त्रीक दशाक बड़ करुण वर्णन पुरान कविक अतिरिक्त नव-नव कविगण सेहो कएल। एहि विषय लए कविता लिखल मुख्यतः छविनाथशर्मा, हेमादेवी, भोला लाल दास आदि तथा नव कविमे लक्ष्मीपतिसिंह, यात्रीजी प्रभृति। कुशेश्वरकुमरकेँ (1891-1943) ई विषय एतेक संवदित कएलक जे नारीक विविध समस्या पर कविता लिखि 'स्त्रीशिक्षा' नामक पुस्तक पृथक रुपमे छपाए देल। नारीविषयक किछु कविताक उद्धरण नीचाँ देल जाइत अछि, जाहिसँ एहि समस्याक प्रति युगीन प्रवृत्ति नीक जकाँ स्पष्ट भए जाएत :-

1. हे प्रभु बात ककर हम मानी
स्वामी सतत इएह कहै छथि परदा प्रथा हटाऊ
बनू शिक्षिता, रहु सभ्य भय, आबहु लोक कहाऊ
-नवकनेआ

2. कुलदेवता स्वसुरके मानल, कुलदेवी सन सासु विचारि
दुर्गति सहि सेवा सभ कयलहुँ, तैओ हुवै अछि फज्झति गारि
-हेमादेवी

3. पिता दान कय तजथि मुरुख कर बेचि गमाबथि
बाल्य कालमे मातृपदक गौरव गुरु पाबथि।
-भोलालालदास

4. रोकी बाल-विवाह यत्नसौं, ताकि ताकि सब ठाम।
नहि पुनि बाला वृद्ध वहू बनि कल्पथि आठो याम।
-कुशेश्वरकुमर

5. परतारि क मड़बा पर बहीन ल गेल
की दन कहाँ दन भेल विवाह भ गेल।
-यात्री

कहबाक तात्पर्य जे ओहि युगमे कविता सामाजिक आन्दोलनक प्रमुख साधनक रुपमे ग्राह्य भेल। अतः एहि प्रकारक रचनामे जनजागरणक स्पष्ट चित्रण भेटैत अछि, जकर भावविषयक प्रधान गुण अछि समाज-सापेक्षता। अतः मिथिलाक जनजीवनकेँ प्रभावित कएनिहार जे किछु राजनैतिक वा सामाजिक परिवर्तन भेल, तकरहु आधार पर कविता रचल गेल। ई समाजसापेक्षताक प्रवृत्ति आबहु अछि, ओकर रुपटा बदलि गेल अछि। नवीन रीतिक गीतकाव्यकार वा प्रगतिवादी कविगणमे सामाजसापेक्षता अछिए, किन्तु कतहु ओ 'वाद'क रुप धारण कएने अछि तँ कतहु विक्षोभ ओ कुण्ठाक। भाषाशैली ओ शब्दविन्यासक दृष्टिएँ तँ कविताक स्वरुप आगाँ एतेक बदलि गेल जे एहि युगक कविताक संग तकर कोनहु प्रकारक समता नहि। हँ, 1930-35 ई.मे लिखनिहार कविगणमे तकर छाया मात्र देखल जा सकैत अछि।

3. नवीन प्रगीत-काव्य, जकर अन्तर्गत सम्पूर्ण 'वाद' साहित्य

अंगरेजी 'लिरिक' शैलीमे जे कविता भेल सएह नवीन प्रगीतकाव्य कहबैत अछि। एहि गीतकाव्यक रचना गएबाक हेतु नहि, पढ़बाक हेतु होअए लागल, अतः नवीन प्रगीतकाव्य संगीतशास्त्रानुकूल नहि रचित भेल। एकर उद्देश्य भए गेल एकमात्र प्रवाहपूर्ण रीतिएँ पढ़ब, भनितादिक प्रयोगहुकेँ एहि ठाम परित्याग कएल गेल। अतः मुक्त-छन्दमे रचित रचना नवीन प्रगीतकाव्यहिक अन्तर्गत परिगणित होएत। नवीन-गीतकाव्यक प्रमुख पाँचटा तत्व मानल गेल-1. आत्मनिष्ठ तत्व, 2. अभिव्यक्तितत्व, 3. आकारतत्व, 4. गीततत्व एंव 5. भावैक्यतत्व। स्वानुभूतिपूर्ण रागात्मक आत्मनिवेदन भेल आत्मनिष्ठतत्व, मुदा स्वानुभूति कोनहु वस्तुक भए सकैछ। अभिव्यक्तितत्व नवीन प्रगीतक प्रधान तत्व थिक, कारण, एहि तत्वक आधार पर पूर्ववर्त्ती कविताक संग एकर अन्तर स्पष्ट होइत अछि। जाहि ठाम पूर्ववर्त्ती कविता इतिवृत्तात्मकता छल, वाक्यार्थक मुख्यता रहैत छलैक, ताहि ठाम नवीन प्रगीत काव्यमे लाक्षणिक चमत्कार आएल, शब्दविन्यासमे सरसता ओ माधुर्यक समावेश भेल। आकारतत्व ओ भावैक्यतत्व प्राचीन रीतिक गीतक प्रधान विशेषता छल ओ एहू रीतिक कविताक प्रधान विशेषता रहल भावानुरुप संक्षिप्त आकार ओ एकहिटा भावक अभिव्यक्ति। मुदा संगीतशास्त्रक बन्धनसँ मुक्त भेलासँ पैघ-पैघ कविताक रचना सेहो आरम्भ भेल। गीततत्वक तात्पर्य संगीताश्रित होएब नहि, सुकुमार, सुलभ ओ लयात्मक शब्दविन्यास मात्र। किन्तु प्रगतिवादी ओ प्रयोगवादी रचनामे

भावानुरुप भाषाक प्रयोग मात्र ग्राह्य भेल। ओहि मे गीततत्व रहल प्रवाह मात्र। प्रयोगवादी कवीगण तँ यत्किंचित 'लय' वा 'प्रवाह'सँ सर्वथा छुट्टी पाबि लेबए चाहैत छथि। तथापि जाबत काल धरि हुनक रचना कविता रहत ताबत काल धरि से संभव प्रतीत नहि होइत अछि। अतः लय वा 'प्रवाह' कविताक प्रधान गुण थिक जे कवितामे रहबेटा करत। एही कारणे प्रो. रमानाथ झा चन्दाझासँ लए अद्यावधि रचित समग्र काव्यसाहित्यकेँ, कथाकाव्यकेँ छोड़ि, नवीन गीतकाव्यक अन्तर्गत परिगणित कए लेने छथि।

परन्तु अंगरेजी-रीतिक प्रगीत (Lyric) क लयात्मकता एंव नव्यतम प्रयोगवादी कवितामे क्रमिक प्रगाढ़ होइत गद्यात्मकता मध्य निहित अन्तरकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि। ताही दृषिटएँ 1925 ई.क पश्चातक विकसित आधुनिक काव्य-धारकेँ दुइ श्रेणीमे विभाजित कए सकैत छी- 1. प्रगीत-काव्य एंव 2. नव्यतम प्रयोगवादी काव्य (1957-58सँ)। द्वितीय श्रेणीक कवितामे भाव-तत्व ओ नादतत्वक अपेक्षा बुद्धितत्व एंव गद्यात्मकताक प्रधानता स्पष्ट रुपसँ परिलक्षित होइत अछि। जाहि मुक्त- वृत-रचनामे लय ओ प्रवाह अछि, गति ओ यति तथा आत्मानुभूतिक रागात्मक संहिति अछि, भनहिँ से प्रगतिवादी-प्रयोगवादी रचना किएक नहि हो, तकरहु प्रगीत-काव्यक अन्तर्गत परिगणित करब युक्ति-संगत होएत।

नवीन गीतकाव्यक आरम्भ 1925 ई.मे 'श्रीमैथिली'क प्रकाशनक पश्चात् मानबाक चाही। भुवनजीक कविता 'प्रेमसम्मिलन' ओहि पत्रिकाक मइ अंकमे आ कंटकजीक 'अहाँ ओ हम' अप्रैल अंकमे प्रकाशित भेल। एकर अतिरिक्त पूर्व-युगमे परिगणित भेनिहार कवि अच्युतानन्ददत्त (नि. 1944)क रचनहुमे नवीन गीतकाव्यक नूतन छन्दविन्यास एंव अभिनव लाक्षणिक प्रयोग स्पष्ट होअए लागल छल। द्रष्टव्य थिक पुरना 'पद्यसंग्रह'मे संकलित 'नन्दनक कोकिलासँ' शीर्षक कविताक निम्नलिखित पंक्तिः-

किअ मलिन आइ अछि शरदचन्द्र, नक्षत्रावलिहुक ज्योति मन्द।
रे शीत पवन ! सन्ताप आइ, दए रहले अछि तन माँझ धन्द ।

नवीन गीतकाव्यक आत्माभिव्यक्तिमूलक तत्व चन्दाझाक रचनहिसँ उभरए लागल छल, किन्तु एहि प्रकारक गहन भावात्मकताक संग लाक्षणिक शब्दविन्यासक प्रवाह 1925 ई.क पश्चात् स्फुट भेल। तत्पश्चात् एहि रुपक रचना प्रचुर मात्रामे पूर्ववर्त्ती युगक इतिवृत्तात्मक देशभाषाप्रेमविषयक कविताक समानान्तर होअए लागल। एहि नवीन प्रवृत्तिकेँ सबसँ पहिने चिन्हल बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' तथा ओहि प्रवृत्तिक अनुकूल प्रगीतकाव्यक रचना कएल जे 'आषाढ़' कवितासंग्रहमे संकलित भेल। ओकर भूमिकामे ओएह सभसँ पहिने एहि नवीनप्रवृत्तिकेँ स्पष्ट करैत एकर आवश्यकताक व्याख्या कएल- "आइ कान्हि नव्य प्रवाह। छन्दक बन्धन उठि गेल......'आषाढ़'क भाषा आधुनिक थिक। जनिक कान तिरहुत-मलारक रसरंगसँ भरल हो......तनिका

निमित्त ई प्रयास नहि। 'आषाढ़'क रचनाक उद्देश्य जे छैक से ओहीमे निहित छैक।......हँ, एतवा कहि देब आवश्यक जे जँ एखन एकर समय नहि छैक, तँ भविष्यमे अओतैक।" एहि प्रकार ओ प्रगीत-काव्यक नव्यतम प्रवृत्तिक विश्लेषण कए एहि रीतिक काव्यरचनाक परम्पराकेँ सुदृढ़ कए देल। एही कारणे डा. जयकान्त मिश्र 'आषाढ़'क प्रकाशनकेँ मैथिली साहित्यमे ओतबे महत्वपूर्ण बुझैत छथि जतेक महत्वपूर्ण अंगरेजी साहित्यमे वर्ड्सवर्थक 'लिरिकल बैलेड्स' (1798) अछि। यद्यपि आबहु पूर्ववर्त्ती युगक भावविचार अभिव्यक्त होइतहि छल, मुदा से प्रगीत-काव्यक प्रमुख वैशिष्टय, लाक्षणिक ओ व्यंजक शब्दयोजना तथा नवीन छन्दविन्यासक परिवेशमे होअए लागल। अवश्य एहि हेतु हिन्दीसाहित्यक छायावादी प्रवृत्ति प्रभावित कएलक। किन्तु ओकर 'अति' एहिमे नहि आएल ओ मैथिलीक नवीन प्रगीतकाव्यमे ने तँ तादृश दुरुहता अछि आ ने भावगत समाज-निरपेक्ष उत्कट वैयक्तिकता अछि। एहि रीतिक रचनाक मुख्य गुण भेल स्वानुभूतिपूर्ण भावाभिव्यंजना। अतः एहि श्रेणीक ओहने कविता अधिकाधिक संवेदनशील भेल जाहिमे सरलता ओ सहजताक दर्शन होइत अछि, पाण्डित्यपूर्ण उक्तिविन्यास ओ भावगत संस्कृतनिष्ठताक नहि।

एहि प्रकार प्रगीतकाव्यकारलोकनिकेँ भावाभिव्यंजनाक दृष्टिएँ दू मुख्य श्रेणीमे बाँटि सकैत छी- 1. ओ कविगण जे भविष्योन्मुख अथवा कम-सँ-कम समसामयिक नवीनताक विशेष आग्रही छथि, अर्थात् ओ कविगण जे अपन काव्यरचनाक उद्देश्य आत्मानुभूतिक सरल सहज अभिव्यक्ति मानैत छथि तथा जनिक रचनामे युग-प्रवृत्तिक अभिव्यक्ति भेल। एहि कविगणक प्रेरक भेल समसामयिक अन्य भाषासाहित्यक भाव-प्रवृत्ति। अभिव्यक्तिशैली हिनक अनलंकृत, उक्तिवैचित्र्य उत्पन्न करबाक आग्रहसँ अतीत होइत अछि। तेँ हिनकालोकनिक कविताक भाषा शिक्षितवर्गक वार्त्तालापक निकटक भाषा सएह होइत अछि। एहन कविगणमे भुवनजी, महावीर झा 'वीर', यात्रीजी, श्री आरसीप्रसादसिंह, प्रो. तन्त्रनाथझा, मोहनजी, ब्रजकिशोरवर्मा, श्रीरामचरित्र पाडेय 'अणु', श्रीगोविन्दझा, श्रीउपेन्द्रनाथझा 'व्यास', श्रीसुधांशुशेखर चौधरी, अमरजी, राघवाचार्य, राधाकृष्णझा 'बहेड़', गोपेश, श्रीश, निरंकुश, किसुनजी, श्रीकेदानाथलाभ, दीपकजी, इन्दु, श्रीमायानन्दमिश्र, रेणु, लोकपति आदि अधिकांश प्रौढ़ कविगणक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहि कविगणमेसँ कतोक संस्कृततत्समप्रधान भाषा ओ अलंकारोक प्रयोग करैत छथि, किन्तु जनिक कविताक उद्देश्य रहैत अछि कृत्रिम उक्ति-वैचित्र्य उत्पन्न करब नहि, प्रत्युत विविध अनुभूतिक सरल ओ सहज चित्रण मात्र करब एवं 2. ओ कविगण जे काव्य-प्रवृत्ति ग्रहण करबामे अतीतोन्मुख छथि। मुदा एहि प्रकारक अतीतोन्मुखता मैथिली काव्य-परम्परा दिसि नहि, संस्कृत काव्यपरम्परा दिसि रहैत अछि। मैथिली कविताक विकास इतिहासकेँ देखैत ई नवीनता अवश्य थिक, परन्तु आधुनिकता नहि। नवीनता एहि हेतुएँ जे संस्कृतकाव्यरीतिक प्रयोग नवीन गीतशिल्पमे नवीन वस्तु थिक, आधुनिक एहि हेतुएँ नहि जे आधुनिक भाववृत्तिक यत्किंचित

अभिव्यक्ति होइतहुँ एहि कविगणक रचनामे संस्कृतकाव्यक रमणीयार्थ प्रतिपादन करबाक उद्देश्यसँ उक्तिवैचित्र्यमूलक चमत्कारक प्रवृत्ति एतेक प्रधान भए जाइत अछि जे आधुनिक भावधाराक प्रवाह अवरुद्ध, स्वानुभूति कुण्ठित एवं दुर्बोध दलित भए जाइत अछि। एहन कविगणमे स्व. ईशनाथ, स्व. श्रीवल्लभझा, पं जीवनाथझा, पं.काशीकान्त मिश्र मधुप, प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन', बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', कलेभर्जी, पं. भवनाथझा आदि कविगणक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहि कविगणक ओएह रचना अधिक संवेदनशील भेल अछि जाहिमे शब्द-अर्थमूलक वैचित्र्यक आग्रह कम रहैत अछि। नवीन गीतकाव्यमे सरल ओ सहज भावाभिव्यक्तिक बाधक अति-दार्शनिकता सेहो भेल अछि। एहि दार्शनिकताक ग्रहण बंगला अथवा हिन्दीक छायावादी-रहस्यवादी कविताक प्रभावस्वरूप भेल बुझि पड़ैत अछि। एहि प्रकारक कविताक प्रमुख रचयिता जयनारायण मल्लिक ओ बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर' बुझि पड़ैत छथि। मुदा ई विभाजन हम भावांकनक रीति लए करैत छी। एकर तात्पर्य ई नहि जे एहि श्रेणीक कविगणमे ओहन प्रवृत्तिक दर्शन नहि होइत अछि जे आधुनिक प्रकारक अछि। अतीतोन्मुख कविगण साक्षात् वा असाक्षात् रीतिएँ पाश्चात्य-साहित्यक भाव वा शिल्पक प्रभावसँ असंपृक्त नहि रहैत छथि। तेँ अभिव्यक्ति शैलीक रुपमे आधुनिकता हुनकहुमे होइतहि अछि। अवश्य एहि प्रभावक उत्स थिक आधुनिक भाषान्तरक साहित्य। सुमनजीक 'तरूसँ' अंगरेजी सम्बोधित- गीत-शिल्पक एवं स्व. ईशनाथझा 'कृषक-कन्या' वा 'शिशु' शीर्षक कवितामे प्रकृतिक उपादानक प्रति नवीन दृष्टिकोण वा नवीन रीतिक भाव-तल्लीनताक जे दर्शन होइत अछि, तकर प्रेरणाबिन्दु भाषान्तरक साहित्ये थिक। मुदा अधिकांश कवितामे कहबाक जे रीति अछि, सूक्ष्म रमणीयार्थ उत्पन्न करबाक जे पाण्डित्यपूर्ण उक्तिवैचित्र्य अछि, से थिक संस्कृतसाहित्य-धाराक आलंकारिक प्रवृत्तिक प्रभाव।

नवीन प्रगीतकाव्यक रचना 1930 ई.क पश्चात् आइ धरि जे भेल अछि, तकर मुख्यतः दुइ भेद दोसरो दृष्टिएँ कए सकैत छी- 1. आत्मगत-तत्वप्रधान कविता एवं 2. वस्तुगततत्वप्रधान कविता। प्रथम कोटिमे आत्मानुभूतिक संवेदनात्मक तथा रागात्मक अभिव्यक्ति वैयक्तिक पृष्ठभूमि पर होइत अछि। एहि आत्मानुभूतिक उद्भव युगक विषमताक कारणे हो वा कुण्ठाक कारणे, सृष्टिरहस्यक उत्सुकताक कारणे हो वा प्राकृतिक सौन्दर्यजनित भावुकताक कारणे। एकरे अन्तर्गत आत्मानुभूति-मूलक सम्पूर्ण प्रकृति, रहस्यवादी वा स्वानुभूतिसँ ओतप्रोत कविताक गणना होएत। 'स्वरगन्धा'क पश्चात् प्रबल रुप धारण कएनिहार अनेक प्रयोगवादी रचनहुकेँ एहि श्रेणीक अन्तर्गत परिगणित कएल जाए सकैत अछि, कारण ओहुमे प्रयोगक अत्याग्रह- भाव वा शिल्पक क्षेत्रमे, कविक वैयक्तिक रुचिक परिचायक थिक। एहिमे केवल सिद्धान्तवादिता अधिक अछि तथा रागात्मकतासँ अधिक बौद्धिकता अछि, जकरे आधार पर घोर वैयक्तिकता लेने कविक कुण्ठा, अतृप्ति, अनास्था, नैराश्य आदि मनोवेगक चित्रण होइत अछि। अतः स्पष्ट अछि जे अधिकांश प्रयोगवादी रचना आत्मानुभूतिमूलके थिक।

आत्मानुभूतिमूलक होइतहुँ छन्द-बन्धहीन प्रयोगवादी रचना विभिन्न वाद-उपवादक संज्ञा धारण करैत गत तीन दशकसँ प्रमुख मुक्तक-काव्य-धाराक रुपमे विकसित होइत रहल ओ एहि धारामे अनेक नव-नव कविक उदय भेल। एहि काव्य-धाराक मुख्य वैशिष्टय भेल अपरिपक्व अतिबौद्धिकता, नकारात्मक जीवन-दृष्टि, नीरसता, प्रेषणीयताक अभाव, नित नूतन नवीनताक दुराग्रह आदि। एहि धारामे एहन बड़ कम कवि भेलाह जे अपन कलात्मक कौशल, भावात्मक संवेदना एवं बौद्धिक मौलिकतासँ प्रभावित करैत होथि। शताब्दीक सातम दशक बितैत-बितैत मुख्यतः एकर बौद्धिकता, नीरसता एवं लयहीनताक प्रतिक्रिया-स्वरुप नवगीतक नामसँ प्रगीत-काव्यक पुनरागमणक सूचना प्राप्त होअए लागल ओ एही क्रममे, मुख्यतः तरुण कविगण-द्वारा मैथिलीमे गजल-प्रयोगक प्राचुर्य बढ़ल, विविध मात्रा-संख्यामे सममात्रिक छन्दक रुपमे उर्दू 'गजल'क अन्त्यानुप्रास-योजनाक अनुरुप। वस्तुतः मैथिलीमे गजलक ई प्रयोग कोनो नव विषय नहि छल, पं. जीवनझा गजल-प्रभेदक अनेक रचना कए ओकरा अपन नाटकसबहिमे समावेश कएने छलाह, पश्चात् यदुवर, पं. आनन्दझा न्यायाचार्य एवं प. सीतारामझा, पर्यन्त एहि प्रभेदक रचना कएल। तरुण कविगण द्वारा फैशनक रुपमे जे धारा गत दशकमे प्रवाहित भेल, ताहिसँ एतबा अवश्य भेल जे एहिसँ प्रभावित भए कतोक वृद्ध अथवा प्रौढ कविगण, यथा, श्रीआरसीप्रसाद सिंह, श्रीसुधांशु शेखर चौधरी, श्री मायानन्दमिश्र, डा. श्रीकेदारनाथ लाभ प्रभृति एहि प्रभेदक रचना दिसि प्रवृत्त भेलाह। गजल उर्दू-फारसी भाषाक प्रकृति ओ संवेदनाक अनुरुप अछि ओहिना जेना नचारी, महेशवानी, समदाउनि आदि मिथिलाभाषाक अनुरुप अछि। अतः एखन धरि मैथिलीमे गजलक अपेक्षित भावानुभूतिक तीव्रता एवं उक्ति-भंगिमाक चमत्कार तँ नहि उत्पन्न भए सकल अछि, परन्तु छन्द-बन्धहीन प्रयोगवादी रचनाक एकरसता एवं शुष्कताकेँ तोड़बामे ई बहुत दूर धरि सक्षम भेल अछि।

दोसर कोटिक रचनामे आत्मानुभूतितत्व स्फुट नहि रहैत अछि। एहिमे प्रधान रुपेँ स्पष्ट रहैत अछि वस्तुनिष्ठतत्व। एहि श्रेणीक रचनामे ओ थिक जाहिमे परिस्थितिक वस्तुनिष्ठ चित्रण कएल जाइत अछि तथा जकर उद्देश्य होइत अछि देशदशाक यथातथ्य चित्रण कए समाजकेँ आकृष्ट करब। अर्थात्, एहन रचनामे सामाजिक पक्ष प्रधान रहैत अछि। प्रगतिवादी रचना एहि श्रेणीक अन्तर्गत परिगणित कएल जाए सकैत अछि तथा पूर्वयुगमे वा ओकर पश्चातो रचित समग्र देशदशाविषयक उद्बोधनात्मक रचना एहि कोटिमे आओत। हास्यव्यंग्यमूलक रचनहुमे वस्तुगततत्व सएह प्रधान रहैत अछि। एहिप्रकारक रचनामे अनुभूतिकेँ यथासाध्य निरपेक्ष राखि कवि समाजक विकृतिमूलक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करैत छथि। मुदा ई निरपेक्षता केवल ऊपरसँ सएह रहैत छैक। कविक वैयक्तिक रुचि तँ सब ठाम रहितहिँ अछि जे वर्णनप्रवाहमे व्यंजित भए स्पष्ट भए जाइत अछि ।

उपर्युक्त भावधाराक विकास क्रमिक नहि, संग-संग भेल। 'वाद'क रुपमे अवश्य लोक पाछाँ विचार करए लागल। एही कारणे जएह कवि स्वानुभूतिपूर्ण वैयक्तिक भावनाक रागात्मक अभिव्यक्ति कएल, सएह प्रगतिवादक विषयगत सहानुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति सेहो कएल। उदाहरणार्थ भुवनजीक 'स्मृतिगीत' 'नन्दकिशोर' 'वसन्तसंगीत', 'भावोल्लास', 'होरी' प्रभृति सामाजिक विषम परिस्थितिसँ निरपेक्ष मनोवेगात्मक गीत-काव्य थिक तँ 'कालप्रवाह', 'अन्तर्नाद', 'गीत' आदि समाजसापेक्ष गीतकाव्य थिक, जाहिमे युगीन विषमताक कटुतिक्तकषाय गन्ध निहित अछि। अतः एहन कविता प्रगतिवादी रचना सएह थिक, मुदा से साम्प्रदायिक अर्थमे नहि, व्यापक अर्थमे। साम्प्रदायिकता तँ बहुत पश्चात् यात्रीजीक 'परमसत्य' (1949)क रचनाक पश्चात् आएल। अवश्य एहिसँ पूर्व भुवनजी अपन 'युगवाणी' शीर्षक कवितामे **'नहि क्षमा करब प्रतिशोध लेब'** लिखि मार्क्सवादक हिंसा-प्रवृत्तिक घोषणा कए चुकल छलाह मुदा से भेल छल आवेगात्मक अनुभूतिक अंग भए। तत्पश्चात् साम्प्रदायिक प्रगतिवादक मुख्य गुण-क्रान्तिभावना, यथार्थवादी चित्रांकन, व्यंग्यवक्रोक्तिक प्रयोग, परम्परागत धार्मिक ओ सामाजिक व्यवस्थाक प्रति अनास्था आदिक चित्रण प्रगीतकाव्यक वैयक्तिक आत्मानुभूतिपूर्ण चित्रणक अंग भए कएल जाइत रहल। प्रयोगवाद तँ बहुत पाछाँ आएल, किन्तु ओहू मध्य कविक दूटा वर्ग अछि (क) जे व्यक्तिगत मनोवेग-अनास्था, कुण्ठा प्रभृतिकेँ नवीन छन्दशैली मे व्यक्त करब कविकर्म बुझैत छथि एवं (ख) जे सामाजिक प्रगतिभावनाकेँ नवीन शब्दशिल्पमे प्रयुक्त करब उचित बुझैत छथि। आगाँ प्रमुख-प्रमुख कविलोकनिक कृतित्वक परिचय दैत अथवा उल्लेख करैत मैथिली कविताक विकासक इतिहास देल जाइत अछि।

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (1907-44)क प्रसंग पूर्वहु लिखल जा चुकल अछि जे स्वानुभूतिपूर्ण रागातालसँ मुक्त नवीन गीतकाव्यकेँ ओ रचनात्मक, संग-संग सैद्धान्तिक स्तरो पर प्रतिष्ठित कएल तथा पाछाँ प्रगतिवादक सेहो प्रवर्त्तक भेलाह। यात्रीजी हिनक महत्वक प्रतिपादन करैत लिखने छथि जे **'प्राचीन परिपाटीक शब्दशिल्प नवीन भावनाकेँ अभिव्यक्त करबाकाल नैँगराए लागल तँ ओ आगाँ आबि मैथिली कविताकेँ हिन्दी छायावादी कविताक सम्मुख ठाढ़ कए देल।'** प्रो. रामनाथझाक शब्दमे- **हमरा साहित्यमे नवीनता इएह आनल ओ प्रगतिवादक इएह प्रवर्तक थिकाह'**। किन्तु एहिसँ अतिरिक्त ई अपन धार्मिक भावनाक द्योतन सेहो नवीन रीतिएँ कएल, जाहिमे स्वानुभूतिक नवीन प्रकारक दर्शन होइत अछि। 'वन्दना', 'हृदयोद्गार' 'आह्वान' आदि कवितामे ओ अपन धार्मिक भावनाक द्योतन कएने छथि, जाहिमे विलक्षण नवीनताक दर्शन होइत अछि स्वानुभूतिपूर्ण सामाजिक दृष्टिकोणक कारणे।

भुवनजीक तीनटा कविता-संग्रह प्रकाशित अछि- 1. **'आषाढ़'** (1936), 2. **'स्मृतिकण'** एवं 3. **'विरहिणीव्रजांगना'**। एकर अतिरिक्त कतोक आनो स्फुट कवितासभ

छल- मौलिक ओ अनूदित। हिनक सम्पूर्ण काव्यकृति हमरा द्वारा संकलित भए 'भुवनभारती'क नामसँ 1958 ई. मे प्रकाशित भेल। 'आषाढ़' मे 1936 धरिक रचना संकलित भेल छल, जाहिमे कविक द्वारा लिखल ऐतिहासिक महत्वक भूमिका सेहो संलग्न अछि। हुनक मृत्युक पश्चात् शेष कविताक संकलन 'स्मृतिकण' सन् 1945 ई. मे बहार भेल जकर भूमिका लिखल डा. जयकान्तमिश्र। 'विरहिणी व्रजांगना' माइकेल मधुसूदन दत्तक मैथिली अनुवादक थिक जे कतोक आलोचकक दृष्टिएँ मौलिकहुसँ उत्कृष्ट भेल अछि। उपर्युक्त कृतिक अतिरिक्त हिनका द्वारा सम्पादित भए रामदासक 'आनन्दविजय' नाटक सेहो प्रकाशित भेल। एकर भूमिकामे इएह सर्वप्रथम किर्तनिञा नाटकक अभिनय-परम्परा पर जोर देल आओर प्रायः ओहीसँ प्रेरित भए डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे किर्तनिञानाट्य-परम्पराक विस्तृत इतिहास लिखल। यद्यपि भुवनजीक कृतिसमुदाय विशाल नहि अछि, किन्तु जएह अछि सएह हुनक नामकेँ मैथिलीसाहित्यक इतिहासमे विशिष्ट रुपमे उल्लेखनीय बनाए दैत अछि।

भुवनजीक साहित्यिक जीवनक समसामायिक हाटी (मधुबनी)क **प. महावीरझा 'वीर'** (1897-1945) ओ **प. श्रीबल्लभझा** (1905-40) मैथिलीक प्रतिभाशाली कवि छलाह। वीरजीक नवीन गीतक आधार पर ई निश्चित रुपसँ कहल जा सकैत अछि जे हुनकामे नवयुगीन प्रवृत्तिकेँ ग्रहण करबाक संवेदना प्रचुर मात्रामे छलैन्हि, तँ पण्डित होइतहुँ हुनक रचनामे स्वानुभूतिपूर्ण भावाभिव्यक्ति प्रचुर मात्रामे भेल अछि। 'कोइलसँ' हुनक श्रेष्ठ सम्बोधि-काव्य थिक। एकर विपरीत श्रीबुल्लभझाक रचनामे अलंकारनिष्ठताक दर्शन होइत अछि। तँ काव्यवस्तुक प्रतिपादन-रीतिक दृष्टिएँ ओ प्राचीनोन्मुख छथि, शब्दविन्यास धरि हिनक नवीन अछि। एहिठाम **श्रीजयनारायण मल्लिक** (ज. 1913)क नामोल्लेख करब जे अंगरेजीशिक्षित छथि, किन्तु जनिका पर हिन्दीक छायावाद ओ रहस्यवादक उत्कट प्रभाव अछि। एहि कोटिक प्रायः इएहटा कवि छथि। हिनक रचनामे प्रणयानुभूतिक प्रतीक लए रहस्यभावना व्यक्त भेल अछि। प्रकृति-वर्णन सेहो हिनक रहस्यात्मकता लेने रहैत अछि। हिनक भाषाक प्रधान गुण थिक लाक्षणिकता एवं माधुर्यव्यंजक लालित्य।

प्रो. ईशनाथझा (1907-65)क नाम भुवनजीक पश्चात् मैथिली काव्य क्षेत्रमे बड़ प्रसिद्ध भेल। हिनक **'माला'** कवितासंग्रह प्रकाशित अछि। किन्तु शेष रचना अद्यावधि अप्रकाशिते अछि। ई मैथिलीमे **'महाभारत'** महाकाव्य लिखब प्रारम्भ कएने छलाह जे अपूर्णे रहि गेल। हिनक दुइ गोट नाटकक अनुवाद 'शकुन्तला' ओ 'मृच्छकटिक' प्रकाशित अछि जाहिमे संस्कृत-पद्यक अनुवाद ओ बड़ सरसता ओ प्रांजलताक संग कएने छथि जे कविक रुपमे हुनक अभिव्यक्ति-कौशलक दृष्टान्तक थिक।

प्रो. झा प्राचीनता ओ आधुनिकताक संगमस्थल छलाह। अपन कवितामे निहित

माधुर्य एवं सरसताक कारणे ओ मित्रमंडलीमे 'सरसकवि'क उपाधिसँ ख्यात छलाह। हिनक प्रतिभा नवीनताक प्रति संवेदनशील छल, तँ हिनक रचनामे अभिव्यक्तिक नवीनताक संग-संग युगबोध सेहो सन्निहित भेल भेटैत छी। मुदा कहबाक रीति हिनक सर्वथा नवीन नहि अछि, ओहि पर संस्कृतकाव्यरीतिक उत्कट प्रभाव अछि, तीव्र आलंकारिक प्रवृत्ति अछि। रमणीयार्थ उत्पन्न करबाक पाछाँ इहो एतेक लागि जाइत छथि जे कल्पना-शीलतामे आकण्ठ निमज्जित भए जाइत छथि। आत्माभिव्यक्तिक जे स्वाभाविकता चाही, से तँ नहि रहि पबैत अछि, मुदा हिनक कल्पना धरि होइत अछि बड़ मधुर जे काव्यमर्मज्ञकेँ अत्यधिक आह्लादित करैत अछि। उदाहरणार्थ कालिदासक कथन जे मेघ अचेतन थिक, तकर ओ निम्नलिखित शब्दमे आलोचना करैत छथि :-

बसुधामे लए जनम कएलजगनक अवलम्बन।
घुमिफिरि देशविदेश जखन अएलहुँ निज आंगन।
देखि ताप जननीक जुड़ाओल हृदय बरसि घन।
जलद ! तखन के कहत अहाँकेँ थिकहुँ अचेतन ?

वस्तुतः प्रो. ईशनाथझा सचेतन प्रकृतिक मधुर सौंदर्यक भावुक कवि छथि। प्राकृतिक चित्रण ओ आधुनिक रीतिएँ कएने छथि किन्तु संस्कृतक अभिव्यक्ति-रीतिक शृंखलामे कतहु-कतहु हुनक रचना एतेक निबद्ध अछि जे नवीन गीत-काव्यक सरलताक ओ सहजताक दृष्टिएँ ओहिमे पाण्डित्यक सूक्ष्मता तँ अवश्य भेटैत अछि, मुदा स्वानुभूतिजनित तल्लीनताक अभाव भए जाइत अछि। तथापि मैथली काव्यधाराक विकासमे हिनक रचना अद्भुत नवीन लगैत अछि। हिनक संस्कृतनिष्ठता कविताक प्रसाद ओ माधुर्यमे कतहु बाधक नहि अछि।

प्रो. ईशनाथ झाक पश्चात् प. काशीकान्तमिश्र 'मधुप' (1906-87) ओ श्री वैद्यनाथमिश्र 'यात्री' (ज. 1910)क नामोल्लेख कए सकैत छी। मधुपजीक प्रकाशित कवितासंग्रह अछि 'टटका जिलेबी', 'अपूर्व रसगुल्ला', 'झंकार', 'शतदल', 'ताण्डव', 'त्रिवेणी', 'त्रिकुशा', 'द्वादशी', 'प्ररेणा-पुंज', 'बोल बम', 'मधुप-सप्तशती', 'परिचय-शतक', आदि। मधुपजी एक दिसि यदि उत्कृष्ट शृंगारिक रचना कएल तँ दोसर दिसि करुणरसक आत्माभिव्यक्तिमूलक उत्तम प्रगीतक सेहो प्रणयन कएल। कतोक दीनहीनक चित्रण पर आधारित कवितहु अछि जे यथार्थवादी वा प्रगतिवादी कहाए सकैत अछि। शिल्पक क्षेत्रमे ओ लोकगीत-काव्यक सरल शब्द-योजनाक अतिरिक्त चमत्कारपूर्ण आलंकारिक भाषाशैलीक सेहो प्रयोग कएल, जाहिमे मुख्यतः चमत्कारपूर्ण अनुप्रास ओ यमकक पांडित्यपूर्ण शब्द-विन्यासक छटा दिसि कविक विशेष ध्यान अछि। किन्तु मधुपजीक सर्वश्रेष्ठ ओएह रचना थिक जे सरल सहज भाषामे लिखल गेल अछि तथा नवीन प्रगीत-रीतिक थिक। 'घसल अठन्नी', ओ 'कोजागराक मखान' आदि मे ओ मुक्त-वृत्तक प्रयोग कएने छथि। अतः की भावक्षेत्रमे आ की शिल्पक्षेत्रमे हिनक रचनासमुदायमे विविधताक दर्शन होइत अछि। हिनक ओहने गीतकाव्य उत्कृष्ट कोटिक

अछि, जाहिमे आत्माभिव्यक्तिपूर्ण करुण-भावक द्योतन भेल अछि। किन्तु जाहि ठाम यमक ओ अनुप्रासक छटाक प्रर्दशन करए लगैत छथि, ताहि ठाम हिनक भाव ओ शब्दशिल्प दुनू कृत्रिम लगैत छैन्हि। दुःखक विषय एतबे जे पाण्डित्यप्रर्दशन दिसि हिनक अभिरुचि अधिकाधिक तीव्र भेल जाइत छैन्हि।

भुवनजीक पश्चात् यात्रीजी मैथिली काव्यधाराकेँ आओर अधिक नवीनोन्मुख करबाक आयास कएल। भावक क्षेत्रमे निष्क्रिय आत्माभिव्यक्तिक स्थान पर समाजक यथार्थ चित्रण करब ई विशेष श्रेयस्कर बुझल। आरम्भमे ओ नारीक सामाजिक कुप्रथाजन्य दुर्भाग्यक चित्रण कएल अपन 'बूढ़वर' ओ 'विलाप' शीर्षक उत्कृष्ट रचनामे। एहिमे ओ बालविवाह-प्रथाक आलोचना कएल जकर कारणे अगणित संख्यामे कन्या विधवा भए रहल छलीह। एकर रचनाक रीति अछि संवेदनात्मक आ व्यंग्यात्मक। 'कविक स्वप्न' (1941)मे ओ सिद्धान्त-रुपसँ कविताक प्रगतिवादी उद्देश्यक घोषणा कए देने छलाह :-

तोहर मन दौड़ैत छह कोठाक दिश
पैघ पैघ धनीक दिश दरबार दिश
गरीबक दिश ककर जाइत छइ नजरि
के तकइ अछि हमर नोरक धार दिश

इएह 'दीनहीनक नोर'क प्रति संवेदनशील भावना विकसित भए हिनकामे साम्प्रदायिक प्रगतिवादी दृष्टिकोणक रुपमे परिणत भेल 1949 ई.मे रचित 'परम सत्य' शीर्षक कवितामे, जाहि मध्य ओ मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी वर्गसंघर्ष-सिद्धान्तक कवित्वपूर्ण अभिव्यक्ति देल। मुदा एहि सिद्धान्तक क्रान्तिकारी भावना हिनक रचनामे अन्तर्मुखी सएह रहल। वस्तुतः यात्रीजी अपनाकेँ समाजक यथार्थ-चित्रांकनमात्र धरि सीमित रखैत छथि। किन्तु एकर चित्रण करबाक प्रणाली अछि व्यंग्यवक्रोक्तिपूर्ण जेहन नहि तँ पहिने लिखल गेल आओर ने पश्चाते। आद्यन्त कविक सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि ओहि यथार्थवादी चित्रणमे अद्भुत मार्मिकताक संचार करैत रहैत अछि। मुदा विशुद्ध कविताक दृष्टिएँ, कविक वैयक्तिक सौन्दर्यभावना एवं संवेदनशील भावुकता तथा रागात्मकताक दृष्टिएँ हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना ओएह थिक जाहिमे ओ बाह्यजगतक विषमताकेँ बिसरि आत्मजगतकेँ स्वाभाविक रीतिएँ अभिव्यक्त कएने छथि। एहन रचना बड़ थोड़- 'हिमगिरिक उत्संगमे', 'कृतिकानक्षेत्रमे', 'भावना', 'सितुरिया आम' आदि थिक। एहि सभक रचना ओ मुक्तवृत्तमे सएह कएने छथि, तथापि थिक धरि एहन रचना नवीन रीतिक गीत, भाषाक सरलता, भावक सहजता तथा लयात्मक तरलताक दृष्टिएँ।

अभिव्यक्तिशैलीमे तँ ई क्रान्ति उपस्थित कए देल। मैथिलीमे मुक्तवृत्तकेँ इएह व्यापक रुपमे प्रयुक्त कएल। संस्कृतनिष्ठताक इएह सर्वप्रथम पूर्ण अवहेलना कए देल। अतः मैथिली साहित्यमे हिनकहिटा भाषा यथार्थ रुपमे लोक-भाषा थिक। किन्तु अपन

प्रतिभाक स्पर्शसँ ओ ग्राम्यभाषाकेँ साहित्यिकता प्रदान कएल। हिनक रचनाकेँ जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान करैत अछि, से थिक हिनक स्वाभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति, जाहिमे व्यंग्यार्थ विशेष चमत्कारक होइत अछि।

यात्रीजी ने तँ प्रगतिवादक घोषणा कएल आओर ने प्रयोगवादहिक अग्रदूत होएबाक 'दाबा' कएल, मुदा हिनक रचनामे प्रगतिप्रयोगशीलता पोर-पोरमे भरल अछि। हिनक कविताक एकटा संग्रह **'चित्रा'** 1357 साल (1949 ई.)मे प्रकाशित भेल। **'पत्रहीन नग्न गाछ'**मे हिनक नवीन कविताक संग्रह भेल तथा 1968 ई.मे साहित्य-अकादेमीक पुरस्कारसँ सम्मानित भेल। एहू कविता-संग्रहक रचनासबसँ यात्रीजीक स्वाभाविक व्यंग्यवक्रोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति-कौशल एंव प्रगतिवादी दृष्टि-बोधक द्योतन होइत अछि। परन्तु 'चित्रा'मे यदि ओ ग्राम्य-जीवनक प्रसादपूर्ण चित्रण कएने छथि तँ **'पत्रहीन नग्न गाछ'** मे मील ओ फैक्टरीमे खटैत-पचैत श्रमिक-मजदूरक दुर्दैन्य ओ विषाद तथा नगरीय सभ्यता-संस्कृतिक विकृति ओ विसंगति पर उपहास-प्रहार करबा दिसि विशेष प्रवृत्त छथि। प्रयोगवादी वैचित्र्य ओ बौद्धिकताक स्वर सेहो एहि मध्य 'चित्रा'क तुलनामे अधिक प्रखर अछि।

1908-10 मध्य चारिटा प्रमुख कवि अवतीर्ण भेलाह-पं. जीवनाथझा (1910-77), प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' (ज. 1910), प्रो. तन्त्रनाथझा (ज. 1909-84), एवं कांचीनाथझा 'किरण' (ज. 1906-89)। एहिमे पं. जीवनाथझाक 'कल्पना', ओ 'आसीन-कार्तिक' सुमनजीक 'अर्चना', 'साओनभादव', 'प्रतिपदा', 'कविनवतिका', 'मुक्तावली', 'पयस्विनी', 'अङ्कावली', 'आर्त्तनाद' प्रभृति एंव प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कीचकवधक' ओ 'कृष्ण चरित' अतिरिक्त 'नमस्या' ओ मंगल-पंचाशिका' कवितासंग्रह प्रकाशित अछि। हिनक 'दोहावली' एवं अनेक अन्य रचना एखन अप्रकाशित अछि। किरणजीक 'किरण-कवितावली' एवं कतेक दिनकबाद सेहो प्रकाशित भेल अछि।

प. जीवनाथझा ओ सुमनजीक काव्यप्रवृत्ति समान अछि। दुनू कवि प्राचीनोन्मुख नवीन छथि। अर्थात् दुनू गोटाक काव्यप्रेरणाक उत्स थिक संस्कृतकाव्य-साहित्य। युगानुकूल भावप्रवृत्ति दुनू गोटाक कवितामे अछिए, परन्तु पण्डितक मूल-व्यक्तित्व दुनू गोटाक कविताकेँ प्रभावित कएने रहैत अछि। तँ आधुनिक भावबोधक अभिव्यक्तिकालहुमे ओलोकनि अपन पाण्डित्यकेँ संग रखिनहि रहैत छथि। उदाहरणार्थ, प्रकृति-कवितामे सौन्दर्यानुभूतिमे तल्लीनताक स्थान पर आलंकारिक ऊहि करबामे ई लोकनि रमि जाइत छथि। दृष्टव्य थिक :-

जीवनाथझा - ई मेघ न थिक, तिमिरावली नभकेँ झाँपए
वा तान्त्रिक जादू विरही जनकाँ हाँकिए

श्री सुरेन्द्रझा - सुरधुनि नहि भृकुटी कुटिल, मेघ न केश सम्हारि
बिजुरी नहि अंगक छटा, सरस सजल ऋतु नारि

अतः हिनकालोकनिक सब तरहक रचनामे कल्पनाक उड़ान रहैत अछि पाण्डित्यपूर्ण। ते सब कवितामे चमत्कारक विन्यास रहितहिँटा अछि। एहिसँ संवेदनशील प्रेषणीयतामे स्वाभाविकता नहि रहि पबैत अछि, नवीन गीत-काव्यक प्रसाद नहि रहैत अछि।

सुमनजीक रचनामे विविधता अधिक अछि। प्रायः एहन कोनो विषय नहि होएत, एहन कोनो 'वाद' नहि होएत जाहि पर ओ कविता नहि कएने होथि। मुदा विविधता रहैत अछि कल्पना ओ विषयक, अभिव्यक्ति-रीतिमे सर्वत्र एकरुपता रहैत अछि। हिनक रमणीयार्थ उत्पन्न करबाक प्रधान रीति अछि आरोपमूलक। मुदा से ओ करैत छथि अद्वितीय वक्रताक संग, अद्भुत नवीनताक संग। तँ एहिमे जेहन ओ चमत्कार उत्पन्न करबामे समर्थ होइत छथि, ताहिमे प्रायः कोनो आन मैथिली कवि समता नहि कए पबैत छथि। एम्हर ओ किछु मुक्तकक रचना कएल अछि ताहिमेसँ किछु 'नवीन गीत' आ किछु 'मुक्तावली'मे संकलित भेल अछि। थिक तँ एहन रचना संस्कृतसाहित्यक सुभाषित रीतिक, मुदा ओहिमे ओ बिहारीक अर्थगाम्भीर्य आ उर्दूकविताक मार्मिकता भरि देबामे बहुत दूर धरि सफल भेलाह अछि। द्रष्टव्य थिक 'नयन' पर हुनक उक्ति :-

अभियन्ता कन्दर्प ई भृकुटिक बान्ह बनाए।
नयनयोजनासँ तरल विद्युत देल जगाए।।

मुदा विशुद्ध कविक रुपमे हुनक प्रतिभा जाहि सीमा पर 'अर्चना'मे पहुँचि गेल छल, ताहिसँ आगाँ ओ नहि पहुँचि सकलाह अछि। आगाँ वैचित्र्य, कौतूहल ओ नव-नव चमत्कार उत्पन्न करबामे अवश्य सफल भए सकल छथि, आधुनिक परिवेशमे भारतीय चिन्तन-धाराक महत्वांकन करबहुमे अपन कवित्वपूर्ण पटुता देखओने छथि। परन्तु स्वानुभूति-जन्य रागात्मकताक प्रसाद जे काव्यरसिकक चितकेँ सहसा भावविह्वल बना दैत अछि, तकर अभाव हिनक अधिकांश रचनामे स्पष्ट अछि। काव्योत्कर्षक महत्ताक दृष्टिएँ प्रो. रमानाथझा आधुनिक कविवृहत्रयीमे यात्रीजी ओ प्रो. तन्त्रनाथझाक संग हिनकहु गणना कएने छथि तथा हिनका **'कविक कवि'** संज्ञा देने छथि। पाण्डित्यक प्रकर्ष, कल्पनाक सूक्ष्मता एवं सादृश्यमूलक आरोपक नवीनताक कारणे से सर्वथा सत्य अछि। हिनक **'पयस्विनी'** 1969 मे प्रकाशित भेल ओ 1971 ई.मे सर्वोत्तम काव्यसंग्रहक रुपमे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेल। एहि संग्रहमे सुमनजी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक भाव-धाराक प्रतिपादन विविध रीतिएँ कए अपन उच्च महाकवित्वक सुन्दर निदर्शन कएल अछि, परन्तु से मननीय थिक, सहज रुपसँ आस्वादनीय नहि। पाण्डित्यक प्रकर्ष पं. जीवनाथझाक रचनामे सेहो ककरोसँ कम नहि अछि। हिनक परवर्त्ती रचनामे रागात्मक तल्लीनताक सेहो दर्शन होइत अछि।

किरणजी ओ प्रो. तन्त्रनाथझाक प्रतिभामे कतहु कोनो समता नहि अछि।

किरणजीमे यदुवर-छेदीझाक युगक प्रवृत्ति अधिक मुखर अछि, मुदा प्रतिक्रियात्मक प्रगतिशीलताक आवरणमे। हुनक भाषाशैलीक इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति हुनक वास्तविक युगक निर्देश कए दैत अछि। प्रतिक्रियात्मक प्रगतिशीलताक तात्पर्य थिक परम्परासँ विच्छिन्न प्रगतिशीलता। एही कारणे जे किछु वरिष्ठ अछि, यथा, धर्म, सामाजिक व्यवस्था प्रभृति तकरा ओ घृणित बुझैत छथि। भुवनजी धर्म ओ प्रगतिशीलताकेँ परस्पर विरोधी नहि बुझैत छलाह, किन्तु किरणजी दुनूकेँ विरोधी बुझैत छथि। 'महादेवसँ', शीर्षक कवितामे हुनक मनोवृत्ति नीक जकाँ स्पष्ट भए गेल अछि। द्रष्टव्य थिक :-

"बलवान मानवक हायक बलसँ
बैसल छह तो सराइ पर।" आदि

वस्तुतः किरणजीक काव्यप्रतिभा प्रगतिशील भावांकनमे नहि, लोकजीवनक चित्रांकनमे उभरल अछि। हिनक भाषाशैलीमे पाण्डित्यक प्रकर्ष नहि, लोकभाषाक उत्कर्ष अछि। डा. जयकान्तमिश्र हिनका कविसँ अधिक गद्यकार मानैत छथि।

प्रो. तन्त्रनाथझाक कवितामे अंगरेजी साहित्यक परिमार्जित उत्कर्ष बड़ नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि। हिनक भाषाशिल्प तथा भाव-वस्तु दुनूमे विविधताक दर्शन होइत अछि। काव्यकेँ ई कोनो 'वाद'क प्रचारार्थ साधन नहि मानैत छथि। हिनक काव्यरचनाक उद्देश्य एकमात्र अछि मनोविनोद ओ आत्माभिव्यक्ति। तेँ अंगरेजी शिल्पक प्रयोग करितहुँ परम्परा हिनका हेतु बाधक नहि भेल। अतः ओ प्राचीन ओ नवीन दुनू रीतिक काव्यरचना कएने छथि। प्रयोगवादी नहि रहितहुँ हिनक कविता प्रयोगहि पर अवलम्बित अछि। ई अंगरेजी-प्रणालीक उपहास-काव्य, चतुर्दशपदी, लोक-कथाकाव्य आदिक रचना कएने छथि आओर सेहो उत्कृष्ट कोटिक। उपहासकाव्यक रचना करबामे प्रो. झा बेजोड़ छथि, जाहिमे प्राचीन अन्योक्तिरीतिक प्रयोग सेहो भेल अछि। किन्तु विशुद्ध कविताक दृष्टिएँ 'प्रयाणालाप' हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक, जाहिमे कविक कटुमधु-अनुभवक आत्माभिव्यक्ति भेल अछि। द्रष्टव्य थिक ओकर निम्नलिखित पंक्तिः-

सीखल प्रशस्त पाठ-यदि हो अभिप्रेत
जीवनसरणि करब सुख-शान्तिमय
लोकक उपकार तेँ अवश्य करु
X X X
किन्तु कए काज ई बिसरि जाउ, बिसरि जाउ
अन्यथा अनुताप होएत, अति तीव्र अनुताप।

हिनक 'मंगल-पञ्चाशिका' 1973 ई.मे प्रकाशित भेल जाहि मध्य हिनक कवित्वक सर्वथा नवीन स्वरुपक दर्शन होइत अछि। एहिमे संकलित रचना मुक्तककाव्यक उत्कृष्ट दृष्टान्त थिक। एकर वर्ण्य-विषय ओ अभिव्यक्ति-शैली प्राचीन रीतिक अवश्य अछि, कतोकमे संस्कृत-श्लोकक छाया सेहो परिलक्षित होइत अछि, परन्तु ओकरा

अभिनव वक्रता-विच्छत्तिक संग मार्मिक अभिव्यंजना प्रदान करबामे तथा कतोक अनुकूल रस-भावकेँ तादात्म्य-सम्बन्धे गुम्फित कए अद्भुत काव्य-सौष्ठव उत्पन्न करबामे अपन कवित्व-कौशलकेँ चरम सीमा पर पहुँचाए देल अछि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित दोहा जाहि मध्य एकहि सन्दर्भमे शृंगार ओ वात्सल्यमूलक लिप्साभावकेँ केहन कुशलताक संग प्रस्तुत कए मंगल-कामना कएल गेल अछि :-

जयतु तितल पट सटि प्रगट युगल उरोज उमाक।
जाहि सकाम गणेश-शिव अपलक सपुलक ताक।।

हिनकाभाषा पर जेहन अधिकार छैन्हि ओहन प्रायः मैथिलीक कोनहुँ आधुनिक कविकेँ नहि छैन्हि। प्रायः सब कवि एक प्रकारक भाषाप्रयोग कएने छथि, मुदा ई जखन संस्कृतनिष्ठ भाषाक प्रयोग करैत छथि तँ संस्कृतनिष्ठताकेँ चरम सीमा पर पहुँचाए दैत छथि आओर जखन ठेठ मैथिलीक प्रयोग करैत छथि तँ ताहूमे अपूर्व कौशलक परिचय दैत छथि। जे व्यक्ति मैथिली साहित्यसँ अपरिचित छथि, तनिका हेतु ई कहब अनायास कठिन भए जाएत जे 'मुसरीझा', 'कीचक-वध' एवं 'मंगलपञ्चाशिका'क लेखक एके व्यक्ति छथि। वस्तुतः ई भावानुरूप सन्तुलित भाषाप्रयोग करबामे मैथिली साहित्यमे प्रायः अद्वितीय छथि।

1920 ई.क पूर्व जन्म लेनिहार कविगणमे 'माटिक दीप', 'पूजाक फूल' ओ 'सूर्यमुखी'क रचयिता श्री आरसीप्रसाद सिंह (ज.1911), 'फुलडाली', 'बाजि उठल मुरली' ओ 'इतिश्री'क रचयिता पं. उपेन्द्रठाकुर 'मोहन' (1913-80), 'प्रतीक', 'संन्यासी' ओ 'पतन'क कवि ओ 'गीता' तथा 'रुबाइयातउमरखैयाम'क अनुवादक श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास' (ज.1917), 'क्रांन्तिगीत', 'ज्वालामुखी' ओ मधुकण'क कवि राघवाचार्य (1917-81), ब्रजकिशोर वर्मा (1918-86), 'नक्षत्र'क कवि श्रीरामचरित्र पाण्डेय 'अणु' (ज. 1919), एवं 'अमर बापू', 'आदेश', 'मधुमती', 'शरशय्या' ओ 'समाधि'क रचनाकार श्री बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर' (ज.1919)क नाम अग्रगण्य अछि। एहिमे वर्माजी ओ अणुजी अपन साहित्यिक जीवनक आरम्भ 1952 ई.क पश्चात् कएल। एहि अवधिमे अवतीर्ण 'मेरुप्रभ' एवं अग्रदूत'क कवि डा. श्रीकृष्णिमश्र सेहो उल्लेखनीय छथि।

श्रीआरसीप्रसाद सिंह मैथिली कविताक रचना भुवनजीक प्रेरणासँ मैथिली साहित्य-परिषद्क छठम अधिवेशनक पश्चात् करए लगलाह ओ हिनक प्रथम रचना थिक 'शेफालिका'। पश्चात् 'विभूति' प्रभृतिमे हिनक रचना छपए लागल। ई शीघ्र उत्कृष्ट कविक रुपमे परिगणित होअए लगलाह। हिनक रचनाक मुख्य गुण थिक सरल, कोमल ओ मधुर शब्द-विन्यास एवं सहानुभूतिपूर्ण संवेदनशील भावाभिव्यंजना। भुवनजीक पश्चात् आत्माभिव्यक्तिक अकृत्रिम समाजसापेक्ष रागात्मकता दृष्टिएँ हिनक रचना सर्वाधिक मर्मस्पर्शी भेल अछि। ई यद्यपि समाजसापेक्ष कविताक रचना कए देशदशाक

सेहो चित्रण कएने छथि, किन्तु हिनक महत्व अछि नवीन गीतकाव्यक स्वाभाविक भावतल्लीनताक दृष्टिएँ जे अकस्मात् मनकेँ मोहि लैत अछि। एहि दृष्टिएँ हिनक रचना दिनानुदिन निखरल जा रहल अछि। संस्कृतनिष्ठ समतासंयुत शब्दविन्यास रहितहुँ प्रसादगुणक सदैव स्थिति हिनक रचनाक विशेषता थिक जे अपन माधुर्यसँ चित्तकेँ ओतप्रोत कए दैत अछि। हिनक दोसर कविता संग्रह 'पूजाक फूल' 1967 ई. मे प्रकाशित भेल। एहिमे सेहो ओ अपन कोमल कान्त भावनाक सरस अभिव्यक्ति सएह कएल, सामयिक 'वाद'क कृत्रिम प्रवाहमे नहि बहलाह। विविध भाव-शिल्प-विषयक हिनक तेसर 'सूर्यमुखी' कविता-संग्रह पर हिनका सन् 1984 ई. मे साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त भेलैन्हि।

उपेन्द्रठाकुर 'मोहन'क कविताक मुख्य आकर्षणक थिक करुणभावक चित्रण। आरम्भमे छायावादी विषादक छाप हिनकामे उत्कट छल, मुदा पश्चात् आबि सांसारिक अनुभवजन्य विषादमे दार्शनिकताक मणिकांचन संयोग देखना जाइत अछि। 'फुलडाली'क किछु रचनामे किसान-मजदूरक दीनताक सेहो चित्रण कएने छथि। 'युवकवीर'मे युवकक निर्माणात्मक क्रान्तिभावनाक ओ 'नवयुग' मे युगीन ओजक बड़ उल्लासवर्द्धक अभिव्यक्ति भेल अछि। 1977 ई. मे हिनक 101 गोट विविध भाव विषयक कविताक विलक्षण संग्रह **'बाजि उठल मुरली'** प्रकाशित भेल छल, जाहि पर ओ 1978 ई. में साहित्य-अकादेमी द्वारा पुरस्कृतो भेल छलाह। मृत्यूपरान्त हिनक अन्यान्य कविताक संग्रह 'इतिश्री' नामसँ प्रकाशित भेल। वस्तुतः मोहनजीक स्थान आधुनिक कविलोकनिमे बड़ महत्वपूर्ण अछि।

व्यासजी नवीन गीतक बड़ कम रचना कएने छथि। किन्तु जएह लिखने छथि, तकर प्रसादपूर्ण स्वाभाविक शब्दविन्यास मनकेँ मोहि लैत अछि। हिनक प्रतिभा मुख्यतः कथात्मक अछि। कुशल अनुवादकक रुपमे सेहो ई 'गीता' तथा 'रुबाइयात उमरखैयाम'क अनुवाद कए अपन स्थान सुरक्षित कए लेने छथि। किंग मार्टिन लूथरक हत्या पर प्रकाशित हिनक 'हत्या' शीर्षक कविता बड़ मार्मिक भेल अछि ओ से हुनक सत्य-साकांक्ष व्यक्तित्वकेँ व्यक्त करैत अछि। व्यासजी अपन गत सैंतीस-अड़तीस वर्षक अधिकांश प्रगीत-रचनाक संग्रह 'प्रतीक' नामसँ 1976 ई. मे प्रकाशित कएल, जाहिमे हिनक उन्तीस कविता संगृहीत भेल अछि।

राघवाचार्य वीररसक मैथिली कविता लिखबाक हेतु बड़ प्रसिद्ध छथि, कारण, अद्यावधि मैथिलीमे केओ वीररसक सफल रचना नहि कए सकलाह अछि। हिनक वीररसक स्थायीभाव अछि मिथिलाक जनजीवनसँ अधोगतिकेँ दूर करबाक तथा अपन जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करबाक हेतु संघर्षक उत्साह। 'ज्वालामुखी' ओ 'क्रान्तिगीत'मे ताही प्रकारक रचना संकलित अछि। 'मधुकण'मे संकलित रचना दार्शनिक अछि। तेँ ओहिमे संकलित रचना स्पष्ट ओ सरल नहि अछि। वीररसक रचना मध्य ओजगुण

उत्पन्न करबाक हेतु ओ भाषाकेँ बड़ अपभ्रष्ट कए प्रयुक्त कएने छथि। किन्तु ताहिसँ हुनक वीररस उत्पन्न करबाक उद्देश्यक किछु अंश धरि पूर्ति अवश्य भए जाइत छैन्हि।

रमाकरजी अन्तर्जगतक भावुक कवि छथि। किन्तु हुनक अन्तर्जगतक भावना रहैत अछि दार्शनिक। मिथिलाक सुप्रसिद्ध दार्शनिक बाबू क्षेमधारी सिंहक आत्मज रमाकरजी स्वयं स्वभावेँ दार्शनिक प्रकृतिक व्यक्ति छथि। अतः हुनक भाषाशैलीमे सेहो दार्शनिक पक्ष प्रबल रहैत अछि। तेँ हिनक रचना सर्व-जनसुलभ नहि अछि। वस्तुतः रमाकरजी लोक-कवि नहि, पण्डितक कवि छथि। एहि विशेषताक हेतु ओ मैथिली कविताक इतिहासमे विलक्षण स्थान रखैत छथि।

व्रजकिशोरवर्मा 'मणिपद्म' अतीतक नहि, वर्तमानक भावुक कवि छथि। हिनक चर्चा पाछाँ होएब उचित छल, कारण, ई काव्यरचना 1950-52क पश्चात् आरम्भ कएल। लोककाव्यक मर्मज्ञ मणिपद्मजीक रचनामे लोकगीतक लय ओ प्रवाहक एहन स्वाभाविक समन्वय भेल अछि जे मैथिली प्रगीतकाव्यकेँ अभिनव माधुर्य, मार्दव तथा अकृत्रिम भाव-सौष्ठव प्राप्त भेलैक अछि। हिनक कविताक मुख्य गुण थिक वर्तमानक सहानुभूतिपूर्ण चित्रण ओ अभिव्यक्तिक नवीनता। सामयिक समस्या पर रचित हिनक रचना बड़ मार्मिक भए उठैत अछि। 'तखन कोना सोना केर मोल' चीनी-आक्रमणक परिवेशमे रचित हिनक उत्कृष्ट कोटिक रचना थिक। व्यक्तित्वसँ कवि वर्माजीक गद्य-रचना सेहो कवित्वपूर्ण होइत अछि।

श्री रामचरितपाण्डेय सेहो 1950-52क पश्चात् मैथिली कविताक रचना आरम्भ कएल। ओ एक दिसि यदि मधुपजीसँ प्रभावित छथि तँ दोसर दिसि यात्रीजीसँ सेहो अनुप्राणित छथि। ई छन्दतुकसँ युक्त आ मुक्त दुनू प्रकारक रचना कएने छथि जाहिमे एक दिसि यदि भावुकताक दर्शन होइत अछि तँ दोसर दिसि बौद्धिकताक स्वर सेहो मुख्य अछि। 'रोपि रहल धान' आ 'श्रमिक बालिका' हिनक सुप्रसिद्ध रचना थिक जे मुक्तवृत्तमे लिखल अछि मधुपजीक 'घसल अठन्नी'क शैलीमे। मुदा कहबाक रीति धरि हिनक अपन अछि ओ भावात्मकता सेहो मधुपजीक अपेक्षा अधिक अछि। यथार्थवादी चित्रणमे 'रोमाण्टिक टच' दए अपन कविताकेँ विलक्षण बनएबामे ई निष्णात छथि। हिनक अधिकांश रचना अन्तर्मुखी सएह अछि ओ तेँ एहि प्रकारक प्रत्येक रचनामे चिन्तनशीलता प्रमुख अछि। भावगाम्भीर्यक कारणे ई विशेष लोकप्रिय नहि भए सकलाह, किन्तु कवित्वप्रकर्षक कारणे हिनक नाम मैथिलीक कविगणमे महत्वपूर्ण अछि।

1921 सँ 1930 ई. मध्य अवतीर्ण भेनिहार कविगणमे रामकृष्ण झा 'किसुन' (1921-70), श्रीसुधांशुशेखर चौधरी (ज. 1922), श्रीगोविन्दझा (ज. 1923), श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' (ज. 1925), डॉ. जयमन्तमिश्र, डॉ. रमानाथझा (ज. 1925),

पं. भवनाथझा (ज. 1927), राधाकृष्णझा 'बहेड़' (ज. 1927-85), श्रीजगदीपनारायण 'दीपक' (ज. 1928), डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (ज. 1928), श्री अनन्तबिहारीलालदास 'इन्दु' (ज. 1928), डॉ. जयधारी सिंह 'प्रभाकर' (ज. 1929), श्रीमधुरानन्द चौधरी 'माथुर' (ज. 1929) एवं राजकमल चौधरी (1929-67)क नाम अग्रगण्य अछि। एहिमे अमरजीक 'गुदगुदी', 'युगचक्र', 'ऋतुप्रिया', 'आशा-दिशा' ओ 'उनटापाल', किसुनजीक 'आत्मनेपद' ओ 'क्रमशः', श्रीभवनाथझाक 'कल्पना' ओ 'नीतिशतक' (अप्रकाशित), दीपकजीक 'आरती' एवं राजकमलक 'स्वरगन्धा' नामक कविता-संग्रह विशेष उल्लेखनीय अछि। हिनक प्रायः सम्पूर्ण कविताक संग्रह 'कविता राजकमल'क नामसँ प्रकाशित भेल अछि।

उपर्युक्त कविगणमे प्रायः सबसँ प्रतिभाशाली ओ उत्कृष्ट कवि छथि श्री गोविन्दझा। एक दिसि यदि ओ 'गीतांजलि'क साक्षात् प्रभावमे आबि 'आलोक' ओ 'याचना' सन कविताक रचना कएल तँ दोसर दिसि युगबोधकेँ अभिव्यक्त करैत, स्वस्थ प्रयोगशीलता तथा गतिशीलताकेँ परिचय दैत 'ब्रह्मदेवता', 'अन्नदेवता' ओ 'एक मूर्खक अनुभव' सन रचना सेहो एकने छथि। हिनकामे नहि तँ पाण्डित्य-प्रदर्शन करबाक प्रवृत्ति अछि आओ ने कल्पनाक चमत्कार उत्पन्न करबाक रुचि। भाषामे प्रसाद ओ माधुर्य सब ठाम रहित हेटा अछि, मुदा भावानुरुप ओजक सेहो अभाव नहि रहैत अछि। श्रीगोविन्दझा बहुविध प्रवृत्तिक माँजल कवि छथि।

शेखरजी पर हिन्दीसाहित्यक सुप्रसिद्ध कवि बच्चनक 'निशानिमन्त्रण' प्रभृतिक बड़ उत्कट प्रभाव पड़ल छलन्हि, ओ आरम्भमे ओही रीतिक गीतक रचना मैथिलीमे कएने छलाह। मुदा युगानुरुप भाववृत्तिकेँ ग्रहण करबाक हिनकामे अद्भुत संवेदनशीलता छैन्हि। 'आजुक युग'मे 'कलुषित इच्छा केर मोरीमे सहसह करै नड.रिया' लिखि ओ ताही प्रवृत्तिक द्योतन एकने छथि। मुदा हुनक ओएह रचना सर्वोत्कृष्ट अछि जाहिमे ओ गीतक प्रयोग कएने छथि। एही दृष्टिएँ हिनक 'तीन चित्र' शीर्षक कविता विशेष उल्लेखनीय थिक, जाहिमे गीतक प्रवाह सेहो अछि ओ युगबोध सेहो।

किसुनजी मूलतः भावुक गीतकार छथि। 'आत्मनेपद' (1972)मे संकलित वा अन्यत्रो प्रकाशित हिनक गीतमे अद्भुत सहज-भावुक सरलता भेटैत अछि। 'वसन्तगान'मे जाहि स्वाभाविक अनुभूतिक संग ओ वसन्तक वर्णन कएने छथि, से अभूतपूर्व अछि। मुदा 1960क पश्चात् प्रयोगवादक जे लहरि चलल, ताहिमे ई आकण्ठ डूबि गेलाह। एहू कोटिक रचना हिनक नीक होइत छैन्हि। प्रयोगवादक बौद्धिकताक स्थान पर सहानुभूतिपूर्ण भावुकताक स्थिति हिनक नवीन रीतिक रचनहुमे स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। नवीन काव्यक पुरोधाक रुपमे हिनका द्वारा संकलित 16 गोट नव कविक कविताक संग्रह 'मैथिलीक नव कविता' नवीन काव्यान्दोलनक क्षेत्रमे हिनक महत्वपूर्ण

अवदान कहल जाए सकैल अछि। मृत्युपरान्त प्रकाशित 'क्रमशः' मे हिनक प्रायः सम्पूर्ण अप्रकाशित कविता प्रकाशित भए गेल अछि।

अमरजी, श्रीजयमन्तमिश्र, श्रीभवनाथझा, दीपक, श्रीश, प्रभाकर आदि सेहो प्रमुख रुपमे नवीन रीतिक गीतकाव्यकार छथि, प्रवृत्ति ओ प्रतिभा अवश्य सभक भिन्न-भिन्न अछि। अमरजी 'गुदगुदी' लिखि हास्यरसक विशिष्ट कविक रुपमे ख्यात भेलाह ओ आबहु हुनक ख्याति ओही पर अवलम्बित अछि। मुदा एम्हर आबि ओ किछु ऋतुविषयक आ किछु देशदशाक विषमताव्यंजक रचना कएल अछि। युगचक्रमे हिनक हास्यव्यंग्य-वक्रोक्तिपूर्ण देशदशाक विषमताव्यंजक रचना संकलित भेल। 'कहू कुशल'मे अपेक्षाकृत गम्भीर ओ भावात्मक रीतिएँ समाजक प्रतिकूल परिस्थितिक चित्रण भेल अछि। वस्तुतः अमरजीक ओएह रचना सर्वोत्कृष्ट भए जाइत अछि, जाहिमे हुनक स्वाभाविक हास्यप्रिय व्यक्तित्व अभिव्यक्त होइत अछि। भाषाशैली हुनक प्रांजल आ प्रसादपूर्ण होइत अछि, 'पंडिताम' कतहु नहि। अमरजीक नवीनतम कविता-संग्रह थिक 'आशा-दिशा' (1975) जाहि मध्य हुनक विचारात्मक गम्भीर रचना संकलित भेल अछि। 'उनटा पाल' (1975) सेहो प्रकाशित भेल अछि, जाहि मध्य 'युगचक्र'क कविताक अतिरिक्त किछु हास्य-व्यग्यात्मक नवीन रचना सेहो संगृहीत अछि।

श्रीजयमन्त मिश्र ओ श्रीभवनाथझा संस्कृतनिष्ठ कविता करबाक हेतु प्रसिद्ध छथि। जयमन्तजीक शब्दचयन ललित ओ कल्पना कोमल, किन्तु वर्णन-रीति आलंकारिक ओ चमत्कारपूर्ण होइत अछि। श्री भवनाझा नवीन रीतिक गीतमे विद्यापतिकाव्यपरम्पराक प्रभावकेँ ग्रहण कए लेने छथि। हिनका पर स्व. ईशनाथझाक गीतशिल्पक सेहो उत्कट प्रभाव पड़ल भेटैत अछि। ई मैथिलीक सिद्धहस्त गीतकार छथि। श्रीजयमन्तमिश्रक 'कविते' ओ 'नभआँगनमे मेघ खेलाइछ' प्रसिद्ध कविता थिक ओ श्रीभवनाथझाक 'वसन्त' ओ 'भादव'।

अंगरेजी साहित्यक प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रमानाथझा मैथिलीक प्रतिभाशाली कवि छथि जे 1941सँ स्वान्तःसुखाय नवीन रीतिक कविता करैत रहलाह अछि, मुदा पत्र-पत्रिकामे छपबैत नहि छथि। 'नवीन गीत'मे संकलित हिनक रचना 'अमरलत्ती' ओ 'दुर्घटना' पाश्चात्य- साहित्यक आधुनिक कविताक अनुसरणमे लिखल गेल अछि। एहि प्रकार रचनाकालक दृष्टिएँ ई नवीन रीतिक प्रयोगवादी कविताक प्रथम कवि सिद्ध होइत छथि। हिनक रचनामे स्पष्टता, प्रांजल रोचकता, नवीन भाव ओ तकर नूतन अभिव्यक्ति अद्भुत सरसताक सृष्टि कएने अछि।

दीपक, श्रीश, इन्दु ओ प्रभाकर प्रमुख रुपेँ नवीन रीतिक कवि छथि जे गीतकाव्यक रचना कएने छथि नव-नव शिल्पक प्रयोग करैत। 'आरती'क कवि

दीपकजीक कविताक विशेषता शिल्प नहि, भावानुभूतिक विलक्षण माधुर्य थिक। प्रकृति-सम्बन्धी रचना हिनक सबसँ सुन्दर होइत अछि। नारीक शक्ति, सामर्थ्य ओ सौन्दर्यक चित्रण करबामे दीपकजी प्रायः सर्वश्रेष्ठ कवि कहल जा सकैत छथि। 'जाइत अछि नववधू पिया घर'मे हिनक कोमल, कान्त ओ भावुक प्रतिभाक सब गुण एकत्र उपलब्ध भए जाइत अछि। हिनक अन्य रचनामे 'मकइक खेत' ओ 'विरोधाभास' विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। इन्दुजी सेहो उत्कृष्ट कोटिक गीतकाव्यकार छथि। हिनक रचनाक प्रमुख गुण अछि संगीतात्मक गतिशीलता, आनुप्रासिक शब्दसंघटना तथा मार्दव ओ माधुर्य। विद्यापति-काव्य-परम्पराके नवीनरूपसँ विन्यस्त करबामे ई अनन्य छथि। 'वर्षामंगल' ओ 'दुइगोट मधुगीत' हिनक उत्कृष्ट कोटिक रचना थिक। हिनक कविता-संग्रह 'तीन सप्तक' मात्र दृष्टि-पथ पर आएल अछि। श्रीशक प्रसंग प्रो. रमानाथझाक मन्तव्य अछि- ई लोकानुरंजनक कवि नहि, भावनाक कवि छथि जनिक प्रतिभा वर्ण्य-विषयक अन्तर्निहित धर्मकेँ सरल ओ सरस रीतिएँ संवेदनाक संग स्फुट कए पाठककेँ रागात्मक आह्लाद प्रदान करबामे पूर्णतया सफल होइत अछि। वस्तुतः ओ मानवजीवनक कवि छथि जे युगक विषमतासँ अनास्था व नैराश्य किंवा औदास्यक आश्रयण नहि करैत छथि, प्रत्युत चिन्तना ओ भावनासँ अपन पाएर स्थिर राखए चाहैत छथि।" प्रभाकरजीक रचनामे गम्भीर भाषाक प्रयोग होइत अछि, मुदा से परिमार्जित, परिनिष्ठित, संस्कृनिष्ठ ओ मधुर। हिनक रचना होइत अछि भावात्मक ओ रहस्यात्मक, अपन अग्रज श्रीरमाकरजीक अनुसरण करैत। 'जलविहीन मीन' हिनक प्रतिनिधि रचना थिक।

बहेड़जी मैथिलीक हास्य-व्यंग्यकार कविगणमे अग्रगण्य छथि। बहेड़जीक प्रतिभा निखरैत अछि ग्राम्यजीवनक चित्रांकनमे ओ राजनीतिक विरूपताक व्यंग्यांकनमे। कहबाक रीति हिनक होइत अछि वक्रतापूर्ण ओ मौलिक, जाहिमे मार्मिक सरसता सदत विद्यमान रहैत अछि। हिनक 'नेता', 'गइबारक साँझ' आ 'की थिक' प्रतिनिधि रचना थिकैन्हि।

राजकमल मैथिली काव्यधारामे प्रयोगवादक प्रथम व्याख्याता ओ सशक्त रचयिता छथि। 'वाद'क रूपमे प्रयोगक ध्वजा लए इएह सबसँ पहिने क्रान्ति करबाक हेतु ठाढ़ भेलाह। हिनक 'स्वरगन्धा' 1958 ई. मे प्रकाशित भेल जकर भूमिकामे ओ लिखल- 'कविताक लेल ई आवश्यक नहि जे छन्द, लय, गीतात्मक प्रसार-विधि, यति-प्रणालीकेँ मान्यता देल जाय। कविताक लेल एके वस्तुक आवश्यकता अछि-शब्द !' ई तँ भेल हिनक शिल्पक विषयमे मान्यता, भावक प्रसंग ओ चिरस्थायी, परम्परागत एवं सार्वभौम भावधाराक विरोध कएल :-

कविता आब नहि अछि नायिकाभेद, नख-शिख, सिंगार,
कविता नहि अछि रतिविपरीतक उलटल गीवाहार

कविता थिक जनजीवनक अभियान जयघोष
गाएब, गाबिकेँ रिझाएब नहि थिक कविता
भाषाछन्दक ईंटासँ बान्हल इनार थिक, पोखरि थिक,
कथमपि नहि थिक सरिता।

एहूसँ अधिक स्पष्ट भए प्रयोगवादी वा नव कविताक भावक्षेत्रक व्याख्या कएल ओ अपन 29 अगस्त 1965 क 'मिथिलामिहिर'मे प्रकाशित निबन्धमे, जाहिमे ओ लिखल जे 'मनुक्खक अन्तरंग, ओकर आत्मदमन ओकर आत्मभुंगार प्रयोगवादक भावपक्ष थिक', अर्थात्- एहिमे सामाजिक पक्षक चित्रण गौण थिक। कहबाक तात्पर्य जे ओ मनुष्यक व्यक्तिगत कुण्ठाक यथावत् चित्रण करब कविताक उद्देश्य बुझैत छलाह। जँ कि एहि प्रकारक कुण्ठा पूर्ण स्पष्ट नहि रहैत अछि, तेँ एकर अभिव्यक्ति स्पष्ट नहि भए सकैत अछि। दोसरा शब्दमे, छायावादक घोर वैयक्तिकताकेँ ओ ग्रहण कएल, मुदा ई वैयक्तिकता निराशा, कुण्ठा ओ पलायनवादिताक। शिल्पक क्षेत्रमे कवितासँ 'लय'वा 'प्रवाह'केँ सर्वथा बहिष्कृत करबाक विचार ओ व्यक्त कएल।

राजकमलजी एहि प्रवृत्तिकेँ सिद्धान्ते धरि सीमित रखने होथि, से नहि। यद्यपि शिल्प-प्रवृत्तिकेँ ओ पूर्ण रूपेँ व्यवहारमे परिणत नहि कए सकलाह, मनोवांछित प्रवाहहीनता ओ नादहीनता अपन कवितामे नहि आनि सकलाह, मुदा भावक्षेत्रमे कुण्ठा आदिक अभिव्यक्तिक प्रवृत्तिक ओ अविकल्ल अनुसरण कएने छथि। हुनक रचनामे कोन रूपक अनास्था-कुण्ठा व्यक्त भेल अछि से निम्नोद्धृत पंक्तिसँ बहुत किछु स्पष्ट होइत अछि :-

हमरा सभक पूर्वज भोर देखने छलाह
किन्तु आइ हम सभ एहि महावनमे छी समस्त
पूर्वजविहीन ।
हुनका सभक कोनो संस्कार, कोनो परम्परा
कोनो श्रद्धा नहि रहि गेल अछि, हमरा सभमे,
हमसभ निराश्रित निराधार
क' रहल छी अमावस्याक एहि श्मशानमे
सभ व्यतीत वस्तुजातकेँ अस्वीकार।
- 'महावन' सँ

वस्तुतः मैथिली काव्यधारामे प्रयोगवादक महत्व अछि भावाभिव्यक्तिक नवीनता लए, भावनाक क्षेत्रमे नपुसंक आत्मदहनक प्रवृत्ति शुभद तँ कथमपि नहि कहल जाए सकैछ। राजकमल एहि 'वाद'क आन्दोलनकेँ नवीन अपरिचित प्रतीक, व्यंग्य, अप्रस्तुतव्यंजना ओ उक्तिक वक्रताक प्रयोग द्वारा उत्तेजित कए देल ओ वैचित्र्यक कारणे लोककेँ आकृष्ट कएल। हिनकहिसँ प्रगीतकाव्यक मुख्यधारासँ विच्छिन्न भए एकटा भिन्न धारा प्रयोगवाद प्रभृति नव-नव नामे चलए लागल, जाहि मध्य कवित्व-उत्कर्ष दिसि ध्यान नहि दए

नव-नव वैचित्र्य-प्रदर्शन द्वारा चौंकएबाक ओ शब्दशिल्प कैं अधिकाधिक गद्यात्मक करबाक प्रवृत्ति विशेष प्रबल भए उठल। प्रतिभाक धनिक राजकमल मैथिली साहित्यक आकाशमे प्रज्वलित धूमकेतु जकाँ अपन प्रतिभाक दाह क्षण भरिक हेतु अंकित कए विलीन भए गेलाह।

सन् 1931सँ 1940 धरि अवतीर्ण भेनिहार कविगणमे श्रीगोपालजीझा 'गोपेश' (ज. 1931), श्रीमन्तपाठक (ज. 1931), प्रो. श्रीगयानन्दमिश्र (ज. 1932), 'किसलय' (ज. 1932) डा. केदारनाथ लाभ (ज. 1932), श्री आद्यानाथझा 'निरंकुश' (ज. 1934), श्री सोमदेव (ज.1934), प्रो. धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र' (ज. 1934), श्रीरमानन्द रेणु (ज. 1934), श्रीमन्त्रनाथझा 'हंसराज' (1934), श्रीरामदेवझा (ज. 1936), स्व. हरिनाथ (1938-63), स्व. विनोदानन्दझा 'बीनू' (1939-53), मिहिर (ज. 1939), श्रीगंगेशगुंजन (ज. 1940) आदिक नाम अग्रगण्य अछि। श्री विश्वनाथ झा 'विषपायी' ओ श्रीताराकान्त प्रकाशक यद्यपि जन्म भेल 1929मे तथा श्रीइन्द्रनाथ ओ रघुपति राधवक 1932मे, मुदा ई लोकनि प्रख्यात भेलाह 'मिथिलामिहिर'क नवीन रुपमे प्रकाशनक पश्चात्। एहि श्रेणीमे अपेक्षाकृत पुरान कवि श्रीलोकपतिसिंह, श्री धूमकेतु (ज. 1932) तथा श्री रवीन्द्रनाथठाकुर (ज. 1936) ओ अपेक्षाकृत नवीन कवि वीरेन्द्र (ज. 1945) सेहो अबैत छथि। एहि ठाम श्री शिवकान्तमिश्र 'नृसिंहन' (ज. 1942)क चर्चा सेहो कएल जाए सकैत अछि। कवयित्रीगणमे श्यामादेवी बहुत दिनसँ लिखि रहल छथि। हिनक 'कामना' कवितासंग्रह प्रकाशित अछि। 1960 क पश्चात् प्रख्यात कवयित्रीगणमे शेफालिकावर्मा, प्रभाझा, सुमन (ज. 1944)ओ कामाख्या (नीरजा रेणु)क नाम अग्र-गण्य अछि। मैथिली काव्यधाराक अभूतपूर्व विकासकैं देखि कतोक हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ कविगण सेहो मैथिली कविताक रचना दिसि प्रवृत्त भेलाह, ताहिमे श्रीरामावतार 'अरुण' ओ श्रीमधुकर गंगाधर (1936)क नाम उल्लेखनीय अछि।एहिमे प्रथम कवि गीतक रचना कएल ओ दोसर प्रयोगवादी कविताक।

उपर्युक्त कविगणमे निरंकुश ओ गोपेश 1950 क लगपास लिखब आरम्भ कएल ओ शीघ्र प्रख्यात भए भेलाह। गोपेशजीक 'सोनदाइकपत्र', 'गुम्म भेल ठाढ़ छी', 'अलबम' (1976) एंव 'आब कहू मन केहन लगैयै' (1981) कवितासंग्रह प्रकाशित अछि। इएह सब शीर्षक कविता हुनक बड़ प्रसिद्ध भेल। 'कोशीक माछ' हिनक दोसर प्रसिद्ध कविता थिक। आरम्भमे ई यात्रीजीसँ बड़ अधिक छाया ग्रहण कएने छलाह, मुदा धीरे-धीरे ओ अपन वैशिष्ट्य स्थापित कए लेल। हिनक कविताक मुख्य गुण थिक व्यंग्यपूर्ण रीतिएँ सरस ग्राम्य-जीवन ओ भावनाक चित्रांकन। निरंकुशजी परिमार्जित भाषाशैली ओ शब्दविन्यासक हेतु आरम्भहिसँ प्रसिद्ध भेलाह। गीत हिनक सुन्दर होइत अछि, किन्तु हिनक उपहास-व्यंग्यकाव्य प्रो. तन्त्रनाथझा ओ यात्रीजीक पश्चात् सबसँ अधिक सफल भेल। 'गामक भूत' ओ 'ब्रह्मक थान' हिनक बड़ प्रसिद्ध रचना थिक।

एकर पश्चात् जाहि कविगणक नामोल्लेख कएल गेल अछि, तिनका प्रमुखताकें ध्यानमे रखैत दुइ श्रेणीमे बाँटि सकैत छी- 1. प्रगीतकाव्यकार, एंव 2. प्रयोगवादी कवि। दोसर श्रेणीमे एहनो गीतकाव्यकार छथि जे पश्चात् प्रयोगमे विशेष ध्यान देल। प्रथम श्रेणीमे श्रीमन्तपाठक, रेणु, किसलय, डा. केदारनाथलाभ, मिहिर, रामदेव आदि कवि तथा श्यामादेवी प्रभृति अधिकांश कवयित्रीगण अबैत छथि। दोसर श्रेणीमे सोमदेव, धीरेश्वर, हंसराज, स्व. हरिनाथ, स्व. बीनू, ताराकान्त प्रकाश, धूमकेतु (ज. 1932), जीवकान्त (ज. 1937), कीर्तिनारायण (ज. 1937), प्रभृति अबैत छथि। मायानन्द ओ धीरेश्वर किसुनजी जकाँ गीत-काव्यकारक रुपमे प्रख्यात भेलाह, पाछाँ प्रयोगवादमे रमि गेलाह।

प्रवासी ओ श्रीमन्तक शब्दयोजना ललित ओ छन्दयोजना संगीतात्मक होइत अछि। कोमल कल्पना ओ तदनुरुप अप्रस्तुतरुपविधानक हेतु ई दुनू गोटाक नाम प्रख्यात अछि। अरुणिमा'क कवि प्रवासी तँ प्रकृतिक स्वाभाविक तन्मयताक संग वर्णन करबामे अन्यतम छथि। श्रीकेदारनाथलाभक रचनामे अनुप्रास-योजना मधुर तथा झंकारपूर्ण होइत अछि जे लालित्यक विधायक तँ होइते अछि, मुदा प्रसादक बाधक नहि होइत अछि। विषय हिनक होइत अछि प्रणय ओ रहस्यमूलक। 'अये विभामयी,' 'आइ भरि', 'अनुनय', आदि हिनक किछु श्रेष्ठ गीत थिक। 'अन्ततः', ओ 'ओकरे नाम'क कवि रेणु, धूपदीप'क कवि इन्द्रनाथ, 'मधुरी'क कवि मिहिर ओ रामदेवमे गीतकाव्यकारकक प्रतिभा प्रचुर मात्रामे अछि। एहिमे रेणु प्रायः सबसँ प्रतिभासम्पन्न कवि छथि। रेणु ओ रामदेव प्रयोगवादी कविता सेहो करैत छथि। रेणुक प्रयोगवादी रचना वैचित्र्य-पूर्ण होइत अछि। अपन पुत्रक मृत्युक प्रतिक्रियामे रचित 'ओकरे नाम' विलक्षण शोक-काव्य थिक। कवयित्रीगणमे श्यामादेवी ओ कामख्यादेवी सबसँ प्रतिभाशाली बूझि पड़ैत छथि। नारीहृदयक कोमलताक ओ भावसौष्ठव हिनकालोकनिक कवितहु मध्य स्पष्ट रुपसँ प्रतिविम्बित भेल अछि।

मायानन्द वस्तुतः कोमल भावक सरस मधुर कवि छथि। हिनक 'दिशान्तर' कविता-संकलन प्रकाशित भेल अछि। ई 'अभिव्यंजना' नामक पत्रिकाक सम्पादन कएल, जकरा द्वारा नव कविता नामे नवीन रीतिक प्रयोगवादी कविताक आन्दोलन चलाओल। मायानन्दक अनुसार नव कविताक विषय कोनो भए सकैछ, अभिव्यंजना धरि नवीन होएबाक चाही। हिनक गीतक विषय अछि मुख्यतः नारीप्रेम ओ नारीसौन्दर्य। नव कविता ओ विविध भाव पर लिखने छथि। हिनक प्रयोगवादी रचना कतहु अस्पष्ट नहि होइत अछि, प्रत्युत ओहि मध्य माधुर्य रहैत अछि जे हुनक गीतकाव्यकारक मूल व्यक्तित्वक सूचना दैत अछि। प्रयोगवादकेँ स्वस्थ दिशानिर्देश करबामे हिनक योगदान तँ बड महत्वपूर्ण अछि। ई ग़ज़ल-प्रभेदक छन्द-रचनहुँ मे अपन योगदान देल अछि तथा तकर एक गोट लघु-संग्रह 'अवान्तर' नामसँ प्रकाशित भेल अछि। मायानन्दक विपरीत 'काल-

ध्वनि' (1965)क कवि श्रीसोमदेव आरम्भहिसँ प्रयोगवादी मनोवृत्तिसम्पन्न कवि रहलाह अछि। ई गीत सेहो रचल अछि। एम्हर आबि लोकगीतक ताल पर सेहो किछु रचना कएल अछि। मुदा हिनक सभ प्रकारक रचनामे हिनक प्रयोगशील व्यक्तित्व सएह प्रतिबिम्बित अछि। हिनक कविताक भाव व्यक्तिवादी नहि, समाजवादी अछि। अतः हिनक रचनामे अनास्थाक स्थान पर विद्रोह, निराशाक स्थान पर आशा, अकर्मण्य आत्मदहनक स्थान पर ज्वलित युगदहनक भावना निहित अछि। 'कालध्वनि'क संकलनमे ओ सहजतावादक स्थापना कएल भावात्मक स्फोटवादक आधार पर। सहजता-वादक जे व्याख्या ओकर भूमिकामे धीरेश्वर कएने छथि, तकर आधार पर निर्विवाद कहल जाए सकैत अछि जे उत्कृष्ट काव्यगुणसँ युक्त रचना सहजतावादी रचना थिक। हिनक अभिव्यक्तिशैली होइत अछि व्यंग्य ओ प्रतीक-मूलक। प्रयोगवादी कविताक एकटा दोष धरि हिनकहु रचनामे अछिए आओर से थिक प्रेषणीयताक अभाव। ताराकान्त प्रकाश, हंसराज, धूमकेतु, जीवकान्त, वीरेन्द्र (ज. 1945), रघुपतिराघव, कीर्तिनारायण प्रभृति सेहो प्रयोगवादक पूर्ववर्ती कविक, मुख्यतः रामकमल ओ सोमदेवक अनुसरण कएने छथि। 1966 ई.मे नचिकेता (ज. 1952 ई.)क 'कवयोः वदन्ति' काव्यसंकलन प्रकाशित भेल जकर भूमिका लिखल श्री प्रबोधनारायण सिंह। प्रो. सिंह नचिकेताक रचनाकेँ एक पृथक् 'वाद' नवचेतनावाद'क अन्तर्गत परिगणित कएल अछि। नचिकेतामे प्रतिभाक दर्शन होइत अछि। हिनक रचनाक विशेषता थिक नवीनताक ओ प्राचीनताक समन्वय। हिनक प्राचीनता हमरालोकनिक प्राचीन वैदिक भावधारा थिक ओ नवीनता थिक प्रयोगवादी अभिव्यक्तिशिल्प। 'कवयोः वदन्ति'क 'अन्हारमे इजोत', 'पाछाँमे अन्धकार' आदि रचना उत्तम कोटिक अछि। हिनक द्वितीय कविता-संग्रह 'अमृतस्य पुत्राः' (1970) युगबोधमूलक आधुनिक सांस्कृतिक चेतनावादक दोसर उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। हिनक तेसर कविता-संग्रह 'अनुत्तरण' (1981)मे हिनक कवित्व-प्रतिभाक प्रौढ़ताक दर्शन होइत अछि। कीर्तिनारायण 'सीमान्त' (1967) कविता-संग्रह प्रकाशित कए ओकर दीर्घ भूमिकामे अकविता नामे नवीन वादक प्रचार कएल अछि। हिनकर रचनामे विद्रोहक स्वर स्पष्ट अछि। 'सीमान्त'क कतेक रचना वस्तुतः हृदय ओ मस्तिष्ककेँ स्पर्श करैत अछि। परन्तु हिनक 1980 ई.मे प्रकाशित 'हम स्वयं नहि लिखब'मे अपेक्षाकृत अधिक प्रौढ़ता ओ कवित्वक दर्शन होइत अछि। 'कवयोः वदन्ति' ओ 'सीमान्त'क समकालीने उदीयमान तरुण कवि श्री हेतुकरझाक 'चेतिका' (1967) सेहो प्रकाशित भेल। 'चेतिका'क प्रसंग स्वनामधन्य डा. आदित्यनाथझाक मन्तव्य अछि- "चेतिका शिल्पविधान, भावभूमि ओ बिम्ब-योजनाक दृष्टिएँ आधुनिक बोध पर आश्रित थिक, मुदा स्वर, बन्ध तथा दृष्टिविधानक विचारसँ एहि संकलनक कवितासब परम्परासँ लेपटायल अछि जेकर आभास स्पष्ट छैक।" अतः एहिमे विद्रोह नहि, सामंजस्यक प्रमुखता अछि। हिनक दोसर कविता-संग्रह थिक 'परिस्थिति' (1981)। 'कालपुरुष' द्वारा सम्पादित 'अनामा'मे श्री गंगेशगुंजनक 'हमर एक मिथ्यापरिचय' शीर्षक दीर्घ कविता प्रकाशित भेल, ताहि मध्य गुंजनजी व्यक्ति-व्यक्तिमे आच्छन्न संत्रास, विक्षोभ ओ

वास्तविकताकेँ अतियथार्थवादी रीतिएँ चित्रित करैत नवीन काव्य-क्षेत्रमे एक नूतन मानदण्ड प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल। हिनक रचनामे निराशा ओ अवसादक नग्न चित्रण भेल अछि। 1980 ई.मे प्रकाशित हिनक 'लोकसुनु'मे चिन्तनक स्वर अपेक्षाकृत अधिक व्यवस्थित रूपेँ अभिव्यंजित भेल अछि।

'इत्यलम्'क रचयिता स्व. विनोदानन्दझा 'बीनू' अल्पायु भेलाह। प्रयोगवादक विकासक दृष्टिएँ ओएह व्यापक स्तर पर, राजकमलहुसँ पहिने, नवीन रीतिक रचना करब आरम्भ कएल। मुदा हिनक काव्यशैली परिमार्जित नहि भए सकल ता' हिनक मृत्यु भए गेल। तथापि भावदृष्टिएँ मौलिकताक कारणे हुनक स्थान मैथिली साहित्यमे सुरक्षित भए गेल अछि। तहिना हरिनाथ सेहो अल्पजीवी भेलाह, मुदा प्रतिभाक धनिक हिनक रचनहुमे युगक अनास्था चित्रित भेल अछि। भावनाक रूपांकनक दृष्टिएँ हिनक स्थान मैथिलीसाहित्यक नवीन काव्यधारामे सदैव सुरक्षित रहत। एही दृष्टिएँ निम्नांकित हुनक पंक्ति उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक :-

दीप जरैत रहल
वेदनाक मोम घमैत रहल
टघरैत नोरमे
कागतक नाओ जकाँ
भावना बहैत रहल।

1970 ई.क पश्चात् अनेक प्रतिभाशाली नवीन कविक अवतरण भेल अछि आओर किछु पूर्व अवतरित भए आब अपनाकेँ आधुनिक मैथिली कविताक क्षेत्रमे नीक जकाँ प्रतिष्ठित कए सकलाह अछि। एहि कविगणमे, पूर्वोल्लिखित कविक अतिरिक्त हरिमोहनमिश्र, शिवाकान्त पाठक, जगदीशप्रसाद कर्ण, प्रफुल्ल कुमार 'मौन', कुलानन्दमिश्र (ज. 1940), फजलुररहमान हाशमी (ज. 1940), बिल्ट पासवान (ज. 1940), बुद्धिनाथ मिश्र (ज. 1942), मार्कण्डेय 'प्रवासी' (ज. 1942), पद्मनारायण झा 'विरंचि', (ज. 1942) उदयचन्द झा 'विनोद' (ज. 1943), मोहन भारद्वाज (ज. 1943), डा. जगदीश मिश्र, मन्त्रेश्वर झा (ज. 1944), उपेन्द्र 'दोषी' (ज. 1944), भीमनाथ झा (ज. 1945), डा. इलारानी सिंह (ज. 1945), शशिकान्त, कमल 'आनन्द', पूर्णेन्दु चौधरी, महाप्रकाश (ज. 1948), सुभाषचन्द्र यादव, डा. मदन मिश्र, भुनेश्वर 'पाथेय', ललितेश मिश्र, युगबोध, धीरेन्द्र 'धीर', सुकान्त सोम (ज. 1950), रामभरोस कापड़ि (ज. 1952), विभूति आनन्द, डा. दयानन्द, केदार कानन, ज्योतिवर्द्धन आदि अनेकक प्रमुख रूपेँ गणना कएल जाए सकैत अछि, जनिक रचनामे समसामयिक जीवनक संवेदना ओ बौद्धिक चेतनाक तीव्र अभिव्यक्ति भेल अछि 1967 ई.क पश्चात् नवीन कविताक अनेक संग्रह प्रकाशित भेल अछि जाहि मध्य श्रीविनीतजीक 'पुष्करणी', श्रीरमानन्द रेणुक 'अन्ततः' (1969) ओ 'ओकरे नाम' (1972), श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर 'स्वतन्त्रता अमर हो हमर' (1971) 'अतिगीत'

'प्रगीत', 'सुगीत', एवं 'रवीन्द्रपदावली' (1977), श्रीभीमनाथझाक 'त्रिधारा' (1968), 'वीणा' (1970) एवं 'की फुरैये की नहि' (1977), श्री प्रवासी साहित्यालंकारक 'अरुणिमा' (1970) एवं 'अन्नपूर्णा', श्रीविनोदक 'संक्रान्ति' (1971), मौसम अपना पर (1978), 'एहना स्थितिमें' (1982), एवं 'भरि देह शीरा' (1985), श्रीमती इलारानीक 'विन्दन्ती' (1972), श्री महाप्रकाशक 'कवितासम्भवा' (1972), श्री गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'क 'चानन', श्री हंसराजक 'सन्धान' (1974), श्री मन्त्रेश्वरक 'साधि' (1975), 'अनचिन्हार गाम' (1981) एवं 'बहसल रातिक इजोत' (1982), श्रीशशिकान्तक 'देखल सुनल ओ भोगल' (1975), श्रीरामभरोस कापड़िक 'बन्नकठोरीः औनाइत धुआँ' (1976), श्रीनवीनायक 'प्रतिशोध' (1976), श्रीसुरेशसिंह 'स्नेही'क 'स्पन्दन' (1976), श्रीमार्कण्डेय 'प्रवासी'क 'एतदर्थ', श्रीविभूति आनन्दक 'हेम' (1977, श्रीधीरेन्द्रसिंहक संग), 'उठारहल घोघ तिमिर' (मैथिली गजल, 1981), 'उपक्रम' (1984) एवं 'झूमि रहल पाथर मन' (गजल 1985), श्रीरमानाथ मिश्र 'मिहिर'क 'युगबोध' (1978) एवं 'उपराग' (1982), श्रीविधुकरक 'की करी की नहि' (1978) एवं 'पिजायल तरुआरिहमर' (1986), श्रीमती शेफालिका वर्माक 'विप्रलब्धा' (1978), श्रीजगदीशचन्द्र ठाकुरक 'तोरा आँगनमें' (1978), श्रीचन्द्रभानुसिंहक 'के गीत अलापै छै' (गीत, 1978), श्रीदामोदरलाल दासक 'नवमल्लिका' (1979), डा. श्री दयानन्दझाक 'दर्पण' (1980) श्रीनवलकिशोर मिश्र 'असमञ्जसमे' (1981), श्री हीरालाल 'हेम'क 'सीताचरितामृत' (1981), श्री अरविन्दकुमार 'अक्कू'क 'कहाँ तें गाबि सुनाबी' (गीत-संग्रह, 1981), श्री नूतनराकेशक 'आकाश तों लग आ' (1981)' श्री अग्निपुष्पक 'सहस्रबाहु' (1982), श्री सरसक 'आँगुर भरि सिरहार' (गीत-संग्रह, 1982), श्री कुणालक 'गीताक नाम' (1982), श्रीकलानन्दभट्टक 'कान्ह पर लहास हमर' (गजलक संग्रह, 1983), श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क 'हँमरमे हाँफल कोट' (1983) एवं 'करुणा भरल ई गीत हमर' (गीत-संग्रहक, 1983), श्री कुलानन्द मिश्रक 'ताबत एतबे' (1983), श्री सुकान्त सोमक 'निज संवाददाता द्वारा' (1984), श्री प्रदीपक 'एक घाट तीन बाट' (मुख्यतः गीत-संग्रह, 1985) एवं 'श्रीराम-हृदय' (1988), श्री सुकान्त सोम एवं श्रीकुलानन्द मिश्रक संयुक्त 'भोरक प्रतीक्षामें' (1986), श्री चन्द्रेशक 'आँखि-पाँखि' (1987), श्री विजयशंकरझा 'बिन्दु'क 'पडिबसँ पूर्णिमा' (1987), श्री हरिशचन्द्र 'हरित'क 'कुच्छे अवध्य' (1987) श्री कृष्णाचन्द्र झा क 'केशी'क 'हमरो करी दुलार' (गीत-संग्रह, 1987), श्री जयनारायण चौधरी 'जनक'क व्यंग्य-रचना-संग्रह 'कोना ने बाजब' (1988), पड़बा ओ बिन्दुक संयुक्त 'स्नेह-प्रदीप' (गीत-संग्रह, 1988), श्री नारायण झाक 'कुसुमित कानन' (1988), श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'विविध गीत' (1988), श्री छत्रानन्द सिंह 'झाक' 'एक गुलाबक लेल' (1988), श्री बिधुकरक 'त्रिशूलक नोंक पर' (1988), श्री शंकर कुमार चौधरीक 'फूल जे फुलाएल' (1988), श्री विजेन्द्र कुमार चौधरीक 'अञ्जिजल' (1988), श्री मायानन्द मिश्रक 'अवान्तर' (1988) श्री

दयानन्द झा 'बन्धु'क 'पूर्णिमा', श्रीरामसुदिष्ट 'स्नेही'क 'हमरे गाम हमर गीत' (1988), डॉ. काँचीनाथ झा 'किरण'क 'किरण-कवितावली' (1989) एवं 'कते दिनक बाद' (1989 आदि। प्रो. श्री जगदीश मिश्रक नवीन रीतिक एकटा छोट-मोट कविताक संग्रह 'प्रवास पिआसल' एखनो प्रकाशनाधीन अछि। एहि अवधिमे स्पष्ट रूपेँ कोनहु 'वाद'क अवतारणाक तँ आयास नहि भेल, परन्तु साक्षात् अथवा असाक्षात् रूपेँ अधुनातन कविताक नव्यतम स्मारिका प्रस्तुत करबाक अवश्य यत्न भेल। उपेन्द्र ओ गंगानाथझा 'गंगेश'क संयुक्त-काव्यसंग्रह 'असमाहि हमर हाथ' (1970), छपल जाहि मध्य उपेन्द्र "हम कोनो चक्रव्यूह स्वीकार नहि करैत छी, प्रत्युत एकरा तोड़ि देबाक प्रयास करैत छी"क घोषणा कएल तँ गंगेशजीक मन्तव्य भेल- "हम कथूक आग्रही नहि होब चाहैत छी, माँटि-पानि सभ्यता संस्कृति कथूक नहि।" पहिना जीवकान्त अपन 'नाचू हे पृथ्वी' (1971) मे 'एकटा कचमची, एकटा क्रोध आ प्रतीक्षाकेँ नहि अधि सकबाक कारणे उत्पन्न एकटा खीझकेँ स्पष्टतः रेखांकित करबाक चेष्टा कएल। 1972 ई. मे भीमनाथ विनेन्द्र, के बोध ओ उपेन्द्र दोषीक संयुक्त-काव्यसंग्रह 'धुरी' प्रकाशित भेल जकरा ओ [illegible] 'अपन जीवनगाड़ीक काव्य-चक्रक आधार-दण्ड' मानल। 1972मे वीरेन्द्र मल्लिक कलकत्तासँ 'अग्निपत्र' नामक पत्रिका चलाओल एवं 'अग्निजीवी' कविक एकटा वर्ग उत्पन्न भेल। दरभंगाक 'मिथिलाभूमि'मे प्रकाशित एहि प्रकारक अग्निजीवी कविलोकनिक रचनाक एकटा संग्रह 'अग्नि-संकलन' सोमदेव प्रकाशित कएल। गुंजन, मन्त्रेश्वर, बासुकीनाथ, छत्रानन्द प्रभृतिक संयुक्त-कवितासंग्रह 'संकेत' सेहो प्रकाशित भेल, जाहि मध्य नवलेखनक प्रसंग स्मारिका प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेल। 1977 ई. मे श्रीमार्कण्डेय 'प्रवासी' अपन 'एतदर्थ' नामक लघु-कवितासंग्रहमे 'वाद' नहि, परन्तु सर्वथा अभिनव विधाक स्थापना करबाक चेष्टा कएल। वस्तुतः जकरा सरिपहुँ कविता कहल जाए सकए, तकर रचनाक प्रयासप्रक्रियामे जाहि रीतिक कविता कएल जाइत छैक, सएह श्रीप्रवासीक अनुसार 'एतदर्थ' नामक सर्वथा नवीन विधा भेल। हुनकहि शब्दमे- "'तदर्थ' कविताक क्षेत्राधिकार जतऽ समाप्त भऽ जाइछ ओतौका बादे कविताक कल्पना कयल जा सकैछ। ई कविताक पूर्व-स्थिति किंवा तदर्थ-स्थिति थिकैक।......'तदर्थ' कविता वाद अथवा अपवाद-विवाद नहि, एकटा स्वतन्त्र काव्य-विधा थिक।" एहि प्रकार कोनहुँ नवीन कविक आरम्भिक रचनाकेँ ओ नवीन संज्ञा प्रदान करबाक चेष्टा कएने छथि।

एहि अवधिमे आबि यदि एकदिसि नवरीतिक कवितामे प्रौढ़ता ओ परिमार्जनक दर्शन होइत अछि तँ दोसर दिसि तीक्ष्णता ओ प्रखरताक आभास सेहो भेटैत अछि। प्रथम दृष्टिएँ सोमदेव, रेणु, धूमकेतु, वीरेन्द्र मल्लिक, हंसराज, जीवकान्त प्रभृतिक रचना विशेष रूपेँ ध्यातव्य थिक तँ दोसर दृष्टिएँ गंगेशगुंजन, प्रभासकुमार चौधुरी, कुलानन्दमिश्र, सुकान्त 'सोम', पूर्णेन्दु चौधरी, कमल 'आनन्द', महाप्रकाश, मन्त्रेश्वर, फजलुर रहमान हाशमी प्रभृतिक रचना अध्येतव्य थिक। एना पूर्ववर्ती प्रयोगवादी कवि

जकाँ गत दशकक कवितहु मध्य वैचित्र्य, विद्रोह एवं बौद्धिक तत्व सएह प्रधान रुपेँ निहित रहल अछि। वैचित्र्य उत्पन्न कएल जाइत रहल अछि अभिव्यक्ति-रीतिमे एवं विद्रोहक स्वर मुखरित होइत रहल अछि परम्परागत धारणा ओ साम्प्रतिक विसंगतिपूर्ण सामाजिक ओ राजनीतिक व्यवस्थाक प्रति। पूर्वहि जकाँ एहि दशक मध्यहु भावात्मक संवेदनशीलताकेँ गौण कए कविक पूर्वग्रहसँ युक्त व्यक्तिगत अवधारणा बौद्धिक मुद्रामे अभिव्यक्त भेल सम्पूर्ण गम्भीरताक संग: परन्तु मन्त्रेश्वर ओ हाशमीक समान एहनो किछु कवि अवश्य भेलाह जे अपन चिन्तनशीलताकेँ व्यंग्यमे प्रक्षिप्त कए देल अछि, अर्थात्, जे दार्शनिकक गम्भीर मुद्रा धारणा करबाक स्थान पर व्यंग्योक्ति द्वारा परम्परागत रुढ़ि-रीति एवं साम्प्रतिक सामाजिक विद्रूपता पर मार्मिक आघात करैत छथि, विद्रोहक अग्निशिखा जरएबाक आयास करैत छथि एवं प्रभावित करबामे समर्थ होइत छथि। एहि धाराक नवीनतम प्रतिभाशाली हस्ताक्षरमे सर्वश्री सुस्मितापाठक, हरेकृष्णझा, सागरकुमार, अर्जुन कविराज आदिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

एहि अवधिमे नवीन रीतिक रचनाक संग-संग प्रगीतशैलीक रचना सेहो भेल अछि, उपदेशात्मक, उद्बोधनात्मक एवं भावात्मक। श्रीजयनारायणझा 'विनीत'क रचना यदि उद्बोधनात्मक-उपदेशात्मक अछि तँ उपेन्द्रठाकुमार 'मोहन', काशीनाथझा 'क्लेश', प्रभृतिक रचना भावात्मक प्रगीतकाव्य थिक, जाहि मध्य अनुभव -अनुभूतिक गम्भीर अभिव्यक्ति भेल अछि। प्रगीतक नव्यतम प्रयोगक दृष्टिएँ सर्व श्री उदयभानुसिंह, हंसराज, गंगेशगुंजन, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, शिवाकान्त पाठक, भीमनाथझा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महेन्द्र प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

प्रगीतक ई नव्यतम प्रयोग पश्चात् नवगीतक संज्ञा धारण कएल ओ छन्द-बन्धहीन प्रयोगवादी रचनाक समानान्तर एहि प्रयोगधाराक सेहो विकास होइत रहल प्रयोगवादी कविताक अपरिपक्वता, एकरसता ओ शुष्कताके तोड़बाक हेतु, मैथिली कविताकेँ पुनः कलात्मक ओ संवेदनात्मक धरातल पर प्रतिष्ठित करबाक हेतु ओ एहि नवगीतक सशक्त हस्ताक्षरक रुपमे श्रीमार्कण्डेय प्रवासी ओ श्री बुद्धिनाथमिश्र अग्रगण्य छथि। नवगीतक रचयितामे श्री कुलानन्दमिश्र ओ श्री महेन्द्रक अतिरिक्त तरुण कविगणमे श्री तारानन्द तरुण, श्री कुमार पवन, श्री महेन्द्र नारायण सिंह 'मगन', श्री जगदीशन्द्र ठाकुर 'अनिल', श्री रमाकान्तराव 'रमा', श्री कालीकान्तझा 'बूच' प्रभृतिक सेहो नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। नवगीताहिक प्रशाखा-रुपमे गजल-रचनाक मैथिलीमे प्राचुर्य भेल, मुख्यतः 1980 ई.क समकालमे ओ स्वतन्त्र रुपेँ एखन धरि गजलक चारि गोट संग्रह - श्री विभूति आनन्दक 'उठा रहल घोघ तिमिर' (1981) एवं 'झूमि रहल पाथर मन' (1988), श्री कलानन्द भट्टक 'कान्ह पर लहास हमर' (1983) एवं श्री मायानन्द मिश्रक 'अवान्तर' (1988) प्रकाशित भेल तथा गजलक रचना करब एकटा फैशन बनि गेल, जाहिसँ कतोक कृतविद्य ओ प्रौढ़ कविगण सेहो प्रभावित भेलाह। तरुण

गजलरचनाकारक तँ संख्या अगणित अछि, तथापि सर्वश्री रामभरोस कापड़ि, तारानन्द 'वियोगी', नरेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य 'धीरज', विभारानी, कुमार शैलेन्द्र, अमलताश, अनिलचन्द्र ठाकुर, देवशंकर 'नवीन', चन्द्रशेखरझा 'इन्दु', राजेन्द्र प्रसाद 'विमल', रामविलास 'मधुकर', देवकान्त मिश्र आदिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

वस्तुतः नवीन काव्यधारामे विविधताक दर्शन होइत अछि। एतेक संख्यामे तरुण कविगण काव्यरचनामे लागि गेलाह अछि एवं एतेक संख्यामे नवीन रीतिक कविता प्रकाशित भेल अछि जे तकर विस्तारपूर्वक विवेचन के कहए, तकर संक्षेपमे उल्लेख करबो एहि लघुकाय ग्रन्थमे सम्भव नहि अछि। परन्तु कविताक नाम पर जतेक सामग्री प्रकाशित भेल अछि से सबटा कविते नहि थिक। एहि प्रसंग हम अपन विचार प्रकट नहि कए 'मिथिलामिहिर' (4 जून, 1972)मे प्रकाशित पराशरक निम्नलिखित वक्तव्य उद्धृत करैत छी-

"नवताक बाढ़िमे भसियाइत आबिक 'बहुत रास झड़बैर जमा भ'गेल अछि जकर काँटेटा भविष्यमे रहि जाए सकैत अछि, नव कविताक मर्यादा नहि बढ़ि सकैत अछि"।

परन्तु एहनो बहुतो कविक उदय भेल अछि एवं एहनो बहुत कविता प्रकाशित भेल अछि जाहिसँ नव कविताक मर्यादा बढ़ल अछि, मुदा तकर मूल्यांकनक अवसर एखन नहि आएल अछि।

एहिठाम नवीन गीतकाव्यधाराक मुख्य दुइ प्रवृत्तिक चर्चा कए देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि - 1. प्रकृतिवर्णनक नवीनता एवं 2. हास्य-व्यंग्यवक्रोक्तिक विलक्षणता।

प्रकृतिवर्णन आरम्भेसँ होइत आबि रहल अछि, मुदा उद्दीपनक रुपमे। एहि युगमे आबि हिन्दीक छायावादी कविताक माध्यमसँ अंगरेजी साहित्यक रोमाण्टिक युगक प्रभावक कारणे नवीन रीतिक प्रकृति-काव्यक रचना भेल। संस्कृत-साहित्यक प्रकृतिवर्णन रीतिक सेहो रचना भेल जे मैथिली कविताक विकासक दृष्टिएँ नवीन कहल जा सकैत अछि। अतः पण्डितकविगण द्वारा जे प्रकृतिवर्णन भेल ताहिमे दुनू प्रवृत्तिक मिश्रण भेटैत अछि। जे प्रकृतिकाव्य संस्कृत-काव्यक प्रभावसँ असम्पृक्त भए रचल गेल, ताहिमे केवल नवीन दृष्टिक सएह आभास अछि। प्रो.ईशनाथझा, सुमनजी, मोहनजी, जीवनाथझा, जयमन्तमिश्र, अमरजी, प्रभृति प्रथम कोटिक कवि छथि ओ भुवनजी, यात्रीजी, आरसीप्रसाद सिंह, केदारनाथलाभ, दीपकजी, मायानन्द, श्रीश, श्रीमन्त, रेणु प्रभृति दोसर कोटिक। एवं क्रमे प्रकृतिवर्णनक विविध प्रणालीक अनुसरण कएल गेल,

यथा चित्रात्मक, आलम्बनात्मक, अप्रस्तुतरुपविधानात्मक, संवेदनात्मक, रहस्यसंकेतात्मक, मानवीकरणात्मक एवं उपदेशात्मक। एहिमे अप्रस्तुतरुपविधानात्मक एवं चित्रात्मकप्रणालीक प्रमुख रुपमे उपयोग कएल प्रयोगवादी कविगण (विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक हमर शोधप्रबन्ध 'आधुनिक मैथिली कविताक प्रवृत्ति'क तेसर अध्याय)।

मैथिली काव्यधारामे विशुद्ध हास्यरसक अभाव अछि। मुदा व्यंग्यवक्रोक्ति ओ उपहासमूलक हास्य मैथिली कवितामे प्रचुर मात्रामे लिखल गेल अछि। हास्यरसक रचना 1928क पश्चात् अधिक लिखल गेल अछि। एही दृष्टिएँ 'मिथिला' मासिक पत्रक प्रकाशन ओ ओहिमे प्रो. हरिमोहनझाक (1908-84) मैथिली साहित्यमे प्रवेश ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि। ओहि पत्रिकामे सबसँ पहिने व्यंग्य-चित्रक नीचाँमे ओएह हास्यरसक रचना लिखल। तहिआसँ प्रो. हरिमोहनझा बराबरि हास्यरचना करैत आबि रहल छथि। हुनकहुसँ पूर्व कविवर सीतारामझा अपन मुक्तकमे हास्य-योजना कएल। मुख्यतः हुनक लोकलक्षणमे हास्यरसक सुन्दर समन्वय भेल अछि। प्रो. हरिमोहनझाक 'टीपार्टी', 'ढालाझा', 'पटनास्तोत्र' आदि सुप्रसिद्ध हास्यरसक कविता थिक। यात्रीजीक 'बूढ वर'मे नव-नव विकृतिमूलक उपमानक प्रयोग द्वारा हास्य-सृष्टि भेल अछि।

आगाँ जे हास्यरसक कवितामे विकास भेल से मुख्यतः युगविषमताक चित्रणक द्वारा। एही दृष्टिएँ प्रो. हरिमोहनझाक अतिरिक्त प्रो. तन्त्रनाथझा, अमरजी ओ 'बहेड़जी'क नामोल्लेख मुख्य रुपसँ कएल जा सकैत अछि। अमरजीक 'गुदगुदी', 'युगचक्र' ओ 'उनटा पाल'मे संकलित कविता हास्यरसक थिक जाहिमे युगविषमताक चित्रण करैत हास्यक नियोजना कएल गेल अछि। प्रो. तन्त्रनाथझाक 'ताक्ष्य', 'धन-छूहा', 'वर्षाघोष', 'मुसरीझा' प्रभृति रचनामे हास्यक नियोजन भेल अछि। किन्तु हिनक हास्य उपहासव्यंग्य पर आधारिक अछि ओ स्मितसँ आगाँ नहि बढैत अछि। बहेड़जी सेहो हास्यव्यंग्यक प्रमुख हस्ताक्षर छथि।

हास्यक नियोजना आनो कवि कएने छथि जाहिमे विभिन्न प्रणालीक उपयोग कएल गेल अछि। एहि प्रणालीमे प्रमुख अछि स्वभावजनित विकृतिक चित्रण, विषमताक प्रतिपादन, विदग्धचित्रण, उपहासव्यंग्य आदि। (विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक हमर शोधप्रबन्धक आठम अध्याय)

एहि ठाम एक विषयक चर्चा आओर कए देब आवश्यक बुझैत छी जे नवीन रीतिक मौलिक रचनाक अतिरिक्त अनूदित कविता सेहो लिखल गेल आओर से सफलताक संग। हिन्दी-बंगलासँ अनुवाद कएल प्रमुख रुपसँ 'भुवनजी', संस्कृत-बंगलासँ श्री गोविन्दझा, सुमनजी, व्यासजी तथा रमाकरजी ओ अंगरेजीसँ प्रो. तन्त्रनाथ झा/ प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन' ओ व्यासजीक संस्कृतसँ अनुवाद बड सफल भेल

अछि। सुमनजीक एहि प्रकारक अनूदित कृति थिक 'भानु-शृंगार', 'पुत्रांक पृथ्वी'। रमाकरजीक 'भर्तृहरिशतक'क तीनू भागक अनुवाद बड मार्मिक भेल अछि। एही दृष्टिएँ मिहिर'मे प्रकाशित श्री आरसीप्रसादक ओ पुस्तकाकार प्रकाशित पण्डित श्री जयकान्तझा 'धृतिधर'क मेघदूतक मैथिली अनुवाद उल्लेखनीय अछि। श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास' सेहो गीता, 'रुबाइयात उमरखैयाम' तथा 'शिव-स्तोत्र' ओ 'सौंदर्यलहरीक अपन 'स्तोत्रांजलि'मे सफल अनुवाद कएने छथि। मुदा मौलिक काव्य-रचनाक तुलनामे अनूदित कविता नगण्य अछि। तथापि जे अनुवाद भेल, से मैथिलीक मौलिक कविता जकाँ ग्राह्य भए गेल अछि।

4. कथाकाव्य

लोककथाकाव्यक विकास मैथिलीमे आरम्भेसँ होइत आबि रहल अछि, मुदा से गीतकाव्यक अंग भए। विहुलागीत, दीनाभद्रीगीत, सुट्ठीकुमारिगीत, सल्हेस प्रभृति एही प्रकारक कथाकाव्य थिक, किन्तु लिखित साहित्यक रुपमे नहि। सबसँ पहिल लिखित साहित्य उपलब्ध अछि विद्यापतिक अवहट्टमे लिखल चरितकाव्य 'कीर्त्तिलता' ओ 'कीर्त्तिपताका'। तत्पश्चात् कथाकाव्य तत्त्व भेटैत अछि तथाकथिक किर्तनियानाटकमे, मुख्यतः अनियमित कोटिक किर्तनियामे, यथा रत्नपाणिक 'उषाहरण', रमापतिक 'रुक्मिणी-परिणय' प्रभृतिमे। निम्नलिखित उद्धरणसँ स्पष्ट भए जाएत जे कोन प्रकारक कथात्मक वर्णन ओहिसभमे रहैत छल। रत्नपाणि अपन 'उषाहरण'मे अनिरुद्धक हरणसँ द्वारिकाक स्थितिक एहि प्रकारेँ वर्णन कएने छथि -

तखन द्वारिका भए गेल शोर। रतिपतिकेँ हरलक के चोर।
देवकि रुकुमणि रतिक विलाप। सुनि कहु ककर हृदय नहि काप।
के हरलक मोर घान घकोर। तीनि भुवन हरिसँ के जोर।

तहिना रमापति उपाध्यायक 'रुक्मिणी-परिणय'मे रुक्मी कृष्णक निन्दा एहि प्रकारेँ करैत छथि :-

"हमर वचन सुनिअ महाराज। एहन विचार देल कोन आज।
गोप सबहुँ परिपालन जाहि। नृपति सुतावर के कह ताहि।
गोप बधु संगे सतत बिहारु। मातुल वध नहि ताहि विचारु।" आदि

उपर्युक्त उद्धृत पंक्तिक वर्णन-रीतिक संग रतिपतिक 'गीतगोविन्द' अथवा मनबोधक 'कृष्णजन्म'क वर्णनरीतिक यदि तुलना करी तँ स्पष्ट भए जाएत जे दुनूमे कतबा समानता अछि।

लिखित रुपमे उपलब्ध प्रथम कथाकाव्य थिक रतिपतिकक 'गीतगोविन्द'। तत्पश्चात् मनबोधक 'कृष्णजन्म'क स्थान अबैत अछि। 'गीतगोविन्द' थिक अनुवाद जाहिमे रतिपति कतोक स्थानमे परिवर्त्तन सेहो कए देल अछि। बारहम सर्गमे रतिपति एकरा महाकाव्य कहने छथि- "इति श्रीगोविन्दे महाकाव्ये सुप्रीत पीताम्बरोकृष्णवैकुण्ठेनामद्वादश...."। रतिपतिक समय अनुमानतः लोचनक समकालमे

मान्य होइत अछि, कारण एहि कृतिक हस्तलेखमे एकर अनुवादकाल 1130 फसली अर्थात् 1723 ई. लिखल अछि।

वस्तुतः मैथिलीक प्रथम महाकाव्य थिक 'कृष्णजन्म'-की वर्णनात्मक दृष्टिएँ आ' की कथात्मक भाषाप्रवाहक दृष्टिएँ। मनबोधक 'कृष्णजन्म' मिथिलामे बड़ लोकप्रिय भेल। एहि पोथीक दुइटा संस्करण विशेष उल्लेखनीय अछि, क्रमशः प्रो. रमानाथ झा ओ डॉ. उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित। एम्हर सुमनजी सेहो एकरा सम्पादित कए प्रकाशित कएल अछि। मनबोध ज्योतिर्विद छलाह। हिनक दुइ प्रकारक परिचय देल जाइत अछि-(1) मंगरौनी-निवासी, पलिवाड़जगदौली-मूलक सोनमणिझाक बालक तथा म. नरेन्द्र सिंहक समकालीन एवं (2) फुलबाड़ बड़ियामूलक जगसम्भामक निवासी धानझाक बालक 'भाषाकवि भोलन'। हिनक विवाह भिखारीझाक कन्यासँ भेल तथा हिनक एकटा बालक दयानाथ 1788 ई.मे निःसन्तान दिवंगत भए गेल छलाह। कोन्हु तरहेँ विचारलासँ हिनक समय 18म शताब्दीक मध्यमे सहए पड़ैत अछि।

'कृष्णजन्म' भक्तिमूलक रचना थिक, कारण, कवि सर्वत्र अवसर भेटलहु पर शृंगाररसक वर्णनसँ बचबाक आयास कएने छथि। ई ग्रन्थ सर्गमे नहि, अध्यायमे बाँटल अछि। 18 अध्यायक एहि काव्यमे वर्णनात्मक चमत्कार नहि अछि, कथाटा कहि देब कविक लक्ष्य बुझि पड़ैत अछि। नामक अनुसार एहिमे कृष्णक जन्मछिटाक वर्णन होएबाक चाही, मुदा ग्रन्थक विषय ओतबहि धरि सीमित नहि अछि, प्रत्युत एहिमे समग्र कृष्णलीलाक संक्षेपमे उल्लेख भेल अछि।

'कृष्णजन्म'क मैथिली साहित्यमे बड़ महत्त्व अछि। प्रथम महाकाव्य होएबाक कारणे एहि ग्रन्थक ऐतिहासिक महत्त्व तँ अछिए, संग-संग एकर महत्त्व अछि लोकभाषाक प्रयोगक दृष्टिएँ। चन्दाझा मैथिलीमे लोकभाषाक प्रयोग करबाक हेतु प्रसिद्ध छथि। किन्तु मनबोध हुनकहुसँ पूर्व ठेठ मैथिलीक प्रवाहपूर्ण प्रयोग अपन एहि कथा-काव्यमे कए चुकल छलाह। हिनक कथा कहबाक रीति सेहो विलक्षण अछि। कनिएँमे कथा कहबाक हिनकामे अद्भुत प्रतिभा छल, अतः ओ कथा-काव्यक प्रधान गुण विषयक चमत्कारपूर्ण ओ विस्तृत वर्णन नहि मानल। मुदा थोड़मे वर्णन करितहुँ ओकर पूर्णचित्रांकन करबामे ओ पटु छलाह। बाल्य-स्वभावक वर्णन करबामे तँ मनबोध बेजोड़ छथि। द्रष्टव्य थिक -

कतो एक दिवस तखन बिति गेल, हरि पुनु हथगर गोरगर भेल।
से कोन ठाम जतए नहि जाथि, कय बेर आँगनहुसाँ बहराथि।
द्वार उपरसाँ धरि-धरि आनी, हरखथि हँसथि यशोदा रानी।
कय बेर आगि हाथसाँ छीनु, कय बेर पकलाह तकला बीनु।

मनबोध सर्वप्रथम गीतशिल्पकेँ त्यागि स्वतत्र रीतिएँ कथा-काव्यक रचना कएल।

एहि प्रकार ओ मैथिली कथा-काव्यक जनक सिद्ध होइत छथि।

अतः मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि कृतिक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। एतदतिरिक्त एकर महत्त्व अछि मिथिलाभाषाक विकास ओ तत्कालीन सांस्कृतिक स्वरूप बुझबाक प्रामाणिक साहित्यिक साधनक रूपमे। एहि मध्य कतोक प्राचीन शब्दक परिवर्तित प्रयोग भेटैत अछि ओ कतोक आधुनिक शब्दक विकसित होइत पूर्व रूपक सूचना सेहो प्राप्त होइत अछि। तहिना एहि मध्य बालकक जन्म पर हकार देब, तेल-सिन्दूर बाँटब, सोहर गाएब, धिया-पूताकेँ चुमाओन करब तथा भदवादि विचारक वर्णन भेल अछि जे एखनहुँ धरि हमरालोकनिक सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अंग थिक।

सब दृष्टिएँ विचारलासँ निर्विवाद रूपसँ 'कृष्णजन्म'केँ दुइ सए वर्ष पूर्वक मिथिलाक भाषा, साहित्य ओ संस्कृतिक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण दर्पण कहल जाए सकैत अछि।

आधुनिक कालसँ पूर्व किछु सम्मर (स्वयंवर) ओ चरित्र-काव्यक रचना भेल, जकरा हमरालोकनि खण्डकाव्य कहि सकैत छी। एहिमे चक्रपाणिक 'उषाहरण' तथा शिवदत्तक 'सीतारामविवाह'क नाम लेल जा सकैत अछि। एही दृष्टिएँ कोनो अपरिचित कवि द्वारा रचित 'रुक्मिणी-स्वयंवर' ओ 'पारिजातसम्मर'क सेहो उल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहु काव्यसभमे ओही रीतिक अनुसरण भेल जेना तथाकथित कीर्तनियानाटक मध्य निहित कथात्मक वर्णनमे भेटैत अछि। एहि ठाम फतुरीलालक फसली 1281 (1873-74)क तथा कवि रविनाथक 1304 (1896-97)क अकाल-वर्णनक चर्चा करब आवश्यक होएत। ई दुनू रचना मिथिलाक अकालक यथार्थ अवस्थाक कथात्मक वर्णन थिक। एही श्रेणीमे बड़ पश्चात् रचित बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहक 'भूकम्प-प्रकाश'क चर्चा कएल जाए सकैत अछि जाहिमे ओ 1934 ई.क भूकम्पक वर्णन कएने छथि। पं. योगेश्वरझाक 'नोर' (1979)मे सेहो कोशीक विभीषिकाक वर्णन भेल अछि, परन्तु एकर रचना खण्डकाव्य-शैलीमे भेल अछि।

कथा-काव्यक विकास महाकाव्य ओ खण्डकाव्य दुनू दृष्टिएँ आधुनिक युगमे भेल आओर एहिमे गति आएल चन्दाझाक 'मिथिलाभाषा रामायण' (1898) ओ लालदासक 'रमेश्वरचरितरामायण' (1914)क रचनाक पश्चात्। दुनू काव्य संस्कृतक आध्यात्म ओ वाल्मीकि-रामायणक प्रभावक अन्तर्भूत भए लिखल गेल जे पढ़बामे मधुर लगैत अछि। छन्दविन्यास सेहो संस्कृतक अछि, मुदा पाठक रीति धरि मैथिली पदावलीक संगीतानुकूल। चन्दाझा तँ बीच-बीचमे मिथिलाक परम्परागत गेय-पदक सेहो प्रयोग कएने छथि, छन्दहुक विविधता अछि। मुदा तेँ ओहिसँ प्रबन्धकाव्यत्वमे कतहु हानि नहि पहुँचैत अछि। चन्दाझाक रामायणक विशेषता थिक मैथिली लोकभाषाक प्रवाहपूर्ण

प्रयोग, विषयक विशद वर्णन, रागरागिणीक उपयोग तथा समग्र रुपेण असत्य पर सत्यक विजयक प्रतिपादन। लालदास सेहो रागरागिणी, लोकोक्तिक, छन्दक विविधता आदिक विन्यास कएल, किन्तु चन्दाझाक रामायण जकाँ ओहिमे ओ चमत्कार उत्पन्न नहि कए सकलाह जाहि हेतु 'मिथिलाभाषा रामायण' प्रसिद्ध अछि। तथापि वर्णनक सरलताक दृष्टिएँ हिनक रामायण बड़ सुन्दर भेल अछि। दुनू गोटाक प्रतिभाक स्वरुप निम्नलिखित लंकादहनक प्रसंगक उद्धरणसँ नीक जकाँ स्पष्ट भए जाइत अछि :-

अरे बाबा दावानल सदृश लंका जरैए
अधर्म्मी लंकेशे तनिक सभ पापे करैए
पड़ा रे रे बाबू किछु न मन काबू परैए
बिना पानी लंकानृपति पटरानी मरैए। आदि

- चन्दा झा

लंका जरय अनाथ सन, बढ़ल ज्वाल आकाश
रवि सन कपि तहि बीचमे, शोभित प्रभा प्रकाश
अनल अनिल साहित्य सौँ, लंका कैँ हनुमान
भसम कयल छनमे यथा त्रिपुरहि रुद्रक बान।

- लालदास

रामायणक पश्चात् कथाकाव्यक इतिवृत्तिके स्पष्ट रुपसँ बुझबाक हेतु एकरा तीन भागमे बाँटि सकैत छी- (क) महाकाव्य, (ख) खण्डकाव्य एवं (ग) पद्यकथा।

महाकाव्य

प्रमुख महाकाव्यमे कविशेखर बदरीनाथझाक 'एकावलीपरिणय' (1938-40), मुं. रघुनन्दनदासक 'सुभद्राहरण' (1937-44), प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कीचकवध' (1938-61) एवं 'कृष्णचरित' (1974-75), कविवर सीताराम झाक 'अम्बचरित', पं. जीवनाथझाक 'रावणवध', मथुरानन्दन चौधरी 'माथुर'क 'काननकन्या', दीनानाथपाठक 'बन्धु'क 'चाणक्य' (1959-61), श्रीलक्ष्मणझाक 'गंगा', मधुपजीक 'राधा-विरह', श्री रामचन्द्रमिश्र 'मधुकर'क 'चैतन्य-चन्द्रायण' (1972), वैद्यनाथमल्लिक 'विधु' (ज. 1913)क 'सीतायन' (1974), सुमनजीक 'दत्तवती' (1966-75), श्रीकालीकान्तझाक 'हनुमान-चरित' (1978), श्रीमतिनाथ मिश्रक 'राजा सलहेस' (1978), श्री रमाकरजीक 'स्मृति-साहस्त्री' (1978), श्री बौआजीझा 'अज्ञात'क 'रुक्मिणी-परिणय' (1980), श्रीमार्कण्डेय 'प्रवासी'क 'अगस्त्यायनी' (1980), श्री विश्वनाथझा 'विषयायी'क 'रामसुयशसागर', पं. दामोदरझाक 'कादम्बरी' (1981), श्रीअरुण कुमारझा 'अरुण'क 'विद्यापति-रहस्य' (1982), श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क 'त्रिपुण्ड' (1984) प्रभृति प्रकाशित अछि। मधुपजीक 'विद्यापति' अप्रकाशित अछि एवं स्व. ईशनाथझाक 1964-65 मे रचित अपूर्ण 'महाभारत' 1987 ई. मे प्रकाशित भेल अछि। डा. कांचीनाथझा 'किरण'क 'पराशर' सेहो 1988 ई. मे प्रकाशित

भए प्रसिद्ध भेल।

देवीभागवतक छठम स्कन्धक आधार पर एकवीर-एकावलीक कथा लए 15 सर्गक 'एकावलीपरिणय'क रचना संस्कृतसाहित्यक उत्तरकालीन आलंकारिक महाकाव्य प्रभावक अन्तर्गत भेल, मुख्यतः माघक, अतः एहि महाकाव्यमे ने तँ चरित्रचित्रणक चारुता ओ रसक निष्पादन दिसि अधिक ध्यान देल गेल आओर ने कोनो सामाजिक दशा वा समस्या पर सएह मौलिक रीतिएँ विचार प्रस्तुत कएल गेल। सरल सहज भाषा-शैलीमे कथात्मक विकासो एकर उद्देश्य नहि बुझि पड़ैछ। एहि महाकाव्य वैशिष्ट्य अछि वर्णनक विशदता, अर्थक गम्भीरता, पदक लालित्य ओ उक्तिक विच्छित्ति। डॉ. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे लिखने छथि जे एहिमे कथाक गति अवरुद्ध अछि। मुदा ई दोष तँ कहल जाएत आधुनिक रीतिक महाकाव्यक। कविशेखरजी जाहि रीतिएँ ओ जाहि आदर्शसँ अनुप्राणित भए ई लिखने छथि, ताहि रीतिक महाकाव्यमे वर्णनक चमत्कारटा विधेय रहैत अछि ओ ताहिमे ई महाकाव्य पूर्ण रुपेण सफल भेद अछि। एहि महाकाव्यक रसास्वादनार्थ अवश्य पाण्डित्य अपेक्षित अछि। मुदा वर्णन चमत्कारपूर्ण होइतहुँ स्थान-स्थान पर विषयक क्रमबद्धताक अभाव अछि। उदाहरणार्थ दोसर सर्गक 21म छन्दमे घोर अन्हारक वर्णन अछि ओ लगले 22म छन्दमे पश्चिमाकाशक लालिमाक वर्णन अछि।

आलंकारिता ओ संस्कृतनिष्ठता 'एकावलीपरिणय'क प्रमुख विशेषता थिक। मुदा जाहि ठाम ओ कथा कहए लगैत छथि ताहि ठाम हिनक भाषा सरल ओ सहज मनबोधक भाषाक प्रवाह सन स्वरुप ग्रहण कए लैत अछि। द्रष्टव्य थिक एकर तेसर सर्ग। वस्तुतः 'एकावलीपरिणय' मैथिली साहित्यक गौरव-ग्रन्थ थिक।

'सुभद्राहरण' दस सर्गमे रचित अछि। मुंशीजी मुख्यतः संस्कृत वर्णवृत्तमे एकर रचना कएने छथि। अतः छन्दक आग्रहेँ हिनक भाषा विकृत भए गेल अछि तथा हिन्दीक उत्कट प्रभाव महाकाव्यक प्रसादकेँ हानि करैत प्रतीत होइत अछि। एकर नाम थिक 'सुभद्राहरण', मुदा एहिमे ओएह कथाटा वर्णित नहि भए अर्जुनक समग्र निर्वासनसँ सम्बद्ध कथा निबद्ध अछि। अतः एहू मध्य वर्णन पर विशेष ध्यान देल गेल अछि, चरित्र-चित्रण वा कथाक एकरुपता पर नहि। हिनक प्रकृतिवर्णन बड़ सुन्दर अछि। उदाहरणक हेतु शरदक निम्नलिखित वर्णन द्रष्टव्य थिक -

शशिक सरस शोभा शोभमाने अकाशे।
अगणित नखतालीकैँ लखू ताहि पासे।
सुखद शरद अएने कृष्णकेलिक स्वरुपे।
रघु नभ वन वृन्दारास क्रीड़ा अनूपे।

प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कीचक-वध' मे पाण्डवलोकनिक विराट राज्यमे अज्ञातवाससँ लए कीचकवध धरिक मार्मिक प्रसंगक नओ सर्गमे कवित्वपूर्ण वर्णन भेल अछि। एकर भाषाशैली संस्कृनिष्ठ अछि ओ छन्द अमित्राक्षर, मुदा कवि बड़ कौशलसँ कथाक विन्यास कएने छथि। एहिमे प्रत्येक सर्गक आरम्भमे प्रकृति प्रभृतिक जे वर्णन कएल गेल अछि, से ओहि ओहि सर्गमे निबद्ध कथाक पृष्ठभूमि निर्माण करबाक हेतु, वर्णनक चमत्कार उत्पन्न करबाक हेतु नहि। कथा कहबाक रीति अछि हिनक आधुनिक, मुदा अपन परम्पराक ओ कतहु त्याग नहि कएल अछि। संस्कृत साहित्यशास्त्रहुक अनुसार महाकाव्य अधिकांश लक्षण एहिमे भेटि जाइत अछि। परन्तु चरित्रचित्रणक मनोवैज्ञानिक पद्धतिकेँ अपनाए कवि एक अभिनव वस्तु मैथिली साहित्यकेँ देने छथि। एही दृष्टिएँ चारिम सर्ग सर्वोत्कृष्ट भेल अछि, जाहिमे ओ कीचकक ओहि ठाम जाइत द्रौपदीक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण चित्रण कएने छथि। नारी-हृदयक विवशता ओ कातरताक चित्रण कए क्रमशः जाग्रत ओ प्रतिष्ठित होइत द्रौपदीक गहन आत्म-विश्वासक तेजोदृप्त भावनाक अंकन ओ जाहि प्रभावपूर्ण रीतिएँ कएल अछि से बड़ स्वाभाविक ओ मार्मिक भेल अछि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्ति :-

शार्दूली की कखनहुँ पाबए त्रास
जम्बूकक ? की कतहु ज्वलित अंगार
तृणचय सकए झाँपि ? की चम्पकवास
भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग ? आदि।

यद्यपि 'कीचकवध' 13-14. वर्षमे सम्पूर्ण भए सकल, मुदा कतहु क्रमहीनताक दर्शन नहि होइत अछि। डा. जयकान्त मिश्रक अनुसार-"*It is perhaps the most successful Mahakavya after Chanda Jha's masterpiece..... There is no hurrying over moods and emotions, each possible turn is explored, and is briefly but imaginatively conceived.* (मै. सा. इ. भाग-2पृ. 88-89)

कविवर सीतारामझाक 'अम्बचरित'मे सीताक जन्मसँ लए सीताक विवाह धरिक वर्णन भेल अछि। 15 सर्गमे एकर पूर्व भाग मात्र प्रकाशित भए सकल अछि। एहि महाकाव्यमे कथात्मक प्रवाह ओ प्रसाद तँ अछि, मुदा महाकाव्यक गरिमा ओ गाम्भीर्यक अभाव अछि। कविवरजी आधुनिक युगसँ एतेक प्रभावित बूझि पड़ैत छथि जे तात्कालिक कथा-युगक यथार्थ वातावरण प्रस्तुत करबामे सफल नहि भए सकलाह अछि। उदाहरणार्थ हुनक अनुसार लंकामे- 'थल थल कुरसी बैंच मेज ओ पलंग खाट छल' तथा अपन बेटीक हेतु 'झरनी, कक्वा, टिकुली, अयना नित नव•कीनथि सखि सुनयना।' तथापि ई मिथिलाक जाहि तन्मयताक संग वर्णन कएल, से काव्योत्कर्षक अछि।

'रावणवध'क रचनामे पं. जीवनाथ झा 'एकावली-परिणय'क प्राचीन परिपाटीक

अनुसरण कएने छथि, अतः एहूमे वर्णनक कौशल पर अधिक ध्यान देल गेल अछि। मुदा स्थान-स्थान पर ओ 'साबुन, गैस, इन्जिन, मलेरिया' आदिक जे चर्चा कएने छथि, से कालविरुद्ध थिक। तहिना रामकथाक प्रस्तुतक हेतु महाभारतक कथाक अप्रस्तुतक रुपमे प्रयोग करब दोखाबह थिक। 'रावणवध'क विशेषता थिक जे संक्षिप्त आकारक होइतहुँ ई महाकाव्यक सब लक्षणसँ युक्त अछि। शब्दशैलीक माधुर्य ओ कल्पनाक कमनीयता सेहो एकर आकर्षक भेल अछि। रामरावणक युद्धक वर्णन कए ई वीररसक सृष्टि कएने छथि। अतः तदनुरुप ओजगुणक सेहो वर्णविन्यास उपस्थित कएने छथि। वर्णनात्मकता एकरो प्रधान गुण थिक।

नवीन प्रकारक भाषा, प्रवाह ओ शैलीशिल्पक दृष्टिसँ दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क 'चाणक्य' (1965) उल्लेखनीय अछि। 'चाणक्य'क कथा प्रख्यात अछि, जकरा 11सर्गमे कवि लिखने छथि। ई महाकाव्य सर्वप्रथम ध्यान आकृष्ट करैत अछि अपन शब्द-विन्यासक नवीनताक कारणे। एहि महाकाव्यक कथा ओ छन्द-प्रवाह अनवरुद्ध आद्यन्त एकरूप एकगातिसँ बहैत रहैत अछि ओ उपनिबद्ध विचार-तत्वमे नीरसताक कतहु संचार होअए नहि दैत अछि। आरम्भक किछु पंक्ति द्रष्टव्य थिक :-

रवि सम दीप्त अनल सम दाहक, पवि सम कठिन कठोर,
कोनो गूढ़तम भावमग्न चिन्तासँ आत्मविभोर,
अंग-अंगसँ चूबय टपटप सुदृढ़ आत्मविश्वास,
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घूमि रहल गत-त्रास ?

एकर चित्रण-प्रणाली, छन्द-विन्यास ओ शब्द-संगठन 'कामायनी' प्रभृति हिन्दी कवितासँ प्रभावित बुझि पड़ैत अछि। मुदा ओहि प्रभावकेँ कवि पचा गेल प्रतीत होइत छथि, कारण कतहु शिथिलताक दर्शन नहि होइत अछि।

श्री लक्ष्मणझाक 'गंगा' (1966) नओ सर्गमे रचित अछि। एकर नओ सर्गक नाम थिक क्रमशः गंगाविवाह, पर्वतप्रदेश, हरिद्वार, तीर्थराज प्रयाग काशीविश्वनाथ, षट्ऋतु विदेह, विदेह, पतिप्रदेश एवं ब्रह्मपुत्र। गंगा महादेवक जटाजूटसँ निस्सृत भए समुद्र दिसि जेम्हर-जेम्हर होइत चललीह तथा हुनक महत्ताक कारणे जतए जतए विशिष्ट तीर्थ-स्थान बनि गेल, तकर एहि मध्य भक्ति-भाव-विह्वल वर्णन भेल अछि। एहि महाकाव्यमे वर्णनात्मकता अवश्य अछि, मुदा कथात्मकताक अभाव अछि। एकर दोसर विशेषता थिक छन्दक एकरूपता। वर्णन कतहु-कतहु बड़ प्रभावपूर्ण ओ रोचक भेल अछि, मुदा स्थान-स्थान पर भाषा ओ छन्दक दोष बड़ अखरैत अछि। तथापि कविक भक्तिभावनाक एहि महाकाव्यमे नीक जकाँ अभिव्यक्ति होइत अछि।

'राधाविरह' मधुपजीक सुप्रसिद्ध महाकाव्य थिक जे प्रकाशनसँ पूर्वहि काव्य-रसिक मनीषी विद्वनलोकनि द्वारा प्रशंसित भेल एवं प्रकाशनोत्तर 197[illegible] ई. मे

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भए समादृत भेल। एकर रचना राधाक चरित्रकेँ केन्द्र-बिन्दु मानि भेल अछि ओ 17 सर्गमे विभाजित एहि कृतिमे 976 छन्द ओ कतिपय गीत प्रयुक्त अछि। मधुपजी एहिमे सांगोपांग रीतिएँ विरहशृंगारक विभावानुभावोद्दीपनादिक वर्णन करितहुँ राधा-कृष्णक शृंगारलीलाकेँ आध्यात्मिक प्रतीकक रुपमे अभिव्यक्त कएल अछि। कृष्ण द्वारा तन्द्रावस्थामे पूर्वदर्शित राधा ओ भुवनेश्वरीक चर्चा कविक तात्विक दृष्टिकेँ स्पष्ट कए दैत अछि।

कवि वियोगकेँ संयोगसँ उत्तम मानैत छथि ओ एही उत्तमतामे 'राधा-विरह'क उत्कर्ष निहित अछि :-

"वास्तव बात वियोगे उत्तम संयोगहुसँ मानी
जकर जलन होइतहुँ अभिन्न हृदयस्थ प्रेमकेँ जानी।"

कवित्वक दृष्टिएँ राधाक विभिन्न रुपक रुपक-रचना चमत्कारक भेल अछि ओ एकर सत्रहम सर्गमे निबद्ध भ्रमर-गीत मैथिली काव्यसाहित्यमे अद्वितीय कहल जाए सकैत अछि। यमकानुप्रासादिक चमत्कारपूर्ण प्रयोग मधुपजीक आलंकारिक प्रतिभाक अन्यतम विशेषता थिक, से एहि मध्य चरम सीमा पर पहुँचि गेल अछि ओ कतहु-कतहु तँ से अर्थ-ग्रहणमे बाधक सेहो भए गेल अछि।

गौड़ीय वैष्णवधर्मसँ दीक्षित मधुकरजीक पन्द्रह सर्गमे विभाजित 'श्री चैतन्य-चन्द्रायण'क नामहिसँ एकर वर्ण्य-विषय स्पष्ट अछि- चैतन्य महाप्रभुक जीवन-गाथाक वर्णन। विविध छन्दक संग-संग मिथिलाक लोक-गीतहुक भास लए एहिमे काव्य-रचना भेल अछि। एकर भाषा सरल ओ परिमार्जित तथा कल्पनाक दुरुहता ओ पाण्डित्य प्रकर्षक स्थान पर मुख्यतः कथात्मकता दर्शन होइत अछि, जाहिमे कविक भक्ति-भावनाक स्वाभाविक अभिव्यक्ति भेल अछि। गौड़ांगक दृढ़ निश्चयात्मक भावोदयबोधक निम्नलिखित पंक्तिसँ एहि काव्यक किछु विशेषता स्वतः स्पष्ट भए जाइत अछि :-

सांसारिक सुख त्यागि करब सत्कर्म,
पालन करब अपन परिव्राजक-धर्म।
विरोधी जन जे करैत अछि डाह,
तकरहु मुखसँ निश्चय निकसत 'आह'।
माथ मुड़ाए करब हम धारण पात्र,
पश्चात्ताप करत लखि पात्र-कुपात्र।

सात-सात सर्गक सप्त-सुमनमे विभाजित अर्थात् 49 सर्गक 'सीतायन' मैथिलीक सर्वाधिक विशालकाय महाकाव्य थिक। एहि मध्य अवतरणसँ भूमिप्रवेश धरिक सीताक चरित्रकेँ सांगोपांग रीतिएँ वर्णन कएल गेल अछि ओ एहि क्रमे मिथिला-भूमिक एवं मिथिलाक रीति-नीति ओ संस्कृति तथा कर्म ओ अध्यात्म प्रभृतिक सेहो समीचीन

व्याख्या ओ प्रतिपादन भेल अछि। कवि सीतावतरण-वर्णनक प्रसंग समाजमे व्याप्त अन्याय-अनीतिक आकलन करैत जेहन स्वस्थ समाजवादी विचार-धाराक द्योतन कएल अछि से हुनक युगधर्मिताक सेहो सूचना दैत अछि।

विधुजी एहि महाकाव्यक रचना नवीन ओ प्राचीन दुनू छन्दमे कएल अछि तथा तत्सम्भापाक प्रयोग करितहुँ पाण्डित्य-प्रदर्शनक आग्रहसँ सतत बचबाक चेष्टा कएने छथि। भाषा हिनक प्रांजल तथा अभिव्यक्ति हिनक प्रसादपूर्ण अछि, परन्तु यत्र-तत्र अशुद्धि सेहो बड़ अछि। नवीन छन्दक प्रयोगमे जतेक सफलता हिनका भेटल छैन्हि ततेक प्राचीन छन्दक प्रयोगमे नहि। कतोक ठाम तँ छन्द गद्यात्मक भए गेल छैन्हि ओ कतोक ठाम यति-भंग सेहो भेटैत अछि। परन्तु एतेक विशाल महाकाव्यमे ई किछु त्रुटि नगण्य कहल जाए सकैत अछि।

मिथिलाक रीति-नीति ओ व्यवहार, महिमा तथा अनुपम प्राकृतिक सुषमावर्णनमे कविक प्रतिभा बड़ निखरैत अछि। एही दृष्टिएँ सीतारामक विवाहवर्णन ध्यातव्य थिक। सरोवरक निम्नलिखित वर्णन केहन कवित्वपूर्ण अछि, से द्रष्टव्य थिक :-

सरवरमे सरसिज मध्य भ्रमर सामोद भ्रमित
नयनाभिराम जलखग विहरए चहकए अगणित
छिड़िआबय पात पुरैन उपर मोती जलकण
कुमुदादि कमल केर पद्माकर धारण अभरण
जलपूर्ण वसन नाचए क्षण क्षण

वस्तुतः 'सीतायन' मैथिली महाकाव्यक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित होएबाक अधिकारी भए गेल अछि। 1976 ई.मे साहित्यक अकादेमी द्वारा पुरस्कृत होएब एकर महत्त्वक परिचायक थिक।

'कीचकवध'क कृतविद्य महाकवि प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कृष्ण-चरित' बारह सर्गक विविध भावछन्दमय उत्कृष्ट महाकाव्य थिक। एहि मध्य कविक मौलिक प्रतिभाक विलक्षण स्वरुपक दर्शन होइत अछि। 'कृष्णचरित'मे कवि कुलपति सन्दीपनीक आश्रममध्य व्यतीत कृष्णक छात्र-जीवनक सांगोपांग वर्णन कएल अछि। किशोरवय कृष्णक सुदामाक सान्निध्य, दुहू गोटाक गुरु-सेवा ओ अन्तमे दुहू गोटाक वार्तालापक माध्यमसँ कवि आश्रम-धर्मक बड़ सजीव तात्त्विक विवेचना कएल अछि। आचार्य ओ शिष्यधर्मक आकलन सेहो बड़ शिक्षाप्रद भेल अछि। महाविद्यालयसँ अवकाश प्राप्त करबाक पश्चात् रचित एहि महाकाव्यमे प्रो. झाक व्यावहारिक जीवनानुभूति ओ परमार्थक प्रति दृष्टिकोणक प्रौढ़ अभिव्यक्ति भेटैत अछि।

कवि 'कृष्णचरित'मे परम्परा ओ आधुनिकताक बड़ कलात्मक समन्वय प्रस्तुत

कएल अछि। एहि मध्य पुरान रीतिक महाकाव्यक वर्णन-प्रणालीक दर्शन होइत अछि तँ आधुनिक रीतिक सुनियोजित कथात्मक विकास ओ मनोविज्ञानिक चरित्रविश्लेषणात्मक विन्यासक निदर्शन सेहो होइत अछि। एक दिसि कवि यदि-

"प्रकृति-नटीक प्रसाधनक जनु सज्जित भण्डार
अछि संचित आमोदमय विविध वर्ण-संभार"

लिखि वसन्तक एतादृश चित्र प्रस्तुत कएल

चढ़लि वनी-रथ, जोति मलय-हय अलितति रश्मि लगाए
किसलय वसन, विकच कमलानन, सुम-भूषण भरि काय
कुन्दरदनि वसन्त लक्ष्मी भए उपगत शोभित भेलि
अधर जवा, राजीवनयन स्मिति जाती जूही बेलि।
नीलाशोक चिकुर थलकमल चरण वट पल्लव हस्त
वकुल अंगुलि चूत मंजरी मौलि-प्रसाधन न्यस्त,
उत्पल-मुकुल उरोज मनोहर नव प्रशस्त कचनार,
चम्पक कनइल सोनहुल कांचन आभूषण हार। आदि

तँ दोसर दिसि देवकीक पुत्रक प्रति ममताक सेहो सूक्ष्म आकलन कएलः-

तृष्णातुर लोचन, मानस सोत्कण्ठ
उर अन्तर प्रज्वलित भेलि चिन्ताग्नि
करए प्रखर उद्वेग पवन खर-वेग।
X X X
ताहिजन्य अनुखन भए चिन्ता-मग्न
नहि बिसरल जाइछ मुख-कंज कदापि
रहइछ टाङ.ल ततहि चित्त विक्षिप्त।

एहि प्रकारेँ विविध प्रकारक वर्णन, अनेक प्रकारक भाव-विचारक प्रतिपादन एवं मनोभावक सूक्ष्म विश्लेषणसँ युक्त प्रो.झाक 'कृष्णचरित' 'कीचकवध'हि जकाँ मैथिली महाकाव्यक इतिहासमे एकटा नवीन कीर्त्तिमान प्रस्तुत करैत अछि। एही कारणे 1979 ई. मे एहि ग्रन्थक हेतु प्रो. झाकेँ साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त भेलैन्हि।

सुमनजी 'दत्तवतीक' रचना 1962 ई.क चीनी आक्रमणक परिवेशमे आरम्भ कएल जे एतबा दीर्घ समयमे पूर्ण भए 1988 ई.मे प्रकाशित भेल। एहि मध्य सुमनजी स्थान-स्थान पर अपन सांस्कृतिक ओ राजनीतिक विचारधाराकेँ व्यक्त कएल अछि। एकर छठम सर्गमे वर्णित अछि जे विदेशी शत्रुसँ आक्रान्त होइतहुँ राज्यमन्त्री 'शान्ति-शान्ति' करैत अछि तँ मृगांकदत्त तकर विरोध करैत कहैत छथि जे "दाही किछु प्रतिरोध, न शान्ति दोहाइ।" अतः एहि प्रसंगसँ यदि एक दिसि तत्कालीन राजनीति पर घोर आघात कएल गेल अछि तँ दोसरे दिसि युद्ध ओ शान्ति-सम्बन्धी स्वस्थ विचारधाराक सेहो द्योतन भेल अछि। निम्नलिखित पंक्ति कविक तत्सम्बन्धी

विचारधाराकेँ आओर अधिक स्पष्ट करैत अछि :-

राजनीति-रथ, शान्ति-क्रान्ति दुहु चक्र।
कखनहुँ सरल पन्थ, कखनहुँ पुनि वक्र।।
साम-दाम केर जतए न हो गति लेश।
दण्ड-विभेदक ततए उचित सुनिवेश।

अर्द्धनारीश्वरक वन्दना करैत कवि अपन सांस्कृतिक ओ आध्यात्मिक दृष्टिकोणक सेहो सुन्दर व्यंजना कएल अछि:-

चेतन अवचेतन चितहिक तनुहिक दहिन ओ वाम
परम ज्योतिहिक युग्म शिखा थिक दिनकर ओ हिमधाम
शब्द अर्थ दुइ दिशा उक्तिहिक, दिन-रजनी मिलि काल
नर-नारी शिव-शिवा अर्धनारीश्वर जयतु त्रिकाल

वस्तुतः 'दत्तवती' सुमनजीक जीवन-जगत ओ संस्कृति-दर्शन-सम्बन्धी विचार-धाराक कवित्वमय आकर-ग्रन्थ थिक।

'श्री हनुमान- चरित'मे हनुमानजीक त्रेता-युगसँ लए द्वापर-युग धरिक जीवन-चरितक मुख्य-मुख्य प्रसंग रोचक शैलीमे चित्रित भेल अछि। 30पर्वमे विभाजित पं.कालीकान्तझाक एहि कृति मध्य महाकाव्योचित वर्णनक पाण्डित्यपूर्ण विशदताक अभाव अवश्य अछि, लौकिक यथार्थक धरातलपर कथानायकक चरित्रकेँ प्रतिष्ठित करबाक प्रयास सेहो नहि भेल अछि किन्तु न्यूनकोटिक कवित्वक दर्शन कतहु नहि होइत अछि, प्रत्युत छन्दक गतिशील प्रवाह, भाषाक परिमार्जित सौष्ठव, सरल ओ स्पष्ट अभिव्यक्ति-रीति एवं रोचक कथा-विन्यास मनकेँ मोहि लैत अछि। आंजनेय हनुमानक चरित पर अपन एहि कृतिक रचना कए वस्तुतः पं.कालीकान्त झा मैथिली साहित्यक एकटा पैघ अभावक पूर्त्ति कएलैन्हि अछि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्ति जाहि मध्य हनुमानजी द्वारा सीताक सम्मुख श्रीरामक मनोस्थितिक वर्णन कोन रीतिएँ प्रस्तुत कएल अछि:-

"अहँक वियोग-अगिन-ज्वाला सदिखन लहरय प्रभु-तन-मन,
दिन न चैन, नहि राति नीन, अप्रिय नहि लागय अनशन।
चिन्तन तजि अपनेक आन दिश, ध्यान न कखनहुँ आनथि,
सपनहुँमे 'सीता-सीता' कहि उठथि, विजनमे कानथि।।

'राजासलहेस' महाकाव्यक रचना स्व.व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क लोकगाथा उपन्यास 'राजा सलहेस'क आधार पर भेल अछि, कवि मात्र ओहि कथाकेँ ओही रुपमे 18 सर्गमे विभाजित कए छन्दोबद्ध कए देबाक प्रयास कएने छथि। एहि मध्य ने तँ महाकाव्योचित वर्णनक विशदता ओ कल्पनाक सूक्ष्मता अछि आओर ने चरित्रचित्रणक चारुता ओ छन्दक गतिशीलता अछि, अधिकांश स्थल पर छन्द गद्यात्मक अछि, परन्तु सरलता ओ स्पष्टता सर्वत्र विद्यमान अछि।

श्री रमाकरजीक 'स्मृति-साहस्त्री' कतोक दृष्टिएँ मैथिलीक अभिनव रीतिक महाकाव्य सिद्ध होइत अछि। ई सर्गमे नहि, शतकमे विभाजित भेल अछि ओ एकर नायक पूज्य छथि कविक स्वर्गीय पिता बाबु क्षेमधारी सिंह, काव्यशास्त्रीय दृष्टिएँ जनिक वृत्ति प्रख्यात नहि कहल जाए सकैत अछि। अपन पिताक सर्वगुणसम्पन्न चरित्रक वर्णन करितहुँ श्री रमाकरजी हुनक जीवनक एहन कोनहुँ मार्मिक प्रसंगक उल्लेख नहि कयने छथि, जाहिसँ हुनक चरित्रक धीरोदात्त-विशेषता पर नीक जकाँ प्रकाश पड़ैत हो। परन्तु वात्सल्य-रसक सर्वथा विपरीत एहि मध्य पितृनिष्ठ रतिकेँ स्थायी-भावक रूपमे परिकल्पना कए साहित्यमे एकटा सर्वथा नवीन प्रकारक रसक अवतारणा कवि कयने छथि। विविध विषयक विशद वर्णन एवं विविध प्रकारक नवीन-प्राचीन छन्दसँ युक्त एहि महाकाव्यमे श्री रमाकरणजीक कवित्व-प्रतिभा अपन चरम सीमा पर पहुँचि गेल अछि, हुनक अन्यान्य कृति जकाँ जाहि मध्य हुनक दार्शनिक व्यक्तित्व स्पष्ट रूपमे प्रतिविम्बित होइत अछि। अनेक स्थल पर हुनक कवित्व पाठककेँ प्रभावित करबामे सफल भेल अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित प्रकृति-वर्णनः-

"दनुकक मोती माला गाँथल कुन्दकुसुम बिच-बिचमे देल।
नव वसन्त तत स्वयं विराजित मुदितमना भए अर्पण लेल।।
पुष्पक सौरभ धूप जतए अछि, बरए पलासक चकमक दीप।
केतकि कानन कलित मधुपरव, सुन्दर जत अछि कत कत नीप।।
तरुवर कोमल किसलय-मण्डित नमल सरस कत जत कचनार।
लघु-लघु बेलक पात सजाओल प्रकृतिकरमे अनुपम थार।।

मिथिलाक मध्यकालीन नाटकक प्रख्यात कथा पर आधारित 'रुक्मिणी-परिणय' महाकाव्यक रचयिता पं.श्री बबुआजीझा 'अज्ञात' सरिपहुँ मैथिली साहित्यमे एखन धरि अज्ञात छलाह एवं एहि महाकाव्यक प्रकाशनक पश्चात् अपन अप्रतिम कवित्व-प्रतिभाकेँ प्रकाशित कए देलैन्हि अछि। कथाक सन्तुलित ओ सुनियोजित विन्यास, भाषा-शैलीक लाक्षणिक प्रयोग, प्रवाहपूर्ण छन्दक मनोरम अनुबन्ध एवं वर्णनक कवित्वपूर्ण चित्रमयता तेरह सर्गमे विभाजित हुनक 'रुक्मिणी-परिणय'क प्रमुख विशेषता कहल जाए सकैत अछि। गौरी-पूजाक हेतु जाइत रुक्मिणीक कोन रूपक वर्णन कवि कयने छथि, से निम्नलिखित पंक्तिमे द्रष्टव्य थिक :-

कारी शिर चिकुरजाल, आनन-छवि धौतधवल
आलिक कर न्यस्त रुचिर राजल सिन्दूर बिन्दु।
ऊपर घनखण्ड श्याम लोहित मणि विभावना
मंगल लय अंक जेना राजथि परिपूर्ण इन्दु।।
साड़ी अवदात देह, दीपक सन दीप्त वदन
विदुषी द्विजवर्ग-वधू जखनहि पद आगु देल।
आलिक समुदाय संग हंसक अनुरूप चालि
चललीं नर-नाथ-सुता गिरिजा-पूजाक लेल।।

दस मुद्रा (सर्ग) मे विभाजित श्री मार्कण्डेय 'प्रवासी'क आधुनिक महाकाव्य 'अगस्त्यायनी'क नायक छथि अगस्त्य एवं नायिका हुनक पत्नी लोपामुद्रा। कवि एहि कृतिक रचनामे शास्त्रीय लक्षणसम्मत अवहेलना नहि कयने छथि, परन्तु एकर प्रमुख विलक्षणता थिक ललित कोमल शब्द-संघटन, प्रवाहपूर्ण आधुनिक छन्द-विन्यास, लाक्षणिक अभिव्यक्ति- भंगिमा एवं स्वाभाविक चरित्रचित्रण। निर्वेदान्त एहि महाकाव्यमे यद्यपि महामुनि अगस्त्यक संसार-मुक्त त्याग ओ साधनाक उदात्त वर्णन भेल अछि, परन्तु स्थान-स्थान पर कवि देशक भावात्मक एकता, अनुशासन आदि लौकिक पक्षहुक प्रतिपादन कयने छथि। एहि महाकाव्यक अंगिरस थिक शान्त जकर परिपुष्टिक हेतु कवि आरम्भहिसँ निर्वेदात्मक भावभूमिक परिचय दैत गेल छथि, परन्तु एहि मध्य थोड़ स्थल ओहन थिक जतए कवि अपन दार्शनिक भंगिमाकेँ त्यागि सहजात मानवीय मूल-भाव-वृत्तिक कवित्वपूर्ण चित्र प्रस्तुत कयने छथि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्तिः-

सिहकल शीतल पुरिवा बसात, ज्योत्स्नामय नभ जनु चन्द्र मात
अछि सुरभि नृत्यरत हेना तथा चमेली
महमह रहल अछि मौलिश्री, गमगमा रहल चम्पाक कली
रूपक दर्प दमकि अछि बेला-बेली
शय्यापर श्वासक पुष्प-गन्ध, परिचित मन संयोगानुबन्ध
बाजलि तथापि 'त्यागु हे ऋषि, भावुकता
अछि संयमित स्वर अति प्रगाढ़ नस-नसमे अछि रति-तृषा धाह
ताण्डव करैछ तन-मनमे कामोन्मुखता।

विपपायीजीक 'राम-सुयश-सागर' वस्तुतः तेसर मैथिली रामायण थिक, जाहि मध्य राम-कथाक वर्णन आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे भेल अछि, यद्यपि एकर पौराणिक स्वरूपकेँ पूर्णतः सुरक्षित राखल गेल अछि। एहि मध्य आद्यन्त मुख्यतः दोहा ओ चौपाइ छन्द प्रयुक्त अछि, तथापि बड़ विरल रूपमे किछु अन्यो छन्दक प्रयोग भेल अछि, विशेषतः सुन्दर ओ उत्तर-काण्डमे। एकर वर्णन-प्रणाली सरल ओ प्रांजल अछि तथा विपपायीजीक परिमार्जित कवित्व-प्रतिभाक स्थान-स्थान पर दर्शन होइत अछि। चन्दाझा ओ लालदासक पूर्वोद्धृत लंका-दहनक पंक्तिक संग निम्नलिखित पंक्तिक तुलनासँ हिनक भाषा-प्रयोग ओ वर्णन-रीतिक वैशिष्ट्य पूर्णतः स्पष्ट भए सकैत अछि :-

धह-धह धधकै लंका आगि जरै धन धाम बखारी धान।
कम्बल खाट पलंक जरै पुनि नार-पुआर भरल खरिहान।।
जरि जाईछ बारि घरारि तथा वन-बाग सुपाटि सुपारि बथान।
करनी भरनी, भोगि असुरदल, खसि अप्पन सोचल बीच प्रधान।।

डा. कृष्णचन्द झाक 'मधु-मन्दाकिनी' हिन्दी-मैथिली कविता-संग्रहसँ ज्ञात होइत अछि जे ओ सेहो मैथिली रामायणक रचना कयने छथि जे अद्यावधि प्रकाशित नहि भेल अछि।

पं. दामोदर झाक 'कादम्बरी' महाकवि वाणभट्टक सुप्रसिद्ध गद्य-रचना पर आधारित महाकाव्य थिक जाहिमे कविक मान्यता अछि जे ओ मूल-कादम्बरीक कोढ़-करेज बहार कए राखि देने छथि। अभिनन्दभट्टक 'कादम्बरी-कथासार'क अनुसार एहिमे मूल 'कादम्बरी'क कथा-वस्तुसँ लेश मात्र भिन्नता तँ अवश्य परिलक्षित होइत अछि, परन्तु एहिसँ एहि कथामे रोचकताक वृद्धिए भेल अछि। एतबा अवश्य जे एहिमे रचनाकारक मौलिक कवित्व-प्रतिभाक अभाव बूझि पड़ैत अछि, कारण एकर अधिकांश भाव-राशि मूल-ग्रन्थक पद्यात्मक रुपान्तर मात्र थिक। एहिमे प्रयुक्त भाषा-शैलीकेँ परिमार्जित एवं अभिव्यक्ति-रीतिकेँ सरल ओ स्वाभाविक कहल जाए सकैत अछि। वसन्त-वर्णनक निम्नलिखित पंक्ति एही दृष्टिएँ उद्धरणीय थिक :-

कमल-परागक सौरभसँ डबरासब अतर जकाँ गमकै छल,
मधुकरगणक मरन्द-पान लखि विरही केर छाती धमकै छल।
लादल फूल पलाशक तरु सब पजरल आगि जकाँ लहकै छल,
कटहरकेर मोछक सुगन्धसँ युवक पथिकक उर टहकै छल।।

श्री अरुण कुमार झा'अरुण'क 'विद्यापति-रहस्य'मे विद्यापति क जीवन-घटनाक कथात्मक वर्णन मात्र भेल अछि, अतः एकरा महाकाव्यक स्थान पर सामान्य जीवन-कथा-काव्य मात्रक संज्ञा देल जाए सकैत अछि।

उन्नैस स्वर (सर्ग) मे विभाजित श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'त्रिपुण्ड'केँ श्रमवादी दृष्टिसँ ओत-प्रोत नवीन प्रकारक महाकाव्यक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। मैथिली महाकाव्यक इतिहासमे सर्वप्रथम ओएह एहि कृतिमे शिवक गौरी-परिणय ओ पारिवारिक जीवनकेँ विषय बनाओल ओ शिवक चरित्र-चित्रण यथार्थवादी पारिवारिक परिवेशमे कएल। शिवक कृषी दिसि उद्यत होएबाक वर्णन कए कवि श्रम ओ कर्मक महात्वांकन करैत छथि आओर कविकेँ इएह सन्देशो देब अभिप्रेत छैन्हि। एहि महाकाव्यमे वर्णनक विशदता ओ कल्पनाक प्रकर्षक अभाव अछि, सर्वत्र इतिवृत्तात्मकता एवं भाषाभिव्यक्तिक सहजताक दर्शन होइत अछि, तथापि स्थान-स्थान पर कविक अनेकानेक प्रसंगोक्ति अन्तस्तलकेँ स्पर्श करबामे अवश्य समर्थ होइत अछि। उदाहरणार्थ नरक हेतु नारीक महत्ता ओ अनिवार्यताक प्रसंग कविक उक्ति कतेक मार्मिक अछि, से द्रष्टव्य थिक :-

नारी थिक आधार पुरुषकेर, जाहि रुपमे देखी,
जननी, भगिनी, मित्र,पत्नी वा दुहिता लए पेखी।
नारी थिक पर्याय ममत्वक, सहनशीलता भारी
जते बतहपन पुरुष करैए, सहए सदासँ नारी।
सर्वसहा धरती थिक नारी, आर पुरुष आकाश,
जे वर्षण कए अपन मोनसँ उपजबैत अछि घास।
नारी पुरुषक कागज थिक जइ पर लिखइछ ओ कविता,

नारी शीतल चन्द्र-ज्योत्स्ना रहओ ओना नर सविता।।

सरसकवि स्वर्गीय ईशनाथझाक अपूर्ण 'महाभारत' 1987 ई. मे प्रकाशित भेल, जकरा सरसकवि अपन मृत्युक एक वर्ष पूर्व, सन् 1964 ई. मे लिखब आरम्भ कएने छलाह, आदि-पर्वक अधिकांश लिखिओ चुकल छलाह, किन्तु असामयिक देहावसानक कारणे हुनक ई विलक्षण महाकाव्य अपूर्ण रहि गेल। परन्तु जतबहि ओ लिखल भए सकल, ततबहिसँ हुनक विलक्षण प्रबन्ध-प्रतिभा एवं उच्च कवित्व-शक्तिक परिचय प्राप्त होइत अछि।

'मैथिली महाभारत' संस्कृतक मूल-महाभारतक अनुवाद नहि थिक, से निम्नलिखित पंक्तिसँ ज्ञात होइत अछि :-

भारतमे निगदित कथा, सभक सार लए श्राव्य।
सरल मैथिलीमे विविध छन्द-बद्ध ई काव्य।।

एकर प्रस्तावनासँ इहो ज्ञात होइत अछि जे एकर रचनाक आरम्भ ओ स्व. रमानाथझाक प्रेरणासँ कएल :-

उपाध्याय श्री रमानाथसँ भए उत्साहित।
शिथिल लेखनी हमर चलल नव बल-परिपूरित।।

सरल मैथिलीमे होइतहुँ एहि काव्यमे कविक सहजात लयात्मक एवं मधुर शब्द-विन्यास, कल्पनाक कमनीय चित्रमयता एवं भावाभिव्यक्तिक सरसता मनकेँ मोहि लैत अछि तथा नव-नव भंगिमासँ युक्त अलंकारोक्ति चमत्कृत करबासँ अधिक मर्मस्थलकेँ स्पर्श कए प्रभावित करबामे समर्थ होइत अछि। एहि मध्य शान्तनुक गंगाक भेँटक प्रसंग गंगाक नख-शिखक वर्णन विशेष रुपेँ उल्लेखनीय अछि, जाहिमे स्व. ईशनाथझाक सरस कवित्व-कल्पनाक सर्वोपरि उत्कर्ष प्राप्त होइत अछि। किछु पंक्ति द्रष्टव्य थिक :-

केशक वर्णन

लखि हुनकर श्यामल केशपाश, जलधर तुरतहि सेवल अकास।
डुबि गेल जाए जलमे सेमार, पाताल गेल चल अन्धकार।

स्तनक वर्णन

उरमे नव उद्गत युग्म रुप, विनु नाल-पात कलिका अनूप।
विनु जलहु रम्य रुचि भरल ओज, ओ छल सरोज वा छल उरोज।

'पराशर' सोलह कथा-खण्डमे विभाजित ओ आद्यन्त मुक्तवृत्तमे रचित आधुनिक रीतिक प्रबन्ध-काव्य थिक। एहि मध्य सुप्रसिद्ध पौराणिक चरित्र पराशर नायक-पुरुष-रुपमे चित्रित भेलाह अछि तथा धीवरकन्यासँ व्यासक उत्पत्ति तथा

शान्तनुक संग विवाह धरिक कथाक रोचक वर्णन भेल अछि। कवि पौराणिक आख्यानक आधुनिक सन्दभमि चित्रण कए ऊँच-नीच-जाति वर्णक समन्वयात्मक सन्देश देबाक क्रममे प्रगतिशील मानवताक सिद्धांत स्थापित करबाक चेष्टा कएने छथि तथा स्थान-स्थान पर लोक-जीवन ओ लोक-काव्यक महत्ताक प्रतिपादन कए अपन अभिरुचिक कवित्वपूर्ण द्योतन करबामे सर्वथा सफल भेल छथि। निम्नलिखित उद्धरणसँ एहि काव्यक वर्णन-प्रणाली, भाषा-प्रयोग ओ जीवनानुभूतिक यथेष्ट परिचय प्राप्त भए सकैत अछि :-

प्रकृति-वर्णन

रौद परायल पुनि भेल ललोन
जानि आगिमे निखरल असली सोन।
सिन्दूरक बड़का गेन समान,
आकृति रंग धय, दिनकर गड़कि खसल
जनि क्षितिजक पार।
नहु नहु अन्हार भेल गाढ़।

ऊँच-नीचक समन्वयक वर्णन

पराशरक चिन्तनशील हृदय गंगा-यमुना धारकेँ,
मानल देशक कारी गोर जातिक प्रतीक,
ज्ञान प्राणमयी शोणित सरस्वती दुनूमे अछि बहैत।
तेँ ज्ञानस्वरूप पुण्यवानेटा सरस्वतीकेँ देखि सकैछ
से अछि कहल जाइत।
देशवासीक हृदयमे दुहू जातिक एकाकार
होयबाक भावनाक प्रबल द्योतित अछि करैत
गंगा यमुना संगमकेँ 'तीर्थराज' नाम देबाक घोषणा।

वस्तुतः 'पराशर' मैथिली प्रबन्ध-काव्यक इतिहासमे विलक्षण स्थान पर प्रतिष्ठित भए किरणजीक कृतित्वकेँ चिर-स्थायी बनाए देलक अछि।

एतए नेपालांचलीय स्व. रमाकान्तझाक सीतारामक चरित्र पर आधारित महाकाव्य 'व्यथा' उच्च कवित्वक दृष्टिएँ उल्लेखनीय थिक जाहि मध्य कवि लिखने छथि :-

मन होइछ हमहूँ मैथिलीमे मैथिलीक कथा लिखी।
श्रीराम केर वनगमनकालक जानकीक व्यथा लिखी।।

वस्तुतः एहि काव्यक सर्वाधिक महत्व एहि व्यथाक चित्रणहिमे अनुभव कएल जाए सकैत अछि। कविक संवेदनशील प्रतिभा सीताक उद्विग्नता, रामक प्रति लक्ष्मणक श्रद्धाभक्ति, भरतक त्याग, उर्मिलाक विषाद आदिक चित्रणमे खूब निखरल अछि। 'व्यथा'केँ निस्सन्देह मैथिलीक उत्कृष्ट महाकाव्यक रूपमे परिगणित कएल जा सकैत

अछि।

उपर्युक्त महाकाव्यक अतिरिक्त प्रौढ़ कविगण द्वारा रचित अनेक महाकाव्यक सूचना प्राप्त होइत अछि, जाहि मध्य 'अच्युतानन्द दत्त'क 'कृष्णचरित (1940-44), मधुपजीक 'विद्यापति', प्रभृति अप्रकाशित अछि ओ मायुरजीक 'कानन-कन्या', 'मिहिर'मे आंशिके प्रकाशित अछि। प. गोविन्दझाक 'सीरध्वज' महाकाव्यक किछु अंश सेहो एमहर दृष्टिपथ पर आएल अछि। परन्तु एहि सभक प्रसंग सम्प्रति किछु विचार व्यक्त करब समीचीन नहि होएत।

एहि प्रकार मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक बड़ थोड़ समयमे पर्याप्त उन्नति भेल अछि।

खण्डकाव्य

खण्डकाव्यक रचना अगणित संख्यामे भेल अछि। डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे लालदासक 'शंभु-विनोद', 'गणेशखण्ड' (1909-11), 'जानकीरामायण' तथा अनेक व्रतकथा, गुणवन्तलालदासक 'सुदर्शनोपाख्यान' (1914-31), 'गंगालहरी', 'गौरीपरिणयप्रबन्ध' (1921) तथा किछु व्रत-कथा, गंगाधर मिश्रक 'नारदमोह' (1919), 'सत्यव्रतोपाख्यान' (1921) तथा 'सुदामा-चरित्र' (1935), दामोदरलालदासक 'शकुन्तलोपाख्यान' एवं 'सावित्री-सत्यवानोपाख्यान' आदि खण्डकाव्यक चर्चा कएने छथि ।

दोसर उत्थानमे बाबूलक्ष्मीपतिसिंहक 'सत्यव्रतोपाख्यान' (1935) ओ पुलकितलालदासक 'रम्भाशुकसंवाद' विशेष उल्लेखनीय अछि। एहिसभकालमे संस्कृतखण्डकाव्यहुक सफल अनुवाद भेल, यथा,- अच्युतानन्द दत्त ओ श्रीबल्लभ झा द्वारा 'भर्तृहरीनिर्वेद' आदिक। स्वतन्त्रहु रुपसँ पूर्वापेक्षे संस्कृतकाव्यसँ प्रभावित अधिक सुन्दर खण्डकाव्य लिखल गेल। एहि प्रकारक खण्डकाव्यमे जनार्दनझाक 'जानकीपरिणय', देवकृष्णरायक 'भार्गवविजय', छेदीझाक 'कोइलीदूत', ऋद्धिनाथझाक 'सतीविभूति', अच्युतानन्ददत्तक 'पतिव्रत्यप्रेम', गोविन्दझाक 'वनवासिनी', परमानन्ददत्तक 'रुक्मिणीपरिणय' रघुनन्दनदासक 'वीरबालक', गणेश्वरझाक 'देवी-गीता' आदि विशेष उल्लेखनीय अछि। संस्कृत-काव्यक प्रभावसँ अपेक्षाकृत बहिर्भूत रचित खण्डकाव्यमे बदरीनाथ ठाकुरक 'मिथिला ओ मैथिली', आनन्दझाक 'विरह-वेदना', अच्युतानन्ददत्तक 'यताहि', पुलकितलालदास 'मधुर'क 'देवीकेतकी', काली कुमारदासक 'परदेशी', आदि विशेष उल्लेखनीय अछि। एहिमेसँ अधिकांश खण्डकाव्य पत्रपत्रिकामे प्रकाशित भेल। जे पुस्तकाकार छपबो कएल से आब उपलब्ध नहि अछि। अच्युतानन्ददत्तक दुइ गोट अप्रकाशित खण्ड-काव्य 'कर्ण' ओ 'कंस-वध' हालहिमे मैथिल अकादमी पटना, द्वारा

प्रकाशित भेल अछि। ई प्रायः हिनक अपूर्ण महाकाव्य 'कृष्ण-चरित'क दुइ खण्ड थिक।

खण्डकाव्यक अन्तिम उत्थानक आरम्भ भेल श्रीउपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क 'संन्यासी' (1947)क पश्चात्। 'संन्यासी'क पश्चात् 1967 ई. धरि उल्लेखनीय खण्डकाव्य प्रकाशित भेल 'माथुर'क 'कृषक', मधुपजीक 'सुकन्या', शिवकुमारझा 'शिव'क 'सिकिकम छल एक दिन इन्द्रकील', विश्वेश्वरसिंहक 'गौरीपरिणय', केदारनाथलाभक 'लखिमारानी' ओ 'भारती', रमाकरजीक 'शर-शय्या' आदि। मधुपजी, शिवजी ओ विश्वेश्वरसिंहजीक काव्य पुस्तकाकार प्रकाशित नहि भेल अछि। सुमनजीक 'वंशावतरण', प्रो. तन्त्रनाथझाक 'सावित्रीसत्यवान' ओ श्रीशक 'आलोकपथ' अप्रकाशिते अछि।

'संन्यासी' ओ 'कृषक'क कथावस्तु काल्पनिक अछि ओ 'लखिमा-रानी', 'भारती' तथा 'शरशय्या'क ऐतिहासिक-पौराणिक। माथुरजी, लाभजी ओ रमाकरजी अपन-अपन खण्डकाव्य सर्गबद्ध लिखने छथि, जाहिमे वर्णनक चमत्कार ओ चरित्रचित्रणक चारुता दुहूक समावेश करल गेल अछि ।

संन्यासी मे अंगरेजी-शिल्पक प्रयोग अछि ओ ई सर्गबद्ध नहि लिखल गेल अछि। एहि मध्य पंक्तिक संख्याक गणना करल गेल अछि पाश्चात्य-शैलीमे। 'कीचकवध'क पश्चात् मैथिलीमे इसतहा काव्य अद्यावधि अमित्राक्षरछन्दमे रचित भेल अछि। एहि मध्य शिवनाथक वैराग्यभाव, घर छोड़ि हिमालय चलि जायब तथा कर्ममार्गक महत्वक ज्ञान भेला पर ओहि ठामसँ पुनः परिवारमे घुरि अयबाक कथा वर्णित भेल अछि। मुदा ओ तखन घुरैत छथि जखन विरह-वेदना सहैत-सहैत हुनक पत्नीक अन्त-समय सन्निकट छल। अतः एकर अन्त दुःखान्त अछि। आद्यन्त कविक भावुकता काव्यकेँ मर्मस्पर्शी बनओने अछि। एहिमे कवि समाजक धार्मिक रूढ़िग्रस्त आस्थाक आलोचना करने छथि। निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिक :-

धर्मक नामेँ होइछ एतए अधर्म,
ई समाज सुखदिनमे एकर महत्व।
हृदयहीन, निर्मोह अपन अस्तित्व,
राखए हेतु करए कत अत्याचार।। आदि

'कृषक' चारि सर्गमे समाप्त भेल अछि। एहिमे कृषकक दयनीय जीवनक भावुकतापूर्ण चित्रण भेल अछि। महाजन गरीब कृषक पर घोर अन्याय करैत छथि जकर जीतोड़ि परिश्रमक पश्चातो ऋणशोध नहि होइछ आओर एहि हेतु ओकर समग्र परिवारक सत्यानाश भए जाइछ। अन्ततः महाजन कृषकक डीह पर हर जोतबबैत अछि। एहि काव्यक प्रमुख विशेषता थिक कथाकाव्यमे नव रीतिक गीतक प्रयोग। भाषा सभ ठाम साधारण रहितहुँ वर्णनक चमत्कार एहिमे अछि तथा विषयक नवीनता, संग-संग रसक संपुष्टि सेहो अछि।

डा. केदारनाथलाभक 'लखिमारानी'मे म. शिवसिंहक रानी लखिमादेवीक चरित्रांकन भेल अछि तथा लखिमाक चरित्रकेँ सर्वगुणसम्पन्न पतिव्रता तथा काव्यमर्मज्ञ विदुषीक रूपमे निखारल गेल अछि। 'भारती'मे मण्डनमिश्रक विदुषी पत्नी भारतीक चरित्रांकन भेल अछि। एहि प्रकारे एहि दुनू काव्यमे लाभजी मैथिल-नारीक सांस्कृतिक गरिमाकेँ काव्यमय वाणी देल अछि। दुनू काव्यक रचना भेल अछि मुक्त स्वच्छन्दवृत्तमे, किन्तु मधुर कोमल शब्दविन्यास एहि दुनू काव्यके अद्भुत संगीतात्मकता प्रदान करैत अछि। काव्यमे निहित प्रकृति अथवा नारी-सौन्दर्यक वर्णन तथा पात्रपात्रीक प्रत्येक कथोपकथन गीत जकाँ अनुगुंजित करैत अछि जे कविक मधुर, कोमल, ललित ओ भावुक व्यक्तित्वक परिचायक थिक। कविकेँ संस्कृतशब्दसमूह पर कतेक अधिकार छनि से सर्वत्र समासयुक्त अलंकारक झंकारसँ समन्वित हिनक रचना स्पष्टरूपेण इंगित करैत रहैत अछि। मुदा एतबा होइतहुँ हिनक भाषा प्रसादपूर्ण रहैत अछि जे लाभजीक काव्यक अन्यतम विशेषता थिक। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक 'भारती'क वर्णनमे आयल गेल निम्नलिखित पंक्ति :-

क्षीरोज्ज्वल तन कौशेय वसन
कुंचित कुंतल धूम्रक झलदल
अधरोष्ठ लाल पसरल प्रवाल। आदि

रमाकरजीक 'शरशय्या'मे भीष्मक शरशय्या तथा हुनका द्वारा युधिष्ठिरकेँ उपदेश देब वर्णित अछि, तेँ एहिमे कथातत्व गौण अछि। कथा कहब अभीष्ट नहि, अभीष्ट अछि हिनका ज्ञान ओ कर्मक उपदेश देब। रमाकरजीक दार्शनिक व्यक्तित्व एहिमे स्पष्ट रूपेँ प्रतिविम्बित होइत अछि, तेँ एहिमे भावात्मक सरसताक अपेक्षा करब अज्ञानता कहाओत। जनपूजाक प्रसंग हिनक 'शरशय्या'क निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिक :-

जनपूजा थिक सभसँ उत्तम काज अहाँ ध्रुव जानु
हिमकन्दरमे बसब तेजिकेँ, नहि ई कहिओ मानु

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'सीता' कविक कथनानुसार खण्डकाव्य थिक। एहि मध्य सीताक महत्ताक सरल वर्ण तँ अवश्य भेल अछि, मुदा, यथोचित कथात्मकताक अभाव अछि। वस्तुतः ई पुस्तक सीताविषयक सातगोट स्फुट गीतक संग्रह थिक जाहि मध्य कतहु-कतहु कथात्मक स्पर्श मात्र देल गेलैक अछि। श्रीरवीन्द्रक नूतन काव्य-प्रयोगक रूपमे एहि रचनाक स्वागत करल जाए सकैत अछि।

1967 ई.क पश्चात् प्रकाशित खण्डकाव्यमे व्यासजीक 'पतन' (1969), बाबू श्रीलोकपतिसिंहक 'द्रोहाग्नि' (1969), डा. श्री अमरेन्द्र मिश्रक 'एकलव्य' (1970) एवं 'सत्यकेतु' (1977), स्व. लक्ष्मणझा (शुभंकरपुरड्योढ़ी) क 'उत्सर्ग' (1975), श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'पंचकन्या' (1977), श्री यागेश्वरझाक 'नोर' (1979), श्री सुमनजीक 'उत्तरा' (1980), श्री रमाकरक 'समाधि' (1983) प्रभृति विशेष रूपेँ उल्लेखनीय थिक।

'पतन' काव्यमे त्रिशिरा ओ वृत्रक अनुचित हत्याक पश्चात् इन्द्र द्वारा स्वर्गक सिंहासन-त्याग, देवता ओ ऋषिक अनुरोधेँ स्वर्ग-सिंहासन पर नहुषक आरोहन, नहुषक राजमद ओ कामसँ वशीभूत होएबाक तथा फलस्वरुपेँ सप्तर्षिक शापसँ हुनक स्वर्गसँ पतन होएबाक कथा वर्णित अछि। एहि कथाकेँ अपन काव्यक आधार बनएबाक प्रसंग कवि भूमिकामे लिखने छथि- **"वर्तमान जगतक राजनीतिक संदर्भमे राजमदक मदान्धताक कारणे नहुषक स्वर्गसँ पतन होयबाक दृष्टान्त विशेष आकर्षक बूझि पड़ल।"**

कवि एहि काव्यकेँ तीन सर्गमे विभाजित कए तीन भिन्न-भिन्न छन्दमे तकर रचना कएने छथि। प्रथम सर्ग सात्विकभावप्रधान अछि, तेँ प्राचीन छन्दमे, द्वितीय सर्ग राजसीभाव प्रधान अछि तेँ एकरा सममात्रिक अतुकान्त छन्दमे, तथा तृतीय सर्ग तामसीभावप्रधान अछि तेँ एकरा मुक्तवृत्तमे रचल अछि। कवित्वक दृष्टिएँ काममोहवशीभूत नहुषक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण भाव-चित्रण विशेष आकर्षक भेल अछि :-

"एकाकी की भोग करब ? आनन्द
करक हेतु चाहिअ अभिन्न दुइ प्राण।
.... स्वर्गक सुख-भोग
हेतु एतए अछि सभहिक दिव्य शरीर।
एतए न मानब यम-नियमादि विचार।
X X X X
छोड़ब हम अधिकार किअए, नृप-नीति
सिखबए निज पद, सिंहासन-रक्षार्थ
सभ उपाय कर्तव्य ....
.....................शची मम गेह
अंकशायिनी होएत आ...ओ...त आब। "

भाषाक प्राञ्जलता, छन्दक प्रवाह ओ भाव-विचारक सौष्ठव तथा स्वस्थ सोद्देश्यताक दृष्टिएँ व्यासजी 'संन्यासी'क पश्चात् 'पतन'क रुपमे एक डेग आगाँ बढ़ि गेल छथि।

'द्रोहाग्नि'मे खाण्डवदाह, मयनिर्मित इन्द्रप्रस्थमे राजसूय, आगत दुर्गुणक उपहास तथा तत्प्रयुक्त ईर्ष्यासँ धूमायित द्यूतशंख जेना परिणामे युद्ध-ज्वालाके उद्दीप्त कए देश-विध्वंसक कारण बनल, तकर ज्वलन्त चित्रण कए बाबू श्री लोकपति सिंह अपन वर्णनात्मक कवित्व-प्रतिभाकेँ नीक जकाँ प्रमाणित कए देल अछि। बन्धु-द्रोहक कुपरिणाम केहन दुःखद होइछ तकर सजीव चित्रण एहि मध्य भेल अछि, संग-संग पौराणिक संदर्भक ओहि परिवेशक माध्यमसँ आधुनिक युग-स्थितिक प्रसंग सेहो विचार व्यक्त कएल गेल अछि। संसारमे भौतिकी उन्नतिसँ मानवताक गौरव-गरिमाक स्थान पर संकीर्णता ओ स्वार्थपरताक वृद्धि भए जाइत अछि, से जेना ओहि युगमे सत्य छल

तहिना एहि युगमे सेहो सत्य अछि। कविक उक्ति :-

"भौतिक उन्नति बढ़ल, मनुजत्व धरि नहि बढ़ि सकल।
परक चिन्ता नहि कतहु, संकीर्णता-कटुता बढ़ल।।"

आधुनिक भाव-विन्यास, रोचक वर्णन एवं सहज सरल प्रभावपूर्ण भाषा ओ छन्दक प्रयोग एहि खण्डकाव्यक मुख्य विशेषता थिक।

डा. श्री अमरेन्द्र मिश्र अपन प्रथम कृति 'एकलव्य' लए मैथिली साहित्यमे अवतीर्ण भेलाह ओ एहि रचनासँ अपन स्थान सुरक्षित कए लेल। एकलव्यक कथा प्रख्यात अछि, जकरा कवि सात सर्गमे स्वाभाविक भाषाछन्दक प्रयोग करैत लिपिबद्ध कएल अछि। कवि एकलव्यक चरित्रचित्रण स्वाभिमानी गुरु-भक्त ओ अनुशासित छात्रक रुपमे कएल अछि। एहि मध्य स्थान-स्थान पर वर्णन बड़ मार्मिक भेल अछि। उदाहरणार्थ आँगुर काटि लेबाक पश्चात् एकलव्यक निम्नलिखित उक्ति :-

'टपकि रहल छल शोणित बाजल शिष्य-विनय मम एक।
घटित भेल अछि जे किछु एहि ठाँ राखब गुप्त कनेक।।
सर्वविदित यदि भेल, शिष्य पर एकर अशुभ प्रभाव।
घटत बेगसँ छात्र-हृदयमे गुरु-प्रति श्रद्धा-भाव।।'

डा. मिश्र अपन दोसर खण्डकाव्य 'सत्यकेतु'(1977ई.)मे एकलव्यक अपेक्षा कथा-संघटन, भाषा-प्रयोग, छन्द-विन्यास एवं चरित्रचित्रणमे विशेष सन्तुलन, सौष्ठव, परिमार्जन एवं स्वाभाविकताक परिचय देने छथि। एहि खण्डकाव्यक नायक छथि सत्यकेतु जे वीरपुंगव भीष्मक नामसँ प्रख्यात भेलाह। एकर मुख्य कथावस्तु अछि गुरुवर परशुरामक संग हुनक संघर्षक प्रसंग। 'एकलव्य' जकाँ एहि काव्यहु मध्य प्रतिभाशाली कवि अपन एक निश्चित जीवन-दृष्टिकेँ अभिव्यक्त कएने छथि तथा लोक-हितक समर्थन एवं शाश्वत सत्यक भावात्मक प्रतिपादन कए अपन सामाजिक व्यक्तित्वकेँ कलात्मक गरिमा प्रदान कएने छथि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्ति :-

"व्यष्टि स्वार्थ अति तुच्छ, समष्टिक नियमक पैघ महत्व।
सत्य सृष्टि-आधार जीवनक मूल चिरन्तन तत्व।।

सरलता, स्पष्टता ओ प्रभावोत्पादकता एहि काव्यक महत्वपूर्ण गुण कहल जाए सकैत अछि।

लक्ष्मणझाक 'उत्सर्ग' (1975) नामक खण्डकाव्य मध्य सुप्रसिद्ध सत्यवीरकथाकेँ पद्यबद्ध कएल गेल अछि। कवि जाहि तन्मयताक संग सत्यवीरक त्याग ओ बलिदानकेँ वर्णित कए भृत्य-सेवा ओ सत्यवीरताक आकलन कएल अछि, से आदर्श कहल जाए सकैत अछि। कवि कथात्मताकेँ विशेष प्रमुखता देल अछि, सांगोपांग वस्तु-वर्णनकेँ नहि, तेँ एकरा दीर्घ पद्यकथाक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। स्थान-स्थान पर घटना-क्रमसँ प्रभावित प्रकृति-वर्णन-प्रणालीक जे अनुसरण कएल गेल अछि, से

वस्तुतः बड़ मार्मिक भेल अछि ओ ताहि ठाम हुनक उच्च कवित्वक सेहो दर्शन होइत अछि। द्रष्टव्य थिकः-

छलि सुहागिनि भेलि सन्ध्या देखि प्रस्तुत पति शर्मा।
त्यागि अम्बर भेल मदमयि विगत लज्जा प्रेयसी।।
सोमरस भरि घट सुधाकर गगनसँ सेचन कएल।
विहग राग-तरंगमय भए अतुल मंजुलता धएल।।

एतए 'गंगा' महाकाव्यक कवि श्री लक्ष्मणझाक 'शान्तिदूत' (हिमालय)क उल्लेख सेहो आवश्यक होएत जाहि मध्य हिमालय प्रति-श्रद्धाक भाव मार्मिक रुपसँ निहित अछि। नओ अध्याक एहि काव्य-मध्य स्थान-स्थान पर हिमालयक महत्ताक प्रसंग प्रतीक उद्धरणक समावेश कएल गेल अछि, परन्तु कथात्मकताक नियोजन खण्डकाव्योचित नहि कहल जाए सकैत अछि। वस्तुतः 'शान्तिदूत'मे हिमालय-सम्बन्धी प्रकाशित वर्णनात्मक गुण अधिक भेटैत अछि।

'पंचकन्या'श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक दोसर खण्डकाव्य थिक जाहिमे 'सीता' जकाँ पुनः ओ अपन प्रयोगशील मनोवृत्तिक परिचय देने छथि। एकर रचना प्राच्य अथवा पाश्चात्यरीतिक कथात्मक प्रबन्ध-प्रणालीक अनुरुप नहि भेल अछि, प्रत्युत प्रतीकक रुपमे कथात्मक 'टच' दए दए अपन तत्व-ज्ञानकेँ प्रेपित करबाक ई चेष्टा कएल अछि जे युग-युगसँ प्रत्येक नारीक अन्तस्तलमे रतितत्व ओ पार्वती-तत्व संघर्षरत रहैत आबि रहल अछि। सम्पूर्ण काव्य प्रवाहपूर्ण मुक्त-छन्दमे रचित पाँच गोट दीर्घ कविताक संग्रह थिक। काव्यक पाँचो खण्डक शीर्षक दए कवि अपन विचार-दिशाकेँ निर्देशित करबाक चेष्टा कएने छथि। आधुनिक कवि पहिने दार्शनिक, तखन कवि होइत छथि आओर ई विशेषता एहू काव्यमे निहित अछि। श्री रवीन्द्रनाथजीक दार्शनिक भंगिमा एवं शिल्प-संरचनाक विषयमे किछु नहिओ कहल जाए तथापि कतोक स्थल पर हिनक उक्ति मनोरंजक लगैत अछि, यथा, अहल्याक प्रसंग हुनक निम्नलिखित पंक्ति-

आइ धरि रुपक दस्तावेज पर
ऑंठाक टीप छलीह अहल्या।
इजोरियामे
इन्द्रक लेल मोती
आ
गौतमक लेल
सीप छलीह अहल्या।

सात प्रवाह (सर्ग)मे विभाजित पं. श्री यागेश्वरझाक 'नोर' लयात्मक मुक्तवृत्तमे रचित कथात्मक नहि, भावात्मक खण्डकाव्य थिक। एहि मध्य सम्बोधिकाव्य-शैलीक अनुसरण करैत कोशीक भयंकर बाढ़िक विभीषिका एवं तटवर्ती प्रान्तक विनाश-लीलाक करुण वर्णन भेल अछि। कवि अपन एहि काव्यमे संवेदनशील कवित्व-प्रतिभाक उत्तम परिचय

देने छथि। हुनक रचना-शैली एवं वर्णन-प्रणालीक सबटा विशेषता निम्नलिखित सन्दर्भसँ नीक जकाँ सूचित भए जाइत अछि :-

"विध्वंस विनाशक लीलामे
प्रकृतिक प्रधान तों छात्र छली
देखितहिँ तोहर हरकम्प मचल
धेमुड़ा त्रियुगा पुरइन बलानमे
कमला जीबछ गेली पड़ाए
मर्यादा कूल कछार छाड़ि
अस्तित्व गमओलक पुष्करिणी, सुन्दर सरवर
पोखरि इनार

'उत्तरा' मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'क प्रथम प्रकाशित खण्डकाव्य थिक। एहि मध्य कवि पाण्डवक अज्ञातवाससँ लए समग्र महाभारतक कथाकेँ संक्षेपमे वर्णन करैत अन्तमे परीक्षितके गर्भ धारण कएने उत्तराक अग्रिम कर्तव्य-बोधक चित्रण कएल अछि। एहि प्रकार उत्तराक चरित्रकेँ महिमामयी भारतीय ललनाक रुपमे अंकित करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एहि खण्डकाव्यहु मध्य कविक प्रख्यात पाण्डित्यपूर्ण व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति भेल अछि, संस्कृतनिष्ठ भाषा-शैलीमे विविध विषयक सांगोपांग वर्णनक रुपमे। 'उत्तरा' आधुनिक रीतिक सन्तुलित कथा-वस्तु एवं मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण-प्रधान खण्डकाव्य नहि थिक। एतेक धरि जे कवि उत्तराक चरित्रक मार्मिक स्थलहुंके स्पर्श मात्र कए बड़ शीघ्रतासँ कथा-प्रवाहमे आगाँ बढ़ि जाइत छथि, उत्तराक द्वन्द्व-अन्तर्द्वन्द्व ओ सहजात मानवीय वृत्तिक स्वाभाविक आलोड़नकेँ सहानुभूतिपूर्ण एवं संवेगात्मक सहृदयताक संग अंकित करबामे समर्थ नहि होइत छथि तथा एहि खण्डकाव्यक समग्र कथा-विन्याससँ एकर नामकरण सार्थक सिद्ध नहि होइत अछि। वस्तुतः सुमनजी चमत्कारपूर्ण वर्णन, अलंकारपूर्ण शब्द-संयोजन एवं गौरवपूर्ण सांस्कृतिक जीवन-दर्शनक कवि छथि आओर हुनक कवित्वक ई विशेषता 'उत्तरा' खण्डकाव्यमे सहजहि प्रतिविम्बित भेल अछि। द्रष्टव्य थिक निम्नलिखित पंक्ति जाहिमे सुमनजी गीत-नृत्यक महिमाक रोचक वर्णन प्रस्तुत कएने छथि :-

"शारदा स्वयं वीणावादिनि, श्यामा नर्तिनि
कमला लय लीला-कमल हस्तमुद्रा वर्तिनि

....

के जीव-जन्तु जग आनन्दे नहि हो गबैत
मस्तीमे ककर चरण नहि अपनहि हो नचैत
चिन्तन अथवा भावक आलोड़न जौँ चलैछ
तँ ककर न आँखि-भौँह कर-अंगुलि संग दैछ ?

....

अछि भोग-योग सबतरि नादक संवाद इष्ट

रसभावमयी संगीतकला विद्या विशिष्ट।"

'समाधि' श्री रमाकरक दोसर खण्डकाव्य थिक जे तीन सर्गमे विभाजित अछि। एहि कथाहीन खण्डकाव्यक आलम्बन हुनक स्व.पिता बाबूक्षेमधारीसिंह ओ माता राधादेवी छथि ओ ताही आधार पर पिताक देह-त्यागक अनन्तर हुनक समाधिस्थ होएबाक आरोप एहि काव्यमे कएल गेल अछि। परन्तु एहि मध्य कविक जाहि व्यक्तिगत अनुभव-अवधारणा, जीवन-दृष्टि तथा विचार-धाराक अभिव्यक्ति भेल अछि, से सर्वजन-संवेद्य नहि ओ तेँ रोचक सेहो नहि। कुल मिलाए एकरा काव्य-कृतिसँ अधिक दार्शनिक कृतिक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। अपन माता-पिताकेँ काव्यक आलम्बन बनाएब एकर नवीनता भेल।

उपर्युक्त खण्डकाव्यक अतिरिक्त श्री शारदादत्तझाक 'शकुन्तला' एवं प्रो. मनोरंजनझाक 'ईटउँधनी'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। 'शकुन्तला' यदि करुणरस-प्रधान चरितकाव्य थिक तँ 'ईटउँधनी'मे मालिकक अत्याचार ओ शोषणक चित्रण कए समाजक दलितवर्गक प्रति कवि अपन हार्दिक सहानुभूति व्यक्त कएल अछि। एहि मध्य ईटउँधनीक पाँच दशाक वर्णन करैत कवि अपन प्रगतिशील भावनाकेँ अंकित करबाक सेहो चेष्टा कएने छथि।

आश्चर्यक विषय जे नीक खण्डकाव्यक रचना महाकाव्यक अपेक्षा बड़ कम भेल अछि।

पद्यकथा

पद्यकथाकेँ खण्डकाव्यक अन्तर्गत परिगणित कएल जा सकैत अछि। परन्तु दुहूमे स्पष्ट भेद ई जे कथाकाव्यमे कथानकेँ पद्यबद्ध करबाक प्रवृत्ति रहैत अछि, काव्यगत सौन्दर्य, वर्णनक विस्तार, सूक्ष्म चरित्रचित्रण वा कल्पनाक चमत्कार उत्पन्न करबाक नहि, कथा कहबाक क्रममे स्वाभाविक चमत्कार उत्पन्न भए जाए तँ भिन्न विषय। एहि दृष्टिएँ खण्डकाव्यक प्रथम वा द्वितीय उत्थानमे जे रचना भेल, से वस्तुतः पद्यकथा मात्र थिक।

पद्यकथा प्रायः सब श्रेष्ठ कवि लिखने छथि। एही दृष्टिएँ प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कुमरी का', हरिमोहनझाक 'टी पार्टी', 'ढलाइस' प्रभृति, मधुपजीक 'घसल अठन्नी' प्रभृति, श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क 'आम्रविजय', अमरजीक 'राष्ट्रनिर्माता', निरंकुशजीक 'भामती ओ' 'ढाका-विजय' आदि सुन्दर पद्यकथा थिक। बालोपयोगी पत्रपत्रिकामे छोट-छोट कतोक पद्यकथा प्रकाशित भेल। मुदा अद्यावधि दुइगोट पद्यकथाक संग्रह मात्र- व्यासजीक 'महामत्स्य ओ मनु' (1961) तथा प्रो. सुरेन्द्रझा सुमनक 'कथायूथिका'

(1965) प्रकाशित भए सकल अछि। 'महामत्स्य ओ मनु'मे महाभारतक रोचक कथासभकेँ पद्यबद्ध कए संकलित कएल गेल अछि। **'कथायूथिका'**मे ओहिसभ कथाक संग्रह भेल अछि जकरा कवि **'कतहु पढ़ल वा पड़ल कानमे किदहुँ लिखल वा कथ्य'**। सन् 1978 ई. मे श्रीप्रदीपक एकमात्र कथा-काव्य **'स्वयं-प्रभा'**क पुस्तकाकार प्रकाशन भेल, जाहिमे कवि रामायणक एक मार्मिक प्रसंगक आधार पर राम-भक्तमे तपोलीन बाला स्वयंप्रभा-कथाक वर्णन रोचक शैलीमे कएल अछि। स्वयंप्रभाक प्रसंग कविक उक्ति अछि:-

पसरल दिव्य सुगन्धि, साधनामे प्रवीण छथि।
श्रद्धामयी स्वतः बाला ई तपःलीन छथि।

प्रो. हरिमोहनझा, प्रो. तन्त्रनायझा ओ अमरजी हास्यव्यंग्यमूलक कथा लिखबामे निष्णात छथि तँ व्यासजी मिथिलाक गौरवमूलक कथा लिखबामे। मधुपजीकेँ कथा कहब गौण रहैत छैन्हि, प्रगतिशील कल्पना करब प्रधान। चमत्कार ओ भावुकता हुनक पद्यकथाक प्रधान गुण थिक। 'त्रिवेणी', 'त्रिकुशा' एवं 'द्वादशी'मे संगृहीत रचना हुनक एही रीतिक कविता थिक। 'महामत्स्य ओ मनु'क कथाक उद्देश्य अछि पाठककेँ पौराणिक आख्यानसँ परिचित कराएब, कारण, ओएह हमरालोकनिक सांस्कृतिक व्यक्तित्वक आधारशिला थिक। सुमनजी कथाकेँ संक्षिप्त रीतिएँ कहल अछि, तेँ हिनक कतोक कथा पद्यकथा नहि रहि, सूक्तिकथा भए गेल अछि।

अनूदित कथाकाव्य

खण्डकाव्यक इतिहास लिखैत कहल जा चुकल अछि जे मैथिलीमे खण्डकाव्य अनुवादक रुपमे सएह विकसित भेल। मुदा साहित्यिक उत्कर्षक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अनूदित कथाकाव्य थिक अधिकांश महाकाव्यक अनुवाद। ई अनुवाद सभ भेल 1930 ई.क पश्चात्। एही दृष्टिएँ अच्युतानन्ददत्तकृत 'महाभारत'(1931), 'रघुवंश'(1938), जीवछमिश्रकृत 'रामायण'(1936), परमानन्द दत्तकृत हरिवंश, लक्ष्मीतायझाकृत 'नैषध' तथा यदुनन्दनदासकृत 'कुमार-सम्भव' आदिक नाम सबसँ पहिने लेल जा सकैत अछि। स्पष्ट अछि जे ई सभ संस्कृतकाव्यक अनुवाद थिक। एहि ठाम श्रीकुमुदनाथ मिश्र 'कुमुद'क **'गीतगोविन्द'**क अनुवाद **'कुमुद-प्रभा'**क सेहो उल्लेख कएल जा सकैत अछि। मुदा एहि अनुवादक विशेषता ई जे जे व्यक्ति संस्कृतसँ अनभिज्ञ छथि तनिका प्रायः ओहि ग्रन्थक मैथिली अनुवादक अर्थ लगाबो कठिन भए जाइत छैन्हि। एतहि संस्कृतसँ सफल अनुवाद करबाक दृष्टिएँ प. वेदानन्दझाक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जनिक **'प्रेमाञ्जलि'**, **'दुर्गामृत'**, **'गीतामृत'**, प्रभृति रचना प्रकाशित अछि।

संस्कृतकाव्यक पश्चात् सबसँ अधिक अनुवाद भेल बंगलाभाषाक माइकेल मधुसूदनदत्तकृत काव्यसभक। दत्तक 'मेघनादवध'क अनुवाद कएल गौरीशंकरझा ओ **'वीरांगना'**क श्री गोविन्दझा। 'विरहिणी व्रजांगना' यद्यपि गीतकाव्य थिक, मुदा लिखल

गेल अछि ई कथाक आधार लए। एकर अनुवादक छथि भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'।

अंगरेजीसँ कोनो सम्पूर्ण काव्यक अनुवाद नहि भेल अछि। मुदा डिकेन्सक 'बैलेड' ओ दुष्टा गीतक अनुवाद प्रो. तन्त्रनाथझा कएने छथि जे बड़ सुन्दर ओ मैथिली भाषागत स्वभावक अनुकूल भेल अछि तथा कतहु कृत्रिम नहि लगैत अछि। मिल्टनक 'पैराडाइज लास्ट'क अनुवाद श्री मुक्तिनाथझा, (चिट्ठोमधुबनी) कएने छथि जे अप्रकाशित अछि। अरुण लिखित हिन्दीक 'अशोक-पुत्र'क अनुवाद डा. श्री केदारनाथलाभ प्रस्तुत कएने छथि।

5. प्रकीर्ण काव्य

प्रकीर्णकाव्यकेँ तीन श्रेणीमे बाँटि सकैत छी - 1. बालसाहित्य, 2. वैद्यकादि शास्त्र एवं 3. नवीन शिल्पमे लिखल कविता।

बालसाहित्य :- नीतिसम्बन्धी सब काव्य-रचना बालसाहित्यक अन्तर्गत अबैत अछि। एहि श्रेणीमे कविवर सीतारामझाक 'शिक्षासुधा', जनार्दनझा 'जनसीदन'क 'नीतिपद्यावली', धनुषधारीलालदासक 'धनुषधारीसतसइ', प. वेदानन्दझाक 'रत्नवटुआ' आदिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। मुक्तक काव्यमे 'कंटक'क 'तरेगन' शीर्षक कविताक विशेष महत्व अछि, कारण, एहिमे सबसँ पहिने परम्परागत शिक्षाप्रधान कविताक नीरसताकेँ हटाओल गेल छल। किछु पंक्ति द्रष्टव्य थिक :-

छिटपुट मोती की घनसारा, नभमे उगल धकमक तारा।
तम्बुक तानल बूटा काढ़ि, दीदी हम्मर बड़ बुधियारि।।

एहि परम्परामे श्री गोविन्दझा 'पाकल आम' एवं श्रीकिरण 'परात' कविता लिखल। बालसाहित्यक क्षेत्रमे प्रो. श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'क अवदान सेहो बड़ महत्वपूर्ण अछि। एहि साहित्यिक विकासमे शिशुसाहित्यपरिषद्क 'शिशु' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन (1944) सेहो उल्लेखनीय अछि, जाहिमे प्रो. तन्त्रनाथझाक 'बानर', ईशनाथझाक 'वन्दना' आदि कविता छपल।

मैथिली कविताक बाल साहित्यक विकासक दृष्टिएँ 'बटुक'ओ 'धीयापूता'क अद्भुत योगदान अछि आओर ओहि मध्य ईशनाथझा, सुमनजी, किरणजी, तेजनाथझा, व्रजकिशोरवर्मा, रमाकर, अमर, श्रीश, धीरेन्द्र, मथुरानन्दमाथुर आदि अनेक कविक कविता प्रकाशित भेल। 'मिथिलामिहिर' जहिआसँ नवीन साजसज्जासँ छपब आरम्भ भेल, तहिआसँ ओहि मध्य बालस्तम्भमे अनेकानेक बालोपयोगी कविता छपैत रहल। बालोपयोगी कविता-संग्रहक दृष्टिएँ डॉ. श्रीकृष्णमिश्रक 'अग्रदूत' एतए उल्लेखनीय थिक।

मुदा अधिक सुन्दर बालोपयोगी रचना छपल अछि 'मैथिली साहित्य-मंजरी',

'मैथिली साहित्य-बोध' आदि साहित्यक पाठ्यपुस्तकमे। एहिसभमे जनिक रचना संकलित भेल अछि ताहिमे प्रधान छथि प्रो. तन्त्रनाथझा, प्रो. श्रीसुमन, प्रो. ईशनाथझा, प्रो. हरिमोहनझा, श्रीआरसीप्रसादसिंह, श्री गोविन्दझा प्रभृति।

वस्तुतः सुनियोजित रुपमे अद्यावधि बालोपयोगी कविता छपब आरम्भ नहि भेल अछि आओर ने तत्सम्बन्धी पुस्तके पर्याप्त मात्रामे प्रकाशित भेल अछि।

शास्त्रीय ग्रन्थ

एकर संख्या बड़ परिमित अछि, तथापि काव्यशास्त्रक कविवर सीतारामझाक 'काव्यदर्पण', पुलकितलालदासक 'नवरस'ओ 'अष्टनायिका', वेदानन्दझाक 'अलंकारबोध' एवं 'काव्यकौमुदी', वैद्यकग्रन्थक परमानन्द-परमार्थीक 'आरोग्यरत्नावली', संगीतशास्त्रक हरगोविन्दझाक 'संगीत-परिचय', ज्यौतिषक प. तेजनाथझाक 'यात्रासगुन-विचार', योगविषयक प्रोफेसर अमृतधारी सिंहक 'योगदिग्दर्शन' प्रभृति ग्रन्थ विशेषरुपेँ उल्लेखनीय थिक।

नवीन रुपक कृति

एकर अन्तर्गत उल्लेखनीय अछि संगीतरुपक एवं संवादवार्त्ता। एहि प्रसंग सुरतिनारायणदासक 'शुकदेवसंवाद', व्रजकशोरवर्माक 'घरबा-दुअरबा', श्री गोविन्दझाक 'वनवासिनी' आदिक चर्चा कएल जाए सकैत अछि। एकर अतिरिक्त श्रीशक रचित नाट्यरुपक 'पुरुषार्थ' एंव श्रीसोमदेवक 'चरैवेति'क सेहो चर्चा नवीन रुपक काव्यकृतिक अन्तर्गत कएल जाए सकैछ अछि। मैथिलीमे संस्कृतक आर्याछन्दक सफल प्रयोगक दृष्टिएँ श्री योगेश्वरझाक 'आर्या' उल्लेखनीय अछि। मधुपजीक पत्रक एकटा संग्रह प्रकाशित भेल अछि- 'मधुपक पत्रः भीमनाथझाक नाम'। एकरहु नवीन रुपक कृतिक रुपमे परिगणित कएल जाए सकैत अछि।

अभिनव रीतिक काव्यकृतिक दृष्टिएँ प्रो. श्रीअमृतधारीसिंहक 'अवतार-रहस्य' (1976ई.) नामक ग्रन्थक सेहो एतए उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि मध्य संगृहीत हुनक 15 गोट कविताकेँ ने तँ प्रगीत कहल जाए सकैत अछि आओर ने कथा-काव्य, यद्यपि दुहूक तत्व न्यूनाधिक मात्रामे एहि मध्य ताकल जाए सकैत अछि। वस्तुतः 'अवताररहस्य' कविक अन्तःप्रसूत आध्यात्मिक चिन्तन एवं रहस्यवादी स्वानुभूतिक कविता थिक, जाहि मध्य कवि अपन कथ्यकेँ प्रतीकात्मक लक्षणाव्यंजना द्वारा संकेतित करबाक चेष्टा कएने छथि, कतहु-कतहु रोचक प्रसंगहुक अवतारण कएने छथि, यथा, 'वरदराजभट्टाचार्य'मे। विषयकेँ सरस ओ सुलभ बनएबाक यथासाध्य चेष्टा भेल अछि। तथापि सामान्यतः हिनक रचना बोधगम्य नहि अछि। वस्तुतः हिनक रचना सर्वसाधारणक हेतु नहि, एहन विरल व्यक्तिक हेतु थिक जे रहस्यवादी साधनाक

साधारणो भूमिकेँ अवश्य स्पर्श कए लेने छथि। प्रो. हरिमोहनझाक शब्दमे- "जे मर्मज्ञ पाठक कबीर ओ रवीन्द्रक रहस्यवादक रसास्वादन करबाक क्षमता रखैत छथि से एहि काव्यधारामे अवगाहन कए निश्चिते आनन्दित हैताह।"

एहि प्रकार मैथिली कविताक आधुनिक धारा विविध वस्तुविन्यास ओ शिल्पशैलीसँ समन्वित भए दिनानुदिन उन्नतिक पथ पर अग्रसर भए रहल अछि।

***

अष्टम प्रकरण

मैथिली नाट्य-साहित्य

मैथिली नाटकक प्रसंग सन् 1962-63 मे सर्वप्रथम नवीन रीतिएँ विचार कएल गेल। एहिसँ पूर्व डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे मैथिलीक मध्यकालीन नाटकक बड़ विस्तुत वर्णन कए एकर इतिहासकेँ विकासक क्षेत्रक अनुसार तीन भागमे विभक्त कएने छलाह-1. मिथिलाक मैथिली नाटकक साहित्य, जकरा ओ **'कीर्तनिञा-नाटक'**क संज्ञा देल, 2. नेपालक मैथिली नाटकक साहित्य एंव 3. आसाममे विकसित मैथिली नाटकक साहित्य जे 'अंकीयानाट'क नामसँ ख्यात अछि। मुदा प्रो. रमानाथ झा अपन 'प्रबंध-संग्रह' मे प्रकाशित 'मैथिली नाटक' नामक प्रबंध-लेखमे तर्कपूर्ण रीतिसँ सिद्ध कएल जे मिथिलामे ने तँ नाटकक अभिनय- परम्परा छल आओर ने कोनो मैथिली नाटकक आधुनिक युगसँ पूर्व लिखले गेल। ओ जाहि कारणक उल्लेख कएल, से तर्कपूर्ण तथा समीचीन बूझि पडैत अछि। डा. मिश्र जकरा किर्तनिञानाटक कहैत छथि,से किर्तनिञा नाच छल, कारण, नाटकमे आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक चारु प्रकारक अभिनय आवश्यक होइत छैक। किर्तनिञानाचक जे प्रणाली ज्ञात अछि, ताहि आधार पर स्पष्ट अछि जे ओहिमे चारु प्रकारक अभिनय नहि होइत छलैक, अभिनयक आभासटा ओहिमे रहैक। अतः ओकरा नाटकक संज्ञा नहि देल जा सकैत अछि। नाटकक प्राण थिक कथनोपकथन। किन्तु जे किर्तनिञानाटकक साहित्य कहल जाइत अछि, तकर कथनोपकथनमे मैथिली भाषाक सर्वथा अभाव अछि। दोसर, किर्तनिञाक दुइए-तीनटा पात्र नाटकक सब पात्रपात्रीक अभिनय कए लैत छलाह। तदनुरुप वेषभूषा धारण करब सेहो आवश्यक नहि रहैत छलैक। प्रो. झाक इहो मन्तव्य अछि जे नाटकक विकास सुनिश्चित रंगमंच पर निर्भर करैत छैक। एहि ठाम तकरहु अभाव छल। दोसर, तथाकथित किर्तनिञानाटक किर्तनिञामण्डलीक हेतु नहि लिखल जाइत छल। हँ, पश्चात् आबि दुइ गोट नाटक मात्र किर्तनिञाक हेतु लिखल गेल - 1. विश्वनाथझाक 'उषाहरण' ओ 2. शिवदत्तक 'पारिजातहरण'। मुदा ताहिमे संस्कृत-प्राकृतक कथनोपकथनक सर्वथा अभाव अछि। एहिसँ स्पष्ट सिद्ध होइत अछि जे किर्तनिञामण्डली कथोपकथन कहि-कहि अभिनय नहि करैत छल, गाबि-गाबि नचैत छल। ई विषय दोसरहु तर्क द्वारा सिद्ध होइत अछि। किर्तनिञानाटकक वा ओकर अभिनयक चर्चा 'वर्णरत्नाकर'मे नहि अछि, पाछाँ सेहो कतहु नहि भेटैत अछि। डा. मिश्र एहि प्रणालीक प्रसार खण्डबला-राज्यकुलक स्थापनाक पश्चात् मानैत छथि, कारण, अधिकांश तथाकथित किर्तनिञानाटकक रचना खण्डबलाराज्यकालहिमे भेल। मुदा तखन विद्यापतिक **'गोरक्षविजय'** आ ज्योतिरीश्वरक **'धूर्त्तसमागमक'** रचना किएक भेल ? एम्हर ओहिमे

मैथिली पद भेटि गेलासँ तँ ओहो किर्तनिञानाटकहिक कोटिमे अबैत अछि। एहि दुहू कृतिक रचना तँ खण्डबलाराज्यकुलक स्थापनासँ सैकड़ो वर्ष पूर्व भए चुकल छल। ई सहजहिँ अनुमान कएल जा सकैत अछि जे मिथिलामे किर्तनिञानाचक परिपाटीक आरम्भ नवद्वीपक कीर्त्तनमण्डलीक प्रभावसँ भेल, 17म शताब्दीक आदिमे। मुदा मिथिलाक कीर्त्तनमण्डली नवद्वीपक कीर्त्तनमण्डलीसँ भिन्न भए गेल ओ एहिमे मिथिलाक स्थानीय संगीतक अनुरुप गायन आरम्भ भेल। परन्तु नाम एकर रहल ओएह नवद्वीपक कीर्त्तनमण्डलीकेँ इंगित करबैत किर्तनियाँ। चन्दाझाक मत अछि जे उमापति मकमानी राजाक आश्रयमे एही नाचकेँ प्रचारित कएल। बहुत सम्भव थिक जे एकर आरम्भ गोविन्ददासक नवद्वीपसँ घुरलाक पश्चात् भेल होअए नेपालमे नृत्य ओ अभिनयसँ युक्त मैथिली पदक गायनक प्रचलन छल। 'गीत-पंचाशिका' (र.का. 1628 ई.)क रचना जगज्ज्योतिर्मल्ल एही उद्देश्यसँ कएने छलाह, तकर उल्लेख ओ स्पष्ट रुपसँ एकर समापन-श्लोकमे कए देने छथि, मुदा एहि प्रकारक वस्तुकेँ ओ 'तौर्यत्रिक'क संज्ञा देने छथि। अतः मिथिलाक किर्तनिञाक समान नेपालमे सेहो एहन मण्डली रहैत छल जे नृत्य ओ अभिनय कए गायन कएल करैत छल। नेपालमे बंगालक संगीत-कीर्तनादि सांस्कृतिक रीतिक बड़ गहन प्रभाव छल। भए सकैछ जे मिथिलामे ओएह वस्तु नेपालक माध्यमसँ प्रचलित भेल हो, अवश्य किछु भिन्न रुपमे।

अतः किर्तनिञानाच जेँ नवीन अछि तेँ 'धूर्त्तसमागम' ओ 'गोरक्ष-विजय' किर्तनिञापद्धतिमे नहि लिखल गेल। एतावता संस्कृत-प्राकृत-मैथिली त्रैभाषिक भाषाक नाटक पूर्वहिसँ लिखल जाइत छल आओर ई सब संस्कृतहिक नाटक थिक। जाहि प्रकारेँ संस्कृत-नाटकमे प्राकृत अथवा अपभ्रंशभाषाक प्रयोग भेलासँ ओ प्राकृत वा अपभ्रंशभाषाक नाटक नहि कहबैछ, तहिना मैथिली-भाषाक प्रयोग भेलासँ ओ मैथिलीभाषाक नाटक भए गेल, से कहब तथ्यक विरुद्ध भेल। मिथिलाक संस्कृतनाटककार द्वारा ई संस्कृतनाटकक नव प्रयोग मात्र कहाए सकैत अछि। अनियमित कोटिक तथाकथित किर्तनिञानाटककेँ बड़ वेशी तँ प्रबन्धगीत कहि सकैत छी अथवा नाटकीय कथाकाव्य, कारण, एहू मध्य मैथिली गद्यक एकान्त अभाव अछि।

मैथिली नाटकसँ तात्पर्य मिथिलामे रचित नाटक नहि, मिथिलाक जन-भाषामे रचित नाटक बुझबाक थिक। नाटकक प्राण थिक कथोपकथन। जाहि भाषामे नाटकक मुख्य वस्तु उपनिबद्ध हो, जाहि भाषा द्वारा नाटकीय कथावस्तु उपस्थापित हो, सएह ओहि नाटकक भाषा बुझल जाइत अछि। मुदा एहि प्रकारक नाटकक रचना मध्यकालमे मिथिला मध्य मैथिलीमे नहि भेल। ओहिमे कतहु नाटकक मुख्य वस्तु मैथिलीमे नहि अछि। एकर परम्परा तँ बीसम शताब्दीमे स्थापति भेल। मुदा मध्यकालमे नेपाल ओ आसाममे मैथिली नाटकक रचना प्रचुर मात्रामे भेल, जाहि मध्य मैथिली गद्यक सेहो प्रचुर मात्रामे प्रयोग कएल गेल। ओहि ओहि स्थान पर अभिनयक परम्परा सेहो छल, तकर प्रामाणिक

इतिहास भेटल अछि। अतः मैथिली नाटकक रचना ओ ओकर अभिनय-परम्पराक विकास नेपाल ओ आसामहिमे सर्वप्रथम भेल। अतः एहि ठाम पहिने नेपाल ओ आसाम मध्य विकसित नाट्य-साहित्यक इतिवृति प्रस्तुत कएल जाएत, तत्पश्चात् मिथिलामे विकसित नाट्य-साहित्यक।

1. नेपालमे मैथिली नाटकक विकासक कारण

नेपालमे मैथिली नाटकक विकासक मुख्य कारण भेल नेपालमे मैथिली भाषाक प्रसार एवं राजालोकनिक अभिनयप्रियता। मिथिलामे विकसित मैथिली नाटकसँ ओहि ठामक नाटककारलोकनि प्रेरणा लेने होथि से नहि, कारण मिथिलामे नाटकक विकास नहि भेल छल। हँ, मिथिलाक संस्कृत-नाटकक रचना-परम्परासँ अनुप्राणित भेल होथि, से सम्भव। ताबत काल धरि मिथिलामे 'धूर्त्तसमागम' ओ 'गोरक्षविजय'-रीतिक मैथिली पदसँ युक्त संस्कृत नाटकक रचना होअए लागल छल। ताहूसँ ओ लोकनि किछु प्रेरणा ग्रहण कएने होएताह। मुदा मैथिली गद्यकेँ प्रयुक्त करब हुनक अपन मौलिक उद्भावना छल। एहि प्रकारक विशेषता पूर्वमे के कहए, पश्चातो मिथिलामे परिलक्षित नहि होइत अछि।

मिथिला ओ नेपाल पार्श्ववर्ती क्षेत्र होएबाक कारणे सब दिनसँ परस्पर सांस्कृतिक सम्बंधसँ आबद्ध रहल अछि। मिथिलाक सीमा आजुक अपेक्षा बड़ विस्तृत छल तथा आइ नेपालक मोहतरि, सप्तरि, मोरंग प्रभृति जे प्रान्त अछि, से पूर्वमे मिथिला-क्षेत्रहिक अन्तर्गत छल। जनकपुर मिथिलाक नरपति जनकक राजधानीक रुपमे प्रसिद्धे अछि। सिमराँव म. नान्यदेव (1097)क राजधानी छल। पहिने नेपाल जएबाक मार्ग एकमात्र मिथिले बाटे छलैक। अतः जखन-जखन मिथिला पर मुसलमानलोकनि आक्रमण करथि, तखन-तखन मिथिलाक राजालोकनि ओ हुनक आश्रित वा आश्रयक अन्वेषी विद्वानलोकनि नेपाल गेल करथि। पाँजिक प्रसिद्ध व्यवस्थापक म. हरिसिंहदेव (1296-1323) मुसलमान आक्रान्तासँ पराजित भए नेपालेमे आश्रय लए ओहि ठाम भातगाँवक समीप अपन स्वतन्त्र-राज्यक स्थापना कएने छलाह। वस्तुतः ओएह ऐतिहासिक घटना नेपालमे मैथिली भाषाक प्रसारक मूल-कारण अछि कारण, ओ प्रसिद्ध काव्यरसिक छलाह तथा मिथिलाक कवि-साहित्यकार हुनका, मिथिलासँ चल जएबाक पश्चातो, मिथिलाक राजाक समान आदर करैत छलाह। तखन नेपालमे राज्यस्थापना करबाक पश्चात् ओहू ठाम हुनक दरबारमे मैथिल विद्वानक आवागमन सर्वथा स्वाभाविक छल। म. हरिसिंहदेवक देहावसनाक पश्चात् हुनक दुइ बालक म. मानसिंह ओ म. श्यामसिंहदेव 27 वर्ष धरि राज्य कएल तथा हुनकालोकनिक राज्यकालमे मैथिल विद्वानक सम्पर्क बनल रहल। एतबे नहि, ओहि ठामक राजालोकनि आग्रहपूर्वक आमन्त्रण दए-दए मैथिल विद्वानसभकेँ अपन दरबारमे बजाबथि। उदाहरणार्थ जयस्थितिमल्ल अपन राज्यकाल (1386-1429)मे मिथिलासँ कीर्त्तिनाथ उपाध्याय,

श्रीनाथभट्ट, महिनाथट्ट ओ रमानाथझाके भूमि, जाति, मृत्युकर्म प्रभृतिक नियम बनएबाक हेतु आमन्त्रित कएने छलाह। एहिना जगज्ज्योतिर्मल्ल (1613-37) वंशमणिझाकेँ, नरसिंहदेवक बालक राजा रामसिंहदेव छत्रकर शुक्लकेँ, ओकर पश्चातहु नेपालक अन्यान्य राजालोकनि कृष्णदत्तझा,भानाझाक पिता शक्तिबल्लभ प्रभृतिकेँ आमन्त्रित-समादृत कए आश्रित बनाओल। अन्यथो मैथिल विद्वानलोकनिक नेपालमे जएबाक कारण भेल मुसलमानलोकनिक मिथिलामे बढ़ैत प्रभाव, ओइनवार राज्यक पतन तथा धर्मभ्रष्ट होएबाक भय।

फलस्वरुप नेपालमे मैथिली भाषाक प्रभाव बढ़ल ओ मैथिल विद्वान्, कवि ओ साहित्यकार एहिठाम अपन-अपन प्रतिभाक प्रदर्शन कएल। संस्कृत-ग्रन्थक तँ पर्याप्त रचना भेवे कएल, विद्यापतिक काव्यप्रतिभाक प्रेरणास्वरुप पश्चात् स्वतन्त्र रुपसँ एहू ठाम मैथिली कविता ओ मिथिलाक संगीतक विकास भेल। मैथिली भाषाकेँ राजकीय प्रश्रय भेटि गेलासँ ओहि भाषामे अभिनयप्रिय नरपतिलोकनि नाटकक रचना तथा ओकर विभिन्न अबसर पर अभिनयक व्यवस्था सेहो कराओल। एहीदृष्टिएँ मैथिली नाटकक केन्द्र भेल भातगाँव, पाटन ओ कान्तिपुर (काठमाण्डू) शाखाक राजालोकनिक दरबार।

नेपालमे नाटकक रचना ओ अभिनय-परम्पराक आरम्भ संस्कृतनाटकसँ सएह भेल छल। सर्वप्रथम जयस्थिमल्ल (1386-1449) चारि अंकक 'रामायण' नाटकक रचना कराओल तथा अपन पुत्र धर्ममल्लक उपनयन-समारोहमे तकर अभिनयक सेहो व्यवस्था कएल। ओहि राजाक समयमे दोसर संस्कृत नाटकक 'भैरवानन्द'क रचना कोनो 'माणिक' नामक मैथिल कएने छलाह, जकर अभिनय जयस्थितिमल्लक पुत्र धर्ममल्लक विवाहक अवसर पर भेल। जयस्थितिमल्लक पश्चात् लगले कोनो राजाक संस्कृतनाटकक प्रेमक साक्ष्य नहि भेटैत अछि। हुनक बालक जययक्षमल्ल भेलाह जे 447 धरि 43 वर्ष राज्य कएल। ई बड़ प्रतापी राजा छलाह तथा मगध धरिक विजय कएने छलाह। हिनक मृत्युक पश्चात् नेपाल राज्य तीन भागमे बँटि गेल-ज्येष्ठ बालक रायमल्ल भातगाँव (1496)मे, द्वितीय बालक राममल्ल बनेपा (बनिकपुर) मे, तथा तृतीय बालक रत्नमल्ल काठमांडू (कान्तिपुर) ओ ललितपुर-पाटनमे अपन-अपन स्वतंत्र राजवंशक स्थापना कएल तथा हिनकेलोकनिक शाखाक राज्यदरबारमे तीनू ठाम मैथिली नाटकक अभूतपूर्व विकास भेल।

नेपालीय मैथिली नाटकक विलक्षणता :- नेपालमे मैथिली नाटकक रचना प्रचुरतया 17म शताब्दीसँ लए अठारहम शताब्दीक आरम्भमे भेल। एहि नाटकक प्रमुख विशेषता थिक मैथिली गद्यक प्रयोग तथा वस्तुतः एही कारणे एकरा मैथिली नाटकक कोटिमे परिगणित करैत छी। डा. जयकान्तमिश्र नेपालक मैथिलीनाटकक रचना-प्रक्रिया पर तीन प्रकारक प्रभाव पड़बाक उल्लेख कएने छथि-1. संस्कृत साहित्यक नाटकीय

रीतिक, 2. यात्रा-रीतिक अभिनयप्रणालीक तथा 3. मिथिलाक संगीतक। प्रथम प्रभावक फलस्वरूप संस्कृतनियमानुकूल नाटक रचल गेल, दोसर प्रभावस्वरूप गद्यक संग-संग पद्यक प्रचुर प्रयोग भेल तथा तेसर प्रभावक स्वरूप गीतनाट्यक रचना भेल। पहिल ओ दोसर कोटिक ओ नाटक वास्तविक अर्थमे मैथिलीक नाटक थिक जाहिमे मैथिली गद्यक उपयोग भेल अछि। मैथिलीमे विशुद्ध गीतनाट्यहुक आरम्भ नेपालहिमे भेल, मिथिलामे रचित तथाकथित अनियमित कोटिक किर्तनियानाटक गीतनाट्य थिक अवश्य, मुदा तकर रचनाक आरम्भ एतए बड़ पाछाँ भेल।

नेपालक नाटकमे संस्कृतक स्थान क्रमिक गौण होइत गेल। नेपालक ओ नाटक जे संस्कृतनाट्यरीतिक अन्तर्गत नहि रचित भेल, ताहिमे नान्दीपाठ, कतहु-कतहु अष्टमंगल ओ पुष्पांजलिक पश्चात् सूत्रधार ओ नटीक प्रवेश करबाए नाटककार नाटकक कथावस्तु तथा अभिनयक अवसरक उल्लेख करैत छथि तत्पश्चात् राजवर्णना ओ देशवर्णना करैत मूल अभिनय अरम्भ करैत छथि। गद्य प्रयुक्त होइतो नाटकमे आद्यन्त पदक प्रधानता अछि। अभिनयक क्रममे प्रायः ओएह नाटकसब सर्वाधिक सफल बुझल जाइत छल, जाहि मध्य अभिनेताक गायन आकर्षक होइन्हि। परिस्थिति ओ चरित्रक नाटकीय निर्माण दिसि अधिक ध्यान नहि देल जाइक। हँ, आंगिक अभिनय प्रभृति अवश्य होइत छल।

गीतक प्रमुखता तथा नाटकीय दृश्यक क्रमबद्धहीनता रहलासँ अपरिचित कथा बुझब कठिन छलैक। अतः ओहने कथा पर नाटक लिखल जाइक जे ख्यात रहए। एहि कारणसँ एकहि कथा पर भिन्न-भिन्न नाटककार द्वारा अनेक नाटकक रचना भेल। नाटकमे वर्णित वस्तुक आधार भेल रामायण, महाभारत, हरिवंश, विद्याविलाप, माधवानल तथा विभिन्न पुराणक प्रख्यात कथासब।

रंगमंचमे चित्रित पटक प्रचलन नहि छल आ ने कथाक प्रकरणक अनुसार दृश्य सजाओल जाइत छल। गीतक भाव बूझि दृश्यक अनुमान होइत छल। पात्रक संख्या सीमित नहि छल। उपवनमे आनन्दोत्सव तथा युद्धक प्रकरणमे अनेक पात्र नाटकमे भाग लेथि। ओहने वाद्ययन्त्रक प्रयोजन पड़ैक जकर मौखिक गायनक संग बजएबाक परिपाटी छलैक। प्रकाशक व्यवस्थामे कठिनताक कारणसँ अभिनय दिनमे होइक फैल स्थानमे निर्मित रंगमंच पर। नाटकमे एकटा अंक ओतबा बुझल जाए जतबा अंशक एक दिनमे अभिनय भए सकए। अर्थात् पैघ-पैघ नाटकक अभिनय कएक दिनमे सम्पन्न होअए।

नेपालक मैथिली नाटकसँ तत्कालीन नेपाली राजालोकनिक ऐश्वर्य ओ साहित्य-संगीतनप्रियताक नीक जकाँ परिचय भेटैत अछि। मैथिलीक जाहि रुपक साहित्य एहि दरबारसभमे रचित भए विकसित भेल, ताहिसँ स्पष्ट सिद्ध होइत अछि जे मैथिली

नेपालमे उच्च रुपेँ समादृत छल। नाटकमे मैथिली गद्यक प्रयोग इहो सिद्ध करैत अछि जे नेपालक मैथिली साहित्यकार प्रयोगशील प्रतिभाक लोक छलाह। संस्कृतकेँ छोड़ि मैथिली गद्य-पद्यक प्रयोग करब हुनक लोकानुरंजनक प्रतीक थिक।

भातगाँवमे रचित मैथिली नाटक :- यक्षमल्लक मृत्युक पश्चात् हुनक ज्येष्ठ बालक रायमल्ल (1481-96) एहि ठाम राज्यक स्थापना कएल आओर एहि शाखा मध्य मैथिली नाटकक सर्वाधिक विकास भेल। सर्वप्रथम नाटकमे मैथिली गद्यक प्रयोग भेल रायमल्लक प्रपौत्र विश्वमल्ल (1533) क राज्यकालमे लिखल गेल 'विद्याविलाप' नाटकमे, मुदा प्रो. प्रफुल्लकुमार 'मौन'क अनुसार एकर रचना विश्वमल्लक पुत्र त्रैलोक्यमल्लक राज्यकालमे भेल छल। ई अपूर्ण उपलब्ध अछि। एहिमे कोन प्रकारक गद्य प्रयुक्त भेल, से निम्नलिखित उद्धरणसँ स्पष्ट भए जाएत :-

'श्रीमत् श्रीभक्तपत्तन नगरी सकल गुणिजन शोभित श्रीश्रीविश्वमल्ल देवस्य सभाके महिमा शुन ....श्री भक्तपत्तनगरे विद्याविलापनाटक प्रवृत हैलो, ता देखि निमित्त आक्षे जावो।'

अतः ई प्रथम मैथिली नाटक थिक। त्रैलोक्यमल्ल बनाम त्रिभुवनमल्ल (1572-85) क समयमे रचित एकटा कृष्णविषयक नाटकक खण्डित प्रति उपलब्ध अछि, जकर दुइ गोट पदमे क्रमशः वीरनारायण ओ रामचन्द्रकविक नामोल्लेख अछि। ई दुनू गोटा हुनक आश्रित कवि रहल होथि, से सम्भव। हुनक पुत्र जगज्ज्योतिर्मल्ल (1613-37) क तीन गोट नाटकक उल्लेख कएल जाइत अछि। ई नाटकक थिक 'मुदितकुवलयाश्व' (1628), 'हरगौरीविवाह' (1629) एवं 'कुंजविहारनाटक'। एहिमे 'कुंजविहारनाटक' राधाकृष्ण ओ गोपीक कथा लए लिखल गेल गीत-नाट्य थिक। 'मुदितकुवलयाश्व' संस्कृत-मिश्रितनाटक थिक। कतोक विद्वान एकरा वंशमणिझाक कृति मानैत छथि। 'हरगौरीविवाह' महादेवक ओ पार्वतीक विवाहक प्रसंग लए रचित भेल अछि तथा एहिमे प्रयुक्त 'महेशवानी' सभ उत्कृष्ट कोटिक अछि। एहिमे स्थान-स्थान पर मैथिली गद्य सेहो प्रयुक्त भेल अछि। गद्यक स्वरुप विशेष रुपसँ द्रष्टव्य थिक :-

महादेव- हे नन्दी भृंगी जहिआ सत्रो सती देह त्याग कएल तहिआ सत्रो मोत्रो वियोग व्याकुल रहत्रो। अतष्पर सती हिमालयक गृह अवतार लेल। ते घलह ततए जाऊ।

उभौ- देवाधिदेव जे आज्ञा।

'हरगौरीविवाह' मैथिली नाटकक इतिहासमें विलक्षण महत्व रखैत अछि, से तत्कालीन मैथिली गद्य एवं अभिनय-प्रणालीक प्रमाणक दृष्टिएँ। एकर विभाजन अंकमे नहि, 'सम्बन्ध'मे अछि ओ 'कोण'क उल्लेख कए तात्कालिक प्रचलित अभिनय-रीतिक

सूचना सेहो देल गेल अछि। एहि मध्य 54 गोट रागरागिणीबद्ध पदक समावेश अछि, अतः गद्यक प्रयोग भेलहु सन्ताँ तत्कालीन नाट्याभिनयमे पद्यक प्रधानताक ई ज्वलन्त साक्ष्य थिक। एही कारणे श्रीझवाली अपन 'नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास'मे एकर तुलना यूरोपीय 'ओपेरा'सँ कएने छथि।

जगज्योतिर्मल्लक बालक नरेन्द्रमल्लक समयमे कोनो नाटकक रचना भेल हो, से ज्ञात नहि अछि। परन्तु हुनक पौत्र 'गन्धर्वविद्यागुरु' नामे ख्यात जगतप्रकाशमल्ल (1637-72) स्वयं सुकवि ओ नाटककार छलाह। वस्तुतः हिनके समयमे कथोपकथनमे अपेक्षाकृत अधिक मैथिली गद्य प्रयुक्त भेल। हिनक आठ गोट नाटक राष्ट्रीय अभिलेखालय नेपालमे सुरक्षित कहल जाइत अछि। ओ नाटक थिक-1. 'उषाहरण' 2. 'नलीयनाटकम्' (1670), 3. 'पारिजातहरणम्' 4. 'प्रभावतीहरण' (1656) 5. 'मलयगन्धिनी' (1663) 6. 'मदनचरित' 7. मूलशशिदेवोण व्यानम्, एवं 8. मालती-माधव। एहि नाटकसभमे 'नलीयनाटकम् 108 हस्तलेखपृष्ठमे अछि तथा एकर पदक भनितामे कविक उपाधि 'चन्द्रशेखर' देल अछि। एहि नामसँ कतोक मुक्तक पद सेहो उपलब्ध अछि। राजगुरु हेमराजपुस्तकालयमे 'कृष्णदास'क जगतप्रकाश मल्लक नामसँ रचित तीन अंकक 'रामायणनाटक' सेहो उपलब्ध अछि। वस्तुतः जगतप्रकाशमल्लक राज्यकाल मैथिली नाटकक विकासक दृष्टिएँ बड़ महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि। ओहि नाटकसभमे प्रयुक्त मैथिली गद्यक स्वरुप निम्नलिखित उद्धरणसँ स्पष्ट भए जाएत :-

सूत्रधार :- हे प्रिये एंतय आउ।
नटी- हे नाथ, हमर प्रणाम, की आज्ञा करै छिअ।
सूत्रधार- हे प्रिये श्री श्रीजगतजयप्रकाशमल्लदेवक ज्येष्ठ राजकुमार श्री श्रीजयजितामित्रमल्लक आज्ञा भेल अछि..

\- 'मदनचरित' सँ

'मलयगन्धिनी' मे व्रज-वर्णनाक प्रसंग, जगतप्रकाशमल्ल पाटनक अपन समसामयिक राजा श्री निवासमल्लक यशक वर्णन करैत छथि :-

सूत्रधार :- 'हे प्रिय एहन श्री श्रीनिवासमल्ल। उन्हिक यशवर्णना भक्तपूरक राजा श्री श्री जगतप्रकाशमल्ल राजा सतत करथि।'

एहि प्रकार नेपालक मध्यकालीन इतिहासमे वर्णित 1656 ई. मे भक्तपुर ओ पाटनक राजाक द्वारा संयुक्त रुपसँ कान्तिपुर पर भेल आक्रमणक सूचना एहि दुनू राजाक घनिष्ठ मैत्रीक साहित्यिक साक्ष्यसँ सेहो संपुष्ट होइत अछि।

जगतप्रकाशमल्लक पश्चात् हुनक पुत्र सुमतिजितामित्रमल्ल (1672-96)

सेहो नीक लेखक भेलाह ओ हुनका अपन पितहि जकाँ मैथिली भाषा पर पूर्ण अधिकार छलैन्हि। हुनक नामसँ सम्बद्ध **'कलीयमथनोपाख्यान'** (1684), **'मदालसाहरणम्'**, (1697), **'जैमिनीयभारतनाटकम्'** (1690), **'गोपीचन्द्रनाटकम्'** (1690), **'उषाहरण'**, **'नवदुर्गानाटकम्'** (1686), **'कुमार प्रादुर्भाव'** **'भाषानाटकम्,'** **'बरुथिनीहरण,'** **'अश्वमेधनाटक'** (1689), **मंगलमहोत्सव'** प्रभृति नाटक प्रसिद्ध अछि। एहि सभमे 'गोपीचन्द्र' नाटक बंगलामे तथा 'भाषा-नाटक'क किछु अंश नेवाड़ी मे ओ किछु मैथिलीमे अछि। शेष नाटक मैथिलीमे लिखल गेल अछि, मुदा गद्यक अभाव अछि।

जितामित्रमल्लक बालक **भूपतीन्द्रमल्ल** (1696- 1722)क समयमे लिखल गेल सोलह गोटसँ अधिक नाटक नेपालक पुस्तकालयसभमे सुरक्षित अछि। एहि मध्य किछु नाटकक भाषा बंगला ओ नेवाड़ी अछि, मुदा **'रुक्मिणीहरण'**, **'माधवानल'** (1704), **'जालन्धरोपाख्यान'**, **'गौरी-विवाह'** **'गोपीचन्द्रोपाख्यान'**, **'कोलासुरवधोपाख्यान'**, **'कंशवध-कृष्णचरित'**, आदि नाटक निस्सन्देह मैथिलीक नाटक थिक ओ एहिमे विशुद्ध मैथिलीक प्रयोग भेल अछि। कथोपकथनमे मैथिलीक प्रयोग ओ नाट्यस्वरूपक दृष्टिएँ किछु उद्धरण द्रष्टव्य थिक :-

- हे लोके सभा स्थान जायब चलू।
- हे लोके सुनू ।
सर्वे - महाराज आज्ञा करु।

- 'माधवानल'सँ

सूत्रधारक नटीसँ उक्ति - हे प्रिये एतय आउ
- हे इन्द्र त्वरित विजय करु ।

- 'कोलासुरवधोपाख्यान सँ

उग्रसेन - हे लोके प्रासाद मनाएब विश्राम करब।
सर्वे - महाराज अवश्य।

- 'कंसवधकृष्णचरित सँ

हिनक राज्यकालमे लिखल **'महाभारत'** (1702) ओ **'विद्याविलाप'** (1702) नाटक बंगीय-साहित्यपरिषद् द्वारा प्रकाशित भए चुकल अछि। 'विद्याविलाप' अ.भा.सा.प., प्रयागसँ सेहो प्रकाशित भेल। ई नाटक संस्कृतनाटकक नियमक अनुसरण नहि कए स्वतन्त्र रुपसँ देश ओ राजवर्णनापूर्वक रचित अछि। दुनू नाटक गीत-रुपक थिक, जाहिमे गद्यक प्रयोग नहि भेल अछि। 'महाभारत' तँ बड़ पैघ नाटक थिक जे 23 दिवसांकमे विभाजित अछि। 'महाभारत'क देशवर्णनाक कवि कृष्णदेव एवं 'विद्याविलाप'क राज्य-वर्णना ओ देशवर्णनाक कवि छथि काशीनाथ, अन्यथा सर्वत्र नाटककारक रुपमे भूपतीन्द्रमल्लक सएह चर्चा अछि। अतः इहो मान्यता अछि जे एहि दुनू नाटकक रचयिता छलाह क्रमशः कृष्णदेव ओ काशीनाथ जे अपन आश्रयदाताक नामकेँ लेखकक रुपमे उल्लेख कए देने छथि।

भातगाँवक अन्तिम राजा **रणजीतमल्ल** (1722-72)क समयमे सबसँ अधिक नाटकक रचना भेल जे नेपाल पुस्तकालयसभमे सुरक्षित अछि। डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे एहन 19 गोट नाटकक वर्णन कएने छथि। एहिमे अधिकांश नाटकक भाषा पर बंगलाक उत्कट प्रभाव अछि। **'कृष्ण-कैलाशयात्रोपाख्यान'**, **'रामायण'** (1775)ओ **'राम-चरित'** प्रभृतिक भाषा तँ प्रमुख रुपमे बंगला अछि, मुदा **'अन्धकासुर-वधोपाख्यान'** (1768), **'रुक्मिणीहरण'**, **'माधवानल-कामकन्दला'** प्रभृति निश्चित रुपसँ मैथिलीक नाटक थिक, जाहिमे मैथिली गद्य सेहो प्रयुक्त भेल अछि।

कथोपकथनमे प्रयुक्त गद्यक निम्नलिखित दृष्टान्त उल्लेखनीय थिक :-
रानी शशिरेखा - हे प्राणनाथ हमरो विनती शुन।
अन्धकासुर - प्रियतमा कहु।
भीमानन्द (मन्त्री) - हे दानवाधिप हमरो विनती अवधान करु।
अन्धकासुर - भीमानन्द, कहु।

- 'अन्धकासुरोपाख्यान' सँ

प्रिये तोहे हमर पुरुब जन्मक घरनी थिकी। हमर चित्त लागल किछु कहब सुनु मायानाथ, हम की कहब।

- 'रुक्मिणीपरिणय' सँ

हिनक समयमे रचित **'माधवानल'** **'कामकन्दला'** **'विद्याविलाप'**-रीतिक उच्च कोटिक गीतिनाट्य थिक।

काठमाण्डुमे रचित मैथिली नाटक :- काठमाण्डूक राज्यशाखा यक्षमल्लक तृतीय बालक **रत्नमल्ल** (1482-1520) द्वारा स्थापित भेल छल। रत्नमल्लक बालक अमरमल्ल अपन दरबारमे सात प्रकारक नृत्य तथा अन्यान्य कलाकेँ प्रश्रय ओ प्रोत्साहन देल। मुदा हुनक पौत्र नरेन्द्रमल्ल (1551) तथा हुनक वंशधर महीन्द्रमल्ल (1566) ओ सदाशिवसिंहमल्ल (1575-6) कोनहु नाटककारकेँ संरक्षण देल, तकर प्रमाण नहि भेटैत अछि। हुनक अनुज शिवमल्लक देहान्तक पश्चात् हुनक छोट पुत्र हरिहरसिंहमल्लदेवक राज्यकालमे काठमाण्डू राज्य दुइ भागमे बँटि गेल - (क) कान्तिपुरक राज्यशाखा ओ (ख) ललितपुर वा पाटनक राज्यशाखा।

(क) कान्तिपुर (काठमाण्डू) राज्यवंशक छत्रच्छायामे मैथिली नाटकक कोनो विशेष रचना नहि भेल। किन्तु लक्ष्मीनरसिंह द्वारा संस्थापित एहि राज्यवंशमे **प्रतापमल्लदेव** (1641-74) योद्धा तथा विद्याप्रेमी भेल छलाह। हिनक दुइ गोट पत्नी मिथिलाक छलथिन्ह। ई कतोक मैथिली विद्वानकेँ अपन दरबारमे आमन्त्रित कएल जाहिमे

बेलौंचेमूलक भारद्वज-गोत्रीय रामचन्द्रक बालक तथा प्रसिद्ध 'गीतदिगम्बर' नाटक (1655)क रचयिता वंशमणिझा सेहो छलाह। एहि वंशमणिझाक दोसर नाटक थिक 'मुदित-मदालसा'। 'गीतदिगम्बर' नाटक मिथिलाक त्रैभाषिक नाटकक रचना-प्रणालीक अनुसरण करैत रचित भेल। मैथिली कविक रुपमे हिनक स्थान बड़ उच्च अछि। हिनक महेशवानी ओ मान-सम्बन्धी पद बड़ प्रसिद्ध अछि। प्रताप-मल्लदेवक उत्तराधिकारी कवि-चूड़ामणि महीन्द्र वा भूपालेन्द्रमल्ल (1687-1700)क समयमे 'नलचरितनाटक'क रचना भेल छल। मुदा ताहूमे गद्यक अभाव अछि। भूपालेन्द्रमल्लक पिता पार्थिवेन्द्रमल्ल (1680-7)क राज्यकालमे रचित 'पञ्चराक्ष' नामक नाटक पाण्डुलिपिक सूचना सेहो प्राप्त होइत अछि। भूपालेन्द्रक उत्तराधिकारी श्रीभास्करमल्लदेवे (1704-1722)क समयमे कोनो रचनाक प्रमाण नहि प्राप्त अछि। किन्तु हुनक पौत्र जगज्जयमल्ल (1722-36)क समयमे 'अभिनवप्रबोध-चन्द्रोदय'क रचना भेल। एहि नाटकमे बंगलाक उत्कट प्रभाव अछि। एतावता काठमाण्डू-शाखा मध्य मैथिली गेय पदक तँ उल्लेखनीय विकास भेल, मुदा नाटकक नहि।

(ख) ललितपुर वा पाटनक राजालोकनिक ओहि ठाम मैथिली नाटकक विकास अपेक्षाकृत अधिक भेल। हरिहरसिंहदेवक प्रसिद्ध बालक राजा सिद्धिनरसिंहदेव (1622-57)क राज्यकालमे 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्' (1651) एवं 'गोपीचन्द्र' नाटकक रचना भेल। 'हरिश्चन्द्रनृत्यम्'क नाटककार रामभद्र एहि मध्य संस्कृतक बड़ किंचित् प्रयोग कएल तथा आद्यन्त मैथिली भाषाक सएह व्यवहार कएल। एहि नाटक मध्य हरिश्चन्द्रक कथा वर्णित अछि- हरिश्चन्द्रक सत्यव्रत पालन करबाक अभिमान, विश्वामित्र द्वारा परीक्षा लेब, स्वप्नमे सम्पूर्ण राज्य दानमे दए देब, दक्षिणाक हेतु अपन स्त्रीकेँ ओ स्वयं अपनहुकेँ बेचब प्रभृति। एकर गद्य केहन अछि से श्मशानमे राजारानीक निम्नलिखित कथोपकथनक उद्धरण स्पष्ट कए देत :-

राजा - अहे घोरिणी सुन कतय हरिचन्द के तुअ जाति। कहि गेल अछल हमर किसान।

रानी - राय हरिचन्द बेचिय हम गेर। दुनसन्ताप दुख दय गेर एहि वेतबा के कय आस अहे महा पुरुष हमी राजा हरिश्चन्द्रेर स्त्री मएनावती अछि। हमार अभ्यागते परेर दासिनी हैरो अग्निसंस्कार करिवार पुत्र निया अमी अग्नि अग्निते जायवो।

(रानी जाव)

राजा- हरि-हरि दैव हमाके कतेक विपती दिये हम जे घण्डारेर दास हैरो। एहि हमार पुत्र रोहिदास अछि। मनावती अमाके ना चिन्हिहो।"

सिद्धिनरसिंहदेवक उत्तराधिकारी श्रीनिवासमल्ल (1657-85)क समयमे रामभद्र-कृत 'ललितकुवलयाश्व' ओ 'मदालसानाटक' (1665)क परिचय भेटैत अछि। हिनकहि राजत्वकालमे 'तारकासुरवध नाटक'क सेहो सूचना प्राप्त होइत अछि, जकर अन्तमे लिखल अछि- "महाराज श्रीसिद्धिनरसिंहेर पुत्र श्रीनिवासमल्लके शुभाशीर्वाद करिया परम सुख केलास जायब चलो।" विष्णुसिंहमल्ल (1737)क एकटा पैघ एकांकी 'उषाहरण नाटक' वा 'कृष्ण-चरित'क सेहो पता चलैत अछि। नेपालक राजगुरु हेमराज शर्मापुस्ताकालयमे ई नाटक उपलब्ध अछि।

बनेपा (बानपुर)मे विकसित मैथिली नाटक

एहि राज्यवंशक स्थापना यक्षमल्लक दोसर पुत्र जयरणमल्ल द्वारा भेल जे ओतए 21 वर्ष धरि शासन कएल। मुदा हुनक एकमात्र पुत्र विजयमल्लक देहान्त हुनक जीवन-कालहिमे भए गेलाक पश्चात् भक्तपुरक नरपति सुवर्णमल्ल अथवा भुवनमल्ल (1501-08) बनिकपुरक राज्यकेँ अपन राज्यमे मिलाए लेल। एतबा थोड़ समय राज्य करितहुँ "जयरणमल्ल देवेनराज्ञा कवीश्वर अभयराजस्य पुत्र शुभराज" एकटा 'पाण्डव-विजय' नामक नाटकक रचना कएने छलाह जाहि मध्य निम्नलिखित रुपक मिथिलापभ्रंशक प्रयोग भेल :-

"तरुणीजनस्य सोहग्गं दिज्जमि तुम्हाण समन्ता। हेरं - वणाह तुम्हे पहर - दु भवकलुसं णिमेसेण।। बिना।। देखिसौभाग्यदायिनी युक्तमुक्तं ते।। वश्य।। णाह एसा वस्सदायिणी विज्ञापइस्से।।"

शुभराजक दोसर नाट्य-रचना "रुपमञ्जरी-परिणय" सेहो उपलब्ध अछि जाहि मध्य सूत्रधारक संस्कृतमे एवं नटीक प्राकृत-अपभ्रंशमे कथोपकथन अछि -

"नटी - अज्ज उत्त इअम्हि आअदा कर्स्सि णिआययं अणुचित्यसि।

सूत्रधार - प्रिय गुणमति किमप्प पूर्व्व नाटकमभिनाय सभासदो मानसरञ्जनाय परियत्न करौ भवायः।"

एहि दुनू नाटक मध्य मिथिलाभाषाक प्रयोगक प्रसंग कोनो सूचना उपलब्ध नहि अछि। दुनू कृति अप्रकाशित अछि, अतः सम्प्रति विशेष विवरणक अवकाश नहि अछि।

नेपालमे नाटकक भाषाक जे स्वरुप देखैत छी, तकरा अनुसार ई निस्सन्देह कहल जा सकैत अछि जे नेपालक राजालोकनिक दरबारमे मैथिल विद्वानक अतिरिक्त बंगालक पण्डितक सेहो प्रभाव छल आओर ई प्रभाव क्रमिक प्रगाढ़ होइत गेल छल। अतः एहि नाटकसभमे कतोकक रचना बंगालक विद्वानलोकनिक द्वारा भेल होअए, से

बहुत सम्भव। दोसर, जे रचना मैथिलीमे भेल तकरा प्रतिलिपिकार भ्रष्ट कए देने होथि, सेहो सम्भव। एहि नाटकसभमे कतोक नाटक बंगलाक विद्वान्लोकनिक द्वारा सम्पादित भए प्रकाशित भेल अछि। अतः स्मपादनक क्रममे ओकरा बंगलारंगमे रँगि देल गेल हो, सेहो बहुत सम्भव थिक। खेदक विषय जे अद्यावधि मैथिलीक विद्वान द्वारा एहि नाटकसभक यथेष्ट अध्ययन, सम्पादन ओ प्रकाशन नहि भेल अछि। किछु भेबो कएल अछि तँ से अपर्याप्त कहल जाए सकैत अछि।

दोसर विषय द्रष्टव्य थिक नाटककारक परिचयक प्रसंग। एहू प्रसंग उपलब्ध सामग्रीक आधार पर किछु प्रामाणिक नहि अछि। जे नाटक राजालोकनि द्वारा रचित भेल कहल जाइत अछि, से भए सकैत अछि जे कोनो ज्ञात-अज्ञात कवि-नाटककार लिखने होथि आओर ओ लोकनि आश्रयदाता राजोकनिककेँ प्रसन्न करबाक निमित्त अपन-अपन नामकेँ प्रक्षिप्त राखि हुनके-हुनके नाम ओहिमे जोड़ि देने होथि। एहि प्रसंग विशेष अनुसन्धान-अनुशीलन अपेक्षित अछि।

2. आसाममे मैथिली नाटकक विकासक कारण

आसाममे रचित मैथिली नाटक 'अंकियानाट' नामसँ प्रसिद्ध अछि। 'अंकियानाट' वैष्णवसम्प्रदायक प्रचारार्थ लिखल जाए लागल 16म शताब्दीमे। अतः एहि प्रकारक नाटकक कथावस्तु मुख्यतः विष्णुक अवतार कृष्ण ओ रामक जीवन पर आधारित भेल। कथाक उत्स भेल भागवत्, हरिवंश ओ रामायण।

'अंकियानाट'क आदि-रचयिता भेलाह शंकरदेव (1449-1569) जे वैष्णवधर्मक सबसँ प्रमुख सन्तक रुपमे ख्यात छथि। 'अंकियानाट'क रचनासँ पूर्व हिनक प्रथम नाटकीय प्रदर्शन भेल 'चिह्नयात्रा'क नामसँ। चिह्नयात्रासँ तात्पर्य भेल चित्रित-पटसँ युक्त रंगमंचपर यात्रा-रीतिक अभिनय, जे पन्द्रहम शताब्दीमे होइत छल। ओहि प्रकारक चित्रमय पटसँ युक्त दृश्ययोजना, समयकेँ ध्यानमे रखैत, अद्भुत वस्तु बूझि पड़ैत अछि। इएह चिह्नयात्रा पश्चात् 'अंकियानाट'क रुपमे यथोचित संगीतनृत्य ओ कथोपकथनसँ युक्त भए विकसित भेल। 'अंकियानाट'सँ पूर्व आसाममे काव्य ओ शास्त्रक जनसामान्यमे सस्वर पाठक परिपाटी छल। एहि प्रकारक काव्यक शंकरदेव स्वयं सेहो आसामीभाषामे रचना कएने छलाह। किन्तु पश्चात् नाटककेँ वैष्णवधर्मक प्रचारक अपेक्षाकृत अधिक प्रभावपूर्ण साधन बूझि अपनाओल।

'अंकियानाट'क रचनाक पूर्व शंकरदेव 12 वर्ष धरि देशक विभिन्न भागमे भ्रमण कएने छलाह आओर अपन यात्राक क्रममे विभिन्न स्थानमे प्रचलित रामलीला, रासलीला, यात्रा, कथक, यक्षगान, भागवतम्, भवाइ प्रभृति अभिनयक विभिन्न प्रणालीक सम्पर्कमे आएल छलाह। आसाममे सेहो कएक प्रकारक अभिनयनृत्य-प्रणाली प्रचलित छलैक,

यथा, 'देवधानीनाच', 'पुतलनाच' एवं 'ओजापाली'। एहि मध्य ओजापाली बड़ प्रसिद्ध छलैक। ओजा ओझा वा झाक आसामी उच्चारण थिक। अर्थात्, मिथिलाक ब्राह्मणमण्डली ओहि ठाम जाहि प्रकारक नाचक अभिनय करैत छलाह, सएह भेल ओजापाली। ओजोपालीमे चारि-पाँचगोट गायक रहैत छलाह जे क्रमशः दुइ वर्गमे विभक्त भए जाथि। दुनू वर्गक गायक संग मिलिकए गाबथि। प्रमुख गायक 'ओजा' कहाबथि ओ हुनक संग देनिहार 'पाली'। पाली-वर्ग मध्य जे प्रधान रहथि से 'दैना पाली' कहाबथि। ओजा कथाकेँ आरम्भ करैत पदकेँ गाबथि, पाली हुनक अनुसरण करैत झाँझ झनकबैत पदसभकेँ दोहरबैत चलथि। पद्यबद्ध वर्णनकेँ स्पष्ट करैत ओजा आंगिक चेष्टापात सेहो करथि। अभिनयक एहि क्रमक मध्य ओजा दैनापालीक संग कथोपकथन करथि जाहिसँ नाटकीयताक समावेशक संग-संग मनोरंजनक सेहो विस्तार होअए। शंकरदेव काव्यक पाठ, ओजापाली तथा देशक अन्य स्थानमे प्रचलित रासलीला, कथक, यात्रा प्रभृतिक तत्वकेँ ग्रहण कए एक स्वतन्त्र 'अंकियानाट'क अभिनय परम्पराक स्थापना कएल।

अंकियानाटक रचना शंकरदेव मैथिलीमे कएल। अतः आसामी-भाषा-भाषी द्वारा मैथिलीमे रचना होएबाक कारण ओहिमे आसामी भाषाक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक अछि। मुदा आसामी भाषाक निष्णात साहित्यकार होइतहुँ ओ मैथिलीकेँ अपन साम्प्रदायिक प्रचारक माध्यम किएक बनाओल ? यदि लोकभाषामे सएह नाटक लिखब हुनका अभिप्रेत छलैन्हि तँ से आसामी भाषासँ भए सकैत छलैन्हि। शंकरदेव द्वारा मैथिली भाषाकेँ प्रयुक्त करबाक दुइ कारण भए सकैत अछि - 1. संस्कृत-नाटकमे दुइ भाषाकेँ प्रयोग करबाक परिपाटी छलैक-नायक वा पुरुषपात्रक हेतु संस्कृत तथा नायिका, हुनक सखी वा निम्नवर्गक पात्रक हेतु प्राकृत प्रयुक्त होइत छल। ओ एहि परम्पराकेँ भंग नहि करए चाहैत छलाह, संगहि लोकभाषामे सेहो रचना करए चाहैत छलाह। आसामी भाषा ताबत ओतबा प्रतिष्ठित नहि भेल छल। साहित्यिक गौरवकेँ राखब सेहो हुनक ध्यानमे छल, अतः ओ मध्यममार्गक अनुसरण कएल ओ मिश्रित भाषाक प्रयोग कएल, जाहिसँ साहित्यिक गौरवक सेहो समावेश भेल तथा लोकानुरंजनक सेहो अनुकूल भेल। 2. ताबत मिथिलामे मैथिलीकेँ विद्यापति अपन पदरचना द्वारा साहित्यिक गौरव प्रदान कए चुकल छलाह। तत्पश्चात् विद्यापति बंगलामे वैष्णव कविक रुपमे ख्यात भए चुकल छलाह तथा मैथिलीक प्रयोग भेलासँ बंगालमे वैष्णवधर्मक प्रचारमे नवीन स्फूर्त्ति आबि गेल छलैक, जकरा शंकरदेव अपन यात्राक क्रममे अनुभव कए चुकल छलाह। एहि प्रक्रियामे विद्यापतिक पद आसाममे सेहो प्रचलित भए रहल छल। जखन शंकरदेव मिथिलाक यात्रा कए रहल छलाह तखन मैथिली भाषासाहित्यसँ ओ साक्षात् सम्पर्कमे सेहो आएल छलाह। शंकरदेव सन सहृदय प्रेमी व्यक्तिकेँ मैथिलीक सरस माधुर्य अवश्य आह्लादित कएने रहल होएत। पश्चात् सभक समन्वित प्रभावसँ ओ अपन सम्प्रदायक प्रचारक भाषा मैथिलीकेँ बनाएब सएह उचित बुझल, ओहिना जेना चैतन्यमहाप्रभु बंगालमे उचित बुझने

छलाह।

'अंकियानाटक'क स्वरूप ओ विशिष्टता :- अंकियानाट एकांकीनाटक थिक जाहिमे पृथक्-पृथक् दृश्ययोजनाक सेहो अवकाश नहि छलैक अर्थात् अंकियानाटक अभिनय सम्पूर्ण एक बेर होइत छल। मुदा संस्कृत एकांकी कोटिक ई नाटक नहि थिक। श्री बरुआक अनुसार 'अंकिया' शब्दक व्युत्पत्ति भेल अछि आंगिक अभिनयसँ। मुदा ई आंगिक अभिनय सामान्यार्थक नहि, एकर तात्पर्य अछि वैष्णवधर्म-प्रचारार्थ लिखित आंगिक अभिनयसँ परिपूर्ण एकांकी नाटक।

अंकियानाटक आरम्भ किछु अंशधरि संस्कृत नाटकक रीतिक अनुकूल होइत छल, मुख्य रूपे संस्कृतश्लोक, नान्दीपाठ, सूत्रधारक प्रवेश तथा पूर्वरंगक सामान्य व्यवहार-पालनक दृष्टिएँ। संस्कृत नाटकमे सूत्रधारक, पूर्व रंगक पश्चात् कोनो प्रयोजन नहि रहैत छैक, परन्तु अंकियानाटमे सूत्रधारे रंगमंच पर आद्यन्त उपस्थित भए सब किछु बनल रहैत छल-अभिनेता ओ व्याख्याता। ओएह नान्दीपाठक पश्चात् नचैत छल, गबैत छल, पात्रक परिचय दैत छल, निर्देशन करैत छल, पात्रक प्रवेश आ निष्क्रमणक घोषणा करैत छल तथा धार्मिक प्रवचन दैत छल। अर्थात् नाटकक अभिनयसंचालन एवं उद्देश्य-प्रतिपादनमे सूत्रधारक स्थान अंकियानाटमे सर्वोपरि रहैत छल। अतः अंकियानाटक सूत्रधारकेँ एकसंग उद्भट अभिनेता, पटु गायक, ओ निष्णात नर्तक होएब आवश्यक छलैक।

अंकियानाटक दोसर उल्लेखनीय वैशिष्ट्य थिक गीतक प्रधानता। एहिमे नहि तँ यथार्थवादी रंगमंचक आ ने नाटकीय परिस्थिति वा मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रणक अवकाश छलैक। एहिमे अधिकांश विषय गीतहिक द्वारा द्योतित होइत छल तथा गद्यमे ओहि भावना, घटना, कथा वा धार्मिक सन्देशक पुनरावृत्ति कएल जाइत छल। अतः अंकियानाटक अभिनयक सफलता गायनक पटुता पर सएह निर्भर करैत छल। अतः अंकियानाटमे अभिनेताकेँ रागरागिणीमे निष्णात होएब आवश्यक छलैन्हि। वस्तुतः एहिमे गद्यसँ युक्त संगीतात्मक अभिनय सएह होइत छलैक। एहीकारणे अंकियानाटमे प्रयुक्त गीतक ऊपर रागरागिणीक उल्लेख कए देल गेल अछि-अहीर, आशावरी, भूपाली, ललित, मलार आदि। एहिमे प्रयुक्त अधिकांश रागरागिणीक उल्लेख मैथिलीक प्राचीन कविलोकनिक पदक शीर्षस्थ भेल भेटैत अछि।

जेना कि पूर्वहु उल्लेख कएल जाए चुकल अछि, अंकियानाटक कथावस्तु रामायण, महाभारत, भागवत ओ हरिवंशसँ ग्रहण कएल गेल। 'चरित्र', 'विजय' ओ 'वध'- मूलक कथा अंकियानाटक विषय नहि बनल, प्रत्युत नाटककारलोकनि 'हरण' ओ 'परिणय'-सम्बन्धी कथाक प्रति विशेष अभिरुचि देखाओल। नाटककारकेँ चरित्रक

बहुविधि विकासकेँ देखएबाक हेतु समुचित परिस्थितिक निर्माण करबाक अवकाश नहि रहैत छलैन्हि, तथापि जे किछु चरित्रांकन भेल से बड़ संक्षिप्त रीतिएँ, कलात्मक पद्धतिक संग। बिरिंचिकुमार बरुआक अनुसार -

"Brevity became the main fetaure of his play, and with the fewest masterstrokes he created his characters and flashed them before the audience like figures on the screen. ('अंकियानाट'-भूमिका पृ. 15) अतः आसामक मैथिली नाटककार एहि दिशामे सेहो बड़ कलात्मक कौशलक परिचय देलैन्हि।

अंकियानाटक आरम्भ संस्कृत वा मैथिलीमे स्तुतिगानक पश्चात् होइत छैक ओ कोनो-कोनो ठाम 'नान्द्यन्ते सूत्रधार' लिखल छैक, यथा, 'रुक्मिणीहरण'मे। सूत्रधार प्रवेश कए ऊपर दिसि ताकि संगीकेँ कहैत अछि- 'हे संगी की बाद्य सुनियें'। संगी उत्तर दैत छैक- आहे देव दुन्दुभि बाजत। तत्पश्चात् जोेक गायन होइछ से प्रायः सूत्रधारक द्वारा सएह। एहना स्थितिमे दोसर पात्रक उपयोगिता मूक अभिनेताक रूपमे सीमित रहि जाइत अछि। सहयोगी पात्रक एकमात्र उपयोगिता रहैछ सूत्रधारक गद्योक्तिक बीचमे उपयुक्त पदकेँ गान करबाक हेतु। आधुनिक युगमे आबि अंकियानाटक अभिनय गामक 'भाउर' मे होइत अछि जाहिमे 'चौधरी' (पात्रक साजसज्जाक कक्ष) सम्बद्ध रहैछ तथा दूत ओ मिथिलाक 'बिपटा'सँ मिलैतजुलैत 'बहुआ' पात्रक समावेश सेहो होइत अछि। मुदा एकर नियोजन पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीमे सेहो होइत छल, तकर कोनो प्रमाण उपलब्ध नहि होइछ।

संस्कृतनाटक ओ अंकियानाटमे एक विषयक आओर अन्तर स्पष्ट अछि। संस्कृतनाट्यशास्त्रक अनुसार मृत्यु, युद्ध, पराजय, राजाकेँ गद्दी परसँ हटाएब प्रभृतिक दृश्य-योजना वर्जित अछि, तहिना विवाह, भोजन, सूतब, स्नान करब, शृंगारिक आलिंगन, चुम्बन आदिक निरोध कएल गेल छैक। मुदा अंकियानाटमे एहि नियमक पालन करब आवश्यक नहि बुझल गेल, प्रत्युत वैवाहिक व्यवहार, हत्या, शृंगारिक आलिंगन-चुम्बन आदिक दृश्ययोजना प्रचुरतया भेल। स्वगतभाषण, अपवारित आदिक सेहो कतहु एहिमे प्रयोग नहि भेल अछि, मुदा स्थान, समय एवं क्रियाकलापक ऐक्यक सर्वत्र निर्वाह भेल भेटैत अछि। नाटकक कोनहु पात्रमे स्वभावक समानता आद्यन्त अनुवर्तमान रहैत अछि।

अंकियानाटमे पात्रक संख्या बड़ सीमित रहैत अछि तथा चरित्रचित्रण पर ध्यान देल जाइत अछि तँ मात्र नायकनायिकाक, अन्य पात्रक महत्व बड़ गौण रहैछ। नायक होइत छथि प्रमुखतया कृष्ण ओ राम तथा नायिका रुक्मिणी, सत्यभामा, यशोदा ओ सीता जे परम्परागत रूपमे चित्रित कएल गेल छथि।

पहिने कहल गेल अछि जे अंकियानाटक उद्‌देश्य छल वैष्णवधर्मक प्रचार, अतः ई ताही प्रकारसँ रचित ओ अभिनीत होइत रहल जाहिसँ दर्शकक हृदयमे धार्मिक भावना ओ श्रद्धाक उदय हो। एहि उद्‌देश्यक पूर्त्ति केवल वर्णन ओ चरित्रचित्रणहिक द्वारा नहि, गान, नृत्य, कथनोपकथन आदि समग्र रुपेँ कएल गेल अछि। अतः एहि नाटकसभमे भक्तिक विभिन्न स्वरुप, मुख्यतः दास्य ओ सख्यभावक अभिव्यंजना भेल अछि। शंकरदेव दास्यभावक सर्वोत्कृष्ट कवि-नाटककार छथि तँ माधवदेव बालक कृष्णक स्वाभाविक वर्णन कए वात्सल्यभावक संग रहस्यभावक अद्‌भुत मिश्रण कएने छथि। श्रृंगार-वर्णन दिसि अंकियानाटमे अभिरुचि नहि बूझि पड़ैत, प्रत्युत 'रुक्मिणीहरण', 'गोपालकेलि', 'रासझुमुर' प्रभृतिमे रुक्मिणी ओ गोपीक वर्णनमे मातृत्वक आरोप जकाँ कएल गेलैक अछि। राधा कृष्णसँ प्रेमनिवेदन नहि, वन्दना करैत छथि। एहि प्रकार मिथिलामे राधाकृष्णक परस्पर सम्बन्धक जे मान्यता ओ रीति अछि, ताहिसँ एहिमे पूर्ण विरोध द्रष्टव्य थिक। एतबे नहि, एहिमे कामभावनाक चित्रणहुसँ धार्मिक ओ नैतिक निष्कर्ष बहार कएल गेल छैक। 'केलिगोपाल'मे सूत्रधार कहैछ - 'ऐचन क्रीड़ा कय कृष्ण कामातुर पुरुष देखावल। स्त्री भेल राजा कामातुर जनिकर दास ।' मुदा धार्मिक उद्‌देश्य भगवानक भजन जो महत्ताक प्रदर्शन, अंकियानटक स्थल-स्थल पर निरन्तर बारंबार-'निरन्तरे हरि बोल हरि बोल' लिखि कए देल गेलैक अछि अर्थात् एहि प्रकारक रचनाक उद्‌देश्य-सूचना स्पष्ट रुपेँ कए देल गेल छैक।

एहि प्रकार अंकियानाटमे मैथिली नाटकक विलक्षण स्वरुपक दर्शन होइत अछि। की अभिनयक नवीनताक दृष्टिएँ, की धार्मिक, दार्शनिक ओ साहित्यिक विलक्षणताक दृष्टिएँ ओ की भाषाप्रयोगक दृष्टिएँ ई मैथिली साहित्यक अभिन्न अंग थिक। आसामीभाषासँ मिश्रित भेलहु सन्ताँ एकर भाषा ओ भावाभिव्यक्तिमे मैथिली भाषाक प्रधान स्वर मुखर अछि।

प्रमुख नाटककार

1. शंकरदेव (1449- 1568) :- शंकरदेव अंकियानाटक प्रवर्त्तक ओ सर्वोत्तम लेखक छथि। हिनक छओ गोट अंकियानाट :- 'कालीयदमन', 'रामविजय', 'रुक्मिणीहरण', 'केलिगोपाल', 'पत्नीप्रसाद' ओ 'पारिजातहरण' उपलब्ध अछि। ई नाटकसभ उत्कृष्ट ओ पैघ नाटक थिक। एहिमे 'कालीयदमन'क रचना ओ अपन भाइ रामरायक आग्रहसँ कएल। ई नाट कृष्णक कालीनाग पर विजय करबाक प्रसिद्ध कथा पर आधारित अछि। ई हिनक आरम्भिक रचना थिक। अतः एहिमे काव्योत्कर्ष अपेक्षाकृत न्यून अछि। 'रामविजय'मे रामक विजयक वर्णन नहि अछि, सीता- स्वयंवरक वर्णन अछि। अतः एकर नामकरण समुचित नहि कहल जा सकैछ। एहि अंकियानाटक रचना शंकरदेव कएल राजकुमार शुक्लध्वजक प्रार्थना पर। हिनक सबसँ प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय नाटक थिक 'रुक्मिणीहरणनाट'। एकर प्रशंसा करैत श्री अम्बिकाबोरह लिखैत

छथि - *"Shankardeva, with subtle and intimate knowledge of realities, exploited the vast potentiality of the theme of Rukmini in imparting the flavour of nationalism to the exotic materials of Vaisnava propaganda"* एहि नाटकौक कथा प्रसिद्ध अछि। मुदा एहिमे राधाकृष्णक प्रेम-प्रसंगक विस्तार नहि कए, ओकरा बड़ शीघ्रतासँ समाप्त कए, कथाकेँ आगाँ बढ़ा देल गेलैक अछि। 'केलिलीला'मे राधाकृष्णक रासलीलाक वर्णन भेल अछि। एहि कथाक उत्स थिक भागवत। एहि मध्य कृष्णक द्वारा राधाक अभिमान भंग करबाक प्रसंग बड़ रोचक भेल अछि। 'परिजातहरण'मे शंकरदेव उमापतिक 'परिजातहरण' जकाँ कथाक विन्यास नहि कएने छथि आ'ने एहिमे ओना शृंगारेक सांगोपांग वर्णन कएने छथि। एहिमे नारदक चरित्रकेँ बड़ नीक जकाँ दरसाओल गेल छैक। देवतालोकनिक प्रार्थनासँ द्रवित भए कृष्ण कामरुपक राजा नरकासुरक अधिकारसँ परिजातवृक्षकेँ अनबाक हेतु जाइत छथि। कृष्णक संग सत्यभामा सेहो जाइत छथि जे पारिजातक हेतु हठ कए बैसैत छथि। एहिमे शचीक सेहो अवतारणा भेल अछि जे उमापतिक 'परिजातहरण'मे नहि अछि। शंकरदेवक उद्‌देश्य अछि भगवानक भक्त गोपीक प्रति सहृदयताक प्रतिपादन करब। अतः ओ तदनुकूले कथाक संघटन कएल अछि। किन्तु उमापतिक उद्‌देश्य अछि शृंगाररसक अवतारणा। 'परिजातहरण'क दुनू नाटककार अपन-अपन उद्‌देश्यमे सफल भेल छथि। 'पत्नीप्रसाद'क रचना शंकरदेव कोनो पूर्वप्रचलित कथाक आधार पर नहि कएल अछि। एकर कथा अछि जे एकटा ब्राह्मणी अपन पतिक विरोधक अछैतहुँ कृष्णक भक्ति करैत अछि। ओकर भक्तिसँ प्रसन्न भए कृष्ण ओहि ब्राह्मणीकेँ ईश्वरसँ साक्षात्कार करबामे सहायता दैत छथि। जाहि उद्‌देश्यक पूर्त्ति ब्राह्मण कठिन धार्मिक अनुष्ठान करबाक पश्चात् कए पबैत अछि, से ब्राह्मणीकेँ भक्तिसँ सहजहि होइत छैक। एहि नाटकक उद्‌देश्यक छैक सनातनधर्मक कर्ममार्गसँ भक्तिमार्गकेँ श्रेष्ठ सिद्ध करब।

नीचाँ शंकरदेवक अंकियानाटसँ तीनटा उद्धरण देल जाइत अछि जे हुनक भाषाशैली, नाटकीय रीति एवं काव्यकौशलकेँ सूचित करत तथा नाटमे प्रयुक्त हुनक गद्यक स्वरुप सेहो स्पष्ट भए जाएत :-

(क) सूत्र - उहि प्रकारे श्रीकृष्णक परनाम कयकँहो, सभासद लोकक सम्बोधि बोल।

श्लोक

भो भोः सामाजिकाः यूयं शृनुध्वं मधुरं वचः।
कृष्णस्य कालिदमनयात्रावार्त्तां निबोधत।।

सूत्र - आहे सभासद् लोक, ये परम पुरुष पुरुषोत्तम सनातन नारायन श्री श्रीकृष्ण उहि सभामध्य कालिदमन लीलायात्रा परम कौतुके करब; ताहे सावधाने देखह, निरन्तरे हरि बोल हरि।

भटिमा

जय जय यदुकुल कमल प्रकाशक
नाशक कंसक प्राण
जय जय जगतक भकतक भीति
मिति कर निरवान, आदि

- 'कालिदमन' सँ

(ख) सूत्र - स्वभावे चंचल स्त्री लाइ पाइ ईश्वर कृष्णक मानवे नाहि, शुनि श्रीकृष्ण कटाक्षे बोल।

श्रीकृष्ण - हे प्राण राधे, यदि चलवे नाहि पार हमार कान्धे चरहिया।

सूत्र - गोपी कटाक्ष नाहि बूझल। वस्त्र काढ़ि कान्हे चरिते रंग चलल। ताहे देखि कृष्ण अन्तर्ध्यान होइ पलायल।

श्रीराधा - से गर्व अन्ध भैलो: कृष्ण कान्ध बसाइते गेलो। से अपराधे बान्धव श्रीकृष्ण हामाक छारि कोन भिति गेल। इहा नाहि जानी (क्रन्दन)

- 'केलिगोपाल' सँ

(ग) सूत्र - श्रीकृष्ण पेखि प्रिया सहिते तत्काले उठिकदु परनाम कयल। ब्रह्मा नारद आशीर्वाद देल। श्रीकृष्ण माथ चरायकदु कर जोरि बोलल।

श्रीकृष्ण - हे जगतक पितामह, तोहाक दर्शन देवर दुर्ल्लभ। हामो मानुष हुया तोहाक दरसन भेल। आः हामाक भाग्यक महिमा कि कहब ? जनम साफल। आजु द्वारकापुर पवित्र भेल।

धाता (विहसि :बोलल) हामु तोहाक विवाह शुनिये कौतुके आवलु। स्वहस्ते आहुति करिये विवाह कराबव।

सूत्र - कृष्ण ताहे शुनि आसन देलह। ब्रह्मा तथि बैठल कुशण्डि करि होम आरम्भल।

-'रुक्मिणीहरण' नाटसँ

2. माधवदेव (1489-1596) :- शंकरदेवक पश्चात् हुनक पट्टशिष्य माधवदेव वैष्णव - आन्दोलनक सर्वोत्कृष्ट सूत्रधार भेलाह। इएह माधवदेव मिथिलाक विष्णु-पुरी-रचित 'भक्तिरत्नावली'क अनुवाद तथा 'नामघोष' नामक स्वतन्त्र ग्रन्थक

रचना कयल। ई दुनू ग्रन्थ वैष्णवधर्मक सिद्धान्त-ग्रन्थ थिक। हिनक 'अर्जुनभंजन', 'भोजनविहार', 'भूमिलेटोवा', 'भूषणहेरोवा', 'रासझुमुरा', 'कोटोरा-खेलोवा', 'गोवालधारा', 'चोरधरा' ओ 'पिम्पराघुचोवा' उपलब्ध अछि। पछिले आठ नाटक 'गोवालधारा'केँ छोड़ि, सकलन श्री बिरिञ्चिकुमार बरुआ अपन 'अंकियानाट' नामक पुस्तकमे कयने छथि। माधवदेव वात्सल्यरसक उत्कृष्ट कवि ओ नाटककार छलाह आओर प्रायः सब नाटकमे बालक कृष्णक केलि-कौतुकक मधुर वर्णन अछि। 'अर्जुनभंजन'मे कृष्णक उदखलिसँ बन्धनमोचनक चेष्टाक वर्णन तँ 'चोरधरा'मे माखन चोरबैत पकड़एबाक वर्णन अछि, 'भोजनविहार'मे कृष्णक ग्वाल द्वारा भोजनक वर्णन अछि। 'रासझुमुरा'मे माधवदेवक अपन अन्यान्य नाटसँ भिन्न शैली अपनाओल अछि तथा सूत्रधार ओ आंगिक विधिकेँ तिरस्कृत अर्थात् कम नाटकेँ अपनायल अत्यन्त अल्प कयने छथि। हिनक नाटमे गायक बड़ अधिक प्रयोग भेल अछि। नीचाँ दुइटा उद्धरण देल जाइत अछि जे हिनक नाटकीय विशेषताकेँ स्पष्ट कए देत -

सूत्र - आहे सामाजिक लोक, श्री कृष्ण वृन्दावने मध्याह्न सुन्दर यमुना वालि पावल। परम सुकोमल बालि पेखिये श्रीकृष्ण शिशुसबक ये बोलल ता शुनह।

श्रीकृष्ण - आहे सखिसब वेणु-वेणु केन मनोहर, परम सुकोमल बालि। पटुन मध्ये भमरे आकुल करोहि। पटुमक केदिया भमरे गुंजरे। आहार समय बुझो भाइ। बेला भेल। आसा, अहिते भोजन करोहो, पानी पिया आपन बल साब करोहा।

सूत्र - श्रीकृष्ण वाक्य शुनिये बालकसब बोलल।

बालकसब - आः हामारो ओहि सम्मत।

-'भोजनविहार' सँ

यशोदा - आहे पथिकजन, तोहासब यदि हामार बालक देखल तब हामार संवादे कह।

पथिकजन - हे माय यशोदे, तोहारि बालक कैछन रूप ?

यशोदा - हे पथिक, हामार बालक कैछन रूप ता शुनह। आदि

-'चोरधरा' सँ

3. गोपालदेव - माधवदेव पश्चात् भवानीपुरक गोपालदेव वैष्णव-आन्दोलनक प्रमुख सन्त भेलाह। हिनक 'जन्मयात्रा' ओ 'उद्धवसंवाद' प्रसिद्ध अंकियानाट थिक। 'जन्मयात्रा'मे कृष्णक जन्मक वर्णन अछि तँ 'उद्धवसंवाद'मे भागवतपुराणक आधार पर उद्धवक आगमन पर गोपीक उल्लासक तथा कृष्णकेँ संवाद देबाक वर्णन अछि। 'उद्धवसंवाद'क निम्नलिखित उद्धरण हुनक नाटक भाषाशैली ओ तकर नाटकीय स्वरूपकेँ

स्पष्ट कए देत :-

सूत्र - आहे सामाजिक लोक, क्रन्दन एरि गोपीसब अन्योअन्ये कहये लागल।

गोपी - आहे सखीसब, ओहि कृष्ण पूर्णकाम, हामु बनचारी, आनो राज कन्यासवः लक्ष्मीर स्वामीर इहात कोन प्रयोजन थिक।

सूत्र - अः आउर गोपी बोल।

गोपी - हे उद्धव, कृष्ण कि वृन्दावन, ओहि गिरिवर, ओहि यमुना नदी, गो वत्ससव प्राणकृष्णे मने कि सुमरये। आदि

- 'उद्धवसंवादनाट'सँ

4. रामचरण ठाकुर- रामचरण ठाकुर **'कंशवध'क** रचना कएने छथि। ई रामदासक बालक छलाह जे माधवदेवक बहिनक संग विवाह कएल। एहि रामदासक प्रेरणासँ माधवदेव शंकरदेवक शिष्य भेल छलाह। 'कंशवध'क प्रतिलिपिकेँ हेमचन्द्र गोस्वामी देखने छलाह, जकर विषयमे ओ अपन आसामी हस्तलेखपोथीक विवरण पृ.84-85 मे लिखने छथि। मुदा श्रीविरिंचकुमार बरुवा एकरा अपन 'अंकियानाट'मे सम्मिलित नहि कएने छथि। एहि नाटमे कृष्णक द्वारा कंशक वधक वर्णन भेल अछि जे 'नाट'क नामसँ ज्ञात होइत अछि।

उपर्युक्त नाटकारक अतिरिक्त शंकरदेवक कोनो अपरिचित शिष्यक द्वारा लिखित **'स्यमन्तहरण'** नाट सेहो उपलब्ध अछि जे भागवतक स्यमन्तकथाक आधार पर रचित भेल अछि।

वस्तुतः एहि प्रसंग विशेष अध्ययन नहि भेल अछि। मैथिलीक अध्येताक हेतु सामग्रीक संचयन ओ तकर अध्ययन विशेष अर्थ, श्रम तथा समयसाध्य अछि, कारण, एहि प्रकारक रचनाक नव अनुसंधान आब प्रायः कठिन होएत। अंकियानाटक प्रसंग विस्तृत अध्ययनक निमित्त श्रीविरिंचकुमारबरुवा द्वारा लिखित 'अंकियानाट'क भूमिका ओ 'आसामी साहित्य' (Assamese literature) नामक पुस्तक द्रष्टव्य थिक। डा. नवीनचन्द्र मिश्र द्वारा प्रकाशित **अंकियानाटविवेचन**'सेहो एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि।

3. मिथिलामे मैथिली नाटक

नेपाल ओ आसाम मध्य विकसित नाट्यसाहित्य एवं तकर अभिनयक परम्पराक स्वरूपक उपर्युक्त विवेचनसँ आओर अधिक स्पष्ट भए गेल होएत जे मिथिलामे नाटकक अभिनयपरम्परा नहि छल। संस्कृतनाटकक मिथिलामे प्रचुर मात्रामे रचना भेल, मुदा तकर अभिनयो होइत छल, तकर प्रामाणिक इतिहास सुरक्षित नहि अछि। तकर अभिनय तँ होइत नरपतिलोकनिक ओहि ठाम, मुदा तकरो उल्लेख कतहु

नहि भेटैत अछि। प्रायः साहित्यरचनाक एक विधाक रुपमे संस्कृत नाटकक रचना होइत छल,- एकर उद्देश्य अभिनय नहि छलैक। मिथिलामे रंगमंचक अभाव छल। अतः एहि ठाम प्रचलित छल नाच। 'वर्णरत्नाकर'मे नाटकक अभिनयक कोनो चर्चा नहि अछि, किन्तु गायन, वादन ओ नृत्यक विस्तृत चर्चा अछि। नाटक ओ नृत्यमे अन्तर होइत अछि। नृत्यमे कथनोपकथन आवश्यक नहि होइत छैक- आंगिक चेष्टा मात्र एहिमे आवश्यक। अतः नृत्य नाटकक एकटा अंग थिक, नाटकक पर्याय नहि। कविलालक 'गौरीस्वयंवर' किर्तनियाँमे बड़ प्रिय छल। किन्तु ओहिमे कविलाल 'नर्तनारम्भ' सएह लिखने छथि। अतः मिथिलामे नाचक परम्परा सिद्ध होइत अछि ओ ताहिमे मिथिलाक स्थानीय वैशिष्ट्य छलैक, नृत्य करबाक एकटा स्वतन्त्र परिपाटी छलैक। विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक हमर प्रबन्धलेख 'मैथिलीक अभिनय-परम्परा' (मिथिलामिहिर-11 मई 1975)1

डा. जयकान्तमिश्र मध्यकालीन तथाकथित किर्तनियानाटकक दुइ भेद कएने छथि (क) नियमित नाटक, जे संस्कृतसाहित्यक नियमानुसार संस्कृत-प्राकृत भाषामे लिखल नाटक थिक ओ जाहिमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि। उमापतिक 'पारिजातहरण', रामदासक 'आनन्दविजय', भानुनाथक 'प्रभावतीहरण' एहने नाटक थिक। (ख) अनियमित नाटक, जाहिमे संस्कृत-भाषाक प्रयोग क्रमिक कम होइत गेल ओ मैथिली पदक प्रयोग अधिक। नन्दीपतिक 'कृष्णकेलिमाला', शिवदत्त, कान्हारामदास ओ लालकविक 'गौरीपरिणय' प्रभृतिकेँ एहि कोटिमे परिगणित कएल जाए सकैत अछि। परन्तु एहन रचनामे नाटकक मुख्य वस्तु-कथनोपकन ओ अभिनयनिर्देश संस्कृतमे अछि अतः एहि नाटकहुक निर्माण संस्कृत-शास्त्रहिक अनुसार भेल। मुदा लगैत अछि ई प्रबन्ध-गीत जकाँ अर्थात्, ओहन कथाकाव्य जकाँ जे मैथिलीक प्राचीन रीतिक गीतेमे लिखल गेल अछि। कहल जाइत अछि जे रत्नपाणि अपन 'उषाहरण'क रचना किर्तनियाक हेतु कएल आओर तँ ओ नियमित ओ अनियमित नाटकक मध्यक मार्गक अनुसरण कएल। मुदा हुनक कृति लोकप्रिय नहि भेल तथा एहिमे निबद्ध पैघ-पैघ वर्णनात्मक अंश पाछाँ विकसित भेल कथाकाव्यसँ कतेक समता रखैत अछि, से तकर अध्ययनहिसँ पता चलत। एहि प्रसंग हम 'प्राचीन काव्य-धारा'क प्रवृत्तिक व्याख्या करैत रत्नपाणिक प्रसंग नीक जकाँ विवेचन कएने छी।

19म शताब्दीक अन्तमे आबि किर्तनियानाटकेँ अवश्य नाटकीय गौरव प्रदान करबाक चेष्टा सुधी विद्वानलोकनि कएलन्हि। एहि हेतु संस्कृत-प्राकृत-भाषाक कथनोपकथनक अभिनय-शिक्षा सेहो हर्षनाथझा, विश्वनाथझा, विन्ध्यनाथझा, गणनाथझा, यदुनन्दनझा, कपिलेश्वरझा प्रभृति किर्तनिया-पात्र-सभकेँ देल करथि। मुदा ताहिमे हुनकालोकनिकेँ सफलता भेटल होइन्हि, तकर कोनो प्रमाण नहि भेटल अछि कारण, किर्तनियाक अधिकांश पात्र अशिक्षित निरक्षरभट्टाचार्य होइत छलाह ओ संस्कृतप्राकृतक नीक जकाँ उच्चारण नहि कए पबैत छलाह। एहि नाचसभमे 'बिपटा'क सेहो अवतारणा

कएल जाइत छलैक जे लिखित नाटकसभमे पात्रक रुपमे निबद्ध कतहु नहि अछि। बिपटा मैथिली गद्यमे हास्यव्यंग्यपूर्ण फक्‍कड़ा बनाए-बनाए पढ़ैत छल, लोकर्कें नानाविध चेष्टापात कए हँसबैत छल। मुदा ई सब मौखिक होइत छल, लिखल कतहु नहि अछि। अतः नृत्य-परिपाटीमे यत्किंचित् नाटकीय तत्वक समावेश भेलहु सन्ताँ, जाहि रुपक मैथिलीक नाट्य-साहित्य उपलब्ध अछि तकरा ध्यानमे रखैत तथाकथित किर्तनिञानाटकक मैथिली अंशर्कें प्राचीन काव्यधाराक अन्तर्गत गेय-पद वा प्रबन्ध-गीत वा नृत्य-गीतक रुपमे परिगणित करब सएह उचित बुझि पड़ैत अछि। यथोपलब्ध एहि प्रकारक त्रैभाषिक नाटकर्कें सुसम्पादित कए सारगर्भित भूमिकाक संग पं. शशिनाथझा दरभंगा-संस्कृत-विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित करबाए देल अछि जाहिसँ एकर अध्ययन-मार्ग विशेष प्रशस्त भए गेल अछि।

एहि प्रकार किर्तनिञानाचर्कें नाटकीय गौरव प्रदान करबाक चेष्टा भेलहु पर ओ जीवित नहि रहल तथा किर्तनिञामण्डली समाप्त भए गेल। तहिना संस्कृत-प्राकृत-मैथिली त्रैभाषिक नाटकक रचनाक परम्परा सेहो समाप्त भए गेल अछि। ताबत काल सम्पूर्ण उत्तरी भारतमे नवीन प्रकारक व्यावसायिक स्टेजक प्रसार बढ़ल। मिथिलामे सेहो श्रीपुरक उमाकान्त नाटक-कम्पनी स्थापित कएलैन्हि, से मुदा पारसी रीतिक, कारण मिथिलाक कोनो अपन रंगमंच नहि छल ओ संस्कृतक शास्त्रीय रंगमंच युगानुरुप नहि छल। दोसर, उमाकान्तक नाटककम्पनीमे हिन्दी नाटक सएह अभिनीत होइत छल। एहिसँ पूर्व म. रमेश्वर सिंह मिथिला-भाषामे दू-चारि नाटक-रीतिक रचना करबाए अवश्य अपन दरबार मध्य अभिनय करबओने छलाह। ई सब भेल छल शक्तिक उपासना लए निर्मित। मुदा एहि रचनासभक प्रतिलिपि उपलब्ध नहि अछि। वस्तुतः व्यवसायी-मंडली द्वारा सएह सबसँ प्रथम बेर मैथिली नाटक अभिनीत भेल मुंशी रघुनन्दनदासक 'मिथिलानाटक' (1920-3)। उमाकान्तक अतिरिक्त आनो-आनो जे छोट-छोट नाटककम्पनीक स्थापना मिथिलामे भेल, तकरा द्वारा मैथिली नाटकक अभिनय नहि भेल। ओहिसभमे हिन्दीक उर्दू-मिश्रित पारसीनाटकक अभिनय सहए होइत रहल। मैथिली नाटकक अभिनय बहुत पश्चात् प्रारम्भ भेल मिथिलाक गामसभक धार्मिक सांस्कृतिक समारोहक अवसर पर अथवा स्कूल-कालेजमे विभिन्न अवसर पर, विशेषतः सरस्वतीपूजा ओ सांस्कृतिक-साहित्यिक परिषद्क वार्षिक समारोहक अवसर पर। प. जीवनझाक 'सुन्दरसंयोग' (1904)सँ मैथिलीक नाट्य-साहित्यक विकास-परम्परा स्थापित भेल, मुदा हुनक नाटकक अभिनय प्रायः कहिओ नहि भेल। अतः पं. जीवनझा अपन नाटकक रचना साहित्यक एक विधाक रुपमे सएह कएल। 1920 क लगपास उमाकान्तक नाटककम्पनीक स्थापना भेल। ओकर पूर्व जीवनझाक अतिरिक्त लालदास ओ शशिनाथझा सेहो अपन-अपन नाटकक रचना कए चुकल छलाह। मुदा उमाकान्त ओहि नाटक सभक अभिनय कहिओ नहि कएल।

एतावता सिद्ध भेल जे आधुनिक युगमे मैथिली नाटकक रचना आरम्भ भेल, से एहि आशासँ नहि जे एकर अभिनय कएल जाएत। एकर रचनाक प्रायः एकमात्र प्रेरणा छल मैथिली साहित्यर्कें विविध रीतिक रचनासँ समन्वित कए देबाक। हुनक एहि प्रेरणार्कें शक्ति प्रदान कएलक हिन्दीमे लिखल गेल नाटक। ताबत काल अंगरेजीशिक्षाक आलोक मिथिलहु मध्य पसरए लागल छल। हिन्दी साहित्यक क्षेत्रमे ताबत आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती'क सम्पादनक कार्य आरम्भ कए देने छलाह आओर हिन्दीक पत्र-पत्रिकासँ सेहो मैथिलीसाहित्यमे गद्यक महत्वक परिज्ञान होअए लागल छल। आचार्य द्विवेदीसँ पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दीमे 'सत्यहरिश्चन्द्र', 'भारत-दुर्दशा' प्रभृति नाटकक रचना कए बड़ यशस्वी भेल छलाह। हिन्दीक ओ नाटकसभ, जाहिमे कथनोपकथनक भाषा गद्य छलैक, मैथिली साहित्यकारर्कें नवीन दृष्टि प्रदान कएलक। ताबत धरि चन्दाझा 'पुरुष-परीक्षा'क गद्यपद्य-अनुवाद कए चुकल छलाह। अतः एहि ठामक संवेदनशील साहित्यिकलोकनिक दृष्टि ओहि दिसि गेल। सर्वप्रथम पं. जीवनझा नाट्यसाहित्यक क्षेत्रमे एहि नवीनतार्कें ग्रहण कएल। ओ संस्कृतक नाट्यशास्त्रक नियमक अन्तर्गत मैथिली भाषाक प्रथम नाटकक रचना कएल 1904 ई. मे, जाहिमे ओ सर्वप्रथम कथनोपकथन, अभिनयक निर्देश तथा गीत मैथिली भाषामे देल। ताहिआसँ मैथिलीमे अनेक नाटक लिखल गेल अछि। मुदा स्मरण रहए जे अधिकांश नाटक अभिनयक उद्देश्यसँ नहि रचित भेल, एकर रचना भेल साहित्यक एहि विधार्कें मैथिलीमे प्रयोग करबाक दृष्टिएँ। अर्थात्, एही दृष्टिएँ अधिकांश नाटक पाठ्यकाव्यक श्रेणीमे संएह रहल, यद्यपि रचनाशैली दृश्य-काव्यक अवश्य भेल। अभिनय जँ भेवो कएल तँ छोट नाटक वा एकांकीकः कारण, मैथिलीक कोनो स्थायी रंगमंच तँ छल नहि जकरा हेतु नाटकक रचना होइत। अतः गामघरक क्लब वा स्कूलकालेजक सोसाइटीक अप्रशिक्षित अभिनेता द्वारा पैघ नाटकक अभिनय होएब कोना सम्भव होइत ? 1955क पश्चात् एकांकी नाटक अधिक लिखल गेल आओर वस्तुतः एकर रचनाक आदर्श अंगरेजीक One act play सएह भेल। अतः एकांकीमे पैघ नाटकक अपेक्षा अधिक आधुनिकताक समावेश भेल, मुख्यतः युगबोध ओ उपनिबद्ध पात्रक अन्तर्द्वन्द्वक अभिव्यक्तिमे। जहिआसँ आकाशवाणीमे मैथिलीक कार्य-क्रमक समावेश भेल अछि तहिआसँ ध्वनिरुपकक सेहो किछु रचना भेल अछि। नाटकहु मध्य नव्यतम प्रवृत्ति, युगीन अनास्था, विक्षोभ प्रभृतिक अभिव्यक्ति एमहर होअए लागल ओ रचनाशिल्पमे प्रयोगशीलताक सेहो उदाहरण भेटए लागल अछि।

परन्तु सातम दशकक मध्यमे अबैत-अबैत मैथिली नाटकक प्रणयन ओ मंचनमे नव गतिशीलताक लक्षण प्रकट होअए लागल, मुख्यतः कलकत्ता ओ पटनामे। कलकत्ताक नाट्यकला-प्रेमी बन्धुलोकनि, विशेषतः श्री गुणनाथझा एवं डा. उदयनारायणसिंह 'नचिकेता' मैथिली लोकमंच एवं रंगमंचक स्थापनापूर्वक नव-नव रीतिक नाटकक प्रणयन अथवा उपलब्ध रंगमंचक उपयुक्त भाषान्तरक नाटकक मैथिली रुपान्तर करए लगलाह। पटनामे सर्वप्रथम चेतना-परिषद्क वार्षिकोत्सवमे अभिनीत करबाक

निमित्त नवीन प्रकारक नाटकक रचना करबाओल जाए लागल आओर सर्वप्रथम श्री सुधांशुशेखर चौधरीक **'भफाइत चाहक जिन्दगी'** प्रकाशित भेल। तत्पश्चात् पटनामे 'भंगिमा', 'अरिपन' आदि अनेक रंगमंचीय संस्था स्थापित भेल, जकरा द्वारा मौलिक नाटकक नव-नव प्रतियोगिता ओ मंचनक वार्षिक उत्सव आयोजित होअए लागल। फलस्वरूप नव-नव विषयपर आधारित नव-नव रीतिक नाटकक रचना ओ प्रकाशन भेल। एहि नाटकीय पुनरुत्थानमे श्री सुधांशुशेखर चौधरीक अतिरिक्त पं. गोविन्दझाक नाम अग्रगण्य अछि तथा एहि प्रक्रियामे जाहि तरुणनाटककारक उदय भेल, ताहिमे श्री अरविन्द कुमारझा 'अक्कू' एवं श्री लल्लनप्रसाद ठाकुरक नाम विशेष रूपसँ उल्लेखनीय थिक। ई अवश्य जे एहि रंगमंचीय परवर्त्ती नाटकसबहिमे सम्यक् स्तरीयता ओ साहित्यिक प्रौढ़ताक अभाव देखना जाइछ, संगहिँ शास्त्रीय दृष्टिएँ, विशेषतः तरुण नाटककार द्वारा रचित नाटकसब नाटक ओ एकांकीक मध्यक वस्तु बूझि पड़ैत अछि, परन्तु एहि नाटक सबसँ नवीन सम्भावनाक उदय निश्चित रूपसँ भेल अछि। एहि रचना-प्रक्रियासँ बूझि पड़ैत अछि जे कालक्रमे एहनो सफल नाट्य-रचना होएत, जाहिसँ स्वाभाविक रूपसँ दर्शकक स्वस्थ मनोरंजन भए सकत, संगहिँ साहित्यिक स्तरीयता ओ प्रतिष्ठाक [illegible] सेहो होएत।

मैथिलीमे अधिकांश मौलिक नाटके लिखल गेल अछि, मुदा पश्चात् आबि अन्य भाषासँ कतोक श्रेष्ठ नाटकसभक अनुवाद सेहो भेल। अधिक अनुवाद भेल अछि संस्कृतसँ, अंगरेजीसँ दुइ-तीन गोट मात्र अनुवाद अद्यावधि प्रस्तुत कएल जा सकल अछि। बंगलासँ कतोक गोट अनुवाद भेल अछि।

मैथिली नाटकक अनुकर्त्ती इतिवृत्तकेँ हम दुइ भागमे विभक्त करैत छी: 1. मैथिली नाटक ओ 2. मैथिली एकांकी। मैथिली नाटककेँ सेहो दुइ श्रेणीमे विभक्त कए सकैत छी: (क) मौलिक नाटक एवं (ख) अनूदित नाटक। भाषान्तरक एकांकीक उल्लेखनीय मैथिली अनुवाद दृष्टि-पथमे नहि आएल अछि।

मौलिक नाटक :- मैथिलीक मौलिक प्रकाशित नाटकक संख्या आब चालिसोसँ अधिक भए गेल अछि। एहन धरिक प्रकाशित नाटकसभमे उल्लेखनीय थिक पं. जीवनझाक **'सुन्दर-संयोग'** (1904), **'नर्मदासट्टक'** (1906) तथा **'सामवती-पुनर्जन्म'** (1908-20), लालदासक **'सावित्रीसत्यवान'** (1908-9), शशिनाथ झाक **'[illegible]'** (1911-2), मु. रघुनन्दन दासक **'मिथिलानाटक'** (1920-3), **'[illegible]'** (1932) तथा **'[illegible]'** (1933), आनन्दझाक **'सीतास्वयंवर'** (1938), ईशनाथझाक **'चीनीक लड्डू'** (1349 साल) तथा **'उगना'** (1363साल), श्री [illegible]झाक **'[illegible]'** (1950), श्री[illegible]झाक **'[illegible]'** (सं. 2010), पं. [illegible]झाक **'[illegible]'** (1956), श्रीगोविन्दझाक **'बसात'** (1958),

'राजाशिवसिंह' (1972) एवं **'अन्तिम प्रणाम'** (1983), श्रीघनानाथमिश्रक **'भगवतीभक्त'** (1959), श्रीठाकुरप्रसादझाक **'सीतापरिणय'** (1960), प्रो. चन्द्रकान्तझाक **'आचार्य द्रोण'** (1961), श्रीकाशीनाथमिश्रक **'अयाची'** (1962), ओ **'दिग्विजय'** (1979), डा. ललितेश्वरझाक **'सन्तपरीक्षा'**, प्रो. राधाकृष्णचौधरीक **'राज्याभिषेक'**, व्रजकिशोरवर्माक **'कण्ठहार'** (सं. 2021), **'झुमकी'** (1977), ओ **'तेसर कनियाँ'** (1987), प्रो. श्रीकमलाकान्त झाक **'घटकैती'** (1965), श्रीभाग्यनारायणाक **'मनोरथ'** (1966), पं. राजेश्वरझाक **'महाकवि विद्यापति'** (1966), **'कन्दर्पीघाट'** (1966), एवं **'शास्त्रार्थ नाटक'** (1969), श्रीरामचन्द्र चौधरीक **'पिया मोर बालक'** (1967), ओ **'सभागाछीक बड़द'** (1968), श्रीसुरेन्द्र प्रसादसिन्हाक **'धीरधक'** (1967), श्रीतृप्तिनारायण लालक **'सप्पत'**, श्रीकालीनाथझाक **'कुसुम'**, श्रीबाबूसाहेब चौधरीक **'कुहेस'** (1967), श्रीगुणनाथझाक **'कनियाँ-पुतरा'** (1967), ओ **'पाथेय'** (1968), श्रीमहेन्द्रझा 'मलडि.आ'क **'लक्ष्मणरेखा : खण्डित'**, **'जुआएल कनकनी'**, (1972), **'एक कमल नोरमे'**, **'ओकरा आंगनक बारहमासा'** (1979) एवं **'कमलाकातक राम, लक्ष्मण ओ सीता'** (1981), श्रीनचिकेताक **'नायकक नामजीवन'**, (1979), **'एक छल राजा'** (1973), **'नाटकक लेल'**, (1978), **'प्रत्यावर्तन'** (1976), **'राम-लीला'** (1977), एवं **'आन्दोलन'**, किरणजीक **'विजेता विद्यपति'** (1972), डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क **'पुरुषार्थ'** (काव्य-रुपक, 1978), डा. उदयकान्तमिश्रक **'मालिनी'** (1976), श्रीसुधांशुशेखर चौधरीक **'भफाइत चाहक जिन्दगी'** एवं **'पहिल साँझ'** (1983), श्रीअरविन्द कुमारझा 'अक्कू'क **'आगि धधकि रहल अछि'** (1981), **'तालमुट्ठी'** (1982), **'एना कतेक दिन'**, **'पातक मनुक्ख'** (1987) प्रभृति, श्री गौरीकान्तझा 'कान्त'क **'वरदान'** (1982), श्री शम्भुनाथझाक **'पुत्रदान'** (1982) एवं **'विभाजन'**, श्रीलल्लन प्रसाद ठाकुरक **'बड़का साहेब'** **'मिस्टर नीलो काका'** (1985), **'लौंगिआ मिरचाइ'** (1988) एवं **'बकलेल'** (1988), श्रीसोमदेवक **'चरैवेति'** (काव्य-रुपक, 1984), डा. श्रीशिवाकान्तठाकुरक **'कृष्णबिनु राधा'** (1984) प्रभृति। छठम दशक मध्यम कलकत्ताक प्रवासी मैथिली-सेवी बन्धुगण मैथिली नाटकक ओ अभिनयक नवोत्थानक हेतु आन्दोलन जकाँ चलाओल, जाहिसँ ओतए नव-नव रंगमंचीय प्रयोग ओ तदनुकूल अनेक नाटक प्रकाशित भेल। एहि नाटकसभ मध्य श्रीवीरेन्द्रठाकुरक 'अभिलाषा', श्रीसीतारामचौधरीक 'बेमातर', श्रीराजनन्दनलालदासक 'सन्तो', श्रीविन्देश्वर मण्डलक 'क्षमादान', श्रीउत्पलाल मण्डलक 'इजोत', श्रीमोहनचौधरीक 'सन्तान', श्रीजनार्दनझाक 'निष्कलंक', प्रभृतिक उल्लेख 'रंगमंच' (1973) नामक पत्रिकामे कएल गेल अछि। एहिसँ अतिरिक्त श्री शरद चन्द्रमिश्रक 'समाज-चक्र' एवं प्रो. प्रबोधनारायण सिंहक 'प्रेमक रोग' प्रभृति नाटक सेहो प्रकाशित भेल। एहि नाटक मध्य अधिकांशक उपलब्धि स्थानान्तरमे सुलभ नहि अछि ओ अनुपलब्धिक कारणे एतए तकर सविस्तर विवेचन सम्भव नहि भए सकल अछि।

प. जीवनझाक 'सुन्दर-संयोग'मे नायक (सुन्दर) ओ नायिका (सरला)क विवाहक डेढ़ वर्षक पश्चात् अकस्मात् वैद्यनाथधाममे मिलनक कथा वर्णित अछि। सरला तँ अपन पतिकेँ नहि चिन्हैत अछि, मुदा सुन्दर अपन पत्नीकेँ संयोगसँ वैद्यनाथधामक दर्शनार्थी भीड़सँ रक्षा करैत छथि। एहिसँ सरलाक हृदयमे सुन्दरक प्रति स्वाभाविक प्रेम जाग्रत होइत अछि। एहि प्रेम-जागृतिकेँ नाटककार बड़ स्वाभाविक रीतिएँ चित्रित कएल अछि। परिस्थितिकेँ नाटकीय दिशा प्रदान करबाक दृष्टिएँ एहि नाटकक महत्व अछि जे मैथिलीमे तहिआ अद्‌भुत वस्तु छल। एहिमे, गीत सेहो अछि, मुदा आवश्यकतासँ अधिक नहि। 'नर्मदासट्‌क'मे नाटककार आधुनिक मिथिलाक कर्तव्यभावक दिग्दर्शन करबैत कथाक संघटन कएने छथि। एहिमे मिथिलामे करौट लैत तात्कालिक आदर्शवादी मनोवृत्ति ओ सुधारवादी भावनाक वर्णन भेल अछि - लोककेँ संकटमे देखि सहायता करी। एहि प्रवृत्तिसँ नायक नायिकाकेँ कमलानदीमे डुबबासँ बचबैत छथि। 'सुन्दरसंयोग'ओ 'नर्मदासट्‌क'क कथामे कनिएँ अन्तर अछि। नर्मदा नायिका थिकीह जकरा नायक सागर कमलामे डुबैत काल बचा लैत छथि। कपिलेश्वरस्थानक मेलामे नायक-नायिकाक पुनर्मिलन होइत अछि। मिलन करबैत अछि घटक, दुहू मध्य वैवाहिक सम्बन्धक स्थापना कराए। एहिमे विदूषक वा विपटाक तँ अवतारणा नहि भेल अछि, मुदा घटकक चित्रणमे हास्यक नियोजन नीक जकाँ भेल अछि। एकटा बच्चा बूढ़ा घटकक छड़ी लए भागि जाइत अछि। एहि पर घटकक उक्ति-

'ओ नेना अछि परम उकाठी,
उचैकि पड़ाएल हमर फराठी'-

केहन सुन्दर हास्यक सृष्टि करैत अछि। जीवनझाक सर्वश्रेष्ठ नाटक थिक 'सामवती पुनर्जन्म'। एकर कथा पौराणिक थिक। सामवान आ सुमेध दुइ गोट छात्र सामवानक पिता सारस्वतक ओहि ठाम पढ़ैत छलाह। ओ लोकनि भिक्षाक हेतु नगरक पथ पर जाइत छलाह, तँ सुन्दरी स्त्री सभकेँ देखि-देखि मुग्ध भए परस्पर हास्यविनोदमे लीन भए गेलाह। ई अविनय देखि दुर्वासामुनि क्रुद्ध भए सामवानकेँ आजन्म युवती भए जएबाक शाप दए देल। राजाक पुरोहित दुनू ब्रह्मचारीकेँ दम्पतियज्ञमे कर्म करबाक निमित्त नियुक्त कएल, जतए सामवान कन्याक रुप धारण करैत छथि। परन्तु स्त्रीक रुप धारण करितहिँ स्थायी रुपसँ ओ स्त्री भए जाइत छथि। आगाँ सामवानक लिंग-परिवर्तनक पश्चातुक कथा वर्णित अछि। अन्ततः भगवतीक अनुकम्पासँ सामवतीक सुमेधक संग विवाह होइत अछि। एहि नाटकक कथा, आधुनिक अर्थमे, असम्भव वस्तु पर आधारित अछि, मुदा एहिमे लिंगपरिवर्तनसँ उत्पन्न सामवतीक अन्तर्द्वन्द्व नीक जकाँ देखाओल गेल अछि, जे आधुनिक नाटकक प्रधान विशेषता थिक। एहि नाटकमे वसन्तक, बन्धुध्वज ओ भिक्षुकक बड़ सुन्दर चित्रांकन भेल अछि। हास्यक नियोजना सेहो एहिमे बड़ पटुताक संग कएल गेल अछि। कथोपकथनसे फकड़ाक प्रयोग प्रायः पारसीनाटकक प्रभाव थिक। गद्यक स्वाभाविक प्रयोगहुक दृष्टिएँ ई नाटक उत्कृष्ट अछि। एहि नाटकसँ दुइ गोट कथनोपकथन नीचाँ उद्धृत कएल जाइत अछि, जाहिमे प. जीवनझाक हास्यनियोजना,

गद्यक प्रयोग तथा नाटकीयताक विभिन्न स्वरूपक यत्किंचित् दिग्दर्शन भए जाएत :-

(क) कथनोपकथनमे फकड़ा :-

बन्धुजीव- पहिल पहिल दिन भेलह एकट्ठा।
लगले राधल हंस्सी ठट्ठा।।
चपला - एखन जुनि हमारादिसि घुस्की।
लोक करै अछि कानाफुस्की।।
बन्धु - जनु ककरहुँसँ बाजी भूकी।।
अल्प बएस अछि अधिक कहू की।।
चपला - छाडू एखन हाथा - बाँही।।
देखय लोक हमर परिछाँही।।

(ख) बन्धुजीव - (स्वगत) ई हमरालोकनिकेँ आम चोरौनिहार बुझलक। एकरा डेराबी तँ कोन चेष्टा करैये। (प्रकट) खोँ-खोँ-खोँ।

जटिल (थोड़ेक दूर पड़ा कए) - बबबबाप रौ बाप। बबबबाचि गेलहुँ। बबबबुढ़बा भालु थिक। अअअआगि जँ भेटैत !

प. जीवनझा 'मैथिलीसट्टक' नामक नाटक सेहो लिखब आरम्भ कएने छलाह जकर किछु अंश 'मैथिलहितसाधन' नामक मैथिलीक प्रथम पत्रक किछु अंकमे प्रकाशित भेल छल, मुदा से प्रायः अपूर्ण रहि गेल।

लालदास अपन 'सावित्रीसत्यवान'क रचना प्रसिद्ध कथाक आधार पर कएल जे एकर नामहिसँ पता चलैत अछि। पद्य-पद्य संवाद एकर विशेषता थिक जाहिसँ नाटकीयतामे हानि पहुँचल अछि। अतः एकरा नाटक नहि कहि, संवादकथा कही तँ विशेष उपयुक्त होएत। हिन्दीक अम्बिकादत्तक नाटक 'सम्वत'क आधार पर शशिनाथझा अपन 'कलिधर्मप्रकाशिका'क रचना कएल प्रतीकपद्धति पर। कलियुगमे आलस्य, वासना प्रभृति अवगुणक जे प्राचुर्य मानल गेल अछि, सएह एहि नाटकक पात्रक रुपमे निबद्ध कएल गेल अछि। अतः ई प्रतीक-नाटक थिक। उद्‌देश्य एकर अछि देशदशाक वर्णन कए लोककेँ उद्‌बोधन देब। हिनक दोसर नाटक 'आचार्य विजय'क चर्चा डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे कएने छथि। मुदा ई प्रकाशित नहि भए सकल। डा. मिश्रक अनुसार ई श्रेष्ठ नाटक छल, जाहिमे नाटककार गीतक प्रयोगकेँ पूर्ण रुपेँ त्यागि देने छलाह।

नाटकीय उत्कर्षक दृष्टिएँ जीवनझाक पश्चात् मु. रघुनन्दनदासक 'मिथिला नाटक'क स्थान अबैत अछि। एहिमे नाटककार कलियुगक दुर्दैन्यक चित्रण करैत मिथिलाक अधोगतिक वर्णन कए पुनरुत्थानक प्रेरणा देने छथि। एहि नाटकक रचना ओ

संस्कृतक लक्षणक अनुसार नहि कस्ने छथि, प्रत्युत तात्कालिक नाटकमंडलीक हेतु अभिनयक उपयुक्त। अतः सर्वप्रथम मुंशीजीक ध्याना सएह नाटककेँ अभिनयोपयोगी बनएबा दिसि गेलैन्हि। मुदा अभिनयोपयोगी बनएबाक संग-संग ओ ओकरा समाजोपयोगी सेहो बनाए देल। एहि प्रकार जीवनझा मैथिलीनाटकक जे नवीन रीतिक प्रवर्त्तन कस्ल तकरा मुंशीजी आओर अधिक आगाँ बढ़ा देल। एहिमे ओ परम्पराकेँ पूर्णरूपेण परित्याग कए नव सरणीक अनुसरण कस्ने छथि। 'मिथिला नाटक'क रचना सेहो प्रतीकशैलीमे भेल अछि जे एहि रुपक मैथिली साहित्यक बेजोड़ मौलिक नाटक थिक। एहू मध्य काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, आलस्य प्रभृतिकेँ एक दिसि ओ सुमति, विद्या, सन्तोष प्रभृतिकेँ दोसर दिसि पात्रक रुपमे अवतारण कस्ने छथि। मार्मिक प्रभाव उत्पन्न करबाक दृष्टिएँ ई बड़ सफल भेल अछि। एहि मध्य मिथिलाक जागरणक चित्रण कए नाटकक अन्त सुखान्त कए देल गेलैक अछि। पारिवारिक विद्वेषक वर्णनक द्वारा सामाजिक पतनक तथा बंगाली विद्वानक मिथिलाक साधारण लकड़हाराक बुद्धिमत्ताकेँ देखि विस्मित होएबाक वर्णन कए मिथिलाक बौद्धिक उत्कर्षक चित्रण भेल अछि। नाटकक कतेक तत्व सर्वयुगीन होइत अछि यथा, कथनोपकथनक, संक्षिप्तता, कथाक क्रमबद्ध विकास आदि। एहि दृष्टिएँ मुंशीजी जीवनझासँ नवीन होइतहुँ अधिक परिनिष्ठित नहि भए सकलाह। 'मिथिलानाटक'मे पैघ-पैघ संवाद नाटकीय स्वाभाविकताक बाधक भए गेल अछि। कथाक क्रमबद्ध विकासोमे स्थान-स्थान पर व्यतिक्रम उपस्थित भए गेल प्रतीत होइत अछि।

मुंशीजीक अन्य नाटक थिक 'सुदर्शननाटक' ओ 'दूतांगदव्यायोग'। प्रथम पौराणिक कथा पर आधारित छल ओ नष्ट भए गेल। दोसर नाटक अपेक्षाकृत अधिक सुनियोजित अछि। एहिमे व्यंग्यवक्रोक्तिक बड़ चमत्कारापूर्ण प्रयोग भेल अछि। मुदा मुंशीजी मैथिलीक नाट्य-साहित्यमे अमर छथि 'मिथिलानाटक' लए कारण, ओहिमे ओ अपन युगबोधक परिचय देल तथा शिल्पक दृष्टिएँ सेहो नवीन प्रयोग कस्ल।

प. आनन्दझाक 'सीतास्वयंवर' नाटक सीता-स्वयंवरक प्रसिद्ध कथा पर आधारित ओ संस्कृतक शास्त्रीय प्रणालीमे रचित भेल। परन्तु एहि नाटकक चमत्कार अवलम्बित अछि छोट-छोट पात्र पर, जकरा द्वारा नाटककार हास्यक अवतारणा बड़ सुन्दर जकाँ कस्ने छथि। परशुराम ओ लक्ष्मणक कथनोपकथन सर्वाधिक चमत्कारपूर्ण ओ सफल भेल अछि।

मैथिलीनाटकक शिल्प ओ नाटकीयताकेँ आगाँ बढ़एबामे प्रो. ईशनाथझाक नाटक 'चीनीक लड्डू' बड़ महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि। एहिमे ओ नट-नटी ओ सूत्रधारक आरम्भिक प्रस्तावना-दृश्यकेँ त्यागि देने छथि। वन्दनासँ नाटक आरंभ होइत अछि आओर से अभिनव रीतिएँ। राजमार्ग परअप्सरालोकनिगबैत बहार होइत छथि तथा

ओही दृश्यमे लगले नाटक आरम्भ भए जाइत अछि। डा. जयकान्तमिश्र एहि नाटकक प्रसंग लिखने छथि - *'Perhaps the best play has been written by Ishnath Jha'* (मै. सा. इ. द्वितीय भाग - 121)

वस्तुतः की उपयोगिताक दृष्टिएँ ओ की नाटकीयताक दृष्टिएँ की कथनोपकथनक सरलता-स्वभाविकताक दृष्टिएँ आ की भाषाक अकृत्रिम प्रयोगकक दृष्टिएँ 'चीनीक लड्डू' प्रायः आबहु मैथिली साहित्यमे श्रेष्ठ अछि। एहिमे धूर्त खलपात्र दिवान बटुआदासक स्वार्थपरताक वर्णन भेल अछि जे कोना ओ दू भाइ मध्य विभेद उत्पन्न करैत अछि तथा कोना सुधाकान्तक बालककेँ खोआएबाक हेतु विष मिलाओल चीनीक लड्डू बनबैत अछि। किन्तु अपन दुष्कर्मक फल ओकरा स्वयं भोगए पड़ैत छैक, अपन षड्यन्त्रक शिकार ओ स्वयं बनैत अछि। ढोलकियाक दृश्य बड़ हास्यपूर्ण रीतिएँ नियोजित भेल अछि। एहि नाटकक जतेक बेर सफल अभिनय भेल ततेक मैथिलीक कमे नाटकक भेल होएत। ईशनाथझाक दोसर नाटक थिक 'उगना'। एकर कथा थिक विद्यापतिक शिव-भक्ति तथा ओहिसँ आह्लादित भए उगनाक रुपमे शिवक विद्यापतिक चाकरी करब। पार्वतीक षड्यन्त्रसँ ई भेद संसारमे व्यक्त भए जाइत छैक ओ वचनानुसार महादेव कैलाश घुरि अबैत छथि, आदि आदि। विद्यापतिक प्रसंग एहि किंवदन्तीकेँ नाटकीय रुप प्रदान करबाक निमित्त ईशनाथझा एहिमे कतोक नवीन उद्भावना कस्ल अछि, यथा, महादेवक विरहमे पार्वतीक व्याकुल होएब, महादेवकेँ कैलाश बजएबाक हेतु क्रोध ओ पिपासाकेँ पठाएब। विद्यापतिक पत्नी सुधीराक क्रोधी स्वभावकेँ एहि प्रकार ओ प्रांजल कए देल अछि। नाटकीय कौशल तथा अभिनयोपयोगिताक दृष्टिएँ इहो नाटक 'चीनीक लड्डु' जकाँ बड़ सफल भेल ओ आबहु एकर अभिनय बड़ रुचिपूर्वक कस्ल जाइत अछि। तथापि नवीनताक दृष्टिएँ 'उगना' 'चीनीक लड्डू'क कोटिमे परिगणित नहि कस्ल जा सकैत अछि।

'उगना'क पश्चात् विद्यापतिक कथा लए दुइ गोट नाटक आओरो लिखल गेल, मणिपद्मक **'कण्ठहार'** ओ विद्यानाथरायक **'विद्यापति'**। 'कण्ठहार' 'विद्यापति' उपन्यासक नाटकीय रुपान्तर थिक। कथाक विशालताक कारणे ई पैघ भए गेल अछि। अतः एहिमे नाटकीयताक सम्यक् निर्वाह नहि भए सकल अछि। 'कण्ठहार'क प्रमुख दोष थिक पैघ-पैघ कथनोपकथन। मुदा मणिपद्मक प्रवाहपूर्ण गद्यक कवित्वसँ भरल सरसता एकर प्रमुख आकर्षण थिक। श्री विद्यानन्दराय अपन 'विद्यापति' नाटकमे विद्यापतिक बाल्यजीवनसँ लए मृत्यु धरिक कथाकेँ लेल अछि। अतः वातावरण ओ परिस्थितिक व्यापकता ओ विविधताक कारणे एहिमे नाटकीय क्रमबद्धताक अभाव अछि आ एना लगैत अछि जेना ई समग्र नाटक नहि हो, प्रत्युत कोनो पैघ नाटकक संक्षिप्त संस्करण। एहि नाटकक विशेषता थिक छोट-छोट स्वाभाविक कथनोपकथन। अतः ई अभिनयोपयोगी नाटक कहल जा सकैत अछि। मुदा एहिमे नाटककार शिल्प वा वस्तुविषयक कोनो नवीन

चमत्कार सृष्टि नहि कए सकलाह अछि। संघर्षक निवेशो यथोचित नहि भेल अछि।

मैथिलीक अधिकांश नाटक लिखल गेल मिथिलाक ऐतिहासिक गौरव-गाथा लए। एही दृष्टिएँ प. जीवनाथझाक **'अयाचीक शंकर'** ओ **'वीर नरेन्द्रसिंह'**, श्रीकाशीनाथ मिश्रक **'अयाची'** आ **'दिग्विजय'**, डा. ललितेश्वरझाक **'सन्त-परीक्षा'**, प. राजेश्वरझाक 'कन्दर्पीघाट' प्रभृति नाटकक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। प. जीवनाथझा संस्कृतशास्त्रानुकूल नाटकक रचना कएने छथि, मुदा से अभिनयोपयोगी। आधुनिक अर्थमे संघर्षक नियोजन हिनको नाटकमे नहि अछि, मुदा कथनोपकथन सरल तथा भाषा स्वाभाविक प्रयुक्त भेल अछि। 'वीरनरेन्द्रसिंह'मे वीररस-प्रधान अछि। हिनक 'वीर नरेन्द्र सिंह', प. राजेश्वरझाक 'कन्दर्पीघाट' ओ डा. ललितेश्वरझाक 'सन्त-परीक्षा' म. नरेन्द्रसिंहक जीवन-वृत्तान्तक विविध पक्ष पर आंधारित अछि। आधुनिकताक दृष्टिएँ प. राजेश्वरझा आ डा. ललितेश्वरझा अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल छथि । श्रीकाशीनाथमिश्रक 'अयाची'मे साहित्यिक गरिमाक तँ अभाव अवश्य अछि, मुदा प्रकाशनसँ पूर्व कएक बेर अभिनीत एहि नाटकमे अभिनयोपयोगिता प्रचुर मात्रामे अछि।

'अयाची'क अपेक्षा श्रीकाशीनाथ मिश्रक 'दिग्विजय' नाटक अधिक सफल कहल जाए सकैत अछि, अभिनयोपयोगी नाट्य-शिल्प एवं आदर्श विचार-धाराक स्थापनाक दृष्टिएँ। स्वर्गीय राष्ट्रवादी नेता दीनदयाल उपाध्यायक निकट सम्पर्कसँ प्रेरित भए अपन एहि नाटकमे नाटककार सनातन धर्मक उद्धारक शंकराचार्यक चरितकेँ दृश्यांकित कए रुढ़िवाद ओ नास्तिक जड़वादक विरोध कएल अछि तथा प्रभावपूर्ण रीतिएँ भारतक परम्परागत उच्च सांस्कृतिक चेतनाकेँ प्रतिपादित करबाक चेष्टा कएल अछि। सम्पूर्ण नाटक दुइ अंकमे विभाजित अछि- संन्यास-अंक एवं दिग्विजय-अंक, जे क्रमशः पाँच ओ सात दृश्यक अछि। एहि विभाजनसँ स्पष्ट अछि जे एहि मध्य शंकराचार्यक सम्पूर्ण जीवन-चित्र अंकित कएल गेल अछि, परंच मण्डन मिश्रक संग हिनक शास्त्रार्थक प्रसंग विशेष रोचक भेल अछि। वस्तुतः कथनोपकथनक सजीवता, भाषाक स्वाभाविकता, चरित्र-चित्रणमे संघर्षक निवेश आदि सब तरहेँ विचारलासँ 'दिग्विजय'केँ उच्च कोटिक नाटकक श्रेणीमे परिगणित कएल जाए सकैत अछि।

प. दामोदरझाक **'गान्धर्वविवाह'** ओ प्रो. चन्द्रकान्तझाक **'आचार्य द्रोण'** महाभारतक कथा पर आधारित अछि। 'गान्धर्वविवाह'मे अर्जुन ओ सुभद्राक परस्पर आकर्षण, प्रेम ओ कृष्णक सहानुभूतिसँ गान्धर्वविवाहक हेतु सुभद्राक अर्जुनक द्वारा हरण प्रभृति कथाक वर्णन अछि। 'आचार्य द्रोण' मे द्रोणक पाण्डव ओ कौरवलोकनिक आचार्यत्व ग्रहणसँ लए महाभारतक युद्ध तथा हुनक मृत्यु-पर्यन्तक कथा अछि। कथा पौराणिक होइतो दुनू नाटककारक नाटकीय शिल्पमे आकाशपातालक अन्तर अछि। प. दामोदरझा संस्कृतलक्षणक अनुसार लिखने छथि तँ प्रो. चन्द्रकान्तझा

पाश्चात्य-परिपाटीक अनुसरण कएने छथि। प. दामोदरझा अपन नाटकमे संस्कृतनाटकक सब अंगकेँ समाविष्ट करबाक सफलता-पूर्वक यत्न कएने छथि आओर एही दृष्टिएँ ई नीक नाटक कहल जा सकैत अछि। प्रो. चन्द्रकान्तझा सरल सुलभ भाषामे स्वाभाविक कथनोपकथन, संक्षिप्त दृश्य-योजना प्रभृति तत्वक बड़ सफलतापूर्वक उपयोग अपन नाटकमे कएने छथि। पद्य तँ कतहु नहि आबए देल अछि, मुदा पात्रक अन्तर्द्वन्द्वक जे सूक्षमता एहि प्रणालीक नाटकमे अपेक्षित होइत अछि, तकर किंचित् अभाव देखना जाइछ। वस्तुतः हिनक प्रतिभा एकांकी-रचनामे अधिक निखरल अछि।

सामाजिक कथा पर आधारित नाटकमे प. गोविन्दझाक **'बसात'**, प्रो. कमलकान्तझाक **'घटकैती'** तथा श्री भाग्यनारायणझाक **'मनोरथ'** नाटक विशेष उल्लेखनीय थिक। एहिमे केवल सामाजिक नाटकहिक दृष्टिएँ नहि, स्व. ईशनाथझाक 'चीनीक लड्डू'क पश्चात् प्रकाशित सभ प्रकारक नाटकमे 'बसात' प्रायः सर्वश्रेष्ठ नाटक थिक।

'बसात'मे प. गोविन्दझा नवीन युगक आदर्शकेँ चित्रित कएने छथि। 'बसात'मे जेना निर्जीव खरपात ऊड़ि जाइत अछि, तहिना नवीन युग-प्रवृत्तिक चेतनासँ प्राचीन मान्यता समाप्त भए रहल अछि तथा नारी-जागरण भए रहल अछि। एहिमे कृष्णकान्त आदर्शवादी पात्र छथि जे नवीन सभ्यतासँ प्रवाहित भए पिता द्वारा स्थिर कन्याकेँ अस्वीकार करैत छथि; कारण, ओ कन्या (पुष्पा) पढलि लिखिलि नहि छथि ओ तेँ अपना सन शिक्षित नवयुवकक हेतु ओ तनिका उपयुक्त नहि बुझैत छथि। एहि मान्यतासँ प्रभावित भए ओ मिथिलाक कन्या मात्रकेँ अपमानित करैत छथि तथा आधुनिका लिलीक रुपजालमे फँसि जाइत छथि। पुष्पा, जे आधुनिक मिथिलाक स्वाभिमानपूर्ण ललनाक प्रतिनिधि थिकीह, आत्महत्या करबाक स्थान पर घरसँ बहराए सेवाश्रमक निर्माण कए समाजसेवामे लागि जाइत छथि तथा समाजकेँ जाग्रत करबाक हेतु सक्रिय यत्न करए लगैत छथि। एम्हर कृष्णकान्तकेँ जखन ज्ञात होइत छैन्हि जे हुनक दुर्व्यवहारसँ क्षुब्ध भए हुनक पिता कतहु चल गेलथिन्ह अछि तँ हुनका बड़ पश्चात्ताप होइत छैन्हि ओ अपन पिताकेँ तकबाक हेतु लिलीक प्रेम-जालकेँ तोड़ि बहार भए जाइत छथि। पिताक अन्वेषणमे असफल भेलासँ ओ आओर अधिक क्षुब्ध भए उठैत छथि ओ एहि विक्षिप्त चित्तवृतिमे रेलपर कटबाक हेतु जाइत छथि, जाहि ठाम सेवाश्रमक लोकसँ बचाओल जाइत छथि। ओहि ठाम हुनका अपन पितासँ भेँट सेहो होइत छैन्हि। पुष्पाक नवीन स्वरुपकेँ देखि हुनका अपन मिथ्या धारणाक ज्ञान होइत छैन्हि। ओ लज्जित होइत छथि। ओहीं ठाम लिली प्रेममे बताहि भेलि कृष्णकान्तक अन्वेषणार्थ संयोगे अबैत छथि। पुष्पा अन्तिम त्याग करैत हुनक विवाह लिलीक संग सम्पन्न करबैत छथिन्ह। एहि प्रकार 'बसात'मे मैथिल ललनाक त्याग-भावनाक बड़ सुन्दर वर्णन भेल अछि। जगदीश आधुनिक समाजक नवशिक्षित लम्पट नवयुवकक प्रतीक थिकाह जे लिलीक संग दुर्व्यवहार करैत छथि एवं अपन स्वार्थसाधन करबाक हेतु ओकिलसाहेबक संग हुनक

पुत्रक वैमनस्य करबैत छथि। एहि प्रकार नाटककार आधुनिक समाजक नीक ओ अधलाह दुनू पक्षक चित्रण कयल अछि। मुदा हिनक नाटकक मुख्य उद्देश्य अछि नारीजागरणक चित्रण कए मैथिल ललनाक गौरवक महत्वांकन करब। एहि प्रकार एहि नाटकसँ हुनक आदर्शवादी युगबोधक ज्ञान होइत अछि। एहिमे ओ नाटकक नवीन शिल्प तथा चित्रांकनक नवीन प्रणालीकेँ अपनाओल अछि। एकर सबसँ मुख्य वस्तु अछि अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण। एहि दृष्टिएँ प्रायः मैथिलीक इएहटा नाटक सर्वाधिक सफल भेल अछि। परन्तु कथानक एकर ओझराएल अछि। संघटनक दृष्टिएँ एहि नाटकक पूर्वभाग जेहन सन्तुलित अछि तेहन उत्तरभाग नहि।

'घटकैती'क नामेसँ नाटकक विषयवस्तु सूचित होइत अछि। एहि मध्य वृद्ध-विवाह, अनमेल विवाह, कन्याविक्रय, बालवैधव्य प्रभृति सामाजिक समस्याक अंकन भेल अछि। एहिमे एक दिसि सुरेश नामक धनिकक दुष्टता, घटकक चकचालि ओ हेहरीक घृणित आचरणक नाटकीय वर्णन अछि तँ दोसर दिसि नायक विमल ओ गौरीकान्तक सच्चरित्रता एवं वसुन्धरा ओ सुशीलाक शील-स्वभावक सेहो चित्रण भेल अछि। एतावता एहिमे समाजक नीक-अधलाह दुनू पक्षकेँ चित्रित कए कमलजी समाजसुधारक स्वस्थ दृष्टिक परिचय देने छथि। एकर प्रमुख विशेषता थिक हास्य-नियोजना। मुदा संघर्षक चित्रणमे नाटककार ओतेक सफल नहि भेल छथि।

श्री भाग्यनारायणझाक 'मनोरथ' नाटक सेहो सामाजिक समस्या पर आधारित अछि। ग्रामीण समाजमे जेहन द्वेषक वातावरण रहैत छैक, से एहिमे चित्रित भेल अछि। 'मनोरथ' एकर नाम देल गेल अछि, कारण, भाग्यक चक्रकेँ संचालित कए भगवान कोना दरिद्र लोकक मनोरथ पुरा दैत छथिन्ह, तकर एहिमे चित्रण भेल अछि। राजेझाक मनोरथ एहिना पुरैत छैन्हि। एहि नाटकक कथोपकथन स्वाभाविक, भाषा सुन्दर ठेठ मैथिली तथा लेखकक दृष्टिकोण स्वस्थ अछि, केवल नाटकमे संघर्षक जेहन निवेश चाही से नहि अछि। जहि ठाम कथोपकथन विस्तृत अछि ताहि ठाम नाटकीय प्रभाव क्षीण भेल प्रतीत होइत अछि।

वस्तुतः [illegible] मैथिली नाटक अधिक मार्मिक भेल अछि जे आधुनिक समस्या लऽ लिखल गेल। एही दृष्टिएँ रामचन्द्र चौधरीक 'पिया मोर बालक', श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हाक '[illegible]', श्रीनृसिंहनारायणलालक '[illegible]', श्रीकालीनाथझाक 'कुसुम' प्रभृति नाटकक सेहो उल्लेख कयल जा सकैत अछि। मुदा अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल अछि श्रीनृपनाथझाक 'कनियाँ-पुतरा' एवं श्रीबाबूसाहेबचौधरीक 'कुहेस' नाटक। 'कनियाँ-पुतरा' वैवाहिक समस्या पर आधारित अछि। नाटककार कहैत छथि जे मिथिलामे विवाह होइत अछि ओहिना कृत्रिम जेहन कनियाँ-पुतराक। एहि नाटकमे समस्या [illegible] भेल अछि जे नाटककारक सुधारक परिचायक थिक। मुदा

दृश्ययोजनामे नाटकीय गतिशीलताक अभाव बुझना जाइत अछि। श्रीबाबूसाहेब चौधरीक 'कुहेस'मे सेहो कन्यागतक दुर्दशाक वर्णन भेल अछि। अतः एकर कथा वैवाहिक समस्या पर आधारित अछि। 'कुहेस'क तात्पर्य मिथिलाक कुरीति-कुप्रथासँ अछि जे आबहु मैथिल समाजमे पसरले अछि। नाटक निस्सन्देह मार्मिक भेल अछि मुदा स्थान-स्थान पर भाषागत दोष अखरैत अछि।

1967 ई.क पश्चात् प्रकाशित नाटकसभमे विषयगत नवीनता ओ अभिव्यक्तिगत शिल्पक प्रयोगशीलता दिसि नाटककारलोकनिक ध्यान अधिक आकृष्ट भेल। श्री मदनमिश्र अपन 'पाखंडी' शीर्षक प्रहसन-रूपकमे ऊपरसँ शुभ्रशाभ्र, परन्तु भीतरसँ जनिकामे घोर स्वार्थ निहित छैन्हि, तेहन पाखण्डी व्यक्तिक उपहास-चित्र प्रस्तुत कयल अछि। चेष्टापात ओ उक्तिक विकृतिमूलक आकलन कए नाटककार प्रहसनक प्रभाव छोड़बामे सर्वथा सफल भेलाह अछि ओ अभिनयोपयोगिताक दृष्टिहुसँ यत्किंचित सफलता [illegible] छन्हि, परन्तु साहित्यिक परिमार्जनक अभाव एकर भाषाशैलीमे स्पष्टतः परिलक्षित भए जाइत अछि। 'पाखण्डी'क विपरीत 'पाथेय'मे श्रीगुणनाथ झा ग्रामोत्थानक आदर्शवादी भावनाकेँ केन्द्र-बिन्दु बनाए मिहिरक भावुकतापूर्ण चरित्रांकन कयल अछि जे अपन श्वशुर गंगाधरमिश्रक प्रलोभन ओ अपन पत्नी सुनीताक विरोध करितहुँ गाममहिमे रहि समाज-सेवा करबाक निश्चय पर दृढ़ रहैत अछि। परन्तु एतबहिटाक दृश्यांकन कए नाटककार नाटकक अन्त कए दैत छथि, मिहिरक आदर्श निश्चयक चित्रण तँ अवश्य भेल अछि, परन्तु अन्तःसंघर्षक जेहन ऊहापोह चाही, से नहि अछि। एकहि दृश्यमे समग्र वस्तुक निष्पादन भेल अछि, अतः एकरा एकांकीक कोटिमे सेहो परिगणित कयल जाए सकैत अछि।

आधुनिक नाटककारमे श्रीमहेन्द्र झा (मलंगिया) विषयक सूक्ष्म निष्पादन, मनोवैज्ञानिक चरित्रविश्लेषण एवं नाट्यशिल्पक नवीन उद्भावनाक दृष्टिएँ सहसा ध्यानाकृष्ट कए लैत छथि। अपन 'लक्ष्मणरेखा खण्डित'मे ओ विधवा-समस्याकेँ नवीन दृष्टिएँ प्रस्तुत कयल अछि। अपन समाजमे विधवा-विवाह वर्जित अछि, लोक पुरातन मान्यताक लक्ष्मण-रेखामे आबहु आबद्ध अछि। परन्तु, जेना अनेक मान्यता क्रमिक खण्डित भए रहल अछि, तहिना शंकर ओ मनोजक समान तरुणवर्ग विधवाकेँ अर्द्धांगिनीक रूपमे स्वीकार कए एहि लक्ष्मण-रेखाकेँ खण्डित करैत छथि तथा महेश ओ बबाजीक समान क्रूर ओ लम्पट वर्गसँ अबला विधवाक रक्षा करैत समाजक सम्मुख न्यायपूर्ण मापदण्ड प्रस्तुत कए रहल छथि।

'लक्ष्मण-रेखा खण्डित' आदर्शवादी नाटक थिक। एहि मध्य नाटकीय नवीनता तँ स्पष्टः परिलक्षित होइत अछि, परन्तु प्रथम कृतिजन्य दुर्बलताक सेहो आभास भेटि जाइत अछि।

वस्तुतः सर्वांगीण दृष्टिएँ 'जुआएल कनकनी' हिनक प्रथम सफल कोटिक आधुनिक नाटक थिक। एहि मध्य महेन्द्रजी आधुनिक भावबोध तथा जीवनक अन्तरंग सन्दर्भक सूक्ष्म दृश्यांकन कएल अछि। नाटकमे सभ पात्र शंका ओ रहस्यसँ परिचालित होइत चित्रित भेल छथि ओ एहि शंका ओ रहस्यसँ आप्लावित भावगत अवरोध ओ कुण्ठाक चित्रण करबामे नाटककार सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कौशलक परिचय देल अछि। नाटकक विशेषता थिक आत्ममन्थन ओ दहनक चित्रण। नाटककार अन्तमे संज्ञाक अन्तरंगमे निहित रहस्य-जालकेँ जाहि कलात्मक रीतिएँ उद्घाटित करैत छथि एवं जाहि नाटकीय कौशलसँ जीबूक आत्माक द्वन्द्वात्मक ग्रन्थिकेँ खोलि एकहि बेर प्रतिशोध-भावनाक प्रज्वलनकेँ साकार कए दैत छथि, से बड़ प्रभावित करैत अछि। नाटककार एहू मध्य अबलाक विवशताक संग खेलएनिहार बैजूक समान नरपिशाचक अत्याचार ओ संज्ञाक अन्तर्दाह, पीड़ा ओ अप्रतिम त्यागक बड़ मार्मिक चित्रण कएल अछि। नाटकक मुख्य वैशिष्ट्य द्योतित होइत अछि प्रतिपाद्य विषयक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण दृश्यांकनमे। एहि रीतिक नाटक मैथिल साहित्यमे विरल अछि।

उपर्युक्त दुहू नाटकक पश्चात् प्रकाशित अपन अन्य नाट्य-कृतिसबहि मध्य निम्नतरवर्गीय व्यक्ति ओ परिवारक आर्थिक अभाव ओ सामाजिक शोषणक दिसि श्री महेन्द्र विशेष ध्यान देल, नाट्य-प्रस्तुतीकरणमे नव-नव रीतिक प्रयोग करैत। 'एक कमल नोरमे' (1970) हिनक एही प्रकारक रचना थिक, परन्तु एही दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय अछि हिनक 'ओकरा आँगनक बरहमासा' (मिथिलामिहिर, 16 दिसम्बर 1979) एवं 'कमलाकातक राम, लक्ष्मण ओ सीता' (मिथिलामिहिर अगस्त 1981)। एखनहुँ धरि मिथिला समाजक निम्नवर्ग गरीबीमे जन्म लैत अछि ओ जीवन भरि अभाव आ उत्पीड़नक संयुक्त मूक भावसँ भोग करैत अन्तमे दुःखद परिस्थितिमे मरि जाइत अछि। हिनक परवर्त्ती नाटकमे इएह सामाजिक यथार्थ विषय उपनिबद्ध भेल अछि, जकरा नाटककार अपन सहानुभूति आ संवेदनासँ प्रखर ओ तीव्र बनाए देने छथि।.

'कमलाकातक राम-लक्ष्मण ओ सीता' एक दरिद्र हरिजन-परिवारक अभाव, उत्पीड़न एवं सामाजिक शोषणक एक अतियथार्थवादी करुण नाटक थिक। सकलीक जेठ बेटा राम एक सम्पन्न गृहस्थक बन्हेज बनल अछि, जी तोड़ि परिश्रम करैत अछि, मुदा परिवारक दशा बिगड़ले जाइत छैक। ओहिसँ निष्कृतिक ओकरा कोनो उपाय नहि फुरैत छैक। अन्तमे ओ ओहि गृहस्थसँ चोरा कए, महाजनसँ ऋण लए पंजाब कमएबाक हेतु पड़ाए जाइत अछि। ओतए जाए ओ आओरो विपत्तिक पंकमे फँसि जाइत अछि। एमहर ओकर लटकल घर खसि पड़ैत छैक आओर गृहस्थक पढ़ुआ बेटा भगवान ओकर साध्वी पत्नी सीताक संग बलात्कार कए बैसैत अछि। ओकर छोट भाइ लक्ष्मण प्रतिशोध लेबाक प्रयास करैत अछि तँ पुलिस ओकर हाथकेँ तोड़ि जेलमे बन्द कए दैत छैक। अन्तमे जखन नाँगर भेल राम गाम घुरैत अछि तँ अपन बिलटल परिवारक दुरस्थिति एवं गृहस्थक

अत्याचारक घटित घटनाकेँ सुनि ओकर अन्तस्तलमे आक्रोश तँ अवश्य उत्पन्न होइत छैक, किन्तु ओ किछु कए नहि पबैत अछि। एहि कथाक आधार पर रचित एहि नाटकमे श्री महेन्द्रजीक कथ्य अछि जे एखनहुँ धरि पूर्ववते मिथिलाक गाम-गाममे अभावग्रस्त हरिजनवर्ग सम्पन्न उच्च-वर्ग एवं महाजन द्वारा शोषित भए रहल अछि तथा ओकर उत्थानक सबटा सरकारी योजना निस्सार भेल अछि। एक दिसि गरीबक घर दिनानुदिन खसि रहल छैक तँ दोसर दिसि डॉक्टर, इंजिनियर, कॉन्ट्रैक्टर ओ सम्पन्न गृहस्थक घर एही शोषण, अत्याचार ओ भ्रष्टाचार पर आधारित भए पक्काक बनि रहल छैक। सामाजिक विषमता घटलैक नहि अछि, प्रत्युत आओर बढ़ि गेलैक अछि।

एहि नाटकक कथावस्तु सुनियोजित ओ प्रभावपूर्ण नहि अछि। एकर मुख्य विशेषता थिक निम्नवर्गीय ग्राम्यसमस्याक स्वाभाविक ओ सजीव ग्राम्यभाषामे चित्रण एवं मंचोपयोगी प्रभावपूर्ण कथोपकथन। चारि अन्तरालमे विभाजित एहि नाटकमे 'टेकनिक'क नवीनता एतबहि अछि जे दृश्यकेँ 'पहिल दिनक अभिनय, दोसर दिनक अभिनय' आदि नाम दए सूचित कएल गेल छैक। एही प्रकारक दृश्यांकनक सूचना प्राचीन नेपालीय नाटकमे सेहो रहैत छलैक। परन्तु श्रीमहेन्द्र जतबा लघु दृश्यक नियोजन एक दिनक हेतु कएल अछि, से उपयुक्त नहि लगैत अछि। सकलीक बेटाक नाम राम, लक्ष्मण ओ पुतहुक सीता रखबाक कोनो प्रतीकात्मक अर्थ होअए, से बुझबा योग्य नहि होइत अछि। तथापि 'कमलाकातक राम, लक्ष्मण ओ सीता' मैथिली नाटकक विकासक एक नवीन दिशाक संकेत करैत अछि। एकरा जनवादी समस्याक समाजवादी नाटक कहल जाए सकैत अछि।

'ओकरा आँगनक बरहमासा' श्रीमहेन्द्रक अपेक्षाकृत अधिक सफल लघुनाटिका थिक जे अंकमे नहि, मात्र बारह दृश्यमे बाँटल अछि। एहि मध्य नाटककार कातिक सँ लए प्रत्येक मासक एक-एकटा दृश्यकेँ अंकित कए एकटा एहन दीन-हीन निम्नजातिवर्गीय पारिवारक करुण कथा प्रस्तुत करैत छथि जे आबहु अभिजात्यवर्ग द्वारा 'राड़'क नामसँ सम्बोधित कएल जाइत अछि। किन्तु जाहि आँगनक ई बारहमासा दृश्य थिक, से प्रतीक मात्र थिकमिथिलाक लाख-लाख आँगनक जकर दयनीय वस्तुस्थितिक नग्न चित्र एहि मध्य सजीव रीतिएँ साकार कएल गेल अछि। भारतक स्वतन्त्र भेलहु उत्तर, सरकार द्वारा समाजवादक बारंबार उद्घोषणा होएबाक पश्चातो, एहन परिवारक वस्तुस्थिति एखनहुँ धरि ओहने अछि जेहन स्वतन्त्रताक पूर्वमे छल, सम्पन्न उच्च-वर्ग ओ निर्मम सूदखोर द्वारा निम्नवर्गक शोषण ओ अत्याचार, अन्न बिना भूखसँ टटाइत ओ दबाइक बिना मरैत जनसमूह, जकरा कफनक हेतु दू हाथ वस्त्र नहि नसीब होइत छैक। नाटकक नवम पात्रक ई उक्ति कतेक मार्मिक अछि- "ने ओइ गुबरमिन्टक राजमे ककरो कफन मिललै आ ने एहू गोबरमन्टक राजमे मिलत।।"

एहि प्रकार 'ओकरा आँगनक बारहमासा' निम्नवर्गीय विपन्न परिवारक दुरस्थिति ओ दुर्भाग्यक यथार्थवादी नाटक थिक जे नाटककारक प्रगतिशील मार्क्सवादी विचार-धारा दिसि इंगित करैत अछि। यथार्थवादी वस्तुविषय, स्वाभाविक चरित्र-चित्रण, प्रवाहपूर्ण कथोपकथन, पात्रानुरूप भाषा-शैली, प्रभावपूर्ण दृश्य-नियोजन, अभिनयोपयोगी टेकनिक आदि सब दृष्टिएँ श्री महेन्द्रक नाट्यकृतिसबहिमे बारहमासा- पद्धतिमे रचित एहि नाटककेँ विशिष्ट कहल जाए सकैत अछि। सर्वोपरि महत्वपूर्ण एहि नाटकक थिक तीव्र प्रभाव उत्पन्न करबाक क्षमता जे पाठकक अन्तस्तलमे चिरस्थायी छाप छोड़बामे सर्वथा समर्थ भेल अछि।

रंगमंचीय प्रयोग ओ यर्थायवादी दृष्टिकोणक दृष्टिएँ श्रीनचिकेताक नाटकसब सेहो विशेष रुपेँ उल्लेखनीय थिक। ओ दृश्य-सज्जा, आलोक-सम्पात, विगत घटनाक दृश्यांकित-सूचना-(फ्लैश-बैक)-प्रणाली एवं नाट्यकार अथवा उद्घोषककेँ एक पात्रक रुपमे प्रस्तुत करबा पर विशेष जोर देने छथि, संगहि प्राचीन नट-नटी प्रस्तावना-शैलीकेँ नवीन रुपमे प्रयुक्त सेहो कएने छथि। स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे ई रचना कएने छथि कलकत्तामे उपलब्ध रंगमंचक सौलभ्यकेँ ध्यानमे राखि ओ अधिकांशतः ओ कलकत्ता नगरहिक सामाजिक कुत्साकेँ अपन नाटकसभक विषय बनओने छथि। 'नायकक नाम जीवन' मे धनलोलुपताक कारणे मनुष्य कतेक अधः पतित भए सकैत अछि, तकर वर्णन रामभरोसक प्रतीक-चरित्र-द्वारा भेल अछि। 'रामलीला'मे अपराधकर्मी संसारक नग्न-चित्र अंकित भेल अछि जकर निर्माता छथि उच्चवर्गीय ब्रह्मनारायण सन व्यक्ति तथा नाटककार बड़ कलात्मक रीतिएँ सीता ओ रामूक प्रकरणमे घोर अपराधकर्मी रामूक अन्तस्तलमे निहित कोमल भावनाक संकेत देल अछि जकर कारणे ओकरा अपन प्राणसँ हाथ धोअए पड़ैत छैक। एही प्रकारेँ 'एक छल राजा'मे ध्वस्त सामन्तवादी, मिथ्याभिमान क चित्रण भेल अछि अभिमानकुमारदेवक चरित्रवांनक माध्यमसँ। एहि मध्य नाटककारक कथ्य अछि जे औद्योगीकरणक कारणे दोसर प्रकारक सामन्तवादक जन्म भए रहल अछि, जकर प्रतीक छथि धनिकलाल ओ दोसर प्रकारक सामन्तवाद पहिल प्रकारक स्थान लए रहल अछि। 'नाटकक लेल' रचनाकारक एहि मान्यता पर आधारित अछि जे जीवन एकटा नाटक थिक। काल ओ पात्रक भेद भए सकैछ, तथ्यक पुनः-पुनः आवृत्ति होइत रहैत अछि ओ एही कारणे एहि नाटकक दृश्य विभाजन पहिल, दोसर ओ तेसर नाटकक नामे भेल अछि। सतीक चरित्रक माध्यमसँ नारी-जीवनक विवशता ओ पुरुष द्वारा तकर शोषण, अनिरुद्धक चरित्रक द्वारा साम्प्रतिक अर्थलोलुप ओ अमानवीय स्थितिमे सत्यक निरर्थकता एवं कमलक चित्रण-द्वारा राजनीतिक भ्रष्टताक अतियथार्थवादी परिस्थितिक अंकन भेल अछि। जहिना एहि नाटकमे तहिना उपर्युक्त अन्य नाटकहुमे नाटककारक अनास्थावादी दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति विभिन्न रुपेँ भेल अछि।

'आन्दोलन'क कथा-वस्तु थिक मैथिलीक हेतु कएल जाइत आन्दोलन ओ

जकर परिप्रेक्ष्यमे नाटककार सामान्यतः सब प्रकारक आन्दोलनक यथार्थ स्थितिक वर्णन कएल अछि। हुनक कथ्य अछि जे अर्थाभाव-ग्रस्त निम्न-मध्यम-वर्गीय भरतसन समर्पित आन्दोलनकर्त्ताकेँ सर्वोच्च बलिदान देबए पड़ैत छैक ओ एकर लाभ उठबैत अछि अमरनाथ 'निर्लोभ' सन भ्रष्टाचारी नेता जे उच्चपदस्थ भए प्रतिष्ठा ओ यश अर्जित करैत अछि। एहि प्रकार नचिकेताजी आन्दोलनमे निहित कुद्रूपताक चित्र अंकित करैत छथि।

'प्रत्यावर्तन' रचना-कालक दृष्टिएँ नचिकेताजीक छठम नाटक थिक, जाहिमे ओ प्राचीन रीतिक प्रयोग करबाक चेष्टा कएने छथि, परन्तु एहू मध्य हिनक प्रयोगशील प्रवृत्ति स्पष्टतः लक्षित होइत अछि। डा. मानव नगरीय समाजमे निहित मानवीय गुणक सर्वथा अभाव देखि सहरसाक एक सुदूरवर्त्ती ग्राममे पहुँचैत अछि ई बूझि जे ओतए मानवता सुरक्षित होएत। परन्तु ओतहु राजा सेठ, नारद एवं मारीच-सदृश दुराचारी, प्रपंची एवं स्वार्थी व्यक्तिसँ साक्षात्कार कए एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे कोनो मनुष्य, स्थान या वस्तु पूर्णतः अधलाह नहि भए सकैछ। करुणाक चरित्रमे वैधव्यक विवशता एवं प्रवीनक चरित्रमे मानवीय सहृदयताक दर्शन होइत अछि। एहि प्रकार नचिकेताजीक सब नाटकमे यद्यपि अनास्थावादी दृष्टिक प्रमुखता अछि, परन्तु स्थान-स्थान पर ओ मानवीय संवेदनाक सेहो आभास दए स्पष्ट कए देने छथि जे विपरीत परिस्थितिहुमे मानवता सर्वथा लोप नहि भेल अछि, चतुर्दिक पसरल अन्धकारमे निहित प्रकाशक एहि क्षीण किरणहिक आशा अछि।

वस्तुतः अपन नाट्य-रचना-द्वारा श्रीनचिकेता वस्तु ओ शिल्प दुहूमे सर्वत्र नवीनताक संचार करैत नाटय-साहित्यक विकासक नवीन दिशाक संकेत देने छथि।

1972 ई.मे किरणजीक 'विजेता विद्यापति' ओ 'बसात'क कृतविद्य नाटककार प. गोविन्दझाक 'राजा शिव सिंह' नाटक प्रकाशित भेल जे मैथिली नाट्य-साहित्यक विशेष उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। किरणजी अपन नाटकमे विद्यापतिक चरित्रक अभिनव पक्षक उद्घाटन कएल। एखन धरि विद्यापतिक चरित्रांकन महाकवि ओ भक्तक रुपमे सएह कएल गेल छल, किरणजी सर्वप्रथम हुनका विजेताक रुपमे दृश्यांकन कए हुनक चरित्रकेँ नवीन साहित्यिक व्याप्ति देल अछि। परन्तु ई विजय प्राप्त करैत छथि जा अपन कवित्व ओ बुद्धिबलसँ। तहिना प. गोविन्दझा राजा शिवसिंहक अन्तिम युद्ध ओ पराजयकेँ चित्रित कएल तात्कालिक गृह-कलहकेँ आधार बनाए। प्रसिद्ध अछि जे राजा पुरादित्य महाराज शिवसिंहक आदेशसँ राजा अर्जुनरायक हत्या कएल। राजा अर्जुनरायक पुत्र युवक भेला पर चतुरसिंहक प्रक्षिप्त नामसँ प्रकट भए अपन पिताक हत्याक प्रतिशोध लेबाक हेतु प्रस्तुत भेल। एक दिसि ओ महाराज शिवसिंहसँ मिलि हुनक विश्वास- पात्र भए कूटनीतिपूर्वक सप्तश्रेष्ठसँ हुनक मतान्तर कराओल, तुलादानक हेतु हुनका उकसाओल, दोसर दिसि ओ इब्राहिमशाहसँ मिलि उचित अवसर

पर छलपूर्वक मिथिला पर आक्रमण करबाए हुनका पलायनक हेतु विवश कएल। नाटककार चतुरसिंहक देशद्रोहिताक जेहन मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म विश्लेषण कएल अछि तेहन मैथिली नाट्य-साहित्यमे विरल कहल जाए सकैत अछि। अन्तमे देशद्रोहिताक कुपरिणामक चित्र अंकित भेल अछि जे देशभक्ति-विषयक नैतिक आदर्शक द्योतक थिक। भीमसिंहक चरित्रांकन कए नाटककार विलक्षण रीतिएँ देश-प्रेमक उदात्त चित्र प्रस्तुत कएल अछि।

'राजा शिवसिंह'मे प. गोविन्दझा विद्यापतिक चरित्रक अभिनव पक्ष पर प्रकाश देल अछि। विद्यापति महाराज शिवसिंहक कवि-मित्रेटा नहि छलाह, ओ हुनक शुभ-चिन्तक नीतिविशारद मन्त्री सेहो छलाह। जाबत काल धरि ओ विद्यापतिक परामर्श लए रानीतिकेँ संचालित कएल ताबत कालधरि तत्कालीन दुस्सह परिस्थितिअहुमे हुनक उन्नतिक मार्ग प्रशस्त रहल ओ जखनहिँ चतुरसिंहक प्रतारणामे आबि हुनक विचारक अवहेलना कएल, हुनक राजनैतिक आधारशिला धराशायी भए गेल।

नाटकीयता ओ साहित्यिकता दुनू दृष्टिएँ 'राजा शिवसिंह' सफल नाटक थिक। एहि मध्य नारीपात्रक सन्निवेश नहि भेल अछि ओ से व्यावहारिक अभिनयोपयोगिताक दृष्टिएँ, मुदा आदि ओ अन्तमे छाया-चित्रक माध्यमसँ लखिमा देवीक विरह-व्याकुलताक अवतारणा कए नाटककार एहि अभावक पूर्ति करैत छथि, मैथिली नाटकक क्षेत्रमे एकटा नवीन शिल्पक प्रयोग करैत छथि, संग-संग अभिनव कवित्वक सेहो संचार कए देने छथि।

'राजा शिवसिंह'क प्रकाशनक दस वर्ष पश्चात् सन् 1982 ई.मे प. श्रीगोविन्दझाक 'अन्तिम प्रणाम' प्रकाशित भेल। नाटककार प्राचीन शिल्पक सर्वथा त्याग कए, पटनाक रंगमंचीय आन्दोलनक समर्थनमे, एकर रचना कएल तथा प्रतिपाद्य विषय सेहो नवीन लेल। गामसँ कोन परिस्थितिमे लोक नगर दिसि पलायन कए रहल अछि, ताहि दिसि संकेत करैत नाटककारक कथ्य अछि जे आब ग्राम ईर्ष्या-द्वेष, व्यक्तिगत स्वार्थ एवं परस्पर वैमनस्यक केन्द्र बनि गेल अछि। सम्पूर्ण नाटक दुइ दृश्यमे विभाजित अछि। लकबा-ग्रस्त फूदन अपन चपरासी बेटा बेचनक संग नगरमे रहैत अछि। मरणासन्न होइतहुँ ओकरा अपन गामक प्रति अत्यन्त ममत्व ओ तेँ ओ अपन पुत्रक मना करितहुँ मंगलरायक मदतिसँ गाम पहुँचि जाइत अछि। प्रथमे दृश्यमे बेचनक पुत्री राधाक रोमांसक वर्णनक संग इहो उल्लेख भेल अछि जे कोना बड़कालोकक देखादेखी छोटलोकहुमे विवाहमे टाका गनएबाक परिपाटी आरम्भ भेल अछि।

दोसर दृश्यमे गामक अंकन भेल अछि। फूदन अपन ओहि डीहपर मुइल जकाँ पड़ल अछि। ओकरा मुइल बूझि लोक ओतए जमा होइछ, जकर गप्प फूदन सुनैत रहैत

अछि। तर्क-वितर्क होइत छैक, ताहिसँ फूदनकेँ स्पष्ट भए जाइत छैक जे सब केओ अपन-अपन स्वार्थ सिद्ध करए चाहैत अछि, ककरहु ओकरासँ किंचितो सहानुभूति नहि छैक। एहिसँ फूदनकेँ अपन गामसँ घोर वितृष्णा होइछ तथा ओ अपन माँटि-पानिकेँ अन्तिम प्रणाम कए सर्वदाक हेतु विदा भए जाइछ।

रंगमंचीय सौलभ्य एवं जन-मनोरंजनकेँ ध्यानमे राखि एहि लघु- नाटिकाक रचना करितहुँ नाटककार साहित्यिक स्तरीयताक रक्षा, संग-संग साम्प्रतिक ज्वलन्त ग्राम्य-समस्याकेँ दृश्यांकित कए किछु सोचबाक हेतु विवश करैत छथि। एहि नाटकहुमे रचनाकारक प्रौढ़ प्रतिभाक परिदर्शन होइल अछि।

एतए 1966 ई.मे रचित किन्तु 1974 ई.मे पुस्तकाकार प्रकाशित तीन अंकक काव्यरूपक 'पुरुषार्थ' (लेखक डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश')क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। स्यमन्तक-कथा पर आधारित एहि नाटकमे नाट्य-निर्देश गद्यमे ओ कथनोपकथन पद्यमे अछि। एहि प्रकारक रचना एहि युगमे प्रकाशित नहि भेल छल ओ तकरे पूर्त्यर्थ एकरा नाटककारक विनम्र प्रयास कहल जाए सकैत अछि। आपेरा-रीतिक एहि रचनामे आधुनिक यथार्थक संपोषणार्थ असम्भाव्यकेँ सम्भाव्यक धरातल पर प्रतिष्ठित कए कथाक दृश्यांकन कएल गेल अछि। लोक-मतक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करैत एहि मध्य श्रीकृष्णक चरित्रांकन भेल अछि। लेखकक मन्तव्य अछि- "मिथ्यो जन-शंका समाजमे उचित होइ अछि करब निवारण"।

'पुरुषार्थ' हिक कोटिमे श्रीसोमदेवक 'चरैवेति' (1983) सेहो उल्लेखनीय थिक। 'चरैवेति' वैदिक ओ पौराणिक हरिश्चन्द्र-रोहित-कथा-सूत्र पर आधारित काव्यरूपक थिक, जकर भूमिकामे नाटककारक कथ्य अछि- "देवता ओ दानव दुनू मानवेक शोषण करैत छथि। मानव-मूल्यक रक्षा ओ मुक्तिक लेल अपेक्षित अछि जे एहि दुनू अतिवादी आदर्शक बान्हकेँ टपैत पुरुषार्थ-चतुष्टयकेँ प्राप्त कए लेल जाए", परन्तु प्रयोगशीलतासँ युक्त एहि रूपकक कथा-विन्यास एवं तकर प्रतिपादन कविक उद्देश्यकेँ स्वतः नीक जकाँ स्पष्ट करबामे समर्थ नहि भेल अछि आओर ने अपेक्षित मानव-मूल्यक तात्पर्य संवेदनशील स्तर पर प्रेषित भए पाओल अछि। एहिमे सेहो नाट्य-निर्देश गद्यमे तथा कथनोपकथन अधिकांश मुक्तवृत्तमे अछि तथा एकरा श्रव्यकाव्यमे सेहो परिगणित करएबाक हेतु अंक-विभाजनकेँ सर्गक संज्ञा देल गेल अछि। किन्तु थिक धरि ई. पूर्णतः नाट्य-रूपक। जे किछु हो, ई कृति निश्चये एहि रीतिक साहित्यक अभावक यत्किंचित् पूर्ति करैत अछि तथा श्री सोमदेवक प्रयोगशील रचनात्मक प्रतिभाक परिचायक होइत अछि।

सन् 1976-77ई.मे दुइ गोट नाटक एहन प्रकाशित भेल, डॉ.श्री

उदयकान्तमिश्रक 'मालिनी' एवं स्व.व्रजकिशोरवर्मा मणिपद्मक'क 'झुमकी' तथा 'तेसर कनियाँ' (1987) जाहि मध्य आधुनिक मैथिली नाट्य-साहित्यकेँ नवीन व्याप्ति प्राप्त भेलैक अछि। 'मालिनी'क नाटकक विषय-वस्तु उदयन- यौगन्धरायण एवं वासवदत्ता-पद्मावतीक प्रसिद्ध आख्यान पर आधारित अछि, जकरा श्री उदयकान्त भारतक संघीय एकताक समर्थनक सन्दर्भमे नाटकीकरण करबाक प्रयास कएने छथि। यौगन्धरायण पहिने अपन कुशल मन्त्रित्वक परिचय दैत वासवदत्तासँ हुनक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबैत छथि, पुनः वासवदत्ताकेँ मालिनीक रुपमे प्रच्छन्न कए पद्मावतीक संग सेहो हुनका वैवाहिक सूत्रमे बान्हि अपन सूक्ष्म राजनीतिक कुशलताक परिचय दैत छथि। एहि प्रकार भारतक दुइ प्रबल राष्ट्र कौशाम्बी ओ मगधसँ वत्सदेशक अभिन्न मैत्री-सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। एवं क्रमे अन्यान्य राष्ट्रहुकेँ वशवर्त्ती बनाए ओ एक प्रबल संघीय राष्ट्रक निर्माण करबामे सफल होइत छथि जकर नेतृत्वक भार उदयनकेँ उठबए पड़ैत छैन्हि।

एहि प्रकार स्पष्ट अछि जे 'मालिनी' केवल राष्ट्रवादी राजनीतिक नाटक नहि, भारतीय संस्कृति-चेतनाक नाटक सेहो थिक। एहि मध्य मनोविश्लेषण अथवा भाव-संघर्षक प्रतिपादन नहि भेल अछि आओर ने तकर सन्निवेश करब नाटककारक उद्देश्य ः छि पड़ैत अछि। वस्तुतः एहि नाटकक मुख्य विशेषता थिक दृश्यांकनक सन्तुलित संघटन जाहिसँ राजनीतिक घटनाक्रमक संगति नीक जकाँ निष्पादित हो आओर ःाहिमे नाटककार पूर्ण सफल भेलाह अछि। संस्कृतक सुप्रसिद्ध 'मुद्राराक्षस' परम्पराक एहि रुपक मौलिक राजनैतिक नाटकक मैथिलीमे नितान्त अभाव छल, जकर पूर्त्ति एहि नाटकसँ बहुत दूर धरि होइत अछि। अतः एहि नाटकक सफलतापूर्वक रचना कए डॉ. श्री उदयकान्तमिश्र भविष्णु नाटककारक रुपमे मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन स्थान सुरक्षित कए लेलैन्हि अछि।

झुमकी' श्री मणिपद्मक दोसर नाटक थिक जकर रचना ओ भारतक स्व.प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधीक बहुप्रचारित बीस सूत्रीय कार्यक्रमक समर्थनमे कएने छलाह। सोहनीगामक पुश्तैनी क्रिमिनल टोलीक झुमकी परिस्थितिवश जे घोर डकैतनी बनि इन्टरस्टेट गैंगक कुख्यात संचालिका बनि गेलि छलि, सएह झुमकी बीस सूत्रीय कार्यक्रमक कारणे परिवर्तित परिस्थितिमे अपन पापकर्मकेँ तिलांजलि दए समाजसुधारिका बनि गेलि। इएह शैक्षणिक आदर्श 'झुमकी'क कथा-वस्तुक आधार थिक। अतः स्पष्ट अछि जे एहि नाटकमे श्री मणिपद्म आदर्शोन्मुख रचनात्मक समाजवादक प्रतिपादन कएने छथि। एही कारणे एकर भूमिकामे डा.रमाकान्तझाक मन्तव्य अछि जे 'झुमकी' मनुष्यक एहि आस्था-विश्वासक दस्तावेज थिक जे परिस्थितिवश पापपंकमे पतित भेलो उत्तर मनुष्य ओहिसँ कमल सदृश निकसि सकैछ।

'झुमकी' मणिपद्मजीक उपन्यासहिजकाँ हुनक भावुक ओ आदर्शवादी चेतनासँ स्पन्दित अछि। तीन अंकक एहि लघुनाटकके मंचोपयोगी कहल जाए सकैत अछि, परन्तु झुमकीक हृदय-परिवर्त्तनक चित्रणमे जेहन मनोवैज्ञानिक भाव-संघर्षक सूक्ष्म नियोजन अपेक्षित छल, तकर अभाव बुझि पड़ैत अछि।

मृत्यूपरान्त प्रकाशित मणिपद्मजीक तेसर नाटक 'तेसर कनियाँ' साम्प्रतिक ज्वलन्त सामाजिक समस्या-दहेज-प्रथा, वधू-यंत्रणा ओ दाहक विरुद्ध रचनात्मक नव-जागरण उत्पन्न करबाक स्तुत्य प्रयास थिक। प्रिंस दुइ बेर क्रमशः रजपुरावाली ओ जपनावालीसँ विवाह कए मनोवांछित दहेज नहि भेटलाक कारणे दुनू पत्नीक, अपन वृद्धा माताक घृणित सहयोगसँ, यन्त्रणापूर्वक हत्या कए दैत छथि। तखन तेसर कनियाँक रुपमे निरंजनाक, संग-संग परिचारिकाक छद्म-वेशमे महिला एस.पी.कुन्तलाक सेहो प्रवेश होइछ ओ दुहूक प्रयाससँ प्रिंस एवं हुनक माएक एहन जघन्य अपराधक पर्दाफाश भए जाइछ। एहि प्रकार मणिपद्मजीक कथ्य छैन्हि जे एतादृश नारी-उत्पीड़नक मुख्य साधक सासुक रुपमे नारिए होइत छथि तथा एहि समस्याक निदान तखनहि सम्भव जखन जागरूक पत्नी एहि दिसि सजग होथि ओ कुन्तला-सदृश अफसरक सहयोग प्राप्त हो। एहि दिशामे नाटकमे प्रस्तावित नारी-रक्षा-समितिक सहयोग कम अपेक्षित नहि। एहि प्रकार मणिपद्मजीक एहि समाज-सापेक्ष उद्देश्यपूर्ण नाटकमे समस्या ओ तकर समाधान दुहूक सफल निष्पादन भेल अछि।

रंगमंचीय नाटकीयता, कथनोपकथनक स्वाभाविकता, चरित्र-चित्रणक सजीवता, भाषा-शैलीक गत्यात्मकता आदि सब दृष्टिएँ 'तेसर कनियाँ' मणिपद्मजीक उत्कृष्ट नाट्य-कृति थिक।

एहि शताब्दीक सातम दशकक अन्तमे अबैत-अबैत पटनाक रंगमंचीय संस्थासबहिक हेतु तथा जमशेदपुर, बोकारो प्रभृति स्थान पर विशेषतः विद्यापति-पर्व-समारोहक अवसर पर अभिनयार्थ नव-नव रीतिक नाट्य-रचनाक नवीन धारा प्रवाहित भेल ओ तकर मुख्य विषय भेल आर्थिक, समाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थिति-विषयक यथार्थवादी कथा ओ एहि रचना-क्रमक आरम्भ प्रायः श्रीसुधांशुशेखर चौधरीक 'भफाइत चाहक जिन्दगी' सँ भेल ओ एही धारामे पं.श्रीगोविन्दझाक 'अन्तिम प्रणाम' केँ सेहो परिगणित कएल जाए सकैत अछि।

शिल्प ओ विषय दुहू दृष्टिएँ आधुनिक एवं अभिनयोपयोगी 'भफाइत चाहक जिन्दगी'मे मुख्यतः आदर्शवादी बेकार नवयुवकक संघर्षपूर्ण जीवन-कथा, संगहिँ आनहु अनेक विषयक वर्णन भेल अछि। एकर नाम प्रतीकात्मक थिक। एहि नाटकक नायक जे शिक्षित युवक अछि, से जे किछु सोचने छल, से भाफ जकाँ उड़ि गेलैक। परन्तु ओ

विपरीत परिस्थितिसँ पराजित नहि भेल, प्रत्युत ओकर व्यक्तित्वमे निरन्तर संघर्षक ऊर्जा बनल रहलैक तथा एहिमे ओकरा स्वाभिमानक हानि कखनहु नहि भेलैक। एहि प्रकार वर्तमान विषम परिस्थितिसँ संघर्ष करब एहि नाटकक सन्देश थिक।

'भफाइत चाहक जिन्दगी'मे प्रयुक्त नवीन शिल्पक प्रयोग शेखरजीक दोसर नाटक 'लेटाइत आँचर'मे सेहो भेल अछि। दहेजक कुपरिणामक चित्रण एकर मुख्य विषय थिक। विदाइमे मोटर साइकिल नहि भेटबाक कारणे पति पत्नीकेँ परित्याग कए दैत छैक। फलस्वरूप पत्नी बताहि जकाँ भए जाइछ। बताहि होएबाक अनन्तर परित्यक्ता पत्नीक मानसिक घात-प्रतिघात ओ मातृत्वक हेतु ओकर व्याकुलताक चित्रण नाटककार बड़ कलात्मक कौशलक संग कएने छथि। नाटककार दहेज-प्रथाक कुपरिणामक संग-संग पारिवारिक विघटनक समस्याक समावेश कए एकरा एकांकीक परिधिसँ पार कए नाटकक सीमामे अनबाक प्रयास कएने छथि। 'लेटाइत आँचर'क प्रतीकात्मक अर्थ भेल सन्तानसँ खाली आँचर।

अपन तेसर नाटक 'पहिल साँझ'मे शेखरजी परिवार-परिवारमे उपस्थित 'जेनरेशन ग्रैप'क यथार्थवादी चित्रण कएने छथि, अत्यधिक स्वाभाविक एवं सजीव शैलीमे। 'पहिल साँझ'क ग्रामीण पितामे अधिकाधिक जमीन-जथा बढ़ाए गाममे सबसँ प्रतिष्ठित बनल रहबाक प्रवृत्ति, से अपन छोटछीन अफसर जेठ बालकसँ टाका ओसूल कए, जकरामे कनिष्ठकेँ पढ़एबाक संग-संग जमीन-जथा अर्जन करबासँ अधिक नगरीय समाज मे अपनाकेँ स्थापित करबाक प्रवृत्ति छैक। एहि प्रकार दुइ विभिन्न प्रकारक वैचारिक बिन्दुकेँ स्पष्ट करैत नाटककार दुइ पीढ़ीक जे सम्बन्ध-शून्यता ओ प्रवृत्ति-संघर्ष अछि, तकरा बड़ स्वाभाविक रीतिएँ रेखांकित कएने छथि।

एहि मध्य अपराह्नक चारि बजेसँ पहिल साँझक छओ बजे धरिक घटना मात्रक दृश्यांकन भेल अछि। अपन बालकक जन्म-दिन मनएबाक व्यवस्थामे व्यस्त उदयक ओहि ठाम हुनक पिता रमाकान्त सपत्नीक अबैत छथि ओ अपन पुत्रसँ गप्प कए जन्मोत्सवमे बिनु सम्मिलित भेनहि पहिल साँझ छओ बजे रुसि ओ विक्षुब्ध भए ओतएसँ विदा भए जाइत छथि। एतबहि कालावधिमे दुइ पीढ़ीक चरित्र-वैषम्य ओ वैचारिक बिन्दुक भिन्नताक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा नाटककार दुहू मध्य निहित सम्बन्ध-शून्यताक कलात्मक अभिव्यक्ति करबामे समर्थ भेल छथि।

रंगमंचीय नाटकक नवीन प्रयोगशील धारामे नवीन सम्भावनाक संग श्री अरविन्द कुमार झा 'अक्कू' क प्रवेश भेल 'आगि धधकि रहल अछि'क संग। समाजमे बताहक संख्या बढ़ि रहल अछि, 'आगि धधकि रहल अछि'मे नाटककारक प्रश्न अछि-

एकर अपराधी के ? नाटककार एकरा हेतु देशक आर्थिक व्यवस्था ओ समाजक रीति-नीतिकेँ दोषी मानैत छथि तथा एहिमे स्वस्थ परिवर्त्तनक सन्देश दैत छथि। पगलखानामे एक डाक्टर पाँच गोट बताहक केस-हिस्ट्रीक अध्ययन तथा ओहि बताहसबहिसँ प्रश्न कए ओकर सभक मनोवृत्ति-विश्लेषण करैत अछि तथा ओहिसँ प्रभावित भए नोकरी छोड़ि ओहि कारणसबकेँ दूर करबाक हेतु स्वयं कर्म-क्षेत्रमे प्रवृत्त होइत अछि। अतः एकरा आधुनिक आदर्शवादी नाटकक संज्ञा देल जाए सकैत अछि।

'तालमुट्ठी' श्री अक्कूक पाँच अंकमे विभाजित दोसर नाटक थिक, जाहिमे दिशाहीन युवावर्गक दुर्दशाक चित्रण, संगहि सतमाए द्वारा प्रतारणाक परम्परावादी विषय दृश्यांकित भेल अछि। समाजमे पसरल बेरोजगारी एवं दोसर विवाहक दोष एहि नाटकक मुख्य कथ्य थिक। कोन परिस्थितिमे नवयुवक आंतकवाद दिसि प्रवृत्त होइत अछि, सेहो एहि नाटकमे प्रतिपाद्य अछि। एहि नाटकक मुख्य पात्र थिक प्रकाश (बेरोजगार विवाहित युवक), हुनक पिता ओ सतमाए तथा आतंकवादी वर्मा। एहि मध्य समस्या दिसि संकेत दए यथार्थवादी चित्रण तँ अवश्य अछि, किन्तु समाधानक अनुसन्धान नहि भेल अछि।

अक्कूक तेसर नाटक थिक - 'एना कते दिन ?' एकर मुख्य पात्र छथि इमानदार स्वतन्त्रता-सेनानी जगदीशबाबू, जनिक चरित्रक चारु कात एकर कथा-वस्तु विकसित भेल अछि। जगदीशबाबू अपन मित्रोसँ बेटाक नोकरीक हेतु पैरबी करब अनुचित बुझैत छथि, अनैतिकताक एहि युगमे। जीवनक अन्तिम दिनमे नीक जकाँ टूटि गेलहुपर ओ अपन मित्रसँ कहैत छथि - "देखब, कतहु बेइमानी नहि होइक। वस्तुतः ई नाटक आदर्श नैतिकताक सन्देश दैत अछि। एहि मध्य जेठ बेटा-पुतहुक क्रिया-कलाप, पत्नीक संग नोंक-झोंक, फूलबाबूक कुटचालि आदि अनेको विषयक चित्रण भेल अछि। एहि नाटक द्वारा निश्चित रुपसँ अक्कूक नाट्य-रचना-प्रतिभाक विकास ओ परिमार्जनक सूचना भेटैत अछि।"

'पातक मनुक्ख' पं. श्री गोविन्दझाक एक कथाक श्री अक्कू द्वारा कएल सफल नाट्य-रुपान्तर थिक। पातकक दुइ अर्थ-पातक बनाओल पुतरा ओ पापी मनुक्ख-दुहू समीचीन ओ सार्थक। बतहू अपन सम्बन्धिक महाजन फूदनक सूदिमे सर्वान्त-स्वाहा कए अपन तीन कट्ठा डीहकेँ बचएबाक हेतु गामसँ भागि जाइत अछि ओ बारह वर्ष नहि घुरला पर पातक पुतरा बनाए लालगंजवालीकेँ ओकर अन्तिम कर्म करबाक हेतु विवश कएल जाइत अछि, जाहिसँ व्यय-भार पड़ला पर ओकर डीह लिखबाओल जाए सकए। ई सब होइत अछि फूदन द्वारा, जकरा हेतु पातक विशेषण सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रकाश ओ बहिनजी-सदृश पात्रक अवतारणा कए नाटककार गाममे स्फुरित होइत नव जागरणक संकेत तँ अवश्य देल अछि, किन्तु शोषणक ई ग्राम्य-समस्या न्यून नहि भेल

अछि। अन्तमे लालगंजवालीक चण्डी रुपक दृश्यांकन कए नाटककार एहि समस्याक क्रान्तिकारी समाधानक संदेश देने छथि। वस्तुतः एहि लघु-नाटिकाकेँ यथार्थवादी वस्तुविन्यास, स्वाभाविक कथनोपकथन, समुचित अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण एवं रंगमंचीय सौलभ्यक दृष्टिएँ सफल कहल जाए सकैत अछि।

श्री अक्कूक अतिरिक्त एहि नवीन रंगमंचीय धारामे सर्वाधिक चर्चित भेलाह श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर, पटनाक 'अरिपन'-द्वारा हिनक **'बड़का साहेब'क** अभिनयक अनन्तर। देश स्वतन्त्र भेल, किन्तु अंगरेजलोकनि एहन संस्कृति एतए छोड़ि गेलाह जे एतबा दिन बितलहु उत्तर, दिनानुदिन विकसित भए रहल अछि। बड़कासाहेब प्रभृति एहन वर्ग समाजमे वर्तमान अछि जनिक चालि-ढालि, भाषा-व्यवहार, जीवन-यापन-पद्धति आदि सब अंगरेजलोकनिक समान अछि आओर एहन वर्गक पोषण दीन-हीन जनताक शोषणसँ भए रहल अछि। 'बड़का-साहेब'क कथा-वस्तु एही तथ्य पर आधारित आछि। अतः स्पष्ट आछि जे ओ एक एहन महत्वपूर्ण समस्या उठाओल, जाहिपर एखन धरि एकहुटा रचना नहि भेल छल। विषयक नवीनता, रंगमंचीय नाटकीयता, सर्वजन-सुलभ स्वाभाविक कथनोपकथन आदि सब दृष्टिएँ उचिते ई विशेष लोकप्रिय भेल।

श्री ठाकुरक दस दृश्यमे विभाजित दोसर नाटक थिक **'मिस्टर नीलोकाका'**। एहि मध्य एक सामान्य मस्तमौला नीलोकाकाक चरित्रकेँ गरिमामण्डित बनएबाक प्रयास भेल अछि। नीलोकाकाक मुँहसँ खाली गारि बहराइत छैन्हि, किन्तु हृदय गरीबक प्रति सहानुभूतिसँ भरल छैन्हि। रमेश ओ गुलाब द्वारा उकसओलासँ ओ अपन ग्रामोन्नतिक हेतु एलेक्शन लड़ि मुख्य मन्त्रीकेँ पराजित करैत छथि ओ अन्तमे एहि हेतु भूख-हड़ताल कए प्राणान्त कए दैत छथि। एकर घटना-क्रम रोचक ओ नाटकीय अवश्य अछि, किन्तु संगति ओ स्तरीयताक अभाव स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। तथापि हिनक अधिकाधिक सम्भावनासँ युक्त रचनात्मक प्रतिभाक सूचना हिनक उपर्युक्त दुहू नाटकसँ स्पष्ट प्राप्त होइत अछि।

सन् 1988 ई.मे प्रकाशित हिनक **'लौगिया मिरचाइ'** एवं **'बक्लेल'**मे दुइ पीढ़ीक पारस्परिक सम्बन्धक आदर्श ओ यथार्थ वस्तुस्थितिक स्वाभाविक चित्रण भेल अछि, अपेक्षकृत अधिक परिमार्जित रीतिएँ। 'लौगिया मिरचाइ'मे मास्टर अपन आफिसर अनुज नरेन्द्रक विवाह करबैत छथि उच्च-पदस्य इंजीनीयरक बेटी रीतासँ, अपन भाइक 'स्टेटस'केँ ध्यानमे राखि। हुनका तँ एकर दुष्परिणाम भोगए पड़ैत छैन्हि, नरेन्द्रकेँ दुइ विपरीत प्रवृत्तिक कारणे आजन्म पिसाइत रहबाक हेतु विवश होअए पड़ैत छैन्हि। एहि रचनाक सर्वाधिक 'टिपिकल' पात्र छथि घूटर उर्फ लौगिया मिरचाइ जे सब गाम-घरमे होइतहिटा छथि ओ जनिक काज होइछ लुत्ती लेसि स्वार्थ-साधन करब। 'बक्लेल'मे

आधुनिक शिक्षाक विकृतिक विवेचना भेल अछि, मुरारीक दुर्भाग्यपूर्ण जीवन-कथाक सुसन्तुलित दृश्यांकनपूर्वक। मुरारीक दुइ पुत्र जद्दू ओ सद्दू तथा तेसर गन्नू बकलेल नामे ख्यात भए अशिक्षिते रहि जाइछ। कालक्रमे उच्च-शिक्षा-निष्णात जद्दू ओ सद्दू उच्च-पदस्थ भए पिता ओ अपन परिवारक प्रति सब दायित्वकेँ बिसरि जाइत अछि तथा गन्नू सपूत पिताक वृद्धावस्थामे अन्त धरि सेवा करैत अपन बलिदान दए दैत अछि। एहन शिक्षित-वर्गपर व्यंग्यपूर्वक नाटककारक मान्यता अछि जे वस्तुतः एहन शिक्षित व्यक्तिए बकलेल कहएबाक पात्र छथि, गन्नू सन अशिक्षित वर्ग नहि। 'बकलेल'मे अंकित दयाबाबूक चरित्र मानवीय सहृदयताक एहन उपलक्षण कहल जाए सकैत अछि, जकर एहि स्वार्थपूर्ण अर्थवादी युगमे कल्पनो नहि कएल जाए सकैत अछि।

वस्तुतः 'बकलेल' ओ 'लौगिया मिरचाइ' दुहूमे परम्परागत मानव-मूल्यक समर्थन भेल अछि आओर ई दुहू रचना नाटककारक विकासोन्मुख प्रतिभाक परिचायक थिक।

रंगमचीय नव-धारासँ भिन्न, किन्तु रंगमंचीय उपयोगिताकेँ ध्यानमे रखैत 1980 ई.क पश्चात् जाहि नाटकक रचना भेल, ताहिमे श्रीगौरीकान्त चौधरी 'कान्त'क **'वरदान'**, श्री शम्भुनाथझाक **'पुत्रदान'** एवं **'विभाजन'**, डा. शिवाकान्त ठाकुरक **'कृष्ण बिनु राधा'** आदिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

चारि अंकमे विभाजित **'वरदान'** नाटकमे महाकवि कालिदासक आरम्भिक जीवन ओ भगवतीक अनुकम्पसँ प्राप्त पाण्डित्य ओ कवित्व-प्रतिभाक कथा दृश्यांकित भेल अछि। अपन विदुषी पत्नी-द्वारा अपमानित भेलासँ कालिदासक अन्तस्तलमे स्वाभिमानक संचार होइत अछि। विद्वान बनबाक लालसासँ ओ उच्चैठक संस्कृत महाविद्यालयमे भनसिआक कार्य करैत घटना-क्रमे छिन्नमस्ताक आराधना करैत छथि। भगवतीक कृपासँ चारु वेद, अठारहो पुराण तथा शास्त्रादिक ज्ञानक संग-संग हुनक कण्ठसँ कवित्वक स्रोत प्रवाहित होअए लगैत छैन्हि। महाकविक रुपमे हुनक ख्याति चारु कात पसरए लगैत अछि ओ काल-क्रमे वियोगिनी विद्योतमाकेँ पतिसँ पुनर्मिलन होइत छैन्हि। नाटकक दृश्यांकन रोचक रीतिएँ सरल ओ सुलभ शैलीमे निष्पादित भेल अछि। एहि मध्य आधुनिक अन्तःसंघर्षक सूक्ष्मताक परिदर्शन तँ नहि होइत अछि, परन्तु तकर सर्वथा अभावो नहि आदि। अभिनयोपयोगी लघु-आकार एकर विशेषता थिक।

'पुत्रदान' अर्जुन-चित्रांगदाक पौराणिक आख्यान पर आधारित लघु-नाटिका थिक, जाहिमे उदीयमान साहित्यकार श्री शम्भुनाथझाक कवित्व, संगहि भविष्णु नाटकीय प्रतिभाक दर्शन होइत अछि। एहि मध्य जन-रुचिक रक्षा करबाक प्रयास विशेष उल्लेखनीय थिक। नाटकीय रोचकता ओ मंचोपयोगिता एकर प्रमुख विशेषता कहल जाए सकैत अछि। **'विभाजन'** हिनक दोसर नाटक थिक सामाजिक, जाहि मध्य भाइ-भाइक

बीच वैमनस्य ओ सम्पत्तिक विभाजन-विवादक वर्णन भेल अछि। आदर्शवादी निष्कर्षक संग-संग एकर अन्त होइत अछि।

परम्परागत संस्कृत-नाट्य-शैलीमे रचित 'कृष्ण बिनु राधा'मे राधाक विरह-वैशिष्ट्यक नाटकीय निरुपण भेल अछि जे एकर नामहिसँ सूचित होइत अछि। प्राचीन विषय पर आधारित एहि नाटकमे डॉ. शिवाकान्त ठाकुरक मौलिक दृष्टिकोणक परिचय भेटैत अछि, परन्तु हिनकासँ आओर अधिक स्तरीय ओ परिमार्जित नाट्य-कृतिक आशा कएल जाए सकैत अछि।

उपर्युक्त नाटकक अतिरिक्त श्री महेन्द्र मलंगियाक 'काठक लोक', श्री गुणनाथझाक 'आजुक लोक', श्री मृदुलासिन्हाक 'बंभोला', श्री विभूतिआनन्दक 'रिटायरमेंट' कथाक श्री ज्योत्स्ना आनन्द-द्वारा कएल नाट्य-रुपान्तर 'एसगर-एसगर', श्री अक्कूक 'अन्हार जंगल', पं. शशिनाथझाक 'मदालसानाटक' आदि नाटकक मंचनक उल्लेख सेहो भेटैत अछि, परन्तु एहि सभक प्रकाशित स्वरुप दृष्टिपथ पर नहि आएल अछि।

संख्यामे मैथिली नाटकक कम रचना नहि भेल अछि। एहि नाटकसभमे सामाजिक समस्याकेँ प्रतिपादित करबाक तँ प्रवृत्ति अछि, मुदा दृश्यकाव्यक जे गरिमा चाही, तकर आबहु अभाव देखना जा रहल अछि। तथापि सुव्यवस्थित रंगमंचहीन मैथिली साहित्यमे जएह रचना होइत अछि, सएह कम नहि कहल जा सकैत अछि।

अनूदित नाटक- पुस्तकाकार वा पत्रपत्रिकामे प्रकाशित अनूदित नाटकमे बड़ कम अंगरेजी नाटकक अनुवाद थिक, जाहिमे प्रकाशदेवक उपनासँ डॉ. सुभद्राझाक लेसिंगक 'मिना' तथा प्रो. दामोदरझाक इब्सनक 'घोस्ट'क अनुवाद 'भूतक छाया' प्रधान अछि। श्री राजेन्द्र मिश्र 'स्वतन्त्र' 'देशमणि'ओ 'राजमणि' नामे 'शेक्सपियरक 'ओथेलो' ओ 'एज यू लाइक इट'क अनुवाद एवं सुश्री इलारानी वास्कर वाइल्डक फ्रेंच नाटक 'सलोमा'क अनुवांद कएने छथि। एहिसँ अतिरिक्त अन्य संस्कृतनाटकेक अनुवाद थिक। मैथिलीमे संस्कृतनाटकक अनुवाद कएल गेल दुइ रीतिएँ- (क) गद्यक गद्य ओ पद्यक पद्यमे अनुवाद तथा (ख) गद्यपद्यक गद्य मात्रमे अनुवाद। प्रथम कोटिमे अधिकांश अनुवाद भेल अछि। एहन अनूदित नाटक थिक प्रो. ईशनाथझाकृत 'शकुन्तला' ओ 'मृच्छकटिक', डा. सुधाकरझा-कृत 'मुद्राराक्षस' ओ श्री गोविन्दझाकृत 'मालविकाग्निमित्र'। प. गोविन्दझाक दोसर अनुवाद 'स्वप्नवासवदत्ता' अद्यावधि प्रकाशित नहि भए सकल अछि। परमानन्द -झा-कृत 'पार्वती-परिणय'ओ 'रत्नावलीनाटिका', प. भवनाथझाकृत 'विक्रमर्वशीयत्रोटक' एवं मथुराप्रसाद मिश्र-रचित 'वीरप्रताप'क अनुवाद एही प्रकारक अछि। दोसर प्रकारक गद्यमय अनुवाद कएल प. जीवानन्दठाकुर मात्र आओर से हो

केवल भासकृत नाटकसभक अभिषेक', 'दूतवाक्य' ओ 'मध्यमव्यायोग'क 1945 सँ 1947 मध्य। संस्कृतसँ अनुवाद करबामे जेहन सफलता स्व. ईशनाथझा ओ प. गोविन्दझाकेँ भेटलैन्हि तेहन आनकेँ नहि। बंगला भाषासँ सेहो एम्हर किछु नाटक अनूदित भेल अछि, जाहि मध्य प्रो. प्रबोधनारायणसिंहकृत छविवन्द्योपाध्यायक 'चोर', श्री सीतारामचौधरीकृत 'पथेर शेषे'क अनुवाद 'सुखायल डारि नवपल्लव' तथा श्री बाबू साहेब चौधरी-कृत डी. सी. रायक 'चाणक्य' प्रमुख अछि। अन्यान्य अनेक अनूदित नाटकमे श्रीमती इलारानीसिंहक 'प्रेम एक कविता', श्री दीनानाथझाक 'आगन्तुक', श्री बाबूसाहेब चौधरीक 'चन्द्रगुप्त', श्री प्रबोधनारायणसिंहक 'अनहेर नगरी' प्रभृतिक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। कलकत्ता मध्य अनेक नाटक अनूदित भए अभिनीत तँ भेल, मुदा प्रकाशित नहि भेल अछि।

उपर्युक्त मैथिली नाटकक जे चर्चा कएल अछि से अछि अधिकांश पुस्तकाकार प्रकाशित अथवा पत्रपत्रिकामे प्रकाशित सुलभतासँ उपलब्ध। एकर अतिरिक्त अनेक नाटकक सूची डॉ. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे देने छथि, से एतबा समय भए गेलहुँ सन्ता अद्यावधि प्रकाशित नहि भए सकल अछि आ ने सुलभतासँ उपलब्ध भए सकैत अछि। अतः एहि ठाम ताहि सभक चर्चा नहि करब सएह श्रेयस्कर बुझल गेल ।

मैथिली एकांकी- सुनिर्दिष्ट रंगमंचक अभावमे, एकांकीक अभिनयमे जतेक सुलभता होइत छैक ततेक नाटकमे नहि, कारण, एकर अभिनयक सम्पादनमे जतबा समय ओ साधनक प्रयोजन होएत, ओहिसँ कतोक अधिक नाटकमे होएत। एकांकी लिखबामे नाटककारकेँ कम समय लगैत छैन्हि। मुदा एकर लेखनमे अवश्य विशेष पटुता अपेक्षित होइत छैक। मैथिलीमे अधिकांश लेखक पाश्चात्य-रीतिक एकांकी सएह लिखल। अतः मैथिलीक एकांकीमे नवीन युगक जेहन वास्तविक स्पन्दन भेटैत अछि तेहन पैघ नाटकमे नहि, भनहिँ एकांकी पौराणिक ओ ऐतिहासिक विषय पर किएक नहि लिखल गेल हो।

अधिकांश एकांकी पत्रपत्रिकामे प्रकाशित अछि। एकर पुस्तकाकार सकलन सेहो अद्यावधि दुइए-चारिटा प्रकाशित भेल अछि। दोसर, ई एतेक अधिक संख्यामे लिखल गेल अछि जे सभक चर्चा करब कठिन अछि। तथापि प्रमुख रुपसँ कुमार गंगानन्दसिंह, प्रो. हरिमोहनझा, प. जीवनाथझा, प्रो. तन्त्रनाथ झा, डा. कांचीनाथझा 'किरण', ब्रजकिशोरवर्मा, योगानन्दझा, प. गोविन्दझा, प्रो. आनन्दमिश्र, प्रो. प्रबोधनारायण सिंह, श्री सुधांशु शेखर चौधरी, प. रामकृष्णझा 'किसुन', प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', हरिश्चन्द्र झा 'हरीश', प. भवनाथझा, श्रीकृष्णकान्तमिश्र, डा. परमेश्वरमिश्र, राजकमल, प्रो. चन्द्रकान्तझा, प्रो. धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र', डा. रामदेवझा प्रभृति निविष्ट एकांकीकार छथि। जयकान्तबाबू हरिकान्तझा, परमानन्द दत्त 'परमार्थी', तेजनाथझा, श्रीउपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' प्रभृतिक नामोल्लेख सेहो कएने छथि। प्रो.

तन्त्रनाथझाक 'एकांकीचयनिका', प. जीवनाथझाक 'याज्ञवल्क्य ओ अहिल्योद्धार', किरणजीक 'जयजन्मभूमि', अमरजीक 'समाधान', प्रो. प्रबोध नारायणसिंहक 'हाथीक दाँत', योगानन्दझाक 'मुनिक मतिभ्रम', श्रीकृष्णकान्त मिश्रक 'आत्ममर्यादा', डॉ. परमेश्वरमिश्रक 'त्रिवेणी' ओ 'कौलेजक छात्र', प्रो. चन्द्रकान्तझाक 'बाल्टीक्लब', ...वाक खर्च ओ 'कादम्बरी', हरिश्चन्द्रझा 'हरीश'क 'छीक', स्व. रुपकान्तठाकुरक 'वचनवेञ्चव' ओ ...नगाम', श्री भाग्यनारायणझाक 'सोनक ममता' प्रभृति एकांकीसंग्रह वा एकांकी पुस्तकाकार प्रकाशित भए सकल अछि। श्री रमानाथमिश्र 'मिहिर' द्वारा संकलित 'प्रतिनिधि एकांकी' एवं डॉ. प्रेमशंकर सिंह द्वारा संकलित-सम्पादित 'नव एकांकी' नामक दुइ एकांकी-संग्रह सेहो प्रकाशित भेल।

कुमार गंगानन्द सिंहक एकमात्र एकांकी 'जीवनसंघर्ष' प्रकाशित भए बड़ प्रसिद्ध भेल। एहि मध्य अछूतोद्धार, विधवाविवाह ओ भूमिविकेन्द्रीकरणक समस्या दिसि ध्यान ... कराओल गेल अछि। हिनक एहि एकमात्र एकांकी पढ़ि स्पष्ट भए जाइत अछि जे हिनकामे एकांकी-रचनाक उच्चकोटिक प्रतिभा छलैन्हि। खेदक विषय एतबे जे ओ पुनः एकांकी-रचना दिसि प्रवृत्त नहि भेलाह।

प्रो. हरिमोहनझा एकांकी-विधामे बड़ कम रचना कएल। हिनक उल्लेखनीय एकांकी थिक 'महाराजविजय' ओ 'मण्डनमिश्र'। मुदा हिनक कथा-सभकेँ एकांकी-रुपमे परिवर्तित कए बराबरि अभिनीत कएल जाइत रहल अछि। एही दृष्टिएँ 'बरक दाम', 'दारोगाजीक मोछ' प्रभृतिक नाम लेल जा सकैत अछि। एहने-एहने रचना हिनक 'रंगशाला'मे संकलित भेल अछि। हिनक रचनामे हास्यतत्व प्रधान रहैत छैन्हि, संघर्ष-तत्त्व गौण। हिनक एकांकी कोनो-ने-कोनो सामाजिक विकृतिकेँ विषय बनबैत अछि। अतः एहन रचनाक उद्देश्य मनोरंजनक संग-संग सामाजिक दोषक परिहार करब सेहो रहैत अछि।

किरणजीक एक गोट एकांकी 'जयजन्मभूमि' पुस्तिकाकार, दोसर 'महाराज शिवसिंह', 'रचनासंग्रह'क प्रथम भागमे एवं तेसर 'शीतलसेनी' 'प्रतिनिधि-एकांकी'मे प्रकाशित दृष्टिपथ पर आएल अछि। 'कामेश्वर' 'घण्डेश्वर' प्रभृति हिनक कतोक अन्यान्य एकांकीक सेहो उल्लेख होइत अछि। हिनक एकांकीक विशेषता थिक प्रगतिशील विचारधाराक अभिव्यक्ति। परन्तु हिनक प्रगति-शीलता कथनोपकथनक माध्यमसँ स्थूल रुपसँ व्यक्त होइत अछि। एहि कारणे हिनक कथनोपकथन छोट-छोट वक्तव्यक रुप धारण कए लैत अछि तथा से नाटकीयताक बाधक भए जाइत अछि। एकांकीक मूल-सफलता चरित्रक अन्तःसंघर्ष पर अवलम्बित रहैत अछि, जकर हिनक एकांकी-रचनामे अभाव रहैत अछि। प्रायः नाटकीयताक अभावेक कारण हिनक कोनो नाटकक अद्यावधि सफलताक संग अभिनीत होएबाक सूचना उपलब्ध नहि भेल अछि।

प. जीवनाथझा अपन एकांकीक विषय मुख्यतः मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहाससँ बनाओल ओ संस्कृत-शैलिक अनुसरण कएल। ओहि दृष्टिएँ विचारकलासँ हिनक एकांकी सफल कहल जा सकैत अछि। एहि क्रममे प. भवनाथझाक नामोल्लेख सेहो होएत जनिक 'विद्यापति' 'चौपाहि'मे छपल छल। 'बक बुड़न बुड़ेर' हिनक प्रहसन-एकांकी थिक। हिनको एकांकीमे चरित्रक अन्तःसंघर्षक निरुपण नहि, कथावस्तुक क्रियात्मक प्रवृत्ति सएह प्रधान रुपमे परिलक्षित होइत अछि।

प्रो. तन्त्रनाथझा प्रथम एकांकीकार छथि जनिक 'कओलेजक प्रवेश', 'उपनयनाक भोज' प्रभृति पाँचगोट एकांकी प्रथम बेर संकलित भए प्रकाशित भेल। अनेक अभिनय एहि एकांकीसभक भए चुकल अछि ततेक प्रायः आन कोनो एकांकीक सम्भवे भेल होएत। हिनको एकांकीमे हास्य-व्यंग्य उत्कृष्ट नाटकिक अछि, किन्तु स्थान-स्थान पर अन्तःसंघर्षहुक समावेश नीक जकाँ भेल अछि। हिनक एकांकीक प्रसंग जयकान्तबाबूक मन्तव्य अछि जे "*The plays of prof. Tantranath Jha are based on situation chosen from actual life*" (मै. सा. इ.- दोसर भाग-पृ.-124)

प्रो. तन्त्रनाथझाक पश्चात् सबसँ अधिक ध्यान आकृष्ट करैत छथि गोविन्द जी ओ अमरजी। अमरजीक 'समाधान' एकांकीसंग्रहक अतिरिक्त पत्रपत्रिकामे प्रकाशित अनेक एकांकीसभमे 'मलरवि' ओ 'ब्रह्मस्थान' विशेष उल्लेखनीय अछि। गोविन्दजीक 'वीरकीर्तिसिंह'क अतिरिक्त कएक गोट सामाजिक समस्या पर आधारित एकांकीसभ पत्रपत्रिकामे प्रकाशित अछि, जाहि मध्य 'उपहार' ओ 'मिथिलाक प्रतिनिधि' विशेष रुपसँ उल्लेखनीय थिक।

'समाधान' अमरजीक प्रचारात्मक एकांकीसंग्रह थिक, जाहिमे प्रचारक स्वर अत्यन्त मुखर भेलासँ प्रत्येक एकांकी सरकारी प्रचारक साहित्य जकाँ लगैत अछि। हमरा जनितेँ हिनक 'मलरवि' सर्वश्रेष्ठ रचना थिक। कारण, अमरजीक प्रतिभा हास्य-व्यंग्यक वातावरणहिक चित्रमे सर्वाधिक निखरैत अछि। एहिमे राउतसभक मूर्खता ओ पण्डितक धूर्त्तताक बड़ मनोरंजक वर्णन अमरजी कएने छथि। 'ब्रह्मस्थान'मे एतेक पात्रक समावेश कए देने छथि जे एकांकी सन छोट रचनाक हेतु भार भए गेल अछि। हिनको रचनामे अन्तःसंघर्षक अभाव देखना जाइत अछि।

गोविन्दजी ओ वर्माजीक नाम संग-संग लेल जा सकैत अछि, एकांकीकलाक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ। हिनकालोकनिक एकांकी जतेक मार्मिक सामाजिक समस्याक कथा पर आधारित होइत अछि ततेक ऐतिहासिक कथा पर नहि। वर्माजीक ऐतिहासिक एकांकीमे अतिभावुकता रहैत अछि तँ सामाजिक एकांकीमे व्यंग्य। उदाहरणार्थ हिनक 'भांग्का स्वप्न' ओ 'प्रगति' एकांकीक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। प्रथममे ओ विद्यापतिक

दृष्टान्त प्रस्तुत कए मिथिलामे संघर्षक प्रेरणा देल अछि एवं दोसरमे प्रियंवदाक नाटकीय चित्रांकन कए प्रगतिक वास्तविक दिशाक संकेत दए मिथिलाक प्रगतिक आकांक्षा व्यक्त कएल अछि। 'प्रगति' 'भोरुका स्वप्न'क अपेक्षा अधिक सफल अछि। गोविन्दजी परिस्थितिक यथोचित निर्माण कए कथाकेँ कौशलक संग विकसित करैत मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण करैत छथि। एही दृष्टिएँ हिनक 'उपहार'ओ 'मिथिलाक प्रतिनिधि' कोनो भाषाक उत्कृष्ट एकांकीक समता कए सकैत अछि।

वर्माजी ओ गोविन्दजीक श्रेणीमे अबैत छथि श्रीसुधांशु शेखर चौधरी सेहो। हिनक एकांकी विषयक सन्तुलित नियोजिन तथा यथोचित नाटकीय संघर्षक सम्पादनक दृष्टिएँ उत्कृष्ट कोटिक कहल जा सकैत अछि। कलात्मक प्रौढ़ता हिनक एकांकीक प्रमुख गुण थिक। हिनक 'हथटुट्टा कुर्सी' सेहो कोनो भाषाक उत्कृष्ट एकांकीसँ समता कए सकैत अछि।

श्री योगानन्दझाक 'मुनिक मतिभ्रम'मे सुकन्याक चरित्रकेँ नाटकीय रुपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। स्थान-स्थान पर नाटकीय व्यंग्य एहि एकांकीक मुख्य आकर्षण थिक। पिताक कर्त्तव्यभावनाक सूचना दए ओ अन्तर्द्वन्द्वक यत्किंचित् आभास एहि नाटकमे दए देने छथि, मुदा ताहिमे गहनताक अभाव बुझना जाइत अछि। हिनक दोसर उल्लेखनीय एकांकी थिक 'अन्तिम रामचरित'। प्रो. आनन्दमिश्रक 'गोनूझाक बिलाड़ि' शीर्षक एकांकी लोकप्रसिद्ध हास्य-कथा पर आधारित एक गोट सुन्दर प्रहसन थिक। एहिसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे प्रो. मिश्रकेँ हास्यक नियोजनमे सिद्धहस्तता प्राप्त छैन्हि एवं एकांकी-रचनाक सहजात प्रतिभा सेहो छैन्हि, जकर यथोचित उपयोग ओ अद्यावधि नहि कए सकलाह अछि।

प्रो. प्रबोधनारायणसिंह एमहर किछु एकांकीक रचना कएल अछि, जाहि मध्य 'हाथी दाँत'क उल्लेख कएल जा सकैछ। प्रो. सिंह एहि एकांकीमे आजुक नेतालोकनिक छलकपटकेँ चित्रित कएने छथि। कहबाक तात्पर्य जे नेतालोकनिक खएबाक दाँत आ'र होइत छैन्हि ओ देखएबाक आ'र। एहि प्रकारें ई मैथिलीक प्रथम राजनैतिक समस्या पर आधारित एकांकी थिक। व्यंग्य एहि एकांकीक प्रधान गुण थिक। राजकमलजीक एक गोट एकांकी 'महाकवि विद्यापति' सेहो उपलब्ध अछि। विषय ऐतिहासिक कथा पर आधारित होइतहुँ एकांकीकारक प्रगतिशील दृष्टिकोण विद्यापतिक चरित्रांकनमे स्पष्ट रुपेँ अभिव्यक्त भेल ओ एही दृष्टिएँ एहि एकांकीक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

अन्यान्य एकांकीकारमे किसुनजी, परमेश्वरजी, चन्द्रकान्तजी, हरीशजी, धीरेन्द्रजी, रामदेवजी प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। किसुनजीक कविता

जेहन निविष्ट होइत छैन्हि तेहन एकांकी नहि। 'उगना रे मोर कतए गेलाह' हिनक सामान्य कोटिक एकांकी थिक। डा. परमेश्वरमिश्र अपन एकांकी छात्रावस्थहिमे लिखल, मुदा ताबत काल हिनकामे परिमार्जन ओ प्रौढ़ता नहि आएल छलैन्हि। हरीशजीक एकांकी 'छीक' हास्यरसक अभिनयोपयोगी एकांकी थिक। मुदा ओहि मध्य साहित्यिक वैशिष्ट्यक अभाव देखना जाइत अछि। वस्तुतः प्रो. चन्द्रकान्तझा, प्रो. धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र' डॉ. रामदेवझा ओ श्री भाग्यनारायणझामे एकांकीकारक उत्कृष्ट प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि। एहि मध्य प्रो. चन्द्रकान्तझा एकांकीमे आधुनिक शिल्पक प्रयोग कएने छथि ओ सब दृष्टिएँ हिनक 'कादम्बरी' ओ 'प्रायश्चित' उत्कृष्ट कोटिक एकांकी कहल जा सकैत अछि। धीरेन्द्रजी परम्परागत विद्यापति-शिवसिंहक कथा लए 'राजाशिवसिंह' लिखने छथि। एहिमे प्रयुक्त पैघ -पैघ वार्त्ता नाटकीयतामे बाधक अवश्य भेल अछि, मुदा अन्य दृष्टिएँ ई सफल एकांकी थिक। अपन 'डाइन कोशी'मे ओ कोशीक संहारलीलाक वर्णन कएल अछि आओर अपेक्षाकृत हिनक ई अधिक सफल एकांकी थिक। रामदेवजी अपन एकांकी 'पिपासा' तथा 'दुलारक भूख' मध्य अपन प्रतिभाक यथार्थ परिचय दए देने छथि। 1988 ई.मे हिनक 'पासिझैत पाथर' एकांकी-संग्रह प्रकाशित भेल ताहिसँ हिनक विलक्षण एकांकी-रचना-कुशलता स्वतः सिद्ध भए जाइत अछि। श्री भाग्यनारायणझाक एकांकीमे समाज-सुधारवादी भावनाक प्रधानता अछि। अभिनयोपयोगिता हिनक एकांकीक प्रधान गुण थिक। नाटकक तुलनामे ई एकांकी-रचनामे अधिक सफल भेलाह अछि। स्व. रुपकान्तठाकुरक एकांकी प्रहसनकोटिक थिक जे मनोरंजनक दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय अछि।

उपर्युक्त एकांकीकार ओ एकांकीक अतिरिक्त प. ऋद्धिनाथझाक 'सतीपरीक्षा', प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक 'शिवसिंहक राज्याभिषेक', श्री गोपालजीझाक 'गोपेश'क 'बन्धु-परित्याग' एवं 'गुड़क मारि धोकरे जानय', डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'मैंगरुपाठक', डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क 'ईर्ष्याक पराजय', श्री किशलयक 'आकुलहमर प्राण', श्री विष्णुकान्तझाक 'टीपार्टी', श्री प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'क 'सुखिया', श्री शिवशंकरमिश्र 'नृसिंहन'क 'भायबहिन', श्री गोविन्दनारायणझाक 'सामर्थ्य', श्री रामचन्द्रझा 'सुमन' क 'नवजीवन' प्रभृतिक सेहो उल्लेख कएल जा सकैत अछि।

गत दस-पन्द्रह वर्षमे एकांकी-रचना ओ तकर प्रकाशन गद्य-साहित्यक अन्यान्य विधाक तुलनामे सन्तोषप्रद नहि कहल जाए सकैत अछि, तथापि एहि अवधिमे अनेक प्रतिभाशाली एकांकीकारक उदय ओ अनेक सफल कोटिक एकांकीक प्रकाशन भेल अछि। एहि एकांकीसभमे पूर्व-युगक अपेक्षा युग-चेतनाक अभिव्यक्ति अधिक प्रखरतासँ भेल। एकांकीसभक प्रमुख विषय भेल आधुनिक सभ्यता-संस्कृतिक निस्सारता राजनीतिक भ्रष्टाचारिता, शोषणवादी आर्थिक ओ सामाजिक विषमतामे पिसाइत मध्यम वर्गीय मानस-चेतनाक पीड़ा, असन्तोष, विक्षोभ अर्थात् सामाजिक यथार्थवादक अनेकानेक

विषय। अनेक लेखक ऐतिहासिक **चरित्रकें सेहो अपन** एकांकीक **विषय बनाए** अतीतक गौरवकें रुपायित कएल ओ **कतोककें आधुनिक युगक** सन्दर्भमे नवीन रीतिऐं चित्रित करबाक सेहो चेष्टा भेल। एहि युगमे **किछु पूर्व** कृतविद्यता प्राप्त एकांकीकारक रचनाक अतिरिक्त श्रीरमानन्द रेणुक **'तिकड़म'**, श्रीसोमदेवजीक **'महाकवि मैथिली माधव'**, श्रीगंगेश गुंजनक **'आइ भोर'** एवं **'लोकनटकिया'**, श्री हीरानन्दशास्त्रीक **'बर्थ-कण्ट्रोल'**, श्रीप्रभासकुमारचौधरीक **'जाउ, अहाँसँ नहि बाजब'**, श्री भीमनाथझाक **'कमीआ'**, डा. दिनेशकुमारझाक **'गतिशील'**, श्री मार्कण्डेय प्रवासीक **'लाल तिकोन'**, प्रो. शिवशंकरमिश्रक **'हिचकी'** आ **'उच्छ्वास'**, श्रीमल्लिआक **'टूटल तागक एकटा ओर'**, **'लेभाराह अन्हारमे एकटा इजोत'**, **'एक टुकड़ा पाप'**, **'मालिक गाम घल गेलाह'** प्रभृति, श्री रेवतीरमणझाक **'वृद्धस्य तरुणी विषम'**, श्री सूर्यकान्तविमलक **'पराजय'** एवं **'उषा-परिणय'**, श्रीसुखचन्दझाक **'मेघदूतक आपसी'**, प्रो. उपेन्द्रझाक **'कनैत गाम'** एवं **'हयपीती'**, श्रीसीतानाथ 'अनिल'क **'मतिछिन्नू'**, श्री गुणनाथझाक **'मधुयामिनी'**, **'सातम चरित्र'** एवं **'शेष नत्रि'**, श्रीसुकान्त सोमक **'सिलसिला'**, प्रो. मार्कण्डेयक **'बहुरुपिया'**, प्रो. गणेशबिहारी शर्माक **'मनुक्ख सन्धान'** ओ **'स्वर्ग-मर्त्य'**, श्रीयोगानन्द सुधीरक **'एकटा मेनका आर'** श्रीमनमोहनझाक **'एकटा बेकार नाटक'**, श्री कुलानन्द मिश्रक **'खाधि ओ खाधि'**, श्री योगानन्द हीराक **'बादुर कौआ'**, डा. अमरनाथझाक **'सरकारसँ उद्धार'**, श्रीमती सरोज झाक **'भूपेनबाबूक बिआह'**, श्री रामभरोस कापड़िक **'भरल खत्ताक मरम'**, श्री लीलानन्द सिंह झाक **'प्रेमक सिन्दुर'** ओ **'नवका झण्डा'**, उग्रमोहन विद्यार्थीक **'कन्यादान'**, श्री रविकान्तझा 'नीरज'क **'हम बताह छी'**, श्री रवीन्द्र राकेशक **'सुनू राम'** (एकल अभिनय), प्रदीप बिहारीक **'निर्घोस'**, श्री हिमांशु शेखर झाक **'आलोक-धन्वा'**, श्री विभूति आनन्दक **'ई महाभारत कोन पर्व कहौ तँ'** प्रभृति अनेक एकांकीक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। 'मिथिला मिहिर'क एकांकी विशेषांक (6 जनवरी, 1974)मे अनेक नव-पुरान लेखकक एकांकी प्रकाशित भेल जे वास्तविक अर्थमे सबटा सफल कोटिक एकांकी तँ नहि थिक, परन्तु मणिपद्मक **'बसकण्डक्टर'** एवं श्री आरसी प्रसाद सिंहक **'हमर स्वप्न सार्थक भेल'**सँ मैथिलीक एकांकी-साहित्य गौरव-मण्डित भेल। एकांकी-काव्य-रुपक क्षेत्रमे डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क रचना **'अभिशाप'**, श्री कुलानन्दमिश्रक **'मैथिली-मन्दोदरी-संवाद'**, नौटंकी शैलीमे श्री सोमदेवक **'मिथिलाक बेटी'** आदिक सेहो एतए उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

एहि अवधिक अधिकांश एकांकीमे रंगमंचीय नवीनताक सम्पादनार्थ शिल्प-विधानमे निबद्ध प्रयोगशील प्रवृत्तिकें स्पष्टतः लक्ष्य कएल जाए सकैत अछि, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिएँ ओ कतेक उपयुक्त भेल अछि, से ओकर अभिनयक पश्चाते हृदयंगम कएल जाए सकैत अछि।

एहि अवधिमे डॉ. दिनेशकुमारझा मात्रक एकटा एकांकी संग्रह **'सप्त-रश्मि'**

दृष्टिपथ पर आएल अछि, जाहि मध्य पुरुरवा-उर्वशीक प्रेमाख्यान, वशिष्ठक प्रति विश्वामित्रक ईर्ष्या प्रभृति सात गोट पौराणिक आख्यानक दृश्यांकन भेल अछि। एहिसँ किछु पूर्व डा. बालगोविन्दझा 'व्यथित'क 'अम्बपाली', 'तिष्यरक्षिता' एवं 'लघिमा'क चरित्र पर आधारित तीन गोट एकांकीक संग्रह **'त्रिपथगा'** तथा सन् 1978 ई. मे श्री नचिकेताक तीन गोट एकांकीक संग्रह **'जनक आ अन्यान्य एकांकी'** ओ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा सेहो एकटा बृहत एकांकी-संग्रह प्रकाशित भेल। सन 1989 ई. मे श्री जगदीशझाक **'मैथिली एकांकी'**-प्रहसन सेहो छपल अछि।

जहिआसँ आकाशवाणीमे मैथिलीकें स्थान भेटलैक अछि तहिआसँ मैथिलीमे ध्वनि-रुपकक सेहो यत्किंचित् रचना भेल अछि। मुदा अधिकांश ध्वनिरुपकक रचयिता ओहने व्यक्ति छथि जे खाहे तँ आकाशवाणीमे काज करैत छथि, खाहे ओहिसँ कोनो आने तरहें संबद्ध छथि वा अधिकारीलोकनिक विशेष कृपापात्र छथि। अतः नाटकक एहि प्रभेदकें स्वच्छ वातावरणमे विकास करबाक अवसर नहि प्राप्त भए रहल छैक। एहि प्रकारक रचनाक प्रकाशन सेहो बड़ कम भेल अछि। तथापि प्रो. मायानन्द मिश्रक **'इतिहासक बिसरल'**, भाग्यनारायणझाक 'सोनक ममता'मे संकलित ध्वनिरुपक एवं 'मिहिर'मे प्रकाशित डा. सीतारामझा 'श्याम'क 'ज्ञानदान', श्री महेन्द्र मलंगियाक 'आन्हर बौरी', **'ई जनम हम व्यर्थ गमाओल'** आदिक चर्चा कएल जा सकैत अछि। आकाशवाणीमे जनिक ध्वनि-रुपक अधिक सफलताक संग प्रसारित भेल अछि, ताहि मध्य बाबू लक्ष्मीपतिसिंह, श्री आनन्द मिश्र, श्री सुधांशुशेखर चौधरी, श्री गौरीकान्त चौधरी 'कान्त', डा.श्रीदिनेशकुमारझा प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। विस्तारक हेतु द्रष्टव्य थिक 'रंगमंच' कलकत्ता (अप्रैल 1974) मे प्रकाशित श्री गंगेशगुंजनक लेख "मैथिली रेडियो नाटक"।

नाट्य-साहित्यक इतिहासक विवेचन करबाक पश्चात् ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे विशेषतः गत दशकसँ विभिन्न संस्था द्वारा रंगमंचीय आधार प्रदान कए एकटा नव-विकास-धारा प्रदान करबाक सुसंघटित प्रयास होइतहुँ मैथिलीक नाट्य-साहित्यिक परम्परा कहुना जीवि रहल अछि। चल-चित्रक ओ आब भी. हि. ओ. तथा दूरदर्शनक आशातीत उन्नतिसँ अभिनयक उत्साह दिनानुदिन क्षीण भेल जाइत छैक आओर तँ एकांकी वा नाटकक रचना दिसि यदि कोनो साहित्यकार प्रवृत्त छथि तँ एकरा साहित्याभिव्यक्तिक एकटा विधा मात्र मानि। सम्प्रति जेहन स्थिति अछि, ताहिसँ एहि परम्पराक विकासक आशा एही दृष्टिएँ कए सकैत छी।

***

नवम प्रकरण

मैथिलीक गद्य-साहित्य

मैथिलीक गद्य-साहित्यक आरम्भ कहिआ भेल, से निश्चितरुपें नहि कहल जाए सकैत अछि। मुदा आरम्भमे एकर साहित्य मौखिके छल एवं एकर विकासो तहिना होइत रहल। चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणमे 'वर्णरत्नाकर'क रचना भेल छल। अतः अनुमान करब असंगत नहि होएत जे ताबत कालधरि मैथिली गद्यमे साहित्याभिव्यक्तिक क्षमता आबि गेल रहए। 'प्राक्विद्यापति-साहित्य' शीर्षक प्रकरणमे हम विस्तारपूर्वक विचार कए आएल छी जे 'वर्णरत्नाकर'क पूर्वक अलिखित साहित्यक केहन स्वरुप छल। एहि ठाम हम पुनः चर्चा कए देब उचित बुझैत छी जे पद्य-साहित्ये जकाँ गद्य-साहित्य सेहो सरस्वतीक अन्तःसलिला धारा जकाँ जनसमाजमे प्रवाहित भए रहल छल। ओहि समयक मौखिक साहित्य रहल होएत- 1. लोककथा, जेहन प्रो. तन्त्रनाथझाक 'जोगक संगी' ओ 'जिबितहिँ स्वर्ग' अछि तथा 2. विभिन्न प्रकारक लोककथाकाव्य, जाहिमे म. म. परमेश्वरझाक 'सीमन्तिनी आख्यायिका'क अनुसार 'रुक्मिणीस्वयंवर'सँ लए 'विरहाचाँचरि' धरि अबैत अछि। एतबे नहि, एहिमे 'सलहेस' प्रभृति लोकवीरगाथा सेहो अबैत अछि। लोककथाकाव्यकेँ गद्य-साहित्यमे परिगणित करबाक कारण ई जे एहिमे पद्यक अतिरिक्त गद्यहुक प्रयोग होइत छल, मुदा ओ पढ़ल जाइत छल लयात्मक रीतिसँ, गीत जकाँ। एहि पढ़बाक रीतिकेँ म. म. परमेश्वरझा 'गमैया भास' कहने छथि। डा. ग्रियरसन अपन 'मैथिली क्रिस्टोमैथी' (1881)मे 'सलहेस'केँ संकलित कए प्रकाशित कएने छथि। ओकर भाषा केहन अछि से द्रष्टव्य थिक- "नान्हिटासँ पोसलहुँ, एतेक वस्तु आनि कै घरमे रखलहुँ, तैयो नहि स्वामी सलहेस ऐलाह। हुनका कारन फुलवाड़ी रोपलि, रंग-रंग फूल आनि जगाओलि। बेली फूल, घमेली, ओ बुलकुंज, नेवार, तेखरिक फूल, फुलवाड़ी लगाओलि हुनि सलहेस......" आदि। ई निस्सन्देह ओहि समयक भाषा नहि थिक जहिआ एकर रचना भेल होएत। मुदा, भाषाक जेहन स्वरुप रहल होअए, रहल होएत एहने गद्य धरि अवश्य जे लयात्मक प्रवाहमे गाओल जाइत छल ओ आइओ गाओल जाइत आछि।

परन्तु 'वर्णरत्नाकर'क पूर्वक गद्य लिखित रुपमे उपलब्ध नहि अछि। एकर कारण प्रायः छल पण्डितलोकनिकलोकभाषाकप्रति उपेक्षाभाव अथवा लिखबाक असौकर्य। एही कारणे 'वर्णरत्नाकर'क पूर्वक के कहए, पश्चातहुक कोनो साहित्यिक गद्य चन्दाझाक पूर्वक, प्राप्त नहि होइत अछि। चन्दाझासँ छओ सए वर्ष पूर्व 'वर्णरत्नाकर'क भाषाक गद्यमे रचना कए ज्योतिरीश्वर केहन साहसक परिचय देने होएताह, तकर आइ

हमरालोकनि अनुमानेटा कए सकैत छी। विद्यापति सेहो लोकभाषामे पद रचना कए बड़ साहसक परिचय देल एवं मैथिली लोकभाषाकेँ साहित्यिक गरिमा प्रदान कएल। मुदा मैथिलीमे गद्यक रचना ओहो नहि कए सकलाह। गद्य लिखल ओ अवहट्ठमे- 'कीर्त्तिलता'ओ 'कीर्त्तिपताका' मे स्थान-स्थान पर तथा संस्कृतमे 'पुरुषपरीक्षा' प्रभृति ग्रन्थ मध्य। एतेक दूर धरि जे 'लिखनावली'क रचना ओ संस्कृतमे कएल, जकर उद्देश्य छलैक पत्रप्रभृति लोकोपयोगी प्रणालीक व्यवस्था प्रस्तुत करब आओर जे आइओ-काल्हि मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक समारोहक अवसर पर आमंत्रण प्रभृति लिखबामे आदर्श बनल अछि। एहिसँ पण्डितलोकनिक, जाहिमे विद्यापति सेहो अन्तर्भुक्त कएल जा सकैत छथि, लोकभाषा मैथिलीक प्रति केहन प्रवृत्ति छल, तकर परिज्ञान होइत अछि। तथापि हुनक अवहट्ठ-भाषामे मैथिली गद्यक विकासशील स्वरुपक परिचय भेटि जाइत अछि यद्यपि ओहिमे संस्कृतनिष्ठता सएह अधिक अछि। नीचाँ 'वर्णरत्नाकर' ओ 'कीर्तिलता' सँ एक-एकटा उद्धरण देल जाइत अछि-

1. ......याक मुखक शोभा देपि पद्मे जलप्रवेश कएल। आँपिक शोभा देपि हरिण वण गेल। केशक शोभा देपि घमरी पलायन कएल। दाँतक शोभा देपि तालिबे हृदय विदीर्ण कएल....एवम्विध रत्ना + + + संयुक्ति त्रिभूवनमोहिनी देपु। ('सखीवर्णना'सँ)।

2. जेण्णे रात्रे अतुलतर विक्रम विक्रमादित्य करेओतुलनात्रे। साहस साधि पातिसाह अराधि दुष्ट करेओ दप्प,.....प्रबलशत्रुवलसंघटजनसम्मिलन-संम्मद-संजात-पदाघात ....जयलक्ष्मी कर ग्रहण करेओ....तीनिहुँ शक्तिक परीक्षा जानलि। रुसलि विभूति-पलटाएँ आनलि......(कीर्तिलताः प्रथम पल्लव)।

उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे 'वर्णरत्नाकर'क गद्यमे प्रवाह ओ अभिव्यंजना-शक्तिक प्रौढ़ता अछि। 'कीर्तिलता'क अवहट्ठ गद्य मैथिली गद्यसँ कतेक निकटक वस्तु थिक, सेहो स्पष्ट अछि। 'रुसलि विभूति पलटाए आनलि' तँ 'वर्णरत्नाकर'क कोटिक गद्य थिक। मुदा 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्तिपताका'मे गद्य गौण अछि ओ पद्य प्रधान। अतः एकर महत्व मैथिली गद्यक विकासक स्वरुपक अनुमानक साधनक रुपमे सएह अछि, स्वतन्त्र गद्यग्रन्थक दृष्टिएँ नहि।

विद्यापतिक पश्चात् ओ चन्दाझाक पूर्व मैथिली गद्य-साहित्यक सर्वथा अभाव अछि। तथापि एहि मध्य गद्यक जे चिह्न मात्र उपलब्ध अछि, तकरा हमरालोकनि दुइ भागमे विभक्त कए सकैत छी- 1. मैथिली नाटकमे प्रयुक्त गद्य एव 2. पुरान-लिखा-पत्रसभक, अजातपत्र, अकरापत्र, जनौढ़ी, निस्तारपत्र, वृतिपत्र तथा वैयक्तिक चिट्ठी-पत्रीमे प्रयुक्त गद्य। प्रथम श्रेणीमे एहन गद्य-सभक दृष्टान्त प्रस्तुत

कएल जाए सकैत अछि जे नेपालमे लिखल मैथिली नाटक तथा आसाममे लिखल अंकियानाटमे प्रयुक्त भेल छल ओओर एहन गद्य विशुद्ध मैथिलीक नहि, मिश्रित मैथिलीक थिक। मिथिलाक कोनहु साहित्यिक कृतिमे मैथिली गद्य प्रयुक्त भेल नहिं भेटैत अछि। अतः ओहि गद्यसँ मैथिली गद्यक वास्तविक विकासयात्राक स्वरुप बुझबामे सहायता नहि भेटि सकैत अछि। दोसर कोटिक गद्य संस्कृतभाषा नीक जकाँ नहि जननिहार मैथिललोकनिक लिखल थिक। अतः एहन वस्तुमे साहित्यिकताक अभाव अछि। एकर महत्व अछि तत्कालीन मैथिली गद्यक स्वरुप बुझबाक दृष्टिएँ। एहि प्रकारक कागजपत्रक किछु संकलन जयकान्तवाबू अपन इतिहासमे कएने छथि तथा किछु प्रो. रमानाथझा सेहो उपलब्ध कए 'स्वदेश' मासिकमे 'पुरानलिखा' शीर्षकसँ भाषाक स्वरुपक विश्लेषण करैत प्रकाशित करबओने छथि। नाटकमे प्रयुक्त गद्यक उद्धरण गत-प्रकरणमे सेहो देल अछि। तथापि एहू ठाम एक-एकटा नेपाल ओ आसाममे प्रयुक्त मैथिली गद्यक उद्धरण प्रस्तुत कएल जाइत अछि तथा दुइटा उद्धरण उपलब्ध पुरानलिखासँ सेहो दैत छी जे मध्यकालीन मैथिली गद्यक विकासक अनुमानटा कराए सकैत अछि। मुदा मिथिलामे पण्डितलोकनिक साहित्यिक गद्यक केहन वास्तविक स्वरुप छल, तकर यथार्थ परिचय ओतसँ नहि भए सकैत अछि।

1. नेपालक मैथिलीनाटकमे प्रयुक्त गद्य-

(क) 17म शताब्दीक पूर्वार्द्धक उदाहरण-

नटी- धन्य-धन्य महाराज - एहना कुल एहने उचित-किछु तकर वर्णना मौत्रे करह छथि।

सूत्र- हे प्रिये भल कहलह - परन्तु एहना उत्सव-कओन नृत्य उचित थिक।

नटी- हे नाथ - तथी अपनहि विज्ञ।

('हरगौरीविवाह'सँ)

(ख) 18म शताब्दिक मध्यक गद्य

रानी शशिरेखा- हे प्राणनाथ हमर विनती शुन।

अन्धकासुर- प्रियतमा कहु।

भीमानन्द (मन्त्री.) हे दानवाधिप हमरो विनती अवधान करु।

अन्धकासुर- भीमानन्द कहु।

('अन्धकासुरोपाख्यान'सँ)

2. आसामक मैथिली नाटकमे प्रयुक्त गद्य (16म शताब्दीक मध्य)

सीता- हा हा विधि, हमार कि कपाल मिलिल। हरि हरि, रामस्वामी परम

सुकुमार, नवीन, वयसे, संगे सोदर मात्र सहाय। ओहि परम निकरुण दारुण राजा सबक कैचे युद्धे जितिय ? हा हा दैव विधि कोन अपराधे हामाक वंचल।

('रामविजय'सँ)

3. मिथिलामे प्राप्त गौरीवचाटिका (1615 ई.)क गद्य

शाके 1537 वैशाख शुक्लाचतुर्थ्यां शुक्रे श्रीरामभद्रशर्मा श्रीकमा (पा)ल दासेषु गौरीवचाटिका पत्रमर्पयति तदत्रेत्यादि हमरा वहिआक हराइक बेटी पदुमनीनाम्नी गौरवर्णा जे ताहरे बेटात्रे श्रीकृष्णात्रे विआहलि से हमे एक टका लए ताहरा देलिआवे ताहि सत्रो हमरा कओन सम्बन्ध नहि साक्षितत्त्वमत्र श्रीरामालमिश्र श्रीसिद्धिनाथझा श्रीमतदन्तमहाशयानां लिखितमिदमुभयानुमतेन श्रीगंगाधरशर्मणेति श्रीरामभद्रस्य।

(जयकान्तवाबूक इतिहाससँ)

4. महाराजकेँ ब्रह्मोत्तरदान देबाक सूचनापत्र (1748 ई.)क गद्य

स्वस्ति परमसुप्रतिष्ठ श्रीगंगादत्तझा महाशयेषु महाराज श्रीनरेन्द्र सिंहस्य नमस्कार। आगाँ परगन्ना बछौर मध्य बगौलिपट्टी दुलारचन्ददास श्रीरामेश्वर झाके ब्रह्मोत्तर देल थी....हु देलैन्हि ते माफीक हमहुँ ओआकेँ देल खातिर जमासँ तरदुद करु उत्पन्न भोग्य कएल करु आखाढ़ वदि 13 रोज सन 1155 साल।

(पुरानलिखा : 'स्वदेश'-13 सँ)

उपर्युक्त प्रथम ओ दोसर उद्धरण मिश्रित गद्यक स्वरुप थिक जकर विकास पाछाँ नेपाल ओ आसाममे अवरुद्ध भए गेल। एहि गद्यसभमे अलंकारक अभाव अछि तथा वाक्य छोट-छोट ओ क्रिया अश्लिष्ट अछि। आसाममे प्रयुक्त गद्यमे साहित्यकताक अभाव अछि, संगहिं वर्णनात्मक गुणक सेहो समावेश अछि। अभिनयोपयोगी कथनोपकथन, संगहिं साम्प्रदायिक प्रचारक सौलभ्यक हेतु एहू मध्य छोट-छोट वाक्य प्रयुक्त भेल अछि, जाहिसँ गद्यरचना संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करबामे समर्थ भए सकए। तृतीय उद्धरणमे संस्कृत ओ मैथिलीक मिश्रित प्रयोग अछि जेना आइओ नौतक चिट्ठीपत्रीमे प्रयुक्त होइत अछि। एहिमे द्रष्टव्य थिक जे आरम्भ ओ अन्त संस्कृतहिसँ होइत छैक तथा बीच-बीचमे सेहो संस्कृतक विन्यास अछि। मुदा एहि मध्य 'बेटात्रे', 'कृष्णात्रे', 'हमे', 'देलिआवे' ओ 'सत्रो'क प्रयोग भेल अछि जे आधुनिक मैथिलीक आरम्भिक गद्यहुमे प्रकारान्तरसँ 'बेटाकेँ', 'कृष्णाकेँ' प्रभृति तँ प्रचुरतया प्रयुक्त होइते छल, आइओ कतेक कवि लेखक द्वारा प्रयुक्त होइत अछि। चतुर्थ उद्धरणमे 'ते माफीक' ओ 'खातिरजमा' फारसी शब्दक प्रयोग तथा 'नमस्कार'मे विभक्तिक अभाव द्रष्टव्य थिक। अठारहम शताब्दीक मध्यमे अबैत-अबैत व्यावहारिक मैथिली गद्यमे कोन रुपक उर्दू-फारसीक प्रभाव आरम्भ भए गेल छल, तकरो अनुमान एहिसँ होएत।

'वर्णरत्नाकर'क पश्चात् जाहि गद्यक विवेचन कएल गेल अछि, तकर उल्लेख आधुनिक गद्यक संग 'वर्णरत्नाकर'क मध्य दीर्घ अवधिक बीच विकासक विलुप्त शृंखलाकेँ जोड़बाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि। किन्तु वस्तुस्थिति तँ इएह अछि जे शृंखला जोड़ल तँ नहि जाइत अछि, प्रत्युत मैथिली साहित्यक अध्येतामे आओर उत्कट जिज्ञासा उत्पन्न कए दैत अछि। 'वर्णरत्नाकर' सन परिनिष्ठित ओ परिमार्जित रचनाक पश्चात् पाँच सए वर्ष धरि मैथिली साहित्यकार मैथिली गद्यरचनासँ विरत रहलाह, ई कम विरोधाभास सन नहि लगैत अछि। यदि अन्य गद्यरचना भेल तँ कतए अछि ? की सब रचना कालक विकराल गालमे विलीन भए गेल आ कि लिखले नहि गेल ? अद्यावधि जतबा सामग्री प्राप्त अछि, तकर आधार पर एहि प्रश्नक निश्चित उत्तर नहि देल जा सकैत छैक ।

मैथिली साहित्यमे गद्यक क्रमबद्ध विकास उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ आरंम्भ भेल, से आब शत-शत शाखा-प्रशाखामे पल्लवित-पुष्पित भए रहल अछि। मिथिलाक अगणित संवेदनशील साहित्यकारलोकनि अपन अपन रचना द्वारा अपन मातृभाषाकेँ गौरव प्रदान करबामे प्रवृत्त छथि। पहिने लोकक मातृभाषा दिसि अनादर दृष्टि छलैक। बड़ बेशी तँ पण्डितलोकनि गेय पदक रचनाटा करैत छलाह। चन्दाझा अपन 'पुरुषपरीक्षा'क भूमिकामे लिखने छथि - **'भाषामे अनादर बुद्धि मिथिला के विद्वान करते थे।'** अतः जखन अंग्रेजी शिक्षाक आरम्भ भेल तथा पाठ्यक्रममे आधुनिक भाषाक गद्यकेँ सेहो राखल जाए लागल तँ पण्डितलोकनिकेँ अपन मातृभाषाक बहुविध उन्नति दिसि ध्यान गेलैन्हि। ताबत कालधरि अन्य आधुनिक भारतीय भाषाक उन्नतिक प्रक्रिया बड़ आगाँ बढ़ि चुकल छल। पार्श्ववर्ती भाषा-बंगला ओ हिन्दीक पत्र-पत्रिका प्रकाशित भए रहल छलैक, जकर मिथिलामे प्रचार छल। एहि पत्रिकासबमे गद्यक सएह प्रधानता छलैक। हिन्दीक खड़ी-बोली गद्यकेँ ताबत भारतेन्दु हरिश्चन्द साहित्यिक मर्यादा प्रदान कए लोकप्रिय बना चुकल छलाह। ताहू दिसि मिथिलाक संवेदनशील साहित्यकारलोकनिक ध्यान गेलैन्हि। एहि सभक समन्वित प्रभावमे आबि सर्वप्रथम चन्दाझा मैथिली गद्यक प्रयोग कएल अपन 'पुरुषपरीक्षा'क गद्यपद्य-अनुवादमे। एकर प्रकाशन सर्वप्रथम 1898 ई.मे भेल। एहूसँ पूर्व 18मे शताब्दीक अन्तमे, ग्रीयरसनक Linguistic Survery of India, vol. vii पृष्ठ संख्या 96क अनुसार - *"The first translation of any portion of the Bible into a Vernacular language of Northern India of which we have any record was made into it (Maithili)"* मुदा ओकर पश्चात् सिरामपुर मिशनरी मैथिलीमे कोनो धार्मिक लेखकेँ नहि छपबाओल। अतः अन्य आधुनिक भाषाक गद्यक विकासमे जेहन योगदान ईसाईधर्म-प्रचारक संस्थासभ देलक, तेहन मैथिली गद्यक विकासमे नहि। कहल जाइत अछि जे बाइबुलक मैथिली अनुवाद भागलपुर-स्थित कैथोलिक मिशनरीक पादरी

एनटोनिओ कएने छलाह। मुदा विशेष अन्वेषण कएलहु सन्ताँ तकर एकटुटा प्रति ग्रियरसन महोदयकेँ प्राप्त नहि भेलैन्हि।

वस्तुतः मैथिली गद्यक विकासक मूल-कारण भेल सामाजिक सुधारक बलवती प्रेरणा तथा मातृभाषासाहित्यक अभ्युन्नतिक उत्कट अभिलाषा। ओहि समय सामाजिक सर्वांगीण दशा परम शोचनीय भए गेल छल ओ लोक नानाविधिएँ जड़तासँ आक्रान्त छल। आन-आन भाषाकेँ उन्नति दिसि बढ़ैत देखि एहि ठामक विद्वानलोकनि सेहो सक्रिय भए उठलाह तथा समग्र मिथिला प्रान्तमे भाँति-भाँतिक संस्थाक उदय भेल। नवजागरणसँ स्पन्दित भए स्थान-स्थान पर मैथिललोकनि संघबद्ध भए जएबाक चेष्टा कएलैन्हि तथा एहि प्रक्रियामे स्थान-स्थान पर सभासोसाइटीक आयोजन कएल गेल। ओहि सभासोसाइटीक नवजागरणक नेतृत्वक करैत विशेष-विशेष अधिवेशनक सभापति भेलाह प्रमुख रुपसँ म.म.डा. सर गंगानाथझा, कुमार गंगानन्दसिंह, रामचन्द्रझा, स्व भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' प्रभृति। साहित्यरचनामे नवगति प्रदान करबाक निमित्त अनुसंधान अनुशीलन ओ प्रकाशनक हेतु सेहो कएक गोट संस्थापक स्थापना भेल तथा ओहिसँ क्तेक साहित्य प्रकाशित भेल। ई क्रम आइओ धरि चलितहि अछि ओ सम्प्रति कलकत्ता, पटना ओ प्रयागक संस्थासभ विशेष कार्य कए रहल अछि। भारतक अन्यो क्षेत्रमे कएक गोट संस्था अछि जे मैथिली साहित्यक निर्माणमे अपन-अपन योगदान दए रहल अछि। मुदा एहि जागरणमे शताब्दीक प्रथमे चरणमे 'मैथिलमहासभा'क स्थापना बड सहायक सिद्ध भेल छल एवं ओकर नवसूत्रीय कार्यक्रम एहि शताब्दिक तीन दशक धरि निर्बाध रुपमे मैथिली कंवि ओ गद्यकारलोकनिक प्रेरणा ओ आदर्श बनल रहल।

मुदा एहि जागरणक प्रतिफल सक्रिय नहि होइत यदि पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन मैथिलीमे प्रारम्भ नहि होइत तथा मिथिलाक नवयुगचेता तरुणलोकनिकेँ अभिव्यक्ति ओ प्रचारक माध्यम नहि भेटतए। मैथिलीमे प्रकाशनक असुविधा आइओ अछि, तहिआ क्तेक रहल होएत तकर सम्प्रति अनुमानेटा कएल जा सकैत अछि। अतः मैथिली साहित्यक 75 प्रतिशत आधुनिक साहित्य पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल ओ आइओ भए रहल अछि। मैथिली साहित्यक सर्वांगीण निर्माण ओ विकासमे, मुख्यतः गद्यक निर्माणमे पत्र-पत्रिकाक योगदान तँ सबसँ अधिक अछि। अतः विश्वासपूर्वक कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक परम्परा गद्य-साहित्यक निर्मित होइत विशाल अट्टालिकाक आधारशिला थिक। यद्यपि एक-दुइटा अपवादकेँ छोड़ि कोनो पत्र-पत्रिका अधिक दिन धरि नहि चलल, मुदा जतबे दिन जे चलत ततबे दिनमे मैथिली गद्यक विकासक मार्ग अग्रसारित करबामे महत्वपूर्ण योगदान दैत रहल। एहि ठाम मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक संक्षिप्त इतिवृत्तिक चर्चा करब विधेय होएत जाहिसँ पत्र-पत्रिका द्वारा मैथिली गद्य ओ पद्यक विकासमे योगदानक विशालताक अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिका

मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भारतक अन्यान्य भाषाक पत्रिका-प्रकाशनक प्रेरणासँ भेल। एही कारणे भाषाक प्रथम पत्र बहराएल मिथिलासँ नहि, सुदूर जयपुरसँ 'मैथिल-हित-साधन' नामक संस्था द्वारा 'मैथिलहित साधन' (1905) ओ तत्पश्चात् काशीसँ काशीस्थ मैथिलविद्वज्जन-समिति-द्वारा 'मिथिलामोद' (1905)। दरभंगासँ दरभंगा राज द्वारा 'मिथिलामिहिर' बहराएल 1909 ई.मे 'मोद'क प्रतिक्रियाक फलस्वरूप। दुर्भाग्यसँ मिथिलासँ पत्र बहरएबो कएल तँ तिरहुतामे नहि; कारण, म. लक्ष्मीश्वरसिंह हिन्दीक प्रति उदार होएबाक कारणे एहि दिसि ध्यान नहि देल; सामर्थ्यवान होइतहुँ अपन प्रेससे तिरहुता टाइप बनबाए प्रचलित नहि कएल। पुस्तक ओ पत्रिका मैथिलीमे प्रकाशित करबएबो कएल तँ देवनागरी लिपिमे। ओकरे दुष्फलसँ मैथिलीक गद्यशैली अद्यावधि स्थिर नहि भए पाओल अछि ओ हिन्दीसाम्राज्यवादी द्वारा आबहु मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहल जाइत अछि। म. लक्ष्मीश्वर सिंहक एहि एकमात्र अदूरदर्शिताक कारणे मैथिलीक उन्नति पचास वर्ष पाछाँ पछुआए गेल।

'मैथिलहितसाधन' मासिक विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा ओ प. चन्द्रदत्तझाक प्रयाससँ जयपुरसँ बहार भेल। प. चन्द्रदत्तझा सएह कवीश्वर चन्दाझाकेँ लेखादिक हेतु पत्र लिखने छलथिन्ह जकर पद्यबद्ध उत्तर हुनकहि ओ देल- "लिखल जाय मिथिला इतिहास - नहि हो तहिमे शिथिल प्रयास" आदि। तथापि ई अधिक दिन नहि चलल। एहि पत्रक उद्देश्य छल गम्भीर ओ व्यापक, मैथिली साहित्यकेँ दर्शन, व्याकरण, गणित, भूगोल प्रभृति शास्त्रीय लेखसँ भरि देब, रचनात्मक साहित्यक निर्माण करब तथा सामाजिक दोषकेँ इंगित कए ओकर सुधारक उद्बोधन देब। एहि पत्रक प्रमुख कवि-लेखक छलाह कवीश्वर चन्दाझा, मधुसूदनझा, सोनेलाल, गणेशदत्तपाठक, रामभद्रझा, यदुनाथझा 'यदुवर', जीवनझा प्रभृति। एहि पत्रक दोसर वर्षक प्रथम अंकमे विशेष रूपसँ एकर गम्भीर उद्देश्यक घोषणा स्पष्ट शब्दमे कए देल गेलैक- "जनिका सावनिकेँ हाहाहाही, लल्लोचप्पो, गीतकवित्तक अतिरिक्त गम्भीर लेखसबहिक रसास्वादनक योग्यता नहि छैन्हि तादृश व्यक्तिक ग्राहक नहि रहलासँ 'हितसाधन'क कोनो त्रुटि नहि"। एहि उद्धरणसँ एहि मासिक पत्रिकाक उद्देश्य ओ प्रकाशित विषयक स्वभावक अनुमान कएल जा सकैत अछि।

श्रीअमरजी अपन पत्रकारिताक इतिहासमे जाहि मुख-पृष्ठकेँ मुद्रित कएने छथि, ताहिसँ स्पष्ट नहि अछि जे ई प्रथम अंकक मुखपृष्ठ थिक, कारण एहिमे ने तँ मास ओ ने सम्पादकहिक उल्लेख अछि। एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ई 'मैथिल-हित-साधन-समिति'क प्रथम प्रकाशन-पुष्प 'मैथिल-चारु-चर्या'क मुख-पृष्ठ थिक।

काशीक विद्वज्जनसमिति दिसिसँ सर्वत्र नामोल्लेख नहि होइतहु 'मिथिलामोद'क प्रकाशन म. म. मुरलीधरझाक सम्पादकत्वमे अथवा निर्देशनमे 16 वर्ष धरि (1905-21) भेल। 7 वर्ष धरि एकर सम्पादन-प्रकाशन कएल अनूपमिश्र ओ सीतारामझा। तदुत्तर एकर प्रकाशन बन्द रहल। पुनः 1936-41 धरि नवीन रूपमे ई प्रकाशित भेल प. उपेन्द्रनाथझाक सम्पादकत्वमे। अतः ई सबं मिला कए दुइ दशकसँ अधिक दिन धरि प्रकाशित भेल ओ मैथिली साहित्यक सर्वांगीण निर्माण, विशेषतः गद्यसाहित्यक निर्माण ओ मैथिल-समाजक जागरणमे एकर योगदान बड़ महत्वपूर्ण कहल जाए सकैत अछि। एकर प्रमुख सम्पादक ओ मैथिली गद्यक प्रधान निर्माता म.म. मुरलीधरझा एहि पत्रिकामे मैथिली गद्यक जाहि शैलीकेँ अपनाओल ताहि मध्य मैथिलीक अपन विशिष्ट ध्वनिक ध्यान नहि राखि हिन्दी-ध्वनिक अनुकूल वर्ण-प्रयोग कएल। एहि विषयमे म.म. परमेश्वरझाक विरोध करितहुँ ओ एहि दिसि ध्यान नहि देल, जाहिसँ मैथिलीक लेखनशैलीमे तहिआ जे गम्भीर विषमता उत्पन्न भेल से अद्यावधि दूर नहि भए सकल अछि तथा शैलीमे एकरूपता नहि आबि सकल अछि। मुदा गद्य-साहित्यक विकासमे एकसर जतबा कार्य 'मोद'क द्वारा भेल, ततबा कोनो एक व्यक्ति वा संस्था द्वारा कहिओ नहि भए सकल। 'मिथिलामोद'क मैथिल-समाज पर बड़ प्रभाव छल तथा ओकर सम्पादकीयकेँ लोक कहिओ अवहेलना नहि कए सकल। 'मैथिल महासभा'क प्रसंग ओकर विवरण ओ आलोचना 'मोद'क पुरान फाइलमे देखबा योग्य अछि। हिन्दीक अत्याचार जखन मैथिलीक अस्तित्वकेँ नाश करबाक हेतु विशेष संक्रिय भेल तँ म.म. मुरलीधरझा एहि पत्रक माध्यमसँ ओकर विरोध कएल। अपन पत्रमे तँ हिन्दीक स्थान नहिएँ रहए देल, 'मिथिलामिहिर'हुसँ हिन्दीकेँ निष्कृत कए देबाक हेतु अपन पत्रक द्वारा घोर आन्दोलन चलाओल। वस्तुतः 'मोद' तत्कालीन मैथिल समाजक जागरणक दर्पण छल तथा ओकर विचार तत्कालीन मैथिल समाजक प्रगतिशील विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैत छल।

'मिथिलामिहिर' 1909 ई.मे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल ओ बीच-बीचमे बन्द भए, बराबरि प्रकाशित होइत रहल। एकर सम्पादक भेलाह विष्णुकान्तझा शास्त्री (1909-12), म.म. परमेश्वरझा, जगदीश्वर प्रसाद ओझा ओ योगानन्द कुमर (1912-19), जर्नादनझा 'जनसीदन' (1919-21), कपिलेश्वरझा शास्त्री (1922-35), श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' (1935-54), श्रीसुधांशुशेखर चौधरी (1960 सँ 1982); श्रीसुधांशुशेखर चौधरीक अवकाश-ग्रहण करबाक अनन्तर नवम्बर 1982 ई.सँ एकर कार्यवाही सम्पादक भेलाह श्रीहीरानन्दशास्त्री ओ सहायक सम्पादक श्रीगोकुलनाथझा। वस्तुतः 1982 ई.क अन्तसँ जनवरी 1984 ई. धरि साप्ताहिक रूपेँ अनियमिततासँ ग्रस्त भए कहुना ई जीवित रहल, पश्चात् पूर्णतः बन्द भए गेल। दैनिक रूपमे पुनः एकर उदय भेल 20 फरवरी 1984 ई.केँ, परन्तु दैनिक 'मिथिलामिहिर' सन्

1986 ई.क मइसँ आगाँ नहि छपि सकल। पाक्षिक रुपमे ई प्रकाशित होअए लागल श्रीशम्भुनाथझा ओ श्री गोकुलनाथझाक सम्पादकत्वमे मार्च 1987 ई.क दोसर पक्षसँ जे दिसम्बर 1987 ई. धरि नियमित रूपेँ बहार होइत रहल। तत्पश्चात् जुलाइ 1988 मे एक अंक एकर पाक्षिक छपल ओ अगस्तमे ई मासिक रुप धारण कए लेलक। सम्प्रति अप्रैल 1989 सँ एकरहु प्रकाशन बन्द अछि।

आरम्भमे एहि मध्य मैथिलीक स्थान बड़ गौण रहैत छलैक ओ अधिकांश हिन्दीमे सएह लेख छपैत छल। एकर प्रकाशनक आरम्भ मासिकक रुपमे भेल, किन्तु तीन वर्षक पश्चात् साप्ताहिक भए गेल। 1930-31 मे तँ एहि मध्य अंगरेजीक लेख सेहो छपैत छल। परन्तु धीरे-धीरे अंगरेजी-हिन्दीक स्थान गौण होइत गेल एवं मैथिलीक स्थान प्रधान। जहिआसँ एकर प्रकाशन पटनासँ होअए लागल, तहिआसँ एहि मध्य एकमात्र मैथिलीक रचना छपैत रहल। यद्यपि एकर प्रकाशक दरभंगाराजसँ सम्बद्ध सम्पन्न संस्थासभ सएह रहल अछि, तथापि एकरा जतेक ओ जतबा आत्मविश्वासक संग कार्य करबाक चाही, ततबा नहि कए सकल आओर ने तदनुरुप परिनिष्ठित रुपमे मुद्रिते भेल। मुदा आरम्भसँ आइ धरि, मैथिलीक थरथराइत प्रकाशकेँ ई कहिओ मिझाए नहि देलक। अतः 'मिहिर' मिथिलाक जागरण तथा मैथिली साहित्यक संवर्द्धनक सदैवसँ प्रधान वाहन रहल। एकर विशेषांक विशेषतः 1935मे प्रकाशित 'मिथिलांक'क मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहासमे बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि आओर एहि अंकक द्वारा प्राचीन ओ अर्वाचीन मिथिलाकेँ बहुत दूर धरि चिन्हल जा सकैत अछि। 1960क पश्चात् पटनासँ प्रकाशित 'मिहिर'क द्वारा प्रयोगशील आधुनिक साहित्यकेँ विकासक माध्यम भेटलैक, विशेषतः कथा तथा नारीमनोरंजक साहित्यक निर्माणमे ई अपन महत्वपूर्ण योगदान देलक।

पटनासँ प्रकाशित साप्ताहिक 'मिथिलामिहिर'सँ आधुनिक ओ नवीन रीतिक साहित्यक नव-नव निर्माण ओ अनेकानेक प्रतिभाशाली साहित्कारक उदय भेल। अतः साप्ताहिक रुपमे एकर प्रकाशनक अन्त भेलासँ साहित्य-सर्जनाक ई विकासधारा सहसा अवरुद्ध भए गेल। आरम्भमे एकर दैनिक स्वरुपक स्वागत अवश्य भेल, कारण एकरा दैनिक रुप करबाक उद्देश्य छल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक रक्षार्थ एकटा स्थायी मंच प्रदान करब। परन्तु एकरा जेहन दैनिक रुप प्रदान कएल गेल, से अन्य भाषाक दैनिक पत्रिकाक तुलनामे बड़ न्यून स्तरक छल ओ एही कारणे एकरा सम्यक् लोकप्रियता प्राप्त नहि भेलैक। शीघ्र एकर साप्ताहिक रुपक अभाव खटकए लागल, कारण ओहिसँ कमसँ कम मैथिली साहित्यक निर्माण ओ विकासमे तँ योगदान भेटैत छल। दैनिकहुक रुपमे एकर प्रकाशन बन्द भेलासँ एकर अभाव आओर अधिक खटकए लागल। पाक्षिक रुपमे एकर प्रकाशन भेलासँ एकर साप्ताहिक रुपक अभावक यत्किंचित् पूर्त्ति अवश्य भेल, परन्तु शीघ्र एकर मासिक रुप ओ तकर सम्प्रति बन्द भेलासँ ई दुःशंका सर्वथा स्वाभाविक जे कदाचित् ई एहि ऐतिहासिक पत्रिकाक चिर-अस्तक सूचना तँ ने थिक !

1920 धरि मैथिलीक कोनो नवपत्रिकाक प्रकाशन नहि भेल। 1920-30 ई. मध्य पाँच गोट पत्रिका प्रकाशित भेल ओ कोनो अधिक दिन नहि चलल। मिथिलेतर प्रान्त अजमेर (1920-24), पुनः आगरा (1925-26)सँ 'मैथिलीप्रभा'क तथा अलीगढ़सँ 'मैथिलप्रभाकर' (1929-30) छपल। एहि दुनू पत्रिकाक व्यवस्थापक-सम्पादक मथुराक रामचन्द्रमिश्र जैत छलाह तथा एहि प्रकाशनक उद्देश्य छल प्रवासी मैथिललोकनिक संग मिथिलाक मैथिललोकनिक सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित करब। एहिमे ई सर्वथा सफल भेल। एहिसँ साहित्यहुक पर्याप्त उपकार भेलैक। ई पत्रिका हिन्दी-मैथिलीमे लेख प्रकाशित करैत छल। एहि पत्रिकाक उल्लेखनीय लेखक छलाह पुलकितलालदास 'मधुर', छेदीझा 'मधुप', यदुनाथझा 'यदुवर' प्रभृति। कहिओ-कहिओ कुमार गंगानन्द सिंह, भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', प्रमथनाथमिश्र प्रभृति सेहो अपन-अपन लेख ओ कविता एहिमे दैत छलाह। एहिसँ प्रवासी मैथिललोकनिमे मैथिलत्वक अभिमान जागल।

दरभंगासँ एहि अवधिमे 'श्रीमैथिली' (1925-27), 'मिथिला' (1929-31) तथा कृष्णगढ़ बनैलीक कुमार कृष्णानन्दसिंहक संरक्षणमे पाक्षिक पत्र 'मिथिलामित्र' (1931-32) प्रकाशित भेल। 'श्रीमैथिली'क सम्पादक दुइ कर्णकायस्थ विद्वान उदितनारायणदास ओ नन्दकिशोरलाल, 'मिथिला'क कुशेश्वरकुमर ओ भोलालालदास तथा 'मिथिलामित्र'क गौरीनाथझा, धनुषधारीलालदास, पं. मेहशझा ओ शशिनाथ चौधरी छलाह। सर्वप्रथम पूर्णतः मिथीलाभाषामे प्रकाशित 'श्रीमैथिली'क प्रकाशनसँ जेना आधुनिक कवितामे नवीनोन्मुखता आएल तहिना गद्यहुमे। एहिमे विविध विषयक लेख सेहो प्रकाशित होइत छल, कविता ओ कथा मात्र नहि। सुसम्पादनक अभाव ओ मुद्रणमे अधिक अशुद्धि रहितहुँ एहिमे आबि मैथिली गद्य आओर अधिक परिमार्जित ओ नवीन भेल। एहि पत्रक द्वारा साहित्यिक समालोचनाकेँ सेहो प्रश्रय भेटए लगलैक। अतः एकर जे उद्देश्य छलैक- 'मैथिलीक प्रौढ़ताक सम्पादन', से बहुत दूर धरि पूर्ण भेलैक। 'श्रीमैथिली'क प्रकाशन जखन बन्द भए गेल तँ एहि पत्रक कार्यकेँ आगाँ बढ़ओलक 'मिथिला'। ताबत धरि बहुत कालसँ आबि रहल प्राचीनता ओ नवीनताक विवाद चरम सीमा पर पहुँचि गेल छल। 'मिथिला'मे आबि एकर समन्वयक चेष्टा भेल। कुशेश्वर कुमर प्राचीनताक प्रतिनिधित्व कारबाक निमित्त एकर सम्पादक भेलाह तँ भोलालालदास नवीनताक प्रतितिधित्व करबाक हेतु। एहि विषयक सूचना पहिले अंकमे छपल-

'कुमर' पुरातन नीति निरत छथि, 'दास' नवीन समाजी
अछि आशा दुनू दुनूकेँ राखथि सब दिन राजी।।

'मिथिला'मे पहिने साहित्यिक लेखक आधिक्य रहैत छल, मुदा पश्चात आबि

सामाजिक लेख सेहो प्रकाशित होअए लागल। 'मिथिला' 'श्रीमैथिली' जकाँ आधुनिक गद्यक निर्माणमे अभूतपूर्व योगदान देलक। एहि दुनू-पत्रिकामे ओहन-ओहन अधिकांश लेखकलोकनि लिखब आरम्भ कएल, जनिक साहित्य आइ गौरवक वस्तु अछि। ई दुनू पत्र पाँच वर्ष मात्र प्रकाशित भए मैथिली साहित्यक विकासकेँ बड़ आगाँ बढ़ाए देलक। एहि पत्रिकामे सर्वप्रथम प्रकाशमे अएनिहार लेखकलोकनिमे श्रीनरेन्द्रनाथदास, प्रो. हरिमोहनझा, कालीकुमार दास, श्रीमती शामभवी देवी प्रभृतिक नाम अग्रगण्य अछि। 'मिथिला-मित्र'मे सामाजिक समस्या दिसि समुचित ध्यान नहि देल गेल, तथापि मिथिलावासीलोकनिमे माँ जानकीक सन्तान होएबाक गौरव जगएबामे एकर बड़ महत्वपूर्ण योगदान भेल तथा एहि पत्रक द्वारा सर्वप्रथम जानकीनवमीकेँ मैथिललोकनिक राष्ट्रीय दिवसक रुपमे प्रतिष्ठित कएल गेल। एही दृष्टिएँ एकर विशेषांक 'जानकीनवमी'-अंक प्रकाशित भेल। एहि पत्रक द्वारा मैथिली लेखकक रुपमे प्रतिष्ठा लाभ कएल महावीरझा 'वीर', श्रीवल्लभझा, पं. जीवनाथझा, श्यामानन्द झा प्रभृति। एहि चारुक यश मुख्यतः कविक रुपमे अछि, मुदा पं. जीवनाथझा कृतिविद्य निबन्धकार ओ नाटककार सेहो छथि।

1935सँ 1950 ईक मध्य छओ गोट पत्र प्रकाशित भेल ओ एही मध्य बन्दो भए गेल। 'मैथिलीबन्धु'क प्रकाशन अजमेरसँ आरम्भ भेल 1935 ई.मे, जे प्रथम बेर 1944 धरि, पुनः 1945सँ सन् 1957 धरि चलल। अमरजीक अनुसार एकर किछु अंक 1977-78 ई.मे सेहो प्रकाशित भेल छल। एकर सम्पादक भेलाह रघुनाथप्रसाद मिश्र ओ लक्ष्मीपतिसिंह। एहिमे मैथिलीक स्थान 1938 क पश्चात् भेटए लगलैक। एहि मध्य मिथिलाक प्रसिद्ध विद्वानलोकनिक परिचयक प्रकाशन विशेष महत्व रखैत अछि। एकर 'विभूति-अंक' स्थायी महत्वक वस्तु थिक। 'मैथिलयुवक' (1938-41)क प्रकाशन अजमेरहिसँ चुन्नीलालक सम्पादकत्वमे एवं 'जीवनप्रभा' (1940-50) क आगरा ओ झाँसीसँ व्रजमोहनझाक सम्पादकत्वमे भेल। पहिने ई पत्रिकासभ जातीय पत्रिका छल, पाछाँ मैथिल समाजक विविध समस्या पर सेहो लेख छापए लागल, जाहिसँ प्रवासी मैथिललोकनिक मिथिलाक संग सम्पर्क स्थापित भेल। एकर सबसँ महत्वपूर्ण कार्य भेल प्रवासी मैथिललोकनिकमे मैथिली भाषाक प्रति अभिरुचि उत्पन्न करब।

दरभंगासँ 'भारती' (1937)क प्रकाशन भेल 'मैथिली-साहित्य परिषद्' दिसिसँ एवं 'मैथिली-साहित्य-पत्र' (1936-39)क नवशिक्षित विद्वज्जनक समन्वित सहयोगसँ। 'भारती'क सम्पादक छलाह स्व. भोलालालदास ओ 'मैथिली साहित्य-पत्र'क स्व. रमानाथझा। तेसर पत्र 'विभूति' (1937-38) मासिक प्रकाशित भेल मुजफ्फरपुरसँ बाबू भुवनेश्वरसिंह 'भुवन'क सम्पादकत्वमे।

'विभूति' ओ 'भारती' दुनू मासिक पत्र छल। मैथिली साहित्यमे 'भारती'क महत्व अछि गम्भीर साहित्यिक प्रकाशन ओ प्रचारक दृष्टिएँ। साहित्यिक समालोचना,

यात्रा तथा प्राचीन स्थायी मूल्यक वस्तुक प्रकाशनक दृष्टिएँ सेहो एकर बड़ महत्व अछि। पाछाँ ई ई पत्र व्यक्तिगत विवादसँ बँचिकेँ चलए चाहैत छल, मुदा से भेलैक नहि। पाछाँ दरभंगाराजक प्रभावमे आबि भुवनजी पर व्यक्तिगत आक्षेप करैत व्यंग्यचित्र प्रकाशित कए विवादक विषय भए गेल ओ शीघ्र एकर अन्त भए गेलैक। भुवनजीक 'विभूति' प्रगतिशील उद्देश्यँ अवतरित भेल छल। भुवनजी क्रान्तिकारी विचारक निर्भीक व्यक्ति छलाह ओ ओहि युगमे हुनक निर्भीकता प्रगतिशील व्यक्तिमे तँ लोकप्रिय अवश्य भेल, मुदा ओही कारणे 'विभूति'क अन्तो भए गेलैक। भुवनजी एहिमे म.म. मुरलीधरझाक शैली अपनाओल, मुदा से संक्षिप्तताक दृष्टिएँ, कारण, 'आपाद'क भूमिकामे प्रकाशित हुनक गद्यशैली मैथिली ध्वनिक सएह अनुसरण कएने अछि। नवीनताक दृष्टिएँ 'विभूति'क प्रकाशन मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे स्वर्णाक्षरसँ लिखबा योग्य अछि। नवीन शिल्पक दृष्टिएँ मैथिलीक गल्प-साहित्य सभसँ पहिने एही मध्य प्रकाशित भेल। एहिमे प्रकाशित हास्य-व्यंग्य बड़ मार्मिक होइत छल ओ आइओ नवीनताक एक विलक्षण अध्यायक दृष्टिएँ एहिमे प्रकाशित सामग्री मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन वैशिष्ट्य रखैत अछि। एकर अध्ययनसँ भुवनजी ओ हुनक विचारधाराक कविलेखकवृन्दक प्रवृत्ति-विश्लेषणमे बड़ सहायता भेटि सकैत अछि। दरभंगाराजक संग व्यक्तिगत विवादक कारणे एहि पत्रिकाक प्रकाशनक अन्त भेल यद्यपि ई बड़ लोकप्रिय छल तथा एकर वार्षिक मूल्य साबा टाका मात्र छलैक।

'मैथिली-साहित्य-पत्र' वस्तुतः पुस्तकमाला-रीतिक त्रैमासिक पत्र छल आओर एहिमे पहिल बेर स्थायी मूल्यक ग्रन्थसँ मैथिली साहित्यक निधिकेँ सम्पन्न कए देबाक सुनियोजित प्रयास भेल। एहि पत्रमे मैथिली साहित्यक गौरवग्रन्थसभ, यथा, गोविन्ददासक 'शृंगारभजनगीतावली', रत्नपाणिझाक 'उपाहरण', कविशेखर बदरीनाथझाक 'एकावली-परिणय', प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कीचकवध', स्व. ईशनाथझाक 'चीनीक लड्डू' प्रभृति क्रमशः प्रकाशित भेल। मुदा एहि पत्रक सभसँ महत्वपूर्ण कार्य भेलैक मैथिलीक लेखनशैलीक व्यवस्थापन। प्रो. रमानाथझा विभिन्न वर्गक लब्धप्रतिष्ठ विद्वानलोकनिक सम्मति लए, सभक मतकेँ ध्यानमे रखैत मैथिली ध्वनिक अनुकूल शैली निश्चित कएल ओ ओही शैलीमे सब पुस्तक छापल जे पाछाँ विद्वज्जनमे अधिकाधिक प्रचलित भेल। यद्यपि एम्हर आबि पुनः विषमता बढ़ैत दृष्टिगोचर होइत अछि, मुदा अधिकांश नव-पुरान विद्वज्जन एकरहि मानि लेने छथि ओ एही शैलीमे लिखैत छथि।

'मैथिली-साहित्य-पत्र'क पश्चात् पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे गत्यवरोध जकाँ उत्पन्न भए गेल। एहि गत्यवरोधकेँ भंग कएल 10-11 वर्ष पश्चात् श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन 'स्वदेश' (1948) मासिकक प्रकाशन कए जे बड़ अल्पजीवी भेल, छओ मास मात्र चलल। सामग्री-चयन, सम्पादन ओ मुद्रणक शुभ्रता प्रभृति सभ दृष्टिएँ ई पत्र बड़ आकर्षक छल। इएह 'स्वदेश' 9 अक्तूबर, 1955 ई.सँ 27 दिसम्बर, 1955 धरि

दैनिकक रुपमे सेहो प्रकाशित भेल, प्रयोगक रुपमे एकरा पुनः दैनिक रुपमे प्रकाशित करबाक प्रक्रियामे सुमनजी 15 अगस्त 1981 सँ एकर किछु अंक साप्ताहिक, पुनः 'अर्द्ध-साप्ताहिक-प्रयोग'क रुपमे प्रकाशित कएल। परन्तु इहो प्रयोग सफल नहि भेल। अतः एकरे मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र होएबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। 1948 ई. मे एक गोट दोसर मासिक पत्रिका 'मिथिलाज्योति' सेहो पटनासँ श्रीदुर्गापतिसिंहक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल। मुदा 'स्वदेश'हि जकाँ इहो शीघ्र कालकवलित भए गेल। एहिमे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ लेखकक्कविक अतिरिक्त तरुण मैथिली साहित्यकारलोकनिक श्रेष्ठ रचना छपैत छल। समाजोपयोगी समस्या पर व्यंग्यचित्रक प्रकाशन एहि पत्रक प्रधान आकर्षण छल। 1948 ई.क तेसर मासिक पत्र छल 'पल्लव' जकर प्रायः एकमात्र अंक अगस्तमे नेहरा (दरभंगा)सँ श्रीवीरेन्द्रकुमार चौधरीक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल छल। परन्तु तत्पश्चात् वर्ष-मास-चर्चाविहीन त्रैमासिक 'पल्लव'क सम्पादक भेलाह डा. शैलेन्द्रमोहनझा। प्रायः उपर्युक्त मासिक ओ त्रैमासिक भिन्न-भिन्न पत्रिका छल। परन्तु त्रैमासिक 'पल्लव' अनियमितकालीन छल, भिन्न-भिन्न स्थानसँ प्रकाशित भेनिहार, जकर 1948-58 मध्य प्रायः कुल बारह अंक मात्र प्रकाशित भेल। अतः एकरा सामयिक बुलेटिनक संज्ञा देब अधिक उपयुक्त होएत। तथापि एकर साहित्यिक उपयोगिताकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि।

26 जनवरी, 1950 ई.सँ 'वैदेही'क पाक्षिकक रुपमे छओ अंकक प्रकाशन सीतामढ़ीसँ भेल जखन कृष्णकान्तबाबू सीतामढ़ीमे रहैत छलाह। दरभंगाक मिथिला कालेजमे हुनक नियुक्ति भए गेलासँ एक मइसँ दरभंगहिसँ 'वैदेही' क्रमिक आर्कषक रुपमे सन 1952 ई. धरि, पुनः जनवरी 1953 मासिक रुपमे प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन', श्रीसुधांशुशेखर चौधरी ओ प्रो. कृष्णकान्तमिश्रक संयुक्त-सम्पादकत्वमे प्रकाशित होअए लागल। किछु दिन एकर सम्पादन श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ओ किछु दिन सोमदेवजी सेहो कएलैन्हि। मासिक भेलाक अनन्तर एहि मध्य आकर्षक साहित्यिक सामग्री बहार होइत छल आओर एकरा मैथिलीक प्रतिनिधि साहित्यकारलोकनिक सहयोग प्राप्त छलैक। मुदा एकर स्तर क्रमिक खसैत गेलैक। बीच-बीचमे कएक बेर ई बन्दो भए गेलैक। पुनः अमरजी ओ सोमदेवजी एहिमे नव-चेतनाक संचार करबाक कएक बेर चेष्टा कएल। एहि पत्रिका द्वारा नवीन रीतिक कथाक अद्भुत विकास भेल। किछु उच्च कोटिक कविता ओ निबन्ध सेहो प्रकाशित भेल। कहिओ-कहिओ नीक साहित्यालोचना सेहो छपल। एकर कथा, समालोचना, एकांकी प्रभृति विशेषांक बड़ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल। सर्वतोभावेन 'वैदेही' द्वारा साहित्यक बड़ उपकार भेल। एकरहु प्रकाशन 1973 ई.क पश्चात् बन्द भए गेल, परन्तु प्रसन्नताक विषय जे पुनः एकर प्रकाशन प्रो. श्री कृष्णकान्तमिश्रक सम्पादकत्वमे जुलाई 1988 ई.सँ आरम्भ भेल अछि। एकर अतिथि सम्पादक श्री रमानन्द रेणुक विशेष प्रयाससँ प्रकाशित समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन-सम्बन्धी 1989क एकर विशेषांककेँ सरिपहुँ वैदेहीक नवीन उपलब्धि कहल

जाए सकैत अछि।

'मिथिलादर्शन'क प्रकाशन 1953सँ आरम्भ भेल जे बीचमे कतेक बेर बन्द भए पुनः प्रकाशित होइत रहल। एकर प्रथम सम्पादक छलाह प्रो. प्रबोध नारायण सिंह। वस्तुतः एकर सम्पादकत्वमे कएक बेर परिवर्तन भेल, परन्तु अधिकांशतः प्रबोधबाबू एकर सम्पादक रहलाह ओ संयुक्त सम्पादिका भेलीह क्रमशः हुनक विदुषी पत्नी श्रीमती अणिमासिंह एवं पुत्री श्रीमती इलारानीसिंह। 1971 ई. मे एकर सम्पादक भेलाह श्री बाबू साहेब चौधरी। श्रीप्रबोधबाबूक संग मतभेदक कारणे सन 1974 ई. मे श्री बाबूसाहेब चौधरी 'मैथिली दर्शन'क नामसँ एकटा नवे पत्रिकाक प्रकाशन करए लगलाह ओ दुनू पत्रिका किछु दिन समानान्तर प्रकाशित भए बन्द भए गेल। 'मिथिलादर्शन'क प्रकाशनक उद्देश्य छल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक उचित अधिकारक हेतु संघर्ष करब। 1958 ई.सँ एकर प्रत्येक अंकमे तँ उद्बोधन वाक्य छपए लागल छल। :-

अछि सलायमे आगि, बरत की बिना रगड़ने।
पायब निज अधिकार, कतहु की बिना झगड़ने।।

अतः एहिमे तेहने लेख, कविता प्रभृति अधिक संख्यामे छपैत छल तथा ओहन समाचारक प्रकाशनकेँ प्रमुखता देल जाइत छल जाहिसँ एहि उद्देश्यक पूर्त्ति हो। तथापि नव रुपक साहित्य, मुख्यतः कथा आ कविताक अभिवृद्धिमे ई मासिक पत्र बड सहायक सिद्ध भेल। 1953 हिसँ साहित्यिक बुलेटिन जकाँ 'चौपाड़ि' सेहो बाबू लक्ष्मीपति सिंहक सम्पादकत्वमे पटनासँ छपब आरम्भ भेल, जाहि मध्य छोट-छोट लेख, कविता, कथा, एकांकी प्रभृति प्रकाशित होइत छल। एहिमे प्रकाशित सामग्री उत्कृष्ट ओ मार्मिक होइत छल ओ जतबहि दिन छपल ततबहि दिनमे मैथिली साहित्यक बड उपकार भेल। 'चौपाड़ि'क पश्चात् कानपुरसँ श्री सम्पतिमिश्रक सम्पादकत्वमे 'मिथिला-दूत' मासिकक सन् 1955 ई.क जनवरी माससँ एवं लहेरियासरायसँ श्री गिरिधरनारायणक सम्पादकत्वमे 'नूतन विश्व'क प्रकाशन सन् 1957 ई.क मइमाससँ आरम्भ भेल। 'मिथिलादूत' किछुए अंक प्रकाशित भए बन्द भेल, आनन्दमार्गीय 'नूतन विश्व' तीन वर्ष धरि चलल। 'निर्माण' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका छल, जाहि मध्य श्री अमरजीक सम्पादन-काल (1955-56) मे किछु रचना मैथिलीक सेहो प्रकाशित भेल। एहिसँ अतिरिक्त 'कृष्णभवन-पत्रिका', 'उदयन' आदिक सेहो कतहु-कतहु उल्लेख भेटैत अछि, परन्तु एहि पत्रिकासबसँ मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे किछु संख्याक वृद्धि मात्र भेल।

1960 ई.मे आबि दुइटा उल्लेखनीय साहित्यिक पत्रक प्रकाशन भेल- 'इजोत' ओ अभिव्यंजना'क। 'इजोत' दरभंगासँ प्रकाशित होइत छल तथा एकर सम्पादक छलाह संयुक्त रुपसँ सुमनजी, शेखरजी ओ अमरजी। ई तीन अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। एहि पत्रक उद्देश्य छलैक छात्रोपयोगी साहित्यिक निबन्धकेँ प्रकाशित करब। एहिमे गौण रुपसँ कविता, कथा प्रभृति सेहो प्रकाशित होइत छल। 'अभिव्यंजना' द्वैमासिकक प्रकाशन पटनासँ श्रीमायानन्दमिश्रक सम्पादकत्वमे आरम्भ भेल। मुदा

[illegible] एक अंक मात्र छपि बन्द भए गेल। पुनः एकर प्रकाशन सहरसासँ भेल आओर कुल मिलाए चारि-पाँचटा अंक एकर प्रकाशित भए सकल। एहि पत्रक उद्देश्य छल नव कविता, नव कथा प्रभृतिक प्रकाशन-प्रोत्साहन। एहि पत्रिकामे किर्तनियाँनाटक मैथिली नाटक वा नहि, ताहि प्रसंग विवाद आरम्भ भेल ओ खडन-मंडन छपल। प्रयोगवादी काव्यान्दोलनकेँ व्यापक रूपमे गति देबाक दृष्टिएँ एहि पत्रिकाक विशेष महत्व अछि।

1950 ई.क पश्चात् दुइ गोट साप्ताहिक पत्रिका सेहो प्रकाशित भेल। 1. डा. श्रीलक्ष्मणझाक सम्पादकत्वमे 'मिथिला' (1952), जाहिमे प्रगतिशील विचारक कविता, लेख, समाचार-टिप्पणी प्रभृति छपैत छल। मुदा ई शीघ्र बन्द भए गेल। इएह 'मिथिला' पुनः 1960 ई.मे स्व. भोलानाथ मिश्रक सम्पादकत्वमे छपए लागल, मुदा पुनः बन्द भए गेल। 1968क जनवरी माससँ 'मिथिला'क सांस्कृतिक-साहित्यक मासिकक रूपमे पुनः स्व. भोलानाथ मिश्रहिक सम्पादकत्वे एक अंक मात्र छपल। एहिमे जनिक लेख छपल से छथि प्रो. रमानाथझा, डा. लक्ष्मणझा, प्रो. तन्त्रनाथझा, सुमनजी प्रभृति सन मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ लेखक ओ कवि। दोसर साप्ताहिक 'मिथिलासेवक' श्रीरमाकान्तझा सम्पादकत्वमे 1954सँ 1957सँ धरि कलकत्ताक मिथिला-संघ द्वारा प्रकाशित भेल। एकरहु उद्देश्य प्रचारात्मके छलैक, तथापि एहिमे साहित्यिक लेख, कविता, कथा प्रभृति सेहो छपैत छल।

एहि ठाम दुइ गोट बालमासिकक चर्चा कए देब आवश्यक होएत। सर्वप्रथम 'बटुक' प्रयागसँ 1949 ई.मे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल जे किछु वर्ष बन्द भए पुनः 1959-60 ई.सँ डा. श्रीसुधाकान्तमिश्रक सम्पादकत्वमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल ओ तहिआसँ बराबरि प्रकाशित भए रहल अछि भनहिँ अत्यधिक क्षीण आकारमे। दोसर बालमासिक थिक 'धिया-पुता', जे 1957 ई.मे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल लोहना (मधुबनी)सँ ओ 1960 ई. धरि चलल। मुदा नियमित ई कहिओ प्रकाशित नहि भए सकल। एकर सम्पादक छलाह श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'। एहि दुनू पत्रिका द्वारा बालोपयोगी साहित्यक निर्माणमे बड़ सहायता पहुँचल। एही पत्रिकाक श्रेणीमे 'शिशु'क उल्लेख सेहो कएल जा सकैत अछि जकर एक अंक मात्र दरभंगासँ प्रकाशित भेल।

सन 1960-70 ई. मध्य अनेक पत्रिका प्रकाशित भेल, यथा, त्रैमासिक 'मैथिली साहित्य-परिषद्-पत्रिका' (1962), 'अभियान' (1963), 'मैथिली कविता' (1968), [illegible], पुनः [illegible] 'मैथिली प्रकाश' (1968), 'मिथिला-भूमि' (1969), [illegible] 'मिथिला-भारती' (1969), पाक्षिक 'मैथिली परिजात' (1962) एवं 'सम्पर्क-सूत्र' (1966), साप्ताहिक, पुनः पाक्षिक 'मैथिली समाचार' (1963), साप्ताहिक 'जनक' (1964), 'मिथिला-अमर' (1967),

'मिथिला-वाणी' (1968) एवं 'स्वदेश-वाणी' (1969), मासिक 'आखर' (1967), 'सोनामाटि' (1969), 'मिथिला-आलोक' (1969) आदि। एहि मध्य प्रयागसँ श्री उमाकान्त द्वारा सम्पादित 'मैथिली समाचार' एवं पांडू (आसाम)सँ श्री परमानन्द प्रसादकर्ण-द्वारा सम्पादित 'सम्पर्क-सूत्र'केँ पत्रिकाक स्थान पर साधारण अनियमितकालीन सूचना-पत्रक संज्ञा देल जाए तँ सएह उचित। इहो सूचना-पत्र अधिक दिन नहि चलल ओ जनसामान्य मैथिली-प्रेमी जनताक के कहए, साहित्य-सेविअहुसँ सम्पर्क-सूत्र स्थापित नहि कए सकल।

एतए सर्वप्रथम उल्लेखनीय अछि, स्व. रमानाथझा, सुमनजी, किरणजी ओ डा. श्रीकृष्णमिश्रक सम्पादकत्वमे प्रकाशित 'मैथिली-साहित्य-परिषद-पत्रिका'क 1962 ई.मे प्रकाशित एकमात्र अंक जाहिमे 'राधा-विरह'क किछुअंश, संगहिँ प्रो. तन्त्रनाथझा, किरणजी, ज्यो. बलदेवमिश्र, पं. गोविन्दझा प्रभृतिक गवेषणात्मक निबन्ध प्रकाशित भेल छल। 24 वर्षक पश्चात् इएह परिषद्-पत्रिका दिसम्बर 1986 सँ पुनः डा. नवीनचन्द्रमिश्रक सम्पादनमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल ओ अनेक बेर सम्पादकमे परिवर्त्तनसंग एकर आठ गोट अंक 1988 ई. धरि प्रकाशित भए सकल चुकल अछि। परन्तु 1962 ई.क एकर गवेषणात्मक स्वरूपकेँ त्यागि एहि मध्य सामान्य पत्रिका जकाँ कविता, कथा, निबन्धादि छपैत अछि ओ परिषद्-पत्रिकाक जे स्तरीयता अपेक्षित अछि, तकर अभाव बूझि पड़ैत अछि। 1963 ई. मे पटनासँ डॉ. श्री आनन्दमिश्रक सम्पादनमे 'अभियान' त्रैमासिक पत्रिकाक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि, जकर दुइ अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। पृष्ठ-संख्या, मुद्रणाक शुभ्रता, रूप-सज्जा, स्तरीय लेखादि प्रभृति सब दृष्टिएँ ई मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे एकटा नवीन कीर्तिमान स्थापित कएने छल। तेसर त्रैमासिक पत्रिका जमशेदपुरसँ 1969ई. मे श्री प्रभाकरमिश्रक सम्पादकत्वमे 'मिथिलाभूमि' प्रकाशित भेल ओ कहुना चारि-पाँच साल धरि जीवित रहल। एकर उद्देश्य छल मैथिली पत्रकारिताकेँ समृद्ध कए मैथिलीक न्यायोचित अधिकारक हेतु संघर्ष करब।

दरभंगासँ श्रीअमर-द्वारा सम्पादित साप्ताहिक 'जनक' 1964 ई.क दिसम्बरसँ 1965 ई.क जुलाइ धरि ओ श्रीमिहिर-द्वारा सम्पादित 'मैथिली पारिजात' (1964, जनवरी)क दुइ अंक मात्र प्रकाशित भए सकल आओर जा एकर अस्तित्वक ज्ञान जिज्ञासुगणकेँ होइन्हि, ताहिसँ पहिनहि एहि दुहूक अन्त भए गेल। एहि दुहूक अपेक्षा देवघरसँ प्रो. श्रीचन्द्रधर-द्वारा 'स्वदेशवाणी' साप्ताहिक अपेक्षाकृत अधिक दीर्घजीवी भेल। 1969 ई.क जूनसँ एकर कुल मिलाए 21टा अंक प्रकाशित भेल। 'भवप्रीतानन्द-विशेषांक' एकर विशेष उपलब्धि कहल जा सकैत अछि। एकर मुख्य उद्देश्य छल संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थानक हेतु आन्दोलन चलाएब।

एहि अवधिक अन्य पत्रिकामे 'मिथिलाअमर' पाक्षिक पत्रिका श्री रमेशचन्द्रठाकुरक सम्पादकत्वमे अलीगढ़सँ 1967 ई. मे प्रकाशित होअए लागल छल, जे प्रायः छओ मास चलल। ई जातीय पत्र छल। 1967क नवम्बर माससँ श्री कीर्तिनारायणमिश्र ओ वीरेन्द्रमल्लिकक सम्पादकत्वमे 'आखर' नामक मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित होअए लागल जे सामग्री-चयन ओ मुद्रण दुनू दृष्टिएँ नवीनतम छल एवं एहि मध्य आधुनिक विधाक साहित्यिक वस्तु छपैत छल। 1968क अक्टूबर मास धरि ई प्रकाशित भए सकल। 'राजकमल-स्मृति-अंक' एकर विशेष उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। 1968 ई. मे कविताकेँ स्वस्थ दिशा प्रदान करबाक निमित्त 'मैथिली कविता' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होएब आरम्भ भेल, जकर सम्पादक छलाह श्रीनचिकेता। एकर छओ अंक प्रकाशित भेल ओ मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अपन अभिनव उपयोगिताक कारणे अपन महत्व स्थापित कए गेल। कालपुरुष-सम्पादित 'अनामांक सेहो इएह गति भेलैक। 1968 ई. जून माससँ दरभंगासँ श्री योगेन्द्रझाक सम्पादकत्वमे राजनीतिक साप्ताहिक 'मिथिलावाणी'क प्रकाशन सेहो आरम्भ भेल, मुदा नियमित रुपसँ एकरो प्रकाशन नहि भेल।

फरवरी 1969सँ नवलेखनक प्रोत्साहनक हेतु श्री भारतीभक्तक प्रधान सम्पादकत्व मे प्रकाशित 'सोनापटि' कथा-प्रधान मासिक पत्रिका छल जे नियमित रुपसँ कहिओ प्रकाशित नहि भेल ओ एकर तीन वर्षमे आठ अंक मात्र बहराए सकल। विविध विधाक स्तरीय प्रकाशनक दृष्टिएँ एकरो महत्वकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि।

1970 ई.क पूर्व दुइगोट उल्लेखनीय शोध-पत्रिकाक प्रकाशन भेल- कलकत्तासँ 'मैथिली प्रकाश' (1968) एवं पटनासँ 'मिथिला-भारती' (1969)। मैथिली-प्रकाशन-समिति दिसिसँ प्रकाशित 'मैथिली प्रकाश' आरम्भमे अर्द्धवार्षिक, पुनः चतुर्मासिक रुपमे प्रकाशित भेल। 1974 ई.सँ एहि मध्य कविताकथादिक सेहो समावेश होअए लागल, परन्तु वार्षिक विशेषांकमे शोध-अनुसन्धान-विषयक निबन्ध मात्र प्रकाशित होइत छल। एहि पत्रिकाक सम्पादक-मण्डलमे सर्व श्री गोविन्दझा, श्रुतिधर, मदन चौधरी, नन्दनझा एवं श्यामनन्दपाठक छलाह एवं एहि पत्रिकाकेँ मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ विद्वन्लोकनिक सहयोग प्राप्त भेलैक। त्रैमासिक 'मिथिला-भारती' मैथिली साहित्य-संस्थान दिसिसँ डा. श्रीजगदिशचन्द्रझाक मुख्य सम्पादकत्वमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल, परन्तु दुइ वर्ष मात्र प्रकाशित भए सकल। एहि मध्य उच्च कोटिक प्रबन्ध-लेख प्रकाशित होइत छल, यथा, प्रो. रमानाथझाक 'मैथिली ब्राह्मणक पंजी-व्यवस्था', श्री सुशीलकुमारझाक 'अठारहम शताब्दीक दुइ गोट अपूर्ण निर्णय-पत्र', श्रीजटाशंकरझाक 'उन्नैस शताब्दीक मिथिलामे कन्यादानक समस्या', प. राजेश्वरझाक 'मिथिलाक्षरक उद्‌भव ओ विकास' प्रभृति। एकर 'डा.

उमेशमिश्र-स्मृति-विशेषांक' विशेष उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। 1979 ई. मे इएह 'मिथिला-भारती' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिकाक रुपमे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा पुन प्रकाशित होअए लागल छल, जकर प्रधान सम्पादक भेल छलाह श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, मुदा दुइ-तीन अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। तेसर 'मैथिली अनुसन्धान पत्रिका' 1971 ई. मे डा. श्रीसुधाकान्त मिश्रक सम्पादकत्वमे मैथिली एकेडमी, इलाहाबादसँ सेहो प्रकाशित होएब आरम्भ भेल छल, परन्तु एकर एक अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। वस्तुत मैथिलीक अनुसन्धान-अनुशीलन ओ शोध-विषयक साहित्यकेँ परिपुष्ट करबाक दृष्टिएँ एहि तीनू पत्रिकाक योगदान मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अन्यतम कहल जाए सकैत अछि।

1970 ई.क पश्चात् अनेक छोट-छोट पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ तँ अवश्य भेल, परन्तु प्रायः सब पत्रिका पूर्वक इतिहासकेँ दोहरओलक, अर्थात् किछु अंक प्रकाशित भए दिवंगत होइत गेल। कलकत्तासँ 1970 मे श्री वीरेन्द्रमल्लिक ओ श्रीगुणनाथझा 'मिनीपत्रिका' प्रकाशित करबाक प्रयोग कएल जकर मइ मासक एकमात्र अंक दृष्टिपथ पर आएल तथा श्री शिवाकान्तपाठक द्वारा प्रकाशित मासिक 'बागमती' (मार्च 1970) दरभंगासँ छओ मास धरि कहुना प्रकाशित भेल। दरभंगासँ श्री नारायणझाक सम्पादकत्वमे 'शक्ति-भूमि' (1971)क दुइ अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। दरभंगासँ 'अम्बर-ज्योति' (1972) श्री छत्रधारी दास सम्पादित कए मासिकक रुपमे किछु अंक प्रकाशित कए सकलाह। श्रीगुणनाथझा मैथिलीक प्रथम नाटक-विषयक पत्रिका 'लोकमंच' (1970)क प्रकाशन आरम्भ कएल, परन्तु एकर दुइ अंक मात्र अनियमित रुपेँ प्रकाशित भए सकल। दोसर नाट्य-पत्रिका 'रंगमंच' अर्द्धवार्षिक रुपमे श्री रामलोचन ठाकुरक सम्पादकत्वमे कलकत्तासँ 1973 ई. प्रकाशित होएब आरम्भ भेल छल, परन्तु एकरो एक अंक मात्र दृष्टिपथ पर आएल। एहि दुहू पत्रिकाक नाट्य-साहित्यक अनुशीलनक दृष्टिएँ ऐतिहासिक महत्व अछि।

नव्यतम रीतिक साहित्यक प्रचार, प्रसार, विकास ओ प्रोत्साहनक हेतु तीन गोट पत्रिकाक प्रकाशन भेल- सहरसासँ जटायुक सम्पादकत्वमे 'थाकुर', पटनासँ श्री कुलानन्दमिश्रक सम्पादनमे 'सन्निपात' एवं कलकत्तासँ श्री वीरेन्द्रमल्लिकक सम्पादनमे 'अग्निपत्र' (1973) क। एहि तीनू पत्रिकाक माध्यमसँ नवलेखनकेँ प्रोत्साहन देल गेल एवं अनेक तरुण कवि ओ कथाकारक मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे प्रवेश भेल। आधुनिक रुप-सज्जा ओ नव्यतम विषयचयनक दृष्टिएँ 'अग्निपत्र'क विशेष रुपेँ उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एकर माध्यमसँ अग्निजीवी साहित्यकारक एक वर्गक उदय भेल। परन्तु इहो पत्रिका अनियमित रुपसँ कहिओ-कहिओ प्रकाशित होइत रहैत छल। दरभंगासँ 1974 क वसन्त-पचमीसँ कांग्रेस-नीतिक समर्थक श्री रामचन्द्र मिश्रक सम्पादकत्वमे 'चरचा' साप्ताहिकक प्रकाशन आरम्भ भेल, परन्तु स्व. ललित बाबूक

वरद हस्त रहितहुँ एकर पाँच अंक मात्र कहुना छपि सकल।

दरभंगासँ प्रकाशित ओ क्रमशः श्री ए. सी. दीपक ओ सोमदेव द्वारा सम्पादित **'मातृवाणी'** पाक्षिक ओ **'मातृभूमि'** साप्ताहिक पत्रिकाक सेहो एतए उल्लेख करब आवश्यक अछि। वस्तुतः ई दुनू पत्रिका सामाजिक-राजनीतिक छल। **'मातृवाणी'** (1971) यदि निर्भीकताक हेतु प्रसिद्ध भेल तँ **'मातृभूमि'** यत्किंचित् साहित्यिकताक हेतु सेहो। परन्तु ई दुनू पत्रिका नियमित रुपसँ प्रकाशित कहिओ नहि भेल। कलकत्तासँ 'शिखा' (रा. अग्नि पुष्प) ओ दरभंगासँ **'टटका'** (स. दिनराज शाण्डिल्य) तथा सामयिक संकलनक रुपमे **'माहुर'** (स. हरजीतसिंह) ओ **'भूर'** (स. नूतन राकेश), **'समन्वय'** (1964 स. विदित), चाड़ु.र (1972, जटायु) सेहो उल्लेखनीय थिक, जकर एक-दुइ अंक मात्र प्रकाशित भए सकल छल।

'महात्वाकांक्षी' तरुण साहित्यकारलोकनि द्वारा एहि प्रकारक सामयिकीय पत्रिकाक प्रकाशनक परम्परा परवर्त्ती कालहुमे अक्षुण्ण रहल, जाहि मध्य **भुम्हुर** (स. दयानन्द मिश्र), **लाल धूआँ** (1976 स. अष्टावक्र), **'सन्निपात** (कुलानन्दमिश्र), **संकल्प** (1980 स. केदार कानन) प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एतहि विद्यापति-पर्वक अवसर पर भारतवर्षक विभिन्न मैथिली-सेवी-संस्था द्वारा वर्षमे एक बेर प्रकाशित सामयिकीयसबहिक सेहो चर्चा कएल जाए सकैत अछि, यथा, दिव्यांशुकिरण (1971-72, चित्रगुप्त सभा, पटना) **मिथिलामयंक** (1976-77, गोहाटी), **संकल्प** (1970-88 संकल्पलोक, लहेरियासराय), मिथिलांचल (1978, दिल्ली), स्मारिका (1979, इस्पातनगर, बोकारो) प्रभृतिक, परन्तु एहन वार्षिक प्रकाशनहुमे नियमितताक निर्वाह करबामे अधिकांश संस्था समर्थ नहि भए सकल।

सन् 1976-81 मध्य पटनासँ चारि-चारि गोट पत्रिकाक प्रकाशन भेल, से विविध रीतिक। सर्वप्रथम नवलेखनक समर्थन एवं संवर्द्धनक दिशामे श्री कुलानन्दमिश्र ओ श्री मोहन भारद्वाज द्वारा सम्पादित **'सन्निपात'**क कालक्वलित भए गेला पर श्री कुलानन्दमिश्र 1976 ई.क चतुर्थ चरणमे **फराक'** मासिकक प्रकाशन आरम्भ कएल, परन्तु एकरहु ओएह गति भेल जे पूर्वमे 'सन्निपात'क भेल छल, अर्थात्, इहो एकहु वर्षक स्वस्थ आयु प्राप्त नहि कए सकल। एहिना मैट्रिकक नवीन पाठ्य-क्रमसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ हटाए देल गेल तँ मैथिलीक अधिकार-प्राप्त्यर्थ आन्दोलन चलएबाक निमित्त अभिन्न-मित्रक सम्पादकत्वमे अगस्त 1978 ई.सँ **'समाद'** साप्ताहिकक प्रकाशन होअए लागल ओ एकर सात अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। पुनः **'विकल्प'**क नामान्तरेँ इएह **'समाद'** श्री विवेकानन्दक सम्पादकत्वमे चारि अंक मात्र छपि बन्द भए गेल। लोहना (मधुबनी)सँ ओही वर्ष श्री शैलेन्द आनन्दक सम्पादकत्वमे प्रगतिशील चेतनाक संवाहक 'आहुति' त्रैमासिकक प्रकाशन आरम्भ भेल, किन्तु अनियमित रुपसँ किछुए अंक

प्रकाशित भए सकल।

1979 ई.मे कथा मासिक **'कथादिशा'**क प्रकाशन एतए विशेष रुपसँ उल्लेखनीय थिक। 1967 ई.मे कालपुरुषक सम्पादकत्वमे **'अनामा'**क तीन अंक मात्र प्रकाशित भेल छल। बारह वर्षक अनन्तर 'अनामा'क चारिम अंक कथामासिकक रुपमे श्री प्रभास कुमार चौधरी ओ श्री गंगेश गुंजनक संयुक्त सम्पादकत्वमे नवम्बर 1979 ई.मे प्रकाशित भेल। एकर अग्रिम दुइ अंक (दिसम्बर 1979 एवं जनवरी 1980) नियमित रुपसँ मुद्रित भए पुनः छओ मासक विश्राम लेब एकरा आवश्यक भए गेलैक। छओ मासक पश्वात् 'अनामा' **'कथादिशा'**क नवीन संज्ञा धारण कए उपर्युक्त दुइ कथाकारहिक सम्पादकत्वमे प्रकाशित होअए लागल जे किछु मास प्रकाशित भए बन्द भए गेल। मैथिली पत्रक इतिहासमे 'कथादिशा'क महत्व अछि कथा-विषयक एकमात्र पत्र होएबाक कारणे। आधुनिक मैथिलीक नव्यतम कथा-साहित्यक विकासमे 'कथादिशा'क महत्वकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि। एकरा मैथिलीक कृतविद्य प्रौढ़ कथाकारलोकनिक सहयोग प्राप्त छलैक, संगहि उपाकिरणखान, लिलीरे, नीरजारेणु, विनोद बिहारी लाल, विभूति आनन्द, विनोद भारती प्रभृतिक समान कतोक प्रतिभाशाली ओ तरुण कथाकारलोकनिक श्रेष्ठ रचनाक प्रकाशन एहि क्षेत्रमे एकर महत्वपूर्ण अवदान कहल जाए सकैत अछि। 1979क दिसम्बर माससँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक किछु उत्साही छात्रलोकनिक प्रयाससँ साइक्लोस्टाइल मे **'पाग'** मासिकक सेहो प्रकाशन भेल, किन्तु ई उत्साह-प्रयास अधिक दिन धरि स्थिर नहि रहि सकल।

पटनासँ प्रकाशित भेनिहार चारिम पत्र थिक **'मैथिली अकादमी पत्रिका'** (द्वैमासिक) जे 1980क अक्टूबर-नवम्बरसँ मैथिली अकादमी अध्यक्ष श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक मुख्य सम्पादकत्वमे प्रकाशित होएब आरम्भ भेल। एहिसँ पूर्व 1979.ई.मे अकादमी दिसिसँ 'मिथिला-भारती'क तीन अंक मात्र प्रकाशित भेल छल। अकादमी-पत्रिका मध्य साधारण मैथिली पत्रिका जकाँ कविता, कथा, निबन्ध प्रभृति विविध विधाक रचना छपैत अछि, परन्तु एकर दुइ अंक मात्र नियमित समय पर प्रकाशित भेल, पुनः मैथिली पत्रक सामान्य दोष अनियमिततासँ ग्रसित भए गेल।

1981ई. मे दुइ गोट मासिक पत्रिकाक प्रकाशन होअए लागल- कलकत्तासँ **'देसकोस'** (सं. श्री विनोदकुमार) एवं बम्बइसँ **'विदेह'** मासिक पत्रिका (स. श्रीमती डा. कल्पना मिश्र), से विशेष रुपेँ उल्लेखनीय थिक। 'देशकोश' हिन्दीक 'दिनमान' रीतिक समाज ओ विचारक मासिक पत्रिका छल जे नियमित प्रकाशन एवं सन्तुलित विचारक अभिव्यक्तिक कारणे क्रमिक लोकप्रियता प्राप्त कए रहल छल। मइ मासक एकर प्रथम अंकमे एहि पत्रिकाक उद्देश्यक घोषणा एहि शब्दमे कएल गेल छल- "जे अवहेलित **मिथिलाक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द' सकै, तकर समाधान सूत्र द' सकै, जे जातीय**

चेतना ओ एकताक शंख फूकि सकै आ नवचेतनाक प्रकाश पसारि सकै,...... पुनर्जागरणक वाहक बनै आ मैथिल जातिकेँ नव मिथिलाक निर्माणक प्रेरणाशक्ति प्रदान क' सकै आ तेँ 'देशकोश'क आयोजन छैक"। परन्तु इहो पत्रिकाक शीघ्र अवसान भए गेलैक। बम्बइसँ प्रकाशित 'विदेह' मैथिली मासिकक कोनहु उल्लेखनीय विलक्षणता तँ परिलक्षित नहि होइत अछि, परन्तु मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे प्रथम-प्रथम कोनहुँ मैथिल महिलाक उदयकेँ शुभप्रद कहल जाए सकैत अछि।

1981ई. क कार्तिक धवल त्रयोदशीसँ दरभंगासँ सम्पूर्ण रुपसँ मैथिलीमे श्री रोहित कुमारक सम्पादकत्वमे 'मिथिला टाइम्स' साप्ताहिकक प्रकाशन आरम्भ भेल, परन्तु अधिक दिन धरि नहि चलल। एकर पुनर्प्रकाशन 1985 ई.मे होअए लागल, परन्तु ई सदैव अनियमितता-ग्रस्त रहल।

1981 ई.मे प्रकाशित चारिम पत्रिका अछि 'कर्णामृत' द्वैमासिक जे कलकत्ताक कर्ण-गोष्ठी-द्वारा मुख्यतःजातीय पत्रिकाक रुपमे अवतीर्ण भेल तथा जाहिमे हिन्दीक लेखादिक सेहो आंशिक समावेश कएल गेल। एकर सम्पादक भेलाह श्रीअर्जुनलाल करण एवं सहयोगी श्री राजनन्दनलाल दास। मुख्यतः जातीय पत्रिका होएबाक कारणे एहि मध्य प्राचीन ओ अर्वाचीन कर्णकायस्थ मैथिली साहित्यकारक कृतित्व ओ व्यक्तित्वक प्रकाशन पर विशेष ध्यान देल जाइत अछि, परन्तु एहि पत्रिका-द्वारा मैथिली साहित्यक व्यापक सेवा होइत रहल अछि। विशेषांकक रुपमे 'मुंशीरघुनन्दनदासक व्यक्तित्व ओ कृतित्व' नामक पुस्तक एवं 1986क 'शरदंक' एकर विशेष उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। स्व.मणिपद्मजीक 'नागभूमि' उपन्यास एही मध्य धारावाहिक प्रकाशित होएब आरम्भ भेल छल।

पटनासँ नवम्बर 1982ई. सँ श्रीराजमोहन झा, श्री अग्निपुष्प एवं श्रीकेदारकाननक संयुक्त-संपादनमे 'आरम्भ' त्रैमासिक ओ अगस्त 1983 ई.सँ श्री उदयचन्दझा 'विनोद' एवं श्रीविभूतिआनन्द-द्वारा सम्पादित 'माटि-पानि' मासिकक प्रकाशन नव्यतम सम्भावित आशाक संग आरम्भ भेल, परन्तु 'आरम्भ'क चारि अंक मात्र प्रकाशित भए सकल। 'माटि-पानि'क सेहो 1984क अन्त होइत-होइत अन्त भए गेल।

'आरम्भ' एक आधुनिक साहित्यिक पत्रक रुपमे अवतीर्ण भेल छल- मुद्रणक शुभ्रता, साज-सज्जा ओ अनेक विधाक उत्कृष्ट रचनाक संकलनक दृष्टिएँ। सवक्तव्य कविताक प्रकाशन एकर प्रमुख विशेषता छल तथा एकरा नव-पुरान अनेक सुप्रतिष्ठित साहित्यकारक सहयोग प्राप्त छलैक। उच्च-स्तरीय सामग्री ओ सुसम्पादन दुहू दृष्टिएँ 'आरम्भ' पत्रकारिताक इतिहासमे सदैव स्मरण कएल जाइत रहत। 'माटि-पानि'क प्रकाशन सेहो नवीन उत्साहक संग आरम्भ भेल छल ओ एहू मध्य नव-पुरान

कवि-कथाकारक रचना छपैत छल। साहित्यिक रचनाक अतिरिक्त विभिन्न सामयिक समस्यहुपर लेख प्रकाशित होइत छल। लोकानुरंजन एकर मुख्य उद्देश्य छल, परन्तु इहो पूर्वक इतिहासकेँ दोहरओलक ओ शीघ्र एकर प्रकाशन बन्द कए देल गेल।

सन् 1984 ई.मे चारि गोट मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन भेल- दुइ गोट त्रैमासिक मुजफ्फरपुरसँ 'स्वाती' (सम्पादिका- श्रीमती कमला चौधरी, मार्चसँ) तथा सहरसासँ 'कोशी-कुसुम' (सम्पादिका- अम्बिकामिश्र, जनवरीसँ), दरभंगासँ एक गोट द्वैमासिक 'ज्ञानलोक' (सम्पादक- श्री अशोकनाथझा 'अशोक' जनवरीसँ) एवं एक गोट मासिक 'रचना' (सम्पादक- श्री कालीनाथझा, मइसँ)। एहि मध्य 'ज्ञानलोक'क दुइ अंक मात्र एवं 'स्वाती'क सेहो तीन-चारि अंक छपि सकल। 'कोशी-कुसुम' अत्यन्त अनियमितताक संग कहिओ कदाचित् प्रकाशित होइत अछि। 'रचना' मासिक सेहो वर्षाधिक प्रकाशित नहि भए सकल। एहि पत्रिकाक मुख्य उपलब्धि थिक प्रो. तन्त्रनाथझाक अन्तिम कविता ओ प्रो. रमाकान्तमिश्र-द्वारा अनूदित पाश्चात्य-भाषा-साहित्यक कथासवहिक प्रकाशन। एहिसँ अतिरिक्त डा. विश्वनाथझाक प्रो. हरिमोहनझाक संस्मरण, डा. रादेवझाक 'मैथिलीमे गजल', स्व. योगानन्दझा, श्री मनमोहनझा, श्री मायानन्दमिश्र, श्रीजीवकान्त, डा. श्री अमरनाथक कथा ओ कविता। इएह 'रचना'क जनवरी 1989 ई.सँ त्रैमासिकक रुपमे पुर्नप्रकाशन आरम्भ भेल अछि। सन् 1985-88क मध्य अनेक पत्र-पत्रिका प्रकाशित भेल- दरभंगासँ 'बसात' (दिसम्बर 1985) ओ 'सन्दर्भ' (मार्च 1986) मासिक तथा 'चिनगी' (जनवरी 1986) द्वैमासिक पटनासँ 'लोक-वेद' (1986), 'हालचाल' (1986) एवं 'भाखा' (फरवरी, 1987) मासिक एवं मीनी पत्रिका 'कुश' (1987), देवघरसँ 'पुष्पांजलि' (दिसम्बर 1988) तथा सिंहबाड़ (दरभंगा)सँ 'कुशलक्षेम' (अक्तूबर 1988)।

श्री दुर्गानन्दझाक संरक्षण एवं श्री नरेन्द्रक सम्पादनमे पाठक ओ लेखकसभक अधिकाधिक सहयोगक आशामे परिश्रमपूर्वक प्रकाशित 'सन्दर्भ'क दुइ अंक मात्र छपि सकल तथा श्री हंसराज ओ श्रीकृष्णकुमारक सम्पादनमे 'निरन्तर चलैत रहबाक आश्वासनक संग प्रकाशित 'बसात' शीघ्र अनियमिततासँ ग्रस्त भए दोसरे वर्ष कालकवलित भए गेल। एकर उद्देश्य छलैक मिथिलाक सांस्कृतिक गरिमा एवं सर्जनात्मक शक्तिकेँ समृद्ध करब तथा साहित्यमे जन-जीवनक यथार्थ चित्रण करब। प्रो. रमाकान्तमिश्रक अनूदित कथा, डा. प्रफुल्लकुमार 'मौन', श्रीमायानन्दमिश्र, डा. नबोनाथझा, श्रीविनोदबिहारीलाल, श्रीमार्कण्डेय प्रवासी आदिक रचना एहि पत्रिकाक उल्लेखनीय प्रकाशन कहल जाए सकैत अछि।

'चिनगी' द्वैमासिकक प्रकाशन डा. श्री रामचैतन्य धीरजक सम्पादनमे जनवादी लेखनक पत्रिकाक रुपमे आरम्भ भेल। किन्तु 1988 ई. धरि एकर सात गोट अंक मात्र

प्रकाशित भए सकल। प्रत्येक अंकमे सम्पादकमण्डलमे परिवर्तन एकर विलक्षणता छल। एकर प्रधान सम्पादकमण्डलमे राधेश्वर, सोमदेव, धीरेन्द्रनारायण, मायानन्द, पुलिन्दु चौधरी, रमेश आदि उल्लेखनीय छथि। सम्पादकमण्डलमे एहि परिवर्तनसँ प्रगतिक मानसिकताक द्योतन होइत अछि। वस्तुतः 'मिथिला' साम्यवादी दलक साहित्यिक मुखपत्रिका छल जे साम्यवादी सिद्धान्तक अनुसार मैथिली साहित्यक मूल्यांकन एवं मैथिली साहित्यक विकास-दिशा निर्दिष्ट करए चाहैत अछि। एहि पत्रिकाक प्रमुख रचनाकार छथि सोमदेव, डा. प्रफुल्लकुमार 'मौन', धीरेन्द्रनारायण, श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद', डा. भीमनाथ झा, डा. [illegible], रमेश आदि। एहि पत्रिकामे प्रकाशित डा. रामदेव झाक 'भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक देन' निबन्ध एवं [illegible] 'अन्तिम प्रणाम' लघु-उपन्यास विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

"प्रथम भाषामे प्रथम लोक द्वारा प्रथम बात कहबाक" एवं "अंशसँ पूर्ण दिशामे गतिशीलताक संचार" करबाक हेतु श्री विभूति आनन्दक सम्पादनमे 'भारती' मासिकक प्रकाशन आरम्भ भेल, किन्तु शीघ्र बन्द भए गेल। एकर पुनर्प्रकाशन आरम्भ भेल नवीन रूपमे सितम्बर 1988 ई. मे डा. श्रीउमाकान्त मिश्र ओ प. श्री गोविन्द झाक संयुक्त-सम्पादनमे। पृष्ठ-संख्या, रूप-सज्जा, मुद्रण-सामग्री आदिक दृष्टिएँ एकरा नीक मासिक पत्रिका कहल जाए सकैत अछि। किन्तु सन् 1989 ई. मे एकर प्रकाशन अवरुद्ध भए गेल अछि। पटनासँ श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' ओ श्री महेन्द्र मलंगियाक सम्पादनमे 'लोकवेद'क कुशल-समाचार कहिओ सुनबा योग्य नहि भेल आओर 'इजोरिया'क किरणमे पाठक सुखमे आएल छल जे ई शीघ्र अनियमितता-ग्रस्त भए गेल छल। अनेक प्रकारक अनेक सम्पादक एकर विशेषता छल।

'मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सांस्कृतिक प्रचार-प्रसारक उद्देश्यसँ प्रो. श्री [illegible] छात्र सम्पादनमे [illegible] 'पूर्णांजलि' मासिकक प्रथम प्रवेशांक प्रकाशित भेल अछि दिसम्बर 1988 ई. मे। एहिसँ किछु पूर्व अक्टूबर 1988 ई. मे 'कुसुमांजलि'क प्रथम अंक सेहो बहराएल चौधरी कौशल किशोर ठाकुर एवं डा. धीरेन्द्रनाथमिश्रक सम्पादनमे। यदि ई दुनू पत्रिका अपन स्थायित्वकेँ प्रमाणित कए सकल तँ निश्चय ई एक गोट अभूतपूर्व घटना होएत। 1989 ई. मे पटनासँ श्री विभूति आनन्दक सम्पादनमे एकटा 'दृष्टि' नामक पत्रिकाक प्रकाशनक सेहो सूचना भेटल अछि।

धार्मिक स्थायित्वक प्रकाशनक दृष्टिएँ दरभंगाक विद्यापति-सेवा-संस्थान द्वारा गत बीस सालसँ प्रकाशित 'अर्चना' सेहो एकटा उल्लेखनीय अछि जकर 1988 ई. मे श्री उमाकान्त झा ओ श्री रमेशक सम्पादनमे 'कविकुलमणि-स्मृति-अंक' विशेष परिश्रमपूर्वक प्रकाशित भेल अछि।

एकर नेपालमे मैथिली पत्रिकाक [illegible] चर्चा करब सेहो आवश्यक अछि। नेपालमे मैथिली पत्रकारिताक [illegible] जनकपुर धामक त्रैमासिक मासिक पत्र '[illegible]' (1 जेठ 2016 विक्रम)सँ मानल जाइत अछि। एकर मैथिली भाषाक सम्पादन करथि श्री [illegible]। 2027 विक्रम संवत्‌मे तीन गोट पत्रिकाक प्रकाशन भेल— 1. श्री [illegible] मासिक सम्पादनमे 'पुनर्जागरण'क, डा. [illegible] सम्पादनमे 'इजोत'क आ श्री प्रफुल्लकुमार 'मौन', श्री [illegible] ओ श्री [illegible] संयुक्त-सम्पादनमे 'मैथिली'क। एहि तीनू पत्रिकामे मिथिलाक ऐतिहासिक ओ साहित्यिक निबन्धक अतिरिक्त नेपालमे उपलब्ध प्राचीन मैथिली साहित्यक प्रकाशन विशेष महत्व रखैत अछि। परन्तु नेपालीय पत्र-पत्रिका दीर्घायु प्राप्त नहि कए सकल आ ने नियमित रूपसँ प्रकाशित भेल, मुदा जतबहि दिन प्रकाशित भेल ततबहिमे मैथिली साहित्यक महान उपकार भेल। 1981क लगभगमे प्रकाशित प्रथम साप्ताहिक 'गाम-घर' जनकपुरधाम, नेपालसँ श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पादनमे शुरू आरम्भ भेल छल। एहि पत्रमे समाचारक प्रकाशनक संग कविता-कथादि सेहो प्रकाशित होइत छल। नेपालक अतिरिक्त भागलपुर [illegible] प्राप्त करैत। बाद भेल [illegible] ओ श्री [illegible] 1989 ई. मे 'आँजुर' नामक त्रैमासिकक प्रकाशन आरम्भ कएल अछि।

एहि प्रकार आरम्भसँ आइ धरि अनेक पत्रिका प्रकाशित भेल ओ ओहिसँ विविध प्रकारक मैथिली साहित्यक विकास होइत रहल। परन्तु अधिकांश पत्र-पत्रिका बहुत थोड़ दिन चलल आ कतेक तँ एक-दू अंकक पश्चात् बन्द भए गेल। पत्र-पत्रिकाक एहि अल्पायुक प्रधान कारण अछि मैथिली भाषा-भाषीक अपन साहित्यक अभ्युन्नतिक प्रति उदासीनता। परन्तु एहि उदासीनताक हेतु मैथिली पत्रिकाक प्रकाशक ओ सम्पादक कम दोषी नहि छथि। प्रकाशककेँ एहि प्रकाशनक प्रति उत्साह ओ धैर्य नहि रहैत छनि आ सम्पादक पाठक रुचिक स्तर दिसि ध्यान नहि दैत छथि आओर यदि आरम्भमे स्तर दिसि ध्यान दैत छथि तँ अंत धरि स्तरक निर्वाह नहि कए पबैत छथि। फलस्वरूप पाठककेँ मैथिली पत्रक प्रति आस्था विच्छिन्न भेल जाइत छनि। पाठकक ग्राहकक अभाव होइत अछि आ पत्रिका शीघ्र कालकवलित भए जाइत अछि। एही कारणे कोनो उत्कृष्ट पत्रिकाक प्रकाशनक वातावरण नहि बनि पबैत अछि। अतः एहि जागरणक [illegible] पत्रक मैथिलीमे अभाव अछि जे आन भाषाक उत्कृष्ट पत्रक समता कए सकए।

आधुनिक मैथिली गद्यक विकासक रूपरेखा

आधुनिक मैथिली गद्यक आरम्भ ओ नवल विकासक सूत्रधार भेलाह संस्कृतक पण्डितलोकनि। ई क्रम एहि शताब्दीक तीन दशक धरि चलल। अंग्रेजी शिक्षाक प्रारम्भ भेलासँ गद्यक महत्व दिसि लोकक ध्यानाकृष्ट भेल, गद्यरचनाक मूल-प्रेरणा बनल अंग्रेजी भाषाक गद्यसाहित्यक विकासक दृष्टान्त। अंग्रेजी शिक्षा तँ मैथिली साहित्य-रचना दिसिसँ विमुख बनाय, बहुतो तँ तुलनात्मक ध्यान देल हिन्दी-रचना दिसि।

उदाहरणार्थ आरम्भमे कोनो अंगरेजी-शिक्षित व्यक्तिक मैथिली गद्यरचना उपलब्ध नहि अछि। हिन्दीक प्रथम अर्थशास्त्र ग्रन्थक रचयिता प्रो. राधाकृष्ण झा, 1925 ई.मे जखन पटनाविश्वविद्यालयमे मैथिलीक मान्यताक प्रश्न उठल तँ एहि प्रस्तावक विरोधीलोकनिक नेतृत्व कएल। तहिना प. गिरीन्द्रमोहनमिश्र प्रभृति सेहो मैथिलीक अनुकूल नहि छलाह, हिन्दीमे गद्यरचना प्रकाशित कराबथि तथा हिन्दीअहिक प्रचारमे मनोयोग देथि। अतः मैथिली गद्यक आरम्भ ओ तकर विकास संस्कृतक पंडितलोकनिक द्वारा सएह भेल ओ तेँ पण्डिताम भए गेलः कारण हुनकालोकनिक गद्यक आदर्श संस्कृतसाहित्यक गद्य छल आओर संस्कृतक गद्य ओ पद्यमे एतबे भेद जे पद्यमे छन्दक आग्रह रहैछ, गद्यमे नहिः अन्यथा अलंकार, रस, गुण प्रभृति सब दृष्टिएँ दुनूमे समानता रहैत छैक। अतः पंडितलोकनिक द्वारा जाहि गद्यक मैथिलीमे रचना भेल ताहिमे तकरहि अनुकूलता रहल, अंगरेजी गद्यक आदर्श आरम्भमे परिगृहीत नहि भेल। एहि विषयकेँ ध्यानमे रखैत मैथिलीक आरम्भिक गद्यरचनाक विकासक अध्ययन होएबाक चाही।

डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे गद्यक तीन उत्थानक चर्चा कएने छथि। प्रथम उत्थानक प्रतिनिधि मानल अछि ओ चन्दा झा ओ तुलापति सिंहकेँ, दोसरक म. म. परमेश्वर झा ओ म. म. मुकुन्द झा बख्सीकेँ तथा तेसरक म. म. डा. उमेशमिश्र, कुमार गंगानन्दसिंह, भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' ओ प्रो. रमानाथ झाकेँ। मुदा उत्थानहिक दृष्टिएँ विचार कएल जाए तँ एकरा तीन उत्थानमे बाँटब उचित नहि। प्रथम ओ द्वितीय उत्थानकेँ एके उत्थानक अन्तर्गत राखल जाए सकैत अछि कारण, दुहू उत्थानक लेखकलोकनिक गद्य-रचनाक स्वरुपमे कोनो विशेष अन्तर नहि अछि, शैलीक अन्तर अवश्य अछि।

गद्यक सम्यक् विकासकेँ नीक जकाँ हृदयंगम करबाक निमित्त हमरालोकनि एकरा निम्नलिखित विभागमे बाँटि सकैत छी :- [1] (क) आरम्भिक संस्कृताधारित गद्य, (ख) संस्कृताश्रित विकासशील गद्य एवं [2] विकसित गद्य। एहिमे प्रथम दुनूमे अन्तर बड़ थोड़ अछि। अन्तर एतबे जे आरम्भिक संस्कृताधारित गद्य संस्कृतक व्याकरण आ अभिव्यक्ति-रीतिसँ जकड़ल लगैत अछि तँ संस्कृताश्रित विकासशील गद्यमे क्रमिक संस्कृतक प्रभाव क्षीण होइत प्रतीत होइत अछि तथा पूर्वापेक्षेँ स्वाभाविक लगैत अछि।

आरम्भिक गद्य :- आरम्भिक गद्यक स्वरुप सर्वप्रथम चन्दाझाक 'पुरुष-परीक्षा'क गद्यपद्य-अनुवाद एवं हुनक टिप्पणी-लेखसँ प्राप्त होइत अछि। स्वयं हुनक अनुवाद ओ टिप्पणीलेखक गद्यरचनामे अन्तर बूझि पड़ैत अछि। प्रथम यदि कृत्रिम, निर्जीव ओ प्रभावहीन अछि तँ दोसर अपेक्षाकृत सजीव ओ स्वाभाविक। द्रष्टव्य थिक :-

1- रहथि मिथिलामे वीरेश्वर नामक मन्त्री। से स्वभावहि दाता ओ दयाशील। से सभ दुर्गत ओ अनाथ लोककाँ इच्छा भोजन देआबथि। ताहिमे आलसी लोकहुकाँ अन्न देआबथि। ('पुरुष-परीक्षा'क "अलसकथा"सँ)

2- ई नलचरित नाटककर्त्ता महामहोपाध्याय सोदरपुरीय कटका गोविन्द मिश्र कवि थिकाह अद्यापि जनिक सन्तान मिथिलामे गंगौली मनीगाछीक उत्तरमे बसै छथि ओ अनेक ग्राममे छथि से पंजिका पोथीसँ स्पष्ट अछि। [सुकवि चरितामृत- 1300 सालक लेख पोथीसँ]

आधुनिक गद्यक जनक चन्दाझाक गद्यक संग बाबू तुलापतिसिंह, म. म. मुकुन्द झा बख्सी, म. म. जयदेवमिश्र आदिक गद्यक तुलना कएलासँ गद्यक स्वरुपमे तेहन विकास परिलक्षित नहि होइत अछि। अतः चन्दाझाक परवर्त्ती भेलहुँसँ हिनकालोकनिकेँ पृथक् उत्थानक अन्तर्गत परिगणित करबाक कोनो कारण नहि अछि। तुलनात्मक दृष्टिएँ निम्नलिखित गद्यक दृष्टान्त उल्लेखनीय थिक -

1. परिचारिका-सरकार मध्य आज एक तपस्वी लक्ष्मीकान्तशर्मा अपन अनेक कालक तपस्याक परिणामस्वरुप ई फल समर्पण कयलैन्हि जकर पुरस्कार ततबा भेटलैन्हि जे ओ धनाढ्य भय दुहू सरकार ओ कुमारी ओ कुमार साहेबकेँ आशीर्वाद दैत घर गेलाह। [तुलापति सिंह (1859-1914): 'मदनचरित उपन्यास'सँ]

2. उत्तर दिन पुनर्यथापूर्व दरबार जाय पुराणश्रवणकाल निज शिष्य रघुनन्दनझाक पूर्ण विद्वत्ता ओ प्रत्युत्पन्नमतिक्ता सश्लाघ प्रशंसापूर्वक रानी दुर्गावतीसँ कहल, जेना जे घटना गत दिन भेल छलैक। [मुकुन्दझा बख्सी (1860-1918): 'मिथिला भाषामय इतिहास'सँ]

3. श्रीमन्मिथिलेश मिथिलाक रत्न सनातनधर्मस्तम्भ, श्रौतस्मार्तसनातन धर्मैकतत्पर....अन्यान्य सज्जनगणसहित एहि सभा मंडपकेँ सुशोभित करैत अपन अनेक कार्यकेँ छोड़ि तथा सकल शरीर सुखसाधनक उपेक्षा कय केवल धर्मकेँ सर्वेप्सित साधन जानि अनेक आधुनिक अचिरकाल स्वागत करबाक कोनो सामग्री श्री विश्वनाथकेँ नहि छैन्हि। (म. म. जयदेव मिश्र, स्वागत-भाषण, 1329 साल)

एहि श्रेणीमे महावैय्याकरण दीनबन्धुझा (1878-1955), प. त्रिलोचनझा (1878-1938), राजपण्डित बलदेवमिश्र (1887-1964) प्रभृतिक गद्यक सेहो उल्लेख कएल जा सकैत अछि, मुदा उपर्युक्त उदाहरणमे बाबू तुलापतिसिंहक गद्यरचना तुलनामे कतेक स्वाभाविक लगैत अछि, से ध्यातव्य थिक।

संस्कृताश्रित विकासशील गद्य- एहि प्रभेदक अवतारणा हम प्रथम भेदहिक विकासक सूक्ष्म अन्तरकेँ देखएबाक निमित्त कएल अछि। यद्यपि जीवनझा (1848-1912), म. म. परमेश्वरझा (1856-1924), मु. रघुनन्दनदास (1860-1945), त्रिलोचनझा (1878-1928), म. म. मुरलीधरझा (1868-1929), म. म. गंगानाथझा (1871-1941) प्रभृति अनेक गद्यकार समसामयिक छलाह, मुदा हुनकालोकतिक गद्यशैलीमे अद्भुत विषमताक दर्शन होइत अछि। उदाहरणार्थ, प्रसिद्ध नाटककार जीवनझा उपर्युक्त लेखकलोकनिमे सबसँ प्राचीन छलाह, तथापि सरलता, स्पष्टता स्वच्छता प्रभृति सब दृष्टिएँ हिनक गद्य संस्कृताश्रित होइतहुँ अधिक आधुनिक ओ अधिक विकासशील लगैत अछि, शब्दचयन, वाक्यरचना ओ स्वाभाविक अभिव्यक्ति-रीतिक दृष्टिएँ। तहिना म. म. परमेश्वरझा ओ त्रिलोचनझाक गद्य कतेक नवीन लगैत छैन्हि, से हुनकालोकनिक गद्यक निम्नलिखित दृष्टान्तक तुलनासँ स्पष्ट भए जाएत-

1. ई स्वभावसिद्ध विषय थिक जे जखन कयौ राजा महाराजा कोनो स्थान पर नवीन अधिकार करै अछि तखन नवे-नव अपन सलीका चलबैत अछि। ककरो उच्च सौँ नीच बनबैत अछि ओ ककरहु नीच सौँ उच्च। (म. म. परमेश्वरझा 'सीमन्तिनी आख्यायिका'सँ)

2. पूर्णअधिकारी ध्रुवक शुद्ध अन्तःकरणमे उक्त वाक्यावली निश्चल भावसँ अंकित भै गेलन्हि। अतएव बालक ध्रुव प्रसन्नवदन भेल सोत्साह कहलथिन्ह जे तखन आब हम तकरे प्रयत्न करब जाहिमे सर्वोच्च स्थान पावी। हमर भाय पिताक राज्य प्राप्त करथु.... (त्रिलोचनझा : 'ध्रुवचरित'सँ)

संस्कृताश्रित विकासशील गद्यक श्रेणीमे म. म. मुरलीधरझाक स्थान विलक्षण अछि। व्यंग्यवक्रोतिपूर्ण मार्मिक शब्दविन्यास तथा उक्तिभंगिमा हिनक गद्यक विशेषता थिक, जाहि दृष्टिएँ ई मैथिलीमे एकमात्र गद्यकार छथि। उपर्युक्त उद्धरणक संग म. म. मुरलीधरझाक गद्यक निम्नलिखित दृष्टान्तक तुलनासँ स्पष्ट भए जाइत अछि। मुदा द्रष्टव्य थिक हिनक गद्यमे संस्कृतभाषाक सामासिकता, जे हिनका एहि कोटिक गद्यकारक रुपमे प्रतिष्ठित करैत अछि-

की एहि मिथिलासँ देशोन्नतिक आशा....अगुतैने बेटा-बेटी नहि, अगुतैने अन्न फल इत्यादि किछु नहि। अपन-अपन समय पाबि सब किछु होइत छैक, से होएबे करत। ताबत एतेक तेज स्पीडसँ जनु हाँकल जाय। एहिमे बहुधा एक्सिडेन्सक भयक संभावना। (मिथिला-भाग 1 पृ.308सँ)

म. म. मुरलीधरझाक भाषाक वास्तविक स्वरूप इएह थिक। मुदा विषयक गम्भीरताक अनुसार हिनक भाषा गम्भीर ओ पाण्डित्यक गरिमासँ युक्त भए जाइत अछि। द्रष्टव्य थिक हिनक 'मिथिला' (1337साल बैसाख) मे प्रकाशित 'मिथिला' शीर्षक लेख। मुदा मुरलीधरझाक कोटिक गद्यकार ओहि युगमे ओएहटा छथि, जनिकामे संस्कृतक प्रकाण्ड पाण्डित्य होइतहुँ संवेदनशील साहसक मात्रा पर्याप्त छल। अतः ओ संस्कृताश्रित रहितहुँ मैथिली गद्यक शैलीमे नवप्रयोग कएल।

विकसित मैथिली गद्य- विकसित गद्यक स्वरूप 1930 ई.क पश्चात् स्थिर भेल। हमरा जनितेँ विकसित गद्यक दुइ गोट प्रतिनिधि गद्यकार छथि- प्रो. रमानाथझा (1906-71) ओ भुवनेश्वरसिंह 'भुवन'। ई दुनू व्यक्ति क्रमशः मैथिली गद्यक दुइ भिन्न स्वरुपक प्रतिनिधित्व करैत छथि-परम्परागत संस्कृतनिष्ठ मैथिली ध्वनिक अनुरूप विकसित गद्यक एवं प्रयोगशील गद्यक।

संस्कृताश्रित विकासशील गद्यक जे चर्चा कएल गेल अछि, तकर तथा प्रो. रमानाथझाक विकसित गद्यक विकासयात्राकेँ जोड़ैत छथि म. म. गंगानाथझा, ज्यो. बलदेवमिश्र, डा. उमेशमिश्र, डा. अमरनाथझा, पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र प्रभृति। जाहि प्रकार म. म. परमेश्वरझा, मुकुन्दझा बख्सीसँ प्राचीन होइतहुँ अपेक्षाकृत नव रीतिक गद्य लिखैत छथि, तहिना डा. गंगानाथझा, डा. उमेश मिश्रसँ प्राचीन भेलहु सन्ताँ सरलता, स्पष्टता, स्वच्छता, प्रभावोत्पादकता, शिष्टता ओ लयात्मकता आदि सब तरहेँ अधिक नवीन छथि। ई तथ्य अधिक स्पष्ट भए जाएत यदि हमरालोकनि डा. मिश्रक संग डा. झाक गद्यक तुलना करी। पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र, डा. अमरनाथझा ओ ज्यो. बलदेव मिश्रक गद्य एहि विकासक महत्त्वपूर्ण शृंखला थिक।

प्रो. रमानाथझामे आबि मैथिलीक संस्कृतनिष्ठ गद्य अपन पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त कए लेलक। प्रो. झा अंगरेजीक गद्य-पद्यक मर्मज्ञ विद्वान् तथा संस्कृत-भाषाक विज्ञ पण्डित छलाह, अतः हिनक गद्यमे दुनू भाषाक सारभूत गुणक समन्वय भए गेल। हिनक गद्यक मुख्य विशेषता ओ थिक जकरा दण्डी 'कान्ति' (ग्राम्य-दोषाभाव) कहने छथि। एकर अतिरिक्त आन गुण तँ अछिए-सरलता, स्वच्छता, प्रभावोत्पादकता प्रभृति। अतः एहि प्रकारक गद्य शिक्षितवर्गमे लोकप्रिय भेल। वैयक्तिक शैलीगत वैशिष्ट्य रहलहु सन्ताँ प्रो. रमानाथझाक वर्गमे अबैत छथि मैथिलीक अधिकांश गद्यकार- स्व. भोलालालदास, श्री नरेन्द्रनाथदास (ज. 1907), बाबू लक्ष्मीपतिसिंह (1907-79), स्व. ईशनाथझा, श्री सुमनजी, प्रो. तन्त्रनाथझा, डा. श्री कृष्णमिश्र, श्री जयदेवमिश्र, डा. श्रीजयकान्तमिश्र, प्रो. राधाकृष्णचौधरी, श्री उमानाथझा, श्री दामोदरझा, श्री आनन्दमिश्र, डा. जयमन्तमिश्र, श्री रमाकरजी, श्री भक्तिनाथसिंह ठाकुर, श्री गोविन्दझा, डा. परमानन्दझा, श्री हरिहरझा प्रभृति। कालभेदेँ ओ व्यक्तिभेदेँ एहि परिनिष्ठित ओ परिमार्जित साहित्यिक गद्यहु मध्य

यत्किंचित् भेद भेटि सकैत अछि, मुदा सामान्य प्रवृत्ति धरि समान अछि। वस्तुतः एहि प्रकारक गद्य अध्ययन, अनुशीलन ओ विवेचनक गद्य थिकः तथापि, कथाउपन्यास प्रभृतिक रचनहुमे एहि प्रकारक गद्यक प्रयोग श्रीउमानाथझा, व्यासजी, तन्त्रनाथझा, श्रीगोविन्द झा प्रभृति करैत छथि। मुदा पश्चात् ताहिमे भेद आबि गेल अछि। एहि वर्गक गद्यक दृष्टान्त एहि ठाम उद्धृत नहि कएल जाइत अछिः कारण, एहि प्रकारक गद्य प्रचुरतया सहज रुपसँ उपलब्ध अछि। प्रो. रमानाथझा द्वारा संकलित 'गद्यसंग्रह'सँ तकर क्रमबद्ध अनुशीलन एकहि ठाम उपलब्ध भए सकैत अछि।

विकसित गद्यक दोसर भेद हम कएल अछि प्रयोगशील गद्यक नामसँ। वस्तुतः स्वस्थ प्रयोगशीलताक आधार पर सएह कोनहुँ सजीव भाषासाहित्यक नित नव नूतन विकास होइत रहैत अछि। भुवनजी मैथिली गद्यमे प्रयोगशीलताक दृष्टिएँ अन्यतम छथि। मुदा हिनक प्रयोगशीलता साहित्यिक मर्यादाक कतहु अतिक्रमण नहि कएने अछि। म. म. मुरलीधरझा संस्कृताश्रित होइतहुँ मैथिली गद्यकेँ महत्त्वपूर्ण नवीन दिशा प्रदान कएल तहिना भुवनजी सेहो कएल। हिनक गद्यक विशेषता थिक संस्कृतनिष्ठताक 'अति'सँ विद्रोह तथा अन्य भाषाक ग्राह्य-गुणक प्रतिसमन्वय-प्रवृत्ति-शब्द, वाक्यरचना, लेखनशैली ओ अभिव्यक्ति-कौशल आदि सब दृष्टिएँ। ओ अपन संग्रहणशील प्रयोगशीलताक कारणे हिन्दी प्रभृतिक कतेक शब्दकेँ ग्रहण कएल। पण्डित त्रिलोचनझाक एहि पर पत्र द्वारा आपत्ति कएलासँ (द्रष्टव्य 'विभुति' द्वितीय अंक, पाठकक पृष्ठ) ओ उत्तर देल- "झाजी 'तेहन अतीत'क फेरसँ मुक्त भै, वर्त्तमान वातावरणमे विचरण करथि तँ बड़ विशेष बात हो। मैथिली ओहने परिमित केन्द्रमे कहिआ धरि घुमतीह। ई समृद्धिक युग थीक। जँ मैथिलीक अभ्युदय उचित त 'ठेठ मैथिलीक ठाठ' बनौने काज नहि चलत। ओ समय आब गेल।" एहिसँ हुनक विचार-धाराक पता चलैत अछि। सरलता, स्पष्टता एवं प्रभावोत्पादकताक दृष्टिएँ ओ व्यासशैलीक अनुसरण कएल तथा भावकेँ ध्यानमे रखैत् तदनुरुप शब्द ओ वाक्य-रचनाक संघटन दिसि ध्यान देल। हुनक गद्यक निम्नलिखित दुइ गोट उद्धरणसँ हुनक गद्यशैलीक सर्वांगीण स्वरुपक परिचय भए जाएत-

1. 'दरभंगावाली गाड़ी देरीसँ पहुँचबाक कारणेँकेँ 'वाली'सँ खाली रखनहि काज सुचारु रुपेँ चलैत। अपन भाषामे 'गाड़ी गेलि' लिखबाक परिपाटी अछि। एहन-एहन उदाहरण और भेटत। 'तांइ' कोन भाषाक शब्द थीक ! 'तँ' 'तँय' 'तँए'सँ तँ भेँट छल, आब 'ताँइ' आबि क' बिसैल। (किरणजीक 'चन्द्रग्रहण'क आलोचनाः 'विभूति'1-7)

2. दलित, पीड़ित, जर्जरित, अपमानित और क्षुधितक अन्तर्ज्वाला हुनक आह, आब अधिक दिन धरि व्यर्थ नहि जायत। दानव प्रकृतिक नग्न नर्त्तन क्षणिक थिक। आइ शरद हमरा सैह दिव्य सन्देश दैछ। (शरदक सन्देशः 'विभूति'-शरदंक)

भुवनजीक गद्य ओ प्रो. रमानाथझाक गद्यक तुलना कएलासँ दुनूक मूलभूत अन्तर स्पष्ट भए जाइत अछि। एहने वैयक्तिक प्रयोगशील नवीनताक दर्शन होइत अछि प्रो. हरिमोहनझा, यात्रीजी, किरणजी, डा. श्रीलक्ष्मणझा, व्रजकिशोरवर्मा प्रभृतिक गद्यमे। नव पीढ़ीमे एहने गद्यकार छथि ललित, प्रो. मायानन्दमिश्र, प्रो धीरेन्द्र, राजकमल, श्रीरमानन्द 'रेणु', जे मुख्यतः अपन गद्यक प्रयोग कथा-उपन्यासक रचनामे कएने छथि।

भुवनजीक पश्चात् विकसित गद्यक उल्लेखनीय प्रयोगशील गद्यकार छथि श्री यात्रीजी। ग्रामत्वदोषकेँ साहित्यिक मर्यादा प्रदान करबाक दृष्टिएँ मैथिली गद्यक विकासक इतिहासमे हिनक स्थान विलक्षण अछि। ई अपन कविते जकाँ अपन गद्यरचनहुमे ठेठ लोक-भाषाक प्रयोग कएने छथि आओर ओहिमे सदैव एकरूपता रखने छथि। हिनक गद्यक निम्नलिखित दृष्टान्त द्रष्टव्य थिक-

कहलिअइन अन्तमे-हमरा तीनिए कट्ठा खेत अछि बउआ ! धन्य हिन्दी जे पाँच-छओ गोटाक पेट चलइए ! से हिन्दीओ गद्य लिखइ छी तँए निमहइए, ने त अगबे कविवर भेने चारिओ दिनुका खोरसि की जुमतइ ? (पृथ्वी ते पात्रैः, 1954, 'वैदेही'सँ)

वस्तुतः नवतुरिया लेखकलोकनि यात्रीजीक अनुसरण करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा प्रतिभा ओ योग्यताक अभावक कारणे ने तँ हुनकालोकनिक गद्य परिनिष्ठित संस्कृतनिष्ठ रहि पबैत अछि आ ने यात्रीजीक समान स्वाभाविक ओ मार्मिक प्रयोगशीले भए पबैत अछि।

अनुवाद- कोनहु भाषासाहित्यक विकासावस्थामे अनुवादक प्राचुर्य होइत छैक। अतः एजरा पाउण्डक कथन अछि- *'A great age of literature is perhaps always a great age of translation (Mak. lit. New-page. 101, 125',)* मैथिलीक गद्य-साहित्यक विकासमे अनुवादक योगदान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिलीक आधुनिक गद्य-साहित्यक विकासक आरम्भ चन्दाझा द्वारा 'पुरुष-परीक्षा'क गद्यपद्य-अनुवादसँ भेल। ओहिसँ पूर्व फादर अनटोनिओ बाइबुलक अनुवाद मैथिली बोलीमे कएने छलाह। पश्चात् पत्रकारिताक आरम्भ भेलासँ पत्रसभमे अनूदित साहित्य सेहो प्रचुर मात्रामे छपए लागल। आरम्भमे अनुवाद भेल संस्कृतहिक, उपनिषद्, पुराण, धर्मशास्त्र प्रभृतिक आओर मैथिलीक आरम्भिक कथा-साहित्यक एहने अनुवाद पर आधारित भेल। संस्कृत नाटकहुक अनेक अनुवाद भेल, जकर चर्चा गतप्रकरणमे कएल गेल अछि। बाबू क्षेमधारीसिंह 'शकुन्तला'क मैथिली अनुवाद 1918 ई.मे कएल जे तत्कालीन मैथिली गद्यक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। संस्कृतक पश्चात् बंगलासँ अधिक अनुवाद भेल तथा अनुवाद भेल अधिकांश बंकिमचन्द्र, ईश्वरचन्द्र, शरदचन्द्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदिक लेख-कथादिक। हिन्दीसँ सेहो किछु अनुवाद भेल। शशिनाथझाक

कलिधर्म-प्रकाशिका हिन्दी-नाटकक्केहिक अनुवाद छल। एम्हर आन-आन भाषा-साहित्यक अनुवाद सेहो मैथिलीमे भए रहल अछि। एहि क्षेत्रमे प्रमुख अनुवादक भेलाह प्रो. श्री प्रबोधनारायणसिंह, श्री हंसराज, श्रीमती इलारानी प्रभृति। मुदा ई अनुवाद सब प्रायः भेल हिन्दीअहिक माध्यमसँ।

अनुवादक एहि प्रक्रियामे अंगरेजी साहित्यहुसँ समय-समय पर अनुवाद भेल, जकर संख्या अधिक नहि अछि, मुदा जाहिसँ मैथिली गद्यक अभिव्यक्तिमे बड़ नवीनता आएल तथा ततेक नव-नव शब्दक प्रयोगक आरम्भ भेल जे पूर्व नहि होइत छल, यथा, 'सन्धिकाल' 'स्वभाव ओ वातावरण' 'कल्पनाशील साहित्य' आदि। एहि प्रकारक नव शब्दक आगम बंगलाक अनुवादसँ भेल अछि तथा एहिसँ मैथिली भाषामे नवीन प्रकारक मार्दव ओ अभिव्यक्ति-कौशलक दर्शन होइत अछि। अंगरेजीसँ जाहि कृतिक अनुवाद भेल अछि ताहिमे 'मिना', 'भूतक छाया', 'चोर', 'सलोमा' प्रभृति नाटकक अतिरिक्त श्री दीनानाथझाक **'वेकफिल्डक पादरी'** एवं **'अवसिनियाक राजकुमार रसेलस'**, स्व. जलेश्वरसिंहक **'शेक्सपियरक नाट्यकथा'**, श्री उमानाथझाक चैंपेकक **'मदर'** श्रीरमानन्द ठाकुर ओ वैद्यनाथ चौधरीक **'इसोपक नीतिकथा'**, श्यामानन्द सिंहक 'गुड अर्थ'क **'जीवन-भूमि'** प्रभृति प्रमुख अछि। परंच एहन अनुवाद पुस्तकाकार कमे प्रकाशित भए सकल अछि।

मैथिली गद्य-साहित्यक प्रभेद

मैथिली गद्य-साहित्यकेँ दुइ भागमे प्रमुख रुपसँ ओ प्रत्येक भागकेँ निम्नलिखित मुख्य-मुख्य उपभेदमे विभक्त कए सकैत छी। 1. **मनोरंजनक साहित्यः** (क) कथासाहित्य-उपन्यास ओ गल्प तथा शब्दचित्र ओ रिपोर्ट-ताज. (ख.) यात्रा 2 ज्ञान-वर्द्धक साहित्य : (क) जीवनी,संस्मरण, परिचर्या प्रभृति, (ख) अनुसन्धान, अनुशीलन ओ आलोचना, (ग) **इतिहास भूगोल,** (घ) **धर्म ओ दर्शन।** एहि ठाम ध्यातव्य थिक जे मनोरंजनक गद्य-साहित्यक अन्तर्गत परिगणित विवेचनात्मक निबन्धमे ज्ञानवर्द्धनाक अंश सेहो प्रचुर मात्रामे रहैत छैक। तहिना ज्ञानवर्द्धक गद्य-साहित्यमे परिगणित जीवनी, संस्मरण ओ परिचर्या तथा इतिहासमे मनोरंजन करबाक तत्वक सेहो प्राचुर्य रहैत छैक। अतः ई विभाजन उद्देश्यक प्रधानताकेँ ध्यानमे रखैत कएल जाइत छैक।

कथा-साहित्य

मैथिली कथा-साहित्यक आरम्भ संस्कृतक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कथाक अनुवादसँ भेल। चन्दाझाक 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवादक पश्चात् म. म. मुरलीधरझाक **'मित्रलाभ हितोपदेश'** (1906-29) **'महाभारतक अनुशानपर्व'** (1906), बाबू क्षेमधारीसिंहक **'शकुन्तला'** (1918), डा. उमेशमिश्रक **'नलोपाख्यान'** (1919) ओ **'यक्ष-पाण्डवसंवाद'**, त्रिलोचनझाक 'उद्योगपर्व', गणनाथझाक **'आदि-पर्व'**क अनुवाद प्रभृतिक चर्चा कएल जा

सकैत अछि। एहि अनुवादक परम्परामे पश्चात् जे कार्य भेल से अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल। एहि वर्गमे भुवनजीक **'मेघदूत'**क, जगदीशमिश्रक **'वाल्मीकीय रामायण'**क, छेदीझाक **'कादम्बरी'**क, जीवनझाक **'नैषध'** प्रभृतिक चर्चा कएल जाए सकैत अछि। संस्कृत-कथाक आधारहि पर मौलिक ओ भावानुवादक मध्य-मार्गीय कार्य सेहो भेल अछि। एहि वर्गमे लालदासक **'पतिव्रताचार'**, म. म. मुरलीधरझाक 'अर्जुनतपस्या', प. त्रिलोचनझाक **'शकुन्तलोपाख्यान'**, रामबिहारीमिश्रक अनेक पौराणिक कथा, गंगाधरमिश्रक **'एक प्राचीन समयक राजा शशांकप्रकाश'**, कुलानन्ददासक **'नलदमयन्ती'** आदिक चर्चा होएत। मुदा एहि श्रेणीमे रमानन्दठाकुरक **'संक्षिप्तमहाभारतसार'** (1920) ओ प्रो. तन्त्रनाथझाक **'हितोपदेशसार'** क विशेष रुपसँ उल्लेख कए सकैत छी। एहि प्रकारक अनुवादक दृष्टिएँ 1967 ई.मे प्रकाशित प. राजेश्वरझाक 'उर्वशी' ओ **'विद्याधरकथा'**क सेहो विशेष रुपसँ उल्लेख कए सकैत छी; कारण, एहि अनुवादमे मैथिली गद्यक स्वभावक रक्षा भेल अछि तथा कथा कहबाक रीतिमे रोचकता आएल।

दोसर श्रेणीक आरम्भिक मैथिली कथा-साहित्यक रचना भेल अपेक्षाकृत अधिक मौलिक रीतिएँ उपाख्यान ओ खण्डकाव्य-प्रणालीमे, जाहि मध्य कथा तँ अवश्य संस्कृत-साहित्यसँ लेल गेल अछि; मुदा कथाक नियोजना ओ कहबाक रीति कथाकारक मौलिक वस्तु थिक। एहि कोटमे हरिनारायणझाक 'सुदर्शनोपाख्यान' ओ म. म. परमेश्वरझाक 'सीमिन्तनी आख्यायिका' अधिक प्रसिद्ध अछि। एहि श्रेणीमे आधुनिक विकसित गद्य ओ कवित्वपूर्ण शैलीमे रचित प्रो. रमानाथझाक **'उदयनकथा'** ओ **वररुचिकथा'**क चर्चा कएल जाएत, जकरा पुरान रीतिक कथा पर आधारित लघु उपन्यास कहि सकैत छी। काव्यानुशासनक 7म ओ 8म सूत्रक टीकाक अनुसार ई खण्डकथा थिक; कारण, ई दुनू कथा 'कथासरितसागर'क प्रसिद्ध वृत्तान्तक आधार पर लिखल गेल अछि ओ मध्यक ओहि ओहि उपाख्यानकेँ नहि लिखल गेल अछि जकर नायकक चारित्रिक विकासक हेतु कोनो आवश्यकता नहि छलैक। स्थान-स्थान पर भावानुवाद भेलहु सन्ताँ ई दुनू लेखकक मौलिक कृति सएह कहल जाए सकैत अछि। एही श्रेणीमे श्रीकृष्णठाकुरक **'चन्द्रप्रभा'**, बाबू तुलापतिसिंहक **'मदनराज-चरितउपन्यास'** तथा तेजनाथझाक **'नरोत्तमकथा'** क सेहो चर्चा होएत। एतहि श्रीमती जयन्तीदेवीक मिथिलामे प्रचलित व्रत-उपवासादिक कथा-संग्रह 'आराधना' (1971)क सेहो उल्लेख होएत जकरा लेखिका रोचक ओ प्रांजल भाषा-शैलीमे प्रस्तुत कएल अछि। एखन धरि साधारणतः परम्परासँ लोकजिह्वामे जीवित व्यावहारिक एहि रीतिक कथाक संग्रह भए गेलासँ एकटा पैघ अभावक पूर्त्ति होइत अछि।

कथाक आरम्भिक विकासमे संस्कृतक अतिरिक्त अंगरेजी ओ बंगलाक कथाक अनुवाद सेहो बड़ योगदान देलक। अंगरेजीसँ इसोपक नीतिकथा (दुइगोट), शेक्सपियरक **'टेम्पेस्ट'**क 'कमला', गोल्डस्मिथक 'बेकफिल्ड पादरी' ओ जानशनक

'राजकुमार रसेलस' आदिक अनुवाद कएल रमानन्द ठाकुर, वैद्यनाथ चौधरी, डा. उमेशमिश्र, दीनानाथझा प्रभृति। तहिना बंगलासँ अनूदित भेल शिवनन्दन चौधरी द्वारा 'कपालकुण्डला' ओ 'मृण्मयी', काशीनाथझा द्वारा 'मायाशंकर' 'युगलांगुरीय' ओ 'राजपूतजीवन संध्या', जीवछमिश्र द्वारा 'विचित्र रहस्य', छेदीझा द्वारा ' महाराष्ट्र जीवन-प्रभात' ओ 'सीतावनवास', सुमनजी द्वारा 'दर्पचूर्ण' 'निष्कृति' ओ 'युगलांगुरीय', भुवनी द्वारा 'विषवृक्ष', श्रीव्यास जी द्वारा 'बाभनकबेटी' आदि आदि। एम्हर आबि अन्यान्य भारतीय भाषाक अतिरिक्त रुसी भाषाक उत्कृष्ट कथासभकेँ, विशेषतः टालस्टायक कथाक अनुवाद करबा दिसि अधिक प्रवृत्ति देखि रहल छी। एहि क्षेत्रमे श्री गंगानाथझा, श्री हंसराज, प्रो. रमाकान्तमिश्र, विनयगोपालझा, प्रभृतिक कार्य उल्लेखनीय भेल अछि। 1988 ई. मे डा. रामदयाल राकेश द्वारा अनूदित 'सात जापानी कथा'क सेहो पुस्तकाकार प्रकाशन भेल अछि।

संस्कृत-अंगरेजी नाट्य-कथाकेँ संक्षेपमे प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ 'नाट्य-कथासार'मे प्रकाशित प्रो. तन्त्रनाथझा ओ डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क सम्मिलित कार्यक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहि पुस्तकमे शेक्सपियरक हैमलेटक अतिरिक्त कालिदासक तीनू नाटक, भवभूतिक 'मालतीमाधव'ओ हर्षक 'नागानन्द'क कथाकेँ मौलिक रीतिएँ रोचक शैलीमे लिखल गेल अछि। एहि ठाम संस्कृतक प्राचीन धार्मिक कथाकेँ नवीन रुपेँ प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ महारानी राजलक्ष्मीक श्रीमद्भागवत पर आधारित 'श्रीमद्भागवत-प्रकाश' (1968-69) ओ रामायणक पाँच गोट शरणापन्न-कथाक संग्रह 'विभीषणशरणापन्न' (1972) सेहो उल्लेखनीय थिक आओर से अभिव्यक्तिक प्रौढ़ता एवं कथा कहबाक मौलिक रोचक शैलीक कारणे।

एहि प्रकार आधुनिक रीतिक मौलिक उपन्यास ओ कथाक विकास भेलहु सन्ताँ प्राचीन रीतिक अनूदित ओ मौलिक रीतिक कथाक अभाव नहि अछि जे कथासाहित्यकेँ नवीनताक दिसि उन्मुख करबामे बड़ योगदान दैत रहल अछि।

उपन्यास :- मैथिलीमे उपन्यास बड़ लोकप्रिय भेल अछि एवं अद्यावधि शतावधि उपन्यास पत्र-पत्रिकामे अथवा पृथक् पुस्तकाकार प्रकाशित भए चुकल अछि। 1967 ई. धरि प्रकाशित उपन्यासमे प. जनार्दनझा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु (1914), 'शशिकला' (1915), 'कलियुगीसंन्यासी वा ढकोसलानन्द' (1921), 'पुनर्विवाह' (1926) एवं 'द्विरागमनरहस्य' (1945-46), जीवछमिश्रक 'रामेश्वर' (1915), रासबिहारी लालदासक 'सुमति' (1918), भोलक 'मनुष्यक मोल' (1920), ओ 'विवाह', पुण्यानन्दझाक मिथिला-दर्पण (1925), डा. कांचीनाथझा 'किरण'क 'चन्द्रग्रहण' (1932), प्रो. हरिमोहानझाक 'कन्यादान' (1933) ओ 'द्विरागमन' (1945), बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक 'चामुण्डा' (1933), कुमार गंगानन्दसिंहक

'अगिलही' (1935), हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क 'माधवीमाधव' (1935), बाबूगंगापतिसिंहक 'सुशीला' (1943), योगानन्दझाक 'भलमानुस' (1944) एव 'पवित्रा' (1966), ब्रजनन्दनक 'असहाय जाया' (1946), श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क 'पारो' (1946), 'नवतुरिया' (1954) एवं 'बलचनमा' (1967), श्रीशारदानन्दझाक 'जयबार' (1946), श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क 'कुमार' (1946), श्री अवधनारायणझाक 'वनमानुष' (1947), श्रीचतुराननक 'कला' (1948), श्री बदरीनारायण दासक 'चन्द्रकला' (1950), डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'प्रतिमा' (1950) एवं 'मधुश्रावणी' (1956), श्रीअमरजीक 'वीरकन्या' (1950) एव 'विदागरी' (1963), स्व. ब्रजकिशोरवर्माक 'अनलपथ' (1964), 'विद्यापति' (1960) एव 'अर्द्धनारीश्वर' (1967-68), श्री गणेशचन्द्रझाक 'कृष्णक हत्या' (1957) एव 'रत्नहार' (1957), छत्रधारीलालदासक 'आन्दोलन' (1958), श्रीतारानाथकण्ठक 'दूर्वाक्षत' (1958), राजकमलक 'आदिकथा' (1958) एव 'आन्दोलन' (1967-68), श्रीसोमदेवक 'चानोदाइ' (1959) एवं 'ब्रह्मपिशाच' (1964) श्रीमायानन्दमिश्रक 'बिहाड़ि पात आ पाथर' (1960) एवं 'खोंता ओ चिड़ै' (1965), शेफालिकावर्माक उपनामसँ प्रकाशित शेखरजीक 'तSर पट्टा ऊपर पट्टा' (1961), श्रीधीरेश्वरक 'भोरुकबा' (1965), ललितक 'पृथिवीपुत्र' (1965), स्व. रुपकान्त ठाकुर 'नहला पर दहला' (1960), श्रीरमानन्द रेणुक 'दूधफूल' (1967), श्रीजीवकान्तक 'पनिपत' (1967), श्रीमतीश्यामझाक 'बिनु मायक बेटी' (1967), श्रीबिन्देश्वरमंडलक 'बाटक भेँट जिनगीक गैंठ' (1967) प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

1967 ई.क पश्चात् तीस गोटसँ अधिक उपन्यासक प्रकाशन भेल अछि. 'मिथिला-मिहिर'मे धारावाहिक रुपसँ अधिक, पुस्तकाकार कम। ई उपन्यास सब थिक 1968 ई. मे प्रकाशित व्यासजीक 'दूपत्र'; श्री विनोदक 'नयनमणि' श्री कुँवरकान्तक 'सेहन्ता', श्री सूर्यनारायणक 'ग्रेजुएट गर्ल'। श्री विद्यानाथझा 'विदित'क 'ओ' श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'गोनूझा', श्री श्यामानन्द ठाकुरक 'विदेसरा', श्री जीवकान्तक 'दू कुहेशक बाट' एवं 'अगिनवान', श्री रामचन्द्र चौधरीक 'वन्दिनी-वधू' एवं श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला',1969 मे प्रकाशित मणिपद्मक 'राजा सलहेस', 1970 मे प्रकाशित श्रीमती गौरी मिश्रक 'चिनगी', श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'अभिशप्त', मणिपद्मके 'लोरिक विजय', ओ 'कोब्रा गर्ल', डा. बी. झाक 'जनम-जनम हम रुप निहारल', श्री जीवकान्तक 'पीअर गुलाब छल ', राजकमलक 'एक अनार: एक रोगाह' एवं डा. लेखनाथमिश्रक 'रंजना', 1971 ई. मे प्रकाशित श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'युगपुरुष' एवं श्री जीवकान्तक 'नहि, कतहु नहि', 1972 ई. मे प्रकाशित श्री शशिकान्तक 'गिरहकट्ट', 1973 ई. मे प्रकाशित श्रीगंगेशगुजंनक 'पहिल लोक', डा. नित्यानन्दझाक 'धरती जागि उठल', मणिपद्मक 'नैकाबनिजारा', श्री सुशीलक 'घड़ारी'

ओ श्रीजयन्तीदेवीक 'अनुपमा' एवं 1974 ई. मे प्रकाशित पराशरक 'दरिद्रछिम्मरि'। तत्पश्चातक प्रकाशित उपन्यास सबहिमे श्रीप्रभासकुमार चौधरीक **'हमरालग रहब'** ? (1977), ओ **'नवारम्भ'** (1979), मणिपद्मक **'लवहरि-कुशहरि'**, **'रङआरणपाल'**, **'भारतीक बिलाड़ि'** (1978) ओ **'फुटपाथ'** (1978), बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक **'पञ्चवटी'** (1978), श्री मार्कण्डेय प्रवासीक **'अभियान'** (1979) एवं श्री सुधांशुशेखर चौधरीक **'ई बतहा संसार'** (1978)। तत्पश्चात् प्रकाशित उपन्यास थिक श्री मती लिलीरेक **'मरीचिका'** (प्रथम भाग, 1981, द्वितीय भाग, 1982), डा. चन्द्रनारायण मिश्रक **'बालादित्य'** (1981) एवं **'वैशाखी पूर्णिमा'** (1982), श्री गिरिधर झा 'विकल'क **'आँगनक रेखा'** (1981), श्री प्रभासकुमार चौधरीक **'बाबा पोखरिमे कतेक मछरी'** (1981), श्री सुशीलक **'गामवाली'** (1982), श्री धीरेन्द्रक **'ठुमुकि बहू कमला'** (1982), श्री विभूति आनन्दक **'पराजित-अपराजित'** (1982), डा. शिवाकान्तठाकुरक **'धकोर धाहय धान'** (1982), श्री मार्कण्डेय प्रवासीक **'हम कालिदास'** (1983), श्री सुधांशु शेखर चौधरीक **'निवेदिता'** (1983), श्री श्यामानन्दठाकुरक **'नीचाँ मूँहे'** (1983), श्री प्रदीपविहारीक **'गुमकी ओ बिहाड़ि'** (1983) एवं **'विसूवियस'** (1986), श्रीमती उषाकिरण खाँक **'अनुत्तरित प्रश्न'** (1984) एवं **'दूर्वाक्षत'** (1987), श्री रविकान्त नीरजक **'जिन्दाबाद जिन्दाबाद'** (1985), मणिपद्मक **'नागभूमि'** (1985) एवं **'आदिम गुलाम'** (1987), श्री मायानन्दमिश्रक **'मन्त्रपुत्र'** (1986), श्री नवीन चौधरीक **'बाट ओ बटोही'** एवं पं. श्री योगेश्वरमिश्रक **'श्यामाक करूण कथा'** (1987)।

एकरा अतिरिक्त सुमनजीक **'माला'**, स्व. ईशनाथझाक **'सेवा'**, भुवनजीक **'समाज'**, श्री भीमेश्वरसिंहक 'विभुति'मे प्रकाशित युगप्रवर्त्तकक उपनामसँ **'सन्ध्या'** प्रभृतिक सेहो नामोल्लेख्स कए सकैत छी। मुदा एहिमे अधिकांश अप्राप्य अछि एवं जे आंशिक रुपेँ प्राप्य अछि ताहिसँ उपन्यासक स्वरुप स्पष्ट नहि होइत अछि।

मैथिली उपन्यासक आरम्भिक स्वरुप जनसीदनजी, जीवछमिश्र, रासबिहारीलालदास, पुण्यानन्द, भोल, किरणजी आदिक उपन्यासमे देखल जा सकैत अछि। एहि श्रेणीमे बाबू लक्ष्मीपतिसिंह, श्रीव्रजनन्दन आदिक उपन्यासक सेहो गणना कएल जा सकैत अछि, यद्यपि एहि रचनासभक प्रकाशन बड़ पाछाँ आबि भेल। एहि सभ उपन्यासक उद्देश्य भेल समाज-सुधार एवं मनोरंजन। एहिसभमे नहि तँ चरित्र-चित्रणक सम्यक् विकास दिसि ध्यान देल गेल आ ने समाजक यथार्थ वातावरण-सृष्टिहिक चेष्टा भेल, केवल कथाकेँ कहबाक प्रवृत्ति धरि लक्षित होइत अछि। यद्यपि पूर्वापेक्षेँ आरम्भिक उपन्यासकार कथा-वस्तुकेँ उचित रुपमे प्रतिपादित करबामे विशेष पटु बूझि पड़ैत छथि तथा तदनुरुप परिस्थितिक निर्माण सेहो सम्यक् रीतिएँ करैत छथि, मुदा अधिकांश कथा रोमांटिक अछि ओ जकर विकास संयोग पर आधारित अछि। एही दृष्टिएँ आरम्भिक

उपन्यास ओ नाटकक कथावस्तुक विषय ओ शैलीमे विशेष अन्तर नहि अछि। एहि सभ कथावस्तुमे प्रेम, समाज-सुधार ओ नवयुगीन आदर्शक स्थापनाक चेष्टा भेल अछि। स्व. जीवछ मिश्रक **'रामेश्वर'** यद्यपि 1915 ई. मे प्रकाशित भेल, किन्तु रचना-कालक दृष्टिएँ एकरे मैथिलीक प्रथम उपन्यास कहल जाए सकैत अछि। एहिमे श्राद्धादि मध्य व्ययाधिक्य सामाजिक दोषक उद्घाटन भेल अछि जकर कारणे रामेश्वरकेँ कतेक पराभव उठबए पड़लैन्हि। **'सुमति'**मे सेहो विवाह प्रभृतिमे अनावश्यक व्ययाधिक्यक कारणे पारिवारिक पराभवक वर्णन भेल अछि तथा ओहि पराभवकेँ सुमतिक समान नारी कोना सम्हारैत छथि, तकरहु उल्लेख भेल अछि। एहिमे उचितवक्ता पात्रक सृष्टि कए लेखक कथावाचक-शैलीमे स्थान-स्थान पर उपन्यासक उद्देश्यक दिसि पाठकक ध्यान आकृष्ट करबैत रहैत छथि। मुदा ई उपन्यासकलाक कसौटी पर बड़ निर्बल सिद्ध होइत अछि। वस्तुतः उपन्यासकलाक प्रथम आभास भेटैत अछि जनसीदनजीक **'शशिकला'**मे, परंच एहि उपन्यासक सात परिच्छेद मात्र प्रकाशित भए सकल। एहि उपन्यासमे सर्वप्रथम वातावरणक यथोचित निर्माणक चेष्टा भेल तथा कथावस्तुक सुनियोजित विकास दिसि सेहो ध्यान देल गेल। एहि मध्य शशिकलाक पिताक बेटीक विवाहक चिन्तासँ लए घटक सुन्दरठाकुरक शशिकलाक सम्भावित वर-पक्षक लोकक संग विवाहक वार्त्ता धरिक वर्णन भेल अछि। एतबा संक्षिप्त होइतहुँ एहिमे पहिले बेर उपन्यासकलाक बीज अन्तर्निहित भेटैत अछि। एहिमे जनसीदनजी भारतीय सामन्तसेवीलोकनिक परवशता तथा पाश्चात्य-रीतिक शिक्षाक प्रतिफलक चित्रण यथार्थ शैलीमे कएने छथि, जेहन पूर्व नहि भेल छल। **'निर्दयी सासु'**मे पुतहुक प्रति सासुक स्वाभाविक ईर्ष्याक वर्णन भेल अछि, जाहिमे मनोवैज्ञानिकताक नीक जकाँ निवेश भेल अछि। अन्य उपन्यासमे जनसीदनजीक **'पुनर्विवाह'** विशेष सफल भेल अछि आओर ई हिनक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि। एहि मध्य ज्योतिषी भवनाथझाक पुनर्विवाहक वर्णन अछि जे मृत्युशय्या पर पड़लि प्रथम पत्नीक प्रतिवाद कएलहुँ सन्ताँ करैत छथि। पुनर्विवाह कारणे पण्डितजीक जीवनमे केहन परिवर्तन अबैत अछि तथा कोन प्रकारेँ पश्चात्तापक आगिमे जरैत ओ अपन कुकर्मक फल भोगैत छथि, तकर चित्रण एहिमे बड़ स्वाभाविक रीतिएँ भेल अछि। अतः एकरा मैथिलीक प्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यास सेहो कहि सकैत छी। एहि उपन्यासक उद्देश्य पूर्णतः स्पष्ट अछि कारण, उपन्यासकार पुनर्विवाहक दोषकेँ स्फुट कए देखाओल अछि। एहि प्रकार रासबिहारीलाल ओ जनसीदनजी दुनूक रचनामे आधुनिक रीतिक उपन्यासकलाक आरम्भिक स्वरुपक दर्शन होइत अछि। मुदा ओहि मध्य चरित्र-चित्रण ओ कथावस्तुक सन्तुलित विकासक सूक्ष्मताक अभाव अछि आ गम्भीर ओ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक सेहो विन्यास नहि भए पाओल अछि। डा. रमानन्दझा 'रमण' **'निर्दयी सासु'** ओ **'पुनर्विवाह'** केँ **'मिहिर'** सँ संकलित कए एकत्र पुस्तकाकार छपबाए देल अछि, जाहिसँ एकर अनुशीलन सुलभ भए गेल अछि।

भोलझाक **'मनुष्यक मोल'** ओ **'विवाह'**क कथामे उद्देश्यक प्रतिपादन अपेक्षाकृत

अधिक सुनियोजित भेल अछि। 'मनुष्यक मोल'मे कुलीन घरमे विवाह करबाक प्रवृत्तिक कारणे परिवारक पराभवक वर्णन भेल अछि। हर्षनाथक विवाह हुनक पिता भलमानुसक परिवारमे करबैत छथिन्ह, जाहि कारणे हुनका अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचए पड़ैत छैन्हि। हर्षनाथ जीविकार्जनक हेतु कलकत्ता जाइत छथि ओ मनोरमा अपन नैहर, जाहि ठाम ओ पतिक निर्धनताक कारणे सब दिसिसँ उपेक्षित होइत रहैत छथि। अन्ततः ओ अपन पतिकेँ अपन दुःखक सूचनाक हेतु पत्र लिखैत छथि जे पता अशुद्ध रहबाक कारणे घुरि आपस चल अबैत अछि ओ एकर भेद खुजलासँ माए-बापक अनर्गल गंजन सहैत छथि। दुर्व्यवहार असह्य भेलाक कारणे मनोरमा अन्तमे आत्महत्या कए लैत छथि। 'विवाह'मे बालविवाहक दोषक निरुपण भेल अछि। ई भोलझाक अपेक्षाकृत निर्बल उपन्यास थिक। हिनका कथाक संघटन, चरित्र-चित्रणक विकास ओ उद्देश्यक प्रतिपादनमे अधिक सफलता भेटल छैन्हि, मुदा जनसीदनजीक अपेक्षा हिनक भाषा अधिक निर्बल छैन्हि।

पुण्यानन्दझाक 'मिथिलादर्पण'क एक भाग प्रकाशित भए सकल 1925 ई. मे। एहि पर बंगलाक प्रभाव अत्यधिक परिलक्षित होइत अछि। एहि वर्गमे गंगापतिसिंहक 'सुशीला' एवं व्रजनन्दनक 'असहाय जाया' उपन्यास सेहो अबैत अछि, जाहि मध्य मैथिल नारीक असहाय जीवनक दुःखद चित्रण भेल अछि। बाबू गंगापति सिंहक 'जयचन्द-पराजय' एवं लक्ष्मीपतिसिंहक 'चामुण्डा' ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यास थिक। एहि मध्य कथाक संघटन, चरित्रचित्रण एवं आत्ममर्यादाक रक्षाक महत्वक सफल प्रतिपादन करबाक दृष्टिएँ 'चामुण्डा' विशेष उल्लेखनीय थिक। हरिनन्दनठाकुर 'माधवीमाधव'मे रोमाण्टिक कथा कहल अछि। एहि मध्य माधव-माधवीक प्रथम दृष्टिमे परस्पर आकर्षण एवं अगणित बाधा-बन्धनक पश्चात् दुहूक मिलनक कथा वर्णित भेल अछि। एहि सभमे आरम्भिक कालक विकसित होइत उपन्यास-कलाक स्वरुपक दर्शन होइत अछि। एही दृष्टिएँ किरणजीक उपन्यास 'चन्द्रग्रहण'क सेहो एहि ठाम चर्चा कएल जा सकैत अछि। एहि मध्य मुसलमानी गुण्डाक हाथसँ स्नानक समय सिमरियाघाटमे युवतीक रक्षाक वर्णन भेल अछि। एहि उपन्यासक मुख्य गुण थिक रोचकता एवं एकर उद्देश्य स्त्रीगणकेँ मेला-ठेलामे जएबाक दुर्गुणसँ अवगत कराएब थिक, मुदा एकर स्थान-स्थान पर स्वाभाविकताक बड़ अभाव अछि। मुसलमानी पात्रसँ हिन्दीमे गप्प करबाओल गेलैक अछि से उचित नहि प्रतीत होइत अछि, कम-सँ-कम मैथिलीमिश्रित हिन्दीक प्रयोग उचित छलैक। दोसर, अपहृता रमणीक मुक्ति-लाभक पश्चात् जेहन वर्णन अछि, से स्वाभाविक नहि कहल जा सकैत अछि। भाषा सेहो अपरिमार्जित अछि। मुदा एतबा तँ निश्चित रुपसँ कहल जा सकैत अछि जे 'चन्द्रग्रहण' आरम्भिक उपन्यासक विकसित रुप थिक।

'चन्द्रग्रहण' धरि विषयवस्तुक व्यापकता ओ ओहिमे निहित वस्तुक सांगोपांगताक दृष्टिएँ वास्तविक अर्थमे कोनहु उपन्यासक रचना नहि भेल छल। बड़

अधिक तँ एहिसँ पूर्वक कृतिकेँ दीर्घ कथाक संज्ञा दए सकैत छी। वस्तुतः पहिल बेर वास्तविक अर्थमे उपन्यासक रचना कएल प्रो. हरिमोहनझा अपन 'कन्यादान'क एवं कुमार गंगानन्दसिंह अपन 'अगिलही'क जे अन्ततः अपूर्ण रहि गेल तथा प्रो. रमानाथझाक शब्दमे, यदि ई पूर्ण भेल रहितए तँ प्रायः आइओ ओ उपन्यासकलाक दृष्टिएँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास रहितए।

मैथिली साहित्यकेँ लोकप्रिय बनएबामे प्रो. हरिमोहनझाक 'कन्यादान'क बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। एहिसँ मैथिली भाषा-भाषी शिक्षित जनसमुदायक जतबा मनोरंजन भेल, ततबा मैथिली साहित्यक कोनहु अन्य कृतिसँ नहि। एहिमे अंगरेजी-शिक्षित चण्डीचरणमिश्रक कथा वर्णित अछि। ओ अंगरेजी सभ्यता-संस्कृतिमे एतेक रँगि जाइत छथि जे हुनका सामाजिक वस्तुस्थितिक विस्मरण भए जाइत छैन्हि। हुनक विवाह ग्राम्यबाला बुच्चीदाइसँ होइत अछि तँ हुनक स्वप्नभंग होइत छैन्हि। ओ अपन पत्नीकेँ परित्याग कए चतुर्थीक राति जे विदा भए जाइत छथि से पुनः नहि घुरैत छथि। प्रो. झा एहि उपन्यासमे मैथिल समाजक विकृति मात्रक चित्रण कएल, मैथिल समाजक दोषटाकेँ स्फुट कए देखाओल। एहिसँ मैथिल बालिकाकेँ अंगरेजी रीतिसँ शिक्षित करबाक महत्त्वक प्रतिपादन मात्र भेल। एही कारणे हिनक बड़ आलोचना कएल गेल। अतः प्रो. झा लोकमतसँ प्रभावित भए 13 वर्षक पश्चात् 'द्विरागमन'क रचना कएल तथा जाहि समस्या दिसि 'कन्यादान'मे ध्यान आकृष्ट कएने छलाह, तकर ओहिमे समाधान प्रस्तुत कएल। बुच्चीदाइ अपन भाइ रेवतीरमणक संग काशी जाइत छथि तथा ओ ओहि ठाम हुनका नवीन रीतिएँ शिक्षा दैत छथिन्ह। अन्तमे ओएह ग्राम्यबाला बुच्चीदाइ चण्डीचरणमिश्रक गर्व चूर्ण करैत छथि तथा अद्भुत रीतिएँ हास्यपूर्ण वातावरणमे, हुनक द्विरागमन सम्पन्न होइत छैन्हि। अन्तमे कन्याक पितामहक आगमन कराए तथा हुनका द्वारा चण्डीचरणकेँ उपदेश दए जे मैथिल कन्याकेँ पाश्चात्य रीतिएँ नहि, भारतीय रीतिसँ शिक्षा देब श्रेयस्कर थिक, उपन्यासक अन्त होइत अछि। एहि प्रकार प्रो. झा 'कन्यादान' लिखि प्रायः ई नहि सोचने छलाह जे हुनका 'कन्यादान'क द्वितीय भाग 'द्विरागमन'क रचना करए पड़तैन्हि। वस्तुतः प्रो. झा मैथिल समाजक जाहि विकृतिक चित्रण कएल, से समाजक आलोचना करबाक निमित्त नहि, मनोरंजन करबाक उद्देश्यसँ, आधुनिकता ओ प्राचीनताक संघर्षक विकृति-मूलक चित्रण कए हास्यक सृष्टि करबाक हेतु। प्रो. झाक सभ कृतिमे मनोरंजनक एही प्रवृत्तिक प्रमुखता अछि। मुदा मनोरंजन ओ स्वस्थ उद्देश्य संग-संग चलैत अछि, तकरा ओ 'कन्यादान' धरिमे अवश्य बिसरने छलाह।

'कन्यादान'मे कथा-तत्व प्रमुख नहि अछि। 'द्विरागमन'मे तँ ई तत्व आओरो अधिक गौण भए गेल अछि। नायकक चरित्रविकास सेहो स्वाभाविक नहि अछि कारण चण्डीचरण समाजक कोनहु वर्गक प्रतिनिधित्व नहि करैत छथि, प्रत्युत ई लेखकक

अंगरेजी शिक्षान्धताक उपहास करबाक साधन मात्र थिकाह। **'द्विरागमन'**क अन्तमे हुनका सामान्य यथार्थक धरातल पर प्रतिष्ठित कए उपन्यासकार कथाकेँ सुखान्त कए देल अछि जे हुनक यथार्थोन्मुख आदर्शवादी दृष्टिकोणक द्योतक थिक। वस्तुतः प्रो. हरिमोहनझाक उपन्यास जीवनक व्यापक ओ बहुविध चित्रणक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण नहि अछि आओर ने नायक-नायिकाक विकासात्मक चरित्रचित्रणक दृष्टिएँ। एकर महत्व अछि प्रमुख ओ गौण दुहू पात्रक विशिष्ट चरित्रांकनक दृष्टिएँ। ओ ढुनमुनकाकी, आवेशरानी, लालकाकी, झारखण्डीनाथ आदि पात्रक शब्दचित्र जाहि स्वाभाविक चित्रमयताक संग प्रस्तुत कएल, से मैथिली साहित्यमे अभूतपूर्व वस्तु छल। घटकराजक टनटनौआ, खनखनौआवाला घटकैतीक विभाजन, पुरोहितक बोल लगनाइ, झारखण्डीक- 'आङनमे पेट फुलता हए', बटुकजीक बोली प्रभृति वास्तविक महत्वक वस्तु थिक जे मैथिली साहित्यमे उपन्यासक उज्ज्वल भविष्यक सूचक छल। वस्तुतः प्रो. हरिमोहनझा जाहि गतिशील भाषामे एहि दुनू उपन्यासक रचना कएल, से ऐतिहासिक वस्तु भेल। ओ अपन उपन्यासमे पाश्चात्य साहित्यकचित्रणप्रणालीकसुन्दर मैथिलीकरण कएल। हिनक वर्णन सजीव, सरस, सरल, रोचक ओ मनोरंजक अछि, जेहन पहिने कोनहुँ उपन्यासमे प्रयुक्त नहि भेल छल। कतोक दृष्टिएँ ओ अपन उपन्यासमे अपन पिता जनसीदनजीक वर्णन-प्रणालीकेँ चरम उत्कर्ष पर पहुँचाए देल। एहिसब कारणे मैथिली कथा-साहित्यक इतिहासमे प्रो. हरिमोहनझाक आगमन स्वर्णयुगक परिचायक कहल जाए सकैत अछि।

मुदा उपन्यासक परिपक्वता ओ परिमार्जनक दृष्टिएँ कुमारगंगानन्दसिंहक अपूर्ण उपन्यास **'अगिलही'** सर्वोत्कृष्ट अछि। एहि मध्य उपन्यासकार बड़ कलात्मक रीतिएँ सूक्ष्मताक संग एक बर्द्धिष्णु मैथिल बालिकाक स्वाभाविक चित्रांकन कएल अछि जे सर्वथा यथार्थ ओ मनोवैज्ञानिक भेल अछि। एहि उपन्यासक 'प्राण' थिक स्वाभाविकता-भाषा, अभिव्यक्ति ओ चारित्रिक। एहि मध्य हास्यरस विकृतिमूलक अछि। 'अगिलही' बाल्यावस्थाक अज्ञानता ओ चंचलताक कारणे स्वाभाविक रीतिएँ जे कार्य कए बैसैत अछि, से हँसबैत अछि। प्रो. हरिमोहनझा जकाँ ओ विकृतिक निर्माण नहि करैत छथि, जाहिमे कृत्रिमता हो। 'अगिलही'क दोसर गुण थिक मनोवैज्ञानिक चित्रण। बालमनोविज्ञानक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ 'अगिलही' सर्वथा प्रशंसनीय उपन्यास थिक। खेदक विषय एतबे जे ई पूर्ण नहि भए सकल ओ तेँ जतबा ई लिखल भए सकल, ताहि आधार पर एकरा कतोक व्यक्ति उपन्यासक श्रेणीमे राखब उचित नहि बुझैत छथि।

'अगिलही'क पश्चात् 1955 ई. धरि चारिगोट प्रतिनिधि उपन्यासकार साहित्य-जगतमे अवतरित होइत छथि- योगानन्दझा, श्रीयात्री, श्रीव्यास ओ ब्रजकिशोरवर्मा। योगानन्दझा **'भलमानुष'**क रचना कएल मिथिलामे प्रचलित कुलीन-प्रथाक वैवाहिक दोषकेँ उद्घाटित करबाक निमित्त। एहि उपन्यासक नायक जगदीश आधुनिक युगक नवयुवक अछि, जे जैबारक कन्या निर्मलासँ विवाह करैछ।

नायकक पिता नायककेँ अपन पत्नीकेँ परित्याग करबाक हेतु प्रेरित करैत छथि। निर्मला अपन पतिक परिवारसँ तिरस्कृता भए तथा निराशातिरेकक कारणे कालकवलित होइत अछि। एहि प्रकार ओ अपन उपन्यासमे कुलीनप्रथाक दोषकेँ स्फुट कएने छथि। ई उपन्यास प्रकाशित होइतहिँ बड़ प्रसिद्ध भेल। एहि उपन्यासमे उच्च कोटिकक उपन्यास-कलाक बीज निहित अछि। एहिमे सर्वाधिक उल्लेखनीय ओ प्रसंग थिक जखन निर्मला ओ जगदीशक प्रथम मिलन होइत अछि तथा जखन जगदीश विवाहक पश्चात् सासुरसँ गाम घुरैत अछि आओर अपन पत्नी ओ सासुरक प्रसंग मित्रमण्डलीमे गप्पसप्प करैत अछि। एतए वर्णनक सांगोपांगता एवं यथार्थता बड़ मार्मिक भेल अछि। हिनक दोसर उपन्यास **'पवित्रा'** 1966 ई.मे प्रकाशित भेल। एहिमे उपन्यासकार मुख्यतः विधवाक समस्या उठओने छथि। एहिमे ध्यान आकृष्ट कएल गेल अछि जे विधवाक संरक्षक समाजमे केओ नहि, अपितु रक्षके भक्षक अछि। टेंगरलाल रक्षक रुपमे भक्षकक प्रतीक थिकाह। पवित्रा ओ त्यागमूर्त्तिक पारस्परिक आकर्षण ओ सामाजिक बन्धनक कारणे विवशतापूर्ण अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक। समस्या धरि अछि प्राचीन ओ उपन्यासकारकेँ एहि मध्य 'भलमानुष' जकाँ सफलतो नहि भेटल छैन्हि। 'भलमानुष'तेँ हिनक एतेक प्रभावपूर्ण सिद्ध भेल जे कुलीनताक पक्ष लए ओकरा पर आक्षेपक उत्तरमे श्री शारदानन्दझा **'जयबारक'**क आओर 'जयबार'उत्तरमे श्री अवधनारायणझा **'वनमानुश'**क रचना कएल। मुदा एहि दुनू उपन्यासमे शिष्टता ओ साहित्यिकताक पूर्ण अभाव अछि, भाषा सेहो अपरिमार्जित ओ अभिव्यक्ति निष्प्राण अछि। उपन्यासकलाक दृष्टिएँ तेँ निम्न कोटिक अछिए।

व्यासजी अपन अमर उपन्यास **'कुमार'**क रचना 1943 मे कएल, मुदा प्रकाशित भेल ई 1946 ई.मे। एहिमे व्यासजी विमल नामक नवयुवकक मनोभावनाक उत्थान-पतनक चित्रण कएल अछि जखन ओ मानभूमिक प्रवासी मैथिल ब्राह्मण-परिवारक सम्पर्कमे अबैत अछि। असफल प्रेमक कारणे निराश भए ओ आजीवन कुमार रहबाक व्रत लैत अछि, किन्तु अन्ततोगत्वा मृत्युशय्या पर पड़लि भौजीक इच्छा रखबाक हेतु विवाह करैत अछि। एहि उपन्यासमे विमलक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण चित्रण मुख्य आकर्षणक वस्तु थिक। विमलक भावसंघर्ष तखन चरम सीमा पर पहुँचि जाइत अछि जखन ओ आजीवन कुमार रहबाक अपन व्रतक प्रति पश्चात्ताप व्यक्त करैत अछि। एहि मध्य देओर-भाउजिक आदर्श प्रेमक वर्णन सेहो बड़ आकर्षक भेल अछि। 'कुमार'मे जीवनक विविध पक्षक चित्रण कएल गेल अछि, यथा-ग्राम्यजीवन, छात्रजीवन, यात्रा, प्रेम, रोमांस आदिक। एहि उपन्यासमे भावुकताक मात्रा प्रचुर अछि जे एहि मध्य कवित्वपूर्ण गरिमाक सृष्टि करैछ।

श्रीयात्री मैथिलीक उत्कृष्ट उपन्यासकार छथि एवं हिनक प्रथम उपन्यास थिक **'पारो'** एवं दोसर **'नवतुरिया'**। **'पारो'** मे बिरजू ओ बिरजूक पिसिऔत बहिनक परस्पर

आकर्षण, प्रेम ओ कोमल भावक चित्रण भेल अछि। अतः असंगत प्रेमक आक्षेपक कारणे एकर बड़ आलोचना भेल। मुदा यात्रीजी एहि प्रेमकेँ कतहु अनुचितक सीमा पर नहि पहुँचओने छथि। 'नवतुरिया'मे यात्रीजी बालवृद्धविवाह तथा मिथिलाक नवतुरियालोकनिक नवजागरणक चित्रांकन कएने छथि। 60 वर्षक चतुराननझा जखन बिसेसरीक संग विवाह करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि तँ बूढ़लोकनिक अनटोटल काज नवतुरिया लोकनिकेँ नहि देखल गेलैन्हि, ओ सभ केओ तकर विरोध कए बैसैत छथि तथा अन्ततः वाचस्पतिझाक संग बिसेसरीक विवाह सम्पन्न होइत अछि। एहि प्रकार यात्रीजी 'नवतुरिया'मे समस्या ओ तकर समाधान दुनू चित्रित कएने छथि। मुदा यात्रीजीक मुख्य चमत्कार ने तँ समस्यामे अछि आ'ने तकर समाधान प्रस्तुत करबामे: प्रत्युत से अछि समाजक यथार्थ चित्र अंकित करबामे। पुरुष ओ स्त्री पात्रकेँ जाहि स्वाभाविक यथार्थताक संग यात्रीजी चित्रित कएने छथि से हुनक सामाजिक जीवनक संग सूक्ष्म परिचयक द्योतक थिक। मुदा एहि यथार्थचित्रनक सफलताक मूल साधन भेल अछि हिनक भाषाशैली। ई स्वाभाविक जनप्रिय लोकभाषा लिखबामे सिद्धहस्त छथि। मुहावरा ओ लोकोक्तिक प्रयोग हिनक केहन सटीक होइत अछि, तकर हिनक प्रत्येक गद्यरचना साक्षी थिक। मुदा एहि उपन्यासमे तँ से चरम सीमा पर पहुँचल अछि। हिनक 'नवतुरिया' व्यंग्यवक्रोक्ति, हास-परिहास, उपमा-उत्प्रेक्षा सब दृष्टिएँ आकर्षक अछि। परन्तु ओ जाहि समस्या पर उपन्यास लिखने छथि, से आब विगत युगक समस्या थिक। 'बलचनमा'मे यात्री जी अपन ओ चमत्कार उत्पन्न नहि कए सकलाह अछि, जकरा हेतु ई प्रसिद्ध छथि: कारण, भाषापरिवर्तनक संग एकर आंचलिक-तत्त्व समाप्त भए गेलैक अछि, जाहि हेतु ई हिन्दी साहित्यमे बड़ प्रसिद्ध भेल छल।

ब्रजकिशोर वर्माक 'अनलपथ' 'मिथिलामिहिर'क किछु अंकमे आंशिके प्रकाशित भेल छल। अतः एहि उपन्यासक वास्तविक स्वरुपक परिचय नहि देल जाए सकैत अछि। हिनक वास्तविक अर्थमे प्रथम उपन्यास थिक 'विद्यापति' जे पुस्तकाकार प्रकाशित भए चुकल अछि। एहिमे वर्माजी विद्यापतिक व्यक्तित्वक विभिन्न रुपकेँ सरस शैलीमे चित्रित कएने छथि। एहि उपन्यासक प्रमुख आकर्षण थिक वर्माजीक ओजस्वी ओ कवित्वपूर्ण गद्य। मुदा ऐतिहासिक उपन्यासक जे गरिमा चाही, तकर एहिमे अभाव अछि: कथाक शृंखला सेहो सुगठित नहि अछि तथा चरित्रांकन सेहो उपन्यासोचित नहि कहल जा सकैत अछि। वस्तुतः हिनक 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास सब तरहेँ सफल भेल अछि। एहि मध्य जीवनक बहुविध स्वरुपक अंकन भेल अछि। घटना ओ चरित्रक विविधता तथा भारतीय संस्कृतिक महत्वांकन एहि उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक। नायकक मुहसँ समग्र वर्णन भेल अछि, जनिक विवाह अन्ततः बुलन्तीक संग होइत छैन्हि। एहि उपन्यासक मुख्य समस्या थिक राजनीतिक। अन्तिम परिच्छेदमे मौसीक उक्ति- 'ई कहिया धरि भारत एना मास्को आ न्यूयार्क दू दिशामे उधिआइत रहतैक', उपन्यासक मूल-समस्या दिसि इंगित करैत अछि। मुदा समग्र उपन्यास रहस्यमय रीतिएँ प्रतीक शैलीमे लिखल

गेल अछि एवं विभिन्न सभ्यता-सांस्कृतिक समन्वयक सन्देश एहिमे देल गेल अछि। वस्तुतः 'अर्द्धनारीश्वर' पैघ उपन्यासरौं अधिक एक पैघ महाकाव्य थिक।

अमरजी द्वारा रचित उपन्यास थिक नारीजागरणक समस्या पर आधारित 'वीरकन्या' ओ 'विदागरी' जे हास्यव्यंग्य ओ सरल सरस भाषा-शैलीक कारणे प्रसिद्ध अछि। बदरीनारायणदासक 'चन्द्रकला' ओ डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'प्रतिमा' साधारण कोटिक उपन्यास थिक।

1955क पश्चात् अद्यावधि काल धरि नव-नव रीतिक अनेक उपन्यास लिखल गेल अछि, जकर आरम्भ राकमलक 'आदिकथा' सँ होइत अछि। एहिसँ पूर्व रचित 'दूर्वाक्षत', 'कृष्णक हत्या', ओ 'रत्नहार' साधारण उपन्यास थिक। छत्रधारीलालदासक 'आन्दोलन'मे नवयुगीन जागरणक नीक चित्रण भेल अछि। डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'मधुश्रावणी' मध्य भावुकता बड़ उत्कट अछि जे कथाक विकास ओ चरित्रक स्वाभाविक चित्रणमे बाधक सिद्ध होइत अछि। उपन्यासकार शरदबाबूक 'शेषप्रश्न', 'गृहदाह' प्रभृति उपन्याससँ बड़ प्रभावित छथि। स्थान-स्थान पर जाहि रुपक प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन लेखक करए लगैत छथि, से स्पष्टतः अप्रासंगिक अछि, कारण कथाक विकासमे ताहिसँ कोनो सहायता नहि भेटैत छैक आ'ने अभिप्रेत उद्देश्यहिक पूर्त्ति होइत छैक। एहन-एहन स्थल उपन्यासमे चतुर्थांशसँ अधिक अछि। तथापि नलिनीक चरित्रचित्रण बड़ सुन्दर भेल अछि। एहि उपन्यासक कथामे सेहो 'संयोग'क (Accidence) बड़ विन्यास अछि।

1955 क पश्चात् जे उपन्यासकार नवीन वस्तुविन्यास ओ नूतन चित्रण-प्रणाली लए उपस्थित भेलाह एवं जाहिसँ भविष्यक सम्भावना बढ़ल, ताहिमे श्री सुधांशु शेखर चौधरी, स्व. राजकमल, श्रीसोमदेव, श्रीमायानन्द, स्व. ललित, श्री धीरेश्वर आदिक नाम अग्रगण्य अछि। एहिमे सर्वप्रथम राजकमलक 'आदिकथा' प्रकाशित भेल। 'आदिकथा'क रचना राजकमलजी यात्रीजीक 'पारो'क परम्परामे कए मामि (सुशीला) ओ भागिन (देवकान्त)क अनुचित प्रेम-कथाक वर्णन कएल। यात्रीजीक अपेक्षा एहिमे अनुचित प्रेमक अधिक उत्तेजक रुप प्रस्तुत कएल गेलैक, मुख्यतः ओहिठाम जखन देवकान्त सुशीला दिसि वासनाक ज्वारमे बढ़ैत अछि, परंच अपनाकेँ रोकि लैत अछि। वस्तुतः एहि उपन्यासक महत्व अछि रचना-प्रणालीक दृष्टिएँ। ई कथाप्रधान उपन्यास नहि थिक। एकर उद्देश्य अछि अमर्यादित सत्यक मनोविश्लेणात्मक उद्घाटन करब। एहि मध्य कथाक विकासक हेतु चरित्रक निर्माण तँ अवश्य भेल अछि, मुदा कथा धरि अछि एकर निर्जीव। राजकमलजीक 'आन्दोलन' उपन्यास सर्वप्रथम 'आखर'मे क्रमशः धाराबाहिक रुपसँ प्रकाशित भेल छल। एहि मध्य ओ कलकत्तामे चालि रहल मिथिला, मैथिल ओ मैथिली-सम्बन्धी आन्दोलन ओ तकर वस्तुस्थितिक बड़ सजीव चित्र अंकित कएने छथि: मुदा संग-संग लेखकक सामाजिक विषमताक प्रति विक्षोभ, असन्तोष

ओ कुण्ठाक सेहो बड़ सफलताक संग अभिव्यक्ति भेल अछि। 'आन्दोलन'क मूल-कथाक संग-संग मानव-जीवनक क्षुधा, आत्मरक्षा एवं यौन-पिपासाक चित्रण कए लेखक मैथिली उपन्यास-क्षेत्रमे नवीनताक संचार कएने छथि। ई उपन्यास आत्मकथाशैलीमे रचित भेल तथा एकर प्रमुख-प्रमुख पात्र भुवनजी, कमल, निर्मल, नील आदि अपन-अपन वर्गक प्रतिनिधित्व करैत छथि, अतः टिपिकल छथि। मुदा व्यापकताक दृष्टिएँ ई कृति उपन्यासक अपेक्षा दीर्घ कथा [illegible] सकैत अछि। 'आखर'क सम्पादकक अनुसार ई उपन्यास राजकमलजीक प्रथम उपन्यास थिक, जे 1957 ई. मे रचित भेल छल। राजकमलजीक दोसर उपन्यास 'पाथरफूल' सेहो प्रकाशित होअए लागल छल हुनकर जीवितावस्थामे परन्तु प्रकाशित नहि भेल छल। हालहिमे हिनक कथा-साहित्य मैथिली अकादमी पटना द्वारा 'कृतिराजकमलक' नामसँ प्रकाशित भेल अछि।

1970 ई. मे हिन्दीसँ अनूदित हिनक अतियथार्थवादी लघु उपन्यास 'एक अनार एक बीमार' प्रकाशित भेल। एहि मध्य कलकत्ता महानगरक कुत्सामय मध्यवर्गीय जीवन आ ओहिमे निहित विक्षोभ, विद्रोह ओ अनास्था तथा सेक्स ओ गरीबीक नग्न चित्रण भेल अछि, ईश्वर नामक एहन नवयुवकक चित्रण जे अवसर, शक्ति ओ स्नेहकेँ परित्याग कए देलक अछि ओ जकर अन्तस्थल स्थापित व्यवस्थाक प्रति घोर घृणासँ भरल अछि। राजकमलक ई उपन्यास विवादास्पद बंगालक उपन्यासकार समरेश बसुक 'पातक' प्रजापति प्रभृतिक परम्परामे रचित अस्तित्ववादी यथार्थक अभिव्यक्ति दैत एकटा नवीन मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि।

श्रीसुधांशु शेखर चौधरीक 'तऽर पट्टा उपर पट्टा' 1961 क 'मिहिर'मे शेफालिकानन्दीक उपनामसँ दुइ खण्डमे धारावाहिक प्रकाशित भेल छल। शेखरजीक ई उपन्यास मनोविश्लेषण-पद्धतिमे रचित भेल, जकर प्रथम खण्डमे उपन्यासक नायक परमाक आत्मविश्लेषण अछि तँ दोसर खंडमे नायिका गंगाक। परमा थिक चिन्तनशील नवयुवक जे आदर्शवादी अछि एवं जे अपन पतिपरित्यक्ता बहिन गंगाक प्रेरणासँ सामाजिक कुरीति ओ दुर्भावनाकेँ दूर करबाक निमित्त गामक राजनीतिमे प्रवेश करैछ तथा नवयुवकक एकटा दल संघटित कए कार्यमे प्रवृत्त होइछ। मुदा ओकर सत्यपथारूढ़ होएब गामक प्रभावपूर्ण घाघ-स्वभावक लीलाधरबाबूकेँ नीक नहि लगैत छैन्हि। ओ अपन तत्कालिक द्वारा परमा पर जमुनीक संग व्यभिचार करबाक मिथ्या कलंक प्रसिद्ध करैत छथि मुदा अन्तमे जमुनीक सतित्व भंग करैत स्वयं रँगल हाथ पकड़ल जाइत छथि ओ अन्ततः अभियानदल विजयी होइछ। एहि मूल कथाक संग गंगाक चरित्रांकनक द्वारा उपन्यासमे नारी-जीवनक व्यथा, विवशता ओ करुणाक विलक्षण चित्रण भेल अछि। गंगा पतिपरित्यक्ता अछि कारण, ओकर पति सन्तोषपूर्ण विदाइ नहि भेटबाक कारणे ओकरा छोड़ि दोसर विवाह कए लैत छैक। मुदा अन्तमे ओकर द्विरागमन करबाए उपन्यासकार उपन्यासकेँ सुखान्त कए देल अछि। एहि प्रकार एहि मध्य सामाजिक ओ

मानसिक समस्याक संग-संग विलक्षण चित्रण भेल अछि जे उपन्यासक इतिहासमे अभिनव वस्तु थिक। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक दृष्टिएँ सेहो एहि उपन्यासक विशेष महत्व अछि। चरित्रचित्रणक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ एहि उपन्यासकेँ उत्कृष्ट कोटिक कहल जाए सकैत अछि।

श्री सोमदेवक **'चानोदाइ'** 1959 मे पुस्तकाकार छपल ओ **'ब्रह्मपिशाच'** 1964 मे 'मिहिर'क अंकसभमे धारावाहिक रूपमे, पुनः **'होटल अनारकली'** नामसँ 1970 ई. मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। 'चानोदाइ'मे ओ अशिक्षाक कारणे उत्पन्न दूषित सामाजिक वस्तुस्थितिक चित्र प्रस्तुत कएने छथि। एहिमे समस्या उठाओल गेल अछि जे की नारी पुरुषक भोग्या ओ प्रदर्शनक साधन मात्र थिकीह ? एहि प्रश्नक उत्तर देबाक चेष्टा भेल अछि। व्यक्तिपरक एहि उपन्यासमे उपन्यासकार नाटकीय कथोपकथनसँ युक्त मनोविश्लेषणात्मक चित्रणप्रणालीक अनुसरण कएल अछि। मुदा उपन्यासक उत्तरार्द्ध अशक्त ओ असन्तुलित अछि। वस्तुतः सोमदेवजीकेँ उपन्यासकारक रूपमे 'ब्रह्मपिशाच'मे विशेष सफलता भेटलैन्हि। ई उपन्यास लिखल अछि ओ तस्करव्यापार ओ कालाबाजारक समस्या लए आओर एहि व्यापारक दाओ-पेंचके ओ बड़ यथार्थ रीतिएँ चित्रित कएल अछि। वस्तुतः ई मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यास थिक। देशमे बढ़ैत भ्रष्टाचारकेँ देखि सरकार एकर विरुद्ध सामरिक अभियान आरम्भ करैत अछि। एहि भ्रष्टाचारभेदी मोर्चाक नेतृत्व करैत छथि सदानन्द, जे बजरंगलाल 'ब्रह्मपिशाच'क नामसँ निष्णात तस्कर व्यापारी लखिंदर सिहक दलमे मिलैत छथि ओ भेद लैत रहैत छथि। अन्तमे ओही बजरंगलालक हत्या सिहजी करबए चाहैत अछि। मुदा ताबत धरि ओ जालमे फँसि चुकल रहैत अछि। सदानन्दक सहायिका बनैत छथि मीरा ओ रमा। उपन्यास आद्यन्त रोचक ओ रहस्यपूर्ण बनल अछि, जे जासूसी उपन्यासक पैघ सफलता थिक। सोमदेवजी जाहि वर्गक चित्रण कएल अछि तकर गुण ओ दोषकेँ बड़ नीक जकाँ उद्घाटित करबामे सफल भए सकलाह अछि। ओहि पापनिरत समाजक नर ओ नारीक विविध विषयक कुण्ठा, असन्तोष आदिक जाहि यथार्थताक संग उपन्यासकार वर्णन कएल अछि, से हुनक तीक्ष्ण अन्तर्दृष्टि ओ प्रतिभाक परिचायक थिक।

मायानन्दक **'बिहाड़ि पात आ पाथर'** अनमेल-विवाहक समस्या लए रचित भेल। नीलकण्ठबाबू बेटी बेचबाक हेतु प्रसिद्ध छलाह आओर आब तिरबेनीक पारी छल, यद्यपि ओ पत्नीकेँ आश्वसन दए चुकल छलाह जे आब ओ एहन कार्य नहि करताह। परंच रुद्रनाथमिश्र सन सम्पन्न व्यक्ति भेटलासँ ओ पत्नीकेँ देल गेल आश्वासन बिसरि जाइत छथि तथा तिरबेनीक विवाह मिश्रजीक संग भए जाइत अछि। मिश्रजीक, विवाहक लगले किछु दिनक पश्चात्, मृत्यु भए जाइत अछि। तिरबेनी यौवनक बिहाड़ि पात आ पाथर पड़लहु सन्ताँ मर्यादाक अतिक्रमण नहि करैत अछि। पतिक मृत्युक पश्चात् ओकरा भवानन्दक सहज सहानुभूति ओ स्नेह भेटैत छैक, मुदा मिथ्या [illegible] कारणे ओकरा

सासुरहिँ परित्याग कए नैहरक आश्रम लेबए पड़ैछ, जतए ओकरा संग बालस्नेही सिरीलालक सम्पर्कमे वृद्धि होइछ। उपन्यासकार सिरिया ओ सिरकेनीक कोमल ग्रामभावनाक बड़ मर्मस्पर्शी चित्रण कएने छथि, जाहि मध्य दलितवासनाक उष्णता तँ अवश्य अछि, मुदा स्वाभाविकता सेहो अछि। सिरियाक आकस्मिक मृत्युसँ पुनः सिरकेनीकेँ पैघ आघात पहुँचैत छैक। एहि मध्य उपन्यासकार दुर्भाग्यसँ आक्रान्त विधवा युवतीक मर्मस्पर्शी मनोविश्लेषणात्मक चित्रण कएने छथि। एहिमे घटनाक बाहुल्य नहि, चारित्रिक अन्तर्द्वन्द्वक सूक्ष्मता अछि। कखनहुँ-कखनहुँ रोचकता मनोविश्लेषणक तहमे दबा तँ अवश्य जाइत अछि, मुदा से नहि धरि अछि आद्यन्त। 'बिसाढ़ि पात आ पाथर'क विपरीत 'खौँता ओ चिड़ै'मे मायानन्द ग्राम्यजीवनक बदलैत परिवेशक बड़ यथार्थ चित्रण कएने छथि। एहि मध्य मध्यवर्गीय ब्राह्मण-समाज एवं निम्नवर्गीय धानुक-समाजक स्वार्थसंघर्षक चित्रण बड़ मार्मिक भेल अछि। निम्नवर्गीय नवयुगीन जागरणक प्रतीक थिक सिरीलाल, तुरंता प्रभृति पात्र जे अब अधिकारक हेतु संघर्ष करैत अछि ओ बाबू-भैयाक प्रतीक कमिस्नरहिँ जकर सम्मुख झुकए पड़ैत छैन्हि तथा अन्तमे समन्वय स्थापित होइत अछि। मुदा एहि कथाक संग-संग दोसर कथा सम्बद्ध अछि उत्ताल यौवनरससँ उच्छलित दुखनीक, जकर पति परिपक्व युवक नहि छैक तथा ओकरासँ दुखनीक कामवासनाक तृप्ति नहि होइत छैक। अतः ओ आसक्त होइत अछि सिरीलालक पूर्ण विकसित यौवनक प्रति। ओ योजनाक अनुसार नैहर भागि जाइत अछि सिरीलालसँ सम्बन्ध करबाक निमित्त। मुदा जखन ओकर पति मिसरीलाल ओकर पत्नीत्वक स्वाभाविक स्नेहक प्रतीक सोनाक कनौसी धुरएबाक हेतु अबैत छैक तँ ओकर नारीहृदय पतिक प्रति सहज प्रेमक उष्णतासँ मोम जकाँ द्रवित भए जाइत छैक ओ अनायास ओकर वासना मर्यादित भए जाइत छैक। तखन ओ अपन निश्चयकेँ बदलि मिसरीलालक संग पुनः घुरि जाइत अछि। एहि प्रकार मायानन्दजी निम्नजातीय युवतीक कोमल ओ उदात्त पक्षक बड़ कलात्मक वर्णन कएने छथि। एहि क्रममे परिस्थितिक निर्माण तथा चरित्रक मनोविश्लेषण उपन्यासमे अपूर्व भेल अछि। सिरीलालक प्रति ओकर भाउजक पवित्र आकर्षण, प्रेम ओ त्यागक चित्र सेहो बड़ मार्मिक भेल अछि। मायानन्दजीकेँ निम्नवर्गीय समाजक स्वरूपक पूर्ण निरीक्षण छैन्हि, जकरा ओ अद्भुत स्वाभाविक रीतिएँ प्रतिपादित कएने छथि। उचितलाल एम.एल.ए.क भाषण ओ व्यक्तित्वक चित्र सेहो बड़ स्वाभाविक ओ चोटगर भेल अछि। वस्तुतः मायानन्दजीक रचनामे समाजक बाह्य ओ अन्तः दुहू पक्षक बड़ मनोरम यथार्थ चित्र अंकित अछि, जाहिमे भावुक कविक सहानुभूति-अद्भुत कवित्वक संचार कएने अछि।

मायानन्दजीक 'खौँता ओ चिड़ै' 1965 ई.क 'मिहिर'मे छपल, मुदा ओहिसँ बहुत पूर्व 'मिहिर' हिमे श्रीधीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क 'भोरुकबा' ओ ललितक 'पृथ्वीपुत्र' प्रकाशित भए चुकल छल जे 1965 ई.मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। 'खौँता ओ चिड़ै' जकाँ 'भोरुकबा' ओ 'पृथ्वीपुत्र'मे मिथिलाक ग्राम्यजीवनक बदलैत परिवेशक चित्रण भेल,

जाहिमे नवजागरणक मनोमुग्धकारी सुगन्धि अछि। पर एहि मध्य निम्नवर्गीय ओ मध्यवर्गीय निहित स्वार्थ-संघर्षक सुन्दर विन्यास भेल अछि। 'भोरुकबा'मे शोषित किसानक [illegible] अवस्थाक यथार्थ चित्रण भेल अछि जे युगयुगसँ बाबू-भैया द्वारा-दलित होइत आबि रहल अछि। धीरेश्वरजी एहि समस्याक समाधान बाबूभैयाक बदलैत मनोवृत्तिक चित्रणक कए करैत छथि। माधो तथा केथीक सहानुभूति पाबि अन्तमे बुधनाक जीवन सुखमय भए जाइत छैक। पहिलेँ ग्राम्यवातावरणमे नवजागरण उपस्थित भेल अछि, नव आशा-आलोकक 'भोरुकबा'क उदय भेल अछि। ललितजी अपन 'पृथ्वीपुत्र'मे एहि नवजागरणक अंकन किछु भिन्न रूपमे कएने छथि। किसान पृथ्वीपुत्र थिक, अतः ओकरा खेतक प्रति गहन अपनत्व ओ ममता छैक। बिसेसरी, सरूपा, तिनमा प्रभृति एहने पात्र थिक जे भूमिपतिक अत्याचार सहैत-सहैत प्रतिक्रियामे विद्रोह कए उठैत अछि। मुदा अपन अधिकार ओ मर्यादापालनमे बिसेसरी ओ सरूपा एतेक सतर्क अछि जे पुलिस ओकरा किछु बिगाड़ि नहि सकैत छैक। निम्नवर्गीयजीवनक कटुत्वक चित्रण सेहो ललितजी बड़ स्वाभाविकताक संग कएने छथि, मुख्यतः बिजुलीक चरित्र-चित्रणमे, जे सासुरसँ भागि अबैत अछि ओ जतेक बेर भगैत अछि ततेक बेर बिसेसरीक हेतु समस्या बनि जाइत अछि। एहि ठाम मनोविश्लेषणात्मक अन्तर्द्वन्द्वक बड़ मार्मिक चित्रण भेल अछि। हीरालालक पचैती बैसएबाक चित्र सेहो ग्राम्यजीवनक एक मोट विशिष्ट पक्षक उद्घाटन करैत अछि। वस्तुतः ललितजीक उपन्यास बड़ सुनियोजित भेल अछि ओ उपन्यासकलाक सब गुण वर्तमान अछि, मुख्यतः सुनियोजित ओ रोचक कथानकक [illegible], अनुकूल वातावरण एवं व्यक्ति, चरित्र आ घटनाक सांगोपांगताक दृष्टिएँ। 'भोरुकबा', 'पृथ्वीपुत्र' ओ 'खौँता ओ चिड़ै' निम्नवर्गीय ग्राम्यजीवन पर आधारित एके उपन्यासक तीन अध्यायक समान परिलक्षित होइत अछि, जकर रचनाक नेतृत्व धीरेश्वरजी कए मैथिली उपन्यासक इतिहासमे एक नवीन अध्यायक सृष्टि कएने छथि।

1966-67मे उपन्यास-साहित्यक नव उपलब्धि भए प्रकाशित भेल श्रीरमानन्दलाल 'रेणु'क 'दूधफूल'। एहि उपन्यासमे उपन्यासकार ग्राम्यजीवनक यथार्थ चित्र तँ अंकित करबे कएने छथि, जाहि मध्य जीवनक सूक्ष्म निरीक्षण ओ गम्भीर अन्तर्दृष्टि अछि, मुदा एकर महत्व मैथिलीमे नवरीतिक उपन्यासक दृष्टिएँ अधिक अछि। बाल्यावस्थासँ जीवनक मध्याह्न धरि एकर नायक रामसरन नियति द्वारा निर्दिष्ट जीवनप्रवाहमे बहैत रहैत अछि तथा भिन्न-भिन्न परिस्थिति भोगैत रहैत अछि। रेणुजी नायकक चरित्रांकन भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे ओकरा राखि कएने छथि जे [illegible] ओ आदर्शात्मक भेल अछि। रामसरनक बाबाजी होएबाक आ गाम घुरबाक प्रसंग बड़ नाटकीय भेल अछि। एहि कृतिक प्रमुख गुण थिक उपन्यासक निर्दिष्ट घटना ओ ओहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति वा परिस्थितिक सांगोपांग वर्णन। स्थान-स्थान पर मनोविश्लेषण सेहो बड़ मार्मिक रूपेँ उपनिबद्ध अछि। उपन्यासमे आद्यन्त 'सस्पेन्स' ओ रोचकता [illegible] अछि। वस्तुतः 'दूधफूल' मैथिली उपन्यास साहित्यमे एक नवीन दिशाकेँ इंगित करैत

प्रतीत होइत अछि।

1967मे प्रकाशित अन्य उपन्यासमे रुपकान्त ठाकुरक **'नहला पर दहला'** ओ श्रीविन्देश्वर मंडलक **'बाटक भेँट जिनगीक गैँठ'** उपन्यास सेहो उल्लेखनीय थिक। 'नहला पर दहला' जासूसी उपन्यास थिक। अतः मैथिलीक ई दोसर जासूसी उपन्यास थिक। एहि मध्य दुइ गोट कथा कहल गेल अछि, जाहि मध्य कोनहु विशेष पारस्परिक सम्बन्ध प्रतीत नहि होइत अछि। प्रथम कथा थिक डाक्टरसाहेब तथा शान्ति, अजरा, चपला प्रभृतिक तथा दोसर कथा थिक शीला ओ सुधीरक। डाक्टरसाहेब छथि भ्रष्टाचारभेदी सरकारी व्यक्ति एवं शान्ति, अजरा, चपला प्रभृति थिकाह देशविरोधी षड्यन्त्रकारी तत्वक प्रतिनिधि ओ अपराधी। जाहि प्रकार डाक्टरसाहेब एहि तत्वसँ लोहा लैत षड्यन्त्रकेँ विफल करैत छथि, से बड़ रहस्यपूर्ण ओ रोचक रीतिएँ चित्रित भेल अछि। शीला ओ सुधीरक कथा द्वारा उपन्यासकार शिक्षित व्यक्तिक प्रति गामक गुरुजनक दृष्टिकोण केहन रहैत छैन्हि, तकरा बड़ यथार्थ रीतिएँ देखाओल अछि। ई उपन्यास रोचक भेल अछि ओ एहि रोचकतामे उपन्यासकारक सफलता निहित अछि। **'बाटक भेँट ओ जिनगीक गैँठ'** तरुण-तरुणीक प्रणय-कथा थिक। एकर नायक थिकाह सूर्यकुमार एवं नायिका थिकीह चन्द्रमुखी, जनिक कतेक बाधाबन्धनक पश्चात् अन्तमे विवाह भए जाइत छैन्हि। एहि मध्य विवाहमे टाका गनबाक ओ गनएबाक प्रथाक दोषकेँ उद्घाटित करबाक चेष्टा अछि। इहो उपन्यास सरस शैलीमे रचित अछि।

श्रीजीवकान्तक मैथिली साहित्यमे प्रथम प्रवेश कविताक क्षेत्रमे भेल। मुदा 'पनिपत'क पश्चात् **'दू कूहेशक बाट'केँ** प्रकाशित कए ई प्रतिभाशाली लेखक उपन्यासकारलोकनिक अग्रिम पंक्तिमे अधिष्ठित भए गेलाह। हिनक 'दू कूहेशक बाट' 1968मे 'पनिपत'क पश्चात् प्रकाशित भेल। मुदा हिनक प्रथम उपन्यास थिक 'दू कूहेशक बाट' आओर तेँ हिनक ई उपन्यास 'पनिपत'सँ उपन्यासकलाक दृष्टिएँ न्यून पड़ैत अछि। 'दू कूहेशक बाट'मे स्वाभिमानी, संकोची, भावुक, कल्पनाशील एवं अन्तर्मुखी निर्धन छात्र जितेन्द्रक द्वैधभावनाक अन्तः संघर्षक विश्लेषण भेल अछि। एहिमे नहि तँ कथाक प्रधानता अछि आ ने घटनाक बाहुल्य, मुदा एहि मध्य किशोरभावनाक बड़ सुन्दर चित्रण भेटैत अछि जे यथार्थ होइतहुँ रोमांटिक अछि, उपन्यास होइतहुँ कविता अछि। एहि उपन्यासकेँ पढलासँ भावलोक-सम्बन्धी लेखकक गम्भीर अन्तर्दृष्टि तथा सूक्ष्म विश्लेषण-पटुताक दर्शन होइत अछि। मुदा उपन्यासमे जे विविधता ओ व्यापकता चाही, तकर एहि मध्य अभाव बूझि पड़ैत अछि। 'पनिपत'मे एक व्यक्तिक रुपमे नायक (अरविन्द) क मनोविश्लेषण होइतहुँ सामाजिक समस्याक यथार्थ चित्रणक प्रवृत्ति सेहो अछि। नायक समाजशास्त्रमे एम.ए.पास छथि, मुदा आवेदन पर आवेदन दैतहुँ हुनका कतहु सेवावृत्ति नहि भेटैत छैन्हि। छओ मासक हेतु अस्थायी शिक्षकक पद भेटितहुँ छैन्हि तँ उचित टाका नहि पबैत छथि, अन्तमे नोकरीसँ सेहो हटए पड़ैत छैन्हि। एहि सभसँ

विक्षुब्ध भए अन्ततः निश्चय करैत छथि जे गामहि रहि गृहस्थी करब, मुदा ओ गामक वातावरणसँ सामंजस्य स्थापित नहि कए पबैत छथि। बाधक होइत छैन्हि उच्चशिक्षा एवं मिथ्या प्रतिष्ठाक मोह तथा गामक कुचेष्टाक भय। तथापि साहस करैत छथि, परन्तु घोर रौदी मुँह बाबि आबि सम्मुख ठाढ़ भए जाइत छैन्हि। उपजा नहि होएबाक कारण परिवारक स्थिति दयनीय भए जाइत छैन्हि। ओ परिवारकेँ सहायता करए चाहैत छथि, मुदा किछु कए नहि पबैत छथि, निरुपाय भेल अन्तःसंघर्षक आगिमे जरैत रहैत छथि। अतः एहू कृतिमे जीवकान्त मनोगत द्वन्द्वक विश्लेषणप्रणालीक सएह आश्रय लेल अछि एवं तकरा ओ बड़ पटुताक संग आद्यन्त निभाओल अछि। स्थान-स्थान पर ग्राम्य-जीवनक विवशता, अन्धविश्वास, कुलागत स्पर्द्धा, ईर्ष्याद्वेष, छलकपट प्रभृतिक चित्रण बड़ यथार्थ ओ मर्मस्पर्शी भेल अछि। ग्राम्यजीवनक प्रगतिमार्ग अवरुद्ध अछि कारण, भारतीय कृषक (जाहि मध्य अरविन्दक समान उच्च शिक्षित नवयुवक सेहो छथि) केँ परिस्थितिक संग संघर्ष करबाक क्षमता नहि रहि गेल छैन्हि ओ तेँ परिस्थितिक सम्मुख सम्पूर्ण विवशताक संग आत्मसमर्पण कए हताश भए ठाढ़ छथि। समाजक जे व्यक्ति साहसक कार्य करैत छथि, नवमार्गक अनुसरण करैत छथि, तकर निन्दा होइत अछि। वस्तुतः ई उपन्यास ग्राम्यवातावरणकेँ बड़ सजीव रीतिएँ उपस्थित करैत अछि। नायकक अतिरिक्त जे पात्र छथि-नायकक पत्नी, माए, बाप-सभ ग्राम्यजीवनक करुणा, विवशता तथा नैराश्यकेँ ओढ़ने समय काटि रहल छथि। सभमे आच्छन्न असन्तोष ओ अवसादकेँ लेखक बड़ नीक जकाँ व्यंजित करबामे समर्थ भेल छथि। वस्तुतः 'पनिपत' मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जाए सकैत अछि।

1968 ई.मे धारावाहिक 'मिहिर'मे विनोद'क **'नयनमणि'** ओ कुँवरकान्तक पुस्तकाकार **'सेहन्ता'** प्रकाशित भेल। 'नयनमणि' उपन्यासमे नयनमणि द्वारा चतुरीकेँ कहल गेल वाक्य- **"तोँ तँ मात्र हुनक (समाज) अवगुणकेँ देखबाक प्रयास कयलहक अछि। ....ईर्ष्या-द्वेषक बदलामे हुनकामे प्रेमो छनि, अहंकारक बदलामे ओ अपनासँ पतितकेँ श्रेष्ठो बूझि सकैत छथि। असल बात छैक जे तोँ समाजकेँ प्रेम नहि कएलहक ....ताहिसँ लोक तोरो सुख-दुखमे भाग नहि लेलकह"** - उपन्यासक मूल-उद्देश्यक घोषणा करैत अछि। उपन्यासमे भावुकताक स्वर मुखर अछि। 'सेहन्ता'मे नवयुवकक द्वारा कएल गेल मातृभाषाक उन्नतिक हेतु चलैत आन्दोलन तथा त्यागक कथा चित्रित अछि। एहि उपन्यासमे कुँवरक नीक प्रतिभाक सूचना भेटैत अछि, मुदा चरित्र-चित्रण समीचीन नहि भेल अछि। भाषा सेहो बड़ अपरिमार्जित अछि।

1969 ई.मे साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत 'दू-पत्र' व्यासजीक प्रख्यात लघु-उपन्यास थिक। एहि उपन्यासक महत्व अछि मैथिली उपन्यास-क्षेत्रमे पत्रात्मक रचनाप्रणालीक नवप्रयोग एवं नवीन वस्तु-विषय-ग्रहणक दृष्टिएँ। उपन्यासकार इन्दु, सुरेन्द्र, जेसिका एवं रमेश, चारि गोट मात्र पात्रक वृत्तान्त प्रस्तुत कए बड़ कौशलक संग

दुइ संस्कृतिक तुलनात्मक विवेचना कएल अछि, विशेषतः भारतीय ओ पाश्चात्य दृष्टीकोणमे स्त्रीगणक सामाजिक ओ मानसिक स्थिति ओ आदर्शमे की अन्तर छैक, तकरा स्पष्ट करैत अन्ततः भारतीय ललनाक शालीनताक ओ श्रेष्ठताक बड़ सजीव प्रतिपादन भेल अछि। मानसिक द्वन्द्व ओ संघर्षक सूक्ष्म ओ कलात्मक आकलन एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।

1968 ई. मे अधिकांश लघु-उपन्यासहिक रचना भेल ओ ओहि मध्य समाजक व्यापक चित्र प्रस्तुत नहि कए एकपक्षीय भाव अथवा विचारकेँ कथात्मक रुप प्रदान कएल गेल। एही दृष्टिएँ **'ग्रेजुएट गर्ल'** मे समाजक रुढ़ि-कुरीतिकेँ मेटाए देशक भावी पीढ़िकेँ आदर्शोन्मुख बनएबाक शिक्षित नारीक प्रयासक कथा कहल गेल अछि तँ 'ओ' मे तरुण-तरुणीक प्रणय-भावनाक भावुकतापूर्ण चित्रण भेल अछि। वैध-मिलनक हेतु कोनो समाजगत अवरोध नहि रहितहुँ तरुण तरुणीकेँ प्राप्त करबाक प्रयास नहि करैत अछि ओ अन्तमे तरुणीक अन्य युवकसँ विवाह भए जाइत छैक। आत्मकथात्मक शैलीक 'ओ' उपन्याससँ अधिक गद्य-काव्य कहएबाक अधिकारी अछि।

मिथेलाक लोकप्रसिद्ध धूर्तराज गोनूझाक चरित्र पर आधारित **'गोनूझा'**केँ ऐतिहासिक उपन्यास कहल गेल अछि, परन्तु वर्ण्य-विषयक ऐतिहासिकताक प्रसंग सहजहि शंका होइत अछि। गोनूझा कामरुप जाए नैनाक प्रणय-पाशमे आबद्ध भए जाइत छथि, परन्तु किछु कालक पश्चात् नैनाकेँ छोड़ि मिथिला चल अबैत छथि। गोनूझाक प्रेममे नैना बताहि भेलि हुनक अन्वेषणमे बौआइत अछि। उपन्यासकार एहि कथाकेँ बड़ रोचक शैलीमे विन्यस्त कएल अछि, परन्तु एकर पूर्वार्द्ध जतेक सुनियोजित अछि, ततेक उत्तरार्द्ध नहि। हास्य-योजना एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।

1968 ई. मे प्रकाशित **'दू पत्र'**क पश्चात् जीवकान्तक **'अगिनवान'** ओ श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क **'कादो ओ कोयला'** मैथिली उपन्यास-साहित्यक विशेष उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि। **'अगिनवान'** जीवकान्तजीक सशक्त लघु-उपन्यास थिक जाहि मध्य ओ ग्राम्य-जीवनक सम्पन्नता ओ विपन्नता दुहू पक्षक चित्रण कए ओहि मध्य भोगैत जीवनक अन्तरंगकेँ अपन सजीव शैलीमे उद्घाटित कएल अछि। कुन्तीमाइक दरिद्रता, सपनाक एकान्त मृत्यु-बोध, सुजाताक माइ ओ पितिआइनक कलह तथा मैयाँक मर्यादा ओ अनुशासन सब किछु एहि मध्य चित्रित भेल अछि। परन्तु एहि उपन्यासक सर्वाधिक वैशिष्ट्य थिक जीवनक विभिन्न भाव-बोधकेँ सजीव साकार कए देबामे। उपन्यासमे बड़ प्रभावपूर्ण रीतिएँ ग्राम्य-जीवनक अवसादकेँ चित्रित कएल गेल अछि जे सब केओ मिथ्या आडम्बरसँ आबद्ध रहैत अछि, अपन वर्ग-प्रवृत्तिक कारागारमे बन्दी भेल रहैत अछि। गाममे आगि लगबाक एवं ओहिसँ त्रस्त ओ उत्पीड़ित ग्राम्य-जीवनक जेहन चित्रण एहि मध्य भेल अछि तेहन मैथिलीमे अन्यत्र कतहु उपलब्ध नहि अछि। **'अगिनवान'** जकाँ

1971 ई. मे प्रकाशित **'नहि कतहु नहि'** सेहो मनःस्थिति-चित्रण प्रधान उपन्यास थिक। रासबिहारी नामक एकटा सम्पन्न गृहस्थकेँ दुइ गोट पत्नी छैन्हि, परन्तु पुनर्वासक सरकारी योजनाक ठेकाकेँ कार्यान्वित करबाक कार्यमे थाकल-ठेहिआएल ओ गाम अबैत छथि तँ कोनो पत्नी हुनक खोज-खबरि नहि लैत छैन्हि। उपन्यासकारक शब्दमे - **"क्यो नहि, कतहु नहि जे हुनका मीठ बोल कहतनि।"** तथापि बसमतियाक चरित्र-चित्रण द्वारा सहजात स्नेह ओ सहृदयताक चित्रण भेल अछि। वस्तुतः जीवकान्तक ई उपन्यास सामाजिक ओ पारिवारिक जीवनक असामंजस्य ओ अवसादक कथा थिक।

'नहि, कतहु नहि' मे उपन्यासकार सरकारी योजनाक निस्सारता ओ प्राचीन संस्कार, रुचि तथा ममत्व-भावनाक बड़ सजीव चित्रण कएल अछि। माँटि सरिआबक काल बरमोतरा गामक उजड़लि माउगिक करुण दृष्टि हुनका बेधित करैत छैन्हि। परन्तु पुनर्वासक सब व्यवस्था भए गेलहु सन्ताँ ओतए बसबाक हेतु केओ प्रस्तुत नहि होइत अछि तँ उपन्यासकार कहैत छथि- **"क्यो नहि अपन पुरान नाम, पुरान संस्कार, पुरान रुचि, पुरान घृणा छोड़ै चाहैत अछि। क्यो नहि।"** वस्तुतः पूर्वक उपन्यासक अपेक्षा अधिक गम्भीरतासँ एहि मध्य सामाजिक पक्षकेँ स्पर्श करैत जीवकान्तजी ओहि मध्य उत्थित-पतित मनोभावक यथार्थ शब्दांकन कएल अछि। सम्पन्नतामे निहित विपन्नताक सन्तोषमे निहित असन्तोषक, सामंजस्यमे निहित असामंजस्यक तथा प्रकाशमे निहित अन्धकारक मनोविश्लेषणात्मक चित्रण जेना हिनक अन्यान्य उपन्यासमे भेल अछि तहिना एहि दुनू उपन्यासमे सेहो भेल अछि, अधिक सशक्त शैलीमे ओ एहि विशेषतामे जीवकान्तजी मैथिली साहित्यमे अद्वितीय छथि।

'भोरुकवा'क लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार प्रो. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' एक निम्नवर्गीय विरनीक जीवनकथा थिक। विरनी गुलटेन सिंह द्वारा अपन बहिनक बालात्कार ओ अपन प्रेमिकाक हत्या देखैत अछि, अन्यायकेँ सहबाक हेतु विवश होइत अछि ओ अन्ततः विक्षुब्ध भए कादोसँ सानल गामकेँ त्यागि शहर विदा होइत अछि तथा दरभंगा-पटना होइत कोयलासँ कारी जमशेदपुर पहुँचैत अछि। दरभंगामे उमादारक व्यभिचार, पटनामे इंजीनियरक बेटीक कामाचार तथा रेस्टोराँ मे युवक-युवतीक उन्मुक्त कामविलासक द्रष्टा भए ओकर मन घृणासँ भरि जाइत छैक। जमशेदपुरहु मध्य व्यभिचार ओ भ्रष्टाचारक अनुभव कए ओ हतोत्साह भए उठैत अछि। अन्तमे ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे **"बड़ झंझटि छैक एहि दुनियामे.....सब ठाम पैसा ओ परेनाक लड़ाइ.....सब ठाम मौगी पर दौड़ैत संसार....."**। परन्तु उपन्यासमे संघर्षक चित्रण कतहु नहि अछि, चित्रण अछि परेनाक विवशता ओ 'मौगी पर दौड़ैत संसार'क।

एहि मध्य विरनी ओ कौसल्याक प्रणय-चित्रण बड़ कवित्वपूर्ण भेल अछि, अन्यथा सर्वत्र ग्राम्य अथवा नगरीय जीवनक कुत्सा मात्रक चित्र अछि। उपन्यासक पूर्वार्द्ध

ग्राम्य-परिस्थिति ओ वातावरणक निर्माणक दृष्टिएँ तथा अत्याचार सहैत छोट लोकक विवशताक सांगोपांग चित्रणक दृष्टिएँ सफल कहल जाए सकैत अछि। निम्नवर्गीय जीवन पर आधारित एहि उपन्यासक सम्यक् महत्वकेँ अस्वीकारल नहि जा सकैत अछि।

'कादो ओ कोयला' क चौदह वर्ष पश्चात् **'ढुमुकि बहू कमला'** धीरेन्द्रजीक तेसर उपन्यास प्रकाशित भेल, जाहिमे ओ गाममे होइत गतिशील परिवर्त्तन तथा अर्द्ध-सामन्ती-व्यवस्थाक पराजयक साम्यवादी चित्रण कए दलितवर्गक उत्थानक सन्देश देने छथि। मुख्यतः लेखकक व्यक्तिगत ग्राम्य-परिसरहिक पृष्ठभूमिमे एकर घटना-चक विन्यस्त भेल अछि तथा एकर कतोक चरित्र नरेन्द्र, निरंकुश, मधुकर, किरण प्रभृति यथार्थतः ओहि परिसरक निवासी छथि, कोनो काल्पनिक पात्र नहि। एहि मध्य डा. नरेन्द्रक चित्रण विस्तारसँ भेल अछि- शोषित-दलित निर्धनवर्गक पक्षपाती नेताक रुपमे। एकर अन्य मुख्य पात्र छथि अर्द्ध-सामन्ती-व्यवस्थाक प्रतीक कंटीर मिश्र, दलितवर्गमे उत्पन्न स्वाभिमान ओ संघर्षक प्रतीक ठीठर ओ ओकर बालक रामकिसुन तथा शौर्यसँ प्रदीप्त रामकिसुनक पत्नी सीसापानीवाली। एकर अतिरिक्तो अन्यान्य चरित्र अपन-अपन वर्गीय प्रवृत्तिक प्रतीक छथि। तपेश्वरक चरित्र सर्वाधिक विलक्षण अछि, कारण ओ अपन पिताक अन्यायक प्रति विद्रोह करैछ तथा एहि विद्रोहक वर्णन करबाक उद्देश्य अछि सामाजिक परिवर्त्तनक आदर्शवादी संकेत देब। एहि मध्य कथा कहबाक रीति रोचक, भाषा-शैली स्वाभाविक तथा समाजवादी विचार-धाराक प्रति लेखकक पक्षपात स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि।

1968 ई.मे प्रकाशित श्री रामचन्द्र चौधरीक **'बन्दिनी वधू'**क एतए सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि मध्य दहेज-प्रथाक अति दुःखान्त परिणाम एवं मैथिल समाजक हृदयहीन निर्ममताक नग्न चित्रण भेल अछि जकर कारणे पुनम सन सुन्दरि बेटीकेँ सासुरमे वन्दिनी जकाँ जीवन बितबैत असह्य कष्टक भेग करए पड़ैत छैक। उपन्यासमे वर्णन तँ सजीव अछि, परन्तु भाषाक दोष अखरैत अछि।

1969-70 ई.मे ब्रजकिशोरवर्माक **'राजा सलहेस'** प्रकाशित भेल ओ तत्पश्चात **'लोरिक-विजय'**, **'कोबा गर्ल'** एवं **'नैका बनिजारा'**। एहि चारू उपन्यासक प्रकाशनसँ मणिपद्मजीक औपन्यासिक प्रतिभाक वास्तविक स्वरूप पूर्ण रूपसँ स्फुट भए सम्मुख आएल। 'राजा सलहेस' ओ 'लोरिक-विजय' द्विजेतर जातिक, क्रमशः दुसाध ओ यादव-सम्प्रदायक अत्यन्त प्राचीन लोकगाथा पर आधारित उपन्यास थिक तँ 'नैका बनिजारा' बनिजारा-सम्प्रदायक लोकगाथा पर आधारित अछि। तीनू उपन्यासमे जीवन्त गद्य-शैलीक हेतु प्रसिद्ध उपन्यासकार लोकगाथामे चित्रित तत्कालीन सवर्णेतर समाजक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कएल अछि।

'लोरिक-विजय' लोरिकक अपराजेय पौरुषक लोककथा थिक। लोरिक शूर-वीर ओ अन्यायीक दमनकर्त्ता युगपुरुष छलाह, अलौकिक चरित्रक तेजस्वी लोकनायक। हुनक वैवाहिक पत्नी छलथिन्ह माँजरि, जनिक चरित्रांकन भक्ति, श्रद्धा ओ करुणाक प्रतीकक रूपमे भेल अछि। लोरिक चनैनक मादक रुप-जाल ओ यौवनसँ वशीभूत भए जाइत छथि। चनैनक चरित्रांकन कएल गेल अछि बुद्धि, वासना ओ मादकताक प्रतीकक रुपमे। लोरिक चनैन (बुद्धि)सँ प्रेरणा ग्रहण कए समाजक आततायीक, बंठा, मोचनि, गजभीमलि, हरबा प्रभृतिक संहार करैत छथि, परन्तु अन्तमे परम शान्तिक लाभ करैत छथि माँजरिक प्रेरणासँ। एहि प्रकार 'लोरिक विजय' केवल पौरुषेय चरित्रक सुख-विलासक कथा नहि थिक, ओ आध्यात्मिक जीवन-दर्शन- शैव, बौद्ध ओ तन्त्रक समन्वयात्मक संस्कृतिक कथा सेहो थिक। चरित्र ओ घटनाक्रममे अलौकिकता ओ अतिरंजकताक आरोपक कारणे 'लोरिक विजय'केँ आधुनिक रीतिक यथार्थवादी उपन्यास नहि, प्राचीन रीतिक 'फिक्शन' सएह कहल जाए सकैत अछि।

'राजा सलहेस' शैव-बौद्ध-भावनाक सामंजस्यक कथा थिक। शिवक संहारकारी रुप-सृष्टि कल्याणक कारण कहल गेल अछि। राजा सलहेसक शिवमय व्यक्तित्व आततायीक दमन तँ अवश्य करैत अछि, परन्तु हुनक क्षमाशील चरित्र लोक-कल्याणक प्रतीक बनि जाइत अछि। वस्तुतः राजा सलहेस मानव-देवताक रुपमे चित्रित भेलाह अछि, जकर कारणे ओ आइओ ग्राम्यदेवताक रुपमे समादृत छथि। एहि मध्य मालिन-सम्प्रदायक वर-पुत्री कुसुमाक कल्पना ओ करुणाक प्रतिमाक रुपमे चरित्रांकन बड़ मार्मिक भेल अछि जे बौद्ध-भावनाक प्रतीक थिक। उपन्यासकार कुसुमामालिन ओ सलहेसक पत्नी सत्यवतीक चरित्रांकन सर्वथा भिन्न-भिन्न रुपमे कएल अछि। सत्यवती लोककल्याणक चिरप्रवासी अपन पतिक कल्याण-कामनाक दीप जरओने भारतीय नारीक सम्पूर्ण शालीनताक संग विरहक आगिमे जरैत रहैत अछि तँ कुसुमामालिनकेँ अपन प्रेमीक सहल उपलब्धि होइतहुँ वियोगक पीड़हिमे अतीव आनन्दक प्राप्ति होइत छैक। वस्तुतः 'राजा सलहेस'मे नर-नारी दुहू पात्रक अंकनमे वैविध्यक दर्शन होइत अछि। छठम-सातम शताब्दीक उत्तरी सीमान्त-प्रान्तीय वन्य-जीवनक बड़ यथार्थ आकलन एहि मध्य भेल अछि। ओहि युगक भूगोल ओ इतिहास प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ सेहो एकर महत्व अछि। ओहि युगमे प्रचलित तन्त्र-मन्त्र ओ चौर्य-कलाकेँ सेहो दरसाओल गेल अछि। चीनी आक्रमणक सन्दर्भमे ओहि युगक ऐतिहासिकताक सेहो सम्यक् संपुष्टि होइत अछि।

'नैका-बनिजारा' मणिपद्मजीक सुप्रसिद्ध उपन्यास थिक जे 1972 ई.मे साहित्य-अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भए अपन महत्वकेँ सिद्ध कए चुकल अछि। एहि मध्य तीन कथाक गुम्फन कएल गेल अछि- 1. हिमालय अंचलक कनक मंजरी, 2. सागरबनिजारा रत्नसेन एवं 3. महाभिक्षु देवगुप्तक कथा। उपन्यासकार बड़ कौशलक

संग एहि तीनू कथाकेँ नैका-बनिजाराक मूलकथासँ जोड़ि तत्कालीन समाजक सजीव चित्र प्रस्तुत कएल अछि। सामाजिक जीवनक विविध पात्र, घटना ओ मानसवृत्तिकेँ चित्रित करैत एहि मध्य एक दिसि यदि नैकाक व्यापारिक अभियानक विस्तृत विवरण प्रस्तुत भेल अछि तँ दोसर दिसि नैकाक साध्वी पत्नी फुलेश्वरीक चरित्रांकनक माध्यमसँ पारिवारिक षड्यन्त्र ओ उत्पीड़नक सेहो सजीव चित्र अंकित कएल गेल अछि। लोरिक ओ सल्हेसक चरित्रमे अलौकिकता ओ अतिरंजकता अछि तेना नैनाक चरित्रमे नहि अछि, प्रत्युत नैकाक अधिकांश पात्र मानवीय धरातलपर प्रतिष्ठित छथि, खाली बाछा तिलंगामे ऊर्द्धव-चेतनाक वर्णनकेँ किछु अतिरंजित कहल जाए सकैत अछि।

मणिपद्मजी अपन उपर्युक्त तीनू उपन्यासमे नारीक विभिन्न रुपक विलक्षण चित्रणपूर्वक अद्भुत काव्य-लोकक सृष्टि कएने छथि। लोरिकक मौंजरि, सल्हेसक कुसुमामालिन एवं नैकाबनिजाराक फुलेश्वरीक चरित्र एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि। कथा-युगक सांस्कृतिक ओ धार्मिक भावधाराक चित्रांकनमे सेहो उपन्यासकार कुशलताक परिचय देने छथि। शैव, शाक्त ओ बौद्ध-धर्मक सन्धि ओ समन्वयक सन्तुलित सामाजिक चित्रणक दृष्टिएँ हिनक ई तीनू उपन्यास मैथिली साहित्यक इतिहासमे अत्यन्त महत्वपूर्ण कहल जाए सकैत अछि।

'कोब्रागर्ल' केँ मैथिली जासूसी उपन्यासक क्षेत्रमे मणिपद्मजीक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवदान कहल जाए सकैत अछि। एहि लघु-उपन्यासमे उपन्यासकार द्वारा चीनी जासूसक षड्यन्त्र-जालकेँ भग्न कए शत्रुकेँ विफल-मनोरथ करबाक कथाक अत्यन्त रोचक शैलीमे वर्णन भेल अछि। ई कार्य करैत छथि बनिजारा स्वभावक संजय डा. गुन्दी ओ मगनक सहायतासँ। तिब्बती लामा पीतराक्षस, चीनी युवती एवं कोब्रागर्ल एहि उपन्यासक विलक्षण चरित्र-सृष्टि थिक। आद्यन्त 'सस्पेन्स'केँ स्थापित रखने उपन्यासकार जाहि प्रकारेँ क्रम-क्रमसँ विभिन्न रहस्यकेँ उद्घाटित करैत छथि, से सिद्ध करैत अछि जे एहि रीतिक रहस्य-रोमांचकेँ चित्रित करबहुमे मणिपद्मजी निष्णात छथि ।

लोककथापर आधारित हिनक तीनटा उपन्यास' आओरो प्रकाशित भेल- 'लवहरि-कुशहरि', 'राजा सलहेस' एवं 'दुलरा-दयाल' एवं तीनू उपन्यासमे मणिपद्म अपन पूर्व-प्रकाशित लोकगाथापर आधारित उपन्यास जकाँ उपनिबद्ध लोकनायकक चरित्रकेँ सर्वथा सजीव रीतिए अंकित करबामे समर्थ भेलाह अछि। परन्तु मणिपद्मजीक औपन्यासिक प्रतिभाक नवीन व्याप्ति हिनक 'भारतीक बिलाड़ि' (1978) एवं 'फुटपाथ' (1078) मे ताकल जाए सकैत अछि।

'भारतीक बिलाड़ि' प्रायः मैथिलीक प्रथम उल्लेखनीय बाल-उपन्यास थिक, जाहिमे मणिपद्म एहन कल्पनापूर्ण कथा-लोकक सृष्टि कएलेनि अछि जे सरिपहुँ

मनोरंजक भेल अछि। छोटका बाबूक वैज्ञानिक आविष्कारक फलस्वरूप भारतीक बिलाड़ि उर्द्धव-चेतना-सम्पन्न भए मनुष्य जकाँ बाजए लगैछ। पाछाँ बाबू मिथिला-मोरंग-सीमाक्षेत्रमे जाए ओहि बिलाड़िक सहायतासँ नरभक्षी कनही बाघिन ओ पोसल हिंसक गोहिक वध तथा हत्यारा मनुक्खक दमन करैत छथि। एहि प्रक्रियामे रानी सुगन्धमयी ओ हुनक नुकाएल खजानाक भेद खुजैत अछि एवं अनेक चमत्कारपूर्ण रहस्यक उद्घाटन होइत अछि। पाछाँ ओहि बिलाड़िकेँ संग लए बाबू काठमाण्डू होइत जापान धरिक यात्रा कए अनेक चमत्कारपूर्ण अनुभव प्राप्त करैत छथि। भारतीक बिलाड़ि मंगलग्रह धरिक यात्रा कए अबैत अछि एवं अन्तमे सार्वभौमिक विश्वविद्यालयक कुलपति बनाओल जाइत अछि। एहि प्रकार ज्ञान-विज्ञान, तन्त्र-मन्त्र, इतिहास-भूगोल, जासूसी-तिलस्मी आदि अनेक रहस्य-रोमांचपूर्ण सामग्रीक रोचक सन्निवेश कए मणिपद्म 'भारतीक बिलाड़ि'क रचना कएने छथि, जकरा बालसाहित्यक दृष्टिएँ मैथिलीमे अपूर्व कहल जाए सकैत अछि।

'फुटपाथ' (1978) व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क भारतमे चिरकालसँ व्याप्त भिखमंगी-प्रथापर आधारित उपन्यास थिक। अन्य समृद्ध देशी-विदेशी भाषा साहित्य मध्य सेहो एहि समस्यापर आधारित साहित्यक अभाव अछि। अतः मणिपद्म एहि ज्वलन्त समस्याकेँ अपन उपन्यासक विषय बनाए नवीनता ओ मौलिकताक परिचय देने छथि। उपन्यासकारक कथ्य अछि जे एहि समस्याक समाधान छिटफुट प्रयाससँ नहि होएत, प्रत्युत एहि हेतु "जा धरि सम्पूर्ण समाजकेँ नहि बदलब, समग्र क्रान्ति नहि हैत ता धरि एकर अन्त नहि भए सकत।"

'फुटपाथ' समाजक नग्न यथार्थसँ सम्बन्धित होइतहु यथार्थवादी उपन्यास नहि थिक, प्रत्युत एहि मध्य मणिपद्म कलकत्ताक 'बेगर्स कोलोनी'क पृष्ठभूमिमे कल्पनालोकक सृष्टि कए अपन अन्य उपन्यासे जकाँ लोकोत्तर कवित्वक संचार कएने छथि। एहने सृष्टि थिक हिनक एहि उपन्यासक भाल्तिन एवं कालीमन्दिरक तान्त्रिक तथा विलफ्टन एवं सुरभी। रामनाथक रहस्यपूर्ण रीतिएँ अणुभट्ठीमे जरब, ओकरा बड़का स्मगलर बनि जाएब तथा महामानवक सम्पूर्ण क्रान्तिक फलस्वरुप सामाजिक नैतिकताक पथकेँ पुनः अनुसरण करब आदि अनेक विषयक उल्लेख एहि उपन्यासमे भेल अछि जकरा रोचक ओ रोमांचक कहल जाए सकैत अछि। राजनैतिक मन्त्रीलोकनिक स्मगलरसबसँ अनैतिक साँठ-गाँठ, भिखमंगाक बेटा पेपीक आदर्शवादी चरित्र-निर्माण आदिक सेहो सजीव चित्रण करबामे उपन्यासकार सफल भेलाह अछि, परन्तु एहि उपन्यासक मुख्य महत्व अछि नवीन समस्याक ग्रहण एवं राजनीतिक भ्रष्टाचारक चित्रणक दृष्टिएँ, अन्यथा चरित्रचित्रण, कथा-संघटन, कल्पनापूर्ण वर्णन आदि सब दृष्टिएँ मणिपद्म एहि उपन्यास मध्य कोनहुँ नव दिशाक अनुसन्धान करबामे समर्थ नहि भए सकलाह अछि।

तन्त्रपर आधरित मणिपद्मक दोसर जासूसी उपन्यास **'नागभूमि'** आत्मकथात्मक-शैलीमे रचित अछि। सुरक्षा-सीमा-इन्स्टिट्युट दिसिसँ नायक-पुरुष विदेशी-जालकेँ छिन्न-भिन्न करबाक हेतु जाइत छथि ओ अनेक विघ्न-बाधासँ लोहा लैत विदेशी-जासूसकेँ परास्त कए सीमाकेँ सुरक्षित बनबैत छथि। 'कोब्रा गर्ल' जकाँ एहि उपन्यासोमे मणिपद्मजी रहस्य, रोमांच ओ सस्पेन्स आद्यन्त बनाए रखबामे पूर्ण समर्थ भेलाह अछि। एकर घटना-चक्रमे चमत्कारकेँ सन्निवेश करबाक निमित्त टेलीपैथी, तन्त्र आदिके कल्पनापूर्ण रीतिएँ आधार बनाओल गेल अछि तथा भाषा-शैलीक गत्यात्मक प्रवाह तथा लेखकक चिर-परिचित वर्णन-भंगिमा उपन्यासकेँ रोचक बनाए देने अछि।

1970-71 ई.मे सर्वप्रथम उपन्यासकारक रुपमे अपनाके प्रतिष्ठित करबाक चेष्टा करैत श्रीमती गौरी मिश्र, श्री प्रभास कुमार चौधरी ओ डा. बी. झा सहसा ध्यान आकृष्ट कए लैत छथि। श्रीमती गौरी मिश्र निम्न-मध्यमवर्गीय गृहस्थक दुर्दैन्यक आदर्शवादी कथा लिखल **'चिनगी'**मे ओ ग्राम्य-जीवनक सामाजिक रुढ़िवादिताक नग्न चित्रण कएल। बूझन झाक पुत्री रानीकेँ बारंबार सफलता भेटैत जाइत छैन्हि एवं अंतमे हुनक जीवन सुखी- सम्पन्न होइत छैन्हि। परन्तु रानीक संग विवाहकाल खुर्पीसँ श्याम बाबूक पाएर कटि जाइत छैन्हि ओ लगले धनुष्टंकारो भए जाइत छैन्हि, ई विषय असम्भव थिक। तथापि यत्किंचित् त्रुटि रहलहुँ संताँ नव-जाग्रत नारी-भावनाक रोचक चित्रणक दृष्टिएँ एहि उपन्यासक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

श्री प्रभास कुमार चौधरी **'अभिशप्त'** ओ **'युग-पुरुष'** दुहू मध्य वर्त्तमान युग-जीवनमे पसरल दिशाहीनता, नैतिक ह्रास, अनास्था, खण्डित विश्वास, विक्षोभ आदिक चित्रण यथार्थ शैलीमे कएल अछि। अतः हिनक ई दुनू यथार्थवादी उपन्यास थिक, जाहि मध्य कथावस्तुक सुनियोजित विकास ओ घटना-क्रमक विन्यास नहि, मनोविश्लेषण ओ चिन्तनक प्रधानता अछि। **'अभिशप्त'**मे दुइ पीढ़ी मध्य निहित असंतुलन-वैषम्य, समाजमे पसरल भ्रष्टाचार ओ स्वार्थ, दुइ मित्रक बीचक कृत्रिम सम्बन्ध, पति-पत्नी मध्य निहित व्यक्तिवादी भावनाक कारणे उपस्थित विभेद, कार्यालयक अनुशासन-हीनता ओ साहित्यक्षेत्रमे व्याप्त आडम्बर आदिक वर्णन कए उपन्यासकार वर्त्तमान पीढ़ीक अभिशप्त-आत्माकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कएने छथि। एहिना **'युग-पुरुष'**मे वर्त्तमान व्यवस्थाक आलोचना कएल गेल अछि जाहि व्यवस्थामे शंकर नामक चरित्रवान ओ आदर्शवान नवयुवक सुशिक्षित रहितहुँ अपन जीवनमे असफल होइत अछि तँ चरित्रहीन रतना सुसम्पन्न ओ सुखी भए जाइत अछि। उपन्यासकारक कथ्य अछि जे एहि खण्डित विश्वास ओ भ्रष्टाचारक युगमे अपनाकेँ जे तदनुकूल बनाए लैत छथि, सएह वस्तुतः युग-पुरुष थिकाह। एहि प्रकार एहि दुनू उपन्यासमे उपन्यासकार युगक यथार्थवादी चित्र अंकित कएल अछि। वस्तुतः ई दुनू उपन्यास खण्डित विश्वास, अनास्था, कुण्ठा, विक्षोभ एवं एहि युगक आलोचनाक उपन्यास थिक। मनोविश्लेषणक प्रभावपूर्ण प्रयोग एवं

बौद्धिक-वस्तु-विवेचनक दृष्टिसँ एहि दुनू उपन्यासक महत्व अछि। 'युग-पुरुष'मे चम्पा ओ शोभाक प्रेम-प्रकरण बड़ मधुर ओ अर्थगर्भित भेल अछि ओ रोजीक सन्दर्भमे चरित्रहीनताकेँ उदा त्तीकरण करबामे सेहो उपन्यासकार सफल भेलाह अछि। नवीन वस्तुकेँ प्रतिबद्ध करबाक दृष्टिएँ श्री प्रभास कुमार चौधरीक तिग्म प्रतिभा एहि दुनू उपन्याससँ सहजहिँ सिद्ध भए जाइत अछि।

श्री प्रभास कुमार चौधरी अपन **'हमरा लग रहब' ?** (1977) एवं **'नवारम्भ'** (1979)मे अपन औपन्यासिक प्रतिभाक गत्यात्मक विकास-प्रवृत्तिक उत्तम निदर्शन प्रस्तुत करबामे समर्थ भए सकलाह अछि। 'हमरा लग रहब' ? मे प्रणवक समान सत्वगुणसम्पन्न सर्वथा निर्दोष एक एहन प्रतिभाशाली ओ चरित्रवान व्यक्तिक जीवन-गाथाक वर्णन कएल गेल अछि, जकरा हेतु ओकर देवत्वे अभिशाप बनि जाइत छैक एवं मामीक समान एक एहन ममतामयी नारीक चरित्र-चित्रण भेल अछि जकरा त्याग, करूणा एवं सहिष्णुताक कारणे भारतीय मातृत्वक प्रतीक कहल जाए सकैत अछि। परन्तु उपन्यासकारक अमर चरित्र-सृष्टिक दृष्टिएँ शीलाक चरित्र विशेष रुपसँ उल्लेखनीय थिक। शीलाक चरित्रमे उपन्यासकार कुशलतापूर्वक एक संग नारीक विवशता ओ निर्बलता, प्रेम ओ घृणा, आत्मग्लानि ओ स्वाभिमान, प्रतिशोध ओ प्रतिहिंसा एवं सर्वोपरि प्रणय-भावनाक जेहन सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक उदात्त चित्रण कएल अछि, तकरा कलापूर्ण कहल जाए सकैत अछि। उपन्यासमे अनेक प्रकारक नारीपात्रक सृष्टि कए उपन्यासकार विविध रीतिएँ नारीक सामाजिक शोषणक सर्वांगीण चित्र सफलतापूर्वक प्रस्तुत कएने छथि। उपन्यास समाजक विविध ओ व्यापक चित्र प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ सेहो उल्लेखनीय अछि। एहि मध्य कल्लू चौधरी पतनोन्मुख आभिजात्यवर्गक प्रतीक छथि, माला मिथिलाक परम्परागत बेमेल वैवाहिक प्रथाक कुपरिणामक प्रतीक छथि, मुनेसरा मिथ्या अहंसँ ग्रसित अवसरवादी नेताक प्रतीक छथि आओर एही प्रकारेँ उपन्यासमे समाजक अनेक प्रतीक-चित्र अंकित भेल अछि। परन्तु उपन्यासकारमे सामाजिक नग्नतामात्रकेँ अतिरंजित कए चित्रित करबाक प्रवृत्ति विशेष रुपसँ लक्षित होइत अछि। उपन्यासमे प्रणवकेँ छोड़ि एकहुटा एहन पुरुष पात्र नहि अछि जे कोनहुँ-ने-कोनहुँ रुपसँ सेक्स-अपराधी नहि होथि ओ एकहुटा एहन स्त्री पात्र नहि छथि जे पुरुषक काम-वासनाक आखेट नहि बनैत होथि। एहि प्रकार सामाजिक अनैतिकताकेँ अतिरंजित कए चित्रित करब स्वस्थकर नहि कहल जाए सकैत अछि। एहि उपन्यासक सफलता निहित अछि विभिन्न मानवीय सम्बन्धक सजीव ओ सामाजिक रागात्मक चित्रणमे तथा विविध रीतिएँ भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे प्रणव ओ शीलाक अव्यक्त ओ मधुर प्रणय-सम्बन्धक भावात्मक चित्रण एवं प्रणवक अवसादपूर्ण जीवनक वर्णनमे जखन ओकरा लग रहब केओ स्वीकार नहि करैत अछि। समग्र रुपसँ बिचारलासँ चरित्रक सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक विश्लेपण, मानसिक अर्न्तद्वन्द्वक स्वाभाविक उद्घाटन एवं घटनाक्रमक सजीव चित्रमय प्रतिपादनक दृष्टिएँ वस्तुतः 'हमरा लग रहब' ? मैथिली

उपन्यास-साहित्यमे स्वयं एकटा इतिहासक निर्माण करैत अछि।

'नवारम्भ' (1979) स्वयं उपन्यासकारक शब्दमे 'प्राचीन गौरव आ' परम्परा तथा ओकर ध्वस्त समाधि पर उपजल एकटा लज्जास्पद सभ्यताक बीच एकटा नवचेतनाक स्फुरण"क कथा थिक। उपन्यासक पहिल भाग हर्षोन्मोहलपूर्वक कथामे ध्वस्त होइत प्राचीन गौरव औ परम्पराक वर्णन भेल अछि तँ दोसर भाग लज्जामोहलपूर्वक कथामे तकर समाधि पर उपजैत लज्जास्पद सभ्यताक चित्रण भेल अछि। तेसर भाग 'नवारम्भ'मे श्री प्रभासकुमार चौधरी दलितवर्गक नवचेतनाक स्फुरणकेँ चित्रित करबाक चेष्टा कयने छथि। एकर नायक छथि रवि औ नायिका कविता जनिक मानसिक ऊहापोहक चित्रण करबामे उपन्यासकारक कुशलता देखल जाए सकैत अछि। परन्तु जेना श्री प्रभासकुमार चौधरीक अन्यो उपन्यासक नायकक चरित्रमे लक्षित कयल जाए सकैत अछि, एहि उपन्यासहुक नायक रवि आदर्शवान औ चरित्रवान तँ अवश्य छथि, मुदा एक चिन्तक प्रकारक विवशता औ निर्बलताकेँ ग्रस्त तथा सफलतापूर्वक संघर्ष करबाक गुणक अभावक कारणे अपन नायकत्वकेँ सिद्ध नहि कए पबैत छथि 'नवारम्भ'मे निश्चय उपन्यासकार ग्राम्य-जीवनक विविध पक्ष-ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, स्वार्थपरता, दलित वर्गक शोषण, ग्राम्य-राजनीतिक विद्रूपता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार प्रभृतिक सजीव औ यथार्थ चित्र अंकित करबामे अपन प्रतिभाक उत्तम परिचय देने छथि, तथापि एहि मध्य अपन कृतित्वक ओहि शीर्षकेँ पार नहि कए सकलाह अछि जे हुनक 'हमरा त्या ज्यर्व ?' मे उपलब्ध होइत अछि।

'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' लघु-उपन्यासहुमे हुनक अन्य उपन्यास जकाँ वर्तमान राजनीतिक औ प्रशासनिक सन्दर्भमे आदर्शवादक पराजयक कथा वर्णित अछि, अनेकांनक धरक विकृति औ कामलोलुपताक कथा, ढहैत सामन्ती-प्रतिष्ठाक कथा एवं ग्राम्य-समाजमे गरीबक शोषण औ नृशंस प्रतिशोधक कथा। उपन्यासकार एहि मध्य भास्कर नामक एक पहल पात्रक अवतारणा कयल अछि जे अपन आदर्श जीवन-दृष्टिक कारणे नहि तँ अपन परिवार औ ग्राम्य-समाजकेँ आशीष ने आइ.ए.एस. पदाधिकारीक रूपमे वर्तमान भ्रष्ट सरकारी तन्त्रसँ सामञ्जस्य स्थापित कए पबैत अछि। अन्तमे अपन उच्च प्रशासनिक पदकेँ त्यागि प्राध्यापकक पद ग्रहण करैत अछि तँ शिक्षा-क्षेत्रमे सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार औ अनीतिसँ असामञ्जस्यक कारणे उपहासक पात्र बनैत अछि,एवं घरकेँ अन्यायसँ संघर्ष करैत एक गुण्डाक छुराक शिकार बनि जाइत अछि। उपन्यासकार भास्करक दू खाल्ल द्वारा पाठकक एहि दंभकेँ चरितार्थ करैत छथि- "वी हैव आलरेडी हैड दीज टू ड्राइव टू डेथ अस डुव'...... वी हैव आलरेडी कुम्पिफाइड आवर जिनस।" भास्करक चित्रण द्वारा लेखक एक पहल महिमामयी नारीक उदात्त औ उज्ज्वलचित्र अंकित करबामे समर्थ भेलाह अछि जे यथार्थवादक घोर अन्धकारमे अलौकिक आदर्शवादी आभाक आलोक विकीर्ण करैत प्रतीत होइत छथि।

1970 ई.मे प्रकाशित डा. लेखनाथमिश्रक 'रंजना' मिथिलाक मध्यमवर्गीय परिवारक घटनाप्रधान उपन्यास थिक, आधुनिक शैलिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास नहि। चन्द्रकान्तबाबूकेँ एकटा बेटीक लालसा छलैन्हि, जकर पूर्ति हुनका रंजनाक रूपमे होइत छैन्हि। यथासमय शिक्षिता रंजनाक विवाह एम.ए. उत्तीर्ण प्रतिभाशाली नवयुवक रवीशसँ होइत अछि औ एहिसँ वर-वधू प्रसन्न छथि, परन्तु द्विरागमन भेला पर रंजनाकेँ सासुक संग अनीमनस्य उत्पन्न भए जाइत छैन्हि औ पारिवारिक कलह बढ़ैत जाइत अछि। ई कलह एतेक बढ़ैत अछि जे अकच्छ भए रवीश साधु भए कतहु चल जाइत छथि। अन्तमे रंजना औ रवीशक पुनर्मिलन उपन्यासकार बड़ नाटकीय रीतिएँ करबैत छथि। रंजनाक कथा औ वर्णन-रीतिकेँ बहुत अंशमे रोचक तँ अवश्य कहल जाए सकैत अछि, परन्तु मैथिली उपन्याससाहित्यक अद्यतन विकास-प्रवृत्तिक परिप्रेक्ष्यमे एकरा विगत युगक साधारण उपन्यास मात्र कहल जाएत।

डा. धी. झाक 'जनम-जनम हम रूप निहारल' (1970) लघु-उपन्यास नवीन शिल्पक कुशल प्रयोगक दृष्टिएँ विशिष्ट कहल जाए सकैत अछि। आरम्भमे चारू-पाँचो उपनिबद्ध-पात्रकेँ प्रस्तावित कयल जाइत अछि साक्षात्कार-शैलीमे, पश्चात कथाक रोचक रीतिएँ विकास होइत अछि। एहि मध्य इंजीनियर होइतो कविता औ संगीतक उपासक रवीन्द्र छथि तँ विलायत जयबा लए आतुर धनिक ससुरक अन्वेषण करैत रविकान्त छथि, सीताक चरित्रकेँ सार्थक करैत सौम्य, सुशील औ गम्भीर चित्तवृत्तिक सुनीता छथि तँ पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृतिक प्रतीक चंचल स्वभावक साधना सेहो छथि। परन्तु डा. झा एहि उपन्यास मध्य सुनीता औ रवीन्द्रक सहज प्रणय-मिलन करबाए अपन परम्परागत मैथिलत्वक महत्ताक घोषणा करैत एहि विषयक अपन जीवन-दृष्टिकेँ नीक जकाँ सूचित कए देल अछि। वस्तुतः डा. धी. झाक एहि उपन्यासकेँ नवीन शिल्प-प्रयोग, मनोरंजक कथाकन एवं स्वस्थ जीवन-दृष्टिक कारणे मैथिली साहित्यक विशिष्ट उपन्यास कहल जाए सकैत अछि।

1972 ई.मे कथा कहबाक अद्भुत प्रतिभा तथा नवीन विषयकेँ हृदयग्राही बनएबाक क्षमताक संग उपन्यास-साहित्य-क्षेत्रमे अवतरण होइत अछि श्री शशिकान्तक 'गिरहकट्ट' लए। शशिकान्तजी अशोक नामक किशोरक आत्मकथाक माध्यमसँ 'गिरहकट्ट'क विस्तार कएने छथि। निम्नवर्गीय व्यक्तिक दुर्दशाक वर्णन करैत वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर एहि मध्य घोर प्रहार कएल गेल अछि। देश स्वतन्त्र भेल जमींदारी-प्रथा समाप्त भेल, तथापि निम्नवर्गीय समुदायकेँ सम्यक उन्नति करबाक मार्ग अवरुद्ध अछि, पण्डितजी औ कानूक समान व्यक्ति समाजमे पसरल छथि जे भविष्यक आशा बालवृन्दकेँ कुमार्गमे लगाए पतनक गर्तमे खसबैत रहैत छथि। एहि प्रकार एहि उपन्यासमे प्रतीक-पद्धतिक आश्रय लए नारीगणक अधोगतिक चित्रण सेहो कयल गेल अछि। वस्तुतः 'गिरहकट्ट'मे शशिकान्तक औपन्यासिक प्रतिभाक परिचय तँ अवश्य

प्राप्त होइत अछि, मुदा एहिसँ इहो स्पष्ट भए जाइत अछि जे ओ एखन धरि उपन्यासोचित यथार्थ भापाशैलीक अन्वेषण करबामे पूर्णतः सफल नहि भए सकलाह अछि।

श्री गंगेशगुंजन अपन 'पहिल लोक'मे एक एहन शिक्षित नवयुवक राजूक कथा कहल अछि जे समाजमे व्याप्त विसंगति एवं असन्तुलनक संवेदशील द्रष्टा बनल तथा अपन अन्तस्तलमे सुनगैत विक्षोभ ओ कुण्ठाक उत्पीड़नकेँ विवश भावसँ सहैत ओ साम्प्रतिक विपमताक शिकार बनैत थाक्ल, हारल आ निष्क्रिय बनल रहैत अछि। एहि मध्य प्रलाप-शैलीमे उपन्यासकारक विचारधाराक प्रतिपादन अधिक अछि, कथाक सम्यक् विकास कम। उपन्यासक अपरिहार्य तत्व रोचकताक 'पहिल लोक'मे अभाव बूझि पड़ैत अछि, तथापि सुस्मिताक चरित्रक सन्दभमि नारीक सुकोमल स्नेह-भावक उत्कृष्ट चित्रण रोचक भेल अछि। इलाक प्रसंग नायकक कर्त्तव्य-बोधक स्खलन-चित्रण कए श्री गंगेशगुंजन किशोर-भावुकताक निस्सारताक सेहो मार्मिक अभिव्यक्ति कएल अछि। उपन्यासक अन्तमे करुणाक राजूक ओहि ठाम साहसपूर्वक जएबाक तथा ब्राह्मण द्वारा हर जोतबाक वर्णन उपन्यासक नामकरणकेँ सार्थक करैत अछि। 'पहिल लोक'क महत्व एक नवीन रीतिक प्रयोगक दृष्टिएँ अवश्य अछि, परन्तु एकर मूल्यांकनक प्रसंग मतान्तर भए सकैत अछि। 'पहिल लोक'क विपरीत 'धरती जागि उठल'मे प्रो. नित्यानन्द झा वर्तमान राजीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करैत अभिजातवर्गक प्रति विक्षोभ ओ सर्वहारावर्गक प्रति मार्क्सवादी पक्ष ग्रहण कएल अछि। परन्तु एकर भापाशैली ओ कथा कहबाक रीति उपन्यासोचित नहि कहल जाए सकैत अछि। श्रीमती जयन्ती देवीक 'अनुपमा' नियतिक कुटिल आघातसँ प्रताड़ित एक विधवा नवयुवतीक असफल प्रेमक करुण कथा थिक। लेखिका विशुद्ध रुपसँ कथा कहैत छथि, बौद्धिक व्यायाम कतहु नहि करैत छथि। मैथिल ललना मात्रमे निहित पवित्र मातृत्वक चित्रण सहज सरल भापा ओ रोचक शैलीमे एहन सरसताक संग कएल गेल अछि जे साधारण शिक्षितो व्यक्ति एहि लघु-उपन्याससँ आनन्दलाभ कए सकैत छथि।

1974 ई.मे पराशरक उपनामे प्रकाशित श्री सुधांशु शेखर चौधरीक 'दरिद्रछिम्मरि' आत्मकथात्मक शैलीक प्रौढ़ रचना थिक। अमलक जीवनकथाक माध्यमसँ उपन्यासकार निम्नमध्यमवर्गीय परिवारक कतोक सामाजिक समस्या पर विचार व्यक्त कएल अछि। बंठू, गोपाल प्रभृतिक चरित्रांकन द्वारा नगरीय समाजक तरुणवर्गक कतोक पक्षकेँ एहि मध्य उजागर कएल गेल अछि। समरक सन्दभमि वेतन-भोगी व्यक्तिक स्त्रैण विवशता सेहो बड़ यथार्थ रीतिएँ अंकित भेल अछि। सामाजिक दुर्दैन्य प्रतिभाकेँ विकसित नहि होअए दैत छैक, एकर उदाहरण छथि शिवनाथ ओ अमल। पारिवारिक दुर्दैन्यहिक कारणे रोमांस ओ प्रेमक कोमल ओ मधुर भावना यथार्थ जीवनक प्रस्तरशिलापर आहत भए विनष्ट भए जाइत छैक ओ पारिवारिक पृथक्कीकरण होइछ, अमल ओ रंजनाक प्रेम-प्रकरण एकर दृष्टान्त थिक। अन्तमे उपन्यासकार उत्तरदायित्वपूर्ण कर्त्तव्य-बोधक महत्वकेँ प्रतिपादित करैत छथि दरिद्रछिम्मरि नामे ख्यात अकर्मण्य अमलक अन्तस्तलमे कर्त्तव्यक दृढ़ताभावक चित्रण कए।

'दरिद्रछिम्मरि'मे उपन्यासकार कतोक विलक्षण 'टिपिकल'पात्रक अवतारणा कएल अछि, जेना मामा ओ अमलक पिताक। एहि उपन्यासक प्रत्येक परिच्छेदमे जीवनक यथार्थ सत्यक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण प्रतिपादन भेल अछि, से बड़ सूक्ष्मता, स्पष्टता ओ प्रांजलताक संग। कतहु-कतहु भापाक चिन्त्य प्रयोग अवश्य खटकैत अछि, परन्तु उपन्यासकारक अन्तर्भेदी अनुभव-दृष्टि ओ तकरा रोचक शैलीमे मनोवैज्ञानिक गम्भीरताक संग अभिव्यक्त करबाक कौशल कतहु अरुचि ओ एकरसता नहि आबए दैत अछि। वस्तुतः पराशरक ई कृति अपन रीतिक मैथिली साहित्यक उत्कृष्ट रचना कहाए सकैत अछि।

1980 ई.मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत श्री सुधांशु शेखर चौधरीक 'ई बतहा संसार'क रचना 1957 ई.मे भेल छल, जकर प्रकाशन 1979 ई.मे भेल। एहि मध्य शेखरजी निरंजन-कामिनी, अखिल-चान एवं धनंजय-चान तीन भिन्न-भिन्न प्रकारक प्रणय-कथाकेँ एक सूत्रमे गुम्फित कए प्रेम ओ वासनाकेँ व्याख्यायित करबाक चेष्टा कएने छथि। एहि उपन्यासक महत्व नहि तँ सामाजिक यथार्थक चित्रणमे अछि आ ने चरित्रक सूक्ष्म प्रतिपादनमे अछि अन्तमे चान द्वारा धनंजयक समर्पण-निष्पादनहुमे कोनहु उल्लेखनीय कलात्मक सौष्ठवक दर्शन नहि होइत अछि, एकर महत्व अछि पारम्परिक उपन्याससँ भिन्न विषयकेँ पहिल बेर ग्रहण कए मैथिलीक औपन्यासिक क्षितिजकेँ नव्यतम व्याप्ति प्रदान करबाक दृष्टिएँ। उपन्यास निश्चये प्रेम ओ वासनाकेँ नीक जकाँ व्याख्यायित नहि कए सकल अछि, कतोक घटना तँ एहन अछि जे विश्वसनीय नहि कहल जाए सकैत अछि लोहक छड़सँ पीटल गेलहु पर निरंजनकेँ किछु नहि होइत छैक एवं धनंजय चानक पुतरासँ विवाह करैत अछि। आधुनिक उपन्यासमे एहि प्रकारक वर्णनकेँ हास्यास्पदे कहल जाए सकैत अछि, परन्तु समग्र रुपसँ विचार कएलासँ चरित्रक सूक्ष्म विश्लेपण, घटनाक रोचक वर्णन, स्थान-स्थान पर मानसिक ऊहापोहक चित्रण, विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न-भिन्न प्रकारक कथाक सन्तुलित संयोजन आदि सब दृष्टिएँ एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि।

'निवेदिता' सेहो शेखरजीक 24-25 वर्षक अवस्थाक, अर्थात् स्वतन्त्रता-प्राप्तिक चारि-पाँच वर्ष पूर्वहिक रचना थिक जे पहिने 'मिहिर'मे सन् 1983 ई.क नवम्बर-अक्तूबरक अंकसभमे, पुनः पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। एहि मध्य उदीयमान साहित्यकार प्रफुल्लचरणक चरित्रकथा वर्णित अछि। देश ओ समाजक हेतु किछु करबाक उद्देश्यसँ भावुक ओ आदर्शवादी प्रफुल्लचरण माता-पिताक ममता-पाशकेँ तोड़ि घरसँ बहराए तथा दरिद्रताक अनुभव प्राप्त करैत नाटकीय रीतिएँ नीलिमाक

सम्पर्कमे अबैछ। प्रफुल्लचरण ओ नीलिमा एक दोसराक प्रति अव्यक्त रीतिएँ आकृष्ट होइत छथि। परन्तु प्रफुल्लचरण नीलिमाक सान्निध्यकेँ सेहो त्यागि विभिन्न रीतिएँ संसारक अनुभव प्राप्त करए लगैत अछि। अन्तमे दुहूक नाटकीय रीतिएँ मिलन होइत अछि तथा दुहू गोटा मानव-सेवाक पथ पर सहयात्री बनि जाइत छथि। एकर अन्य पात्र छथि सर्वानन्दशर्मा ओ बिजुली जे पाठककेँ प्रभावित करबामे समर्थ भेल छथि।

एहि मध्य गरीब-धनिकक वर्ग-भेदक चित्रणक संग-संग नीलिमा-द्वारा उद्घोषित औद्योगिक प्रबन्धमे मजदूरवर्गक साझीदारीक समर्थन कएल गेल अछि, जकर उपयोगिता आब कतेक बुझल जाए लागल अछि, से विशेष व्याख्या-सापेक्ष नहि। भावुकतापूर्ण शेखरजीक एहि आरम्भिक उपन्यासमे नवयुवकोचित आदर्शवादिता एवं कथा-विन्यासमे नाटकीय रोचकताकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि।

'चामुण्डा'क कृतविद्य उपन्यासकार बाबू लक्ष्मीपति सिंहक 'पंचवटी' पुस्तकाकार 1978 ई.मे प्रकाशित भेल, यद्यपि एकर रचना 1948 ई.मे भए चुकल छल। एही कारणे एहि मध्य तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति, गाँधीवादी दृष्टिकोण एवं आरम्भिक उपन्यास-शिल्पक परिचय प्राप्त होइत अछि। उपन्यासकार 'पंचवटी'मे कोशीक विभीषिकाक कारणे छिन्न-भिन्न भेल सुरेशक परिवारक सुखान्त-कथाक वर्णन कएने छथि। सुरेशक पत्नी कमलाक आदर्शवादी रचनात्मक व्यक्तित्व, ज्येष्ठ बालक गोपालक चरित्रक उच्च आदर्श एवं प्रोफेसर साहेबक मानवीय सहृदयता पाठकक चित्तकेँ उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित करबामे सर्वथा समर्थ भेल अछि। 'पंचवटी' नाम प्रतीकात्मक थिक। **'शान्त तपोवनहिसँ लंकाकाण्डक पुनरावृत्ति होइत रहल छैक एवं होइत रहतैक'** - इएह उपन्यासक माध्यमसँ लेखकक प्रतिपाद्य-विषय अछि। एहि मध्य नहि तँ सामाजिक यथार्थक चित्रण भेल अछि आओर ने कोनहुँ पात्रक मनोविश्लेषणे भेल अछि, मुदा कथाक निष्पादन-शैली एतेक रोचक अछि जे पढ़ब आरम्भ कए समाप्त कएने बिना नहि रहल जाए सकैत अछि आओर एहि रोचकताहिमे एहि उपन्यासक सफलता निहित अछि।

1978-80 ई.मे चारि गोट भविष्णु ओ प्रतिभाशाली लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासी, श्रीमती लिलीरे, श्री विभूति आनन्द एवं डा. चन्द्र नारायण मिश्रक प्रवेश मैथिली उपन्यास-रचना क्षेत्रमे होइत अछि, जाहिसँ मैथिली उपन्यास साहित्यक नवीन विकासक स्पष्ट संकेत भेटैत अछि।

"अभियान" श्री मार्कण्डेय प्रवासीक प्रथम उपन्यास थिक जे मिथिलामिहिर (1979-80) मे धारावाहिक प्रकाशित भेल छल। एकर आरम्भ संयोगात्मक घटनासँ होइत अछि जे वेदानन्दकेँ सेठानीसँ सुधाक विवाहक हेतु अकस्मात एगारह हजार टाका

भेटि जाइत छैन्हि। फलस्वरुप सुधाक विवाह भविष्णु रवीशसँ होइत छैन्हि ओ रवीश बड़ प्रतिभाशाली, प्रभावशाली एवं आदर्शवान चरित्रक नवयुवक अछि तथा रवीश ओ सुधाक दाम्पत्य-जीवन बड़ सुखमय व्यतीत भए रहल छैन्हि। वेदानन्दक परिवारक खण्ड-चित्र प्रस्तुत कए मध्यम वर्गीय मैथिल ग्राम्य-परिवारकेँ सेहो अंकित करबाक चेष्टा भेल अछि। मैथिली साहित्य-जगतमे प्रतिष्ठित कवि-कलाकार कोना निर्ममतापूर्वक साहित्यिक आयोजनकर्त्ताक शोषण करैत अपन नीचता प्रदर्शित करैत छथि, विश्वविद्यालयक विभागीय अध्यक्ष कोना अयोग्य छात्रकेँ आगाँ बढ़ाए वस्तुतः योग्य ओ मेधावी छात्रकेँ नीचाँ खसाए दैत छथि, राजनेतालोकनि कोना नैतिक नीचताक आश्रय लए धनवान बनैत छथि, प्रशासनमे कोन रुपेँ भ्रष्टाचार व्याप्त अछि, आदि अनेक विषयक एहि उपन्यास मध्य उपहास तँ अवश्य कएल गेल अछि मुदा एहि सभक उन्मूलनक हेतु कोनो संघर्षक विशद चित्रणक अभाव अछि, अतः उपन्यासक 'अभियान' नामकरणक सार्थकता सिद्ध नहि होइत अछि। एहि उपन्यासक भावात्मक तत्व थिक उपन्यासकारक कथा-शैलीक रोचकता, अन्यथा एहिमे ने तँ यथार्थ जीवनक उत्थान-पतन चित्रित भेल अछि आ ने कथाक एहन सुनियोजित विकासे उपनिबद्ध भेल अछि, जाहिसँ युग-जीवनक व्यापक संश्लिष्ट चित्रक औपन्यासिक अभिव्यक्ति भए सकए। तथापि अपन एहि प्रथम रचनामे मार्कण्डेय प्रवासी अपन भविष्णु प्रतिभाक द्योतन करैत प्रतीत होइत छथि।

श्री मार्कण्डेय प्रवासीक दोसर उपन्यास **'हम कालिदास'** मिहिर (1982-83) मे धारावाहिक अपूर्ण प्रकाशित भेल छल। ई आत्मकथात्मक शैलीमे रचित लेखकक अपेक्षाकृत अधिक प्रौढ़ रचना थिक जे कालिदासक सुप्रसिद्ध जीवन-चरित पर आधारित अछि। विद्योत्तमाक संग विवाहक पश्चात् पत्नीसँ अपमानित ओ विक्षुब्ध कालिदास छिन्नमस्ताक कृपासँ कवित्व-दृष्टि प्राप्त कए भारतक पर्यटन करैत छथि तथा विक्रमादित्यक दरबार ओ अनेक स्थानक अपन प्रवासमे ओ अपन अमर काव्य-नाटकसबहि प्रणयन करैत छथि। एतबा धरिक कथांश 'मिहिर' मे प्रकाशित भए सकल, शेष एखनहुँ अप्रकाशिते अछि।

रोचक शैलीमे सांगोपांग रीतिएँ रचित प्रवासीजीक एहि कृतिमे हुनक वर्णन-पटुताक परिचय भेटैत अछि। ऐतिहासिक सन्दर्भ बैसएबाक हेतु उपन्यासकार कथाकेँ मोड़ि विक्रमादित्यक दरबार ओ उज्जैनसँ सम्पृक्त कए दैत छथि तथा कथाक स्वाभाविक सन्तुलनकेँ बनओने रहैत छथि। तथापि एकर आरम्भिक अंश जतेक सफल भेल अछि ततेक परवर्त्ती अंश नहि।

श्रीमती लिलीरेक **'पटाक्षेप'** (1979) नक्सलवादी भूमिगत आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर आधारित एकटा लघु-उपन्यास थिक। स्वतन्त्रताक पश्चातो भूमिजीवी ग्राम्य-जनताकेँ समताक अधिकार नहि भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहलैक।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भए दिल्लीमे स्थायी रुपेँ ओकालति करैत अछि। दीनानाथ स्वातन्त्र्योत्तरकालीन परिवर्तित परिस्थितिकेँ ध्यानमे रखैत पटनामे स्थायी निवास बनएबाक व्यवस्था कए रहल छथि। वस्तुतः हीरामे दाम्पत्य-अनन्यता कहिओ स्थापित नहि भए सकल छल, कारण हीरा आजीवन अपनाकेँ ठगैत रहलीह, मुँहसँ कहिओ सूर्यपुरक नाम नहि लेथि, होटलक व्यवस्थामे यन्त्रवत अपनाकेँ लीन राखथि, तथापि मानसिक रुपसँ राजासरकार ओ सूर्यपुरक स्मृतिसँ कहिओ फराक नहि भए सकलीह तथा भावनात्मक स्तर पर हुनक दाम्पत्य-जीवनमे दराड़ बढ़िते गेल। भाग्य-चक्रसँ संचालित अप्रत्यक्ष रीतिएँ सूर्यपुरसँ पुनः जुड़ि गेलासँ हुनक अन्तस्तलक व्रण पुनः जीवित भए उठल ओ अन्तमे ओ अपनाकेँ नितान्त एकाकिनी अनुभव करए लगलीह। एहना स्थितिमे अपन व्यक्तित्वक दृढ़ताक अनुरूप, हीरा अपन पति-पुत्र सबसँ सम्बन्ध-विच्छेद कए एक्सर एकाकी शिलौंगहिमे स्थायी रुपसँ रहबाक निर्णय लैत छथि। अनिश्चित भविष्यक मोड़ पर एहि प्रकार ठाढ़ि हीराक आँखिसँ अन्तस्तलक घनीभूत अवसाद शिलौंगमे पहिल बेर बान्ह तोड़ि प्रवाहित होअए लगैत अछि।

हीराक जीवन-कथाक मुख्य धाराक अंग बनल, उपधारा ओ तरंग-उपतरंगक रुपमे 'मरीचिका'क द्वितीय खण्डहुमे अनेक कथाक समावेश भेल अछि। शीला ओ मनीबाबू, घोसू ओ हाबड़ी, अमूल्य ओ मनीष आदि किछु प्रमुख चरित्र छथि जे अपन चरित्र-वैशिष्ट्यक कारणे अन्तस्तलमे अपन छाप छोड़बामे समर्थ होइत छथि। एकर उत्तरार्द्ध मुख्यतः स्वातन्त्र्योत्तरकालीन ध्वस्त होइत सामन्तवादक कथा थिक तथा एहि मध्य रत्नप्रियाक विद्रोह ओ दुःखान्तक करुण-कथा वर्णित अछि। अतः स्पष्ट अछि जे 'मरीचिका'क दुहू भागमे स्थिर-अनस्थिर बदलैत राजनीतिक परिस्थितिक परिप्रेक्ष्यमे परिवर्तित मानव-मूल्यक सूक्ष्म आकलनपूर्वक चारि पीढ़िक कथाक वर्णन भेल अछि ओ एहि प्रकार युग-जीवनक व्यापक ओ विविध चित्र अंकित भेल अछि।

एहि प्रकार 'मरीचिका' निस्सन्देह मैथिली उपन्यासक इतिहासमे नवीन कीर्तिमान उपस्थित करैत अछि। चारि पीढ़ीक व्यापक काल-सीमा ओ विस्तृत परिसरमे पसरल एक हजारसँ अधिक पृष्ठक ई उपन्यास मैथिली साहित्य-सर्जनाक क्षेत्रमे स्वयं एक अविश्वनीय ऐतिहासिक घटना थिक। एहि मध्य देश, काल आ पात्रकेँ सांगोपांग रीतिएँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, परिस्थिति ओ पर्यावरणक यथार्थ सन्दर्भमे चरित्रसबहिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रतिपादित भेल अछि, कथाक आद्यन्त सन्तुलित विकास, संग-संग जीवनक बदलैत मूल्य ओ मान्यताक सूक्ष्म विवेचन भेल अछि तथा सहजताक संग परिशुद्ध मिथिलाभाषाक स्वाभाविक ओ प्रांजल प्रयोग भेल अछि।

श्री विभूति आनन्दक 'सुनगैत एकटा गामक कथा' (1980)मे दीर्घ कथाक तत्व अधिक अछि, उपन्यासक कम। एहि मध्य एकटा गाम राम-नगरक नवजागरणक

परिवर्तन-प्रक्रियामे गुजरैत सामाजिक परिस्थिति एवं मानवीय मनोवृत्तिक सजीव चित्रण भेल अछि। निम्न-ग्रामीण-वर्गमे क्रमिक उच्च-वर्गक वर्चस्वताक प्रति विद्रोह, स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्तिक उदय भए रहल छैक, जकर नेतृत्व इन्दु ओ रमेश सन निर्धन-वर्गक नवशिक्षित युवक करैत छथि, उच्च-वर्गहुक नवयुग-चेतना-सम्पन्न भैरव पाठक सन युवक एवं शान्ति सन नवयुवती जकर संग दैत छथिन्ह। उपन्यासकारक मन्तव्य अछि जे एहि संघर्ष-प्रक्रियामे उच्चवर्गक वर्चस्वता क्रमिक कमि तँ अवश्य रहल अछि, परन्तु एखनहुँ धरि अपन वर्चस्वताकेँ स्थापित रखबाक हेतु ओ नाना प्रकारक छल-छन्दक आश्रय लए रहल छथि। एहना स्थितिमे अशान्तिपूर्ण तनाव बनल अछि एवं गाम भितरे-भीतर सुनगि रहल अछि।

वस्तुतः एहि 'सुनगैत एकटा गामक कथा'सँ उपन्यासकारमे निहित ग्राम्य-जीवनकेँ यथार्थ रीतिएँ अभिव्यक्त करबाक क्षमताक परिचय प्राप्त भए जाइत अछि। परन्तु अन्यान्य अनेक आधुनिक उपन्यासकार जकाँ श्री विभूति आनन्दमे सेहो समाजक सामान्य विकृतिकेँ अतिरंजित कए चित्रित करबाक प्रवृत्ति लक्षित कएल जाए सकैत अछि।

श्री विभूति आनन्दक दोसर लघु उपन्यास 'पराजित-अपराजित' 'मिथिलामिहिर'क 1982 ई.क अप्रैल-मइ अंकसभमे प्रकाशित भेल छल। एहि मध्य लेखक रमजानी, ओकर पत्नी ओ ओकर पुत्र मुस्ताकक दुर्भाग्यपूर्ण कथाकेँ रोचक ओ भावात्मक शैलीमे वर्णित कएलैन्हि अछि। वस्तुतः एहिमे एहन संघर्षशील युवकक कथा कहल गेल अछि जे सामाजिक व्यवस्था द्वारा पराजित भेलहु सन्ताँ अपन अदम्य आत्मविश्वासक कारणे अपराजित रहैत अछि। 'सुनगैत एकटा गामक कथा' जकाँ एहि मध्य सेहो निम्नवर्गीय ग्राम्य-जीवनक प्रति लेखकक संवेदनशील सहानुभूतिप्रवणता स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि। परन्तु एकरा उपन्याससँ अधिक दीर्घ-कथाक संज्ञा देब अधिक उपयुक्त होएत।

डा. चन्द्र नारायण मिश्रक 'बालादित्य' बौद्धधर्मक बड़का उन्नायक बालादित्य नामसँ ख्यात मगधनरपति नरसिंह गुप्तक जीवन-चरित पर आधारित एकटा विलक्षण ऐतिहासिक उपन्यास थिक। उपन्यासकार इतिहासक यथोपलब्ध सूत्रकेँ पकड़ि पाँचम-छठम शताब्दीक भारतीय राजनीति एवं धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यावरणक एहन सजीव चित्र अंकित कएल अछि जे अनायास मनकेँ मोहि लैत अछि। नरसिंह गुप्तक चरित्रमे एक संग क्षत्रियक शौर्य ओ पराक्रम तथा राष्ट्रोन्नतिक हेतु त्याग ओ बलिदान, बौद्ध-धर्मक परार्थ-कामना, करुणा, सहिष्णुता ओ क्षमाशीलताक एहन कलात्मक मणि-कांचन-संयोग कएल गेल अछि जे नायक पुरुषकेँ महत्तम उदात्त-भूमि पर अधिष्ठित करैत अछि। हूणनरपति मिहिरकुल सन नृशंस आततायीकेँ क्षमादान देब हुनक

वात्सल्य-चरित्रक चरम सीमा कहल जाए सकैत अछि। परन्तु एहि उपन्यासक ऐतिहासिक वस्तुक कथात्मक गुम्फनसँ अधिक महत्व सहजात मानवीय वृत्तिक रागात्मक निरूपण अछि। धवला ओ बालादित्यक प्रणय-प्रसंग आद्यन्त उपन्यासकेँ जीवन्त बनओने रहैत अछि एवं माधुर्यक संग-संग एहन सत्य-जगतक सृष्टि कएने अछि जे सर्वथा आदर्श कहल जाए सकैत अछि। भारतीय ललनाक त्याग ओ बलिदानक प्रतीक धवला आजन्म पतिक हेतु प्रेरक बनलि रहलीह। राजनीतिक कुचक्रक कारणे अपन विफल मातृत्वक हेतु खंडित हुनक प्राणान्तक वर्णन ककरहु करुणा-विगलित बनाए सकैत अछि। एहि प्रकार कथाक विकास, भाषाक प्रवाह, चरित्र-चित्रणक प्रौढ़ता एवं ऐतिहासिक पर्यावरणक निर्माण आदि सब दृष्टिएँ 'बालादित्य' सफल कोटिक उपन्यास कहल जाए सकैत अछि। तथापि एकर पूर्वार्द्ध जतेक सफल भेल अछि ततेक उत्तरार्द्ध नहि। अन्तमे कथा-शृंखलाकेँ बड़ शीघ्रतासँ जोड़बाक प्रक्रियामे उपन्यासकार घटनाक्रमक प्रति यथोचित न्याय नहि कए सकलाह अछि। एतबा होइतहुँ एहि प्रथमे कृतिसँ डा. चन्द्र नारायण मिश्र मैथिलीक ऐतिहासिक उपन्यासकार मध्य अपन विशिष्ट स्थान बनाए लेलन्हि।

डा. मिश्रक दोसर ओ अन्तिम उपन्यास थिक 'वैशाखी पूर्णिमा' जे हुनक असामयिक देहावसानक अनन्तर प्रकाशित भेल। 'विनयपिटक'क महावग्ग (चीवर खन्धक)सँ प्राप्त सूत्रक आधार पर रचित एहि ऐतिहासिक लघु उपन्यासमे बिम्बसारक राज्यकाल (ई.पू. 588-500)मे राजगृहमे अवतरित जीवकुमार महावैद्यक जीवन कथाक वर्णन पुष्ट रूपसँ भेल अछि। मातृ (सालवती)- त्यक्त शिशु जीवककेँ अभयकुमार सकारकूट पर फेकल पाबि उठाए अनैत छथि ओ पुत्रवत पालन-पोषण करैत छथि। अद्भुत मेधासँ सम्पन्न जीवक चमत्कारी चिकित्सक सिद्ध होइत बिम्बसारक राजवैद्यक पद पर नियुक्त कएल जाइत छथि। सद्यः रोगमुक्त सेवक निवास करबाक हेतु हुनक निवास-स्थान पर जाइत छथि तँ हुनका निरंजना नामक परिचारिकासँ भेंट होइत छैन्हि, जनिक रूप-गुणसँ आकृष्ट ओ मुग्ध छथि। निरंजना सेहो हुनकासँ प्रेम करैत अछि। तथापि ओ विवाह करय नहि चाहैत छथि। बाधक होइत छैन्हि मातृ-पितृ-कुल विहीनताक अपराध-बोध। आजन्महिसँ जीवकुमारक ई अपराध-बोध शूल जकाँ गड़ैत आबि रहल छलैन्हि। एही कारणे धन-धान्य ओ यश-कीर्तिसँ सम्पन्न होइतहु ओ समाजमे अपनाकेँ प्रतिष्ठापित करबामे असमर्थ छथि ओ एहन न्यूनताक मनोवैज्ञानिक स्थितिमे महात्मा बुद्धक श्रमण-धर्मक प्रति आकृष्ट भए लोक-सेवाकेँ अपनाए अपने बौद्धविहारहिमे अपन आवास-गृह बनबैत छथि। ओमहि निरंजनाक निश्छल आत्मसमर्पणसँ वशीभूत भए ओकर सामीप्यकेँ स्वीकारि लैत छथि। ओमहि हुनका भेँट होइत छैन्हि भिक्षुणी बनलि भूतपूर्व जनपद-कल्याणी सालवतीसँ, जनिक मातृ-वात्सल्य हुनक हृदय विगलित भए उठैत अछि। वैशाखी पूर्णिमाक राति सालवती मायक रूपमे हुनक जन्मक भेद कहि, अपन सबटा अलंकार आनि पुत्रवधू निरंजनाकेँ समर्पित कए अन्तिम श्वास लैत छथि ओ जीवकुमार 'माँ-माँ' करैत विलाप करैत रहि

जाइत छथि।

एहि उपन्यासमे तत्कालीन युगक जाति-व्यवस्था, वर्ण-संकरक विस्तार, अधिकारक स्वायत्तीकरण, दास-दासीक क्रय-विक्रय, ऊँच-नीच भावक स्थापन, स्त्रीक हीन-स्थान, राजनीतिमे कुत्सा आदि कतोक तत्कालीन सामाजिक विकृतिक चित्र अंकित कएल गेल अछि जकर प्रतीकारार्थ महात्मा बुद्धक श्रमणधर्मक उदय भेल छल। उपन्यासकार एहि विषयकेँ कथात्मक माध्यमसँ बड़ कलात्मक रीतिएँ मानवीय संवेदनशीलताक सूत्रमे गुम्फित कए भावात्मक आधार प्रदान कएने अछि। भाषाक स्वाभाविक प्रवाह, वर्णनक रोचक सजीवता तथा कथा-क्रमक सहत्यात्मक विकास आदि सब दृष्टिएँ एकरा सफल कोटिक ऐतिहासिक उपन्यास कहल जाए सकैत अछि।

मैथिलीक अपेक्षाकृत पुरान कृतविद्य कथाकार श्रीगिरिधरझा 'विकल'क पत्रात्मक शैलीमे रचित उपन्यास 'आँगनक रेखा' सेहो 1981 ई.मे प्रकाशित भेल। मैथिली उपन्यासक अद्यतन विकासक दृष्टिएँ ई प्राचीन रीतिक कृति थिक, इतिवृत्तात्मक। एहि मध्य रेखा ओ रत्नेश्वरक विवाह ओ दीनताक कारणे रत्नेश्वरक घर जएबाक अनन्तर रेखाक स्वाध्यायसँ विद्वत्ता-लाभ ओ पति-प्राप्तिक हेतु संघर्षक वर्णन भेल अछि। एहि मध्य उपन्यासकार समाजमे नारी-जातिक दुरवस्थिति, नारीक हेतु शिक्षाक महत्व तथा नारी-जागरणक स्वस्थ-स्वरूप चित्रित करबाक प्रयास कएने छथि तथा नारीक स्वतन्त्र सत्ता ओ अधिकारक पक्ष लेने छथि। कथाक क्रमिक विकास, घटनाक प्रधानता, रोचक वर्णन ओ सुस्पष्ट भाषा-शैली एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।

तत्पश्चात 'घराड़ी'क लेखक श्री सुधीलक 'गामवाली' (1982) ओ 'विदेपत'क लेखक श्री श्यामानन्दठाकुरक 'नीचाँमुँहे'' (मिहिर, अप्रैल-मइ 1983) नामक लघु-उपन्यास सेहो उल्लेखनीय थिक। 'गामवाली' विधवा ओ अन्तर्जातीय-विवाहक पक्ष लए रचित भेल। एकर नायक छथि बालानन्द ओ नायिका एकटा ब्राह्मण-विधवा गामवाली। उपन्यासमे उच्च ओ पिछड़ल निम्नवर्गक संघर्षक यथार्थचित्र यथार्थ रीतिएँ अंकित भेल अछि जे उपन्यासकारक परिमार्जित प्रतिभाक परिचायक थिक। 'नीचा मुँहे'क रचना आत्मकथात्मक शैलीमे भेल अछि जाहि मध्य नायक-पुरुष विवाहित पथभ्रष्ट-नवयुवती मालतीक संग अपन अवैध-सम्बन्धक इतिवृत्त सुनबैत छथि जे कोना ओ एकबेर जे नारी-आकर्षणसँ वशीभूत भए पतनक गर्तमे खसलाह, से निरन्तर नीचाँ मुँहे खसैत रहलाह। एहिमे उपन्यासोचित विविधता ओ व्यापकताक अभाव अछि, तथापि लेखकक सहत्यात्मक रोचक शैली एकरा मनोरंजक बनाए देल अछि। एतहि 1982 ई.मे प्रकाशित डा. शिवाकान्त ठाकुरक 'चकोर चाहय चान'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जाहिमे शकुन्तला ओ मंजुलाक प्रेम,विवाह, मिलन ओ सत्कर्मसँ प्रेरित सफलताक महिमाक वर्णन भेल अछि, परन्तु प्राय: प्रथम

कृतिजन्य वस्तु-विन्यास ओ प्रतिपादन-शैलीमे कलात्मक सूक्ष्मताक अभाव स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि।

1983 ई. मे चारि गोट नव उपन्यासकारक उदय भेल- श्री रविकान्त नीरज, श्री प्रदीप विहारी, श्री नवीन चौधरी एवं श्रीमती उषा किरण खाँ। श्री नीरजक **'जिन्दाबाद जिन्दाबाद'** (मिहिर, 19 जूनसँ 3 जुलाइ 1983)मे मजदूरवर्ग पर बुर्जुआसरकारक अत्याचार ओ समाजक हृदयहीनताक आकलन भेल अछि। एकर प्रतिनिधि पात्र छथि क्रान्तिक पक्षधर प्रसून। अतः स्पष्ट अछि जे मार्क्सवादी विचार-धारासँ प्रभावित भए एकर रचना भेल अछि। उपनिबद्ध कथा-परिसीमाक संक्षिप्तता एवं सांगोपांगताक अभावकेँ ध्यानमे रखैत एकरा दीर्घ कथाक संज्ञा देब सएह उचित होएत, कारण एहि मध्य नीरजजीक औपन्यासिक प्रतिभा नीक जकाँ स्पष्ट नहि भेल अछि।

श्री प्रदीप विहारीक लघु-उपन्यास **'गुमकी ओ बिहाड़ि'** (मिहिर, फरवरी-मार्च 1983)मे अखिलक चरित्र-चित्रण कएल गेल अछि जे नवयौवनक प्रवाहमे प्रेरणासँ अवैध-सम्बन्ध स्थापित करए चाहैत अछि, परन्तु अन्तमे ओकरा अपन विपथगामिताक परिज्ञान होइछ ओ तत्पश्चात् प्रेरणाकेँ बहिनक रुपमे आदर ओ स्नेह दैत अछि। ओकरा जखन अपन पिता देबूबाबूक अमरावती पर कएल कुकृत्य बुझल होइत अछि तखन अपन पितासँ विरोधो कए अमरावती ओ प्रेरणाकेँ पुनः सम्मानजनक स्थानपर स्थापित करबाक चेष्टा करैत अछि। प्रेरणाक चरित्र-चित्रण सच्चरित्र ओ ओजस्विनी नवयुवतीक रुपमे भेल अछि। वस्तुतः 'गुमकी ओ बिहाड़ि'क कथा-रीति रोचक ओ दृष्टि आदर्शवादी अछि तथा एहि रचना द्वारा लेखक अपन औपन्यासिक प्रतिभाक अनुसन्धान करैत प्रतीत होइत छथि।

हिनक दोसर उपन्यास थिक **'विसूवियस'** जे नेपालक आंचलिक जीवन पर आधारित प्रायः प्रथमे उपन्यास थिक। एहि उपन्यास द्वारा श्री प्रदीप विहारी एक क्षमताशील उपन्यासकारक रुपमे अपनाकेँ स्थापित करैत प्रतीत होइत छथि- भाषा-शैलीक रोचक प्रवाह, घटना-क्रमक सुसंयोजित उपस्थापन तथा अपन जीवन-दृष्टिक सम्यक् उद्घाटनक दृष्टिएँ। एहि उपन्यासक नायक छथि बेरोजगार नवयुवक मनीष जे रोजगार प्राप्त करबाक अनन्तर श्रमिक-मजदूरक शोषणसँ द्रवित भए क्रान्तिक सक्रिय पक्षधर बनि जाइत अछि। पूर्ण-यौवना मीलमलिका, इनिक समर्पित वासनाक लोभसँ मनीश जाहि रीतिएँ अपनाकेँ बचाए लैत अछि, तकर चित्रण उपन्यासकार बड़ पटुताक संग मनोविश्लेषणात्मक रीतिएँ कएल अछि। एहि प्रसंगकेँ अन्तःसंघर्षक दृष्टिएँ मार्मिक कहल जाए सकैत अछि। समग्र रीतिएँ विचारलासँ उपन्यासकार अपन जनवादी विचार-धाराकेँ उपन्यासक कलात्मक गरिमाक संग

अभिव्यक्त करबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि।

मैथिलीक उदीयमान कथाकार श्री नवीन चौधरीक प्रथम उपन्यास थिक **'बाट ओ बटोही'**। एतए बाटक प्रतीकार्थ अछि विवाह ओ बटोहीक कन्या, अर्थात्, ई उपन्यास ब्राह्मणसमाजक पतनावस्था पर व्यंग्य करैत अछि। एकर प्रमुख चरित्र अंजनि नैहर-सासुर दुहूसँ प्रपीड़ित-प्रताड़ित भए दिल्लीक समीपस्थ दयावस्ती स्टेशन पर उतरि स्टेशन-मास्टर शर्माजीक आश्रय ग्रहण करैत अछि। शर्माजीक उदारतापूर्ण सौजन्य ओ सहानुभूति एवं प्रोफेसरसाहेबक परिवारसँ रचनात्मक सम्पर्क भेलासँ ओकरामे आत्मविश्वास उत्पन्न होइत अछि। क्रमिक ओ स्वतन्त्र आधार प्राप्त कए लैत अछि। एहि उपन्यासक अन्य उल्लेखनीय पात्र छथि प्रोफेसरसाहेबक पत्नी ओ नारी-मुक्ति-आन्दोलनक नेत्री अर्चना। कुल मिलाए ई उपन्यास मैथिल नारीक हेतु आत्मनिर्भरताक सन्देश दैत अछि। एहि उपन्यासक घटना-क्रम ओ चरित्रचित्रणमे यथार्थवादी जीवन-दर्शनक अभाव तँ अवश्य अछि, परन्तु भाषा-शैली एतेक रोचक ओ प्रवाहपूर्ण अछि जे पाठककेँ आद्यन्त कथा-क्रममे बान्हि रखबामे सर्वथा समर्थ होइत अछि।

उपन्यास-रचना-जगतमे श्रीमती उषा किरण खाँक प्रवेश 1984 ई. मे भेल **'अनुत्तरित प्रश्न'** नामक लघु-उपन्यास लए, जकरा कथा-वर्णनक संक्षिप्त रीति, वस्तु-विन्यासमे सांगोपांगता ओ विस्तारक अभावकेँ देखैत दीर्घ-कथाक संज्ञा देब सएह उचित होएत। एहि मध्य सहायक उप-कथाक नितान्त अभावक संग-संग उपनिबद्ध चरित्र-चित्र विस्तृत ओ पूर्ण नहि अछि। एहि उपन्यासमे स्वातन्त्र्योत्तर-कालक तुलनात्मक पृष्ठभूमिमे स्वतन्त्रता-आन्दोलनक कर्णधार क्रान्तिकारी समरेशमिश्रक बलिदानक कथा वर्णित अछि। कथाक माध्यमसँ लेखिकाक मन्तव्य अछि जे आइ-काल्हिक आन्दोलनकर्त्ता लोकनिमे तादृश त्याग, सहिष्णुता, दृढ़ता ओ आत्मविश्वासक भावना नहि छैन्हि जतबा स्वतन्त्रता-आन्दोलनकालक नेतालोकनिमे छलैन्हि। ईलोकनि पारिवारिक कष्टसँ विचलित भए झट आत्मसमर्पण कए दैत छथि, तखन हिनकालोकनिसँ देशक सत्ता ओ समाज बदलबाक आशा व्यर्थ। एहि उपन्यासक अन्य प्रमुख पात्र छथि सुमिता ओ मन्दाकिनी।

श्रीमती खाँक दोसर लघु-उपन्यास थिक 'दूर्वाक्षत', जकरहु कथात्मक शैलीक दृष्टिएँ दीर्घ-कथा सएह कहल जाए सकैत अछि। एहि मध्य मंगलाक मुख्य मनोविश्लेषणात्मक चरित्रचित्रण कएल गेल अछि जे अपन भाइ ओ पिता-द्वारा अपन माता पर कएल गेल दुर्व्यवहार ओ अपमानसँ तथा अपन दाम्पत्यजीवनक विसगतिसँ क्रान्तिदर्शिनी भए समस्त पुरुष-परिवारकेँ त्यागि, अपन पतिसँ सेहो तलाक लए अपन स्वतन्त्र ओ आत्मनिर्भर जीवन स्थापित करैत अछि एवं अपन परित्यक्ता माताकेँ उद्धार करबाक निश्चय करैत अछि। वस्तुतः ई उपन्यास आधुनिक नारी-जागरणक

कान्ति-दर्शन थिक जे युग-युगसँ पुरुषसमाजक अत्याचारक पाट तर पिसाइल आबि रहल अछि। सशक्त भाषा-शैली ओ अन्तर्जगतक सूक्ष्म निरुपणक दृष्टिसँ ई निस्सन्देह एक सफल कोटिक कथा-रचना थिक।

सन् 1986-87 ई. धरि अबैत-अबैत गतानुगतिक विषय-ग्रहणक अतिरिक्त नवीन विषय-अनुसन्धानक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होअए लागल ओ एही प्रवृत्तिक संग श्री मायानन्द मिश्रक 'मन्त्रपुत्र' ओ स्व. मणिपद्मक लघु-उपन्यास 'आदिम गुलाम' प्रकाशित भेल। ई दुनू उपन्यास आर्यक भारतवर्षमे प्रवेशक अनन्तर आर्य-सभ्यताक व्यवस्थापन ओ आर्य-अनार्यक संघर्ष ओ समन्वयक ऐतिहासिक तथ्यक काल्पनिक कथा पर आधारित अछि। 'मन्त्रपुत्र'मे वैदिक-युगक अन्तिम उत्तर-चरण (ई.पूर्व 15म शताब्दी)क सामाजिक चित्र प्रस्तुत करबाक प्रयास भेल अछि। ऋग्वेदक दानक प्रसंग बल्बूथ अनार्यक उल्लेख भेटैत अछि तथा इहो ज्ञात होइत अछि जे ओहि वैदिक-युगमे आर्यगण-मध्य गविष्ठि-युद्ध तथा सहभोज अत्यन्त प्रिय छल। एहि सूत्रसबहिक ऐतिहासिक आधार पर रचित 'मन्त्रपुत्र'क उद्देश्य अछि "तत्कालीन समाजक परिवर्त्तन देखाएब एवं प्रामाणिक इतिहास ताकब।" वैज्ञानिक इतिहास ताकब तँ विषयान्तर भेल, परन्तु लेखक निस्सन्देह ऐतिहासिक प्रारुपमे काल्पनिक कथा-संसारक निर्माण करैत रोचक रीतिएँ वैदिक यज्ञादिक तत्कालीन चित्रण, आर्य-अनार्यक क्रमिक सामीप्य ओ सम्मिश्रणसँ उत्पन्न सामाजिक, सांस्कृतिक ओ आर्थिक परिवर्त्तन, तथा शूद्रजातिक अवतरण, राजतन्त्रक प्रवर्त्तन, अनार्य आदिवासीक समृद्ध शिल्प, वाणिज्य, मूर्त्ति-उपासना आदिक आर्यलोकनिक जीवन-पद्धति पर प्रभाव, रक्त-मिश्रण प्रभृतिक सुन्दर ओ सजीव चित्र अंकित करबामे समर्थ भेलाह अछि। उपन्यासकारकेँ निश्चये एहि काल-खण्डक पर्यावरण-निर्माण एवं कथा-सूत्रक कलात्मक गुम्फनक दृष्टिएँ सफलता भेटल छन्हि तथा 'मन्त्रपुत्र'क द्वारा मैथिली उपन्यास-साहित्यकेँ एक नवीन क्षितिज प्राप्त भलैक अछि ओ एही कारणे सन् 1988 ई. 'साहित्य-अकादेमी' द्वारा पुरस्कृतो भेल अछि। एहि उपन्यासक उल्लेखनीय पुरुष-सृष्टि छथि मन्त्राक्ष, राजकुमार असंग, राजा बल्बूथदास, बीतिहोत्र आदि ओ नारी-सृष्टि शाश्वती, ऋजिस्वा, सोमा, इषा आदि। नर-नारीक सहजात प्रेम, यौनाकर्षण ओ समवेत-मिलनक चित्रणमे लेखक कवित्वक सचार कएने छथि जे उपन्यासमे रोचकताक क्रम टुटए नहि दैत अछि। भाषाक प्रयोग प्रसंगानुकूल प्रायः पर्यावरण-निर्माणार्थ संस्कृतनिष्ठ अछि ओ कतहु-कतहु तँ तकर आग्रहेँ लेखक अनेक स्थल पर चिन्त्य-प्रयोग धरि कए देने छथि, यथा, 'लहरिल'।

वैदिक-काल अथवा ताहूसँ पूर्ववर्त्ती-कालक आर्य-अनार्यक ऐतिहासिक सम्बन्ध पर आधारित स्व. मणिपद्मक 'आदिम गुलाम' 'चिनगी' द्वैमासिक पत्रिकाक दिसम्बर 86- जनवरी 87क अंकमे प्रकाशित भेल छल। एहि मध्य नवागत आर्य द्वारा एहि ठामक आदिवासी अनार्यकेँ गुलाम बनएबाक, ओकरापर अमानुषिक अत्याचार ओ

शोषण करबाक वर्णन भेल अछि, संगहि दुइ भिन्न सभ्यता ओ संस्कृतिक सम्मिलन ओ सम्मिश्रणहुक चित्र अंकित कएल गेल अछि। उपन्यासमे आद्यन्त कतहु अनार्यक प्रतिरोध नहि देखाओल गेल अछि, सर्वत्र अनार्यक निरीहता ओ विवशता तथा आर्यक निर्दयताक वर्णन भेल अछि। अतः प्रागैतिहासकालीन एहि सामाजिक चित्रणकेँ एकपक्षीय कहल जाए सकैत अछि। तथापि प्रागैतिहासिक नवीन विषय-ग्रहणक दृष्टिएँ एकरहु उल्लेख 'मन्त्रपुत्र'हिक संग करब उचित। एहि मध्य ऐल-पैल, शतधा, रैक आदि अनेक पात्रक अवतारणा भेल अछि जे मणिपद्मजीक सुपरिचित गद्य-शैली एवं वर्णनक भावात्मक विन्यास द्वारा रोचक रीतिएँ चित्रित भेल अछि। परन्तु एहि प्रकारक उपन्यासमे जेहन विस्तार ओ कथ्यक निरपेक्ष विशदता अपेक्षित अछि, तकर एहिमे अभाव देखना जाइछ।

सन् 1987 ई.मे प्राचीन रीतिक इतिवृत्तात्मक वर्णनसँ युक्त प. श्रीयोगेश्वरमिश्रक 'श्यामाक करुण व्यथा' सेहो प्रकाशित भेल, जाहिमे दहेजक कारणे पति द्वारा पत्नीक प्रताड़नाक वर्णन भेल अछि, किन्तु अन्तमे सुखान्त कए देल गेल अछि।

एहि प्रकार विगत दशकमे 'मरीचिका' सन वृहत, परन्तु अधिकांश लघु-उपन्यासहिक रचना भेल अछि। उपन्यास-साहित्यक अद्यतन विकासकेँ देखैत एहि लघु-उपन्यासमे अधिकांशकेँ उपन्यास नहिए कहल जाए तँ सएह उचित होएत।

'गल्प-साहित्य'- आब गल्पसाहित्यक जे विकास मैथिलीमे भए रहल अछि से प्राचीन रीतिक बड़ कम, पाश्चात्य-रीतिक लघुकथा-प्रणालीक अधिक। 1930 ई.क पूर्वक गल्पसाहित्य अछि मुख्यतः प्राचीन रीतिक- अधिकांश संस्कृतकथाक अनुवाद वा स्वतन्त्र रुपेण रचित ताही प्रकारक कथा। प्राचीन रीतिक कथासाहित्यक विवरण पूर्वहि देल जा चुकल अछि। मुदा जकरा आधुनिक रीतिक कथा कहैत छिऐक, तकरहु तत्व यत्किंचित् 1930 ई.क पूर्वक कथासभमे भेटैत अछि। वस्तुतः उपन्यासक अतिरिक्त आन जे कथासाहित्य मैथिलीमे अछि, से आधुनिक गल्पक पूर्व-रुप कहल जा सकैत अछि आओर ओहि मध्य आधुनिक गल्पक मुख्य-मुख्य गुण भेटैत अछि यथा, कुतूहलता, विविधता, अद्भुतता, रोमांटिक भावना प्रभृति। आगाँ कथामे उपदेशात्मकताक बीज बेशी स्फुट भेल तथा अधिकांश आख्यान-रीतिक अनुवाद वा मौलिक रचना भेल। मुदा नवकथा वा आधुनिक गल्पक निकटक वस्तु छल हास्याव्यंग्यमूलक लोककथा, मुख्यतः गोनूझाक हास्य-कथा, जकरा श्री नगेन्द्रकुमरक पिता कुशेश्वरकुमर संकलित कएल 'गोनूविनोद'क नामसँ। बीरबलक कथा सेहो एहि शताब्दीक तीन-चारि दखक धरि बेस कहल-सुनल जाइत छल।

आधुनिक रीतिक गल्परचनाक पृष्ठभूमिक प्रथम उत्थानक रुपमे अबैत छथि प. श्यामानन्दझा, प. श्रीबल्लभझा एवं किरणजी। श्री रमानन्द 'रमण' प्रमुख-प्रमुख

आरम्भिक कथा-सबहिक एकटा विलक्षण कथा-संग्रह प्रकाशित कएल अछि, जाहिसँ प्रथम उत्थानक कथाकारसबहिक कृतित्वक अध्ययन सुलभ भए गेल अछि। किरणजीक कथासाहित्य-रचनाक आरम्भिक कार्य 1930क पूर्वक वा समकालक थिक आओर से थिक बालोपयोगी कथा- 'वीरप्रसून', 'वीर बालक' प्रभृति। हिनक 'चन्द्रग्रहण', जकरा उपन्यास कहल जाइत अछि, वास्तविक अर्थमे दीर्घ-कथा थिक।

1930सँ 1935 धरिकेँ आधुनिक कथाक पृष्ठभूमिक दोसर उत्थानकाल कहल जा सकैत अछि। एहि कालमे आबि मैथिली गल्पसाहित्यक दिशा स्पष्ट होअए लागल छल। एहि समयक अधिकांश रचना प्रकाशित भेल 'मिथिला'ओ 'मिहिर'मे तथा मुख्य लेखक भेलाह हरिनन्दनठाकुर 'सरोज', श्रीजयनारायणमल्लिक, वैद्यनाथमिश्र 'विद्यासिन्धु', कालीचरणझा, महानन्दमिश्र, जगदीशमिश्र प्रभृति। एहि पाँच वर्ष मध्य प्रो. हरिमोहनझा, भुवनजी, लक्ष्मीपतिसिंह प्रभृति लेखकलोकनि गल्पकारक रूपमे अवतीर्ण भए चुकल छलाह, परन्तु हिनकालोकनिकेँ एहि युगमे सन्निविष्ट नहि कए वास्तविक अर्थमे आधुनिक गल्पकारक रूपमे परिगणित करब उचित अछि, कारण, 1939क पश्चात् हिनकालोकनिक गल्पकारक मुख्य प्रतिभा स्फुट भए सकल।

वस्तुतः आधुनिक रीतिक गल्पक विकास 'विभूति'क प्रकाशनक पश्चात् भेल आओर तेँ आधुनिक गल्पक इतिहास 1935क पश्चात् आरम्भ होइत अछि। डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे वैद्यनाथमिश्र 'विद्यासिन्धु' केँ पाश्चात्य-रीतिक सर्वप्रथम गल्पकार मानैत छथि। परन्तु कथाक कलात्मक सौष्टवक दृष्टिएँ 'विभूति'मे प्रकाशित गल्पसमूह, जाहिमे अधिकांश उपनामहिसँ अछि , आधुनिक कथाशिल्पक निकटक वस्तु थिक। एहिमे अधिकांश रचना भुवनजीक अनुजलोकनिक स्व. बाबू जलेश्वर सिंह ओ श्री भीमेश्वर सिंहक थिकैन्हि, किछु भुवनजीक सेहो होएतैन्हि। अतः सिंहबन्धुकेँ समन्वित रूपेँ आधुनिक लघु-कथाक आदि-कथाकार कहि सकैत छी। सिंहबन्धुमे अपन वास्तविक नामसँ श्री भीमेश्वरसिंह सबसँ अधिक गल्प प्रकाशित कएल। हिनक 'साओनक राति' 'विभूति'मे प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ रचनाक रूपमे विद्वानलोकनिक द्वारा सम्मान्य भेल छल। इएह श्री भीमेश्वरसिंहक तीन गोट मार्मिक लघुकथा 'आश्चर्य', 'आशीर्वाद' ओ 'बौआहल' 1980 ई.क 'मिथिलामिहिर'मे छपल।

आधुनिक गल्पसाहित्यक इतिहासकेँ विकासक दृष्टिएँ तीन उत्थानमे बाँटि सकैत छी :- (1) 1935सँ 1950 धरि, (2) 1950सँ 1960 धरि एवं (3) 1960सँ आइ धरि। एहि उत्थानक विकासक गति क्रमिक अधिकाधिक तीव्र होइत गेलैक। आइ मैथिली साहित्यक सबसँ अधिक विकसित अंग गल्प-साहित्य कहल जाइत अछि।

प्रथम उत्थानमे भुवनजी ओ हुनक अनुज बाबू जलेश्वरसिंह ओ बाबू भीमेश्वर सिंहक अतिरिक्त अन्य उल्लेखनीय गल्पकार छथि कुमारगंगानन्दसिंह, प्रो. हरिमोहनझा, बाबू लक्ष्मीपतिसिंह, किरण, श्री प्रबोधनारायण चौधरी, प्रो. तन्त्रनाथझा, श्री यात्री, श्री मनमोहनझा, श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास', कुलानन्द 'नन्दन', योगानन्दझा, प्रो. उमानाथझा, श्री नगेन्द्रकुमर, श्री सुधांशुशेखरचौधरी, विकल विशारद, भ्रमर प्रभृति। एहि क्रममे सुमनजीक सेहो चर्चा कएल जाइत अछि।

भुवनजीक 'रौद-छाया'ओ 'शून्य' प्रसिद्ध कथा छैन्हि। प्रथम यदि प्रतीकात्मक ओ Reflective कथा थिक तँ दोसर प्रगतिशील ओ मनोविश्लेषणात्मक। हिनक अनुज स्व. जलेश्वरसिंहक रचनामे हास्यव्यंग्यक अद्भुत विन्यास रहैत छैन्हि. यथा, 'विभूति'मे प्रकाशित 'भगवतीक पाश्चात्य रूप' हिनकहि रचना थिक, जाहि मध्य हास्य-व्यंग्यक मौलिक स्वरूपक दर्शन होइत अछि, जेहन मैथिली साहित्यमे आबहु विरल अछि। हिनक वास्तविक नामहुसँ अनेक रचना पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। श्री भीमेश्वरसिंहक रचनामे करूणा एवं सामाजिक हृदयहीनताक बड कलात्मक ओ भावात्मक वर्णन भेल अछि। 'विसर्जन' ओ 'साओनक राति' हिनक सब दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक उत्कृष्ट कोटिक गल्प थिक।

कुमारगंगानन्दसिंह 1924 सँ कथा लिखब आरम्भ कएल। हिनक प्रथम रचना थिक 'मनुष्यक मोल'। हिनक अधिकांश रचनामे पूर्व-युगहिक स्थूलताक दर्शन होइत अछि। मुदा हिनक 'आमक गाछी' ओ 'पंचपरमेश्वर' उत्कृष्ट कोटिक कथा थिक। 'बिहाड़ि' मे ग्राम्यजीवनक परिवर्तनशील सामाजिक वातावरणक बड मार्मिक वर्णन भेल अछि। जकरा बहुत पश्चात धीरेश्वर, मायानन्द ओ ललित अपन-अपन उपन्यासमे चित्रित कएल, तकरा ओ बहुत पूर्व अपन 'बिहाड़ि'मे प्रस्तुत कए चुकल छलाह। प्रगतिशीलता हिनक कथाक मुख्य गुण थिक। हिनक कथाक एकटा संकलन 'अगिलही' नामसँ प्रकाशित भए चुकल अछि, जाहि मध्य प्रथम दुइ गोट कथा कथा नहि थिक, प्रत्युत हिनक प्रसिद्ध उपन्यास 'अगिलही'क दुइटा प्रसंग मात्र थिक। एहि कथासंग्रहक 'अगिलही' नाम देब सेहो उचित नहि भेल अछि।

मैथिली कथाकेँ लोकप्रिय बनएबामे प्रो. हरिमोहनझाक नाम अग्रगण्य अछि। गोनूझाक परम्परामे रचित हिनक हास्य-व्यंग्य-कथा कतेक मार्मिक ओ लोकप्रिय भेल, से ककरहुसँ अपरिचित नहि अछि। हिनक हास्य समाजक कुप्रथा, अन्धविश्वास ओ मूर्खताक विकृति पर आधारित अछि, तेँ प्रकारान्तरेँ समाज-सुधारात्मक अछि। हिनक 'प्रणम्य-देवता' प्रकाशित होइतहिँ अत्यन्त लोकप्रय भेल, केवल मैथिली-भाषाभाषी क्षेत्रहिटामे नहि, अन्य भाषाभाषी क्षेत्रहुमे। हिनक अन्य कथासंग्रह थिक 'रंगशाला', 'तीर्थयात्रा,' 'चर्चरी', 'एकादशी' प्रभृति। हिनक सुप्रसिद्ध 'खट्टर-ककाकतरंग मैथिली

कथाक श्रेणीमे परिगणित कएल जाइत अछि, मुदा कथाक मूलतत्व 'कथा'क एहिमे अभाव अछि। एकरा व्यंग्यवक्रोक्तिपूर्ण नाटकीय हास्य-निबन्ध कहब सएह उचित थिक। एहिमे निबद्ध आक्षेपक मिथिलामे बड़ विरोध भेल तथा पत्र-पत्रिकामे ताहि प्रसंग बराबरि विवाद चलैत रहल। परन्तु विशुद्ध हास्य ओ मनोरंजनप्रधान कृतिक दृष्टिएँ ई प्रो. हरिमोहनझाक बड़ लोकप्रिय रचना थिक, जकर अनुवाद हिन्दी ओ अन्य भाषासभमे भए चुकल अछि तथा ओहि-ओहि क्षेत्रमे सेहो बड़ लोकप्रिय भेल अछि। श्री नगेन्द्रकुमर प्रो. हरिमोहनझाक अनुसरण करैत ओही शैलीमे लिखैत छथि। हिनक 'ससरफानी' ओ 'फलेना जामुन' कथासंग्रह प्रकाशित भए चुकल अछि।

बाबू लक्ष्मीपतिसिंह मैथिलीक बड़ पुरान ओ कलात्मक गल्पकार छथि तथा करुणापूर्ण गल्पक निर्माण करबामे अन्यतम छथि। हिनक कथा कहबाक शैली व्यंग्यात्मक होइत अछि। हिनक रचना अनवरुद्ध गतिएँ बराबरि प्रकाशित होइत रहैत छल। 'कबुला' हिनक उत्कृष्ट कोटिक रचना थिक। प्रबोध नारायण चौधरी सेहो पुरान गल्पकार छथि, मुदा हिनक आरम्भिक रचनामे प्रौढ़ताक अभाव छल। हुनक 'बीछल फूल' 1940 ई.मे प्रकाशित भए चुकल अछि। प्रो. तन्त्रनाथझाक 'चोर' शीर्षक कथा प्रायः एही अवधिक रचना थिक, मुदा ई. 1960 क पश्चात् प्रो. रमानाथझाक 'कथासंग्रह'मे सर्वप्रथम प्रकाशित भेल। हिनक कथामे कलात्मक सौष्ठव ओ सूक्ष्मता अछि, जाहि मध्य फ्रेंचसाहित्यकार मोपाँसाक कथाशिल्पक मार्मिकता बड़ नीक जकाँ अभिव्यंजित भेल अछि। नन्दनजी सेहो प्रौढ़ कथाकार छलाह तथा हिनकहु रचनामे मानवजीवनक सूक्ष्म अन्तर्दृष्टिक परिचय भेटैत छल। इहो बराबरि पत्र-पत्रिकामे लिखैत रहैत छलाह।

एहि उत्थानमे परिगणित श्री मनमोहनझा, श्री यात्री, श्री उमानाथझा, श्री व्यास एवं योगानन्दझाक रचनामे आधुनिक कथाशिल्प नव आयाम प्राप्त कएने अछि। श्री मनमोहनझाक 'अश्रुकण' कथासंग्रह प्रकाशित भए बड़ लोकप्रिय भेल। नारीहृदयक अन्तस्तलमे प्रवेश करबाक हिनकामे अपूर्व कौशल अछि। कल्पना, करुणा एवं रोमांटिक संवेदनशीलता हिनक कथाक प्रधान गुण थिक तथा हिनक कथामे आद्यन्त भावुकता भरल रहैत छैन्हि। योगानन्दजीमे मनमोहनजी जकाँ भावुकता नहि रहैत छैन्हि, प्रत्युत हिनक रचनामे रोमांच ओ श्रृंगारिकताक सएह प्राधान्य रहैत अछि। हिनक 'आमक जलखरी' प्रकाशित भेल छल। 1984 ई.मे 'उड़ैत वंशी' नामक दोसर कथा-संग्रह प्रकाशित भेल।

'कुमार'क प्रसिद्ध लेखक व्यासजी मैथिलीक उत्कृष्ट गल्पकार छथि। ई अपन 'रूसल जमाए'क प्रकाशनक पश्चात् विशेष प्रसिद्ध भेलाह ओ गल्पकारक अग्रिम पंक्तिमे प्रतिष्ठित भए गेलाह। हिनक कथामे मैथिल समाजक बड़ यथार्थ अभिव्यक्ति भेल अछि, जाहि मध्य सजीवता ओ संवेदनशीलता ओतप्रोत रहैत अछि। हिनक 'देबू'ओ

'बिहाड़ि'अन्य उत्कृष्ट रचना थिक। हिनक एक गोट कथासंग्रह 'विडम्बना'क नामसँ प्रकाशित भए चुकल अछि। श्री उमानाथझाक 'रेखाचित्र' कथासंग्रह बहुतपूर्व प्रकाशित भेल, जाहि मध्य ओ नवीनतम पाश्चात्य टेकनिकक प्रयोग कएने छथि ओ एहि प्रकारक नवीनता तथा मानसलोकक सजीव ओ सूक्ष्म कथा कहबाक दृष्टिएँ आइओ ई एकसरे छथि। हिनक मनोविश्लेषणकेँ आइओ मैथिलीक नवीन गल्पकार नहि पाबि सकलाह अछि। हिनक दोसर कथा-संग्रह 'अतीत' (1984) 1987 ई.मे साहित्य अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत भेल। पाश्चात्य गल्पशैलीकेँ मैथिलीमे प्रयोग करबाक दृष्टिएँ श्री दामोदर ठाकुर ओ अमरनाथ ठाकुरक सेहो नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि।

एहि उत्थानक कथाकारलोकनिमे श्री यात्रीक स्थान सेहो विलक्षण अछि। हिनक गल्प कथासँ अधिक शब्दचित्र वा रिपोर्ताज होइत अछि। श्री यात्रीजी समसामयिकताक दृष्टिएँ बड़ प्रगतिशील छथि तथा ग्राम्य-जीवनक चित्रांकनमे हिनका अद्भुत सफलता भेटल छैन्हि। वस्तुतः ई यथार्थवादी कथाकार छथि आओर तदनुरुप हिनक भाषाशैलीमे अद्भुत सहजता, सरलता ओ स्वाभाविकताक दर्शन होइत अछि।

एहि उत्थानक अन्त होइत-होइत शेखरजी, विकल विशारद, भ्रमर प्रभृति कथाकारक रुपमे सुप्रतिष्ठित भए गेलाह। एहि वर्गक कथाकारलोकनिक रचनामे मानस-विश्लेषणक प्रवृत्ति अधिक पाओल जाइत अछि, आत्मसंघर्षक विशेष ऊहापोह रहैत अछि, मुदा कथातत्व गौण रहैत अछि।

द्वितीय उत्थान (1950-60)मे लब्धप्रतिष्ठ अग्रगण्य गल्पकारलोकनिमे श्री गोविन्द चौधरी ('पांचजन्य', 'रुपगर्विता'), व्रजकिशोरवर्मा, श्री गोविन्दझा, अमरजी (संग्रह-'जलसमाधि'), डा. शैलेन्द्रमोहनझा, डा.बी.झा ('लाटरी', 'पियास'), रामकृष्णझा 'किसुन', प्रो. प्रबोधनारायणसिंह, प्रो. रमाकान्तझा, प्रो. धनेश्वरझा, भवनाथझा, राधाकृष्णझा 'बहेड़', प्रो. मायानन्दमिश्र (संग्रह 'भाड.क लोटा', 'आगि मोम आ पाथर' एवं 'चन्द्रबिन्दु'), ललित (सं.'प्रतिनिधि'), राजकमल (सं. 'ललका पाग', 'निरमोही हमर बालम'), सोमदेव, हंसराज, (सं. 'सतंजा'ओ 'जे किने से'), प्रो. इन्द्रानन्दसिंह (सं. 'खड़िकाक हिस्सक'), कृष्णगोविन्दझा, गोविन्दमाधवझा, कल्पनाशरण, जयानन्द, डा. रामदेवझा (सं. 'एक खीरा तीन फाँक' 'मनुक सन्तान', 'धरतीमाता'), श्री रमानन्दरेणु (सं.' कचोट' 'त्रिकोण' एवं 'अन्तहीन आकाश') प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। हिनकालोकनिक अनेक कथा पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल। द्वितीय उत्थानसँ पूर्वयुगक कृतविद्य गल्पकारलोकनिक सेहो कतोक श्रेष्ठ श्रेष्ठ रचना एहि उत्थानक अवधिमे प्रकाशित भेल: यथा,- किरणजीक 'कोन महल नाम रखबै', व्यासजीक 'फोटो' ओ 'नकटा शिकार', नन्दनजीक 'धारिआना कैंचा', विकल विशारदक 'सरला', यात्रीजीक 'चारि अहो रात्रि ओ एक दिन', बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक

'ठेस' ओ 'समय जे ने देखाबए', शेखरजीक 'फूलदीदी', ओ 'एक सिंहारा चाय', प्रो. हरिमोहनझाक 'ब्रह्माक शाप', श्री मनमोहनझाक 'बारह वर्षक बाद' प्रभृति।

एहि उत्थानक नवीन गल्पकारकेँ तीन श्रेणीमे बाँटि सकैत छी :- 1. ओ कथाकार, जे कथातत्वकेँ व्याघात नहि पहुँचबैत चरित्र-चित्रणक सूक्ष्मताक संग प्रतिपादन कएल तथा उचित वातावरण ओ परिस्थितिक निर्माण कए चारित्रिक वैशिष्ट्यकेँ रसात्मक उत्कर्ष देल। एहि श्रेणीक प्रमुख कथाकार छथि श्री गोविन्दझा, ब्रजकिशोरवर्मा, प्रो. रमाकान्तझा, डा. शैलेन्द्रमोहनझा, प्रो. प्रबोधनारायणसिंह प्रभृति। एहि प्रकारक गल्पकार सामाजिक ओ वैयक्तिक पक्ष दुनूक चित्रण करैत छथि सन्तुलित रीतिएँ। युगीन समस्याक चित्रण सेहो एहि वर्गक गल्पकार करैत छथि, मुदा हिनकालोकनिक प्रगतिशीलता संवेदनात्मक रहैत अछि, प्रचारात्मक नहि आ' ने कटुताविधायके। एही दृष्टिएँ गोविन्दजीक 'भुतही पाकड़ि' ओ 'नोकरीक खोज', वर्माजीक 'संयोग' ओ 'पट्टीदार', रमाकान्तजीक 'चुड़ैल' ओ 'रक्तदान' शैलेन्द्रमोहनजीक 'सिन्दूर' ओ 'प्रारब्ध', इन्द्रानन्दसिंहजीक 'खड़िकाक हिस्सक' ओ 'प्रेरणा', प्रबोधबाबूक 'विन्दोबाबू' आदि कथा उल्लेखनीय थिक। एहि मध्य वर्माजी ओ शैलेन्द्रमोहनजीक कथामे भावुकताक उत्कट गन्ध रहैत अछि आ' एही कारणे कतहु-कतहु गल्पक कथात्मकता गौण भए जाइत अछि। डा. झाक 'रोरोक जल' एहने कथा थिक, जकरा कथा नहि कहल जा सकैत अछि।

एही उत्थानमे अवतीर्ण डा. बी. झाक नामोल्लेख विशेष रुपसँ कएल जाए सकैत अछि, जनिक प्रायः प्रथम कथा 'युग-छाया' प्रकाशित भेल 'संचयिता' कथा-संग्रहमे, परन्तु 1965 ई.क पश्चात् व्यापक रुपसँ कथा-रचना कएल एवं 1970 ई.मे अपन दुइ गोट कथा-संग्रह 'लाटरी' ओ 'पियास' सेहो प्रकाशित करबाओल। डा. बी. झाक कथा वास्तविक अर्थमे उत्कृष्ट लघुकथा थिक, जाहि मध्य ओ मनोविश्लेषणक कृत्रिम प्रयास नहि कए कथावस्तुकेँ स्वाभाविक रीतिएँ विकसित करैत ओकरा चरम सीमाक स्वाभाविक बिन्दु पर पहुँचएबाक एहन कलात्मक सिद्धहस्तताक परिचय देल अछि जे मानव-मनक कोनो-ने कोनो ग्रन्थिकेँ सहजहि सोझराए दैत अछि। उदाहरणार्थ हिनक 'सन्देह' शीर्षक कथा प्रस्तुत कएल जाए सकैत अछि। Supernatural रीतिक हिनक 'दसटक्की नोट' सेहो मैथिली कथाक इतिहासमे नवप्रयोगक दृष्टिएँ उल्लेखनीय थिक। श्री गोविन्द चौधरीक कथामे घटना, कुतूहल ओ वैचित्र्यक प्रधानता रहैछ। एहि वर्गक अन्तर्गत श्री गोविन्दमाधवझा, श्री कृष्णगोविन्दझा, प्रो. श्रीधनेश्वरझा, श्री उग्रानन्दसिंहझा प्रभृतिक कथासभक चर्चा सेहो कएल जा सकैत अछि। एहि वर्गमे अमरजी सेहो अबैत छथि, जे टिपिकल चरित्रक निर्माण करबामे सुप्रसिद्ध छथि। अतः हिनक कथा गल्प नहि रहि शब्द-चित्र अधिक भए जाइत छैन्हि। हास्यव्यंग्य हिनक गल्पक प्रधान गुण थिक। श्री गोविन्दमाधवझाक 'लीली', श्री कृष्णगोविन्दझाक 'भजुआ', श्री भवनाथझाक

'प्रकृतिक खेलओना', श्री उग्रानन्दसिंहझाक 'शिवगंगा' ओ 'एक आना' आदि उल्लेखनीय रचना थिक। एहि वर्गक कथाकारमे प्रयोगशीलता तँ अवश्य अछि, नवीनतम समस्याकेँ ग्रहण करबाक सेहो संवेदनशीलता पर्याप्त अछि, मुदा ताहिमे 'अति'क प्रवृत्ति 'अति' पर नहि पहुँचल अछि। एहिमे कतेक गल्पकार शब्दचित्र वा रेखाचित्र प्रस्तुत करबामे सफल अधिक सिद्धहस्त बूझि पड़ैत छथि।

द्वितीय ओ तृतीय वर्गक गल्पकार मध्य भेद अछि दृष्टिकोण लए। द्वितीय वर्गक गल्पकार यदि सामाजिक पक्षकेँ अधिक महत्व दैने छथि तँ तृतीय वर्गक कथाकार व्यक्तिगत पक्षकेँ। अर्थात्, द्वितीय वर्गक कथाकार बहिर्मुखी अधिक छथि तँ तृतीय वर्गक गल्पकार अन्तर्मुखी अधिक। कथाक शिल्प धरि एहि दुनू वर्गक कथाकारक बहुत किछु समान अछि- यथार्थक चित्रण करब बाह्य ओ अन्तः पक्षक, स्वाभाविक, सरल ओ पात्रानुकूल भाषामे उपनिबद्ध चरित्रक मनोविश्लेषण करैत। द्वितीय वर्गक कथाकारमे कथातत्व तँ रहैत अछि, मुदा ओहिमे असाधारणत्वक स्थापना करब हुनकालोकनिक आयास भए जाइत जाइत छैन्हि। वस्तुतः ई दुनू वर्ग एकहि वर्गक दू भिन्न-भिन्न स्वरुप थिक। दुनू वर्गक गल्पकारलोकनिक कथाक सामान्य प्रवृत्ति थिक मानसभूमिकेँ उद्घाटित करब। द्वितीय वर्गक प्रतिनिधि गल्पकार छथि सर्वश्री सोमदेव, ललित, रमानन्द 'रेणु', हंसराज, रामदेव प्रभृति एवं तृतीय वर्गक मायानन्द, राजकमल, कल्पनाशरण जयानन्द प्रभृति। वस्तुतः एहि दुनू वर्गक मध्य कोनो सुस्पष्ट विभाजक-रेखा खीचब कठिन अछि कारण, दुनू वर्गक कथाकारलोकनिक उद्देश्य अन्तर्जगतहिकेँ स्फुट करब अछि। तथापि बाह्य ओ अत :- पक्षक चित्रणक प्रमुखताक दृष्टिएँ यदि ललित बहिर्मुखी छथि तँ राजकमल अन्तर्मुखी। राजकमल प्रसिद्ध बाह्यचित्रण-प्रधान कथा 'ललका पाग' लए भेलाह, परन्तु हिनक रचनामे अन्तर्मुखी दृष्टिकोण अधिकाधिक प्रगाढ़ होइत गेल ओ 'पनडुब्बी' शीर्षक कथामे से चरम पर पहुँचि गेल। मृत्यूपरान्त हिनक प्रकाशित कथासग्रह थिक 'ललका पाग' 'निरमोही बालम हमर', 'कृति राजकमलक' एवं 'एकटा चम्पाकली एकटा विषधर'। ललित, मायानन्द, रमानन्द 'रेणु', हंसराज, रामदेव प्रभृतिक कथाशिल्पमे क्रमिक अधिकाधिक परिमार्जित होइत जँ कथा-शिल्पक एकरुपता अछि तँ अन्य कथाकारमे प्रयोगशीलता अधिक प्रगाढ़ अछि। उपर्युक्त वैशिष्ट्यक दृष्टिएँ ललितजीक 'रमजानी' ओ 'जंगल आ रस्ता', सोमदेवक 'द्रौपदी-बीसम शताब्दी' ओ 'अंगा', हंसराजक 'फूलक दाम', 'भालसरिक माला' ओ 'छिद्र', राजकमलक 'मलाहक टोल' ओ 'एकचित्र', मायानन्दक 'गाड़ीक पहिया' ओ 'मनुक्खक जीवन', कल्पनाशरणक 'रंगीन पर्दा', जयानन्दक 'गंगा सन्तुष्ट छलीह', रेणुक 'रड.' ओ 'एक टघार नोर', रामदेवक 'देहरीक दीपक' ओ 'एक खीरा तीन फाँक' आदि कथा विशेष उल्लेखनीय थिक। जाहि कथामे कथा लिखबाक स्थान पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मात्र विधेय भए गेल अछि, ताहि कथाकेँ कथा नहि कहबे समुचित होएत। एहनो कथाक मैथिलीमे अभाव नहि अछि जे प्रयोगवादी कविता जकाँ अबोध ओ नीरस भए गेल अछि।

उपर्युक्त कथाकार मध्य बहेड़जी ओ धीरेश्वरजीक स्थान बड महत्वपूर्ण छैन्हि। बहेडजी वातावरण आ परिस्थितिक सांगोपांग चित्रण कए चारित्रिक विलक्षणताकेँ बड़ सुन्दर जकाँ उद्घाटित करबामे सिद्धहस्त छथि। भाषा हिनक होइत अछि लोक-भाषा। अतः ई लोकजीवनक कथाकेँ सएह अधिक लिखैत छथि तथा ओकर सूक्ष्म पक्षक स्वाभाविक शैलीमे विश्लेषण करैत छथि। हिनक 'झोटिया पाकड़ि', 'अगिलग्गी' आदि उत्कृष्ट रचना थिक। हिनक शब्दचित्र सेहो मार्मिक होइत अछि, जकर व्यंग्य बड़ मनोरंजक तथा मर्मस्पर्शी होइत अछि। 'झोटिया पाकड़ि' हिनक पहिने रचना थिक। 1964 ई.मे प्रकाशित हिनक 'ढकर-ढकर'मे आधुनिकतम कथाशिल्पक प्रयोग देखल जा सकैत अछि। धीरेश्वरजीक गल्प कथासँ अधिक मार्मिक शब्दचित्र होइत अछि। मुदा जखन हिनक गल्पमे भावुकता कतहु-कतहु अतिकेँ स्पर्श करए लगैत छैन्हि, तखन से कथा किशोरभावना मात्रकेँ सन्तुष्ट कए पबैत छैन्हि। हिनक 'धर्मात्मा' ओ 'मामी'उल्लेखनीय गल्प थिक। हिनक कतोक गल्पक भाषान्तरमे सेहो अनुवाद भेल अछि। किसुनजीक चर्चा सेहो एहि ठाम कए देब उचित बुझैत छी। हिनक 1960 ई.क पूर्वक कथासभमे आदर्शवादिता अछि तँ पश्चातक रचनामे प्रयोगशील यथार्थवादिता। हिनक 'संकल्पक आधार'ओ प्रेम नित्य थिक' विशेष उल्लेखनीय रचना थिक।

तृतीय उत्थान उपस्थित भेल 1960 क पश्चात्, 'मिहिर'क नवीन रुपमे प्रकाशनक अनन्तर। एहि उत्थानमे अन्तर्मुखी चित्रणक प्रधानता आओर अधिक बढ़ल तथा एहि उत्थानक नवोदित कथाकारक आदर्श भेलाह प्रमुख रुपसँ राजकमल, ललित, सोमदेव, मायानन्द प्रभृति गल्पकार। 'मिहिर'मे तँ नित नव-नव रचना प्रकाशित होअए लागल। एहि अवधि मध्य पूर्व उत्थानक गल्पकारलोकनिक श्रेष्ठ रचना सेहो प्रकाशित भेल। मुदा हुनकालोकनिक विशेषता रहल ओएह जकर उल्लेख पूर्व कएल जा चुकल अछि।

एहि उत्थानक विकासमे प्रमुख रुपसँ 'मिहिर'क सएह योगदान रहल, जाहि मध्य पुरान लब्धप्रतिष्ठ कथाकारक अतिरिक्त नव-नव प्रतिभाक सेहो विकास भेल। 'मिहिर'क अतिरिक्त 'वैदेही', 'मिथिलादर्शन', 'अभिव्यंजना', 'आखर', 'अग्निपत्र' प्रभृतिमे सेहो अनेक रचना प्रकाशित भेल। एहि उत्थानक पूर्वक लेखकलोकनिमे सर्वश्री किरण ('मधुरमनि'), प्रो. हरिमोहनझा ('निरसनमामाक सिनेमा', 'प्रगतिक पथ पर'), मनमोहनझा ('चाँपकली', 'सुकेशी') श्रीकृष्णमिश्र ('लघुकथा'), गोविन्दझा ('दू बाट एक खत्ता', 'अन्तिम एकन्नी'), अमरजी ('कन्तुभाइक कन्टर', 'भूखनभाइक चुटुक्का'), गोविन्दचौधरी ('डब्लू टी' 'अन्तरालवर्तिनी'), व्रर्माजी ('साधनाक मोह','युधिष्ठिरक पत्नी'), कुलानन्द 'नन्दन' ('धर्मराजक दुर्गति'), राधाकृष्णझा 'बहेड़' ('मोटा', 'खैंक'), प्रो. रमाकान्तझा ('दुर्वासाक पत्नी' 'विमल नापता अछि'), डा. शैलेन्द्रमोहन झा ('वन्ध्या-जननी', 'नरक'), बुद्धिनाथमिश्र 'भड़ेर' ('शकुंतलाक सिन्धु-समाधि',

'बरियाती'), ललित ('वीणाक मुक्ति'), प्रो. भक्तिनाथसिंह ठाकुर ('स्वप्न वा सत्य'), प्रो. मायानन्दमिश्र ('हँसीक बजट' 'नेपथ्यक हाकरोस'), राजकमल ('माहुर'), धीरेन्द्र ('गीध' 'मनुक्ख बिकायत'), सोमदेव ('सरकारी नौकरी'), किसुन ('पुरान पत्र टटका बात', 'एक अंक : तीन दृश्य'), हंसराज ('अपन लोक', 'अपराधी'), रामदेव ('एकटा रहए उत्तमी') प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहि गल्पकार मध्य कतोकक सर्वश्रेष्ठ रचना एही कालमे प्रकाशित भेल। नवीन गल्पकारक संख्या शताधिक अछि आओर तँ सभक चर्चा एहि ठाम सम्भव नहि अछि। एहि उत्थानमे हास्य-व्यंग्य दिसि विशेष अभिरुचि देखना जाइत अछि। हास्य-व्यंग्य-मूलक कथाक रचयिताक रुपमे सर्वश्री केदारमणिझा ('सरहंजिक विवाह', 'सारक सत्कार'), रुपकान्त ठाकुर ('जीवन-बीमा', 'धूकल केरा'), रामकृपाल चौधरी 'राकेश' ('पुनर्मूषिको भव', 'श्रीमतीजीक रेडियो'), मिहिर ('तोतालालक पुरहिताइ'), विषपायी ('निरसूझाक सबारी'), झामलाल ('जँतपिस्सी प्रेम', 'शल्यचिकित्सा'), शिलाकान्त ('लव मैरेज') प्रभृतिक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। मुदा मैथिली कथाके कलात्मक सूक्ष्मता प्रदान करबामे सर्वश्री रमेश ('मालिक : एक संस्मरण', 'गप्पक गप्प'), रवीन्द्रनाथठाकुर ('स्वप्न', 'प्रेमक प्रतिमा'), प्रो. चन्द्रकान्तझा ('धोखा', 'दूरक ढोल', 'धार्मिक दृष्टि'), गंगानाथझा ('प्रेम वा वासना', 'दिन-चक्र'), शिवशंकरमिश्र 'नृसिंह' ('करजान', 'अंकुरा'), मधुकर गंगाधर ('भोरसँ पहिने', 'बुढ़वा पीपर ओ कठ-खोदही'), बलराम ('मोहरी', 'हरियर इजोत'), प्रभासकुमार चौधरी ('एक अपराध : एक दण्ड', 'आयल पानि गेल पानि'), गौरीमिश्र ('ठहिआयल मोन : शीतल छाहरि', 'सिहरैत ठोर : ढरकैत नोर'), गंगेश गुञ्जन ('अभिनय', 'एकटागुलाब डारि पर'), साकेतानन्द ('जिनगीक काँट', 'नव खोता नव डारि पर'), योगिराज ('कदमक फूल', 'एकटा नेनाक कानब'), धूमकेतु ('बिरड़ो', 'कुलटा'), मार्कण्डेय ('सकुचल दृष्टिकोण : थकुचल इच्छा'), राजमोहन ('भीड़ महक एकसर यात्री', 'अन्तराल'), सुभद्राकुमारी पाध्या ('अपराधी'), बड़दाचरण ('गाड़ीक गीत'), जीवकान्त ('आगिक छाउर', 'हाहि' 'खलनायक') आदिक प्रधान रुपसँ उल्लेख कएल जा सकैत अछि। एहि कथाकारलोकनिक कथामे स्थान-स्थान पर यद्यपि प्रौढ़ताक अभाव देखना जाइत अछि, तथापि कतेक नवीन गल्पकारमे निस्सन्देह प्रतिभाक अभाव नहि अछि। एहन प्रतिभाशाली कथाकारलोकनि मध्य प्रो. चन्द्रकान्तझा, श्री गंगानाथझा, श्री प्रभासकुमार चौधरी, श्री गंगेश गुंजन, श्री धूमकेतु ओ श्रीमती गौरी मिश्र तँ उच्च कोटिक कथाकारक रुपमे निर्विवाद रुपसँ समादृत भए चुकल छथि। श्री जीवकान्त तँ शैलीगत विशिष्टता, अस्तित्ववादी दृष्टिकोण एवं अन्तर्भेदी मनोविश्लेषण-पद्धतिक कारणे आब सर्वाधिक प्रतिभाशाली कथाकारक रुपमे अपन व्यक्तित्व स्थापित कए लेने छथि। उपर्युक्त कथाकारक अतिरिक्त अन्य उल्लेखनीय गल्पकार छथि श्री शैव्याझा, किशलय, सुशीलझा, इन्द्रनाथ, हरिवंश, सदनमिश्र, रघुपति राघव, सुभद्रा सुहासिनी, विद्यानाथझा 'विदित', गोपीकृष्ण, विनोदगोपाल, आशुतोषसिंह ठाकुर, राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'

इन्दिराझा, कार्तिकनाथमिश्र, मुखलाल, मंडल, शिवकान्त, पंचसर, उदयभानुसिंह, वीरेन्द्र, शेफालिकावर्मा प्रभृति। अत्यन्त छोट लघुकथा (गुलिका) लिखबाक दृष्टिएँ सर्वश्री डा. केदारनाथलाभ, डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश', सोमदेव, डा. दिनेशकुमारझा आदिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि।

1970 ई.सँ किछु पूर्व ओ 1967 ई. क पश्चात् यदि पूर्व-चर्चित सर्वश्री धूमकेतु, प्रभासकुमार चौधरी, गंगेशगुंजन, जीवकान्त, प्रभृति किछु कथाकार विशेष रुपसँ कृतविद्यता प्राप्त कए आधुनिक कथा-साहित्य मध्य प्रमुख हस्ताक्षरक रुपमे स्वीकृत भेलाह तँ दोसर दिसि अनेक तरुण कथाकारलोकनिक नवोदय भेल ओ एकटा नवयुग जकाँ उपस्थित भेल। एहि अवधिमे कथासाहित्यक विकासकेँ आओर अधिक गतिशील करबामे सर्व-प्रमुख रुपसँ 'मिथिला-मिहिर'क सएह योगदान कहल जाए सकैत अछि, परन्तु 'मिथिला-दर्शन','वैदेही' 'अग्निपत्र' 'अनामा', 'कथा-दिशा' प्रभृतिक योगदानकेँ सेहो विस्मृत नहि कएल जाए सकैत अछि। 1970 ई. मे दरभंगासँ पाकेट-बुक पुस्तकमालाक प्रकाशन आरम्भ भेल तथा कलकत्ता, पटना प्रभृतिक संस्थासभक माध्यमसँ सेहो अनेक कथा-संग्रह प्रकाशित भेल। अतः एहि अवधिमे जतबा संख्यामे कथा-संग्रहक प्रकाशन भेल अछि ततवा पूर्व नहि भेल छल। डा.बी. झा, श्री रमानन्द 'रेणु', हंसराज, राजकमल, अमरजी, राजमोहन आदि पूर्व चर्चित कथाकारक अनेक कथासंग्रह एहि युगमे प्रकाशित भेल अछि। एहि कालमे अवतीर्ण नव-नव कथाकारमे प्रमुख भेलाह सर्वश्री सुभाषचन्द्र यादव ('डर', 'गुण्डा'), रमानन्द 'रमण', ('मनटिक्का', 'हस्ताक्षर',), कमल 'आनन्द' ('हमर अभाग सन्दर्भ कथा', 'अपन धरती'), श्यामनन्दठाकुर ('हस्ताक्षर', 'दण्ड'), छत्रानन्दसिंह झा ('जरद्‌वगव', एकटा प्रेयसी चाही'), पूर्णेन्दुकुमार ('कचोट', 'खोपक पड़बा'), बुद्धिनाथमिश्र ('पछबरिया सूर्य', 'उद्वेग'), उपेन्द्र दोषी ('लिखलाहा', 'आत्मवाणी'), सुकान्त 'सोम' ('असक', 'दंश'), शौकत खलील ('खोंखैत हमर नेना'), शशिकान्त ('ठिठुरैत सपना', 'पैरवी'), ललितेशमिश्र ('भय', 'यात्रा'), उदयचन्द्र झा 'विनोद' ('सम्बन्ध, 'काँट'), महाप्रकाश ('पिता नव परिवेशमे', 'मेघक पार एकटा सूर्य'), श्री मार्कण्डेय 'प्रवासी' ('मनुष्यक उदेस', 'भेँट'), शिवशंकरझा 'झा' (पराजय), उपेन्द्रझा ('गाममे दू दिन') प्रभृति। परन्तु ई सूची एतबहिटा नहि अछि। एहि कथाकारक अतिरिक्त अनेक कथाकारलोकनिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि जे एहि विधामे सेहो अपन अपन महत्त्वपूर्ण सेवा प्रदान कएल। एही दृष्टिएँ सर्वश्री सुधाकर चौधरी, रमेश नारायण, कमलानन्दझा 'व्यथित', मन्त्रेश्वरझा, इन्द्रकान्तझा, दिनेशकुमार झा, वासुकीनाथ झा, विजयचन्द्रझा, अमरनाथझा (शुभंकरपुरड्योढ़ी) प्रभृतिक नामोल्लेख सेहो प्रमुख रुपेँ कएल जाए सकैत अछि।

1970-75 ई.क अधिकांश कथाकारलोकनि सेहो पूर्व-कालक कथाशिल्प, कथ्य-विषय ओ विश्लेषण-पद्धतिक संपुष्टि कएल ओ अन्तर्मुखी भावविश्लेषणकेँ

नवकथाक प्रधान गुण मानल। श्रीछत्रानन्द एवं श्रीमन्त्रेश्वरक समान किछु एहनो कथाकार अवश्य भेलाह जे व्यंग्यमूलक मनोरंजन करबामे अपन सिद्धहस्तता देखाओल। एहि अवधिमे किछु दीर्घ कथाक रचना सेहो भेल ओ एहि रौनिक कथा-रचनामे अग्रगण्य छथि रमानन्द 'रेणु', जीवकान्त, चन्द्रनाथ प्रभृति। एहनो किछु रचना भेल जे जीवनक सत्य-कथा पर आधारित छल, उदाहरणार्थ 'मिहिर'क 'सत्यकथा' विशेषाक द्रष्टव्य थिक।

1975 ई.क पश्चात् आधुनिक गल्प-साहित्यमे नवोत्थानक लक्षण दृष्टिगोचर भए रहल अछि। एहि अवधिमे श्रीमती लिलीरे ('दुविधा', 'चन्द्रमुखी', दीर्घ-कथा-'बिहाड़ि अयबासँ पहिने') एवं श्रीमती उषारानी खान ('सीमन्तिनी', 'सिनेह', 'एकपेरियाँ') सन एहन प्रतिभाशाली कथा-लेखिकाक उदय भेल अछि, जनिक कृतित्वमे अन्तर्मुखी भाव-विश्लेषण एवं कथाक बाह्य-पर्यावरण-निर्माणमे कलात्मक सन्तुलन तथा कथ्य-विषय ओ कथा-निरुपण-पद्धतिमे नवीनताजन्य दिशान्तरक दर्शन होइत अछि आओर एही कारणे ई दुह लेखिका मैथिलीक श्रेष्ठ कथाकारक अग्रिम पंक्तिमे प्रतिष्ठित भए गेलीह अछि। जनिक कथा-रचनाक व्युत्पन्न प्रतिभासँ मैथिली कथा-साहित्यक विकासमे नवीन सम्भावना बढ़ल अछि ताहि कथाकारललोकनि मध्य श्री विनोद बिहारी लाल ('जे इतिहास नहि बनत', 'खोहक अन्हार', 'ओकरा लेल घृणा छैक'), श्री विभूति आनन्द ('काठ', 'एकटा बात कहू मोना दाइ'), श्री फजलुर रहमान हाशमी ('एडभास्म बुकिंग', दीर्घ कथा-'अन्तरंग'), श्री विश्वनाथ ('जुलुस रुकल अछि', 'लहरि पर रुकल नाव'), श्रीमती नीरजा रेणु (छुटैत लोक), श्रीनवीन चौधरी ('दम्पति', 'नोत'), श्रीदेव ('एकटा छल कैदी') आदिक नामोल्लेख प्रमुख रुपेँ कएल जाए सकैत अछि। एही श्रेणीमे अबैत छथि श्री शैवाल ('अघोषित युद्ध'), श्री धीरेन्द्र नाथ मिश्र ('अपराध ककर ?'), श्रीरविकान्त 'नीरज' ('जीवन-दान'), श्री तारानन्द वियोगी ('सातटा लहास'), श्री अरुण शैलेन्द्र ('जादूगर', 'करोटन'), श्री शैलेन्द्र आनन्द ('भोरसँ पहिने', 'अन्तर'), श्री मधुसूदन मणि ('पाँचम बेटा'), श्री विनोद भारती ('बिहाड़ि'), श्री रवीन्द्र राकेश ('थेथर'), श्री लीलानन्द सिंह झा ('परिवर्तन'), श्री कविता सिंह ('रक्त-सम्बन्ध'), श्री मणिकान्त ('कर्जक वापसी'), श्रीरमणझा ('मनुक्खमारा माउग'), डा. नोदनाथ 'यशस्वी' ('दुरमतिया'), श्री प्रदीप बिहारी ('उपरौंझ'), शिवशकर श्रीनिवास ('अपन बुत्ता', 'बताहि')', शैवाल (धैर्यक प्रतिमा), नरेश कुमार विकल ('झरकल जिनगी'), प्रेमानन्द दास ('बाढ़ि'), विभारानी ('पवितरी', 'माधव हम परिणाम निराशा'), देवशकर नवीन (बबूर), डा. नीताझा ('बदला', 'उत्तरक प्रतीक्षा'), हरिकान्त झा ('दोपीक ?'), चन्द्रेश ('चरम बिन्दु', 'आकर्षण-विकर्षण') प्रभृति। लघु-कथाक क्षेत्रमे मणिकान्त प्रदीपविहारी, पवनकुमार, रामदेव प्रसाद चौरसिया, अमितकुमारझा, विनयचन्द्रझा, अ. ना. अष्टावक्र, योगेन्द्रठाकुर, अयोध्यानाथ चौधरी आदि अनेक तरुण कथाकार सहृदय ध्यान आकृष्ट कए लैत छथि। एहि मध्य कतोक कथाकार बड़ नवीन छथि, परन्तु अपन आरम्भिक रचनहुँमे अपन कथा-रचनाक भविष्णु प्रतिभाक संकेत दए देने छथि।

वस्तुतः आधुनिक मैथिली साहित्यमे गल्प सर्वाधिक विकसित विधा थिक आओर एकर शिल्पक दिनानुदिन विकास भए रहल अछि। 1970 ई.सँ पूर्वधरि कथाकारलोकनिक कथासंग्रह बड़ कम संख्यामे प्रकाशित भए सकल छल।पूर्वोल्लिखित संकलन अतिरिक्त एहि उत्थानक श्री रमानाथमिश्र 'मिहिर'क 'स्मृति', श्री प्रभासकुमार चौधरीक 'नव घर उठय पुरान घर खसय' श्री गंगेशगुञ्जनक 'अन्हार-इजोत', रुपकान्त ठाकुरक 'धूकल केरा', श्रीमती गौरीमिश्रक 'ठहियायल मोन शीतल छाहरि' श्री राजमोहनझाक 'एक आदि एक अन्त', श्री उदयभानुसिंहक 'जखन तखन' प्रभृति कथासंग्रहक उल्लेख कएल जा सकैत अछि।

1970-80 ई. मध्य कथाकारलोकनिक कथा-संग्रहक प्रकाशनमे अवश्य प्रगतिक उदाहरण भेटैत अछि। एहि अवधिमे प्रो. तन्त्रनाथझाक मिथिलाक्षरमे अत्यन्त छोट-छोट कथाक संग्रह 'लघुकथा' एवं बालोपयोगी दीर्घ कथा 'योगक संगी', अमरजीक 'जल-समाधि', श्री रमानाथमिश्र 'मिहिर'क 'एक युगक बाद', श्री राजमोहनक 'झूठ-साँच', श्री रमानन्द रेणु क 'कचोट' ओ 'त्रिकोण', हंसराजजीक 'सतंजा' ओ 'जेबिकतरसँ', डा. बी.झा. 'लाटरी' ओ 'पियास' श्री जीवकान्तक 'एकसरि ठाढ़ि कदमतररे' एवं 'सूर्य गलि रहल अछि', रुपकान्तठाकुरक 'मोमक नाक' आदिक प्रकाशन भेल। एहि अवधिमे कथाकार रुपमे प्रतिष्ठित होइत अथवा प्रतिष्ठित होएबाक चेष्टा करैत सेहो अनेक नवीन रचनाकारक कथा-संग्रह प्रकाशित भेल, जाहि मध्य श्री कमलानन्दझा 'व्यथित'क 'ओ इजोरिया', श्री सुधाकर चौधरीक 'काजर', श्री रमेश नारायणक 'पाथरक नाव' श्री छत्रानन्दक 'डोकहरक आँखि', श्री शशिकान्तक 'सम्पूर्ण स्वीकार' ओ 'आकाशदीप', धीरेन्द्र 'धीर'क 'लतमारा', डा. इन्द्रकान्तझाक 'अभिन्न' प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। अत्यन्त छोट कथाक क्षेत्रमे श्री अमरकान्तझाक (शुभकरपुरड्योढ़ी)क 'क्षणिका'कें सेहो उल्लेखनीय प्रकाशन कहल जाएत। हिनक 'थाही एकटा द्रौपदी' 1976 ई.मे एवं 'कबकब' 1977 ई.मे प्रकाशित भेल, जकर प्रकाशनसँ श्री अमरनाथ मैथिलीक हास्य-व्यंग्य-कथाकारक अग्रिम पंक्तिमे प्रतिष्ठित भए गेलाह। 1977 ई.मे श्री मन्त्रेश्वर झाक 'एक बटे दू' एवं श्री छत्रानन्दक 'काँट-कूस' सेहो प्रकाशित भेल आओर एहि प्रकार एहि तीनू कथाकारक उपर्युक्त कथा-संग्रह संयुक्त-रुपसँ हास्य-व्यंग्य-साहित्यमे एकटा नवीन युगक आरम्भक सूचना दए देलक। उपर्युक्त कथासंग्रहक अतिरिक्त एहि अवधिमे प्रकाशित कथा-संग्रह थिक श्री धूमकेतुक 'अगुरवान', श्री इन्द्रकान्तक 'हथकरी बाजिउठल', श्री देवक 'हिल्कोर', श्री विभूति आनन्दक 'प्रवेश', श्री गौरीकान्तझा 'कान्त'क 'पानक पात', डा. श्रीदिनेशकुमार झाक 'दरबार-कथा', श्रीमती चित्रलेखा देवीक 'उबिआइत आखर', श्रीमती श्यामाझाक 'पश्चात्ताप', श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्रक 'नवांकुर' एवं 'मृगतृष्णा' प्रभृति।

1980-81 ई.क पश्चात् व्यक्तिगत कथा-संग्रहक प्रकाशनमे विशेष गति

आएल। प्रो. उमानाथझाक 'अतीत' (साहित्य अकादेमी द्वारा 1987 ई.मे पुरस्कृत), योगानन्दझाक 'उड़ैत वंशी', किसुनक 'स्वयंवर', राजकमलक 'एकटा चम्पाकली एकटा विषधर', श्री मायानन्द मिश्रक 'चन्द्रबिन्दु', श्रीरमानन्दरेणुक 'अन्तहीन आकाश'क अतिरिक्त श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क 'कुहेश आ किरण', 'शतरूपा ओ मनु' एवं 'पझाइत घूरक आगि', जीवकान्तक 'वस्तु', श्री राजमोहनझाक 'एकटा तेसर', डा. शिवशंकरझा 'कान्त'क 'चंचल कावेरी' डा. रामदेवझाक 'धरतीमाता', श्री सुभाषचन्द्र यादवक 'घरदेखिया', डा. कमलकान्तझाक 'नियुक्तिपत्र', श्री उदयचन्दझा 'विनोद'क 'जाँत', डा. श्री नीताझाक 'फड़िच्छ', श्री रमानाथमिश्र 'मिहिर'क 'हीरा', श्री चन्द्रेशक 'जिनगीक भूगोल', 'नचैत पृथ्वी' ओ 'ललकी किरिन', श्रीप्रभासकुमारक चौधरीक 'कथा-प्रभास', श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर',क 'तोरा संग जयबौ रे कुजबा', प्रो. मनमोहनझाक 'घर घुरैत काल', डा. मदनेश्वर मिश्रक 'प्रत्यक्ष', श्रीमती सुशीलाझाक एकटा कथा-संग्रह 'अन्तर्द्वन्द्व', डा. शेफालिक वर्माक 'एकटा अकास' प्रभृति प्रकाशित भेल। सुप्रसिद्ध साहित्यकार किरणजीक 'कथाकिरण' सेहो 1988 ई.क उल्लेखनीय प्रकाशन थिक।

विभिन्न गल्पकारलोकनिक प्रतिनिधि गल्पक संकलन-संग्रहक दृष्टिएँ 'गल्पांजलि', 'चयनिका', 'संचयिता', 'अंछिजल', 'टटका गप्प', 'गल्पसुधा', 'सप्तसुमन' 'कथाकुंज', 'मैथिली कथासंग्रह', 'समाधान' आदिक नामोल्लेख कए सकैत छी, जकर संकलनकर्त्ता भेलाह डा. जयकान्तमिश्र, प्रो. कृष्णकान्तमिश्र, श्री मनमोहनझा, प्रो. प्रबोधनारायणसिंह, स्व. योगानन्दझा, डा. परमानन्दझा, प्रो. रमानाथझा एवं प्रभासकुमार चौधरी। दुइ गोट कथासंग्रह साहित्य-अकादेमी दिसिसँ सेहो डा. श्री जयधारी सिंह एवं श्री नीरजा रेणुक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल तथा एकटा वेश विस्तृत कथासंग्रह मैथिली अकादेमी, पटना द्वारा सेहो प्रकाशित कएल गेल जकर सम्पादक भेलाह डा. अमरेश पाठक। एहिमे कोनो कथा-संग्रह ने तँ मैथिली कथा-साहित्यक विकासक विस्तृत ओ सम्पूर्ण रुपरेखा प्रस्तुत करबामे समर्थ भए सकल आ ने संकलित सबटा कथा नीक जकाँ बिछल गेल अछि। उत्कृष्ट कथा-चयनक दृष्टिएँ प्रो. रमानाथझाक 'मैथिली कथा-संग्रह'कें आबहु विशेष रुपसँ उल्लेख कएल जा सकैत अछि।

1980-81 ई.क पश्चात् विभिन्न कथाकारक श्रेष्ठ रचनाक क्रमबद्ध संकलनक उल्लेखनीय प्रयास भेल 'मैथिलीक प्रसिद्ध कथा' नामसँ दुइ भागमे। प्रथम भागक सम्पादक भेलाह डा. वासुकीनाथझा, जाहिमे आरम्भिक पाँच दशकक रचना संगृहीत भेल तथा छठम दशकक रचनाक संकलयिता भेलाह श्री मोहन भारद्वाज। एहिसँ अतिरिक्त योगानन्दझा ओ डा. मदनेश्वर मिश्र तथा डा. मदनेश्वर मिश्र ओ इन्द्रकान्तझाक संयुक्त सम्पादनमे क्रमशः 'कथा-सरिता' ओ 'कथा-वाटिका' सेहो प्रकाशित भेल। 'नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प' प्रकाशित कएल श्री धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'। अतः एहि प्रकारक कथा-संगहक परम्परा सतत चलैत आबि रहल अछि।

रिपोर्ताज ओ रेखा-चित्र- मैथिलिमे एहि विधाक साहित्य-रचनाक नितान्त अभाव अछि। रिपोर्ताज-शैलीक सर्वप्रथम प्रयोग श्री यात्रीजी अपन गल्प-रचनामे अवश्य कएल, परन्तु स्वतंत्र रुपसँ एहि रीतिक किछुए रचना मैथिलीमे सम्भव भए सकल अछि। एहि विधाक सर्वश्रेष्ठ लेखक छथि श्री प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'। हिनक 'ब्रह्मग्राम' पुस्तकमे सुन्दर-सुन्दर रिपोर्ताज संगृहीत अछि। गाम-घरमे हेराएल सांस्कृतिक वैभवक अन्वेषण, साक्षात्कार एवं ताहिसँ संबद्ध अविस्मरणीय पात्र, रोचक घटना एवं शीलसंकोच, सुख-दुःखक कथात्मक वर्णन एहि मध्य बड़ सजीव रीतिएँ अंकित कएल गेल अछि जे रचनाकारक कवित्वपूर्ण संवेदनशील भावनासँ सिक्त भए अपूर्व आस्वाद्य प्रस्तुत करैत अछि। हिनक 'नीकायन' एवं श्री राजमोहनझाक 'देखल एक प्रदर्शनी'केँ सेहो एहि विधाक उत्तम रचना कहल जाए सकैत अछि। प. गोविन्दझाक 'सभागाछीः नवढंगः नव रंग', श्री विनोदविहारीलालक 'ढनमनायल गामः भीख आ चिल्होड़ि', श्री विभूति आनन्दक 'कचोटक संग घूरि रहल छी' प्रभृति सेहो श्रेष्ठ उल्लेखनीय रचना थिक।

रिपोर्ताज साहित्ये जकाँ मैथिलीमे शब्द-चित्रक सेहो नितान्त अभाव अछि। तथापि गत-किछु वर्षसँ एहि रीतिक रचनाक प्रयास भए रहल अछि। श्री रामानुग्रहझाक 'आकाशतर एकटा पीपर' एवं श्री विश्वनाथणक 'सुन्दरि निहुँरि फुकू आगि' उत्कृष्ट कोटिक शब्दचित्र थिक। श्री अमरजीक कतोक कथात्मक रचना एवं मणिपद्मक कतोक व्यक्तित्व-चित्रणमे शब्द-चित्रक सुन्दर निबन्धन भेटैत अछि। श्री अमरनाथझाक 'शब्दचित्र' एवं 'भालरि' सेहो एतए उल्लेखनीय अछि। परन्तु एहि क्षेत्रमे एखन अधिकाधिक कार्य प्रयोजनीय बूझि पड़ैत अछि।

यात्रा-साहित्य - मैथिलीक यात्रा-साहित्य कथा साहित्य जकाँ विस्तृत नहि अछि। एहि प्रकारक रचना एही युगमे होअए लागल। अतः यात्रासम्बन्धी रचना एहि शताब्दीक पूर्वक उपलब्ध नहि अछि। विदेश-यात्रा पहिने अधार्मिक कृति बुझल जाइत छल। मुदा सम्पूर्ण भारतक यात्रा तीर्थाटनक रुपमे होइत रहैत छल। एकर अतिरिक्त मिथिलाक विद्वानलोकनि काशी, बुंदेलखण्ड, राजपुताना, नेपाल, बंगाल प्रभृति स्थानमे विद्यार्जन अथवा राज्याश्रय पएबाक निमित्त बराबरि जाइत छलाह। परन्तु अपन यात्राक अनुभव लिखबा दिसि बड़ कम गोटे प्रवृत्त भेलाह। बख्शीजी अपन 'मिथिलाभाषामय इतिहास'मे म. म. महेशठाकुरक दिल्लीयात्राक बड़ रोचक वर्णन कएने छथि।

सर्वप्रथम एहि दिसि प्रवृत्त भेलाह म. म. मुरलीधरझा जे म. म. सुधाकर द्विवेदीक काशीसँ जनकपुरक यात्राक वर्णन 1907 ई.मे लिखल तथा स्वयं अपन 'मिथिला मातृभूमिक यात्रा'लिखल 1916मे। किन्तु हिनक सबसँ रोचक यात्रावर्णन भेल 'काश्मीरयात्रा'(1922)। म. म. मुरलीधरझाक पश्चात् चेतनाथझाक स्थान अबैत अछि, जनिक 'जगन्नाथपुरीयात्रा' प्रकाशित भेल 1910 ई.मे। एहि मध्य लेखक अपन वैयक्तिक अनुभवक उल्लेखक संग-संग पुराण ओ इतिहासमे उल्लिखित काश्मीर-सम्बन्धी विषयक सेहो चर्चा कएल अछि। पश्चात् यात्रावर्णनमे रामबल्लभशर्माक 'नेपाल ब्राह्मण ओ पशुपतिदर्शन', भुवनेश्वरझाक 'मानसरोवर-यात्राक डायरी' आनन्दझाक 'हरिद्वारकुम्भ ओ परिभ्रमण' तथा प्रायः सबसँ उत्कृष्ट रमानाथझाक काशीमे विश्वशान्त्यर्थ यज्ञ' प्रकाशित भेल। एमहर डा. सीतारामझा श्यामक 'भारत-भ्रमण' पुस्तकाकार प्रकाशित भेल अछि।

महाराज कामेश्वरसिंहक विदेशयात्रासँ मैथिल-समाजमे तकर विरुद्ध आन्दोलन तँ बड़ भेल, मुदा शिक्षितसमुदायमे तकर प्रति बड़ अनुकूलता आएल। कुमार गंगानन्दसिंह सर्वप्रथम 1929-30 मे ओहि विदेशयात्राक अनुभव प्रकाशित करबाओल। मुदा सांगोपांग ओ विस्तारपूर्वक सबसँ पहिल बेर विदेश-यात्राक अनुभव लिखल डा. सुभद्रा झा, जे 'मिहिर'मे क्रमशः 'हमर-विदेश-यात्रा'क नामसँ प्रकाशित भेल तथा जकर पूर्वार्द्ध पुस्तकाकार 'प्रवास'क नामसँ सेहो प्रकाशित भेल। हिनक दोसर प्रकाशित यात्रा-विषयक पुस्तक थिक 'यात्रा-प्रकरण-शतक'। डा. झासँ पूर्व 1938 ई.मे श्री वैद्यनाथमिश्र 'यात्री'सेहो अपन 'तिब्बतमे तेरह दिन' छपबाओल। विदेशयात्रा-साहित्यक निर्माण तहिआसँ बराबरि होइत रहल अछि। एहि सन्दर्भमे डा. श्री सुभद्रझाक पश्चात् सबसँ विस्तृत कार्य भेल अछि श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'क 'विदेश-भ्रमण' (वैदेही), डा. जगदीशचन्द्रझाक 'विदेशयात्राक विविध प्रसंग', (मिहिर) एव श्री नगेन्द्रकुमरक 'पथचारीक स्तम्भ' (मिहिर)मे विदेशयात्राक विविध प्रसंगक रीपोर्ताज-रीतिक वर्णन। डा. जगदीशचन्द्रझाक विदेश-यात्राक विविध प्रसंगक एकटा सुन्दर सग्रह 'सात समुद्र पार' नामसँ पुस्तकाकार 1969 ई. प्रकाशित भेल। श्री उपेन्द्रनाथझा 'व्यास' सेहो विदेशयात्राक वृत्तान्त पुस्तकाकार छपबाए देल अछि, जकरा मैथिलीक उत्कृष्ट यात्रासाहित्य कहल जाए सकैत अछि। एही कोटिमे 1981 ई.मे प्रकाशित श्री नगेन्द्र कुमरक आयरलैण्ड-यात्राक विवरण 'श्यामली'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एकर अतिरिक्त डा. शचीनाथझाक 'एडिनबराक वर्णन' (स्वदेश), श्री मणंजकान्तझाक 'मातृभूमिसँ अमेरिका' (मिहिर), डा. जयकान्तमिश्रक 'नेपालयात्रा', श्री जीवकान्तक 'जनकपुरः आस्तिकता ओ मैथिली', प्रो. तृप्तिनारायणझाक 'एलिफैन्टाम किछु क्षण' प्रभृति। 1960 ई.क पश्चात् विदेशयात्रा-साहित्यक रचना चित्रमय एव कथात्मक वर्णनक दृष्टिएँ विशेष सफल भेल तथा से निस्सन्देह उत्तम कोटिक मनोरंजनसाहित्य थिक।

विदेशयात्राक अतिरिक्त भारतक विभिन्न स्थानक यात्रावर्णन-सम्बन्धी अनुभव सेहो अनेक पत्र-पत्रिकामे उपलब्ध अछि। 1950 क पश्चात् भारतक अनेक स्थानक यात्राक जे वर्णन भेल अछि, ताहि मध्य इतिवृत्तात्मकता एवं वैयक्तिक अनुभव-अनुभूतिक एहन मणिकांचन-संयोग भेल अछि जे मनकेँ मोहि लैत अछि। एही दृष्टिएँ श्री कलांशुक

'जगन्नाथपुरीक झाँखी', श्री अमरजीक 'ललका लौल'(जयपुर-यात्रा) ओ 'पुष्पकदर्शन', डा. जयमन्तमिश्रक 'सौन्दर्यक साकार देश कश्मीर', डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'पुनर्नवा', श्री भाग्यनारायणझाक 'क्तऽ की देखलहुँ', श्री सीतारामझा 'श्याम'क 'यात्राक दिव्य सस्मरण', सूर्यनारायण चौधरीक 'उदयपुरक एक दिन' प्रभृति अनेकानेक यात्रा-साहित्य रचित भेल। 1970 क पश्चातो यात्रा-सम्बन्धी अनेक लेख प्रकाशित भेल अछि जाहि मध्य डा. उमारमणझाक 'दक्षिणक तीर्थ-यात्रा', डा. दामोदर झाक 'भाखरा नंगल ओ नैनादेवीक दर्शन' एवं 'शक्तिपीठ चिन्त्यपूरणी ओ ज्वालामुखी-दर्शन', श्री राजदेवमिश्रक 'दार्जिलिंग-यात्रा', डा. गिरीशचन्द्रझाक 'वैदेही-वनवास-स्थलीक परिभ्रमण', श्रीमती आभाझाक 'अण्डमण्ड निकोबार-द्वीप-समूह' प्रभृति किछु लेख विशेष रुपसँ उल्लेखनीय अछि। श्रीमती जयन्तीदेवीक **'गयायात्रा'** एवं प. जीवानन्दठाकुरक **'बदरीनाथ-यात्रा'** रोचक शैलीमे लिखल गेल उल्लेखनीय पुस्तक थिक। वस्तुतः एहि प्रकारक रचनाक विकासक मैथिलीमे अधिकाधिक आवश्यकता प्रतीत होइत अछि।

निबन्ध-साहित्य- निबन्ध ओहि गद्यरचनाकेँ कहि सकैत छी, जाहिमे लेखक कोनहु विषय पर स्वच्छन्दतापूर्वक, परन्तु एक विशेष सौष्ठव, संहिति, सजीवता ओ वैयक्तिताक संग अपन भाव, विचार वा अनुभवकेँ व्यक्त करैत छथि। अर्थात्, निबन्धक प्राण थिक लेखकक वैयक्तिक दृष्टिकोण। भारतीय भाषामे निबन्धक विकास पाश्चात्य-साहित्यक सम्पर्कसँ भेल। अंगरेजी ओ फ्रेंच भाषामे साहित्यक एहि विधाक बड़ विकास भए चुकल अछि तथा एहि प्रसंग सैद्धान्तिक विवेचना सेहो भेल अछि। पाश्चात्य-साहित्यमे निबन्धक प्रधान विवेचक भेलाह अछि मौंटेन, बेकन, जानसन, एडिसन, प्रिस्टले प्रभृति। मैथिलीमे ओहि दृष्टिएँ निबन्धक रचना अधिक नहि भेल अछि तथा निबन्ध लेख मात्रक पर्याय बुझल जाइत अछि।

मैथिलीमे निबन्धक विकास पत्रकारिताक आरम्भ भेलासँ भेल तथा मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक नवजागरणक सबसँ प्रमुख वाहन भेल मैथिली निबन्ध, जे आरम्भमे फुटकर लेखक अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाक सम्पादकीय तथा भाषणक रुपमे रचित भेल।

सम्पादकीय रुपमे निबन्धक प्रारम्भिक स्वरुपक दर्शन होइत अछि म. म. मुरलीधरझाक 'मोद'क सम्पादकीयमे। एहिमे समसामयिक समस्या पर विचार व्यक्त कएल गेल उपहास-व्यंग्यशैलीमे, सुधारवादी दृष्टिसँ निष्पन्न। म. म. मुरलीधरझा सम्पादकीयक अतिरिक्त अपन स्फुट निबन्धो मार्मिक रीतिएँ लिखल शिक्षाप्रणाली, स्त्रीशिक्षा, व्यर्थ-व्यय-परिहार प्रभृति विषय पर, जाहि मध्य सामाजिक दोष पर प्रहार कएल गेल निर्ममताक संग। म. म. मुरलीधरझाक पश्चात् 'मोद'क जे जे सम्पादक भेलाह, से से हुनके चरणचिह्नक अनुसरण करबाक चेष्टा कएल, किन्तु तदनुरुप मार्मिक

प्रभाव उत्पन्न नहि कए सकेलाह। एही दृष्टिएँ म. म. मुरलीधरझाक प्रसंग डा. जयकान्त मिश्रक उक्ति द्रष्टव्य थिक :- *"In outspokenness, sharpness of criticism and strength of style, Mm. Murlidhar Jha's prose has remained unparallel to this day"*

म. म. मुरलीधरझाक पश्चात् सुन्दर ओ ओजस्वी सम्पादकीय लिखबाक दृष्टिएँ भोलालालदास, भुवनजी ओ सुमनजीक नाम अग्रगण्य अछि। भोलालालदास सम्पादकीय निबन्ध वा अन्य स्फुट निबन्धमे विषयकेँ सहज सरलताक संग उठाओल। ओहिमे अत्यन्त प्रभावपूर्ण रीतिएँ विषयकेँ स्पष्ट कए देबाक अपूर्व कौशलक दर्शन होइत अछि। भुवनजीक निबन्धमे विषयानुरुप भावात्मक अथवा व्यंग्यवक्रोक्ति-रीतिक शैलीक प्रयोग भेल अछि। सुमनजी अपन गद्यमे पाण्डित्यपूर्ण संवेदनशीलताकेँ समन्वित करबामे अदभुत सफलता पओने छथि। सफलतापूर्वक सम्पादकीय निबन्ध लिखबाक दृष्टिएँ प्रो. प्रबोधनारायणसिंह ओ श्री सुधांशुशेखरचौधरीक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि जे क्रमशः 'मिथिला-दर्शन ओ' 'मिहिर'मे लिखल। 'अभिव्यंजना', 'आखर'ओ 'अग्निपत्र'क सम्पादकीयमे साहित्यिक समस्या पर अपन-अपन विचारकेँ व्यक्त कएल प्रो. मायानन्दमिश्र, श्री कीर्तिनारायणमिश्र ओ श्री वीरेन्द्र मल्लिक। 'मिथिला' साप्ताहिकक सम्पादकीयमे सबसँ विलक्षण ओ मार्मिक निबन्ध लिखबाक हेतु डा. लक्ष्मणझा अत्यधिक प्रसिद्ध छथि। हिनक गद्यक वाक्य होइत अछि सहज सरल व्यासशैलीमे, अभिव्यक्ति होइत अछि निर्भीकता लेने। हिनक अन्यान्य निबन्ध सेहो प्रकाशित अछि जेना, 'भारतक रक्षा' 'वेद ओ ब्राह्मण' प्रभृति। मुदा हिनक ओएह निबन्ध सर्वाधिक मार्मिक होइत अछि, जाहि मध्य ओ समसामयिक देश वा समाज सम्बन्धी समस्या पर लिखैत छथि। वस्तुतः हिनक निबन्ध-रचना भुवनजीक गद्य-रचनाक अनुसरण करैत बूझि पड़ैत अछि।

भाषणक रुपमे सेहो निबन्धक रचना होइत रहल अछि। मुदा एहि प्रकारक रचना अपेक्षाकृत अधिक दीर्घ भए गेल अछि तथा निबन्ध नहि रहि प्रवचनक कोटिक वस्तु अधिक भए गेल् अछि, एना ओहिमे निबन्धक तत्व यत्किंचित् रहिते अछि। जाहि भाषणमे शास्त्रीय विवेचन प्रधान भए गेल अछि, ताहि मध्य निबंधक तत्व नहि रहल अछि ओ तैँ से समालोचना तथा अनुशीलन प्रकारक वस्तुमे परिणत भए गेल अछि। एहि श्रेणीमे डा. उमेशमिश्रक मैथिली-साहित्य-परिषद्मे आलोचना-विभागक अध्यक्षक रुपमे देल भाषण अबैत अछि। तथापि आरम्भेसँ दरभंगाक म. कामेश्वरसिंह, रामभद्रझा, कुमार गंगानन्दसिंह, प्रमथनाथमिश्र, भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', जीवनाथराय, जयानन्दकुमर तथा पश्चात् कतेक नव-पुरान साहित्य-सेवीलोकनिक भाषणसभमे निबन्धक कतोक तत्व नीक जकाँ समाविष्ट भेल भेटैत अछि। एहि मध्य भुवनजी ओ कुमार गंगानन्दसिंहक भाषणमे प्रगतिशीलताक विन्यास भेटैत अछि कारण, दुनू गोटा नवयुवक-आन्दोलनक प्रतिनिधित्व

कएने छलाह। महाराजाधिराज तथा हुनक अनुवर्त्ती राजपण्डित बलदेवमिश्रक भाषणमे प्राचीन धर्म ओ संस्कृतिक पक्ष लेबाक प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट अछि।

वार्त्ताशैलीमे रचित ओ 'मोद'मे प्रकाशित चन्दशेखरझाक 'मिथिला-सुमति-समागम' निबन्ध प्रसिद्ध अछि, जाहि मध्य ओ सामाजिक दोष-परिहार करबाक निमित्त ओही दोषसभ दिसि रोचक रीतिएँ ध्यान आकृष्ट कराओल। हिनक निबन्धक प्रधान विषय थिक कन्याविक्रय, वृद्धविवाह आदि। एकर विपरीत केदारनाथझा नवीन ओ प्राचीनक गुण-दोष तथा हानि-लाभ पर अपन विचार व्यक्त कएने छथि। एही दृष्टिएँ हिनक 'प्राचीन आ अर्वाचीन संवाद'क चर्चा कएल जा सकैत अछि। वार्त्ता-शैलीमे रचित निबन्धक दृष्टिएँ प्रो. श्री अमृतधारी सिंहक 'घुटरबबाक जाल' (1976) सेहो एतए विशेष रुपसँ उल्लेखनीय थिक। प्रो. हरिमोहन झा अपन 'खट्टरककाक तरंग'मे खट्टरककाक काल्पनिक पात्र द्वारा दुर्गा, गीता, महाभारत, रामायण, वेद प्रभृतिक हास्य-मूलक आलोचना कएने छलाह, ताहि लए मैथिलीमे पर्याप्त विवाद चलल छल। एही प्रक्रियाने प्रो. सिंह 'घुटर-बबाक जाल' पुस्तकाकार प्रकाशित कएल। खट्टरकका जकाँ घुटरबबा सेहो काल्पनिक पात्र थिकाह जे खट्टरककाक आलोचनाकेँ तर्कपूर्ण शैलीमे विचार-पूर्वक खण्डन करैत छथि। 'घुटरबबाक जाल'सँ तात्पर्य ई जे खट्टरकका भांगक तरंगमे रामायण, महाभारत, गीता, वेद आदिकेँ भसिआए देलैन्हि, तकरा घुटरबबा अपन तर्कक जालसँ उद्धार कएलैन्हि। एहि मध्य रोचक शैलीमे अपन विचारक स्थापना प्रो. श्री अमृतधारी सिंह कएल अछि, अतः एकरा वार्त्ता-शैलीक श्रेष्ठ निबन्ध-रचना सएह कहल जाए सकैत अछि। जीवनाथराय अपन 'देशदशा'मे तात्कालिक समाजक यथावत् चित्र अंकित करबाक चेष्टा कएने छथि। एही ठाम बाबू क्षेमधारी सिंहक निबन्धक सेहो चर्चा कएल जाएत जे हरिनन्दनसिंह-ट्रस्ट-द्वारा 'निबन्ध-चन्द्रिका'क नामसँ छपल। एहिमे लेखकक चिन्तनशील दार्शनिक व्यक्तित्व नीक जकाँ प्रतिविम्बित अछि।

वस्तुतः आरम्भेसँ निबन्धक विषयक रहल समसामयिक समस्या। मैथिली महासभाक नवसूत्रीय कार्यक्रम स्थिर भेलासँ, पश्चात् सब लेखक ओहि-ओहि विषय पर निबन्ध लिखल। एही दृष्टिएँ सोनेलालक 'मिथिलाविलाप', धनुषधारीलालदासक 'जातीयसभाक श्राद्ध' एवं दुःखमोचनझाक 'मिथिलाक दशा'क चर्चा कएल जाए सकैत अछि। युवकलोकनिकेँ समाजक समस्या दिसि जाग्रत करबामे भोलालालदासक 'मिथिला'मे प्रकाशित निबन्ध सेहो बड़ योगदान देलक। अन्यान्य कतोक निबन्धकार अपन-अपन रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित करबाओल, जाहिमे ओएह महासभाक नवसूत्रीय कार्यक्रम - राजभक्ति, सदाचार, विद्याचार, कृषिवाणिज्योन्नति, स्वर्णविरोधपरिहार, विवाहादि सामाजिक दोष-निवारण, मितव्यय, शारीरिक उन्नति, मैथिलीक स्वत्वरक्षा एवं मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हितसाधन विषय भेल।

मुदा आगाँ अन्य विषयक अपेक्षा मैथिलीभाषा-साहित्योन्नति निबन्धक मुख्य विषय भेल। एहि विषय पर लिखनिहारलोकनिक आरम्भेसँ यदि गणना कएल जाए तँ एहि श्रेणीमे म. म. मुरलीधरझा, प. त्रिलोचनझा, महावैय्याकरण दीनबन्धुझा, गंगापतिसिंह, डा. उमेशमिश्र, भोलालालदास, भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', शशिनाथ चौधरी, श्री नरेन्द्रनाथदास, प्रो. रमानाथझा, लक्ष्मीपतिसिंह, अध्यापक सूर्यनारायणसिंह, प. जीवनाथझा, श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन', श्री बच्चाठाकुर, डा. जयकान्तमिश्र, प्रो. प्रबोधनारायणसिंह, श्री बाबूसाहेब चौधरी, श्री अमरजी, डा. सुधाकान्तमिश्र आदि अनेकानेक लेखकलोकनिक गणना कएल जा सकैत अछि। ई लेखकलोकनि मैथिली भाषा ओ साहित्यक उन्नतिक विभिन्न समस्या दिसि ध्यान आकृष्ट कएल ओ ताहि हेतु रचनात्मक कार्यक संग-संग राजनीतिक आन्दोलन ओ संघर्षो करबाक प्रेरणा देल, संगहिँ तरुण लेखक ओ साहित्यसेवीकेँ साहित्यरचना दिसि सेहो प्रोत्साहित कएल।

परन्तु वास्तविक अर्थमे निबन्ध-रचनाक आरम्भ कएल ज्यो. बलदेवमिश्र, जे मृत्युपर्यन्त बराबरि किछु-ने-किछु लिखिते रहलाह ओ जनिक निबन्धमे वैयक्तिक संहितिक दर्शन होइत अछि। ई विभिन्न विषय पर निबन्ध लिखलः (यथा, 'विद्या', 'ब्राह्मण', 'विचार करब उचित'), मुदा हुनक ओएह निबन्ध श्रेष्ठ कोटिक थिक, जाहिमे ओ कोनो नैतिक गुणक उपदेश दैत छथि। हिनक एहने निबन्धसभक संग्रह थिक 'शिशु-शिक्षा', 'रामायणशिक्षा', 'गप्पसप्पविवेक', 'समाज' प्रभृत्ति। ज्यो. बलदेवमिश्रक संग-संग डा. उमेशमिश्रक सेहो नामोल्लेख कएल जाएत जे गम्भीर साहित्यिक ओ शास्त्रीय आलोचनात्मक प्रबन्धलेखनक अतिरिक्त 1917 हिसँ मनोरंजक निबन्ध लिखए लगलाहः यथा 'चोरिविद्या', 'शास्त्रार्थ-परिपाटी', 'कर्त्तव्य' प्रभृति निबन्ध। ई निबन्धसभ तर्कपूर्ण ओ व्याख्यात्मक शैलीमे लिखल तथा संक्षिप्तता एवं विचारक उदात्तता एहि निबन्धसभक प्रधान गुण थिक। परन्तु हिनक उत्कृष्ट निबन्ध ओएह थिक जाहि मध्य देशदशा वा प्रकृति अथवा मानसिक गुणक वर्णन कएल गेल अछिः यथा 'देशदशा', 'प्रभातवर्णन', 'आनन्द की थिक' ? आदि निबन्ध। एहि प्रकारक निबन्धमे हुनक रचनात्मक प्रतिभाक नीक जकाँ दिग्दर्शन होइत अछि। हिनक निबन्धशैलीक महत्व ओ वैशिष्ट्यक प्रसंग डा. जयकान्तमिश्रक निम्न लिखित मान्यता सर्वथा समीचीन थिक-- "He is happy in building up long sentences rolling with copious details, homely and Philosophical in the same breath, diffuse and concrete elevated and grand eloquent......Rarely does he realise the importance of Wit, irony or humour to relieve monotony."

डा. उमेशमिश्रक पश्चात् जीवछमिश्र (संग्रह-'अकुंर'), मनमोहनझा, मुरलीधरठाकुर, बुद्धिनाथझा प्रभृतिक नाम सफल निबन्धकारक रुपमे लेल जा सकैत

अछि। मुदा श्री भीमेश्वर सिहक 'धान', 'पुस्तकक महत्व' प्रभृति एवं कुलानन्द मिश्रक 'विवाह' प्रभृति प्रथम श्रेणीक वस्तुनिष्ठ निबन्ध थिक। 'विभूति'मे एहि प्रकारक अनेक उच्च कोटिक निबन्ध प्रकाशित भेल। 'मोद', 'मिहिर' ओ अन्यान्य पत्र-पत्रिकामे कुलानन्द नन्दन, श्री गिरिधरझा 'विकल', प. जीवनाथझा, श्री गोविन्दझा प्रभृतिक अनेक उच्च कोटिक निबन्ध प्रकाशित होइत रहल अछि। 1960 क पश्चात् 'मिहिर', 'वैदेही', 'मिथिला-दर्शन', 'अभिव्यंजना', 'अभियान', 'मिथिला' साप्ताहिक, 'आखर', 'अग्निपत्र' आदिमे अनेक नव-नव निबन्धकारक उदय होइत रहल अछि तथा साहित्यक ई विद्या अधिकाधिक समृद्ध भए रहल अछि।

1948 ई.मे 'स्वदेश' मासिकक प्रकाशनक पश्चात् विविध विषय पर निबन्धक प्रकाशनक जे प्रक्रिया आरम्भ भेल, से पटनासँ 'मिहिर'क प्रकाशनक पश्चात् अत्यन्त गतिशील भए गेल। सबसँ अधिक रचना भेल राजनीतिक निबन्धक; कारण, आर्थिक-राजनीतिक निबन्धमे समसामयिकता ओ लेखकक वैयक्तिक दृष्टिकोण नीक जकाँ स्फुट होइत छैक। एही दृष्टिएँ प्रो. दिवाकरझा ('आधुनिकता', 'परिवर्तिनी ससार'), शशिनाथ चौधरी ('भारतीय समाजक प्राचीन रूप'), डा. लक्ष्मीनारायणसिंह ('मिथिलाक उन्नति', 'देशक न्यायप्रणाली'), श्री भाग्यनारायणझा ('लोकतन्त्र-व्यवस्थाक प्राण'), श्री गुलाब झा ('राज्य ओ समाज'), श्री गोविन्दमाधवझा ('द्वितीय पंचवर्षीय योजना'), श्री श्रीनाथठाकुर ('भौतिक युगमे गान्धीवाद'), प्रो. योगेशचन्द्रमिश्र ('बिहार सरकारक नवीन बजट'), डा. दिनेशकुमारझा ('भारतीय जनता आ स्वार्थक राजनीति'), श्री गौतम चौधरी ('वर्तमान खाद्य-समस्या'), श्री नरेन्द्रझा ('सहरसाजिलाक आर्थिक विकास'), श्री लोकनाथ सरस्वती ('स्वाधीन भारतः पराधीन मिथिला'), श्री कुमुदनाथ झा ('विश्वशान्ति ओ लालचीन') अदिक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक तथा पुरातत्वसम्बन्धी निबन्धकारमे उल्लेखनीय छथि श्री परमानन्दशास्त्री ('सांस्कृतिक पर्वः सरस्वतीपूजा'), प्रो. राधाकृष्ण चौधरी ('विराट मानवः विराट विश्व', 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'), डा. विजयकान्त मिश्र ('अजन्ताक भित्ति-चित्र'), प्रो. दामोदरझा ('संस्कृतिक पुनरुत्थान'), प. राजेश्वरझा ('प्राचीन साहित्यमे मिथिला'), श्री राजकुमारमिश्र ('संस्कृति ओ प्रकृति'), श्री जगदीशप्रसाद यादव ('राजगिरिक सांस्कृतिक महत्व ओ प्राकृतिक सुषमा'), प्रो. चन्द्रकान्तझा ('शक्ति ओ आदर्श'), श्री गेनालाल यादव ('भारतीय संस्कृतिक प्रभाव-क्षेत्र'), श्री गणेशविहारी शर्मा ('भारतवर्षक संक्षिप्त अतीत'), श्री माखनझा ('मोहन-जो-दाड़ो आ हड़प्पा सभ्यता'), श्री सहदेवझा ('कर्णाटवंशक राजधानी अन्हराठाढ़ी'), श्री प्रफल्ल कुमार 'मौन' ('लोक-संस्कृतिक खोजमे'), डा. लोकनाथमिश्र ('मिथिलाक गीतिमय संस्कृति'), श्री सीतारामझा 'श्याम' ('संस्कृति एवं ओकर सामाजिक महत्व'), डा. रमानन्दझा ('मिथिलामे 1857क विद्रोह'), श्री बुद्धिनाथमिश्र ('भारतीय संस्कृतिक प्रतीक भगवान् शंकर'), श्री

सुखदेवमण्डल ('मैथिल संस्कृतिक स्वरूप'), डा. अमरनाथझा ('मिथिलामे पान') प्रभृति। मिथिलाक परम्परागत संस्कृतिक वैशिष्ट्य-प्रतिपादन एव तकर पुनर्निर्माणक उद्बोधनसँ युक्त डा. आदित्यनाथझा ओ प्रो. अमृतधारी सिंहक संयुक्त लघुनिबन्धसंग्रह **'मैथिल जीवन-पद्धतिक पुनर्निर्माण'**क सेहो एतए उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। कला ओ शिल्पक प्रसंग प्रधान निबन्धकार भेलाह श्री जनार्दनकरदास ('मिथिलाक गौरवपूर्ण हस्त-शिल्पक'), श्री मोदपतिसिंह ('ललित कलामे संगीतक स्थान'), श्री लक्ष्मीठाकुर ('मिथिलाक लोक-कला'), उपेन्द्र महारथी ('मिथिलाक लोकचित्र'), श्री फूलदेवठाकुर ('पतनोन्मुख भारतीयसंगीत') आदि। पट्शास्त्री श्री वासुदेवठाकुर ज्योतिषक विभिन्न पक्षक उपयोगिताकेँ देखबैत अनेक निबन्ध लिखल; यथा, 'एकादशीसँ मलेरिया निरोध', 'ज्योतिषसँ सन्तान-निरोध' प्रभृति। प्राचार्य परमाकान्त चौधरी ('विज्ञानक आरम्भ'), प्रो. उपेन्द्रझा ('सौरमंडल'), प्रो. मदन चौधरी ('भूलोक पर विजय'), डा. गणपतिमिश्र ('वस्त्रधारणक सिद्धान्त'), डा. अमरनाथमिश्र ('सर्पदंशक उपचार'), श्री गंगानन्द (निबन्ध-संग्रह 'विज्ञानवार्ता'), कुलानन्द 'नन्दन' ('चन्द्रतल पर मानव-चरण'), श्री शम्भुनाथ ('प्राचीन भारतमे विज्ञान'), श्री कामदेव श्रीवास्तव ('सूर्यक चौकीदार बुध'), श्री धीरेन्द्रनारायणसिंह ('रसायन-शास्त्रक इतिहास'), श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी ('प्राचीन भारतमे गणित'), एकाननमिश्र ('मानव-विकासमे विज्ञान') आदि अनेक निबन्धकारक ध्यान वैज्ञानिक विषय दिसि गेल अछि। एहीप्रकारेँ कृषि-सम्बन्धी विविध विषय पर सर्वश्री अमरनाथझा, बोधनारायण कुमर, दीनबन्धुमिश्र, जीवनारायणझा, तेजनारायणझा, बलदेवमिश्र प्रभृति, वैद्यक-स्वास्थ्य विषय पर सर्वश्री रामेश्वर चौधरी, डा. मदनचौधरी, गणपतिमिश्र; जयनारायणगिरि, इन्द्रमोहन, शारदादत्तझा, जीवेन्द्र प्रभृतिक तथा मनोविज्ञानक विविध पक्ष लए श्री सूर्यनारायण चौधरीक अनेक निबन्ध प्रकाशित भेल। लोकसाहित्य ओ संस्कृति-सम्बन्धी निबन्धकारमे अग्रगण्य छथि ब्रजकिशोरवर्मा, अग्निसर, कमलनारायणझा 'कमलेश', राजेश्वरझा, दिनेश्वरलाल 'आनन्द', डा. विश्वेश्वरमिश्र, रामदेवझा, प्रो. डा. प्रफुल्ल कुमार 'मौन' प्रभृति। नारीगणक हेतु उपयोगी निबन्ध-रचनामे अनेक नारी-निबन्धकार अपन-अपन योगदान देने छथि, जाहि मध्य श्रीमती आद्याझा, विमला झा, गंगाबाइ, आशारानी, चित्रलेखाझा आदि किछु विदुषीक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। मुदा लेखिकालोकनिक संख्या अछि अनेक, जनिक निबन्ध साप्ताहिक 'मिहिर'क नारी-स्तम्भमे बहराइत रहैत छल। नारी-उपयोगी निबन्ध लिखबामे जे पुरुष लेखक-लोकनि अपन-अपन योगदान देने छथि, ताहिमे शशिनाथ चौधरी ('कन्याक कौमार्य'), प्रो. हरिमोहनझा ('स्त्री-शिक्षाक वर्तमान दशा'), डा. जयकान्तमिश्र ('शिक्षित स्त्रीगणक कर्तव्य'), तेजनाथझा ('नारी-शिक्षा') प्रभृति निबन्धकारक चर्चा प्रधान रूपसँ कएल जा सकैत अछि।

मुदा एखन धरि मैथिलीक जाहि निबन्ध-साहित्यक विवेचना कएल गेल अछि, ताहि मध्य विचारात्मक निबन्धक सएह प्रधानता अछि। भावात्मक वा कल्पनिक अर्थात्

व्यक्तिनिष्ठ निबन्धक मैथिलीमे अपेक्षाकृत अभाव अछि। वस्तुतः मनोरंजनक दृष्टिएँ भावात्मक वा वैयक्तिक विचारसँ युक्त निबन्धक सएह चर्चा होएबाक चाही। एहि प्रकारक मैथिलीक निबन्ध अपवादेक कोटिमे आओत। तथापि मैथिलीमे संख्यामे अत्यन्त अल्प जे वैयक्ति निबन्ध अछि, से अछि धरि अत्युच्च कोटिक। सर्वप्रथम एहि रीतिक निबन्धक रचना कएल प्रो. तन्त्रनाथझा। हिनक 'अणाचीक दाना' ओ 'हमर ठेंडर' निबन्ध एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय थिक। प्रो. झाक पश्चात् प्रो. श्री कृष्णमिश्रक नाम आओत, जनिक 'जीवन' शीर्षक निबन्ध प्रकाशित अछि। 1960 ई.क पश्चात् 'मिहिर'क अंकसभमे कहिओ कदाच व्यक्तिनिष्ठ, भावात्मक वा ललित-निबन्ध प्रकाशित होइत रहल अछि, जाहि मध्य प्रो. उमानाथझाक 'रुनझुन-रुनझुन', प्रो भक्तिनाथसिंहठाकुरक 'सौन्दर्यावलोकन', डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क 'धान कटि गेल', 'वसंत आबि-गेल' प्रभृति, प्रो. धीरेन्द्रक 'कुकूर', प्रो. सदनमिश्रक 'भिखमंगाक बाढ़ि : आब हम की करी', श्री मार्कण्डेय 'प्रवासी'क 'देखलहुँ हे राजनीति तोहरो हम', श्री ताराकांत प्रकाशक 'कथा पर कथा', श्री भीमनाथझाक 'आश्चर्य मुदा किएक', रमेशनारायणक 'पजेवा पर पजेबा', श्री भोलनाथझाक 'दोहन-पुराण', श्री हितनारायणझाक 'भ्रम' आदिक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। डा. शैलेन्द्रमोहनझाक एहने निबंधक संग्रह 'पथ हेरथि राधा' पुस्तकाकार प्रकाशित भए चुकल अछि। एमहर मैथिली अकादमी, पटनासँ श्री मन्त्रेश्वरझाक एकटा विलक्षण व्यक्तिनिष्ठ निबंन्धक संग्रह 'ओझा लेखेँ गाम बताह' प्रकाशित भेल अछि। एहि प्रकारक निबन्धकार मध्य प्रो. तन्त्रनाथझाक निबन्धमे हास्य-व्यंग्यक एतेक सन्तुलित नियोजन भेल अछि जे अन्यत्र दुर्लभ अछि तथा कहबाक रीतिमे जे अनौपचारिकता अछि, से एकरा उत्कृष्ट कोटिक व्यक्तिनिष्ठ निबन्धक आसन पर प्रतिष्ठित कए दैत छैक। श्री श्रीकृष्णमिश्रक निबन्धमे भावात्मकता, संग-संग भावाभिव्यक्तिमे अलंकरणक प्रवृत्ति अछि तँ श्री उमानाथझाक निबन्धमे भावानाक अन्तर्मुखी निक्षेपक प्राधान्य। शेप व्यक्तिनिष्ठ निबन्धमे हास्य-व्यंग्यपूर्ण वैयक्तिक भावनाक निरुपण दिसि अधिक अभिरुचि बुझि पड़ैत अछि। धीरेन्द्रमे प्रगतिशीलता प्रतीक रुप धारण कए लेने अछि। श्री मन्त्रेश्वरक निबन्धमे मार्मिक हास्य-व्यंग्यक संग कथात्मक रोचकताक अद्भुत समन्वय भेल अछि। वस्तुतः निबन्धक ई प्रभेद आबहु उपेक्षिते अछि।

1974 ई.मे डा. सुभद्रझाक चारि गोट निबन्ध 'मिहिर'मे प्रकाशित भेल- 'हे विद्यापति मार्गदर्शक'!, 'साहित्य ककरा कही'?, 'देशक संकट' एवं 'किएक ई क्रान्ति'? तहिआसँ एहि प्रकारक निबन्ध ओ बराबरि 'मिहिर'मे प्रकाशित करबाओल। एहि मध्य डा. झा पत्रात्मक निवन्ध-शैलीक अभिनद प्रयोग कएने छथि। विपय विचारात्मक होइतहुँ एहि मध्य निबन्धकारक वैयक्तिक, रुचि-अरुचि अत्यन्त स्फुट भए अंकित भेल अछि। भावात्मक विक्षेपपूर्ण शैली एवं अभिव्यक्तिक व्यंग्य-वक्रता एहि रीतिक निबंधक प्रमुख विशेपता थिक, जाहि मध्य अनौपचारिक भाव-विन्यास एवं रोचक प्रतिपादनक एहन सन्तुलित समन्वय भेल अछि जे मैथिलीक निबंध-साहित्य-क्षेत्रमे

अभिनव कहल जाए सकैत अछि। हिनक एही प्रकारक निबन्धक सग्रह 'नातिक पत्रक उत्तर' प्रकाशित भए 1986 ई.मे साहित्य-अकादेमी-द्वारा पुरस्कृत भेल। गम्भीर मुद्राक त्याग, अनौपचारिक सहजता, विचारक रोचक प्रेपणीयता ओ पाठकक संग निकट सौजन्य स्थापित करैत तथा भाषा-शैलीक गतिशीलताक संग उत्कृष्ट निबंधक उदाहरण प्रस्तुत करैत श्री दीनानाथझाक 'गपाध्याय' ओ श्री दमनकान्तझाक 'गपाष्टक' निबंध-संग्रह सेहो प्रकाशित भेल, जे निबंध-साहित्यक नव उपलब्धि कहल जाए सकैत अछि।

मैथिली निबंधमे सर्वाधिक मनोरंजक भेल हास्यपूर्ण निबंध। एही दृष्टिएँ सर्वाधिक महत्वक कार्य कएल प्रो. हरिमोहनझा आओर हिनक 'खट्टर ककाक तरंग' वास्तविक अर्थमे निबंध थिक, जे वार्त्ता-शैलीमे विशुद्ध मनोरंजनकेँ ध्यानमे राखि लिखल गेलैक अछि। 'खट्टर ककाक तरंग'क अतिरिक्त हिनक अन्य निबंध थिक 'चौधरीजीक चिट्ठी' 'भोलाबाबाक गप्प', 'विद्यार्थीजी', 'मनहूसलालदास', 'कृपणाचार्य' आदि। हिनक एहि प्रकार निबंध निबंध होइतहु कथा थिक आ कथा होइतहु निबध थिक। ओ धार्मिक आचार, निष्ठा\प्रभृतिकेँ जाहि रीतिएँ विकृत कएल, से 'अति'सँ पीड़ित तँ अवश्य अछि, मुदा एहि 'अति'क निष्पादनहिमे हुनक सफलता निहित अछि। हिनक एहि प्रकारक निबंधक विपय अछि 'दुर्गापाठ', 'सत्यनारायणक कथा', 'देवताक चरित्र', 'पौराणिक आदर्श', 'माछक शास्त्रार्थ', 'दही-चूड़ा-चीनी' आदि। हिनक एहि प्रकारक रचना मैथिलीटामे नहि, अन्य-अन्य भाषा-साहित्यहुमे अनूदित भए लोकप्रिय ओ समादृत भेल। श्री अमरनाथझा (शुभंकर पुर ड्योढ़ी)क 'ऋतुराज वसन्त संन्यासी भए गेलाह' व्यग्यक रोचक प्रयोगक दृष्टिएँ एतए उल्लेखनीय थिक। प्रतीकक नव रीतिक प्रयोगक दृष्टिएँ श्री विश्वनाथझाक 'पीपरक गाछ'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। मैथिलीमे हास्यरसक अधिकांश रचना छद्म-नामसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हास्य-व्यंग्यस्तम्भक अंतर्गत प्रकाशित भेल। 'विभूति' एहि हेतु प्रसिद्ध छल। 'मिहिर'मे सेहो एहि प्रकारक एक गोट स्तम्भ निर्धारित छल ओ पत्र-शैलीमे धारावाहिक समसामयिक समस्या पर हास्य-व्यंग्यपूर्ण निबंध बराबरि प्रकाशित होइत रहल। अमरजी एहि प्रकारक रचनाक हेतु प्रसिद्ध छथि। एही दृष्टिएँ डा. जयकान्तमिश्र स्व. ईशनाथझाक हास्य-रेखाचित्र 'तताइझा' ओ 'धरकटझाक नोसिदानी'क चर्चा कएने छथि। बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक 'परिचयावली'क सेहो एहि प्रसंगमे चर्चा कएल जा सकैत अछि।

मैथिलीमे शब्द-चित्रात्मक निबन्धक बड़ अभाव अछि, परन्तु श्री अमरनाथझा एहि क्षेत्रमे सफल प्रयोग कए अपन रोचक शब्दचित्रसबहिक दुइटा सग्रह 'शब्दचित्र' (1977)आ 'भालरि'क नामसँ प्रकाशित कएल अछि।

एहि ठाम निबंध-साहित्यक अत्यन्त संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत कएल गेल अछि

कारण, मैथिलीमे नहि तँ निबन्धक रचना कम भेल अछि आ'ने निबन्धकारे कम भेलाह अछि।

आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, साक्षात्कार ओ परिचर्या :- एहि विषय पर बड़ कम साहित्यक निर्माण मैथिलीमे भेल अछि। आत्मकथा महाकवि लालदास लिखने छलाह, जकर किछु अंश मात्र 'मिहिर'मे एमहर प्रकाशित भए सकल अछि। भुवनजी विभूति'मे अपन आत्मकथा प्रकाशित करबाक सूचना प्रकाशित कएने छलाह, मुदा प्रायः लिखि नहि सकलाह। म. म. डा. गंगानाथ झा एकटा अपन आत्मकथात्मक टिप्पणी अंगरेजीमे लिखने छलाह जकर मैथिली अनुवाद श्री सुशीला झा कए प्रकाशित कएल। प्रो. हरिमोहनझाक **'जीवन-यात्रा'** हुनक मृत्युक अनन्तर 1984 ई.मे प्रकाशित भेल तथा 1985 ई.मे 'साहित्य-अकादेमी'द्वारा पुरस्कृतो भेल। एहिसँ साहित्यिक ई विधा समृद्ध भेल। एहिसँ पूर्व बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक लघु-आत्मकथा **'अतीतक स्मृति-पटल'** एवं मधुपजीक काव्यात्मक **'प्रेरणापुंज'** सेहो प्रकाशित भेल छल। जीवनीक संख्या अपेक्षाकृत अधिक अवश्य अछि। आरम्भमे मिथिलाक गौरव विद्वान, सन्त आदिक, यथा, शंकरमिश्र, लक्ष्मीनाथगोसाँइ, पक्षधरमिश्र, पंडितराज जगन्नाथ, सीतादाइ/ प्रभृतिक जीवनकथाक रचना भेल। एहि प्रकारक रचनामे म.म. मुरलीधरझाक 'सुधाकर द्विवेदी', प. त्रिलोचनझाक 'अपन भ्राता हरिमोहनझा', अच्युतानन्ददत्तक 'बबुआखाँ', 'पीताम्बर तान्त्रिक', शकरदत्तझा', 'जीवनिका' (म. महेश्वर सिंह ओ 'म. म. मुरलीधरझा') प्रो. रमानाथझाक म. म. गंगानाथझा, म. म. बालकृष्णमिश्र एवं सत्यनारायणझा, भुवनजीक 'म. म. मुकुन्द झा बख्शी'क जीवनी विशेष प्रसिद्ध अछि। एहि सभ जीवनीमे संक्षिप्त रीतिएँ चरित्रनायकक चरित्र ओ सेवाक उल्लेख कएल गेलैक अछि, से रोचक ओ कथात्मक शैलीमे। एहि क्षेत्रमे पश्चात् जे लेखक कार्य कएल, ताहि मध्य प्रो. भक्तिनाथसिंह ठाकुरक 'म. म. धर्मधुरीण श्री कृष्णठाकुर', जनार्दनशर्माक 'दर्शनदासः एक जीवनी', कामदेवझाक 'दीनबंधुझा : एक जीवनी' ओ 'डा. अमरनाथझा', गोकुलनाथक 'मैथिली विभूति', डा. ललितेश्वरझाक 'रोहिणीदत्त गोसाँइ', श्री सहदेवझाक 'अयाचीमिश्र' ओ 'म. म. गोविन्दठाकुर', डा. दिनेशकुमारझाक 'अमरयोद्धा कुँवरसिंह', डा. उमारमणझाक 'म. म. केशवमिश्र', श्री रमानन्द 'रमण' क 'व्याख्यानवाचस्पतिश्यामानन्दझा', डा. इन्द्रकान्तझाक 'म. लक्ष्मीश्वरसिंह', श्री भूतिनाथझाक 'मण्डनमिश्र', प्रो. वेदनाथझाक 'विद्यावाचस्पति गंगानाथझा' ओ 'डा. अमरनाथझा', श्री नीतीश्वरसिंहक 'स्वर्गीय गंगापतिसिंह', श्री रमेशक 'महाकवि बाणभट्ट', प्राचार्य भोलानाथ झाक 'नवजागरणक अग्रदूत राजाराममोहनराय', श्रीमती तूलिकाझाक 'राजलक्ष्मी' (पुस्तक) प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछ। एहि श्रेणीक लेखकलोकनिक मध्य गंगापतिसिंह ओ श्री ताराकान्त प्रकाशक सेहो नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। मैथिली विद्वान ओ कविलोकनिक प्रामाणिक परिचय लिखबामे कवीश्वर चन्दाझा अग्रगण्य भेलाह जे पाँजिक आधार पर लिखल। एहि परम्पराक

परिचयात्मक टिप्पणी ओ मार्मिक अनुसंधानात्मक परिचय लिखबामे प्रो. रमानाथझाक नाम बड़ महत्वपूर्ण अछि। एमहर मैथिली अकादमी, पटनाक मिथिला-विभूति-ग्रन्थमालाक अन्तर्गत श्री अमरक **'म. म. मुरलीधरझा'** डा. अमरनाथझाक **'गोविन्ददास'**, डा. रामदेवझाक **'उमापति'**, डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क **'म. म. परमेश्वरझा'**, प्रो. राधाकृष्णचौधरीक **'लालदास'**, डा. शैलेन्द्रमोहनझाक **'ज्योतिरीश्वर'** प्रभृति अनेक पुस्तक प्रकाशित भेल। एहिना साहित्य-निर्माता-ग्रन्थ-मालाक अन्तर्गत साहित्य-अकादेमी-द्वारा प्रो. जयदेवमिश्रक **'कवीश्वर चन्दाझा'**, प. गोविन्दझाक **'उमेशमिश्र'**, डा. भीमनाथझाक **'सीतारामझा'**, डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क **'बदरीनाथझा'** आदि अनेक पुस्तक छपल। मैथिली अकादमी, पटना-द्वारा आयोजित दुइ गोट **'स्मृति-संध्या'**क आयोजन भेल ओ पठित निबन्धक दुइ गोट संग्रह प्रकाशित भेल। वस्तुतः एहि प्रकारक रचना केवल जीवन-चरित-साहित्यहिक दृष्टिएँ नहि, साहित्यालोचनाक दृष्टिएँ सेहो महत्वपूर्ण अछि।

संस्मरणक मैथिलीमे बड़ अभाव अछि, तथापि किछु-ने-किछु बराबरि लिखल जाए लागल अछि। एहि क्षेत्रमे सर्वप्रथक छेदीझा अपन जेल-जीवनक संस्मरण मिहिर'मे प्रकाशित करबाओल। तत्पश्चात् एहि क्षेत्रमे सबसँ अधिक कार्य कएल ज्यो बलदेवमिश्र, जे महापण्डित बच्चाझा, बबुआजीझा, डा. गंगानाथझा, म. म. मुरलीधरझा, म. म. परमेश्वरझा, प. जीवनझा, म. म. जयदेवमिश्र आदि प्रायः दुइ दर्जनसँ अधिक महान स्वर्गीय आत्माक संस्मरण लिखल तथा जे 1960क पश्चात् 'मिहिर'मे प्रकाशित भेल। एहि संस्मरणसभकेँ मैथिली साहित्यक अत्यधिक महत्वपूर्ण वस्तु कहल जा सकैत अछि। अन्य उत्कृष्ट संस्मरणकारमे डा. उमेशमिश्र ('सम्मेलनक संस्मरण'), पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र ('बिहारक कतोक शिक्षक'); श्री यात्री ('प्रवासीक संस्मरण'), श्री हरिनाथमिश्र ('गंगाधरमिश्रक स्मृतिमे'), ब्रजकिशोर वर्मा ('शिकारक संस्मरण', 'हुनकासँ भेँट भेल छल'लेखमाला'), आचार्य श्रीदिवाकर शास्त्री ('मिथिलाक आँगनक अमर दीप : भुवनजी'), अमरजी ('अश्रुतर्पण'), श्री मणिकांत ठाकुर ('नैहर छूटल जाय') आदिक नामेल्लेख कएल जा सकैत अछि। 1970 ई.क पश्चातक प्रकाशित किछु उल्लेखनीय संस्मरण-रचना थिक प्रो. हरिमोहनझाक स्व. प. जनार्दन झा 'जनसीदन', प. कुलानन्द झाक 'स्व. शशिनाथ चौधरी', डा. शिवाकान्त ठाकुरक 'वृत्ताकार आलोकमे हँसैत मोहनजी', श्री रामानुग्रहझाक 'प्रो. रमानाथझा', डा. रामदेवझाक 'बाबू भोलालालदास', प्रो. रमाकान्त मिश्रक 'मोन पड़ैत अछि बहुत रास बात', डा. वेदनाथझाक 'डा. अमरनाथझा', डा. भीमनाथझाक 'बाबू लक्ष्मीपतिसिंह', डा. उमारमणझाक 'महावैयाकरण खुद्दीझा' आदि। वस्तुतः संस्मरण जाहि शैलीमे लिखल जाइत अछि ताहिसँ ई वस्तु मनोरंजनक ओ ज्ञानवर्द्धनक दुनू कोटिमे राखल जा सकैत अछि। प्रो. रमानाथझा, कविशेखर बदरीनाथझा, प्रो. तन्त्रनाथ झा ओ प्रो. हरिमोहनझाक जीवनसँ सम्बद्ध उच्चकोटिक लेखकक द्वारा लिखित अनेक संस्मरणक प्रकाशन

हुनकालोकनिक अभिनन्दन-ग्रन्थमे भेलासँमैथिली साहित्यक ई क्षेत्र श्री-सम्पन्न भेल अछि। एही दृष्टिएँ **'दीनबन्धु-स्मृति-ग्रन्थ'** एवं **'मधुपः अमर कीर्ति कवि तोर'** स्मृति-ग्रन्थक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

आत्मकथा ओ संस्मरण दुहू तत्वक मिश्रणक दृष्टिएँ पं. गिरीन्द्रमोहन मिश्रक **'किछु देखल, किछु सुनल'** ग्रन्थ एतए विशेष रुपसँ उल्लेखनीय अछि। स्व. मिश्रजीक एहि ग्रन्थसँ गत-अर्द्धशताब्दीक मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक कतोक पक्षक प्रामाणिक परिचय प्राप्त होइत अछि। प्रांजल ओ प्रसादपूर्ण रोचक भाषा-शैली एहि ग्रन्थक विशेषता थिक। साहित्य अकादेमी द्वारा 1975 ई.मे पुरस्कृत भए ई ग्रन्थ मैथिली साहित्यमे अपन महत्वकेँ सिद्ध कए चुकल अछि। एहिना हंसराजजीक **'बिसरल बिसरल'** पुस्तिकामे संस्मरण ओ जीवन-परिचय दुहूक तत्व मिश्रित अछि तथा विषय-निबन्धनक रीति अछि कथात्मक, रोचक ओ प्रवाहपूर्ण। वस्तुतः एहि दुनू पुस्तकक प्रकाशनसँ एहि वर्गक मैथिली साहित्य समृद्ध भेल अछि।

मैथिलीमे साक्षात्कार-परिचर्याक अत्यन्त अभाव अछि। मुदा एहू क्षेत्र दिसि तरुण साहित्यकारलोकनिक आब ध्यान गेल अछि। श्री हंसराजक कार्य साक्षात्कार-परिचर्याक क्षेत्रमे सर्वाधिक महत्वक अछि। ओ 16-17 गोट मैथिली साहित्य-सेवी ओ महारथीक साक्षात्कार-परिचर्या लिखल अछि, जाहि मध्य कतोक 'मिहिर'मे प्रकाशित भए चुकल अछि ओ तकर एकटा संकलन **'ओ जे कहलनि'** नामसँ प्रकाशित भेल। एहि साक्षात्कार-परिचर्या मध्य मैथिली साहित्यक हेतु कएल गेल संघर्षक इतिवृत्तिकेँ प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेलैक अछि, संग-संग मैथिलीक विभिन्न समस्या पर आचार्य-विशेषक मन्तव्यकेँ सेहो प्रामाणिक रीतिएँ प्रस्तुत करबाक आयास भेल अछि। एहि परिचर्यासभकेँ हंसराजजी लिखल अछि रिपोर्ताज-कथाशैलीमे। मुदा थिक धरि ई साहित्यिक इतिहासक वस्तु, कारण, ओहि मध्य ओहि ओहि व्यक्तिक दृष्टि ओ युगबोधक परिचय भेटैत अछि। हंसराजक पश्चात् एहि क्षेत्रमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य कएल श्री विश्वनाथझा, जनिक अनेक परिचर्या 'मिहिर'मे प्रकाशित भेल। हंसराजजी ओ श्री विश्वनाथक अतिरिक्त डा. केदारनाथ लाभक 'डा. रामकुमार वर्मा : एक साक्षात्कार', डा. प्रेमशंकरसिंहक 'डा. सुनीतिकुमार चटर्जीक संग किछु क्षण' ओ 'प्रभाकरमाचवे ओ मैथिली', श्री शिव शंकर श्रीनिवासक 'अनौपचारिक साहित्य-वार्त्ता', ब्रजकिशोर वर्माक 'हुनकासँ भेँट भेल छल' लेखमालाक कतोक लेख, श्री पूर्णन्दुचौधरीक 'प्रो. हरिमोहन झा' एवं श्री गोविन्दझाक संग 'साक्षात्कार-परिचर्या', श्री सीतारामशर्माक 'बाबा'(श्रीयात्री)क संग-एक साँझा, श्री तारानन्द वियोगीक 'नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवृत्ति' आदि सेहो प्रकाशित अछि। एहि क्षेत्रमे आबहु अधिकाधिक कार्य करबाक आवश्यकता अछि।

अध्ययन, अनुशीलन, आलोचना ओ अनुसन्धान- मैथिली साहित्यक प्रसंग अनुसन्धान-अनुशीलनक आरम्भ कएनिहार अंगरेजी ओ बंगलाक विद्वान छथि। मिथिलाक विद्वान मैथिलीमे तँ बड़ पश्चात् एहि प्रसंग कार्यमे प्रवृत्त भेलाह। मैथिली भाषाक स्वरुपक अध्ययन कएल सर्वप्रथम अंगरेजी विद्वानलोकनि-कोलब्रूक (1801), मार्टिन (1840), कैम्पवेल (1874), फैलेन (1875), बीम्स (1878), ग्रियरसन (1880) ओ कैलोंग (1893)। एहि मध्य ग्रियरसन मैथिलीक अनुशीलन-कार्यक हेतु आलोकपुंज भए प्रकट भेलाह तथा मैथिली साहित्यक अध्ययन-अनुशीलनक दिशा-निर्देश कएल। हिनक मैथिलीक प्रसंग प्रकाशन अछि- *Maithili Grammar, Maithili Chrestomathy, Twentyone Vaishnav hymns, Umapati's Parijatharan, Gitdinabhadrika and Nevarak* तथा Manbodh's Krishnajanm. एहि प्रकार ओ प्रचुर मात्रामे प्राचीन-अर्वाचीन साहित्यिक अनुसन्धान-अनुशीलनक पथ-प्रदर्शन कएल तथा भाषाक स्थान-निरुपण सेहो कएल। बंगलाक पिद्वानमे मैथिलीक प्रसग महत्वपूर्ण कार्य कएल नगेन्द्रनाथ गुप्त, म. म. हरप्रसाद शास्त्री, डा. प्रबोधचन्द्र बागची, डा. सुकुमारसेन तथा डा. सुनीति कुमार चटर्जी आदि। नगेन्द्रनाथगुप्त सर्वप्रथम मिथिलाक गाम-गाममे घूमि विद्यापतिक पदक संकलन कएल। एहि अभियानक क्रममे गोविन्ददासक पदावली सेहो प्राप्त भेल। म. म. हरप्रसादशास्त्री **'वर्णरत्नाकर'** ओ **'बौद्ध-गान ओ दोहाक'**क अन्वेषण कएल। प्रबोधचन्द्र बागची नेपालक मैथिली नाटकक अनुसन्धान कए ओहिमेसँ किछुकेँ नेपालीय भाषा नाटक (Nepaler Bhasha Natak)क नामसँ प्रकाशित करबाओल। म. म. हरप्रसादशास्त्री द्वारा लिखित 'कीर्तिलता'क भूमिका बड़ शोधपूर्ण भेल। डा. सुकुमारसेनक **'विद्यापति-गोष्ठी'** तथा History of Brujbuli literature ओ History of Bengali literature प्रसिद्ध अछि, जाहिसँ मैथिलीक महत्व प्रसिद्ध भेल तथा मैथिलीक अध्येता प्रेरणा ओ ज्ञान लाभ कएल। विद्यापतिक प्रसग नगेन्द्रनाथगुप्त ओ विमानविहारी मजुमदारक कार्य सेहो उल्लेखनीय थिक। 'अंकियानाट'क प्रसंग आसामीक प्रसिद्ध विद्वान बिरिंचिकुमार बरुआक कार्यकेँ बिसरल नहि जाए सकैछ।

मैथिलीमे साहित्यानुसन्धान ओ आलोचनाक श्रीगणेश कएल कवीश्वर चन्दाझा, जनिक लोचनक 'रागतरंगिणी', 'विद्यापतिक पदावली' ओ गोविन्ददासक 'कृष्णकेलिलीला' आदि कार्य प्रसिद्ध अछि। हिनक साहेबरामदासक पदावलीक संकलन ओ तकर सारगर्भित भूमिका सेहो महत्वपूर्ण अछि। हिनक प्राचीन कविलोकनिक परिचयक प्रसंगक कार्य सेहो मैथिली साहित्यक अध्येताक हेतु बड़ मार्गप्रदर्शक भेल। इएह गुप्त ओ ग्रियरसनक हेतु अनुसंधानविषयक कार्य कएने छलाह।

चन्दाझाक पश्चात् मैथिलीमे साहित्यानुसन्धान ओ अध्ययनक परम्परा स्थापित रहल प्राचीन पुस्तकक प्रकाशन ओ तकर भूमिकालेखन द्वारा। एहि क्षेत्रमे चेतनाथझा

(पारिजातहरणक भूमिका), डा. गंगानाथझा ओ डा. अमरनाथझा (चन्दाझाक 'महेशवाणी-संग्रह', '**हर्षनाथग्रन्थावली**', '**गणनाथझा ओ विन्ध्यनाथझा-ग्रन्थावली**' आदिक भूमिका), डा. उमेश मिश्र ('**कृष्णजन्म**'क भूमिका) आदिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि परम्परामे आगाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य कएल प्रो. रमानाथझा ओ सुमनजी।

मैथिली साहित्यक गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करबाक दृष्टिएँ कुमार गंगानन्दसिंह, बाबूगंगापतिसिंह, ओ डा. उमेशमिश्रक नाम अग्रगण्य अछि। कुमार साहेब नेपालक मैथिली नाटकक भाषा ओ वस्तु-विषयक अध्ययन कएल तँ बाबूगंगापतिसिंह कुमार साहेबक सहयोगसँ मैथिलीक प्राचीन ओ अर्वाचीन सामग्रीक क्रमबद्ध रीतिएँ तीन भागमे संकलन कएल, मुदा से प्रकाशित नहि भए सकल। डा. मिश्रक 'कृष्णजन्म'क भूमिका 1934 ई. मे प्रकाशित भेल, जे हुनक गम्भीर अध्ययनकेँ सूचित करैत अछि।

1924-38 मध्य मुख्य कार्य भेल मैथिली भाषा-साहित्यक स्वतन्त्र अस्तित्व सिद्ध करबाक दिशामे। अतः एहन कार्य मुख्यतः भाषावैज्ञानिक ओ ऐतिहासिक भेल-फुटकर लेख वा भाषणक रुपमे। एहि क्षेत्रमे डा. गंगानाथझा, भोलालालदास, रामभद्रझा, डा. सुधाकरझा, कुमार गंगानन्दसिंह, डा. उमेश मिश्र, भुवनजी, रमानाथझा, पाछाँ महावैयाकरण दीनबन्धुझा, प. शिवनन्दन ठाकुर ओ सुभद्रझा सेहो एहि कार्यमे अपन-अपन बहुमूल्य योगदान देल।

मैथिली साहित्यानुशीलनमे आलोचकगण आधुनिकतम मान्यताकेँ ग्रहण कएल। मैथिलीक आलोचना-प्रणालीमे आरम्भेसँ भारतीय ओ पाश्चात्य-साहित्य-दृष्टिकेँ समन्वित करबाक चेष्टा भेलैक अछि। मैथिली साहित्यक प्रौढ़ आलोचकमे प्रो. रमानाथझा, पं. शिवनन्दन ठाकुर, पं. शशिनाथ चौधरी, जयो. बलदेवमिश्र, श्री नरेन्द्रनाथदास, बाबूलक्ष्मीपतिसिंह, प्रो. श्री कृष्णमिश्र प्रभृतिक नाम अग्रगण्य अछि, जे मैथिली साहित्यक एहि क्षेत्रकेँ समृद्ध करबामे बड़ योगदान दैत रहलाह। एही श्रेणीमे डा. जयकान्त मिश्रक नाम सेहो परिगणित होएत, जनिक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मैथिली साहित्यक आरम्भिक अध्ययनक हेतु मेरुदण्ड सिद्ध भेल छल।

आलोचकक तीनटा गुण सर्वमान्य अछि-सहृदयता, विस्तृत ज्ञान ओ निष्पक्षता। एहि तीनू गुणक दृष्टिएँ प्रो. रमानाथझाक स्थान आलोचकक कोटिमे अग्रगण्य अछि। हिनक मैथिलीमे कतोक गवेषणात्मक निबन्ध ओ प्रबन्ध '**निबन्धमाला**' ओ '**प्रबन्ध-संग्रह**'मे प्रकाशित अछि। अपन निष्पक्षताक कारणे कतोक व्यक्तिमे ई लोकप्रिय नहि भेलाह। उदाहरणार्थ, ई मैथिलीक किर्तनियाँ नाटकक परम्पराकेँ नहि मानल एवं अपन मान्यताक समर्थनमे ठोस तर्क प्रस्तुत कएल, जे मैथिली साहित्यक इतिहासक एक

गोट प्रमुख भ्रमक निवारण करैत अछि। हिनकामे मिथिलाक ऐतिहासिक तथ्यक गम्भीरता अछि, जकरा ई पाँजिव्यवस्थाक गम्भीर अनुशीलनसँ प्राप्त कएने छलाह। अंगरेजी-संस्कृत साहित्यक समान रुपसँ मर्मज्ञ प्रो. झाक आलोचना-प्रणालीमे प्रमुखता अछि ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक ओ निर्णयात्मक आलोचना-शैलीक, जाहिमे सहृदयताक अभाव नहि अछि। स्थान-स्थान पर तुलनात्मक ओ व्याख्यात्मक प्रणालीकेँ सेहो ओ ग्रहण कएल। आधुनिक कविलोकनिक प्रसंग हिनक सूक्तिबद्ध संक्षिप्त विचार आबहु बड़ प्रामाणिक मानल जाइत अछि। हिनक '**मैथिली साहित्यक इतिहास**'क प्रसंग डा. जयकान्तमिश्र अपन इतिहासमे चर्चा कएने छथि तथा ओहिसँ एक गोट उद्धरण सेहो देने छथि। एहिसँ प्रो. झा मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार सिद्ध होइत छथि, मुदा ओ इतिहास अद्यावधि प्रकाशित नहि भेल अछि। हिनक '**प्रबन्ध-संग्रह**'मे प्रकाशित प्रबन्धसब मैथिली साहित्यक आदिकालसँ लए चन्दाझा धरिक कतोक दुर्लभ ऐतिहासिक तथ्य पर प्रामाणिक प्रकाश दैत अछि।

पं. शिवनन्दन ठाकुर '**विशुद्ध-विद्यापति-पदावली**'क लब्धप्रतिष्ठ आलोचक सम्पादक छथि। विद्यापतिक प्रसंग हिनक कृति आइओ अत्यधिक प्रामाणिक मानल जाइत अछि। एकर अतिरिक्त ई अपन '**महाकविविद्यापति**' ग्रन्थमे चर्यापदक प्रसंग सेहो बड़ महत्वपूर्ण अध्ययन कएने छथि। पं. शशिनाथ चौधरीक 'चन्दाझाक रामायण' तथा 'कन्यादान-द्विरागमन', ज्यो. बलदेवमिश्रक 'चन्दाझा' (1948), श्री नरेन्द्रनाथदासक 'चर्यापद', '**विद्यापतिकाव्यालोक**', 'कृष्णजन्मसमीक्षा', 'गोविन्ददास' तथा 'किरतनियाँ रंगमंच', बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक 'मैथिलीक ग्राम्यगीतावली' ओ 'आधुनिक मैथिलीकवि', डा. श्रीकृष्णमिश्रक 'मनबोध' ओ 'कन्यादानसमीक्षा' प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि मध्य पं. शिवनन्दनठाकुरक आलोचना सैद्धान्तिक, श्री नरेन्द्रनाथदासक तुलनात्मक ओ डा. श्रीकृष्णमिश्रक भावात्मक प्रणालीक अछि। एहि ठाम भुवनजीक 'राजहंस'क उपनामसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित आलोचनाक सेहो उल्लेख कएल जाएत, जे नवीन रीतिएँ मैथिली पुस्तकसभक समालोचना प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ विलक्षण अछि। 'विभूति'मे प्रकाशित समालोचनात्मकक निबन्ध हिनकहि रचित थिक। रामदासक 'आनंदविजय'क सम्पादन ओ भूमिका-लेखन हिनक प्रसिद्ध अछि।

साहित्यिक आलोचनाक एहि क्रमक विकास भेल विभिन्न विश्वविद्यालयमे मैथिली साहित्यक उच्चशिक्षामे क्रमिक अधिकाधिक स्वीकृतिसँ। आब पत्र-पत्रिकामे एवं स्वतन्त्र ग्रन्थहुक रुपमे अजस्र मैथिलीक आलोचना-साहित्य प्रकाशित होअए लागल, निबन्ध ओ प्रबन्धक रुपमे। एहि प्रक्रियामे आलोचनाक विभिन्न प्रणालीक अनुसरण होअए लागल। आलोचनाक नवीन उत्थानमे मुख्यतः मैथिल शिक्षकलोकनि विशेष योगदान देल। एहि श्रेणीक आलोचकलोकनिमे श्री जयदेव मिश्र ('मिथिलाक हास्यसाहित्य'), स्व. ईशनाथझा ('गोविन्ददासक पदक टीका'), प्रो. तन्त्रनाथझा ('सन्तकवि साहेबरामदास'),

श्री सुमनजी (ग्रन्थ **'मैथिली काव्यपर संस्कृतक प्रभाव'**, 'काव्यसाहित्यक लक्ष्य'), राधाकृष्णचौधरी (सं. 'साहित्यिक निबंन्धावली'), डा. जयकान्तमिश्र ('मिथिलाक जन-साहित्य'), डा. महेश्वरीसिंह 'महेश' ('मैथिली गद्यक स्थिति')प्रो. उमानाथझा ('वर्तमान मैथिली कविता : किछु विचार'), प्रो. आनन्दमिश्र ('मैथिली नाटकक विकास'), डा. जयमन्तमिश्र (ग्रन्थ- **'मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव'**), प्रो. हितनारायणझा (सं.**'साहित्यिक निबन्धावली', चन्दाझा ओ वर्ड्सवर्थ'**), श्री बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर' (सं. **'पंचामृत'**, 'मैथिली काव्यधारा'), श्री भक्तिनाथसिंह ठाकुर ('गल्प साहित्य ओ तकर विकास'), श्री दामोदरझा ('प्रगतिवाद'), श्री परमानन्दझा (सं. **'मैथिली-निबन्ध-निकुंज', 'मैथिली-नव-निबन्धावली'**), डा. शैलेन्द्रमोहनझा (सं.**'परिचयपात'**), डा. जयधारीसिंह 'प्रभाकर' ('सुन्दरकांड : एक समीक्षा' सं. **'पंचामृत', 'गोविन्द-काव्यालोक'**), डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश' (सं. **'साहित्य-विर्मश'**, 'प्राकृतपैंगलममे मैथिली कविता'), डा केदारनाथलाभ ('काव्यमे अलंकारक प्रयोजन'), डा. विश्वेश्वरमिश्र (ग्रन्थ **'विद्यापतिक काव्य-साधना'**), डा. बालगोविन्दझा 'व्यथित'('राजकमल : एक कविक रुपमे', सं. **'कविदर्शन'**) प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एतदतिरिक्त डा. नवीनचन्द्रमिश्र (ग्रन्थ **'प्रतिपदा : एक अध्ययन', 'अंकिया-नाट-विवेचन'**), डा. अमरनाथझा (सं. **'द्रुतविलम्बित'**), डा. परमेश्वर मिश्र (ग्रन्थ **'मैथिली-साहित्यक भूमिका'**), डा. दिनेशकुमारझा (सं. 'आलोचना ओ अध्ययन'), प्रो. लक्ष्मीकान्तझा ('नेपालनृप त्रिभुवनमल्लक मैथिली कृति'), डा. अमरेश पाठक (सं.-**'निबन्ध -संकलन'**), डा. लेखनाथमिश्र ('म. म. वंशमणिझा'), डा. प्रेमशंकरसिंह (ग्रन्थ**'मैथिली नाटक ओ रंगमंच'** एवं **'मैथिलीनाटक-परिचय'**), डा. रामदेवझा ('हरगौरीविवाह नाटक', **'विद्यापति-गीतक नव स्रोत'**), डा. इन्द्रकान्तझा (सं. 'शोधरत्नाकर', **'विद्यापति-विमर्श'**), डा. नरनाथझा (सं. **'विविध प्रबन्ध'**), डा. वासुकीनाथझा ('मनबोधक कृष्णजन्म', ग्रन्थ-**'अनुशीलन-अवबोध'** एवं **'परिवह'**), प्राचार्य प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' ('मोरङ.-वंशावलीक अध्ययन'), प्रो. हरिमोहनमिश्र (ग्रन्थ- **'आधुनिक मैथिली कविता'**), डा. जगदीशमिश्र (सं. **शास्त्रीय प्रबन्ध'**), प्रो. चण्डेश्वरझा ('गौरीस्वयंवरक रागोल्लेखक विवेचन', 'मिथिलाक संगीतमे जयतकथक्क स्थान'), डा. मोहनझा ('व्यावहारिक आलोचनाक महत्व ओ प्रयोजन') डा. उमारमणझा ('मंगलमहोत्सवनाटक', 'नेपालमे सुरक्षित मैथिली साहित्य'), डा. माखनझा ('नाथसम्प्रदाय'), डा. कपिलेश्वरझा ('मैथिली उपन्यासमे कथाशिल्पक क्रमिक विकास'), डा. बेदनाथझा ('गीतकार हरपति ठाकुर'), श्री ब्रजकिशोर ठाकुर (सं. **'अध्ययण और विवेचन'**), श्री नवोनाथझा (सं. **'मैथिली निबन्ध ओ आलोचना'** एवं **'निबन्ध प्रबन्ध'**), डा. देवेन्द्रझा ('मैथिलीक शब्द-सामर्थ्य'), श्रीमती प्रभावतीझा ('कृष्ण-काव्यक व्यापकता ओ मैथिली कविता'); डा. भीमनाथझा (ग्रन्थ **'परिचाचिका'**), श्री हरेकृष्ण मिश्र ('कवीश्वर छत्रनाथझा'), डा. जटेश्वरझा 'जटिल' ('मैथिली रंगमंच ओ ओकर भविष्य'), डा. शिवाकान्त ठाकुर (ग्रन्थ **'मैथिली कवि-परिचय'**), डा.

धीरेन्द्रनाथमिश्र (ग्रन्थ- **'परिचय-प्रसून'**) प्रभृतिक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जे अन्यान्यो कतोक साहित्य-समालोचनाक रचना कए प्रकाशित करबाओल। प्रो मायानन्दमिश्रक साहित्य-सम्बन्धी ऐतिहासिक लेखसभ सेहो विशेष उल्लेखनीय अछि। ओहि मध्य हिनक वैयक्तिक दृष्टिकोणक अधिक विस्तार अछि। नवीन रीतिएँ विचार करबाक हिनकामे अद्भुत क्षमता परिलक्षित होइत अछि। प्राध्यापकवर्गसँ भिन्न मैथिलीक प्रतिष्ठित विद्वानलोकनिमे स्व. भोलालालदास ('स्व. मुंशीजी ओ हुनक सुभद्राहरण'), पं. जीवनाथझा ('गीत शब्दक समीक्षा'), आचार्य परमानन्दशास्त्री ('क्रान्तिकारी विद्यापति'), पं. गोविन्दझा ('विद्यापतिक गीतक पाठोद्धार'), शेखरजी ('मैथिलीक आलोचना साहित्य'तथा ग्रन्थ **'सन्दर्भ'**), अमरजी ('गंगास्तुतिक परम्परामे सुमनजी'), व्रजकिशोरवर्मा ('नागार्जुनक चिन्तनधारा', 'मधुपक गुंजन'), किरणजी ('काव्येषु नाटकं रम्यम्'), पं. आद्यानाथझा ('काव्यमे ध्वनि-व्यंग्य'), दिनेश्वर लाल आनन्द ('क्रान्तिकारी विद्यापति'), कार्तिकनाथ मिश्र ('विद्यापतिक नृत्य'), पं. राजेश्वरझा ('मिथिलामे ब्रह्मस्थान', 'वाद्ययन्त्रक परम्परा ओ भेद'), पं. शशिनाथझा ('एक प्रलम्बित गीत', 'महाकवि गोविन्ददासक काव्यकौशल'), सुमनवात्स्यायन ('भारतीय कथासाहित्यक आदि-ग्रन्थ जातक'), डा. दिगम्बरझा ('एक बिसरल उपन्यास'), श्री मार्कण्डेय प्रवासी ('मैथिली उपन्याससाहित्यक इतिवृत्त'), श्री महेशझा ('कवीश्वरचन्दाझा ओ टाटी'), श्रीवीरेन्द्रमल्लिक ('मैथिली रंगमंच ओ नाट्य-निर्देश'), श्री कमलनारायणझा 'कमलेश' ('महाकवि द्विजवरक मैथिलीक देन'), श्री भोलानाथझा ('लोरिक, नैका, सलहेस'), श्रीमती नीरजा रेणु ('विद्यापतिक पदमे सपत्न्य-भाव'), श्री रामलोचनठाकुर ('एकांकी नाटक'), श्री नचिकेता ('नाटकक स्वरुप-निर्णय आ मैथिली नाटक'), श्री कुलानन्दझा ('पयस्विनी'क जीवन-दर्शन'), श्री रामदेव चौधरी ('नाट्यकलाक दृष्टिएँ मृच्छकटिकक विश्लेषण'), श्री विभूति आनन्द (**'श्री ललित ओ हुनक कथा-यात्रा'**), उदयनाथझा 'अशोक' ('म. म. जयकृष्णझा ओ हुनक मैथिली कविता') आदि अनेक आलोचकक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि। आधुनिकतम काव्य-प्रवृत्तिक विश्लेषणात्मक साहित्यिक व्याख्याक दृष्टिएँ राजकमल ('कथासाहित्यक विघटन आ समस्या'), श्री मायानन्द ('अभिव्यंजना'क सम्पादकीय लेख'), श्री जीवकान्त ('संत्रास + जिजीविषा = राजकमल'), श्री कुलानन्दमिश्र ('अतियथार्थवाद आ अस्तित्ववाद), श्री हिमांशुशेखरझा (परम्परा आ युगबोध) प्रभृतिक नामोल्लेख कए सकैत छी। एही श्रेणीमे श्री रामानुग्रहझाक नाम सेहो आओत। चेतना समितिक वार्षिक गोष्ठीसे प्रस्तुत अनेक लेखकक संग्रह, यथा, 'मैथिली कवितामे यथार्थवाद', 'आधुनिक कविता एवं सम्प्रेषणीयताक समस्या', 'रंगमंच एवं एकांकी', 'आधुनिक साहित्यमे परिवर्तनक स्वर' आदि प्रकाशित भए साहित्यक एहि अंगकेँ समृद्ध कएल। गत तीन दशकसँ अनुसन्धान-अनुशीलनक क्षेत्रमे अभूतपूर्व उन्नति भेल अछि ओ से डाक्टरेट-उपाधिक हेतु शोध-प्रबन्धसँ पृथक् स्वतन्त्र रूपेँ। सर्वाधिक कार्य भेल अछि विद्यापति-साहित्यक अनुसन्धानक क्षेत्रमे। डा. इन्द्रकान्तझा विद्यापतिक लिखनावली आ

शवसर्वस्वसार प्रकाशित कएल ओ ओहि मध्य सारगर्भित भूमिकाक सन्निवेश कएल। पुस्तकाकार प्रकाशित हिनक **'विद्यापतिकालीन मिथिला'**, **'शोध-रत्नाकर'** ओ 'विद्यापति-विमर्श' मे संगृहीत अधिकांश प्रबन्ध विद्यापति-साहित्यक विविध समस्या पर आधारित अछि। डा. परमेश्वरमिश्रक **'अभिनव जयदेव विद्यापति'**क सेहो एतए उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एही दृष्टिएँ डा. शिवाकान्तठाकुरक **'विद्यापतिओ हुनक काव्य'** तथा बिचौली, इटावाक श्री सीतारामझाक **'भारत-विभूति विद्यापति'**क विशेष रुपेँ चर्चा होएत। श्रीदीनानाथझा द्वारा संगृहीत-सम्पादित **'विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकन'** मे प्रो. उमानाथझा, प्रो हरिहरझा प्रभृति द्वारा रचित विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकन-सम्बन्धी महत्वपूर्ण लेख संकलित अछि। एहिना चेतना समिति द्वारा प्रकाशित **'स्मारिका'**मे सेहो मैथिलीक तथा अन्य भाषाक विद्वानक विद्यापति-सम्बन्धी बहुमूल्य प्रबन्ध संगृहीत अछि। डा. मुनीश्वरझाक **'विद्यापति-वाड.मय'** एवं **'भू-परिक्रमण'** सेहो एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय थिक। एहिना 'मिथिलामिहिर'क विद्यापति-विशेषांक मध्य एतद्विषयक बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध अछि। एहि अवधिमे प्रो. रमानाथझा द्वारा सम्पादित भए **'कीर्तिलता'** प्रकाशित भेल, जाहि मध्य समाविष्ट हुनक भूमिका ऐतिहासिक महत्वक कहल जाए सकैत अछि। 'कीर्तिपताका' पर हिनक लेख 'मिथिलामिहिर'मे प्रकाशित भेल छल, ऐहो एतए उल्लेखनीय थिक। मैथिली अकादमी, पटनाक स्थापनाक पश्चात् विद्यापति-साहित्यक विविध पक्ष पर ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि, यथा, पं. श्री गोविन्दझाक **'विभागसार'** , डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'विद्यापति', डा. बासुकीनाथझाक **'विद्यापति-काव्यालोचन'**, डा. प्रेमशंकरसिंहक **'पुरुषार्थ ओ विद्यापति'** प्रभृति। पं. शिवनन्दनठाकुरक **'महाकवि विद्यापति'** सेहो पुनर्मुद्रित भेल अछि।

विद्यापति-साहित्यक अनुसन्धानक पश्चात् सर्वाधिक कार्य भेल नेपालमे उपलब्ध साहित्य-सम्बन्धी एवं लोक-साहित्य-विषयक। एही दृष्टिएँ उल्लेखनीय थिक डा. शैलेन्द्रमोहनझा द्वारा सम्पादित **'कवि सिद्धनरसिंह मल्ल'** एवं **'चतुरचतुर्भुजक** गीत-सप्तदशी' डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश' द्वारा सम्पादित **'जगज्जयोतिर्मल्ल-कृत** 'गीत-पंचाशिका', डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित 'हरगौरीविवाह' एवं **'दशावतारनृत्यम्** आ षोडस गीतम्', डा. लेखनाथ मिश्र द्वारा सम्पादित 'जगत प्रकाश मल्लक प्रभावतीहरण', प्रचार्य प्रफुल्ल कुमार **'मौन'** द्वारा सम्पादित **'मोरङ-पदावली'**, डा. जयमन्त मिश्र द्वारा सम्पादित **'मैथिली अभिलेख-गीतमाला'** प्रभृति जाहि मध्य अनुसन्धान-अनुशीलनमूलक भूमिका सेहो देल गेल। एतदतिरिक्त समसामयिक पत्र-पत्रिकामे नेपालक अप्रकाशित साहित्य-सम्बन्धी अनेक लेख कीर्ण-विकीर्ण प्रकाशित अछि। लोक-साहित्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रकाशन थिक डा. जयकान्तमिश्रक *Introduction to Folk Literature of Mithila* (1950), श्रीमती अणिमासिंहक **'मैथिली लोकगीत'**, पं. राजेश्वरझाक **'जटजटिन'**, मणिपद्मक **'मैथिली लोक-गाथाक अध्ययन'**, डा. योगानन्दझाक **'लोक-जीवन ओ लोकसाहित्य'** प्रभृति। एहि क्षेत्रमे

सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य कएल व्रजकिशोरवर्मा ओ श्री प्रफुल्लकुमार 'मौन', परन्तु डा. रामदेवझा, डा. इन्द्रकान्तझा प्रभृतिक कार्य सेहो विस्मरणीय नहि थिक।

मैथिलीक इतिहास-लेखन-क्षेत्रमे डा. बालगोविन्दझा 'व्यथित'क **'मैथिली साहित्यक इतिहास'**, श्री प्रफुल्लकुमार सिंहक **'नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास'**, पं. राजेश्वरझाक **'मैथिली साहित्यक आदिकाल'** प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक 'A Survey of Maithili Literature', डा. दिनेशकुमारझाक **'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास'** एवं चेतनासमितिक 'भारती-मण्डन-भाषणमाला'क दुइ भागमे पुस्तकाकार प्रकाशन **'मैथिली-साहित्यक रुपरेखा'**क महत्वकेँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि। एहि अवधिमे पं. राजेश्वरझाक **'नायक-नायिकाभेद ओ रागरागिणीक वर्गीकरण'**, **'मध्यकालीन, पूर्वांचलक वैष्णव-साहित्य'** एवं **'अवहट्ठ : उद्भव ओ विकास'** (1977 ई.मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत) प्रकाशित भेल जे उपनिबद्ध विषयक प्रामाणिक विवेचनक दृष्टिएँ विशेष उल्लेखनीय अछि। श्री अमरजीक **'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास'** सेहो प्रकाशित भेल, जे 1983 ई.मे साहित्य-अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेल। श्री भूपेन्द्रकुमार चौधरी सेहो अपन **'मैथिली उपन्यास ओ उपन्यासकार'** प्रकाशित कएल जकरा आलोचना-क्षेत्रमे हुनक एकटा विनम्र प्रयास मात्र कहल जाए सकैत अछि। डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश' ('आधुनिक काव्य-धारा : विकास प्रवृत्तिक लेखा-जोखा'), डा. रमानन्द झा 'रमण' ('मैथिली नवकवितामे अनास्था, अविश्वास ओ असन्तोष', 'सौन्दर्य-चेतना ओ राधा-विरह', एवं निबन्ध-संग्रह - **'नवीन मैथिली कविता'**), श्री पद्मनारायणझा 'विरंचि' ('आधुनिकता-बोध, प्रतीक आ विम्ब', 'वस्तु-जगत ओ सौन्दर्य-भावना'), श्री रामजीप्रसाद मण्डल ('आधुनिक भाव-बोध', 'मैथिली नवकविता : सृजन-प्रक्रिया'), ज्ञानचन्द्र ('परम्परा, आधुनिक लेखक आ आस्था') प्रभृतिक कार्य आधुनिक भाव-बोध, शिल्पविधान एवं रचना-विवेचनक प्रामाणिक अनुशीलनक दृष्टिएँ बड़ उपयोगी भेल अछि। एही श्रेणीमे अबैत अछि विभिनन काव्य-संकलनक भूमिका, जकर आरम्भ भेल भुवनजीक 'आषाढ़'सँ। 'आषाढ़'क पश्चात् 'प्रतिपदा', 'स्वरगन्धा', 'ऋतुप्रिया', 'आत्मनेपद', 'दिशान्तर', 'कवयोवदन्ती', 'सीमान्त' 'हम स्तवन नहि लिखब' प्रभृतिक भूमिका एही श्रेणीक आलोचना-साहित्यक अन्तर्गत अबैत अछि।

आलोचना-अनुशीलनक दोसर पक्षक विकास भेल विभिन्न विश्वविद्यालयमे मिथिलाभाषाक माध्यमसँ पी-एच.डी., डी. लिट्. उपाधिक शोध-प्रबन्ध स्वीकृत भेलासँ। ई भेल सर्वप्रथम डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश'क शोध-प्रबन्ध 'आधुनिक मैथिली कविताक प्रवृत्ति' (1965) क स्वीकृति भेलासँ। तत्पश्चात् डा. लेखनाथमिश्रक 'मैथिलीनाटकक उद्भव ओ विकास' (1966), डा. चन्द्रधरझाक 'ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिलाक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक अध्ययन' (1966), डा. विश्वेश्वरमिश्रक **'चन्दाझा : व्यक्तित्व ओ कृतित्व'** (1967), डा. श्री बालगोविन्दझा

'व्यथित'क 'मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' (1967) डा. अमरेशपाठकक 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन' (1967 डि. लिट्. प्रकाशित) डा. इन्द्रकान्तझाक 'विद्यापतिक रचनाक आधार पर तद्युगीन मिथिलाक सामाजिक जीवन' (1967), डा. जयधारीसिंहक 'बौद्धयानमे तान्त्रिक सिद्धान्त', (1968, पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. परमेश्वरमिश्रक 'मैथिली गद्यक विकास' (1968), डा. दिनेशकुमारझाक 'एकावली-परिणय' 'महाकाव्य : शास्त्रीय अनुशीलन' (1968), डा. प्रेमशंकरसिंहक 'सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे हरिमोहनझाक मैथिली कृतिक अनुशीलन' (1968), डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'मैथिली साहित्यक प्रभावक सन्दर्भमे' 'ब्रजबुलि साहित्यक उद्‌भव ओ विकास' (1968, डि. लिट्. संशोधित परिवर्द्धित रुपमे हिन्दी अनुवाद पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. वासुकीनाथझाक 'विद्यापतिक गीतक काव्य-शास्त्रीय अध्ययन' (1969, प्रकाशित), डा. अमरनाथझाक 'कवीश्वरचन्दाझाकृत मिथिलाभाषारामायण' (1969, प्रकाशित) डा. लोकनाथमिश्रक 'मिथिलामे व्यवहारगीत' (1969, पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. काचीनाथझा 'किरण'क 'वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन' (1969), डा. शिवशंकरझा 'कान्त'क 'मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास' (1970, प्रकाशित), डा. रामदेवझाक 'मैथिलीमे शैव-साहित्य' (1970, प्रकाशित) डा. नन्दनन्दनझाक 'मैथिली समाजमे व्यवहारगीत- मधुबनी अंचलक व्यवहार पर आधारित' (1970), डा. कपिलेश्वरझाक 'कथा-निर्माणक विशेष सन्दर्भमे मैथिली उपन्यासक विकास' (1971), डा. नवीनचन्द्रमिश्रक 'मैथिलीक भक्ति-काव्य' (1971), डा. भगवानजी चौधरीक 'गोविन्ददासक रचनाक आधार पर तद्युगीन मिथिलाक सामाजिक जीवन' (1972), डा. देवेन्द्रझाक 'विद्यापतिक शृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन' (1972, प्रकाशित), डा. बालखण्डीझाक 'मैथिली कवितामे बाह्य-प्रकृति-वर्णन' (1972), डा. अमरनाथचौधरीक 'विद्यापतिक भक्तिदर्शन' (1972, प्रकाशित), श्रीमती इलारानीक 'मैथिली लोकगीतमे समाज-चित्रण' (1972), डा. विश्वेश्वरमिश्रक 'मैथिली महाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन' (1973, डि. लिट्.), डा. मैथिलीशरण प्रसाद कर्णक 'स्वर्गीय पण्डित हर्षनाथझाक व्यक्तित्व एवं कृतित्व' (1973), डा. रूपनारायण चौधरीक 'मैथिली महाकाव्य : अनुशीलन ओ मूल्यांकन' (1973) एवं डा. लक्ष्मणचौधरी 'ललित'क 'मैथिली साहित्य पर पौराणिक प्रभाव' (1974)। तत्पश्चात् एतेक संख्यामे पी-एच.डी. उपाधिक हेतु शोध-प्रबन्ध स्वीकृत भेल अछि जे सभक नामोल्लेख करब एतए असम्भव अछि। तथापि अन्यान्य प्रकाशित शोध-प्रबन्धमे डा. विद्यानथझा 'विदित'क 'मैथिली ओ सन्ताली', डा. यशोदानाथझाक 'यात्री-काव्य-विवेचन', डा. प्रभावतीझाक 'मैथिली काव्यमे नारी-चित्रण', डा. नवीनाथझाक 'मैथिली नव कविताक उद्‌भव ओ विकास' आदिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

मिथिलाभाषाक अतिरिक्त अंगरेजी ओ हिन्दीक माध्यमसँ बहुत पूर्वहि

शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कएल गेल छल, जकर श्री गणेश कएल डा. सुभद्रझा डि. लिट्. क उपाधिक हेतु 'Formation of Maithili language' (1940) प्रस्तुत कए, मुदा ताहूसँ पूर्व डा. सुधाकरझा (1933 ई.)मे लन्दनविश्वविद्यालयक अन्तर्गत 'Indo-Aryan language with Reference to Maithili' पी-एच. डी. उपाधिक हेतु लिखल। तत्पश्चात् डा. सुभद्रझाक 'Historical Grammar of Maithili' (1946), डा. जयकान्तमिश्रक 'A History of Maithili Literature' (1948), डा. उपेन्द्रठाकुरक 'History of Mithila (1955, पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. उग्रनाथझाक 'Panji And Panjikars of Mithila (1965, प्रकाशित), डा. शंकरकुमारझाक 'Political thoughts of Vidyapati with special Reference to Purush Pariksha (1968), डा. नरनाथझाक 'Vidyapati, The Man and Poet (1970), डा. शचीनाथमिश्रक 'Political speculation in Medieval Mithila from 1079 A. D. to 1500 A. D. (1970) प्रभृतिक रचना भेल। हिन्दीक माध्यमसँ शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करबाक कार्यक आरम्भ होइत अछि डा. ललितेश्वरझाक 'मैथिलीका कृष्णकाव्य' (1956)सँ। तत्पश्चात् डा. शैलेन्द्रमोहनझाक 'आधुनिक मैथिलीसाहित्य' (1965), डा. भुवनेश्वर गुरमैताक 'वर्णरत्नाकर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' (1965), डा. तेजनारायणलालक 'मैथिलीलोकगीतों का अध्ययन' (1962, पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. बजरंगवर्माक 'उमापति का परिजातहरण' (1966, पुस्तकाकार प्रकाशित), डा. पूर्णानन्ददासक 'मैथिली लोकगीत', डा. परमानन्दझाक 'संस्कृत के प्रभाव-क्षेत्रमे मैथिलीकाव्यमे प्रकृति' (1969), डा. बदरीनारायणझाक 'मैथिली कवि गोविन्ददास' (1973 मे पुस्तकाकार प्रकाशित) आदिक उल्लेख कएल जाएत सकैत अछि। एम.ए. परीक्षामे विशेष अध्ययन-पत्रक रुपमे सेहो किछु शोध-प्रबन्धक रचना भेल अछि। एहि क्षेत्रमे डा. ललितेश्वरझाक 'चन्दाझा' (पुस्तकाकर प्रकाशित), श्री रमेशचन्द चौधरीक 'सुरेन्द्रझा सुमन'क 'व्यक्तित्व ओ कृतित्व', श्री शांतिनाथझाक 'स्व. ईशनाथझाक व्यक्तित्व एवं कृतित्व', कुमारी सीताशर्माक 'मैथिली मांगलिक लोकगीत' प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। परन्तु अत्यन्त खेदक विषय जे अधिकांश शोध-प्रबन्धक पुस्तकाकार प्रकाशनक व्यवस्था सम्भव नहि भए सकल अछि ओ तैं सुधी जिज्ञासुक हेतु अनुपलब्ध अछि।

मैथिलीमे भाषा, व्याकरण ओ लिपिक प्रसंग अनेक कार्य भेल अछि। आरम्भमे हल्लीझा, वैद्यनाथमिश्र, गणेशदत्त पाठक, म. म. मुरलीधरझा, म. म. मुकुन्दझा बख्शी, बाबूगंगापतिसिंह, हीरालालझा, कालीकुमारदास, जीवनाथराय, अक्षयलालझा, हेदीझा, भोलालालदास प्रभृति विद्वान अंगरेजी वा हिन्दीक व्याकरणक शैलीमे मैथिलीमे छोट-छोट व्याकरण लिखल, जाहि मध्य भोलालालदासक व्याकरण बड़ प्रसिद्ध भेल। मुदा महावैयाकरण दीनबन्धुझा द्वारा 'मिथिला भाषाविद्योतन'क रचना ऐतिहासिक महत्वक

वस्तु सिद्ध भेल, जकरा महावैयाकरण सूत्रशैलीमे लिखल आओर जे संस्कृत-प्राकृतक श्रेष्ठ-श्रेष्ठ व्याकरणक समता कए सकैत अछि। आधुनिक भारतीय भाषामे एहि प्रकारक वैज्ञानिक व्याकरण अद्यावधि नहि लिखल जाए सकल अछि। एहिसँ मैथिलीक व्याकरण-सम्बन्धी स्वरुप स्थिर जकाँ अछि, यद्यपि किछु तथाकथित 'प्रगतिशील' साहित्यकार एकरा एखनहु नहि मानैत छथि। भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ सेहो एकर महत्व स्वीकार कएल गेलैक अछि। एहि महाव्याकरण **'मिथिल-भाषाविद्योतन'** केँ संक्षेप कए 'लघुविद्योतन'क नामसँ पं. श्री गोविन्दझा प्रकाशित करबाओल। एहि ग्रन्थक प्रमाण मानि प्रो. रमानाथझा **'मिथिला-भाषा-प्रकाश'** ओ **'मैथिली-व्याकरण'**क रचना कएल, जे छात्रगणक बीच बड़ लोकप्रिय भेल। व्याकरण-रचनाक दृष्टिएँ डा. बालगोविन्दझा व्यथित'क **'मैथिली व्याकरण ओ रचना'** क सेहो नामोल्लेख कए सकैत छी। श्री गोविन्दझाक **'उच्चतर मैथिली व्याकरण'** सेहो प्रकाशित भेल।

मैथिलीमे भाषाविज्ञान-सम्बन्धी साहित्यक प्रकाशनक दृष्टिएँ श्री गोविन्दझाक **'मैथिली भाषाक उद्गम ओ विकास'** एवं प्राचार्य भोलानाथझाक **'मैथिलीक ऐतिहासिक ओ भाषावैज्ञानिक अध्ययन'** तथा **'मैथिली भाषा'** प्रकाशित भेल। डा. नवीनचन्द्रमिश्र ओ डा. शिवाकान्तठाकुरक संयुक्त-लेखनमे एकटा एवं एक डा. धीरेन्द्रनाथमिश्र द्वारा लिखित छात्रोपयोगी **भाषा-विज्ञानक** पुस्तक सेहो प्रकाशित भेल। 'मिहिर'मे प्रकाशित डा. शक्तिधरझाक 'भाषा ओ बोली' तथा चन्द्रकान्तझा 'नवेन्दु'क 'मैथिली शब्द-मीमांसा'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। अंगरेजीमे डा. सुभद्रझाक शोध-प्रबन्ध **Formation of Maithili Language** एवं **Historical Grammar of Maithili** प्रकाशित अछि। डा. झाक विद्यापतिक भाषा पर भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन हिनक Songs of Vidyapatiक भूमिकामे उपलब्ध अछि, मुदा अछि धरि इहो अगरेजीमे। एही दृष्टिएँ डा. उमेश मिश्रक घोघडडिहाक साहित्य-परिषद्क अधिवेशनक तथा मुजफ्फरपुरक शैलीनिर्धारण-विभागक अध्यक्षीय भाषणक चर्चा कएल जाए सकैत अछि जाहि मध्य मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास पर यत्किंचित् प्रकाश पड़ैत अछि। पण्डित राजेश्वरझाक **'अवहटठक उद्भव आ विकास'** सेहो एतए उल्लेखनीय थिक, जे 1977 ई.मे साहित्यअकादमी द्वारा पुरस्कृत भेल। डा. जयकान्तमिश्र मिथिलाक्षरक प्रसंग अपन इतिहासमे कार्य कएने छथि। आचार्य परमानन्द शास्त्रीक 'मिहिर' 60मे धारावाहिक प्रकाशित **'मिथिलाक्षरक उत्पत्ति'** लेख एवं पं. राजेश्वरझाक **'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास'** मैथिली लिपिक अध्ययनक प्रसंग महत्वपूर्ण कार्य थिक। मिथिलाक्षरक महत्वक प्रसंग स्फुट रुपसँ सब विद्वान किछु-ने-किछु लिखैत आबि रहल छथि। मुदा डा. उमेशमिश्रक 'मैथिली लिपिक संरक्षण'आ श्री बच्चा ठाकुरक 'लिपिक समस्या' विशेष उल्लेखनीय निबन्ध थिक। मैथिली साहित्यमे तिरहुताक प्रचारक दृष्टिएँ जीवनाथराय द्वारा सम्पादित मिथिलाक्षरक पोथीकेँ प्रथम तिरहुताक पोथी होएबाक गौरव प्राप्त छैक। तत्पश्चात 'मिहिर'(60)क आरम्भिक अंक सबमे मिथिलाक्षरक पोथी क्रमशः प्रकाशित

भेल। ग्रन्थालय-प्रकाशन दिसिसँ सेहो दुइ गोट मिथिलाक्षरक पोथी छपल जाहि मध्य श्री विश्वनाथझा द्वारा प्रस्तुत मिथिलाक्षर प्रामाणिक अछि।

मैथिली कोशक प्रसंग सर्वप्रथम कार्य कएल ग्रियरसन। तत्पश्चात् म. म. मुरलीधरझाक ओ म. म. मुकुन्दझा वख्सीक अमरकोशक अनुवाद तथा सदाशिवझाक **'पंचभाषा-प्रकाश'** विशेष महत्वक कार्य भेल। एहि सभमे संस्कृत ओ ओकर पर्यायवाची मैथिली शब्द देल छैक। कविशेखर बदरीनाथझाक **'मैथिली शब्द-संग्रह'** भाषा-विज्ञानक दृष्टिएँ बेशी महत्वपूर्ण अछि कारण, ओहि मध्य ओ मैथिली शब्दक संस्कृत भाषामे मूलक अन्वेषण कएल। अर्थात्, ई कोश मैथिली शब्दक व्युत्पत्ति मूलतः संस्कृतसँ सिद्ध करैत अछि।

मैथिली शब्दक मैथिली अर्थ देबाक प्रणालीक अनुसरण सर्वप्रथम पं. दीनबन्धुझा अपन प्रकाशित ग्रन्थ **'शब्दकोश'** ओ **'धातुपाठ'**मे कएल। यद्यपि एहिसँ पूर्व हरिकान्तझा, मुक्तिनाथझा, वैद्यनाथमिश्र 'विद्यासिन्धु' आदि एहि प्रसंग कार्य कएने छलाह, मुदा से प्रकाशित नहि भेल। डा. जयकान्तमिश्रक इतिहासक अनुसार यात्रीजी ओ सुमनजी सेहो शब्दसंग्रह कएने छथि। मुदा हुनकहुलोकनिक शब्दकोश अद्यावधि प्रकाशित नहि भए सकल अछि। प्रयागक मैथिली एकेडमी सेहो वृहत् मैथिली शब्दकोशक संकलनमे व्यस्त छल, जकर एक खण्डमात्र एतबा दिनमे प्रकाशित भए सकल। 1973 ई.क जून मासक 'मिहिर'मे प्रकाशित **'मैथिली शब्द-संग्रह'**केँ सेहो महत्वपूर्ण कहल जाए सकैत अछि।

मैथिली काव्यशास्त्रक प्रसंग बड़ कम पुस्तक प्रकाशित भए सकल अछि। तथापि डा. उमेशमिश्रक **'साहित्य-दर्पण'** (अनुवाद), उपेन्द्रझाक **'काव्यप्रकाश'** (अनुवाद), वेदानन्दझाक **'काव्यकौमुदी'**, स्व. ऋद्धिनाथझाक **'विश्वभूषण'**, कविवर सीतारामझाक **'अलंकारदर्पण'** आदिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। मैथिलीक उच्च-शिक्षाक आरम्भ भेलासँ मैथिली काव्यशस्त्रक आवश्यकता अधिकाधिक अनुभव कएल जाए लागल अछि आओर यत्रतत्र निबन्धक रुपमे प्राच्य ओ पाश्चात्य काव्यशास्त्रक विभिन्न विषय लए कतेक सामग्री पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होअए लागल अछि। मुदा सुनियोजित रुपसँ सर्वप्रथम मैथिलीमे काव्यशास्त्रक पुस्तक लिखबाक ओ प्रकाशित करएबाक साहस कएल डा. जयधारीसिंह 'प्रभाकर'। हिनक **'काव्यमीमांसा'** दुइ भागमे प्रकाशित भए चुकल अछि। पुनः अत्यन्त संक्षिप्त रुपमे अत्यधिक प्रामाणिक रीतिएँ मैथिली 'अलंकारप्रवेश' लिखि प्रकाशित करबाओल प्रो. रमानाथझा। एहिठाम प. श्री बुद्धिनाथझाक **'मैथिली साहित्य-प्रकाश'** पुस्तिकाक सेहो चर्चा कएल जा सकैत अछि। महावैयाकरण दीनबन्धुझाक अपूर्ण ग्रन्थ 'अलंकारसागर' सेहो प्रकाशित भेल जे मैथिलीक प्रतिष्ठित आकरग्रन्थ थिक एवं जाहिमे कतोक अलंकार पर अत्यन्त विस्तार ओ सक्ष्मतापर्वक विचार कएल गेल छैक। काव्यशास्त्र-विपयक कविशेखर बदरीनाथझाक

पटना विश्वविद्यालयमे देल भाषण सेहो मैथिली साहित्यक एहि अंगकेँ समृद्ध करैत अछि, मुदा ओ एखन धरि प्रकाशनाधीन अछि। डा. किशोरनाथझाक **'रस-परिचय'**, प्रो. दीनानाथ ठाकुरक **'मैथिली रस-अलंकार'**, प. दामोदरझाक **'अलंकार-कमालाकर'** एवं सुमनजीक **'अलंकार-मालिका'**क सेहो एतए उल्लेख कएल जाएत। 1976 ई.क पश्चात् पटनाक मैथिली अकादेमी द्वारा प्रकाशित डा. श्री जयधारीसिंहक **'आलोचनाशास्त्र'**], डा. दिनेश कुमारझाक **मैथिली काव्यशास्त्र'** प्रो. धीरेश्वरझा 'धीरेन्द्र'क **'मैथिली काव्यशास्त्र'**, एवं डा. देवकान्तझाक **'मैथिली दशरुपक'**क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। मैथिली छन्दविषयक कार्य एकमात्र श्री गोविन्दझा कएल। हिनक **'मैथिली छन्दःशास्त्र'** संक्षिप्त, किन्तु सुन्दर छन्द-विषयक ग्रन्थ थिक।

वस्तुतः मैथिलीक आलोचना, अनुशीलन, गवेषणा ओ अनुसन्धान उन्नतिक दिशामे दिनानुदिन अग्रसर भए रहल अछि तथा एकर विविध पक्षक नित. नवीन विकास भए रहल अछि। मैथिली साहित्यक अन्य अंग जकाँ इहो अंग शीघ्र समृद्धिक सोपान पर प्रतिष्ठित भए जाएत, से सहजहिँ आशा कएल जाए सकैत अछि।

इतिहास-भूगोल-समाजशास्त्र - मैथिलीमे मिथिलाक प्राचीन इतिहासक प्रसंग कार्य अधिक भेल अछि। एतदतिरिक्त भारतक इतिहास लिखल शिवनन्दन चौधरी आ कुशेश्वरकुमर तथा सिखक इतिहास लिखल रामबिहारीमिश्र ओ शिवनन्दन चौधरी।

मिथिलाक इतिहास-लेखनक आधार भेल चन्दाझाक मिथिलाक इतिहासक प्रसंग टिप्पणी, जाहिमे किछु 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवादक परिशिष्टमे छपल ओ अधिकांश हुनक पोथामे अप्रकाशित रहल। एहि टिप्पणीक आधार पर क्रमबद्ध रीतिएँ म. .म. परमेश्वरझा 'मिथिलातत्व-विमर्श'क रचना 1907-10 ई. मे कएल जे 1949 ई.मे प्रकाशित भेल। एहि मध्य ओ सृष्टिक आदिसँ लए मिथिलाक वैभवपूर्ण अतीतक इतिहास प्रामाणिक रीतिएँ लिखबाक चेष्टा कएल, विशेषतः मिथिलाक राज़दरबार मध्य विकसित साहित्यिक ओ सांस्कृतिक उत्कर्षक। श्यामनारायणसिंहक अंगरेजी भाषामे रचित **'History of Tirhut'** एही पुस्तकक आधार पर रचित भेल। तहिना ताराचरणझाक **'प्राचीन ओ अर्वाचीन विद्वान'**क रचनाक आधार इएह ग्रन्थ भेल। पश्चात् दीनानाथझा ओ अनिरुद्धठाकुर सेहो एहि दिशामे कार्य कएल। हिन्दीमे रासबिहारीलालदासक रचित कायस्थ ओ ब्राह्मणक विषयमे इतिहास दुइ भागमे **'मिथिलादर्पण'**क नामसँ प्रकाशित भेल। ज्यो. बलदेवमिश्र सेहो एहि प्रसंग कार्य करबाक निमित्त प्रश्नावली प्रस्तुत कएने छलाह, मुदा विद्वानलोकनिक सहयोगक अभावमे किछु कए नहि सकलाह।

वस्तुतः 'मिथिलातत्व-विमर्श'क पश्चात् सबसँ महत्वपूर्ण खण्डबला-राज्यकुलक सांगोपांग इतिहास **'मिथिलाभाषामय इतिहास'** रचित भए

प्रकाशित भेल आओर प्रायः एहि रीतिक ई सर्वाधिक प्रामाणिक वस्तु थिक। परन्तु म. म. मुकुन्दझा बख्सीक एहि इतिहासमे भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं तदनुरुप पाण्डित्यपूर्ण शैली प्रयुक्त भेल जे हुनक शिक्षा ओ व्यक्तित्वक अनुकूल छल। वस्तुतः चन्दाझा, म. म. परमेश्वरझा ओ वख्सीजीक इतिहास मिथिलाक इतिहास-रचनामे मूलाधारक कार्य करैत रहत। वख्सीजीक सँग पं. त्रिलोचन झाक सेहो एहि ठाम उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। जेना वख्सीजी मिथिलाक राजालोकनिक सम्पर्कमे छलाह, तहिना त्रिलोचनझा बेतियाक राजालोकनिक। अतः हुनक **'बेतियाराजक इतिहास'** बड प्रामाणिक भेल।

प. शशिनाथ चौधरी अपन **'मिथिला-दर्शन'** (1931) ओ विद्यानन्दठाकुर अपन **'मिथिला'** (1936)मे मिथिलाक इतिहासक सार-तथ्यकेँ प्रामाणिक रीतिएँ तथा प्रवीणताक संग संक्षिप्तमे उल्लेख कएल। श्री नगेन्द्रकुमर विस्तारपूर्वक सात भागमे **'मिथिला डाइरेक्टरी'** (1946)क रचना कएल, जाहि मध्य ओ मिथिलाक आर्थिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितिक चित्रण कएल। परन्तु हुनक पूर्णिया-जिला-विषयक डाइरेक्टरी मात्र प्रकाशित भए सकल। अंगरेजीमे डा. उपेन्द्रठाकुरक शोधप्रबन्ध **History of Mithila** बड़ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल अछि, जाहिमे ओ पूर्ववर्ती सामग्रीकेँ प्रामाणिक रीतिएँ उपयोग कएने छथि। मिथिलाभाषामे सेहो हिनक **'मिथिलाक इतिहास** तथा **'मिथिलाक चित्रकला और शिल्पकला'** पटनाक मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित भेल अछि। खण्डबलाराज्यकुलक प्रामाणिक इतिहासलेखनक दृष्टिएँ डा. जटाशंकरझाक अंगरेजीमे रचित इतिहास **'History of Darbhanga Raj** एवं **Beginning of Modern Education in Mithila'** विशेष उल्लेखनीय कार्य कहल जाए सकैत अछि। एंतए डा. हेतुकरझाका **'उपनिवेशकालीन मिथिलाक गाम ओ गामघरक निम्न वर्ग'**क चर्चा कएल जाए सकैत अछि यद्यपि एकर रचना समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ भेल अछि। डा. जटाधर झाक **Mithila** सेहो उल्लेखनीय पुस्तिका थिक। सांस्कृतिक इतिहासक रचयितामे डा. उमेशमिश्र ओ प्रो. रमानाथझाक नाम अग्रण्य अछि। डा. मिश्रक 'सभ्यता **ओ संस्कृति'** प्रकाशित अछि। एकर अतिरिक्त हुनक कतोक निबन्ध-प्रबन्ध पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। पाँजिव्यवस्थाक विशेषज्ञ प्रो. रमानाथझाक मिथिलाक मूल ओ वंशक इतिहास बड़ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल, जे अंगरेजी, हिन्दी ओ मैथिलीमे प्रकाशित अछि। मैथिलीमे 'अलयीकुल-विलास' एहने रचना थिक। प्रो. जयानन्दमिश्र सेहो **'पंजीव्यवस्थाक उद्भव ओ विकास'** 1983 ई.मे प्रकाशित कएल। एहि ठाम डा. उग्रनाथझाक शोध-प्रबन्ध 'Panji and Panjikars of Mithila'क सेहो उल्लेख कएल जाएत। प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक मिथिलाक इतिहासक सेहो चर्चा कएल जाएत जे अधिकाश अंगरेजीमे प्रकाशित अछि। प्रो. चौधरीक 'Mithila in the age of Vidyapati' एतए विशेष रुपसँ उल्लेखनीय थिक। 'वैदेही'क विशेषांकमे सेहो हुनक एक गोट छोट मिथिलाक इतिहास प्रकाशित भेल छल, जाहि मध्य ओ नेपाल ओ मिथिलाक राजनीतिक ओ सांस्कृतिक सम्बन्ध पर प्रकाश देने छथि। डा. सुरेश्वर झाक **'स्वतंत्रता आन्दोलनमे**

मिथिलाक योगदान' सेहो प्रकाशित भेल अछि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे अनेक लेखकक द्वारा अनेक ऐतिहासिक निबन्ध प्रकाशित भेल, जाहि विषयमे निबन्धक प्रसंग चर्चा करैत लिखि आएल छी।

दर्शन, धर्म ओ मनोविज्ञान :- एहि प्रसंग अधिकांश कार्य अनुवादमूलक भेल अछि। यथा, विद्यानाथ ठाकुर द्वारा 'भगवद्गीता', 'दुर्गासप्तशती' एवं 'उपनिषद्' तथा तकर संकलन 'उपनिषद्-दीपिका'क अनुवाद, देवानन्दझा द्वारा 'कठोपनिषद्', छेदीझा द्वारा 'इशावाश्योपनिषद्', रमानाथझा द्वारा 'छान्दोग्य' एवं 'वृहदारण्य', वेदमित्र मिश्र द्वारा यजुर्वेदक किछु अंशक एवं भुवनेश्वरझा वैद्य द्वारा योगवाशिष्ठक अनुवाद प्रभृति। वेदान्तक परिचयात्मक विश्लेषणक दृष्टिएँ मधुसूदनझा विद्यावाचस्पतिक **'प्राकृतदर्शन'** ओ सर डा. गंगानाथझा-कृत **'वेदान्तदीपिका'** अधिक महत्वपूर्ण कार्य कहल जाए सकैत अछि।

बहुतो मैथिली लेखकक़ें सांख्यदर्शन आकृष्ट कएलक। एहि मध्य बाबू क्षेमधारीसिंहक **'सांख्य-खद्योतिका'** तथा पं. दुर्गाधरझा **'सांख्य-शास्त्र'** पुस्तकाकार प्रकाशित अछि। 'सांख्यखद्योतिका'क रचना सांख्य-सूत्रक आधार पर भेल अछि एवं 'सांख्यशास्त्र'क ईश्वर कृष्णक कारिकाक आधार पर। प्रथम सरल शैलीमे सामान्य पाठकक हेतु उपयोगी अछि तँ दोसर अत्यधिक शास्त्रीय भए गेल अछि ओ तँ सर्वसामान्यक हेतु सुलभ नहि अछि। डा. उमेशमिश्र द्वारा प्रक्ट कएल गेल वाचस्पतिमश्रक सांख्य-कारिकाक प्रतिपादन पर शंका 1944 मे प्रकाशित भेल, जकर प्रसंग तर्क-वितर्कमे भाग लेलैन्हि महावैयाकरण दीनबन्धुझा ओ राजपंडित बलदेव मिश्र। न्याय-सम्बन्धी निबन्धक रचयितामे आनन्दझा (न्याय), उग्रानन्द झा ('सर्वदर्शनसंग्रह'), म. म. डा. उमेशमिश्र ('प्राचीन वैष्णव-सम्प्रदाय') आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि।

दर्शन-ग्रंथक रुपमे पंडित यशोधरझाक **'मिथिलावैभव'** विशेष रुपसँ उल्लेखनीय अछि, जकरा 1966 ई. मे साहित्य अकादेमी द्वारा मैथ्लीक उत्कृष्टतम ग्रन्थक रुपमे प्रथम बेर पुरस्कार लाभ करबाक सौभाग्य प्राप्त भेलैक। एहि मध्य मिथिलाक दार्शनिक वैभवक विस्तृत रुपरेखा प्रस्तुत कएल गेल छैक। मुदा इहो पुस्तक सर्वसामान्यक हेतु पूर्ण उपयोगी नहि अछि।

अन्य दार्शनिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक उल्लेखनीय कृतिसमुदायमे बाबू क्षेमधारीसिंहक **'मनोविज्ञान'**, म. म. मुकुन्दझा बख्सीक अनेक कर्मकाण्ड ओ

आचार-विषयक लेख, लालदासक 'स्त्रीधर्मशिक्षा', बलियासेक यज्ञेश्वरझाक 'स्त्रीधर्म-प्रकाशिका', हनुमाननगरक यज्ञेश्वरझाक 'नारी-आचरणमाला', सीतारामझाक पर्वनिर्णय' एवं म. म. महेशठाकुरक अतिचार-निर्णयक अनुवाद, जगमोहनझाक 'मिथिलाक आचाराचार', पं. रामदेवझाक 'सृष्टितत्व' ओ 'शक्तिसाधना' तथा मिथिलाक व्यवहार, आचार, धर्म आदिक प्रसंग भेषनाथझाक प्रसिद्ध विस्तृत परिचय-ग्रन्थ **'व्यवहार-विज्ञान'** प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि ठाम माधवझाक शास्त्रीक धर्मशास्त्रीय एवं आध्यात्मिक टिप्पणीलेखक सेहो चर्चा कएल जाए सकैत अछि। घनानन्दझा अपन **'घटकराज'**मे मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण-कायस्थक सामाजिक रुपरेखा प्रस्तुत कएल जे आइ-काल्हि म. हरिसिंह देवक नाम पर चलैत अछि तथा जकर बन्धन दिनानुदिन शिथिल भेल जाइत अछि। गत दीर्घ कालावधिमे एहि विषयक कोनो स्वतन्त्र ग्रन्थ मैथिलीमे प्रकाशित भेल दृष्टिपथ पर नहि आएल अछि, परन्तु यत्र-तत्र बड़ थोड़ संख्यामे पत्र-पत्रिका मध्य अनेक निबन्ध प्रकाशित भेल अछि। एही दृष्टिएँ पं. श्री सहदेवझाक 'मण्डन अद्वैत-वेदान्त', श्री बुद्धिनाथ मिश्रक 'महाकालक पराशक्ति' तथा 'महाशक्तिक स्वरुप-चिन्तन', श्री शशिनाथझाक 'ध्यायेन्नित्यंमहेशम्', श्री कृपाकान्तझाक 'प्रलय आ सृष्टि', श्री आद्यानाथझा 'निरंकुश'क 'सुखरात्रि ओ मिथिला', श्री गंगाधरमिश्रक 'गयाक पिण्डदान', श्रीजगदानन्दझाक 'धार्मिक नियममे परिवर्तन', ललित श्री उपेक्षितक 'धर्म ओ शक्तिक प्रतीक नारी', श्रीसूर्यनारायणचौधरीक 'दमन'ओ 'चिन्तायोषोन्माद' प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

वस्तुतः मिथिला धर्म-दर्शन ओ चिन्तनक कर्मभूमि रहल अछि। मुदा मैथिली मध्य एहि प्रकारक साहित्य पर्याप्त नहि कहल जाए सकैत अछि ओ ने एहि दिसि कार्य करबाक प्रवृत्ति सएह परिलक्षित होइत अछि।

एहि प्रकार मैथिली गद्य-साहित्यक वस्तु ओ शिल्पमे विविध ओ अद्भुत विकास भेल अछि तथा एहि विकासक गति क्रमिक अधिकाधिक द्रुत-शील भए रहल अछि।

उपसंहार

मैथिली साहित्यक इतिहासक संक्षिप्त परिचयसँ मैथिली भाषा-साहित्यक अपरिमित जीवनी-शक्तिक अनुमान कएल जाए सकैत अछि। आधुनिक युगसँ पूर्व भाषाक साहित्य संस्कृत-साहित्यक गौरव-भारसँ दाबल छल। शिक्षित-समाज एकरा प्रति उदार नहि छल। मुदा सर्वदासँ मैथिली भाषा-साहित्य जनसामान्यक संवेदना-सहानुभूतिसँ रसग्रहण कए स्पन्दित भए प्रगतिक मार्ग पर अग्रसर होइत रहल तथा एकर गति कहिओ अवरुद्ध नहि भेलैक। जेना प्रस्तरशिलाकेँ फोड़ि निर्झरक जीवनसरिता विकासारुढ़ होइत उर्बर समतल भूमिकेँ रससिनग्ध बनबैत अछि, तहिना

विविध गद्य-पद्यात्मक ग्रन्थरत्नकेँ विकीर्ण करैत सदैवसँ मैथिली साहित्य जनजीवनक मानस-भूमिकेँ आह्लादित करैत रहल अछि। एहि विकासक वेगमे रुकल नहि, वरन् रहल अछि सौम्य, सरस ओ मधुर रहितहुँ अन्तस्तलमे ई असीम उद्दाम शक्तिक संग्रह करैत रहल अछि। एही कारणे मैथिलीक विकासधारा मिथिलहिटामे नहि प्रवाहित भेल, प्रत्युत मिथिलाक अतिरिक्त एकर एक प्रधान धारा उत्तर नेपालमे एवं दोसर पूर्वांचल-प्रदेशसभमे प्रवाहित भेल। मुदा प्रवासी होइतहु ई मैथिलीक विकासधारा अपन स्वदेशी सांस्कृतिक गरिमाक कहिओ परित्याग नहि कयलक, प्रत्युत प्रवासी तत्त्वसभकेँ ग्रहण कए ओहिसँ अपन वैशिष्ट्यकेँ आओर अधिक समृद्ध करैत गेल।

जीवन्त भाषा साहित्यक विकासधाराक गति कहिओ आहत ओ विच्छिन्न नहि होइत अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासक अवलोकनसँ इहो स्पष्ट भए जाइत अछि जे मैथिली साहित्य कतेक जीवन्त साहित्य थिक। नित नूतन नवीनताकेँ ग्रहण करितहुँ एकर परम्परा कहिओ अवरुद्ध नहि भेल तथा 'पूर्व आ' 'पर', प्राचीन ओ नवीन कारण-कार्यक रूपमे सदैवसँ तादात्म्यभावसँ आबद्ध रहल। एकर विकास प्रतिक्रियामे नहि, युगानुरूप भावग्रहण द्वारा भेल ओ तकर द्योतन युगीन आवश्यकताक अनुकूल होइत रहल अछि। मैथिली साहित्यक उत्पत्ति जनसामान्यक हृदयसँ भेल। अतः एहि मध्य जनमानसक मनोरञ्जक गीत ओ नाटकक प्रधानता रहल। मुदा युग बदलितहिँ ई बिनु हृदयक परित्याग कयने यथार्थक ठोस भूमिकेँ पकड़ि लेलक अछि। जतबा थोड़ समयमे मैथिलीक उपयोगी विविध रीतिक गद्य-साहित्यक निर्माण भेल अछि तथा जाहि मात्रामे भेल अछि, से एकर युग-जीवनक संग घनिष्ठ सम्बन्धक परिचायक थिक। कविताक क्षेत्रहुमे जतेक नित नूतन नवीनताक संचार भए रहल अछि, से मैथिली साहित्यक युग-बोध ओ युग-संवेदनशील स्वभावकेँ सूचित करैत अछि।

मैथिली साहित्य पहिने संस्कृत-भाषाक गौरवसँ दाबल छल। अतः एकर विकासक गति मन्द छलैक। मुदा आब समय बदलि गेल छैक, लोकक दृष्टिकोण बदलि गेल छैक। आब भाषा-साहित्यक गौरवक युग आबि गेल अछि। आब मैथिली भाषा-साहित्य मुक्त ओ स्वच्छन्द वायुक सेवन कए रहल अछि। एकर विकास-मार्ग आब प्रशस्त छैक। चरणमे प्रभंजनक वेग आबि तुलायल अछि। अतः शीघ्र एहि साहित्यक अभूतपूर्व विकास होयत ओ कोनो आधुनिक भाषासँ बहुविधि विकासक मार्गमे पश्चात्पद नहि होयत। हमरालोकनिक ई आशा करब सर्वथा समीचीन आ युक्तिसंगत अछि।

***

परिशिष्ट

प्रमुख मैथिली साहित्य-सेवी-संस्था

आधुनिक युगक नव-जागरण उपस्थित होइतहि मैथिली भाषा-साहित्यक उत्थानक निमित्त संगठित ओ योजनाबद्ध प्रयासक हेतु अनेक संस्था ओ समितिक स्थापना भेल, किन्तु परम खेदक विषय जे तकर प्रामाणिक ऐतिहासिक विवरण कतहु उपलब्ध नहि अछि। आब ई अनुसंधानक विषय बनि गेल अछि। सम्प्रति एतय हम यथोपलब्ध प्रमुख-प्रमुख मैथिली साहित्य-सेवी संस्थाक संक्षिप्त इतिवृत्ति प्रस्तुत कए रहल छी, किन्तु एकरा पूर्ण ओ सांगोपांग नहि बुझबाक थिक।

दरभंगा राज- वस्तुतः मैथिली साहित्यक आरम्भ दरभंगा राजहिक अन्तर्गत भेल। मैथिलीक अधिकांश कवि-नाटककार दरभंगा राजहिक छत्रच्छायामे अपन अमर कृतिसमुदायक प्रणयन कयल। आधुनिक अर्थहुमे मैथिली साहित्यक उत्थानक योजनाबद्ध कार्य म. लक्ष्मीश्वर सिंहक प्रेरणासँ आरम्भ भेल छल, जकर विवरण कवीश्वर चन्दाझा सन् 1889 ई.मे प्रकाशित 'पुरुष-परीक्षा'क अपन मैथिली अनुवादक भूमिकामे देने छथि। म. लक्ष्मीश्वर सिंह (1858-1898) ओ म. रमेश्वर सिंह दुहू भाइ अंग्रेजी शिक्षित छलाह ओ अंग्रेजी शिक्षाक कारणे भाषासाहित्यक महत्त्वसँ अवगत भेल छलाह। ओहि समय मिथिलामे हिन्दीक बड़ प्रचार छल ओ एहि ठामक संस्कृत-शिक्षित-वर्ग भाषासाहित्यक प्रसंग किछु सोचितहुँ नहि छलाह। ओ राज्यासीन होइतहिँ अपन 2 अगस्त 1880 ई.क आज्ञापत्रमे सनद, पट्टा आदिकेँ तिरहुतिया (मैथिली) अथवा हिन्दीमे लिखबाक आज्ञा देल जे ताबत धरि उर्दूमे लिखल जाइत छल। हुनकहि प्रेरणासँ कवीश्वर चन्दाझा 'पुरुष-परीक्षा'क मैथिली अनुवाद ओ 'मिथिलाभाषा रामायण'क रचना कयल जे दरभंगाराजहिक व्ययसँ मुद्रित भए वितरित भेल। 'पुरुष-परीक्षा'क भूमिकासँ ज्ञात होइत अछि जे म. लक्ष्मीश्वर सिंहक आदेशसँ अनेक प्राचीन ग्रन्थक संग्रह भेल छल ओ भए रहल छल। हुनक इहो योजना छल जे विद्यापति-पदावलीक संग्रह ओ तकर विशुद्ध प्रकाशन हो, परन्तु दरभंगा राज द्वारा से तँ नहि भए सकल। म. लक्ष्मीश्वर सिंह अल्पजीवी भेलाह, किन्तु हुनक योजनाक यत्किंचित कार्यान्वयन म. रमेश्वर सिंह ओ अन्तिम नरपति म. कामेश्वर सिंह द्वारा सम्पन्न भेल। पश्चात् 'रामतरंगिणी', 'प्रभावती-हरण', चन्द्रपद्यावली प्रभृति दरभंगा राजहिक द्वारा प्रकाशित भेल। दरभंगा राजहिक छत्रच्छाया मे कवीश्वर चन्दाझाक अतिरिक्त, विन्ध्यनाथझा, गणनाथझा, मुंशी रघुनन्दनझा, तुलापति सिंह, म. म. गंगानाथझा, म. म. परमेश्वरझा, प्रो. रमानाथझा आदि अनेक आधुनिक मैथिलीक आदि-साहित्य- निर्माता भेलाह जे वास्तविक अर्थमे आधुनिक मैथिली साहित्यक शिलान्यास कयल, एकर विशाल अट्टालिका-निर्माणक प्रेरणा देल। 1909 ई.मे 'मिथिलामिहिर'क प्रकाशन सेहो भेल जाहिमे मैथिलीक स्थान

क्रमिक प्रमुख होइत गेल ओ 1960 ई.क पश्चात् प्रकाशित 'मिथिलामिहिर' नवीनरीतिक साहित्यक विकासमे कोन रुपक योगदान देलक, से विशेष व्याख्या-सापेक्ष नहि अछि। एतबहि नहि, पटनाविश्वविद्यालयमे मैथिलीक सर्वप्रथम स्वीकृति (मैट्रिक कक्षामे ऐच्छिक विषयक रुपमे) दरभंगा राजहिक प्रयासक फलस्वरुप भेल। स्वयं म. कामेश्वर सिंह 28-11-1938 कैं पटना सिनेटमे सम्मिलित भए प्रस्ताव पारित करबओने छलाह ओ हुनकहि द्वारा पटनाविश्वविद्यालयमे 'मैथिली चेयर'क स्थापना भेल छल।

वस्तुतः एहि शताब्दीक आरम्भ होएबाक अनन्तर मैथिल जातीय, संग-संग अनेक मैथिली-साहित्य-सेवी संस्थाक जन्म भेल ओ एहि शताब्दीक आरम्भहिमे जाहि संस्थाक स्मरण कएल जाइत अछि, से थिक मिथिला रीसर्च सोसाइटी अर्थात् मिथिलानुसन्धान-समिति।

मिथिलानुसन्धान-समिति- एहि समितिक प्रसंग प्रो. रमानाथझा अपन 'कवीश्वर चन्दाझा' निबन्धमे उल्लेख कएने छथि- "कवीश्वर कार्यसँ मुग्ध भए, हुनकहि प्रेरणा पाबि, एहि शताब्दीक आरम्भमे एतए दरभंगामे एक गोट 'मिथिलानुसन्धान-समिति'क स्थापना भेल छल जकर प्राण छलाह स्वर्गीय चेतनाथझा प्रसिद्ध कृष्णजी बाबू ओ मन्त्री छलाह स्वर्गीय बाबू केशी मिश्र। एकर सदस्य छलाह स्वर्गीय वख्शीजी, गणनाथ बाबू, मुन्शी रघुनन्दनदास ओ बाबू तुलापति सिंह साहेब। इहोलोकनि थोड़ काज नहि कएल, परन्तु युगे ओ तेहन छल जे शिक्षितोसमाजसँ हिनकालोकनिकेँ प्रोत्साहन नहि भेटल जकर फलस्वरुप इहो समिति पश्चात् भगन भए गेल ओ पाछाँ तँ ईलोकनि अपनहु एकरा 'मुर्दाक्लब' कहए लगलाह।" (प्र.सं.पृ. 177)। एहि समितिसँ कोन-कोन कार्य भेल से ज्ञात नहि अछि। अनुमानतः प्राचीन साहित्यक अनुसंधान भेल। 'मैथिल हित-साधन' पत्रिकामे एकर विज्ञापन प्रकाशित भेल छल जाहिसँ ज्ञात होइत अछि जे एकर संरक्षक छलाह तत्कालीन मिथिलेश म. रमेश्वर सिंह एवं एकर स्थापना 1905 ई.क किछु पूर्वहि भेल छल। एहि संस्था उद्देश्य छल- 1. संस्कृत विद्याक उन्नति 2. प्राचीन ग्रन्थक अन्वेषण ओ मुद्रण, 3. मिथिला ओ मैथिल विद्वानक इतिहास-लेखन 4. मिथिलाक स्थान ओ वस्तुक अन्वेषण ओ यथासाध्य जीर्णोद्धार 5. देशाचारानुसार आओर विषयक उन्नति। एकर अध्यक्ष रहथि कलकत्ता हाइ कोर्टक जज शारदाचरणदत्त तथा सदस्यगणमे म. म. गंगानाथझा, म. म. चित्रधरमिश्र, म. म. परमेश्वरझा, प्रभृति। डा. जयकान्त मिश्र 1918 ई.मे गणनाथझा ओ मुन्शी रघुनन्दनदास द्वारा स्थापित 'मैथिली क्लब'क उल्लेख अपन इतिहासमे कएने छथि, से प्रायः मिथिलानुसन्धान- समितिसँ भिन्न छल, किन्तु एहि 'मैथिली क्लब'-हुक द्वारा कएल कोनो उल्लेखनीय कार्यक सूचना नहि भेटैत अछि।

वस्तुतः एहि शताब्दीक पूर्वहि, विशेषतः मिथिलेतर प्रान्तमे प्रवासी मैथिलवृन्द द्वारा अनेक जातीय सोसाइटीक स्थापना भेल छल, यथा, संयुक्त प्रान्तीय मैथिल ब्राह्मणसभा, (आगरा 1889, अजमेर 1896, अलवर 1898), पश्चात् मालदहक बंगीय मैथिल ब्राह्मण-सभा, मैथिल ब्राह्मण-सभा, जबलपुर 1908, इटावा 1925, झाँसी, हाथरस, मथुरा आदि। परन्तु एहि सभाक उद्देश्य शुद्ध साहित्यिक नहि छल, मैथिलसमाजक संघटन करब एकर उद्देश्य छल तथा एकर दोसर उद्देश्य मिथिलाक मैथिलसमाजसँ सम्बन्ध-सूत्र स्थापित करब। किन्तु प्रकारान्तरेँ मैथिली साहित्यहुक एहिसँ उपकार भेल तथा पश्चात् 'मैथिल-प्रभाकर' ओ 'मैथिल-बन्धु' सदृश पत्रिकाक प्रकाशन भेल।

साहित्योत्थानक दृष्टिएँ, 1910 ई.क पूर्व, तीन गोट एहन संस्थाक जन्म भेल जे मैथिली साहित्यक विकासकेँ अद्भुत गति प्रदान कएल। एहिमे प्रथम 1905 ई.मे बनैली राजक साहाय्यसँ रामानन्द ठाकुरक द्वारा मधुबनी मे स्थापित 'मैथिली प्रिंटिंग वर्क्स' छल, जकर द्वारा ओ केवल स्वयं अपन लिखल पुस्तकहिक योजनाबद्ध प्रकाशन-कार्य आरम्भ नहि कएल, प्रत्युत एहि संस्था द्वारा अन्य विद्वज्जनहुकेँ प्राचीन साहित्यक अनुसंधान ओ नवीन साहित्यक निर्माणक हेतु प्रेरित कएल एवं तकर मुद्रण कएल।

एहि अवधिक दोसर उल्लेखनीय संस्था ओही वर्ष जयपुरमे स्थापित भेल- 'मैथिल-हित-साधन-समिति', अलवर राज्यक न्यायाधिकारी प. रामभद्र झा ओ राज-पण्डित विद्या-वाचस्पति मधुसूदन झाक सम्मिलित प्रयाससँ आओर 'मैथिलहित साधन-समिति'क प्रथम प्रकाशन-पुष्प समर्पित भेल जगमोहनझा- रचित 'मैथिल-चारु-चर्या'क, जकर मुख-पृष्ठकेँ अपन पत्रकारिताक इतिहासमे अमरजी छपबाए देने छथि। परन्तु ई 'मैथिल-हित-साधन पत्रिका'क प्रथम अंक थिक, से ज्ञात नहि होइत अछि। प्रायः लगले पश्चात् वास्तविक अर्थमे 'मैथिल-हित-साधन पत्रिका' प्रकाशित भेल ओ एहि प्रकार मैथिलीमे पत्रकारिताक इतिहास आरम्भ भेल। अतः एहि संस्थाक साहित्य-सेवाक दृष्टिएँ विशेष महत्त्व अछि।

तेसर संस्था प्रायः ओही वर्ष स्थापित भेल काशीमे **विद्वज्जन-समिति**, म. म. मुरलीधर झाक नेतृत्वमे तथा 'मिथिलामोद' पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासोमे 'मिथिलामोद'क उल्लेख कएल जाए चुकल अछि। अतः एतए पुनरुक्ति आवश्यक नहि अछि।

परवर्त्ती कालमे मिथिलेतर प्रान्त मे 1930 ई. धरि स्थापितसंस्थासबहिकसूची डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे देने छथि। ई संस्था-सब छल मैथिल-शिक्षित-समाज (कलकत्ता, 1919), मैथिल-सम्मेलन, (कलकत्ता, 1923, पटना, 1924), सुबोधिनी-सभा (पूर्णिया), मैथिल छात्र सम्मेलन (भागलपुर, 1910, बनारस, 1920, मुजफ्फरपुर, 1924, पटना, 1924), मैथिल युवक-संघ (पूर्णिया, 1930) प्रभृति। एहि संस्थासबहिक गतविधिक प्रसंग कतहु किछु सूचना प्राप्त नहि अछि, केवल मुजफ्फरपुरक छात्र-सम्मेलनक प्रसंग प्रो. तन्त्रनाथझाक 'कविशेखर-पुष्पांजलि'मे प्रकाशित 'एकावली-परिणय'क प्रसंग हुनक निबंधसँ विस्तृत सूचना प्राप्त होइत अछि, जकर उल्लेख आगाँ कएल जाएत। परन्तु एतबा अवश्य जे

एहि संस्थासबहिसँ मैथिल जन-जागरणमे अवश्य नवीन क्रियाशीलताक उदय भेल होएत। डा. मिश्र बंगालक रॉयल एसियटिक सोसाइटी, नागरीप्रचारणी सभा प्रभृति जकाँ स्थापित अनेक संस्थाक सूचना सेहो देने छथि जाहिमे मिथिला रिसर्च सोसाइटी आ मैथिल-कलबक अतिरिक्त मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी, 'मैथिल-साहित्य-सभा, मैथिल विद्वद समिति (बनारस आ दरभंगा), मिथिला-ग्रन्थमाला (दरभंगा ओ बनारस), मैथिली-साहित्य-भवन (पूर्णिया) आदिक चर्चा कएने छथि। परन्तु एहि संस्था-समितिक क्रियाकलाप एहिसँ सूचित नहि होइत अछि।

वस्तुतः दरभंगाहिमे 1910 ई. धरि दुइ गोट एहन संस्थामूलक घटना उपस्थित भेल जाहिसँ मैथिली साहित्यक विकासपर दूरगामी प्रभाव पड़ल ओ ई दुहू घटना दरभंगा-राज द्वारा सएल संचालित भेल। ई प्रथम घटना 'मिथिला-मिहिर'क प्रकाशन छल ओ दोसर मैथिल महासभाक स्थापना। 'मिथिला-मिहिर'कैं केवल एक पत्रिका मात्रक संज्ञा नहि देल जाए सकैत अछि, ओ स्वयं एक व्यापक संस्था सिद्ध भेल तथा दीर्घकाल धरि मैथिली साहित्यक विकासक दिशा प्रशस्त करैत रहल। पत्रकारिताक इतिहासमे एहि प्रसंग विस्तृत उल्लेख कएल जाए चुकल अछि।

अ. भा. मैथिल महासभा- एकर स्थापना तत्कालीन मिथिलेश म. रमेश्वर सिंह द्वारा भेल सन् 1910 ई. मे ओ ओही वर्ष (1317 साल) एकर नियमावली सेहो मुद्रित भेल छल। एकर आजीवन अध्यक्ष मिथिलेश निर्धारित भेलाह म. रमेश्वर सिंह ओ तत्पश्चात् म. कामेश्वर सिंह। म. कामेश्वर सिंहक देहावसान पश्चात् कुमार जीवेश्वर सिंह ओ हुनक पदत्यागक अनन्तर कुमार श्रीशुभेश्वर सिंह। एकर अन्तिम कार्यकारिणक गठन 30 अप्रैल 1968कैं भेल, परन्तु तत्पश्चात् एकर एकहुटा अधिवेशन नहि भेल ओं तहिआसँ ई पूर्ण निष्क्रिय भेल अछि। एकर भवनमे सम्प्रति कोनो पब्लिक स्कूल चलि रहल अछि। एखन धरि एकर चारि गोट प्रधानमंत्री भेलाह अछि- पं. कपिलेश्वर झा (ओकील), पं. गंगाधर मिश्र (एडवोकेट), पं. शिवशंकर झा (एडवोकेट) तथा प्रो. श्री पुरुषोत्तम झा।

मिथिलेश म. रमेश्वर सिंह मैथिल महासभाक स्थापना अखिल भारतीय मैथिल समाजकैं संघटित करबाक हेतु कएने छलाह, मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक उन्नति-सम्पादनार्थ, रुढ़ि-रीति-निवारणार्थ नव जागरण उपस्थित करनाक निमित्त। एकर प्रथम अधिवेशन 27-29 मार्च 1910 ई.कैं मधुबनीमे भेल आओर एहि अधिवेशन मध्य नओ सूत्रीय प्रस्ताव पारित भेल छल। ई नओ सूत्रीय प्रस्ताव छल- 1. राजभक्ति, 2. सदाचार-प्रसार, 3. विद्योन्नति, 4. सामाजिक कुरीतिक परिहार, 5. उचित व्यय, 6. परस्पर विरोध-परिहार, 7. कृषि-वाणिज्य-उन्नति, 8. मिथिला-मैथिल हित-साधन एवं 9. मैथिलीक सत्व-रक्षा।

वस्तुतः एहि नओ सूत्रीय प्रस्तावक ऐतिहासिक महत्व अछि कारण, एहि प्रस्ताव मे जाहि विषयकैं सूचीबद्ध कएल गेल, से तत्कालीन जन-मानसक आवेगात्मक

उद्गार छल ओ एहि सब विषय पर छन्दाबद्धसँ लऽ तत्कालीन अनेक साहित्यकारलोकनिक रचना उपलब्ध होइत अछि। संघटित कएँ प्रस्ताव पारित भेलासँ एहि सब विषय पर साहित्याभिव्यक्तिक गति आओर तीव्र भए उठल ओ तत्पश्चात्क दुइ-तीन दशक धरिक अधिकांश मैथिली साहित्य एही विषयसब पर आधारित अछि।

मैथिल महासभाक अखिल भारतीय समाजमे विशिष्ट प्रभाव छल। वार्षिक अधिवेशन मिथिला ओ मिथिलेत्तर प्रान्तहुमे आयोजित भेल, यथा, पुष्कर, आगरा, मन्दार, मधुसूदन अजमेर, बौंसी, हरहार, दरभंगा, मधुबनी, सरिसब, बेनीपट्टी, सीतामढ़ी, दुर्गागंज, फारबिसगंज, देवघर, सहरसा आदि स्थानमे। मैथिल महासभाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य छल शिक्षाक प्रत्येक क्षेत्रमे छात्रवृत्ति देब, खासकए आधुनिक अंगरेजी शिक्षाकैं प्रोत्साहित करब। एहिसँ अतिरिक्त मिथिलाक सांस्कृतिक पुनरुत्थान, सामाजिक कुरीतिक निवारण, मिथिलाक पंचांगसबमे एकसूत्रता आनब। एकर सदस्यता ब्राह्मण ओ कायस्थ मात्रक हेतु प्रतिबन्धित छल, कारण दुहू जाति मात्रमे पंजीबद्धताक व्यवस्था छलैक, समान सामाजिक ओ व्यावहारिक दृष्टिकोण छलैक। पश्चात् एहि प्रतिबन्धताक हेतु एकर आलोचना सेहो भेल, कारण, एहिसँ मिथिलाक अन्य जातिक लोक मैथिल-पदसँ वंचित भए गेलाह आओर से मैथिली भाषा-साहित्यक व्यापक हित-रक्षाक प्रचारमे बाधक भेल।

मैथिल महासभा मुख्यतः सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था छल, परन्तु नओ सूत्रीय प्रस्तावक अन्तिम सूत्र छल मैथिलीक सत्व-रक्षा ओ तेँ मैथिल सभाक अधिवेशनसबहिमे एकटा बैसक शुद्ध साहित्यिक सेहो होइत छल, जाहिमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक समस्या पर विचार-विमर्श होइत छल तथा कवि-सम्मेलनक सेहो आयोजन होइत छल। एहि प्रकार मैथिल महासभामे मैथिली साहित्य-परिषद् सेहो गर्भस्थ छल आओर ओही गर्भसँ 1930-31 ई. मे मैथिली-साहित्य-परिषद्‌क जन्म भेल। अतः मैथिल महासभाकैं सएह मैथिली साहित्य परिषद्‌क-जनक कहल जाए सकैत अछि।

मिथिलाक्षरांकन-समिति- मिथिलामे मुद्रणालयक स्थापना भेल अथवा मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ भेल तँ मिथिलाक्षर दिसि ध्यान नहि देल गेल आ प्रचारार्थ देवनागरी सएह लेल गेल। एहिसँ बड़का समस्या उपस्थित भेल- हिन्दी भक्तलोकनि एकरा हिन्दीक बोली कहए लगलाह तथा मिथिलाक लेखन-शैली सेहो भ्रष्ट होइत गेल। एहि दिसि जागरूक मैथिल विद्वज्जनक ध्यान 1925 ई. मे गेलैन्हि एवं मिथिलाक्षरांकन-समितिक स्थापना जीवनाथ रायक प्रेरणासँ भेल, मैथिली लिपिक प्रचारार्थ। एहि समितिक संयोजनमे हुनका सहायता भेटलैन्हि राजपण्डित बलदेव मिश्र, गंगाधर मिश्र, हरिवंश झा (मुख्तार), सिद्धनाथ मिश्र, उदितनारायण दास एवं सर्वोपरि पुस्तक-भंडारक अध्यक्ष रामलोचणशरण जीसँ जे एक हजार टाका एहि हेतु प्रदान कएल। कलकत्ताक टाइप फाउंड्रीसँ टाइप ढरबाओल गेल तथा दुर्गासप्तशती, सत्यनारायण-पूजा पद्धति ओ गोसाँइ नामक पुस्तक छापल गेल तथा 'परमात्मा' नामक

पोथी अपूर्ण छपल ताँ विद्यापति प्रेसक बन्द भए गेलाक कारणे ई अपूर्ण रहि गेल। पश्चात् इहो समिति निष्क्रिय भए गेल।

डा. बाल गोविन्द झा 'व्यथित' अपन इतिहास (1988)मे 1930 ई. पूर्वक किछु संस्थाक चर्चा कएने छथि, तकर एतए सेहो उल्लेख कएल जाए रहल अछि।

(क) **सुबोधिनी सभा, चम्पानगर-** समस्यापूर्ति एवं लेख-रचनादिक हेतु एकर स्थापना भेल छल। 'मिथिला-मोद' क वर्ष 3 उदार 28-29 मे वार्षिकोत्सवक सूचना प्रकाशित अछि। अतः ई संस्था 1908-9 ई. मे स्थापित भेल होअए,से सम्भव।

(ख) **मैथिल छात्र-समिति, भागलपुर-** एकर स्थापना 1910 ई. मे मैथिलीक विकासक उद्देश्य सँ भेल छल। एकर वार्षिकोत्सवक अवसर पर म. म. डा. गंगानाथझा, डा. अमरनाथ झा, राजा टंकनाथ चौधरी प्रभृति उपस्थित भेल छलाह।

(ग) **मैथिली शिक्षित समाज, कलकत्ता-** मैथिली छात्रवृन्द द्वारा एकर स्थापना 1919मे भेल तथा राजा कमलानन्दन सिंहक अर्थ-साहाय्यसँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली चेयरक स्थापना तथा मैथिलीक स्वीकृतिमे सफलता प्राप्त कएल।

(घ) **मैथिलनी छात्र-समिति, काशी-** एकर स्थापना 1921 ई. मे भेल तथा एकरा द्वारा म. म. बालकृष्णमिश्रक सम्पादित 'विद्यापति पदावली', प्रबोधनारायण चौधरी-रचित कथा-संग्रह 'बीछल फूल' प्रभृति प्रकाशित भेल।

(ङ) **मैथिली सम्मेलन, मधुबनी-** एकर स्थापना प. रामभद्रझाक अध्यक्षतामे 1923मे भेल मैथिली आन्दोलनकेँ आगाँ बढ़एबाक निमित्त।

उपर्युक्त संस्थाक अतिरिक्त 1930 ई. क पूर्व मुजफ्फपुरक 'मैथिल समिति'क सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जकर स्थापना 1924 ई. मे भेल छल, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय एवं जी. बी. बी. (एल. एस.) कालेजक मैथिल छात्र-समुदाय द्वारा जकर कार्य-सम्पादनमे तत्कालीन मैथिल प्राध्यापकलोकनिक पूर्ण सहयोग रहैत छल। एहि समितिक संयोजक आ मंत्री छलाह बेतियानिवासी तत्कालीन बी. ए. क छात्र भुवनेश्वर झा। मैथिल छात्रक सर्वोपरि समस्या छलैक मिथिलाभाषाक मैथिलीक मातृभाषा रूपमे पटना विश्वविद्यालयमे स्वीकृति नहि होएब। एहि मैथिल समिति द्वारा सएह सर्वप्रथम एहि हेतु योजनाबद्ध प्रयास आरम्भ भेल तथा एकरे सदुद्योगसँ तथा कविशेखर बदरीनाथ झा प्रभृति प्रभावशाली व्यक्तिक अनुरोधक कारणे एहि हेतु प्रथम प्रयास स्व. प्रो. सुरेन्द्रनाथ मजुमदार कएने छलाह। यद्यपि पटना सिनेटमे हुनक ई प्रस्ताव स्वीकृत नहि भेल, परन्तु पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक इतिहासमे ई सदैव स्मरणीय रहि। एहि छात्र-समितिक वार्षिक अधिवेशन बहुत वर्ष धरि उत्साहक संग होइत रहल आ एक अधिवेशनमे प्रो. हरिमोहनझा, प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन', पं. रामचन्द्र मिश्र, प्रो. तन्त्रनाथ झा एवं श्री अनिरुद्धमिश्र (इंजीनियर)कें साहित्यालंकारक उपाधि भेटल छलैन्हि। एहि समितिकेक अनुरोधसँ प्रो. रमानाथ झा अपन मैथिली साहित्यक इतिहासक रचना आरम्भ कएल जे प्रकाशित तँ नहि भए सकल, किन्तु तकरासँ एक गोट उद्धरण डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासक द्वितीय भागमे सम्मिलित कएने छथि।

मैथिली साहित्य-परिषद्, दरभंगा- ई मैथिल महासभाक गर्भसँ उत्पन्न भए सन् 1930 ई. मे अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्व स्थापित करए लागल, मिथिला भाषा, लिपि ओ साहित्यक व्यापक हित-रक्षार्थ। एकर संस्थापनाक हेतु कालीकुमारदत्त, शशिनाथचौधरी, नागेश्वरमिश्र, धनुषधारी लालदास, भोलालालदास प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाइत अछि। आरम्भमे एकरा कुमार कृष्णानन्द सिंहक विशेष सम्पोषण प्राप्त भेलैक तथा एकर प्रथम प्रधानमन्त्री भेलाह शशिनाथ चौधरी। एकर प्रथम अधिवेशन 1931 ई. मे भेल छल कुमार गंगानन्दसिंहक अध्यक्षतामे। दोसर अधिवेशन एकर भेल घोघरडीहामे म. म. डा. उमेशमिश्रक अध्यक्षतामे 1933 ई. क 16 अप्रैलकेँ, जाहि अवसर पर पढ़ल गेल हुनक अभिभाषणक बड़ आदरकक संग उल्लेख कएल जाइत अछि। ओही वर्ष 31 अक्तूबर ओ 1 नवम्बरकेँ म. कामेश्वर सिंहक अध्यक्षतामे टाउन हॉल दरभंगा मे एकर एकटा विशेष समारोह मनाओल गेल, विद्यापति-पर्वक रुपमे, जाहि अवसर पर मिथिलेश पाँच वर्ष धरि विद्यापति-विषय पर सर्वोत्कृष्ट निबन्ध पर प्रतिवर्ष एक सए टाका प्रदान करबाक घोषणा कएने छलाह ओ ई पुरस्कार पश्चात् म. म. डा. उमेश मिश्र, श्रीनरेन्द्र नाथ दास, पं. शिवनन्दन ठाकुर, प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन' ओ प्रो. रमानाथ झा प्राप्त कएल। फलस्वरुप 'विद्यापति-पर्व' मैथिलीक जागरण-पर्वक रुपमे क्रमिक लोकप्रिय होअए लागल। एतए ध्यातव्य जे भोलालालदास एहि जागरण-पर्व मनएबाक सर्वप्रथम श्रेय स्वयं अपनाकेँ देने छथि, किन्तु प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक अनुसार विशेष समारोहपूर्वक विद्यापति-पर्व सर्वप्रथम मनएबाक विचार श्री नरेन्द्र नाथ दास द्वारा 1929 ई. मे कएल गेल जखन ओ स्वातन्त्र्य-संग्रामक क्रममे जेलमे छलाह ओ हुनक एहि विचारक सर्वत्र व्यापक समर्थन प्राप्त भेलैक।

मैथिली साहित्य-परिषद्क तीनटा अधिवेशन एवं पश्चातोक कतिपय अधिवेशन मैथिल महासभाक संग-संग मनाओल गेल छल ओ मधुबनीमे आयोजित एकर तेसर अधिवेशनक अवसर पर एकरा ब्राह्मण-कायस्थ-जातीय संस्थासँ व्यापक सर्वजातीय मैथिलीभाषा-भाषी परिषद् बनएबाक अनुभव कएल गेल एवं एकर चारिम अधिवेशन मैथिल महासभासँ पृथक् अलवर स्टेटक तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश प. रामभद्र झाक अध्यक्षतामे दरभंगामे मनाओल गेल।

एकर पाँचम अधिवेशनक सूचना प्राप्त नहि होइत अछि, किन्तु एकर छठम अधिवेशन मनाओल गेल मुजफ्फरपुरमे बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क स्वागताध्यक्ष मे 3-4 अक्तूबर 1936केँ। एहि अधिवेशनक अध्यक्ष छलाह रायबहादुर जयानन्दकुमर आओर वस्तुतः एही अधिवेशनमे सर्वप्रथम मिथिलाभाषी सर्वजातीय परिषद्क रुपमे एकर व्यक्तित्व स्थापित भेल जे एकर वार्षिक कार्य- विवरणक नामावली सूचीसँ स्वयं स्पष्ट भए जाइत अछि। एहि अधिवेशनक मैथिली साहित्यमे दिशान्तर उपस्थित, नवगति प्रदान करबाक दृष्टिएँ विशेष महत्व अछि। हिन्दीक प्रसिद्ध कवि श्री आरसीप्रसाद सिंहक 'शेफालिका' कविताक संग मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे प्रवेश एवं मधुपजीक उदीयमान कविक रूपमे प्रतिष्ठापन एही समारोहमे भेल छल। एही समारोहमे कविशेखर बदरीनाथ झा 'एकावली-परिणय' लिखबाक घोषणा कएने छलाह तथा एही समारोहमे म. म. मुकुन्द

झा वत्सीकेँ 'साहित्य-महोदधि'क, भुवनजीकेँ 'साहित्य-सरोज'क प. विद्यानन्दठाकुरकेँ 'साहित्य-विनोदक' एवं पं. कुशेश्वर कुमरकेँ 'साहित्यभूषण'क उपाधि प्रदान कएल गेल छल। ई समारोह एतेक सफल ओ उत्साहवर्द्धक भेल जे ताहिसँ प्रेरित-उत्साहित भए प्रो. रमानाथझा, डा. सुभद्रा झा प्रभृति मैथिली साहित्य-सेवा-क्षेत्रमे सक्रिय प्रवेश कएल। प्रो. तन्त्रनाथ झाक शब्दमे- "लोक मैथिली साहित्य-परिषद्क मुजफ्फपुरक अधिवेशनसँ बड़ प्रभावित भेल.....अनका अनका पर कोन प्रभाव पड़लैक से तँ व्यक्तिआमे कहब बड़ कठिन, मुदा भाइ (स्व. रमानाथ झा) क संग दड़िभंगा फिरबाक गाड़िअहि पर विचार-विमर्श भेल जे तीनि गोट काज अवश्यक कर्तव्य, प्रथम तँ अपनालोकनिक लिखबाक प्रसंग जाहिसँ लेखमे एकटा एकरूपता रहए.....दोसर पुस्तकक प्रणयन ओ तेसर ओकर प्रकाशन"। (कविशेखर पुष्पांजलि :) प्रो. रमानाथझा एहि प्रसंग कोन रुपक कार्य कएल एवं कोना 'मैथिली साहित्य-पत्र'क प्रकाशन भेल, से इतिहास-प्रसिद्धे। एहिसँ स्वयं एकटा संस्थाक जन्म भेल जकर विवरण आगाँ देल जाएत।

एकर सातम अधिवेशन पटनामे 1938 ई. ओ आठम ओ नवम अधिवेशन 1944 ई.मे भेल। 1941 ई.मे दस वर्ष धरि मन्त्रित्वक ऐतिहासिक पद सम्हारबाक अनन्तर भोलालालदास मन्त्रित्वक भार प्रो. तन्त्रनाथझाकेँ दए अपन प्रेसक प्रबन्धक हेतु पटना चल गेलाह तँ मैथिली साहित्य-परिषद्क इतिहासमे एक नवीन युगक आरम्भ भेल एवं प्रो. झाक मन्त्रित्व-कालमे सर्वाधिक पुस्तकक प्रकाशन भेल। आधुनिक शिक्षित साहित्य-सेवीलोकनिक एकटा नवीन दल- प्रो. रमानाथ झा, डा. सुभद्रा झा, अवध बिहारी झा, प्रो. परमाकान्त चौधरी, दीनानाथ झा, प्रो. उमानाथझा आदि पटना विश्वविद्यालयक विभिन्न कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति आ साहित्यक प्रणयणक क्षेत्रहुमे विशेष सक्रिय भेलाह। 1946 ई. मधुबनीमे एकर दशम अधिवेशन भेल जाहिमे एकर नवीन मन्त्री भेलाह प्रो. परमाकान्तचौधरी ओ 1947 ई.मे बरहगोड़ियामे एकर एगारहम वार्षिक अधिवेशन भेल जाहिमे एकर मन्त्री भेलाह डा. कांचीनाथझा 'किरण'। ताबत धरि मैथिली साहित्य-परिषद्क निष्क्रिताक युग आरम्भ भए चुकल छल यद्यपि एकर कार्य-क्षेत्रकेँ पाँच भागमे- 1. परीक्षा, 2. प्रकाशन 3. प्रचार ओ संघटन 4. धन-संग्रह एवं 5. अधिकार-प्राप्तिमे बाँटि एकरा सक्रिय करबाक प्रयास तँ अवश्य भेल, किछु दिन परीक्षाक व्यवस्था सेहो भेल, किन्तु चलल नहि, प्रकाशनमे सेहो नवीन गति नहि आएल। एकर बारहम अधिवेशन काशीमे 1949 ई.मे एवं तेरहम अधिवेशन लहेरियासराय मे 1951 ई.मे भेल। चौदहम 1953 ई.मे दरभंगाक टाउन हौलमे प. श्री हरिनाथ मिश्रक अध्यक्षतामे भेल ओ मन्त्री बनलाह प. श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'। 1957 ई.मे बहेड़ा मध्य एकर पन्द्रहम अधिवेशन भेल प. हरिनाथ मिश्रहिक अध्यक्षतामे जे बिहार सरकारक मन्त्री छलाह। श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' अपन परिषद्क इतिहासमे 1959 ई.मे मधुबनीमे छब्बीसम अधिवेशन संगहि कोष्ठकमे सोलहम अधिवेशनक उल्लेख कएने छथि। 1957 सँ 1959 मध्य 11 गोट अधिवेशन होएब तँ आश्चर्यजनक लगैत अछि। 1959क अधिवेशनक अध्यक्ष भेलाह बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह ओ मन्त्री डा. श्री कृष्णमिश्र। तत्पश्चात् एकर अधिवेशन भेल सरिसब मध्य बड़ उत्साहक संग 1968 ई.मे, जतए प्रधान मन्त्री भेलाह डा. शंकर कुमार झा। तत्पश्चात् 1973 ई. ओ 1985 ई.मे

सुमनजी अध्यक्ष भेलाह ओ एहि अवधिमे एकर मन्त्री भेलाह सुरेशनारायण सिंह एवं वर्तमान मन्त्री डा. गणपतिमिश्र। एतावता वस्तुतः एखन धरि एकर 19 अधिवेशन मात्र भेल यद्यपि कतोक व्यक्ति एकर 39 अधिवेशनक उल्लेख करैत छथि। संक्षेपमे एखन धरि एकर अध्यक्ष भेल छथि कुमार गंगानन्द सिंह, म. म. डा. उमेशमिश्र डा. सर गंगानाथझा, प. रामभद्र झा, पं. जयानन्दकुमर, डा. अमरनाथझा, प. गिरीन्द्रमोहन मिश्र, कुमार तारानन्दसिंह, भोलालालदास, प. रामानन्दन मिश्र, प. हरिनाथ मिश्र, बाबू श्री कृष्णनन्दनसिंह ओ श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा मन्त्रित्वक भार ग्रहण कएने छथि प. शशिनाथ चौधरी (1931), भोलालाल दापस (1931-41), प्रो. तन्त्रनाथ झा (1941-46), प्रो. परमाकान्त चौधरी (1946-47), डा. कांचीनाथ झा 'किरण' (1947-53), प्रो. सुरेन्द्रझा 'सुमन' (1953-57), प्रो. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' (1958-59), प्रो. श्री कृष्ण मिश्र (1959-68) डा. शंकरकुमार झा (1968-73), सुरेशनारायण सिंह (1973-83) तथा डा. श्री गणपतिमिश्र (1985-)।

वस्तुतः मैथिली साहित्य-परिषद् एकटा ऐतिहासिक साहित्य-संस्था थिक जे अपन आरम्भिक दुइ दशक धरि प्रचार-प्रसार, स्वीकृति, साहित्य-निर्माण आदिक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक अभूतपूर्व सेवा कएल। 1968 ई.मे शोधात्मक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ सेहो कएने छल, परन्तु चलल नहि। डा. गणपतिमिश्र एकरा पुन आरम्भ कएल, परन्तु साधारण पत्रिकाक रुपमे ओ सेहो अत्यन्त अनियमित रुपेँ प्रकाशित होइत अछि जे परिषद्क गरिमाक उपयुक्त नहि। वस्तुतः ई संस्था नितान्त निष्क्रियतासँ ग्रसित अछि। एकर प्रमाण ई जे एखन धरि तँ एकरा ने निजी भवन भए सकलैक अछि ने संगठित कार्यालय ओ एखनो धरि ई 'पाकेट' हिक संस्था बनल अछि।

मैथिली साहित्य-पत्र-प्रकाशन-संचालक-मण्डल अथवा मुर्दा-क्लब- वस्तुत एहि समितिक संयोजक छलाह प्रो. रमानाथ झा ओ तन्त्रनाथ झा। पूर्वहु कहल गेल अछि जे मैथिली साहित्य-परिषद्क छठम अधिवेशनमे सम्मिलित भए दरभंगा घुरबा काल गाड़अहिमे दुहू गोटा निश्चय कएल जे लेखन-शैलीक एकरूपता, पुस्तकक प्रणयन ओ तकर प्रकाशनक निमित्त किछु करबाक चाही ओ प्रो. रमानाथझा दरभंगा अबितहि एहि कार्यमे जुटि गेलाह। समान विचारक व्यक्तिक सहयोग प्राप्त कएल गेल जाहिमे दुहू भाइक अतिरिक्त डा. सुभद्र झा, दीनानाथ झा, डा. शचीनाथ झा, प्रो. उमानाथ झा सुमनजी प्रभृति अनेक व्यक्ति छलाह। प्रो. उमानाथ झा एहि संघटनकेँ प्रो. रमानाथ झा-अभिनन्दन-ग्रंथक अपन लेखमे, 'मुर्दा-क्लब'क नामे ख्यात कए एकर विस्तृत विवरण देने छथि। तदनुसार ने तँ एकर सदस्यताशुल्क कहिओ निर्धारित भेलैक ने सदस्यताक सूची कहिओ बनलैक। एकर नामकरणक तात्पर्य भिन्ने छल- "हमरा लोकनिक समाजमे कोनो नव काज कएनिहार व्यक्तिकेँ अपन त्वचा गेंड़ाक खाल सन बनाएब आवश्यक। आ गेंड़ाक खालसँ कम संवेदनशील तँ मुर्दाक चमड़ा संवेदनहीन होइत अछि।" तँ एकर 'मुर्दा-क्लब' नाम राब उचित बुझल गेल। परन्तु एहि कार्यक जे विस्तुत विवरण प्रो. तन्त्रनाथझा देने छथि 'कविशेखर पुष्पांजलि'क अपन लेखमे ताहिमे आओर ने 'मैथिलसाहित्य-पत्रक' सम्पादकीयमे सएह 'मुर्दा-क्लब' अथवा कोनो आन संस्थाक

स्थापना सूचना देल गेल अछि। वस्तुतः प्रो. रमानाथझाक अनेक समानधर्मा व्यक्तिक सम्मिलित सहयोगसँ ई व्यक्तिगत प्रयास छल जे संस्थाबद्ध नहि होइतहुँ ऐतिहासिक कार्यक हेतु विशिष्ट संस्था सिद्ध भेल।

एकरा द्वारा सर्वप्रथम प्रामाणिक लेखन-शैलीक एकरूपताक योजनाबद्ध प्रयास भेल। पहिने विवादास्पद शब्दावली प्रस्तुत भेल तथा तकरा प्रतिलिपि करबाए म. म. डा. रमानाथ झा. डा. अमरनाथ झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, म. म. बालकृष्ण मिश्र, महावैयाकरण दीनबन्धु झा. प. बबुआजी मिश्र, पं. मार्कण्डेयमिश्र, पं. रामचन्द्र झा, म. म. मुकुन्द झा बक्शी, पं. जीवनाथ राय, डा. उमेश मिश्र, आदिकेँ पठाओल गेल विचार लिखबाक हेतु। विचारसब जे आएल तकर आधार पर डा. सुभद्रझा ओ म. वै. दीनबन्धु झा दुहू मिलि विवादास्पद शब्दावलिकेँ लिखबाक शैली निर्धारित कएल जे प्रो. रमानाथ झाक शैलीक नामसँ प्रसिद्ध भेल।

ओही शैलीमे 'मैथिली साहित्य-पत्रक' प्रकाशन भेल। 'मैथिली साहित्य-पत्र' बहुत दिन धरि नहि चलल, किन्तु जतबहि दिन चलल ततबहि दिनमे 'शृंगार-भजन-गीतावली', 'एकावली-परिणय', 'कीचक-वध', 'चीनीक लड्डू', 'अगिलही', 'उदयन-कथा' सदृश अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित भेल। वस्तुतः प्रो. रमानाथ झा द्वारा कएल एहि रचनात्मक कार्यक स्मरण चिरकाल धरि कएल जाइत रहत।

नवरत्न गोष्ठी- दरभंगाक महारानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयक छात्रसंघक द्वारा प्रेरित एकर स्थापना सन् 1938 ई. वसंतपंचमीकेँ भेल छल मैथिलीक नवीन रचना-प्रतिभाकेँ प्रोत्साहन दए नवीन लेखनक प्रकाशन करबाक उद्देश्यसँ। एकर प्रथम अध्यक्ष कुलानन्दचौधरी ओ सचिव पं श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' भेलाह, परन्तु पश्चात् प्रायः एकर कार्यकारिणीक कहओ नवीन गठन भेल, से ज्ञात नहि अछि। आरम्भ मे ई पर्याप्त गतिशील छल। एकरा द्वारा हस्तलिखित मासिक पत्रिकाक प्रकाशन भेल, पाक्षिक बैसकमे समस्यापूर्त्तिक प्रतियोगिता सेहो होइत छल। एकरहि प्रकाशनत्वक संज्ञासँ अमरजीक सब पोथी, मधुपजीक 'द्वादशी' चतुराननक 'कला', मायुरक 'कृषक', राघवाचार्यक 'वन-कुसुम' प्रभृति अनेक पुस्तक प्रकाशित भेल। वस्तुतः 'नवरत्नगोष्ठी' अमरजीक पर्याय बनि गेल।

मैथिली समिति, सुपौल- एहि संस्थाक स्थापना किसुनजीक प्रेरणासँ 13 अगस्त 1943 ई.मे भेल, जकर प्रथम संरक्षक छलाह दौलतपुर (सहरसा)क स्व. भागवत चौधरी। एहि संस्थाक मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु आन्दोलन मुख्य उद्देश्य छल। एहि संस्थाक आन्दोलनक फलस्वरुप सर्वप्रथम विलियम्स हाइ स्कूलमे मैथिलीक अध्यापन 1945 ई.मे आरम्भ भेल आ स्व. रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिली अध्यापकक रुपमे नियुक्त भेलाह। एहि संस्था द्वारा हस्तलेख मासिक पत्रिकाक चारि अंक सेहो बहार भेल छल।

प्रबुद्ध मैथिल समाज, पटना- नवयुगक प्रभावसँ प्रेरित नव रीतिक साहित्य-निर्माणकेँ प्रोत्साहन देब एहि संस्थाक मुख्य उद्देश्य छल तथा एकरा द्वारा एकटा गद्य-पद्यक संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल। एही संस्थाक प्रेरणा स्वरुप योगानन्दझाक 'भलमानुष'क रचना ओ प्रकाशन भेल। एहि संस्थाक पुरातनपन्थी द्वारा घोर विरोध भेल छल।

मैथिल संघ, कलकत्ता- एकर स्थापना श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' 1945 ई.मे कएल। परन्तु एकर गति-विधिक विवरण प्राप्त नहि भेल अछि। प्रायः एकर कार्य साहित्यिक नहि, जन-सेवा-रुपक छल। एकर दक्षिण शाखाक स्थापना 31 दिसम्बर 1947 ई.मे भेल। इएह दक्षिण शाखा 1953 ई.मे आबि 'मिथिला-लोक-संघ'क नामसँ प्रसिद्ध भेल। परन्तु 1947 सँ 1953 ई. धरि ई विशेष सक्रिय नहि छल, मात्र भाषण ओ प्रस्ताव पास करब एकर कार्य छल। वस्तुतः ई सक्रिय भेल 'मिथिला-लोक-संघ'क नाम धारण करबाक अनन्तर, जकर विवरण आगाँ देल जाएत।

विद्यापति-गोष्ठी, दरभंगा- प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक प्रेरणा स्वरुप एकर स्थापना 4 दिसम्बर 1949 ई.मे भेल जकर अध्यक्ष भेलाह तत्कालीन सी.एम. कॉलेजक प्रधानाचार्य विश्वमोहन कुमार सिंह। एकर कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण मिथिलांचल छल, परन्तु एहि मध्य हिन्दीक साहित्यिक गति-विधि विशेष, मैथिलीक कम होइत छल। ई तीन गोट यात्रा आयोजित कएलक 1950 मे बिस्फी क, 1951मे भवानीपुरक एवं 1952मे बाजितपुरक यात्रा। तेसर यात्राक अवसर पर बाजितपुरकेँ 'विद्यापति-नगर' नाम रखबाक प्रस्ताव पारित भेल जे पश्चात् सरकार द्वारा कार्यान्वित भेल। एकर सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य भेल सप्ताह, पक्ष, पुनः मास भरि विद्यापति-पर्व मनएबाक परम्पराकेँ आरम्भ करब।

वैदेही समिति, दरभंगा- एहि समितिक स्थापना कएल प्रो. कृष्णकान्त मिश्र 28 जुलाई 1949केँ, जकर पहिल अध्यक्ष डा. उमेश मिश्र तथा सचिवगण प्रो. भक्तिनाथसिंह ठाकुर, डा. पूर्णानन्ददास एवं प्रो. कृष्णकान्त मिश्र एवं सम्प्रति एकर पदाधिकारी डा. श्रीकृष्ण मिश्र, तिलकेश्वर चौधरी एवं प्रो. कृष्णकान्त मिश्र (सचिव) छथि। समितिक विधिवत गठन होइतहुँ एकर प्राण छथि स्वयं कृष्णकान्त बाबू ओ वस्तुतः ई समिति हुनकहि पर्याय थिक। एहि समितिक सर्वोपरि उद्देश्य मैथिली साहित्यक सर्वांगीन उत्थान रहल अछि ओ एहि दृष्टिएँ ई चिर-करल धरि स्मरणीय रहत। 1949 ई.सँ लए 1972 ई धरि 'वैदेही' पत्रिकाक प्रकाशन एकर सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य कहल जाए सकैत अछि। 1962 ई.सँ ई निष्क्रिय भए गेल छल, किन्तु 1968 ई.सँ 'वैदेही' पत्रिकाक प्रकाशन पुनः आरम्भ भेल अछि। एतदतिरिक्त एहि समिति द्वारा चारि बेर अखिल भारतीय लेखक-सम्मेलन आयोजित कएल गेल छल, प्रथम दुइ बेर 1956 ओ 1968मे अत्यंत व्यापक स्तर पर आओर एहि अवसर पर समग्र भाषण प्रभृति मुद्रित प्रस्तुत कएल गेल छल। मैथिली लेखकसबहिक परिचय-पत्र सर्वप्रथम एही समिति द्वारा प्रकाशित भेल। एहिसँ अतिरिक्त अनेक मैथिली पुस्तकक प्रकाशन सेहो एकरा द्वारा भेल अछि।

1950 क पश्चात् मैथिली साहित्य-सेवी-संस्थाक रचनात्मक केन्द्र दरभंगाक अतिरिक्त कलकत्ता, पटना ओ प्रयाग भए गेल, ओना आनहु क्षेत्रमे अनेक संस्थाक स्थापना भेल, किन्तु अन्य स्थानक कोनो संस्था विशेष ध्यान आकृष्ट नहि कए सकल।

मिथिला लोक-संघ, कलकत्ता- 1947.ई.मे स्थापित 'मैथिल संघ'क दक्षिणी शाखाक नवीन नामकरण भेल मिथिलालोक-संघ। एहिसँ पूर्व एकरा द्वारा जनसेवा तँ अवश्य भेल, परन्तु साहित्य-सेवाक उल्लेखनीय कार्य एतबे भेल जे कलकत्ता मध्य एकरा द्वारा सर्वप्रथम विद्यापति-पर्वक आयोजन भेल छल। एहि संस्थाक मुख-पत्रिकाक रुपमे 1953 ई.मे 'मिथिला-दर्शन'क प्रकाशन आरम्भ कएल गेल, पुस्तक-प्रकाशनक रुपमे राघवचार्यक 'क्रान्तिगीत' उल्लेखनीय अछि। एकरा द्वारा 23, 24 ओ 25 दिसम्बर 1957 कैँ 'अखिल भारतीय लेखक-सम्मेलन' आयोजित भेल छल। परन्तु एकर मुख्य कार्य छल राजनीतिक ओ मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक हित-रक्षार्थ आन्दोलन करब, जनजागरण उपस्थित करब। 31 दिसम्बर 1957 कैँ 'मैथिल संघ' ओ 'मिथिला-लोक संघ'कैँ मिलाए एकटा नवे संस्थाक स्थापना भेल, 'मिथिला संघ'क, जकर चर्चा आगाँ कएल जाएत। ई नामकरण भेल छल प्रो. हरिमोहनझा ओ मणिपद्मक संयुक्त सम्मतिसँ।

मैथिली साहित्य-समिति, प्रयाग - 1950 क समकालमे डा. जयकान्त मिश्र एहि संस्थाक स्थापना कएल आओर एकर प्रायः प्रथम प्रकाशन भेल श्रीयात्रीक 'चित्रा'क। तत्पश्चात् एहि संस्थाक अन्तर्गत तीरभुक्ति-प्रकाशन द्वारा अनेक दुर्लभ त्रैभाषिक नाटक प्रकाशित भेल, जाहिमे ज्योतिरीश्वरक 'मैथिली धूर्त्तसमागम' ओ पाण्डु-प्रतिलिपिक फोटोप्रतिक संग विद्यापतिकं 'गोरक्षविजय' नाटकक प्रथम बेर प्रकाशन। वस्तुतः एहि संस्था द्वारा मैथिली साहित्यक बड़ उपकार भेल। एहिसँ अतिरिक्त् एहि संस्था द्वारा कार्यान्वित मैथिली पुस्तक-प्रदर्शनी विशेष रुपैँ उल्लेखनीय थिक जे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रधान कारण बनल।

विद्यापति परिषद्, पटना- 1950 ई.क समकालहिमे बाबू लक्ष्मीपतिसिंहक विशेष प्रेरणासँ एहि संस्थाक स्थापना भेल जकर प्रमुख सहयोगी छलाह डा. अमरनाथ झा ओ कुमार गंगानन्दसिंह। एहि संस्थाक प्रमुख कार्य भेल 'चौपाड़ि'क प्रकाशन ओ एकरे प्रेरणासँ प्रायः 'मिथिला-भारती' पत्रिकाक सेहो किछु दिन प्रकाशन सम्भव भए सकल।

मैथिली साहित्य-परिषद् सहरसा- दरभंगाक अ. भ. साहित्यपरिषद्क सशक्त शाखाक रुपमे एकर स्थापना 1953 ई.मे रामकृष्ण झा 'किसुन' ओ जटाशंकर चौधरीक सहयोगसँ भेल छल। एकर स्थापना-अवसर पर अनेक वरिष्ठ मैथिली विद्वान सम्मिलित भेल छलाह। एहि संस्था द्वारा सहरसा जिलामे मैथिलीक हित-रक्षार्थ महत्वपूर्ण कार्य कएल गेल।

चेतना समिति, पटना- एहि समितिक स्थापना 1954 ई.मे भेल श्री सुरेश्वर झाक संयोजकत्व एवं श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क अध्यक्षतामे जे कालान्तरैँ समग्र बिहार अथच सम्पूर्ण भारतक मैथिल जागरणक प्रेरक बनि गेल। आरम्भक किछु वर्ष एकर गति-विधि सीमित छलैक, किन्तु कालान्तरैँ एकर गति-विधि व्यापक बनि गेल आओर एहि समितिक तत्वावधानमे प्रतिवर्ष बड़ विस्तारसँ विद्यापति-पर्व मनाओल जाइत अछि। एहि अवसर पर 1971 ई.सँ दुइ दिवसीय कार्य-क्रम निर्धारित भेल जाहि मध्य विभिन्न साहित्यिक विषय पर विचार-गोष्ठी, कवि-सम्मेलन, सांस्कृतिक प्रदर्शन प्रभृति होइत अछि आओर 1957 ई.सँ प्रतिवर्ष मिथिलाक वरिष्ठ साहित्कार, सगीतकार, कलाकार प्रभृति सम्मानित कएल जाइत छथि। चेतना-समितिक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य थिक प्रकाशनक कार्य। प्रतिवर्ष स्मारिका एव विगत विचार-गोष्ठीक आलेख पुस्तकाकार प्रकाशित होइत अछि। चेतना-समिति द्वारा समय-समय भाषण-मालाक सेहो आयोजन भेल अछि, उदाहरणार्थ भारती-मण्डन-भाषण माला। एहि भाषणमालाक दुइ भागमे प्रकाशन 'मैथिली साहित्यक रुपरेखा' नामसँ भेल। एही प्रकारक भाषण-मालाक दोसर संग्रह थिक 'मैथिली नवीन साहित्य'। विचार-गोष्ठीक आलेखक महत्वपूर्ण प्रकाशन थिक 'पूर्वांचलीय नाटक ओ रंगमंच', 'उपन्यास ओ सामाजिक चेतना', 'साहित्य ओ प्रतिबद्धता', 'आधुनिक साहित्यमे परिवर्त्तनक स्वर', 'साहित्यिक समालोचना दशा-दिशा'।

'चेतना समिति'क वार्षिक समारोहक अवसर पर रगमचीय अभिनयक सेहो व्यवस्था होइत अछि तथा मंचनक हेतु नवीन रीतिक नाटकक रचना करबाओल जाइत अछि। एहि नाटकसबहिक प्रकाशन सेहो समिति द्वारा भेल अछि, यथा 'भफाइत चाहक ज़िनगी', 'लेटाइत आँचर', 'आगि धधकि रहल अछि', 'बुधिबधिया', 'एना कते दिन', 'अन्हार जंगल', 'अन्तिम प्रणाम' आदिक। एहि प्रकार मैथिलीक नाट्य-प्रणयन ओ प्रदर्शनसँ मैथिली नाट्य-पुनरुत्थानक प्रेरणा जागल ओ 'अरपन' सदृश अनेक संस्थाक जन्म भेल। चेतना-समितिक विद्यापति-समरोहसँ प्रभावित भए अनेक स्थान पर विद्यापति-पर्वक आयोजन होअए लागल ओ मैथिली क्षेत्रमे नव-जागरण उपस्थित भए गेल। वस्तुतः मैथिलीक गौरव-सम्पादन एवं मैथिल मात्रमे साहित्यिक एकताक स्थापनामे एहि समितिक सेवा इतिहासमे सुरक्षित भए गेल अछि।

मिथिला-संघ, कलकत्ता- 'मैथिल संघ' ओ 'मिथिला लोक-सघ'क एकीकरणक पश्चात् 1958 ई.सँ मिथिला-संघ कलकत्ताक प्रमुख मैथिली सेवी-संस्था बनि गेल। एकरा द्वारा साहित्यिक संवर्द्धनक संग-संग मिथिला ओ मैथिलक व्यापक हित-साधन भेल। 1958 ई.मे एकरा द्वारा अभूतपूर्व द्विदिवसीय विद्यापति-पर्व आयोजित भेल छल। 1959 ई.मे एही संघक प्रयास सँ नार्थ बिहार एक्सप्रेसक नाम 'मिथिला एक्सप्रेस' पड़ल। 1963 ई.मे दिल्लीक पुस्तक प्रदर्शनीमे एकर महत्वपूर्ण योगदान छल तथा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु ई घोर आन्दोलन कएने छल। एकर एकटा महत्वपूर्ण कार्य भेल छल भारतवर्षक विभिन्न मैथिली सेवी संस्थाकैँ एक जूट करबाक ओ एकर प्रयास-स्वरुप सिन्दरीमे 'मैथिली महासंघ'क

राजेश्वरझा। 'मिथिला-संघहिक प्रेरणासँ 1963 ई. मे विशुद्ध कलात्मक संस्थाक स्थापना भेल छल- 'मैथिली रंगमंच'क, जकर उद्देश्य छल सामाजिक आधुनिक नाटक-मंचनकेँ नवीन दिशा प्रदान करब।

रचनात्मक सेवाक दृष्टिएँ मिथिला संघक ओ प्रो. प्रबोधनारायण सिंह एवं श्री बाबू साहेब चौधरीक प्रयाससँ 1958 ई. मे श्री आरसी प्रसाद सिंहक 'माटिक दीप' तथा 1960-61 मध्य तीसटासँ अधिक मैथिली पोथी प्रकाशित भेल. यथा, राजकमल जीक 'आदि कथा', मणिपद्मक 'विद्यापति', प्रो. हरिमोहन झाक 'चर्चरी', प्रो. मायानन्द मिश्रक 'बिहाड़ि पात पाथर' एवं 'आगिमोम पाथर', ललितक 'प्रतिनिधि' प्रभृति। एहिसँ अतिरिक्त 'मिथिलादर्शन' पत्रिकाक प्रकाशन बराबरि होइत रहल।

परन्तु 1963-64मे 'मिथिला संघ' आन्तरिक विभेदसँ ग्रसित भए गेल तथा एकर कतोक सक्रिय कार्यकर्त्ता पृथक् संस्था बनाए लेलैन्हि। पुनः मैथिलसंघ एवं मिथिला लोक-परिषद् अस्तित्वमे आबि गेल। यद्यपि मैथिल संघ द्वारा 'आखर' ओ 'मिथिला लोक-परिषद्' द्वारा 'मैथिली कविता' सदृश् पत्रिकाक प्रकाशन भेल, परन्तु कलकत्ताक मैथिली सेवाक गति मन्द अवश्य भए गेलैक। 1983 ई. मे मिथिलासंघ सोल्लास अपन रजत-जयन्ती पर्व मनओने छल।

मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कलकत्ता- गिरीशपार्क, कलकत्ताक एक सभामे मैथिली प्रेमी कलकत्ता-प्रवासी द्वारा एहि संस्थाक स्थापन 23 जून 1959 ई. केँ भेल। एहि संस्थाक उद्देश्य छल भारतीय संविधान ओ लोक-सेवा-आयोगमे मैथिलीकेँ स्थान दिआएब, मिथिलांचलमे संस्कृति-शोध-सम्बन्धी संस्थाक निर्माण, आकाशवाणी-केन्द्रक स्थापना आदि। एकरा द्वारा एहि हेतु पोस्टकार्ड अभियान चलाओल गेल। विद्यापति-पर्वक अवसर पर प्रायः बराबरि साहित्यक लेख आदि प्रकाशित होइत अछि। 'गल्प-सुधा', 'मैथिली भाषा ओ साहित्य', 'आधुनिक मैथिली साहित्य' आदि एकर प्रमुख प्रकाशन थिक।

मैथिली एकेडमी, प्रयाग- एकर स्थापना 26 जनवरी 1960केँ म. म. डा. उमेश मिश्रक अध्यक्षतामे भेल छल। एकर प्रधान सभापति भेल छलाह डा. आदित्य नाथझा ओ महामंत्री डा. सुधाकान्त मिश्र। एहि संस्थाक उद्देश्य छल सहयोग ओ अनुसंधान माध्यमसँ मैथिलीक विकास करब। एकरा द्वारा एक शोध-पत्रिकाक प्रकाशन भेल छल जकर एक मात्र अंक बहार भेल। श्री यात्रीक 'पत्रहीन नग्न गाछ' एकरे प्रकाशन छल जाहि पर हुनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कार भेटल छलैन्हि।

मैथिली साहित्य-संस्थान पटना- ई स्वर्गीय पं. राजेश्वर झा द्वारा स्थापित रचनात्मक संस्था छल जे प्रतिवर्ष मैथिलीक पोथीसब विद्यापति-पर्वक अवसर पर प्रकाशित करैत छल। एही संस्थाक माध्यमसँ पं. राजेश्वर झाक अधिकांश पुस्तक, श्री

हंसराजक 'ओ जे कहलनि' 'शतंजा' प्रभृति अनेक ग्रन्थक प्रकाशन भेल। परन्तु पं. झाक दिवंगतक भेलाक अनन्तर एहि संस्थाक गति अवरुद्ध भए गेल।

मैथिली प्रकाशन-समिति, कलकत्ता- साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृति भेटलाक पश्चात्, प्रो. रमानाथझाक प्रेरणासँ एहि समितिक स्थापना कएल गेल, मैथिलीक उच्च कोटिक पुस्तकादिक प्रकाशनमे गति अनबाक हेतु। 1968 ई. सँ एहि संस्था द्वारा शोध-पत्रिकाक रुपमे 'मैथिली प्रकाश'क प्रकाशन आरम्भ भेल तथा अनेक उच्च कोटिक मैथिलीक पुस्तक सेहो प्रकाशित भेल। एकर सक्रियताका हेतु सर्व श्री मदन चौधरी, उदितनारायणझा, इन्द्रगोविन्दझा, श्यामानन्द पाठक प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

ऋचालोक, लहेरियासराय- सन 1967 ई. मे एकर स्थापना श्रीश्रीमन्त पाठकक प्रयाससँ भेल छल आओइ ओएइ एकर संचालक छलाह। एहि संस्था द्वारा अपन समाजमे इतर भाषाक प्रयोगक विरुद्ध अभियान कएलगेल छल। कमलाकान्त झाक 'बढ़ैत डेग' तथा श्री इन्द्रनाथक 'धूप-दीप' सेहो एही संस्था द्वारा प्रकाशित भेल छल तथा किछु दिन 'वागमती' मासिक पत्रिकाक सेहो प्रकाशन भेल छल।

विद्यापति-स्मारक-समिति, राँची- प्रायः आठम दशक मध्य एहि संस्थाक स्थापना भेल छल राँचीक मैथिली-प्रेमी विद्वज्जन द्वारा चेतना समितिक चरण-चिह्नक अनुसरण करैत, अर्थात् विद्यापति-पर्वक वृहत् आयोजनक निमित्त। एकर उल्लेखनीय कार्य थिक वैदेही-पुरस्कारक आयोजन जे 1982 ई. सँ आरम्भ भेल। एखन धरि 1982 सँ, 1986 धरि चारि गोट लेखक श्री महेन्द्र मलङिया, श्री प्रभासकुमार चौधरी, श्री जीवकान्त एवं श्री राजमोहन झा वैदेही-पुरस्कारसँ अलंकृत भए चुकलाह अछि आओर जाहि पोथीक हेतु पुरस्कृत भेलाह अछि, तकर नाम थिक क्रमशः 'ओकरा आँगनक बारहमासा', 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी', 'वस्तु' एवं 'एकटा तेसर'।

संकल्प लोक, लहेरियासराय- एकरहु स्थापना वार्षिक विद्यापतिपर्व मनएबैक हेतु भेल छल 13 अगस्त 1975 ई. केँ। एकर संस्थापक मानल जाइत छथि सर्वश्रीउमाकान्तझा, शशिकान्तझा एवं गणेश प्रसाद सिन्हा। एकर पर्व-समारोहमे स्मारिकाक प्रकाशन, विद्वानलोकनिक सम्मानित करब ओ नाटकक मंचन प्रमुख कार्यक्रम थिक। एकरा द्वारा एहि अवसर पर प्रतिवर्ष एकटा महत्वपूर्ण पुस्तकक प्रकाशन करबाक कार्य सेहो सम्मिलित भेल अछि ओ प्रो. मायानन्दमिश्रक 'मन्त्रपुत्र' एकर प्रथम पुस्तक-प्रकाशन थिक जे 1988मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृतो भेल अछि। 1988 ई. मे डा. रामदेवझाक 'पसिझैत पाथर' (एकांकी-संग्रह) प्रकाशित भेल अछि। डा. रामदेवझा द्वारा सम्पादित एकर 'संकल्प' स्मारिका उल्लेखनीय ओ संग्रहणीय थिक जकर एखन धरि प्रायः पाँचटा अंक मात्र प्रकाशित भेल अछि। वर्ष भरि एकर गति निष्क्रिय रहैछ।

मैथिली अकादमी, पटना- एहि अकादेमीक स्थापना सन् 1976 ई. मे बिहार सरकार द्वारा भेल, जकर प्रथम अध्यक्ष भेलाह श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार। वस्तुतः एहि संस्थाक स्थापनाकेँ एकटा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक संज्ञा देल जाए सकैत अछि। श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक कार्य-काल सेहो स्वयं एकटा ऐतिहासिक घटना छल, कारण हुनक कार्यकालमे सर्वाधिक संख्यामे मैथिलीक अनूदित ओ मौलिक पुस्तकसबहिक-रचनात्मक एवं अनुसन्धानात्मक, दुहूप्रकारक, प्रकाशन भेल। किन्तु हुनक कार्यकालक अनन्तर इहो संस्था आन्तरिक मतान्तर एवं सरकारी अवहेलनाक शिकार बनि गेल। तथापि एहि संस्था द्वारा शताधिक मैथिली पुस्तकक प्रकाशन भए चुकल अछि ओ मैथिली साहित्य समृद्ध भेल अछि। सम्प्रति एकर अध्यक्ष डा. चेतकर झा छथि।

पुस्तक-प्रकाशनक अतिरिक्त एकर अन्य उल्लेखनीय कार्य भेल अछि साहित्यकारसबहिकेँ सम्मानित करब, एकल कविक कविता-पाठ, विचार-गोष्ठी ओ भाषण-मालाक आयोजन करब, स्वर्गीय साहित्यकारक स्मृति-संध्याक आयोजन करब तथा स्मृति-संध्यामे पठित आलेखकेँ पुस्तकाकार प्रकाशन करब। एकरा द्वारा एकटा पत्रिकाक प्रकाशन सेहो होइत अछि। किन्तु से अनुसन्धानात्मक नहि भेने एकर गौरवक अनुरूप नहि अछि। यद्यपि अर्थाभाव अथच आन्तरिक विभेदक कारणे एकर कार्यक गति मन्द अछि, तथापि एहि संस्थासँ मैथिली साहित्यक व्यापक हितक सम्पादन भए सकैत अछि।

परन्तु एहि प्रकारक सरकारी संस्थाक स्थापनासँ व्यापक परिवेशमे ऋणात्मक प्रभाव सेहो पड़ल ओ व्यक्तिगत अथवा अन्य संस्थागत पुस्तक-प्रकाशनक गति मंद भए गेल तथा मैथिली अकादेमी निहित-स्वार्थक अखाढ़ा बनैत गेल।

मिथिलांचल विकास-परिषद्, दरभंगा- डा. शम्भुनाथ चौधरी, राधाकृष्णझा, केदार नाथ चौधरी प्रभृतिक प्रेरणासँ एहि संस्थाक स्थापना कएल महेन्द्रनारायण पाण्डेय, राधाकृष्ण केजरीवाल प्रभृति अनेक व्यक्ति। 1987 ई. धरि स्थान-स्थान पर एहि संस्थाक अनेक शाखा-उपशाखा खोलल गेल। एकर 185 गोट आजीवन सदस्य तथा 7138 गोट साधारण सदस्य छथि, परन्तु एकर मुख्य उद्देश्य अदि सामाजिक। भाषा ओ साहित्यक दृष्टिएँ ई विशेष ध्यान आकृष्ट नहि कए सकल अछि। मैथिलीमे गत पाँच वर्षसँ 'मिथिलांचल-सम्पर्क' नामक मासिक पत्रिका ई बहार करैत अछि, परन्तु एकर एकोटा अंक हमरा दृष्टिपथ पर नहि आएल अछि। ई तीनटा स्मारिका सेहो प्रकाशित कए चुकल अछि।

विद्यापति-सेवा-संस्थान, दरभंगा- एकर स्थापना 7 अक्तूबर 1980 ई.केँ भेल छल डा. व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क प्रेरणासँ तथा एकर संस्थापकगणमे सर्वश्री कुमार शुभेश्वर सिंह, वैद्यनाथ चौधरी (बैजू), दयानन्दझा ओ उमाकान्तझाक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि संस्थाक मुख्य उद्देश्य अछि जन-आन्दोलन द्वारा

मिथिलामे नवजागरण उपस्थित करब। एकरा द्वारा 13 अगस्त 1986 कँ दिल्लीक बोट क्लबमे 13 सूत्रीय मांगक समर्थनमे विशाल जन-प्रदर्शनक आयोजन भेल छल। एकरा द्वारा प्रतिवर्ष विद्यापति- पर्व मिथिलाविभूति-पर्वक नामसँ आयोजित होइत अछि ओ 'अर्पण' नामक स्मारिकाक सेहो प्रकाशन होअए लागल अछि, प्राय पाँच गोट अंक एखन धरि प्रकाशित भेल अछि। एहि अवसर पर मिथिला-मैथिली हेतु समर्पित व्यक्तिक सम्मान सेहो होइत अछि। आकाशवाणी, दरभंगा ओ भागलपुरमे समस्त कार्य मैथिलीमे हो, दरभंगा-समस्तीपुर बड़ी लाइन बनए, बाढि, रौदी तथा विद्युत्संकटक निदान हो, मिथिलांचलक मिलक आधुनिकीकरणक हो, सम्पूर्ण मिथिलांचलमे मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ उच्च-विद्यालयधरिक अध्यापन हो, संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली सम्मिलित कएल जाए, मैथिलीकेँ राजकाजक कार्यलयी भाषा बनाओल जाए आदि अनेक विषय पर ई आन्दोलन कए चुकल अछि। वस्तुतः विद्यापति-सेवा-सस्थान सम्प्रति दरभंगाक सर्वाधिक सक्रिय संस्था थिक आओर ई एक एहन संस्था थिक जकर आधार राजनैतिक सेहो अछि।

कर्ण गोष्ठी, कलकत्ता- प्रायः 1980 ई. क समकालमे स्थापित कर्ण-गोष्ठी कर्णकायस्थलोकनिक जातीय संस्था थिक, किन्तु एहि संस्था द्वारा मैथिली साहित्यक व्यापक सेवा होइत अछि। एहि संस्थाक सक्रिय कर्णधारलोकनिमे श्री अर्जुन लाल कर्ण श्रीराजनन्दनलाल दास, श्री नारायण प्रसाद प्रभृतिक नामोल्लेख कएल जाए सकैत अछि। एहि संस्था द्वारा 'कर्णामृत' द्वैमासिकक प्रकाशन मुख-पत्रक रूपमे गत 10-11 वर्षसँ भए रहल अछि जकर शरदंकसब सरिपहुँ संग्रहणीय अछि। एहि पत्रिकाक माध्यमसँ कायस्थ-मैथिली साहित्य-सेवीलोकनिक कृति-रक्षाक बराबरि आयोजन होइत रहैत अछि यद्यपि अन्य जातिक लेखकलोकनिकेँ सेहो यथोचित समादर कएल जाइत अछि। कर्णगोष्ठी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित व्रजकिशोर वर्माक 'अर्द्धनारीश्वर' एवं 'नागभूमि' उपन्यास तथा तेसर कनियाँ (नाटक), श्री प्रदीप बिहारीक 'विसूवियस' (उपन्यास) एवं 'साहित्य रत्नाकर' मुंशी रघुनन्दनदास: व्यक्तित्व ओ कृतित्व क विशेष रूपेँ उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। वस्तुतः कर्ण-गोष्ठी सम्प्रति कलकत्ताक सर्वाधिक सक्रिय संस्था थिक।

अरिपन, पटना- पटनाक चेतना समितिक नाट्य-मंचनक प्रयोगसँ प्रेरित भए 'अरिपन' नामक संस्थाक स्थापना सन् 1982 ई. मे भेल शुद्ध रूपेँ मैथिली नाट्य-मंचनक अभ्युत्थान ओ संवर्द्धन हेतु ओ एकर स्थापनामे श्री मन्त्रेश्वर झाक प्रोत्साहन ओ योगदानकेँ स्तुत्य कहल जाए सकैत अछि। 1984 ई.सँ 'अरिपन' द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-समारोहक आयोजन होइत अछि, जाहि अवसर पर विभिन्न संस्था द्वारा नाट्य-अभिनय कएल जाइत अछि, संगहिँ एहि संस्था द्वारा नाट्य-लेखन-प्रतियोगिताक सेहो आयोजन होइत अछि। अतः 'अरिपन' द्वारा नाट्य-मंचनक संग-संग नवीन रीतिक अभिनयोपयोगी नाट्य-लेखनकेँ सेहो नवीन दिशा आ गति प्राप्त भेलैक तथा मैथिली नाट्य-साहित्यक विकासमे एक नवीन प्रवृत्तिक जन्म भेल।

[illegible]-कलात्मक संस्थाक रूपमे पटनाक 'भंगिमा, सांस्कृतिक मंच' एवं [illegible] [illegible] समिति, जनकपुरक 'मिथिला नाट्य-कला-परिषद्' तथा '[illegible]-सांस्कृतिक केन्द्र', जमशेदपुरक 'मिथिलाक्षर', बोकारो स्टील सीटीक मैथिली [illegible] [illegible] 'मिथियात्रिक' प्रभृतिक सेहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि।

'मैथिली रचना-मंच'- एकर स्थापना 1983 ई.मे विजयादशमीकें डा. [illegible] अध्यक्षतामे भेल छल, जकर महासचिव भेल छलाह डा. अमरनाथझा। एहि संस्था द्वारा 'रचना' मासिक 1984 ई मे प्रकाशित भेल, किन्तु बन्द भए गेल। पुनः 'रचना'क प्रकाशन 1989 ई मे त्रैमासिक रूपमे होअए लागल अछि। एहि संस्थाक दुइ गोट उपशाखा-देवघर ओ बरौनीमे सेहो कार्यरत अछि तथा एकरा द्वारा मैथिलीक उल्लेखनीय सेवा भए रहल अछि। तथापि एकरा आओर गतिशील बनएबाक प्रयोजन अछि।

ऊ [illegible] संस्था सबहिक जे उल्लेख कएल गेल अछि से अत्यन्त संक्षेपमे, [illegible] [illegible] एक विस्तृत विवरण प्राप्त नहि अछि। परन्तु एतबहि संस्था स्थापित भेल [illegible] नहि। [illegible] संख्या असीमित अछि ओ विविध रीतिक। उदाहरणार्थ प्रकाशन संस्थाक रूपमे [illegible] वैशाली-प्रेस-प्रकाशन, सुमनजीक मैथिली मन्दिर, प्रो. रमानाथ झाक [illegible]-प्रकाशन, श्री रमेन्द्रनारायण चौधरीक 'ग्रन्थालय-प्रकाशन'क अतिरिक्त दरभंगाक [illegible]-प्रकाशन, मातृवाणी-प्रकाशन, प्रतिभा-प्रकाशन, मैथिली पाकेटबुक-प्रकाशन, [illegible]-प्रकाशन आदि अनेकक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। चेतना समितिक 1988 ई.क स्मारिकामे 109 गोट संस्थासबहिक नामोल्लेख कएल गेल अछि तथा ताहिसँ अतिरिक्तो कलकत्ताक 'ऑल इण्डिया मैथिली संघ', 'मिथिला संघर्ष-समिति', '[illegible]-समिति', 'मैथिल छात्र-संघ', 'मिथिला विकास-परिषद्', 'मैथिल [illegible]-संघ', 'मिथिला व्यवसायी-समिति', 'मिथिला युवा-संघ', 'मिथिला [illegible]-समिति' एवं 'मिथिला क्रांति-दल', बम्बइक 'विजय-स्मृति-माला', 'मैथिल [illegible]' एवं 'मैथिली पुस्तकालय', नई दिल्लीक 'अ. भा. मिथिला संघ', 'तिरहुत [illegible]' एवं 'बिहार जन-चेतना-समिति', आसनसोलक 'मिथिला चेतना परिषद्', [illegible] [illegible] '[illegible] मैथिल छात्र-युवा-संघटन' एवं 'मैथिल समाज', [illegible] [illegible] 'चेतना समिति', 'जयपुरक मैथिली परिषद्', एवं 'राजस्थान मैथिली परिषद्', [illegible] 'मिथिला-सेवा-समिति', मुंगेर, सिलीगुड़ीक 'मिथिला-परिषद्', हुगलीक '[illegible] प्रांति-परिषद्', प्रयागक 'अ.भा. मैथिली साहित्य- समिति, वृन्दावनधामक '[illegible]-विकास-परिषद्', [illegible] 'मैथिली अकादमी', गाजियाबादक '[illegible]', [illegible] 'मैथिली चेतना-परिषद्', 'विद्यापति-परिषद्' एवं 'विद्यापति समिति', [illegible] 'विद्यापति-गोष्ठी', [illegible] 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद्' एवं '[illegible] [illegible] भारती [illegible]-समिति', [illegible]पुरक 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद्', '[illegible] परिषद्' एवं '[illegible] सांस्कृतिक एवं सामाजिक क[illegible]ण-समिति', [illegible] '[illegible]-परिषद्' एवं 'मैथिली समिति', [illegible] (हजारीबाग)क '[illegible]-परिषद्', [illegible] '[illegible]-समिति', [illegible] (डाल्टेनगंज)क

'रुद्रदत्त मैथिली ट्रस्ट', भिलाइनगरक 'मैथिल संघ', राँचीक 'वैदेही समिति' एवं 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद्', पटनाक 'मैथिली भाषी छात्र-संघ', 'चित्रगुप्त-सभा', 'मैथिली गोष्ठी', 'नवलेखन', 'युवा-लेखन', 'निखिल भारतीय मैथिली भाषा छात्र-संघ' एवं 'मैथिली महिला संघ', औरंगाबादक 'चेतना समिति', दानापुरक 'विद्यापति-परिषद्', रोहतास, सासारामक 'चेतना समिति', आराक 'चेतना-समिति', मिर्जापुर नवादाक 'विद्यापति-परिषद्', छपराक 'सारण मैथिली परिषद्', बेतियाक 'मिथिला नव चेतन समिति' पूर्णियाक 'चेतना-लोक', सहरसाक 'मैथिल चेतना-परिषद्' एवं 'विद्यापति-परिषद्', महिषी (सहरसा)क 'राजकमलक साहित्य-परिषद्', छातापुर (सहरसा)क 'विद्यापति-परिषद्', 'करजाइन बाजार सहरसाक', 'चेतना-परिषद्' बलुआबाजार (सहरसा)क 'मिथिलाकुंज', मुजफ्फरपुरक 'मैथिली परिषद्', मुंगेरक 'मैथिली परिषद्', रोसड़ा (समस्तीपुर)क 'अभिनव सांस्कृतिक परिषद्', रहिका (मधुबनी)क 'मैथिली समाज', मधुबनीक 'मिथिला प्रणयातन' एवं 'मैथिली साहित्य परिषद', बाबूबरही (मधुबनी)क 'आदर्श युवा-संगठन', सुगौना राजनगरक 'ललितनारायण कला-परिषद्', पचही (मधुबनी)क 'संस्कृत-उन्नयन-समिति', शिवनगर (मधुबनी)क 'जानकी-महोत्सव-समिति', जयनगरक 'चेतना समिति', सरहद (मधुबनी)क 'मिथिला नवचेतना-समिति', सरिसब पाही (मधुबनी)क 'अयाची-शंकर-संस्थान', 'म. म. डा. सर गंगानाथ झा-वाचनालय', 'मिथिला नाट्य-कला-परिषद्', 'मैथिली साहित्य परिषद', 'विद्यापति-गोष्ठी' एवं 'मैथिली प्रकाशन-समिति', पैटघाट (मधुबनी)क 'कीर्तिनाथकला-परिषद्', सर्वसीमा (मधुबनी)क 'भवनाथ-नाट्य-परिषद्', मंगरौनी (मधुबनी)क 'सेवा मिथिला', झंझारपुर (मधुबनी)क 'नवचेतना-मंच', राजे (दरभंगा)क 'हितेन्द्र-स्मारक-पुस्तकालय', नवादा (दरभंगा)क 'जगदम्बा युवा सांस्कृतिक समाज', चनौर (दरभंगा)क 'श्यामानाट्यकला-परिषद्', सुन्दरपुर बीड़ा (दरभंगा)क 'मिथिला-विकास-संघ', न्यू मार्केट (लहेरियासराय)क 'परमहंस लक्ष्मीनाथ समिति', दरभंगाक 'मैथिली ग्रन्थमाला-प्रकाशन', मिथिला-क्रान्ति-दूत-संघ, 'मिथिला लोक-मंच', 'ग्रन्थ-भारती', 'साहित्य-संगीत-कला अकादमी' प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। वस्तुतः मैथिली सेवी-संस्था एतबे नहि, देवघर, बरौनी, भागलपुर आदि बिहारक अनेक स्थान पर सहजहिँ, समग्र भारतमे अनेकानेक संस्थासब स्थापित अछि। परन्तु अधिकांश संस्था निष्क्रिय अछि अथवा पाकेटी संस्था बनल यदा-कदा निहितस्वार्थ-पूर्त्तिक साधन बनल अछि अथवा वर्षमे एक बेर जगैत अछि ओ विद्यापति-पर्व मना पुनः वर्ष भरिक दीर्घ निद्रामे सूति रहैत अछि।

परन्तु एहि सबहिक यत्किंचित विवरणसँ इहो स्पष्ट अछि जे अखिल भारतीय स्तर पर मैथिल जनसमुदायमे अपन भाषा-साहित्यक समृद्धिक भावना स्फुरित भए गेल छैन्हि ओ हमरा विश्वास अछि जे यदि एकरा सशक्त नेतृत्व प्राप्त होइक तथा एहि संस्थासबकेँ सामान्य सूत्रमे संबद्ध कए देल जाए तँ मैथिली भाषा- साहित्यक विकासमे अद्भुत क्रान्तिक प्रकाश प्रसारित भए सकैत अछि।

प्रमुख सहायक पुस्तक

मैथिली

आधुनिक-मैथिली कविताक प्रवृत्ति (शोध-प्रबन्ध)- दुर्गानाथ झा 'श्रीश'
आनन्द-विजय (भूमिका)- स्व. भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'
कथाकाव्य- सं. प्रो. रमानाथ झा
कविताक कुसुम- सं. प्रो. रमानाथ झा
कविशेखर-पुष्पांजलिः- कविशेखर बदरीनाथ झा-अभिनन्दन-ग्रन्थ-समिति
कवीश्वर चन्दा झा (शोध-प्रबन्ध)- डा. अमरनाथ झा
कृष्णजन्म (भूमिका)- प्रो. रमानाथ झा
कृष्णजन्म (भूमिका)- डा. उमेश मिश्र
गद्य-संग्रह (भूमिका)- प्रो. रमानाथ झा
जगज्योतिर्मल्लक गीतपंचाशिका- सं. डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'
दरभंगामे मैथिली संस्था- डा. भीमनाथझा
नवीन गीत- सं. प्रो. रमानाथ झा
निबन्ध-माला- प्रो. रमानाथ झा
नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास- श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'
प्रबन्ध-संग्रह- प्रो. रमानाथ झा
पारिजात-हरण नाटक (भूमिका)- प. चेतनाथ झा
प्राचीन गीत- सं. प्रो. रमानाथ झा
बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त (शोध-प्रबन्ध)- डा. श्री जयधारी सिंह
मिथिला-तत्व-विमर्श- म. म. परमेश्वर झा
मिथिलाभाषा-गीत-संग्रह- सं. प्रो. रमानाथ झा
मिथिलाभाषामय इतिहास- म. म. मुकुन्द झा वक्शी
मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध)- डा. अमरेश पाठक
मैथिली पत्रकारिताक इतिहास- पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
मैथिली महाकाव्यक उद्भव ओ विकास- डा. शिवशंकर झा 'कान्त'
मैथिली गीत-रत्नावली- सं. कविशेखर बदरीनाथ झा
मैथिली नाटक ओ रंगमंच- डा. प्रेमशंकर सिंह
मैथिली डाक- सं. पं. जीवानन्द ठाकुर
मैथिली भाषा ओ साहित्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता
मैथिली साहित्यक इतिहास- श्री कृष्णकान्त मिश्र
मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- डा. दिनेश कुमार झा
मैथिली साहित्यक इतिहास (1988)- डा. बाल गोविन्द झा 'व्यथित'
मैथिलीक साहित्य रुप-रेखा- भारती मण्डन-भाषण माला, चेतना समिति, पटना
मैथिली साहित्य परिषद्क अध्यक्षीय भाषण (1933)- डा. उमेश मिश्र
मैथिली साहित्य-परिषद्क शैली-निर्धारण-समितिक अध्यक्षीय भाषण- डा. उमेश मिश्र

मैथिली साहित्य-परिषद्क षष्ठ-अधिवेशनक स्वागताध्यक्षक भाषण- स्व. भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'
मैथिली साहित्यक प्रगति- अ. भा. प्राच्यविद्या-सम्मेलनक अध्यक्षीय भाषण- कुमार गंगानन्द सिंह
मैथिली कविक कवितासंग्रह एवं तकर भूमिका-
मैथिलीक विविध विधाक साहित्यिक कृति
मैथिली पत्र-पत्रिकाक फाइल ओ ताहिमे प्रकाशित मुद्रित सामग्री
श्री रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ- अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति, दरभंगा
रागतरंगिणी- सं. स्व. पं. बलदेव मिश्र
" " सं. डा. सुधाकर झा
श्रृंगारभजन-गीतावली (भूमिका)- प्रो. रमानाथ झा
श्री तन्त्रनाथ झा-अभिनन्दन ग्रन्थ- अभिनन्दन-ग्रन्थ-समिति, दरभंगा
हरगौरी विवाह (भूमिका)- डा. रामदेव झा

हिन्दी

कीर्तिलता (भूमिका)- डा. श्री बाबूराम सक्सेना
कीर्तिलता और अवहट्ठभाषा- डा. श्री शिवप्रसाद सिंह
पुरातत्व-निबन्धावली- महापण्डित राहुल सांस्कृतायन
महाकवि विद्यापति- पं. शिवनन्दन ठाकुर
राष्ट्रभाषा-परिषद्क अध्यक्षीय भाषण (1953)- डा. उमेश मिश्र
महाकवि विद्यापति-काव्यालोक- श्री नरेन्द्रनाथ दास
मैथिली भाषाक विकास- पं. श्री गोविन्द झा
विद्यापति- पदावली (भूमिका)- राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
विद्यापति-पदावली (भूमिका)- सं. विमान बिहारी मजूमदार
संस्कृत साहित्य का इतिहास- श्री बलदेव उपाध्याय

Eanglish

A. Survey of Maithili Literature - By Prof. R.K. Chaudhary
Ankia Nat- Ed. B.K. Barua
Assamese Literature- B.K. Barua
Dhoort Samagam- (Intr.) Dr. J.K. Mishra
Formation of Maithili language- Dr. Subhadra Jha
History of Brajbuli Literature- Dr. Sukumar Sen
History of Maithili Literature- Vol. I&II- Dr. J.K. Mishra
Keertilata (Int.)- Dr. Umesh Mishra
Keertilata- (Intr.) Prof. Ramanath Jha
Keerti Pataka- (Intr.) Dr. J.K. Mishra